हिन्दी काव्य प्रवाह

मित्र प्रकाशन गौरव ग्रंथ माला—१०

हिन्दी काव्य प्रवाह

[सिद्ध सरहपा से गिरिधरदास तक]

संकलन एवं संचयन

श्रीमती पुष्पा स्वरूप

संपादक

श्रीकृष्ण दास

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद-३

बाबू को

सम्पादकीय वक्तव्य

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है, "सिद्धो में 'सरह' सबसे पुराने अर्थात् वि० सं० ६९० के हैं। अतः हिन्दी काव्य भाषा के पुराने रूप का पता हमें विक्रम की सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लगता है।" महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भी 'हिन्दी काव्य धारा' में प्रथम स्थान सिद्ध सरहपा को ही दिया है। लेकिन आचार्य शुक्ल का कथन है—

क—"प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है। उस समय जैसे 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता था वैसे ही 'दोहा' या 'दूहा' कहने से अपभ्रंश या प्रचलित काव्य भाषा का पद्य समझा जाता था। अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी के पद्यों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों की साम्प्रदायिक रचनाओं के भीतर विक्रम की सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लगता है।"

ख—"सिद्धो और योगियों. . .की रचनाएँ तांत्रिक-विधान, योग-साधना, आत्म-निग्रह, श्वास-निरोध, भीतरी चक्रों और नाड़ियों की स्थिति, अन्तर्मुख साधना के महत्व इत्यादि की साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र है; जीवन की स्वाभाविक अनुभूतियों और दशाओं से उनका सम्बन्ध नहीं। अतः वे शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत नहीं आतीं। उनको उसी रूप में ग्रहण करना चाहिए जिस रूप में ज्योतिष, आयुर्वेद आदि के ग्रंथ।"

ग—"(सिद्धों और योगियों) की रचनाओं का जीवन की स्वाभाविक सरणियों, अनुभूतियों और दशाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र हैं, अतः शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आ सकतीं। उन रचनाओं की परंपरा को हम काव्य या साहित्य की कोई धारा नहीं कह सकते।"

इन उपर्युक्त उद्धरणों से केवल दो बातें निकलती हैं—एक, सिद्ध सरह, सरहपा अथवा सरोजवज्र की रचनाओं से ही हिन्दी काव्य-भाषा के पुराने रूप का पता हमें चलता है। मगर—दो, सिद्धों नाथों की रचनाएँ मात्र साम्प्रदायिक शिक्षा हैं, वे शुद्ध साहित्य की कोटि में परिगणित नहीं हो सकतीं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन की कठिनाइयाँ यहीं से आरम्भ होती हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन इस प्रकार किया है—

आदिकाल (वीर गाथा काल, संवत् १०५०–१३७५)

पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल, १३७५–१७००)
उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल, १७००–१९००)
आधुनिक काल (गद्यकाल, १९००–१९८४)

यद्यपि आचार्य शुक्ल ने सिद्धों-योगियों के साहित्य को शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत नहीं माना, परन्तु उन्होंने बाद के भक्ति-साहित्य का विभाजन जिस प्रकार किया है उससे यह पता चलता है कि जिस साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक आस्थापरक दोष का आरोपण उन्होंने सिद्धों के साहित्य पर किया है, भक्ति साहित्य पर उस आरोप के रहते हुए भी, उन्हें इससे कोई एतराज़ न था, बल्कि विवश होकर उस सम्पूर्ण साहित्य का उन्हें इसी आधार पर अनुशीलन भी करना पड़ा। पूर्व मध्यकाल (भक्ति काल) का विभाजन उन्होंने इस प्रकार किया है—

भक्तिकाल—निर्गुण धारा (१) ज्ञानाश्रयी शाखा; (२) प्रेममार्गी (सूफ़ी) शाखा।

सगुण धारा (१) राम भक्ति शाखा (२) कृष्ण भक्ति शाखा।

यह विभाजन निश्चित रूप से साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक आस्थापरक दृष्टि से ही किया गया है। इसके लिए आचार्य शुक्ल जी विवश भी थे। परन्तु इस प्रकार के परंपरा-विभाजन का आधार वैज्ञानिक कैसे माना जाय? शुद्ध साहित्य की दृष्टि से अथवा उसकी कसौटी पर तो यह विभाजन उचित नहीं ठहरता।

आचार्य शुक्ल के इस इतिहास के बाद पिछले तीस-चालीस वर्षों में हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगों और कालों का जो शोध और अनुशीलन हुआ है, उससे शुक्ल जी की अनेक स्थापनाओं और मान्यताओं का खण्डन हो चुका है। सिद्ध, नाथ, संत और सूफ़ी साहित्य पर विभिन्न दृष्टियों से महापण्डित राहुल सांकृत्यान, डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, पण्डित परशुराम चतुर्वेदी और डा० रामकुमार वर्मा जैसे विद्वानों ने पर्याप्त मात्रा में अनुसंधान कार्य किया और कराया है। फलतः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की रचना जिस दृष्टि से की थी, उसमें भी मूलभूत परिवर्तन हो गया है। अब आवश्यकता यह है कि हिन्दी साहित्य का एक नवीन इतिहास लिखा जाय जिसमें विगत अर्धशती की सारी अनुसंधानात्मक उपलब्धियों को सम्मिलित किया जाय और वैज्ञानिक, तर्क-सम्मत, काव्य सिद्धान्तपरक निकषों पर कसकर ही साहित्य का मूल्यांकन किया जाय। जो लोग साहित्य की धर्मनिरपेक्षता पर बल देते हैं उनको संतोष इसी प्रणाली के अपनाने से होगा।

हिन्दी काव्य परंपरा का अनुशीलन हमें इस बात के लिए बाध्य करता है कि हम सिद्धों, नाथों, संतों, सूफ़ियों और भक्तों की धार्मिक मान्यताओं, स्थापनाओं, दर्शनों और उपदेशों का अनुशीलन करें। इसी अनुशीलन के माध्यम से हम उनके

साहित्य का मूल्यांकन कर सकते हैं। इसी के सहारे हम साहित्य में उनका स्थान निश्चित कर सकते हैं। कोई भी विवेकशील व्यक्ति इन धार्मिक अथवा आस्था-विश्वास-मूलक साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की सर्वथा उपेक्षा करके इनके साहित्य का समुचित मूल्यांकन नहीं कर सकता। हिन्दी काव्य साहित्य को धर्म-निरपेक्ष अथवा साम्प्रदायिक मान्यता-निरपेक्ष साहित्य के रूप में हम ग्रहण नहीं कर सकते।

परन्तु उनकी यह विशेषता उनके साहित्य का गुण था, या दोष यह बात दूसरी है। उदाहरण स्वरूप, तुलसीदास की रामायण को ही ले लें। इस महाकाव्य को हम सर्वगुण, सर्वलक्षण संपन्न मानते हैं। इसकी लोक-प्रियता की भी कोई सीमा नहीं। मगर तुलसीदास ने 'स्वान्तःसुखाय' ही इसकी रचना की थी। उनको किसी अन्य बात में नहीं, केवल अपनी धार्मिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति और उन के प्रचार में ही सुख मिलता था। वह अपने राम को, उनके आदर्श और व्यवहार को, उपदेश और कार्य को, उनके सन्देश को घर-घर पहुँचा देना चाहते थे। वह परब्रह्म की, मर्यादा पुरुषोत्तम, दाशरथी राम, रूप-शील-गुण संपन्न रघुवंशी राजकुमार और सम्राट की सगुणोपासना में विश्वास रखते थे। वह इससे भी अधिक राम के नाम की महिमा में आस्था रखते थे। इसलिए वह कहते थे—'राम न सकहिं नाम गुन गाई' और 'कलियुग केवल नाम अधारा।' तुलसीदास की यही मूल प्रेरणा थी, यही आस्था थी और इसी का प्रचार करने के लिए उन्होंने अपने साहित्य की रचना की। इस बात से इनकार करना उचित न होगा।

मगर, इसके साथ ही यह भी स्वीकार करना होगा कि तुलसीदास ने अद्भुत, अलौकिक काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया। आज उनका साहित्य उनके साम्प्रदायिक दायरे के बाहर निकल कर जन-जन का कण्ठहार बन गया है। धर्मप्राण जनता तो उसका रस और आनन्द लेती ही है, काव्य साहित्य का सामान्य प्रेमी भी उसे जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। और, तुलसीदास किसी साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के प्रचारक के रूप में नहीं, हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ, महानतम कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यही बात विद्यापति, कबीर, सूरदास, जायसी, मीरा आदि के बारे में भी सत्य है।

ये सारे कवि अपने आराध्य अथवा अपनी आराध्या के माध्यम से, उनके ही बहाने, अपने उन सारे भावों, भावनाओं को प्रकट करते थे जो काव्य शास्त्र की दृष्टि से और सामान्य मानवीय रागात्मक संबंधों की दृष्टि से सर्वथा मनोहारी, हृदयग्राही, और तन मन प्राण को जुड़ा देने वाले, विगलित कर देने वाले थे। मानव हृदय जो कुछ चाह सकता है, जिस किसी भी परम तत्व की कल्पना कर सकता है, जैसा भी स्वप्न देख सकता है, जैसे भी सत्य को खोज कर सकता है, जिस किसी भी प्रेरणा स्त्रोत को रूपायित कर सकता है, जैसा भी आधार,

संबल ढूंढ़ सकता है, जैसे भी सर्वगुण संपन्न व्यक्तित्व की कामना कर सकता है, जैसा भी नायक प्रतिष्ठित कर सकता है—उन सब के मूर्त रूप ये देव पुरुष, अवतारी पुरुष थे जो इस संसार का परित्राण करने के लिए मानव शरीर धारण करके अवतीर्ण हुए थे। ऐसे कवि और द्रष्टा हुए जिन्होंने इनको अलख, अगोचर, अरूप, निर्गुण आदि कहा, मगर इनकी सत्ता को अस्वीकार नहीं किया। ऐसे भी कवि हुए जिन्होंने इन्हें राजकुमार, सम्राट, शिशु, बालक और युवक के रूप में, प्रेमी, सखा और पति के रूप में देखा, जाना, समझा, अनुभव किया। इनके माध्यम से, इनके ही बहाने इन कवियों ने अपनी सारी सहज भावनाएँ व्यक्त कीं; और वे वही भावनाएँ थीं जो हमारे हृदय में उन व्यक्तियों के लिए उत्पन्न होती हैं जिनसे हमारा रागात्मक सम्बन्ध होता है, जिन्हें हम प्यार करते हैं, जिनकी हम मंगल-कामना करते हैं, जिनके दुख में दुखी और सुख में हम सुखी रहते हैं, जो हमारे स्वजन हैं। आराध्य में समस्त सहज मानवीय गुणों को आरोपित करना ही सिद्ध, नाथ, संत, सूफ़ी और भक्त कवियों की मूल प्रवृत्ति रही है। यही रहस्य है जो हमें उनके काव्य साहित्य का भक्त और प्रशंसक बना देता है। अपने साहित्य में उन्होंने शुष्क, अकाव्यात्मक दार्शनिक तत्वों को भी सम्मिलित किया है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। मगर केवल इसी कारण उनके साहित्य में अन्य काव्यात्मक गुणों और लक्षणों को न देखना अथवा उनकी उपेक्षा करना सर्वथा अनुचित होगा। सत्य यह है और समीचीन भी कि हम नीर-क्षीर विवेक से काम लें और इस सम्पूर्ण साहित्य के धर्म निरपेक्ष, शुद्ध साहित्यिक—काव्यात्मक तत्वों का परिशीलन करते समय उन दार्शनिक, धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक तत्वों का भी लेखा जोखा करें जिन्होने उन साहित्यिक तत्वों को बल प्रदान किया, उजागर किया। बिना दोनों तत्वों का समन्वित अनुशीलन किये हिन्दी काव्य साहित्य का सम्यक् मूल्यांकन संभव नहीं। अभी तक के मूल्यांकन में एक दोष यह रहा है कि आलोचकों, शोध छात्रों और इतिहासकारों पर इन कवियों का साम्प्रदायिक व्यक्तित्व छा जाता है और वे उनके कवि की उपेक्षा कर जाते हैं। इसका प्रमाण वे शोध प्रबन्ध हैं जो विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत किये जा चुके हैं और किये जा रहे हैं। फलतः हिन्दी काव्य के पाठकों विशेषतया अहिन्दी भाषा-भाषी तथा विदेशी शोध छात्रों और अनुशीलन कर्ताओं को बड़ी कठिनाई होती है और वे अनेक प्रकार के भ्रमों के शिकार हो जाते हैं।

एक दूसरी कठिनाई काल विभाजन की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वयं कहा है—"शिक्षित जनता की जिन-जिन प्रवृत्तियों के अनुसार हमारे साहित्य के स्वरूप में जो जो परिवर्तन होते आये हैं, जिन-जिन प्रभावों की प्रेरणा से काव्य धारा की भिन्न-भिन्न शाखाएँ फूटती रही हैं, उन सब के सम्यक् निरूपण तथा उनकी दृष्टि से किये हुए सुसंगत काल विभाग के बिना साहित्य के इतिहास

का सच्चा अध्ययन कठिन दिखायी पड़ता था"—(हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण का वक्तव्य)। इसलिए शुक्ल जी ने काल विभाजन का काम अपने हाथ में लिया। शुक्ल जी ने बताया है कि "जिस काल खण्ड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखलायी पड़ी है, वह एक अलग काल माना गया है और उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक काल का एक निर्दिष्ट सामान्य लक्षण बताया जा सकता है। किसी एक ढंग की रचना की प्रचुरता से अभिप्राय यह है कि शेष दूसरे ढंग की रचनाओं में से चाहे किसी (एक) ढंग की रचना को लें वह परिणाम में प्रथम के बराबर न होगी। जैसे, यदि किसी काल में पाँच ढंग की रचनाएँ १०, ५, ६, ७ और २ के क्रम से मिलती हैं तो जिस ढंग की रचना की १० पुस्तकें हैं उसकी प्रचुरता कही जाएगी, यद्यपि शेष और ढंग की सब पुस्तकें मिल कर २० हैं। यह तो हुई पहिली बात। दूसरी बात है ग्रंथों की प्रसिद्धि। किसी काल के भीतर जिस एक ही ढंग के बहुत अधिक ग्रंथ प्रसिद्ध चले आते हैं, उस ढंग की रचना उस काल के लक्षण के अन्तर्गत मानी जाएगी, चाहे और दूसरे-दूसरे ढंग की प्रसिद्ध और साधारण कोटि की बहुत-सी पुस्तकें भी इधर-उधर कोनों में पड़ी मिल जाया करें।"

काल विभाजन के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल जी ने जो प्रणाली अपनायी उसे सर्वथा अस्वीकार नहीं किया जा सकता। शुक्ल जी के बाद भी जिन आचार्यों ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा उन्होंने इसी प्रणाली को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार आचार्य शुक्ल जी द्वारा प्रतिपादित काल विभाजन की परम्परा आज भी चलती चली जा रही है। मगर हमारा निवेदन है कि आचार्य महोदय के बाद जो शोध कार्य हुआ है और जो सामग्री प्राप्त हुई है, उसे ध्यान में रखकर काल विभाजन फिर से किया जाय। हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास जिन बन्धुर पंथों से हुआ, उसकी प्रेरणा के जो विभिन्न स्त्रोत रहे हैं, जिन धाराओं से उसे शक्ति मिली और उसमें प्राण का संचार हुआ उन सब को ध्यान में रखते हुए काल विभाजन और परंपरा विवेचन किया जाय।

यहाँ विशेष रूप से हम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा निर्धारित रीति काल का बात कहना चाहते हैं। रीति कालीन साहित्य को केवल रीत्यानुसारी, परंपरावादी साहित्य कहकर टाल देना हमें उचित नहीं जँचता। आचार्य महोदय के इस कथन में कुछ सत्य है कि "रीतिकाल के भीतर रीतिबद्ध रचना की जो परंपरा चली है उसका उपविभाग करने का कोई संगत आधार मुझे नहीं मिला। रचना के स्वरूप आदि में कोई स्पष्ट भेद निरूपित किये बिना विभाग कैसे किया जा सकता है?" परन्तु इसमें संपूर्ण सत्य नहीं है। पहिली बात यह है कि रीतिकालीन काव्य में वस्तुविषय का मौलिक भेद आ गया

और आध्यातिमक तत्वों के स्थान पर इहलोक-परक तत्वों का विशेष रूप से समावेश हुआ। इस युग में काव्य कला अपनी पराकाष्ठा को पहुँची और रचना सौष्ठव, लालित्य, भावाभिव्यंजना, सौन्दर्य बोध, सभी दृष्टियों से हिन्दी का काव्य साहित्य समृद्ध और संपन्न हुआ। इसलिए इस काल की रचनाओं को केवल परंपरावादी कह कर उनकी उपेक्षा करना ठीक नहीं है। इस काल की रचनाओं का पुनर्मूल्यांकन हुआ है और अब इसकी ओर लोगों का ध्यान अधिकाधिक मात्रा में जाने लगा है। जिस प्रकार सिद्धों, नाथों, संतों और सूफ़ियों के साहित्य का शोध और पुनर्मूल्यांकन पिछले वर्षों में हुआ है, उसी प्रकार अब रीतिकालीन साहित्य का अधिक वैज्ञानिक अनुशीलन हो रहा है। हिन्दी साहित्य की परंपरा राजस्थान में प्राप्त नवीन ग्रंथों और दक्खिनी हिन्दी की परंपरा के जुड़ जाने से अधिक समृद्ध हुई है। इन सब शोधों और उपलब्धियों को दृष्टि में रखकर हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और परंपरा विवेचन फिर से होना चाहिए।

● ● ●

'हिन्दी-काव्य प्रवाह' में सिद्ध सरहपा से लेकर गिरिधर दास तक की रचनाओं का संकलन किया गया है। यद्यपि आचार्य शुक्ल जी ने सिद्धों, योगियों की रचनाओं को मात्र साम्प्रदायिक कह कर उनकी उपेक्षा की है। मगर महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने 'हिन्दी काव्य-धारा' में इन कवियों को स्थान दिया है। यहाँ राहुल जी की ही परंपरा का अनुसरण करना उचित समझा गया। इन रचनाओं में शुद्ध काव्य तत्व बिल्कुल नहीं है, ऐसा मानना कठिन है। इन कवियों की भाषा कुछ अनगढ़ और अटपटी भले ही मालूम पड़ती हो, मगर जैन, बौद्ध, नाथपंथी और ऐहिक अपभ्रंश साहित्य में ऐसी रचनाएँ उपलब्ध हो चुकी हैं और होती जा रही हैं कि अब उनकी उपेक्षा करना असम्भव है। प्रसिद्ध विद्वान् पिशेल, याकोबी, महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, आचार्य प्रबोध चन्द्र बागची, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० रामसिंह तोमर आदि विद्वानों ने इस साहित्य का अध्ययन-अनुशीलन करके ऐसी सामग्री प्रस्तुत कर दी है जिससे आचार्य शुक्ल की मान्यताओं का पूर्णतया खण्डन हो चुका है और इस आदिकालीन हिन्दी साहित्य का महत्व स्थापित हो गया है। यह धारणा समाप्त हो चुकी है कि अपभ्रंश साहित्य केवल धार्मिक, साम्प्रदायिक उपदेशात्मक साहित्य है। परन्तु उस साहित्य की ऐहिकता, उसकी शृंगारपरकता, उसकी प्रेमाख्यान-मूलकता उसकी मांसलता और रसात्मकता से अब इन्कार नहीं किया जा सकता। सिद्धों की रहस्यमयी वाणियों से चाहे कुछ लोग भड़क भी जायँ परन्तु जैन कवियों के शृंगार प्रधान चरित काव्यों से प्रभावित न होना क्या सम्भव है? जैन अपभ्रंश

साहित्य में मुक्तक और प्रबन्ध दोनों प्रकार के काव्य उपलब्ध हैं। राजस्थान के जैन भाण्डारों में जो विपुल सामग्री है उसको अभी प्रकाश में नहीं लाया जा सका है। परन्तु उसके जिन अंशों का चर्चा आ चुका है, उसकी उपेक्षा असम्भव है। इस साहित्य में रहस्यवादी स्वर है, उपासना विधियों का वर्णन है, नीति सम्बन्धी उक्तियाँ हैं, धार्मिक उपदेशों के प्रकरण हैं, संयम, मर्यादा-पारिवारिक जीवन की पवित्रता सम्बन्धी चर्चाएँ हैं। प्रबन्ध काव्यों में रामायण अथवा पुराणों के आधार पर जैन दृष्टि से रचित अनेक ग्रंथ हैं। अनेक प्रेम कथाएँ हैं जिनके माध्यम से जैन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। यह सही है कि इस साहित्य पर धार्मिकता का रंग गाढ़ा चढ़ा हुआ है, परन्तु इसका साहित्यिक मूल्य कम महत्वपूर्ण नहीं है। इन रचनाओं में शुद्ध साहित्यिक गुणों की कमी नहीं है। इनमें प्राकृतिक चित्रण, रूप वर्णन, शृंगार निरूपण, संवेदना एवं सहानुभूति, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सामान्य जीवन का विश्लेषण आदि सभी गुण वर्तमान है। स्वयंभू और पुष्पदन्त अपभ्रंश के दो महान् कवि हुए हैं। इनकी रचनाओं की साहित्यिक महत्ता स्वयंसिद्ध है। इनकी रचनाएँ राम-कथा की ही परम्परा में हैं। स्वयंभू अपभ्रंश के महाकवि हैं। वस्तुतः वह हिन्दी के प्रथम महाकवि हैं, और पउम चरिउ (पद्म चरित्र) हिन्दी का प्रथम महाकाव्य।

अपभ्रंश के मुक्तक काव्यों का महत्व तो है ही, चरित काव्यों का भी महत्व अत्यधिक है। ये चरित काव्य धार्मिक अभिप्राय से ही लिखे गए हैं। मगर इनका स्वरूप प्रेम कथानकों का ही है। इनमें प्रेम, विरह, संयोग आदि का जो वर्णन मिलता है वह नितान्त रुचिकर और मनोहारी है। इन चरित काव्यों का प्रभाव मध्ययुगीन हिन्दी प्रेमाख्यानकों पर स्पष्ट ही दिखायी देता है। योगीन्दु, रामसिंह, कनकामर मुनि, देवसेन, जिनदत्त सूरि, सोमप्रभ सूरि, स्वयंभू, पुष्पदन्त आदि अपभ्रंश के अनेक महत्वपूर्ण कवियों ने अपभ्रंश साहित्य के उपवन को सींचा, पल्लवित और पुष्पित किया। इस संग्रह में इनकी कुछ रचनाओं के चुने हुए अंश दिए गए हैं।

जैन आचार्यों और मुनियों की इन साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त एक बहुत महत्वपूर्ण परम्परा रासों की रही है। अनेक रासों का अनुशीलन हो भी चुका है, परन्तु अभी रासों का बहुत बड़ा कोश वैसे ही पड़ा हुआ है। जब उस पुष्कल सामग्री का अनुशीलन होगा तो हिन्दी साहित्य की एक अस्पष्ट कड़ी सुस्पष्ट होकर सामने आएगी। साहित्य के इतिहास में भी एक नया अध्याय जुड़ेगा।

इस जैन धर्मपरक अपभ्रंश साहित्य के साथ ही बौद्ध तंत्रपरक सिद्ध साहित्य का भी स्थान अब विवाद-ग्रस्त नहीं रह गया है। सिद्ध तो कुल चौरासी हुए। मगर इनमें से तेइस सिद्धों की रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। हमारे देश में इनका साहित्य प्रायः लुप्त हो गया है। इनका तिब्बती संस्करण प्राप्त है। राहुल जी ने इन में

से कुछ का हिन्दी रूपान्तर 'हिन्दी काव्य-धारा' में प्रकाशित भी किया है। राहुल जी कृत सिद्ध सरहपा का 'दोहा कोश' भी प्रकाशित हो चुका है। अनेक शोधार्थी इस साहित्य का पुनरुद्धार करने में लगे हुए हैं। निकट भविष्य में ही सम्पूर्ण सिद्ध साहित्य का हिन्दीकृत रूप सामने आ जाएगा। तभी हिन्दी साहित्य के आदिकाल के साथ पूरा न्याय किया जा सकेगा और उस काल का सम्यक् इतिहास भी लिखा जा सकेगा। महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने इन सिद्धों की भाषा को प्रायः हज़ार वर्ष पूर्व की बंगला भाषा का एक स्वरूप बताया था, परन्तु राहुल जी ने अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया है कि यह भाषा हिन्दी का ही पूर्ववर्ती आदि-कालीन रूप है।

सिद्ध साहित्य को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। एक वर्ग के साहित्य में तांत्रिक क्रियाओं और विश्वासों का उल्लेख है। दूसरे में, बाह्य कर्मकाण्डमूलक आडम्बर को त्यागने और आन्तरिक आध्यात्मिक तत्वों की खोज करने का प्रबल आग्रह है। इस साहित्य में सहजोपासना पर ही बल दिया गया है।

सिद्धों की वाणी में एक विचित्र प्रकार का अटपटापन है जिसके कारण उसकी दुरुहता बढ़ गई है। सर्वत्र एक विचित्र शैली का प्रयोग है और एक रहस्यवादी वातावरण बना रहता है। फलतः अर्थ खुलता नहीं और अध्येताओं को भ्रम हो जाता है। बाह्य अर्थ जो कि अक्सर असंगत, अमर्यादित और अश्लील होता है, साधारण पाठक को धोखे में डाल देता है। परन्तु गहराई से अध्ययन करने पर उसमें रहस्यमय योग और तंत्र के तत्वों का आभास मिल जाता है। बाद के संतों की वाणियों में भी इस प्रकार की विशेषताएँ दिखायी देती हैं।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का कथन है—"अपभ्रंश के कवियों को विस्मरण करना हमारे लिए हानि की वस्तु है। यही कवि हिन्दी काव्य धारा के प्रथम स्रष्टा थे। वे अश्वघोष, भास, कालिदास और वाण की सिर्फ़ जूठी पत्तलें नहीं चाटते रहे, बल्कि उन्होंने एक योग्य पुत्र की तरह हमारे काव्य क्षेत्र में नया सृजन किया है, नए चमत्कार, नए भाव पैदा किए; यह स्वयंभू आदि की कविताओं से अच्छी तरह मालूम हो जाएगा। नए-नए छन्दों की सृष्टि करना तो इनका अद्भुत कृतित्व है। दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय आदि कोई सौ नए-नए छन्दों की उन्होंने सृष्टि की, जिन्हें हिन्दी कवियों ने बराबर अपनाया है, यद्यपि सब को नहीं। हमारे विद्यापति, कबीर, सूर, जायसी और तुलसी के ये ही उज्जीवक और प्रथम प्रेरक रहे हैं। उन्हें छोड़ देने से बीच के काल में हमारी बहुत हानि हुई। और, आज भी उसकी संभावना है।"

आगे राहुल जी फिर कहते हैं, "हमारे मध्यकालीन कवियों ने अपभ्रंश कवियों को भुला दिया और प्रेरणा लेने लगे सिर्फ़ संस्कृत के कवियों से। स्वयंभू

आदि कवि अपनी पाँच शताब्दियों में सिर्फ घास नहीं छीलते रहे। उन्होंने काव्य निधि को और समृद्ध भाषा को और परिपुष्ट करने का जो महान् काम किया है, हमारे साहित्य को उनकी जो ऐतिहासिक देन है, उसे भुलाकर, कड़ी को छोड़ कर, सीधे संस्कृत के कवियों से सम्बन्ध स्थापित करना हमारे साहित्य और हिन्दी भाषा दोनों के लिए हानिकर सिद्ध हुआ है। हम संस्कृत कवियों से सम्बन्ध जोड़ने के विरोधी नहीं हैं। लेकिन हमें, इस बीच की कड़ी, जो अपनी ही कड़ी है, को लेते संस्कृत के प्राचीन कवियों के साथ सम्बन्ध जोड़ना होगा। तभी हम ऐतिहासिक विकास से पूरा लाभ उठा सकेंगे।"

इसी संदर्भ में हमें अपभ्रंश भाषा का अध्ययन करना चाहिए। यह भाषा कभी मुल्तान से गुजरात तक और गुजरात से बंगाल तक फली हुई थी और एक प्रकार से यह इतने बड़े क्षेत्र की राष्ट्र भाषा सरीखी थी। अब्दुर्रहमान मुल्तान के रहने वाले थे। सिद्ध सरहपा और शबरपा बिहार-बंगाल के निवासी थे। और स्वयंभू और कनकामर उत्तर प्रदेश के अवधी और बुन्देलखण्डी क्षेत्र के थे। हेमचन्द्र और सोमप्रभ गुजरात के निवासी थे। "इस प्रकार हिमालय से गोदावरी और सिंध से ब्रह्मपुत्र तक ने इस साहित्य (अपभ्रंश साहित्य) के निर्माण में हाथ बँटाया।"

सिद्धों के साहित्य के सम्बन्ध में अनेक बातें कही जाती हैं। उनकी भाषा पर अनगढ़पन का आरोप लगाया जाता है। परिमार्जन की कमी, रचाव और सँवार-सिंगार का अभाव सिद्ध कवियों की भाषा और शैली का दोष माना जाता है। अर्थ की दुर्बोधता और अस्पष्टता भी एक बड़े दोष के रूप में गिनायी जाती है। मगर सही यह है कि उनकी भाषा बिलकुल सहज और सरल तथा बोध-गम्य है। राहुल जी के शब्दों में, "लाखों नर-नारियों को उनमें रस, एक तरह की आत्म-तृप्ति मिलती थी। और आज भी उस तरह की मनोवृत्ति रखने वाले कितने ही पाठकों को वह उतनी ही रुचिकर मालूम पड़ती है। इसलिए उन्हें कविता मानना ही पड़ेगा।"

ये सिद्ध कवि सारी पुरानी सामाजिक और नैतिक मान्यताओं को छिन्न-भिन्न कर डालना चाहते थे। वे लीक छोड़कर चलना चाहते थे, अपना रास्ता खुद बनाना चाहते थे। वे सहज जीवन के पक्षपाती थे। वे संघर्ष और आशावाद के कवि थे। वे स्वयं अपने व्यक्तिगत सुख-ऐश्वर्य को त्याग कर, विलास वैभव से मुँह मोड़कर अपने स्वच्छन्दतावादी विचारों के प्रचार के लिए अपना सर्वस्व होम कर देते थे। सरह नालन्दा विश्वविद्यालय के ब्राह्मण आचार्य थे। उन्होंने अत्यन्त साधारण कुल की अब्राह्मण कन्या को अपनी जीवन संगिनी बनाया। सरह ने सभी पंथों के और स्वयं अपने पंथ के पाखण्डों का खण्डन किया। वह आशावादी विचारक थे। वह योग-वैराग्य से लोगों को विमुख करना चाहते

थे और वह चाहते थे कि लोग सहज स्वाभाविक भोगमय जीवन व्यतीत करें। अतः उनके काव्य में इहलोकपरकता का प्रभाव अधिक है। यद्यपि उनमें मूल रूप से सादगी और सरलता थी, परन्तु बाद में उनके भक्तों ने उनकी रचनाओं में नाना प्रकार के रहस्यों को ढूँढ़ना शुरू किया। इन भक्तों ने सचमुच इनकी भाषा को 'संध्या भाषा' बना डाला।

स्वयंभू और पुष्पदन्त प्रणय और प्रलय के कवि थे। उन्होंने जो आदर्श रखा वह था संसार का सुख-दुख भोगना और मृत्यु को तिनके के समान समझना। हेमचन्द्र सूरि ने 'बाप की भूमड़ी' के लिए अपना सब कुछ मिटा देने के लिए आवाज़ लगायी। भले ही उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण जनता के हित और अधिकार की बात न रही हो, मगर उनके इस नारे में पवित्र देश भक्ति की जो उदात्त भावना थी उससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

स्वयंभू के सम्बन्ध में राहुल जी का कथन है कि "वस्तुतः वह भारत के एक दर्जन अमर कवियों में एक था। स्वयंभू के रामायण और महाभारत दोनों ही विशाल काव्य हैं।" स्वयंभू में समस्त पदों की भरमार नहीं है। उनकी काव्य-कला श्रेष्ठ है। उनका शृंगार, वीर, करुणा सभी रसों का परिपाक तो चिर नवीन है। मीठे, मधुर पद्य, नपी-तुली शब्दावलियाँ, सहज प्रवाह और स्वाभाविक शैली सभी कुछ उत्कृष्ट है। स्वयंभू का प्रकृति चित्रण अद्वितीय है। सुन्दरी नारियों के सामूहिक सौन्दर्य का इतना सुन्दर वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। स्वयंभू ने मन्दोदरी और विभीषण के विलापों का जो वर्णन किया है वह किसी को भी द्रवीभूत कर सकता है। "स्वयंभू ने सीता का जो रूप रावण को जवाब देते और अग्नि परीक्षा के समय चित्रित किया है, पीछे उसका कहीं पता नहीं चलता। मालूम होता है, तुलसी बाबा ने स्वयंभू रामायण को ज़रूर देखा होगा।...मैं समझता हूँ कि तुलसी बाबा ने 'क्वचिदन्यतोपि' से स्वयंभू-रामायण की ओर ही संकेत किया है।" राहुल जी के इस कथन में निस्सन्देह पर्याप्त सार्थकता है। स्वयंभू निश्चित रूप से अपभ्रंश के महान् कवि हुए। अब उनकी रचनाएँ सुलभ हो गयी हैं। इससे उस युग की उत्कृष्टतम साहित्यिक रचनाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

स्वयंभू की ही भांति पुष्पदन्त भी अत्यन्त महत्वपूर्ण कवि हुए। इनका फक्कड़पन, इनकी स्पष्टवादिता और इनका स्वाभिमान इनकी रचनाओं से पदे पदे झलकता है। इनका विरह वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली और सफल है। ये ग़रीबी का भी चित्रण करने में नहीं चूके। इन्होंने सामन्तों की भी खूब खबर ली। उन्होंने अपने देश "उत्तर कुरु की धनी-ग़रीब रहित, दास-राजा शून्य दिव्य मानव वाली भूमि" की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

अब्दुर्रहमान मुल्तान निवासी हिन्दी के प्रथम मुस्लिम कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी मँजी हुई, साफ़-सुथरी प्राञ्जल भाषा, इनके मधुर-मीठे

शब्द, इनकी अत्यन्त सहज, स्वाभाविक भावाभिव्यक्ति सभी इनके काव्य की उत्कृष्टता के प्रमाण हैं।

इन सभी कवियों का विशद अध्ययन-अनुशीलन होना चाहिए। अपभ्रंश के कवियों का अलग-अलग अध्ययन तो हुआ है और हो भी रहा है, मगर न तो अपभ्रंश का सम्पूर्ण प्राप्त साहित्य अभी तक प्रकाशित हूआ है, न उसका सम्पूर्ण इतिहास ही अब तक सामने आया है।

नाथों की परंपरा प्राय: नवीं शताब्दी से ही मिलने लगती है। गोरक्षनाथ (गुरु गोरखनाथ) ही इस साहित्य के आदि रचयिता हैं। नाथों पर तांत्रिक बौद्ध सिद्धाचार्यों का तो प्रभाव है ही, साथ ही, शैव मत का भी गम्भीर प्रभाव है। नाथ पंथ में तंत्र का प्राधान्य निर्विवाद है। नाथों की रचनाओं की भाषा को एकदम अपभ्रंश कहना उचित न होगा। नवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तक नाथों की जो पुष्ट परंपरा चली, उस कालावधि में उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा का भी रूप निखर गया। उनकी भाषा अधिक मात्रा में लोकपरक थी। इनमें एक विचित्र प्रकार का फक्कड़पन, अक्खड़पन और तेजस्विता थी जो सामान्यतया सह्य नहीं मानी जाती थी। इनका प्रभाव कबीर, दादू आदि निर्गुण संतों पर तो था ही, सूफ़ी साधकों के प्रेमाख्यानों में बार-बार इनका वर्णन आता है। बाद के हिन्दी काव्य के स्वर में जो दृढ़ता और ओज मिलता है, उसका स्त्रोत एक बड़े अंश में यह नाथ साहित्य भी है।

हिन्दी साहित्य का यह आदि काल अभी घनाच्छादित है। अनेक ज्योति-रश्मियाँ अनेक दिशाओं से उस घनान्धकार को विदीर्ण कर रही हैं। जैन एवं बौद्ध धर्मपरक जिन साहित्यों का हमने यहाँ चर्चा किया, उनके साथ ही नाथ साहित्य का भी जब पूरा अनुशीलन हो लेगा तभी आदि कालीन हिन्दी साहित्य पर पूरा प्रकाश पड़ेगा और उसका इतिहास भी लिखा जा सकेगा।

हिन्दी साहित्य का यह आदि काल अब इस अर्थ में विवाद-ग्रस्त नहीं रह गया है, कि इस अपभ्रंश भाषा को हिन्दी का आदि कालीन स्वरूप माना जाय अथवा नहीं। इस साहित्य की भावधारा, काव्य रूप और परंपरा का अनुशीलन करने पर किसी भी प्रकार का संशय मन में नहीं रह जाता और हिन्दी साहित्य का यह आदि रूप आँखों के सामने जगमगा उठता है।

कतिपय विद्वान अपभ्रंश और हिन्दी के इस घनिष्ट सम्बन्ध को अब भी अस्वीकार करते हैं। ये विद्वान् यह मानने को तैयार नहीं हैं कि अपभ्रंश का ही विकसित एवं परिवर्तित रूप बाद की हिन्दी है। परन्तु इन विद्वानों को भाषा, भाव, काव्य रूप, सभी दृष्टियों से विचार करना चाहिए। यदि वे विचार करके देखेंगे तो उनको स्वीकार करना पड़ेगा कि अपभ्रंश साहित्य ही हिन्दी साहित्य का आदि रूप है और उस साहित्य की उपेक्षा करके हिन्दी साहित्य के

आदि-काल का इतिहास रचा ही नहीं जा सकता। जिस प्रकार अंग्रेज़ी अथवा फ्रेंच साहित्य का इतिहास लिखते समय प्राचीन अंग्रेजी अथवा प्राचीन फ्रेंच की उपेक्षा नहीं की जा सकती, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखते समय अपभ्रंश साहित्य की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अपभ्रंश साहित्य के बाद डिंगल और पिंगल भाषाओं में लिखे साहित्य का चर्चा आता है। चारणों ने डिंगल भाषा में रचनाएँ लिखीं और भाटों ने पिंगल में। रास ग्रंथों की रचना मूलतः पिंगल भाषा में हुई यद्यपि उनमें डिंगल के बहुत से शब्द व्यवहृत हुए हैं। इस युग को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने वीर गाथा काल कहा है और इसी काल को वह हिन्दी साहित्य का आदिकाल मानते हैं।

मगर वीरगाथाकालीन साहित्य की जो जाँच-परख पिछले वर्षों में हुई है उससे एक बात यह सिद्ध हुई कि उनमें से कौन-सा मूलतः श्रृंगार रस प्रधान है और कौन-सा वीर रस प्रधान हैं, यह निर्णय कठिन है। दूसरी बात यह कि इन रचनाओं की प्राचीनता संदिग्ध है। अधिकतर विद्वानों का मत है कि ये रचनाएँ बहुत बाद की हैं। अतः इस युग को वीर गाथा काल कहना उपयुक्त नहीं है। साथ ही, जब ये रचनाएँ प्राचीन नहीं हैं तो इन्हें हिन्दी साहित्य की आदि-कालीन रचना के रूप में भी स्थान नहीं मिलता। फिर, विवश होकर हिन्दी साहित्य के आदि काल के लिए हमें अपभ्रंश को ही मान्यता देनी पड़ेगी।

वीरगाथाकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन अध्ययन और अनुशीलन हो रहा है। जहाँ तक इस काल के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल की मान्यता का प्रश्न है, वह तो अब अस्वीकृत हो ही चुकी है, परन्तु यहाँ शून्य की सी जो स्थिति पैदा हो जाएगी, उसका क्या होगा? इन तीन-चार सौ वर्षों के इतिहास की पुनर्रचना अनिवार्य हो उठी है। संवत् १००० से चौदहवीं शताब्दी विक्रमी (विद्यापति के काल) तक का इतिहास पुर्नरचित होकर सामने आ जाय तो यह शून्य समाप्त हो।

विद्यापति के बाद से तो हिन्दी साहित्य का क्रम बद्ध इतिहास मिलता है। परन्तु इस काल से रीति काल तक का जो मध्ययुगीन साहित्य है, उसका वर्गीकरण भी पूर्णतया वैज्ञानिक नहीं हुआ है। भक्ति साहित्य का स्थान तो किसी क़दर हिन्दी साहित्य के इतिहास में सुनिश्चित हो गया है, परन्तु सन्त और सूफ़ी साहित्य का जो कुछ अनुशीलन और मूल्यांकन हो चुका है उसको दृष्टि में रखते हुए इन साहित्यों को हिन्दी साहित्य में पुनर्प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता बनी हुई है। संत और सूफी साहित्य का गहन और विस्तृत एवं व्यापक अध्ययन हो चुका है। उसे संजोकर इतिहास के क्रम में रखा जाय, यह कार्य अब हो ही जाना जाना चाहिए।

भक्ति काल के साहित्य की उत्कृष्टता और महानता को देखकर उस काल

का स्वर्ण काल भी कहा जाता है। इस काल में हमारा साहित्यिक उत्कर्ष अपनी सीमा तक पहुँच गया। इस काल में भक्ति साहित्य की सगुण और निर्गुण धाराओं और ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी शाखाओं का पूर्ण विकास हुआ। भक्ति, संत और सूफ़ी धाराओं की उच्छल तरंगें प्रवाहित हुईं। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी के नेतृत्व में हिन्दी काव्य प्रवाह को सुनिश्चित दिशा मिली, उसकी गुरुता, गम्भीरता से लोग परिचित हुए, उसके आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और कलात्मक पक्षों को संपूर्ण समृद्धि प्राप्त हुई। सामाजिक जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति आध्यात्मिक स्तर पर इसी युग में हुई। ज्ञान मार्गियों ने ईश्वर के निर्गुण रूप पर बल दिया और सामान्य जन को संसार के माया जाल की ओर से विमुख होकर परब्रह्म की ओर अभिमुख होने की प्रेरणा दी। संत साहित्य की यह परंपरा कितनी पुष्ट और गौरव गरिमापूर्ण थी, अब इसका अनुमान लोगों को हो गया है। प्रेम मार्गियों ने अत्यन्त मानवीय स्तर पर उतर कर प्रेम की बातें कहीं और अपने आख्यानों को लोक प्रचलित कथानकों का आधार लेकर निर्मित किया। उनकी आध्यात्मिकता अधिक सहज और बोधगम्य थी क्योंकि उसका आधार वह प्रेम था जिससे जनसामान्य परिचित था। सगुणोपासक भक्त कवियों ने राम और कृष्ण का आधार लेकर जिस साहित्य की सर्जना की वह अपनी उदात्तता, अपनी पावनता, अपनी गम्भीरता, अपनी प्रभावोत्पादकता, अपनी प्रयोजनशीलता, अपनी कलात्मकता, अपनी भावप्रवणता और अपने रचना-सौष्ठव के कारण इतना लोकप्रिय हुआ कि वह जन-जन का कण्ठहार बन गया। उसी साहित्य के कारण आज सारा देश राम-कृष्ण-मय हो गया है। भक्ति साहित्य जीवन का, जीवन के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष का साहित्य है।

भक्ति साहित्य उन सारी विशेषताओं को अभिव्यक्त करता है, उन सारे मूल्यों की स्थापना और पुनर्स्थापना करता है जिनके आधार पर, जिनके सहारे हमारे जातीय जीवन का निर्माण हुआ है, रचना हुई है। हमारे जीवन में जो कुछ सत्य है, शिव है, सुन्दर है उसकी अन्यतम अभिव्यक्ति भक्ति साहित्य में हुई। वह केवल वार्धक्य का साहित्य नहीं है। वह प्रौढ़ता का, पूर्णता का, जीवन की महानतम उपलब्धियों का साहित्य है। वह ज्ञान का साहित्य है, भक्ति, श्रद्धा, स्नेह और प्रेम का साहित्य है, हार्दिक सहानुभूति, संवेदना और करुणा का साहित्य है, वह मनोरम कल्पनाओं की साकारता का साहित्य है, वह श्रेष्ठ, श्रेयस्कर साहित्य है।

इसी महान् साहित्य को उत्तराधिकार में प्राप्त करके, इसी समृद्धिशाली वैभव को आत्मसात् करके, इसी गौरवशाली परंपरा को सिर माथे चढ़ा कर रीतिकालीन साहित्य का सृजन हुआ। इस साहित्य को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा उनके जैसे अनेक विद्वानों ने रीति साहित्य कहा। आज भी विद्वानों का

एक वर्ग इस साहित्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, हीन और हेय समझता है। परन्तु यह दृष्टि ग़लत है। यह मूल्यांकन निर्दोष नहीं है। विद्वानों और समर्थ, विवेकशील आलोचकों का बहुमत अब इस साहित्य की महानता और कलात्मकता को स्वीकार करने लगा है।

जिस प्रकार भक्ति साहित्य सामाजिक जीवन की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है, ठीक उसी प्रकार रीतिकालीन साहित्य सामाजिक जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। रीतिकाल को शृंगार काल, अलंकार काल आदि नामों से भी अभिहित किया गया है। मगर ये सारे नाम केवल आंशिक सत्य को ही अभिव्यक्त करते हैं। यदि इस काल के प्रशस्ति-मूलक एवं तथाकथित अश्लील अंशों को छोड़ दिया जाय तो भी उस लम्बे काल में रचित ऐसी विपुल काव्य सामग्री मिलती है जो किसी भी दृष्टि से भक्ति साहित्य से हीन अथवा निम्नस्तरीय नहीं है।

रीतिकालीन साहित्य में काव्य शास्त्रों के सिद्धान्तों का विवेकपूर्ण-प्रतिपालन है, उसमें अद्‌भुत् अलंकरण और रचाव है। उसमें भावों की सूक्ष्मता है, मनोवैज्ञानिक सत्यों की अनन्त, अनवरत खोज और प्राप्ति है। उसमें इहलौकिक जीवन की दिव्यतम झांकियाँ हैं। उसमें गंगा की लहरों की भाँति गतिशीलता और प्राञ्जलता और शीतलता है—ऐसी शीतलता जिसे प्राप्त कर हमारे तन मन प्राण जुड़ा जाते हैं। उसमें कौमार्य का, तारुण्य का निष्कलुष उल्लास, ओज और उद्दाम वेग है, उसमें यौवन-जनित शृंगारिकता और रंगीनी भी है। उसमें वह सब कुछ है जो हमारे इहलौकिक जीवन को सुखी, समृद्ध, संपन्न, सुन्दर बनाता है। जीवन की इहलौकिकता, जीवन की आध्यात्मिकता से हीन नहीं है। इहलौकिक जीवन को सौन्दर्य-मण्डित करने वाली, समृद्धिशाली, उत्कृष्ट और पुष्ट बनाने वाली कला भी हीन नहीं हो सकती। ऐसी विधा भी हीन नहीं हो सकती। ऐसा साहित्य अवश्य ही उन मर्यादाओं से मण्डित, अलंकारों से सुसज्जित और प्रेरणाओं से अनुप्राणित होगा जो हमारे सामाजिक जीवन को प्राणवन्त बनाती हैं। प्रस्तुत संग्रह में इस युग के कवियों की रचनाओं को अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत संग्रह में दक्खिनी हिन्दी के कुछ कवियों को छोड़कर बाक़ी सब की रचनाओं के चुने हुए अंश दे दिए गए हैं। दक्खिनी हिन्दी के कवियों को इतना स्थान देने का विशेष कारण है। दक्खिनी हिन्दी की भाषा कौरवी है। कौरवी से ही आधुनिक खड़ी बोली का विकास हुआ। अब तक अमीर खुसरो को खड़ी बोली का प्रथम कवि माना जाता था। परन्तु अब इस धारणा को बदल

देने के अनेक उपयुक्त कारण सामने आ गए हैं। दक्खिनी हिन्दी की काव्य धारा का अनुशीलन इनमें से एक मुख्य कारण है।

राहुल जी का कथन है, "दक्खिनी हिन्दी साहित्य की ऐसी कड़ी है, जिसको भुलाया नहीं जा सकता। खुसरो को खड़ी (कौरवी) हिन्दी का प्रथम कवि बतलाया जाता है, पर इसमें सन्देह है।...खड़ी हिन्दी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी के कवि थे। एक ओर उन्होंने बोल-चाल की कौरवी को साहित्य-भाषा का रूप दिया, तो दूसरी तरफ उनकी कृतियों ने उर्दू कविता का प्रारम्भ किया। हमारी हिन्दी उर्दू की, विशेष तौर से से गद्य की, ऋणी है।"

दक्खिनी का जो स्वरूप हमें दक्खिनी हिन्दी के कवियों की रचनाओं में मिलता है, वह निश्चय ही ऐसा है जिसके आधार पर आगे चल कर खड़ी हिन्दी का निर्माण हुआ। ये कवि अपनी भाषा को 'हिन्दी' ही कहते थे। अशरफ़ (१५०३ ई०) ने कहा है—

'बाचा कीना हिन्दवी में, क़िस्सा मक़तल शाह हुसेन।'

इसी प्रकार बुरहानुद्दीन जानम् (१५२२ ई०) ने लिखा है—

यह सब बोलूं हिन्दी बोल, पनतू अनभौ सेतों खोल।
ऐब न राखे हिन्दी बोल, माने तू चख देखें खोल।
हिन्दी बोली किया बखान, जेकर फ़साद अथा मुज ज्ञान।

खड़ी बोली का यह प्रारम्भिक रूप हमें दक्खिनी हिन्दी के आरम्भिक कवियों की रचनाओं में मिलता है। बाद के कवियों में यह रूप अधिकाधिक मात्रा में निखरता गया है। दक्खिनी हिन्दी के इन कवियों की एक लम्बी परंपरा रही है और हिन्दी काव्य को इस परंपरा के कवियों से साहाय्य और बल मिला है। उत्तर में जिस समय व्रज और अवधी का विकास हो रहा था उस समय दक्षिण में खड़ी बोली के इस विशिष्ट रूप की रचना हो रही थी। इन कवियों में से अनेक ऐसे हुए जिनकी रचनाएँ निस्सन्देह उच्च कोटि की हुईं और उनको स्थायी साहित्य में स्थान मिला। हिन्दी के चतुर्मुखी विकास में दक्खिनी हिन्दी की इस कड़ी के जुड़ जाने से जो व्यापकता आ गयी है, उसका महत्व स्वयंसिद्ध है।

इसीलिए दक्खिनी हिन्दी के अधिकांश कवियों की चुनी हुई रचनाओं को भी इस संग्रह में स्थान दिया गया है। इस दक्खिनी हिन्दी के साहित्य का महत्व अब सर्वत्र स्वीकारा जाने लगा है। मगर इन कवियों के साथ अभी तक पूरा न्याय नहीं हो पाया है। राहुल जी प्रभृति विद्वानों ने इनकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। इनकी रचनाओं का एक संग्रह भी राहुल जी ने प्रकाशित किया है। अब उस साहित्य का और अधिक विशद एवं गम्भीर अध्ययन, अनुशीलन हो रहा है। यह शुभ बात है।

प्रस्तुत काव्य प्रवाह में 'ढोला मारु रा दूहा' के कुछ अंशों को भी सम्मिलित किया गया है। इन दूहों के मूल रचनाकार अथवा रचनाकारों का पता नहीं है। बाद में संवत् १६०० के आसपास जेसलमेर के एक जैन कवि कुशललाभ ने तब तक प्राप्त दोहों को एकत्र किया और टूटी कड़ियों को जोड़कर कथासूत्र को ठीक कर देने की दृष्टि से बीच-बीच में चौपाइयाँ पिरो दीं। यह काव्य कम-से-कम पाँच सौ वर्ष प्राचीन अवश्य है।

डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा के शब्दों में "ढोला मारु रा दूहा' राजस्थानी भाषा का एक प्रसिद्ध काव्य है।...यह काव्य भाषा एवं भाव दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।...यह एक विचित्र (रोमांटिक) प्रेम गाथा है और इसमें मानव हृदय के कोमल मनोभावों एवं वाह्य प्रकृति के मनोहर चित्र अंकित किए गए हैं।" 'ढोला मारु रा दूहा' के कुछ अंशों को काव्य प्रवाह में जोड़ देना आवश्यक प्रतीत हुआ। इन दोहों को पढ़ कर पाठक राजस्थानी जीवन की कोमल, सूक्ष्म, मनोहारी झांकियाँ देख सकेंगे।

इस संग्रह में गुजरात और महाराष्ट्र तथा कई अन्य क्षेत्रों के कुछ कवियों की रचनाओं को स्थान नहीं दिया जा सका है। सामग्री की कमी तथा अन्य विवशताओं के कारण यह दोष रह गया है। अगले संस्करण में जहाँ अन्य छूटे हुए कवियों को भी स्थान देने का प्रयास किया जाएगा, वहीं इन कवियों की भी उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा, ऐसा आश्वासन हमें मिल चुका है।

मैं शुभश्री पुष्पा स्वरूप को उनके अध्यवसाय, सहृदयता, सुरुचि, परिश्रम और नीर-क्षीर विवेक के लिए साधुवाद देता हूँ। उनका परिश्रम सफल हुआ और उनका यह ग्रंथ इस रूप में प्रकाशित हो सका, यह उनके लिए संतोष और हमारे लिए गौरव की बात है।

—श्रीकृष्ण दास

आभार

'हिन्दी काव्यप्रवाह' के इस खण्ड में सिद्ध सरहपा से लेकर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पिता गिरिधर दास तक की रचनाओं के महत्वपूर्ण, आकर्षक, हृदय-ग्राही और प्रतिनिधि अंशों का संकलन किया गया है। यह संकलन इस अर्थ में असामान्य है कि इसमें कुछ ऐसी धाराओं के प्रतिनिधि कवियों की चुनी हुई रचनाओं का भी समावेश है जो प्रायः इस प्रकार के संकलनों में स्थान नहीं पाते रहे हैं। वास्तव में पिछले तीन-चार दशकों में हिन्दी काव्य साहित्य को समृद्ध करने वाली जिन परंपराओं, रचनाओं और रचनाकारों के सम्बन्ध में शोध हुआ है उनको ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के अब तक के लिखित इतिहास प्रायः अपूर्ण से प्रतीत होते हैं। भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों और अंचलों में हिन्दी के बहुत से ऐसे कवि हुए हैं जिन्हें अभी तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्थान नहीं मिल सका, है, यद्यपि अलग अलग इनके सम्बन्ध में बहुत काम हुआ है। इन कवियों की रचनाओं को सम्मिलित करने से प्रस्तुत संग्रह की विशेषता बढ़ गयी है।

हिन्दी साहित्य का आदि काल अब भी विवाद का विषय बना हुआ है और अब भी विद्वानों का एक दल है जो अपभ्रंश में रचित सिद्ध, जैन या नाथ साहित्य को हिन्दी साहित्य का आदिकालीन रूप नहीं मानता। हिन्दी साहित्य के आदि काल के सम्बन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपनी लौह लेखनी से जो कुछ लिख गये हैं वह अब भी उनके लिए पत्थर की लकीर बनी हुई है।

परन्तु प्रसन्नता की बात है कि विद्वानों और साहित्य मर्मज्ञ इतिहासकारों का एक बहुत बड़ा दल अब आदरणीय शुक्ल जी की मान्यताओं को त्याग चुका है और सिद्ध, जैन एवं नाथ साहित्य हिन्दी साहित्य की आदिकालीन रचनाओं के रूप में स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

यह भी संतोष का विषय है कि जिस रीतिकालीन साहित्य की भर्त्सना करते लोग थकते न थे अब उस रीतिकालीन साहित्य का पुनर्मूल्यांकन हो रहा है। इसी तरह दक्खिनी हिन्दी काव्य साहित्य को भी हिन्दी काव्य परंपरा का अविभाज्य अंग मान लिया गया है। उधर राजस्थान के जैन भाण्डारों से भी बहुत सा साहित्य प्राप्त हुआ है और उनका अनुशीलन और शोध हो रहा है। गुजरात और महाराष्ट्र में भी ऐसे अनेक कवियों का पता चला है जिनकी जान-कारी हमें अब तक नहीं रही है। आदिकाल और भक्तिकाल के कवियों की रचनाओं के साथ ही हमने यथासंभव रीतिकाल के प्रायः सभी प्रतिनिधि

कवियों की चुनी हुई रचनाओं को इस संग्रह में सम्मिलित किया है। दक्खिनी हिन्दी के कवियों को भी हमने इस संग्रह में यथास्थान प्रतिष्ठित किया है। इस प्रकार यह संग्रह प्रायः पूर्ण सा हो गया है। हमें दुःख है कि स्थानाभाव तथा अनेक दूसरी कठिनाइयों और अनिवार्य कारणों से कुछ कवि इस संग्रह में सम्मिलित होने से रह गये हैं।

संकलन तैयार करते समय हमारे सामने पालग्रेव कृत 'दि गोल्डेन ट्रेज़री' का ही मानदण्ड और स्वरूप सदा बना रहा। कहाँ तक उस मानदण्ड को इस संग्रह में कायम रखने में मुझे सफलता मिली, यह मैं नहीं कह सकती।

इस संग्रह की त्रुटियों और कमियों की जानकारी मुझे भली भाँति है; फिर भी यथाशक्ति मैंने इस संग्रह को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया। सुधी, विवेकशील, मर्मज्ञ, रसज्ञ पाठकों को यदि मेरा यह संग्रह पसंद आया तो मुझे बहुत संतोष होगा।

संग्रह तैयार करने में अनेक ग्रन्थों से मुझे महत्वपूर्ण सहायता मिली है। मैं उन ग्रन्थों के प्रणेताओं को अपना विनम्र अभिवादन भेजती हूँ और उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। संग्रह में जिन प्रणम्य कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है उनको मैं अपनी विनीत श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड और उसके निदेशक श्री आलोक मित्र ने इस संग्रह को प्रस्तुत करके हिन्दी साहित्य की यत्किंचित सेवा करने का जो सुअवसर मुझे प्रदान किया इसके लिए मैं उनके प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ। रचनाओं का चुनाव करने में मुझे अनेक स्वजनों और गुरुजनों और सुरुचिसंपन्न साहित्य मर्मज्ञों का सहयोग मिला। पाण्डुलिपि तैयार करने में तो अनिवार्य रूप से मुझे अपने पति श्री बिशन स्वरूप से सहायता मिली। परन्तु इन स्वजनों के प्रति आभार कैसे, किन शब्दों में प्रकट करूँ?

'हिन्दी काव्य प्रवाह' का कार्य करते समय मुझे अक्सर अप्रत्याशित बाधाओं, निराशा की घड़ियों और पराजय की भावना का सामना करना पड़ा। अक्सर ऐसा लगा कि अब आगे काम बढ़ न सकेगा। निराशा, और अवसाद की इन घड़ियों में यदि मुझे अपने बाबू जी से प्रेरणा न मिलती, शक्ति न मिलती तो यह कार्य पूरा न हो पाता। इस ग्रंथ का संपादन करके उन्होंने इसे जो भव्य रूप प्रदान कर दिया है, इसके लिए मैं उनके आगे प्रणत हूँ।

विजय और उल्लास के प्राणद वातावरण में यह अनुष्ठान पूरा हो रहा है। स्नेही, रसिक पाठकों की सेवा में 'हिन्दी काव्य प्रवाह' उपस्थित है। इसे स्वीकार करके वे मेरा उत्साह बढ़ाएंगे।

विजयादशमी
१५ अक्टूबर १९६४

—पुष्पा स्वरूप

अनुक्रम

——:o:——

हिन्दी काव्य प्रवाह

सरहपा

पाखंड खंडन

ब्राह्मणहिं ना जानन्ता भेद । यों ही पढ़ेउ ये चारो वेद ।
माटि पानि कुश लिए पढ़न्त । घरही बइठी अग्नि होमन्त ।
कार्य बिना ही हुतवह होमें । आंखि डहावै कड़ुए धूएँ ।
एकदण्डि त्रिदण्डी भगवा वेसे । ना होइहि बिनु हंस उपदेशे ।
मिथ्यहि जग बाहेऊ भूले । धर्म अधर्म न जानेउ तुल्यें ।
आचरियेहिं लपेटी छारा । सीसहिं ढोअत ये जट - भारा ।
घरहीं बइसे दीपक बारी । कोनहिं बइसे घन्टा चाली ।
आंखि निवेशी आसन बाँधा । कर्णौं खुसखुसाय जन मंदा ।
रंडी मुंडी अन्यहुँ भेसें । देखीयत दच्छिना उदेसें ।
दीर्घनखा जो मलिने भेसे । नंगा होइ • उपाड़िय केशे ।
क्षपणक ज्ञान विडंबित भेसे । अपना बाहर मोक्ष गवेषे ।

सहज मार्ग

जरइ मरइ उपजइ बध्यायइ । तहँ लय होइ महासुख सिध्यइ ।
सरहें गहन गह्वर मग कहिया । पशू - लोक निर्बोध जिमि रहिया ।
ध्यान - रहित की कीजै ध्याने । जो अवाक् तेहि, काह बखाने ।
भव-मुद्रहिं जग सकल बहायेउ । निज स्वभाव ना काहुहि साधेउ ।
मंत्र न तंत्र न ध्येय न धारण । सर्वहु मूढ़ रे ! विभ्रम कारण ।
निर्मल चित्त न ध्याने खींचहु । सुभ अछते न आपन झगड़हु ।

× × ×

नाद न विन्दु न रवि-शशि-मण्डल । चित्ता राग स्वभावे मुंचल ।
ऋजु रे ऋजु छांडि ना लेहु बंक । नियरे बोधि न जाहु रे लंक ।
हाथेहि कंकण ना लेहु दर्पण । अपने आपा बूझहु निज मन ।
पारे - वारे सोई मादई । दुर्जन - संगे अवसर जाई ।
वाम दहिन जो खाल - विखाला । सरह भनै बाप ऋज बाटे भइला ।

गुरु महिमा

गुरू उपदेशे अमृत-रस, धाइ न पीयेउ जेहि ।
बहु - शास्त्रार्थ - मरूस्थलहिं, तृषितै मरेऊ तेहि ।।
चित्त अचित्तिहिं परिहरहु, तिमि होवहु जिमि बाल ।
गुरू-वचने दृढ़ भक्ति करु, ज्यों होइ सहज उलास ।।

भोग में निर्वाण

खाते पीते सुखहिं रमन्ते, नित्य पूर्ण चक्कहू भरन्ते ।
अइस धर्म सिध्यइ परलोका, नाथ पाइ दलिया भयलोका ।।
जहँ मन पवन न संचरइ, रवि शशि नाहिं प्रवेश ।
तहँ मूढ़ ! चित्त विश्राम करु, सरह कहेंउ उपदेश ।।
आदि न अन्त न मध्य नहिं, नहिं भव नहिं निर्वाण ।
एहु सो परम महासुख, नहिं पद नहिं अप्पान ।।

काया तीर्थ

एहिं सों सुरसरि जमुना, एहिं सो गंगा सागर ।
यहि प्रयाग वाराणसी, यहिं सो चन्द्र दिवाकर ।।
क्षेत्र - पीठ - उपपीठ, एहीं मैं भ्रमउँ बाहिरा ।
देहा सदृशा तीर्थ, नहीं मैं अन्यहि देखा ।।
वन - पद्मिनि - दल - कमल - गन्ध - केसर - वर - नाले ।
छाड़हु द्वैतहि न करहु शोषण, मूढ़ ! न लागहु आरे ।।
काय तीर्थ क्षय जाय, पूछहु कुल हीनहँ ।
ब्रह्म - विष्णु त्रैलोक्य, सकलहिं निलीन जहँ ।।
बुद्धि विनासै मन मरै, जहँ टूटै अभिमान ।
सो मायामय परम फल, तहँ की बांधिय ध्यान ।।

शबरपा

ऊँचा ऊँचा पर्वत, तहँ बसै शबरी बाली ।
मोर - पिन्छ पहिरले शबरी ग्रीवा गुंजा - माली ।।
उन्मत शबरो पागल शबरो ना करु गुली-गुहाड़ी ।
तोहार निज घरनी नामे सहज सुन्दरी ।।
नाना तरुवर मौरिल रे गगन ते लागल डारी ।
एकली शबरी यहि बन हींड़ै कर्ण कुंडल वज्रधारी ।।

त्रिधातु-खाटे पड़ल शबरो महासुखे सेज छाइल।
शबर भुजंग निरात्मा दारी देखत राति बिताइल॥
चित्त ताँबूला महासुख कपूर खाई।
शून्य-नैरात्मा कंठे लेई महासुखे राति बिताई॥
गुरू - वाक् - पुंज धनुष निज - मन वाणे।
एक शर संधाने बिन्धहु परम निर्वाणे॥
उन्मत शबरा गुरूआ रोषे गिरिवर शिखरे साँधी।
पइठत शबरहिं लौटाइब कैसे॥

स्वयंभू

रावण रामहु जुद्धे जो। सोइ सुनहु रामायण॥
यदि लोग सुजन पंडित अहैं। शब्दार्थ - शास्त्र परिचित अहैं॥
की चित्तेहिं ग्रहण न सक्कियाइँ। वासे हूँ होहिं न रंजियाइँ॥
तो कौन ग्रहण हमरे सद्दशहिं। व्याकरण - विहून एतादृशहिं॥
कवि अहे अनेक - भेद - भरिया। जे सुजन स्वभाषहिं आचरिया॥
हौं किछुअ न जानउँ मूर्ख-मने। निज बुद्धि प्रकासेउँ तोउ जने॥
जो सकलेहिं त्रिभुवनें विस्तरिऊ। आरंभेउ पुनि राघव - चरिऊ॥

पावस

घत्ता--सीय स--लक्ष्मण दाशरथि, तरुवर-मूले बैठेउँ जबहीं।
पसरै सुकविहिं काव्य जिमि, मेघ - जाल गगनंगणे जबहीं॥
पसरै जिमि बुद्धी बहु-ज्ञानहँ। पसरै जिमि पापा पापिष्ठहँ॥
पसरै जिमि धर्मा धर्मिष्ठहँ। पसरै जिमि ज्योत्स्ना मृगवाहहँ॥
पसरै जिमि कीर्ती जगनाथहँ। पसरै जिमि चिन्ता धनहीनहँ॥
पसरै जिमि कीर्ती सुकुलीनहँ। पसरै जिमि किलेश निहीनहँ।
पसरै जिमि शब्दा सुर तूर्यहँ। पसरै जिमि राशि नभे सूरहँ॥
पसरै जिमि दावाग्नि बनांतरें। पसरेउ मेघ-जाल तिमि अंबरे॥
तड़ि तड़ तड़ै पड़ै घन गरजै। जानकि रामहँ शरणहिं ब्रजै॥
घत्ता--अमर महाधनु गहि करै, मेघ गयंदे चढ़ेउ यशलुब्धा।
ग्रीष्म नराधिप कहँ ऊपर, पावस-राज केर दल सज्जा॥

वसंत

कुब्बर नगर पहूँचेउ जब्बहिं। फागुन-मास प्रबोलेउ तब्बहिं।
पइसु वसंत - राव आनन्दे। कोइल-कलकल मंगल - शब्दे।

अलि-मिथुनेहिं बन्दीहिं पढ़न्तेहिं । बर्हिन वामनेहिं नाचंतेहि ।
आन्दोलित - शत - तोरणवारेहिं । ढुक्कु वसंत अनेक - प्रकारहिं ।
कहिं कहिं आम्रवनहिं पल्लवितहिं । नव किसलय - फल फूलुद्धवितहिं ।
कहिं कहिं गिरशिखरा विच्छाया । खल - मुख इव मसि वर्णहिं लाया ।
कहिं कहिं माधव-मासहि मेदिनि । प्रिय विरहेहिं जनु श्वगही कामिनि ।
कहिं कहिं गावै बाजै मँदिर । नर मिथुनेहिं प्रचानेउँ गोंदल ।
सो तेहिं नगरहिं उत्तर पासें । जन मनहर योजन उद्देशें ।
दीख वसंत - तिलक उद्याना । सज्जन हियहि यथा अप्रमाणा ।

संध्या वर्णन

उपहसै सन्ध्या - राग सुख बंधुर । विद्रुमक - अधर, मौक्तिक दंतुर ।
छुवइ इव मस्तक मेरु महीधर । तुम्हरेउ हमरेउ कवन पती घर ।
जनु चंद्रकान्त सलिलाभिषिक्त । अभिषेक-प्रणालि' व स्पृशित-चित्त ।
जनु विद्रुम-मरकत-कान्तियाहि । रहु गगन इव सुरधनु पंक्तियाहि ।
जनु इन्द्रनील - माला - मसीहि । आलिखइ बन्द भित्तीहि ताहि ।
जहँ पद्मराग-प्रभु-तनु विभाहिं । रहु अभिनव संध्या राग न्याइँ ।
जहँ सूर्य कान्ति च्छोइज्जमान । गउ उत्तर - देसहिं न्याइँ भानु ।
जहँ चन्द्रकान्तमणि चन्द्रियाव । नव चन्द्राभासे चन्द्रिकाव ।
अँचरजेउ कुमार च्यवंत एव । बहु चन्द्रीभूतउ गगन केम ।
पेखियवउ मुक्ताफल - निभाय । गिरि निर्भर भनि धोवन्त पाय ।

वन-वर्णन

तँह तेहिहि सुन्दर सु - प्रभो । आरण्य महागज - युक्त रहो ।
धुर लक्ष्मण रथवरे दाशरथी । सुर लीलहिं पुनि विहरंत मही ।
सो कृष्ण-वेण-नदि मृग-सहिता । वन कहउँ निहारिय मत्तगजा ।
कहिं कहिं पंचानन गिरि-गुहाहिं । मुक्तावलि यहिं विकिरंति नभहिं ।
कहिं कहिं उड्डाएउ शकुन - शता । जनु अटविहिं उड्डै वियद्-गता ।
कहिं कहिं कलापि नाचंत वने । न्याइँ नाट्या वा जुवति जने ।
कहिं कहिं हरिना भय - भीताइँ । संसारहु जिमि पापहि जाइँ ।
कहिं कहिं नानाविध वृक्षराजि । जनु महि-कुलवधुवहि रोमराजि ।

मातृभूमि वन्दना

धूवंत धवल - ध्वज - वट - प्रवरू, प्रिये ! पेखु अयोध्यापुरि नगरू ।
घत्ता--फुर जन्म-भूमि जननीहिं सम, आन विभूषित जिनवरेहिं ।
पुरि वंदि सिर स्वयंभू करेहि, जनकतनय - हरि - हलधरेहिं ।।

सीता

हरि प्रहरंत प्रशंसेउ जव्वे। जानकि नयन कटाक्षेउ तव्वे।
सुकवि-सुकाव्य सुसंधि संधिया। सुपद-सुवचन-सुशब्द-सुबंधिय।
थिर-कलहंस-गमन गति मंथर। कृश मंझारे नितंब सुविस्तर।
रोमावली मकरघर तीनी। जनु पिपीलिका पंक्ति-विलीनी।
अभिनव हूड-पिंड पीनस्तन। जनु मदकल-उरु-खंभ-निजीतन।
राजै वदन-कमल अकलंकउ। जनु मानससर विकसेउ पंकज।
सुललित-लोचन ललित-प्रसन्ना। जनु वरियात मिलेउ वर-कन्या।
डोलै पीठिहिं वेणि महाइनि। चन्दन-लतहिं ललै जनु नागिनि।
घत्ता—का वहु जल्पनेहिं तिहुँ, भवनहि जो जो चंगा।
सो सो मिलाईया जनु, दैवें निरमेउ अंगा।
संचल्लेउँ विंध्या पथनयेहिं। लक्खिज्जै जानकि रामएहिं।
प्रफ्फुल्लित-धवल-कमल-वदनी। इंदीवर-दल-दीरघ नयनी।
माँझे क्षीण नितम्ब-वक्ष गरुआ। जो नयन कटाक्षिय जनक सुता।
उन्मादन मदनीहें मोदनेहिं। वाणेहिं संदीपन शोषणेहिं।
आक्रमिया सालिय मूर्छियऊ। पुनि 'दुःख दुःख' उन्मूर्छियऊ।
कर मोड़ै अंग कंपै हँसई। आश्वसै श्वसै पुनि निःश्वसई।
घत्ता—मकरध्वज-शर-जर्जरित-तनु, प्रभु ईमि प्रजल्पेउ कुपित-मना।
वलवंतए मवसं वन वसहू, उद्दारे जानहु यासु ममा॥

जलक्रीड़ा

घत्ता—तहँ सर-नभ-तले स्व स्व-कलत्रेहिं हरि-हलधरा।
रोहिणि रानिहिं जनु प्र-रमेउ चंद्र-दिवाकरा॥
तहँ तेहि हि सर सलिल तरंता। संचरहीं चामीकर-यंत्रा।
नारि-विमाना स्वर्गहँ पड़िया। वर्ण-विचित्र-रत्न-वीजडिया।
नाहि रतन जहिं जंतु न गढ़ियउ। नाहि जंतु जहिं मिथुन न चढ़ियउ।
नाहि मिथुन जहँ नेह न बढियउ। नाहि नेह जहँ सुरत न बढियउ।
तहँ नर-नारि-युवति जलक्रीडैं। क्रीडंती नहाइँ सुरलीलैं।
सलिल कराग्रहिं उच्छालन्तैं। मुरज-वाद्य थापा दरसन्तैं।
स्खलितहिं वलितहिं अभिनव-गीतेहिं। बद्धैं सुरत-समन्वित तेजहिं।
छन्देहिं तालहिं वहुलय-भंगहिं। करुण-क्षेपी नाना-भंगहिं।
घत्ता—चक्षु सरागउ श्रृङ्गार-हार-दरसावन।
पुष्परज्जु युध्यंत, जलक्रीडनउ सलखावन।
जले जय-जय-शब्देहिं नहाएँ नर। पुनि निकसे हल-सारंगधर।

प्रेमावस्था

सीता देह ऋद्धि पावंतिह । एक दिवस दर्पण जोयंतिह ।
प्रतिमा छलेइ महाभयकारू । ऐसो वेस निहारेउ न्यारु ।
जनकतनया सहसाही भागी । सिंहागमनें कुरंगिव लागी ।
"हा हा माइ" भनंतिहिं सखियहिं । कलकल कियेउ, भागु गहिगहियहिं ।
आमरखी क्रोधेऊ ! किंकर । उत्क्षिप इव करवाल भयंकर ।
मिलब तेहि कहँ कहउँ न मारिउ । लेबि अर्धचंद्रेंहि निस्सारिउ ।
घत्ता--गउ सव राघव-देव-ऋषि, पटे प्रतिम लिखब सीना तनिया ।
दरसायेंउ भामंडलहुँ, युक्ति नारि नर धारणिया ।
देखु जोहि प्रति-प्रतिम कुमारा । पंचहिं शरहि वेधु जन मारा ।
सुखेउ वदन घूमिया ललाटउ । कँपेउ अंग मोडेंउ भुजडालउ ।
बंधेउ केश मरोड़िय वत्था । दरसायेउ दश कामावस्था ।
चित्त प्रथम स्थानंतरें लागै । दुसरे प्रियमुख दर्शन मांगै ।
तिसरे श्वसै दीर्घ-निःश्वसै । कँदै चतुर्थे करविन्यासैं ।
पंचम दाहै अंग, न बोलइ । छठयें मुखहिं न काहुहि देखइ ।
सतयें थान न ग्रास लईजै । अठयें गमनोन्मादे भिज्जै ।
नवयें प्राणसंदेहहु ढूकै । दसयें मरब न कथमपि चूकै ।
घत्ता--कहेउ नरेन्द्रहिं किंकरिन्ह, प्रभु ! दुष्कर जीवै पुत्र तव ।
हा ताहिहिं कन्यहिं कारणे, सो दसई कामावस्थ गउ ॥

मिलन

"अहो अहो परमेश्वर ! दाशरथी । पाछे लंकापुरी पइसैही ।
मिलु तब भट्टारक जानकिहीं । तरु दुस्तर विरह महानदिहीं ।
चढु त्रिजग विभूषण कुंभतले । मद-परिमल मेलायेउ भसले" ।
घत्ता--सो सुनयहि हलधर चक्रधरु, सीतहिं पास समुच-चलिया ।
अभिषेक समय श्रीदेवियहूँ, दोउ दिग्गज न्याई आमिलिया ॥
वैदेहि दीख हरि हलधरेहिं । जनु चंद्रलेख विधु जलधरेहिं ।
जनु शरद - लक्ष्मि पंकज - सरेहिं । जनु पूर्णो विधु पक्षांतरेहिं ।
जनु सुरसरि हिमगिरि सागरेहिं । जनु नभश्री चंद्र दिवाकरेहिं ।
परिपूर्ण मनोरथ जानकीहिं । तरैं इव लावण्य महानदीहिं ।
निज-नयन-शरासने संध इव । प्रिय-प्रगुण-गुणेहिं निवंध इव ।
यश-कर्दमे जनु जग लेप इव । हंसियेउ प्रवाहे सीप इव ।
विद्या इव करतल-पल्लवेहिं । अर्चैं इव नखकुसुमेहिं नवेहिं ।
प्रतिसर इव हियइ हलायुधहँ । कर इव उज्जोतु निशा-मुखहँ ।

घत्ता—मेहरिहिं मिलंते रघुपतिहिं, सुख उत्पन्नउ जेत्तनऊ।
इन्द्रहँ इन्द्रत्व-प्राप्ति समये, हुयउ न होइहि तेत्तनऊ।
स-कलत्रउ लक्ष्मण प्रणत-शिरा। प्रभनै जलधर-गंभीर-गिरा।
"जो किउ खर-दूषण-त्रिशिर-वधा। जो हंसद्वीपे जितु हंसरथा।
जो शक्ति प्रतीच्छेउ समर-मुखे। जो लाग विशल्य करंबुरुहे।
जो रणे उत्पन्न चक्ररतना। जो निविउ बलुद्धर दशवदना।
सो देवि! प्रसादे तवतनऊ। कुल धवलेउ जाइ सतित्वनऊ।"
अभिवादन किउ लक्ष्मणेहिं यथा। सुग्रीव प्रमुख-नरवरेहिं तथा।
सकलेहिं निज-निज वाहने थितउ। पर-पुर-प्रवेश-सामग्रि कियउ।
जयमंगल-तूर्या ताड़िया। रिपु-घरिणिहिं चित्ता पाडिया।

सीता (विरहावस्था)

राम वियोगे दुर्मनिया, अश्रु जलोल्लित लोचनिया।
मुक्तहु केश कपोलें भुजा, देखु विसंस्थुल जनकसुता॥
जानकि वदन कमल अलभंतिउ। मुख न देति फुल्ल'न्धुक पंक्तिउ।
हनैं तो उ न करंति निवारेउ। करतलेहीं लागंति निरालेउ।
ऐस शिलीमुख सासनयंता। अन्यें वियोग शोक संतप्ता।
वने वसंति दीखु परमेश्वरि। शेष सरिहिं मध्ये (जनु) सुरसरि।
हरषेउ आंजनेय एहि अवसरे। धन्यउ एक राम भुवनंतरे।
जो तिय एहु अहै मानंतिउ। रावण मरै सतिहिं अलभंतउ।
निरलंकार होति जो सोहै। यदि मंडित तो त्रिभुवन मोहै।
सीयहिं केर रूप वर्णेबिउ। आपुहँ नभे प्रच्छन्न करेबिउ।
घत्ता—जो प्रेषेउ राघवचंद्रेण, सो डारेउ अंगुट्ठि लिऊ।
उत्संगे पडिउ वैदेहिकहँ, मानो हर्षहँ पोट्टलिऊ॥
लक्खेउ सीत ऐसु किमि। विकसिउ सरिता होइ जिमि।
जनु मृणलांछन शशि ज्योत्स्ना इव। तृप्ति-विरहित ग्रीष्म-तृष्णा इव।
निर्विकार जिनवर-प्रतिमा इव। रतिपतिहिं जनु निज गढिया इव।
अभयकर् अच्छ जीवदया इव। अभिनव-कोमल-वर्णलता इव।
स-पयधर पावस-शोभा इव। अविचल सर्वसह वसुधा इव।
कांति-समुज्ज्वल तडिमाला इव। सुट्ठि सलोन उदधि-बेला इव।
निर्मल कीर्त्ति इव रामहिं केरी। त्रिभुवनहूँहि परिस्थिय सेरी।

रावण-सीता संवाद

रावण—"हले हले सीते सीते! का मूढि। रहहि दुःख महार्णवे छूटि।
हले हले सीते सीते! महि भोगहु। मनुष जन्महँ फल अनु-भोगहु।

घत्ता--प्रिय इच्छहिं पट्ट प्रतीच्छहु, यदि सद्भावें हसिउ तैं।
तो लेहु मम एहु प्रसाधन, अभ्यर्थेउँ एत्तना मैं ॥"
सो सुनिया वैदेह सुता। प्रभणइ पुलक विसृष्टभुजा।
सीता—सांचे इच्छउँ दशवदनू।
इच्छउँ यदि मम मुख न निहारै।
यदि पुनि नयनानंदनहिं, न समर्पेउ रघुनंदनहिं।
तो हौं इच्छउँ एहु हले, पुरि फेंकंती उदधि-जले।.......
इच्छउँ नन्दन-वन मज्जंता। इच्छउँ पट्टन पातल जंता।
इच्छउँ दशमुख-तरु छिद्यन्ता। तिल-तिल राम-शरेहिं भिद्यन्ता।
इच्छउँ दसहु शिरा निपतंता। सरे हंसाहत इव शतपत्रा।
इच्छउँ अन्तःपुर रोवंती। केश-विसंस्थुल ढाल भरंती।
इच्छउँ छिद्यन्ता ध्वज-चिन्हा। इच्छउँ नाचंता कावंधा।
इच्छउँ धूमा धारिज्जंता। चौदिशि सुहडी चिता बलंता।
जो जो इच्छउँ सो सो साँचय। जनु तो करऊँ मैं फले प्रत्यय।

राम का विलाप

घत्ता--सौमित्र शोकपरितापेहिं, रघुपतिनंदन मूर्छियउ।
जल-चंदन-चमर डुलावनहूँ, दुःख दुःखउ मूर्छियउ ॥
"हा लक्ष्मण कुमार एकोदर! हा भद्रिय उपेन्द्र दामोदर!
हा माधव मधुमथ मधुसूदन! हा हरि कृष्ण विष्णु नारायण!
हा केशव अनंत लक्ष्मीधर! हा गोविंद जनार्दन महिधर!
हा गंभीर-महानदि रुंधन! हा सिंहोदर-दर्प-निनाशन!
हा हा रुद्र भुकुित विनिवारण! हा हा वालिखिल्य-संहारण!
हा हा कपिल-(कु) दर्प-विमर्दन! हा वनमाली नयनानंदन!
हा अरिदमन-गर्व-वी-भंजन! हा जितपद्म सोम-मन-रंजन!
हा महा ऋषि उपसर्ग विनाशन! हा आरण्य-हस्ति-संतापन!
हा करवाल-रतन-उद्धारण! शांवकुमार-विलास-निहारण!
हा खर-दूषण-बल-मुसमूरण! हा सुग्रीव-मनोरथ-पूरण!
हा हा कोटिशिला-संचालन! हा हा मकरधरो उत्तारन!
घत्ता—कहँ तुहुँ कहिहौं का पियहिं, कहँ जनेरि कहँ जनक गउ।
हत-विधि! विछोह कराइय, कवन मनोरथ पूर्ण तव ॥"
हरि-गुण संवदंत विद्राणउ। रोवइ सदुःखउ राघव-राणउ।
वरु प्रहरौ पर-नरवर-चक्रउ। वरु क्षयकाल ढुक्कु अत्थक्कउ।
वरु सो कालकूट विष भक्खिउ। वरु यमशासन-नयनकटाक्खउ।

वरु असिपंजरे ठिउ थोडंतर। वरु सेउव कृतान्त-दंतान्तर।
झंप देउब वरु ज्वलन जलंते। वरु वगलामुखे भ्रमिव भ्रमंते।
वरु वज्रासने शिरहिं प्रतीच्छिब। वरु ढुक्कंत भवित्रि समीच्छिब।
वरु विसहव यम-महिष-भड्क्कउ। भीषण-काल-दृष्टि अभिडंकउ।
वरु विसहव केसरि-नख पंजर। वरु जोयब कलिकल-शनिश्चर।
घत्ता--वरु दंतिदंते मुसलग्गेहि, विनि-भिंदाविउ आपनहुँ।
वरु नरक-दुःख आगामिउ, नहिं वियोग भाइहिंतनउ॥

मंदोदरि विलाप

तार-चक्र इव थानहिं चूकउ। दुःख दुःख मूर्छहिं आमुंचउ।
लागु रोइबा तहँ मन्दोदरि। उर्ब्बशि - रंभ-तिलोत्तम-सुंदरि।
चंद्रवदनि श्रीकांत तनूदरी। कमलानन गंधारि 'व सुंदरी।
मालति-चंपक-माल मनोहरी। जयश्री - चंदन - लेख तनूदरी।
लक्ष्मि वसंत लेख मृगलोचन। योजन - गंधा गोरि गोरोचन।
रतनावलि मदनावलि सुप्रभ। कामलेख कामलता स्वयंप्रभ।
सुखद वसंत तिलक मलयावति। कुंकुम - लेख पद्म-पद्मावति।
उत्पल-माल-गुणावलि निरुपम। कीर्त्ति बुद्धि जय लक्ष्मि मनोरम।
घत्ता--आएहिं शोकार्त्तेहिं, अट्ठारहहिं वरयुवति सहस्सेंहिं।
नव घनमालाडंबरेहिं, छाइ विज्जु जेम चौपासेंहिं॥
रोवै लंकापुर परमेश्वरि, "हा रावण! त्रिभुवन - जन - केसरि।
तुम विनु समर-तूर्य कहँ वाजै। तुम विनु वालक्रीड कहँ छाजै।
तुम विनु नवग्रह एकीकरणउ। को पहिरावै कंठाभरणउ।
तुम विनु को विद्या आराधै। तुम विनु चंद्रहास को साधै।
को गंधर्व - वापि आडोभै। कर्णहु छवि - सहस्र संखोभै।
तुम विनु को कुवेर भंजीहै। त्रिजगविभूष केहि वश होइहै।
तुम विनु को यम विनिवारीहै। को कैलाशोद्धरण करीहै।
सहसकिरण-नलकूवर-शक्रहु। को अरि होइहै शशि वरुणउ कहँ।
को निधान रतनहि पालीहै। को वहुरूपिन विद्या लीहै।
घत्ता--स्वामी! तुमहि भये विनु, पुष्पविमान चढबि गुरु-भक्तिय।
मेरु शिखरें जिनमंदिरें, को मोहिं लेइसै वंदन हाथिय॥"
पुनि पुनि गगनंगण-गोचरी। करुणाक्रंदन कर मंदोदरी।
"नंदनवने दीयंत मनोहरि। सुमिरौं पारियात्र-तरु-मंजरि।
डुब्बन-वापिहिं स्तन-परिवर्त्तन। सुमिरौं तनिक तनिक आलिंगन।
शयन-भवने नख-निकर-विदारन। सुमिरौं लीलापंकज-ताडन।

प्रणय-रोष-समये मम बंधन । सुमिरौं रसनादाम - निबंधन ।
सुमिरौं दीयमान दनु-दानव । धरणींद्रहु केरहु चूडामणि ।
सुमिरौं स्वामि-कुमारहु केरउ । वहिन रिच्छहु कर्णपूरउ ।
सुमिरौं सुर-करि-मदमल श्यामल । हारं ठयीयमान मुक्ताफल ।
घत्ता—सुमिरौं सकृत-सुरत-आरोहण, नूपुर-वरझंकार-विलास ।
तोउ हमारौं वज्र-मय, हृदय न दो-दल होइ निराश ।।"
पुनिहु पुनिहु मंदोदरि जल्पै । "उट्ठु भट्टारक केतक सुत्तै ।
यदिउ अवश्यहि निद्रा भुक्तउ । तऊ न सोहै महितल-सुत्तउ ।
स्वामी ! को अपराध हमारउ । सीतहिं दूति गई शतवारउ ।
तहँ अकारणीय आरूढउ । जाते परि-स्थित-पारा-उट्ठउ ।"
तेहि अवसरे प्रिय पेखब धाइउ । कोइ करेइ अलीकै साइउ ।
आलिंगेबि न सर्वायामे । कोइ निबंधै रसना-दामे ।
कोइ वरंशुकेहिं कोइ हारें । कोइ सुगंध कुसुम-प्रागभारें ।
कोइ उर ताडबि लीलाकमलेहिं । प्रभनै मुकुलितेहिं मुखकमलेहिं ।

भूसुकुपा (शान्तिदेव)

निशि अँधियारी मूसा करै सँचारा । अमृत-भक्ष्य मूसा करै अहारा ।।
मारु रे जोगिया ! मूसा पवना । जासे टूटै अवना - गवना ।।
भव विदारै मूसा खनै गाती । चंचल मूसा खाइ नाशै थाती ।।
काला मूसा रोम न वर्ण । गगने उठि करै अमिय पान ।।
तब्बै मूसा अंचल - चंचल । सद्‌गुरू - बोधे करहु सो निश्चल ।।
जब्बै मूस - सँचारा टूटै । भुसुक भनै तब्बै बन्धन छूटै ।।

× × ×

यदि तुमे भूसुक अहेरे जइबा, मरिहो पाँच जना ।
नलिनी वन पइठन्ते, होइहा एक मना ।।
जीवत न हनिहा मरल न अनिहा ।
न विनु माँस भुसुक पदुमवन पइठिहा ।।
माया - जाल पसारी बधिहा माया - हरिनी ।
सतगुरू-बोधें बुझि रे कासु (एहु) कहनी ।।

× × ×

करुणा - मेघ निरंतर फारी । भावाभाव द्वन्दहीं दारी ।।
उयेउ गगन माँझ अद्‌भूता । पेख रे भूसुक सहज स्वरूपा ।।

जासु सुनत टूटै इन्द्रजाल । नि-धुए निजमन देइ उलास ॥
विषय विशुद्धे मैं बूझेउँ आनंदा । गगनहिं जिमि उजाला चंदा ॥
एहि तिलोके एहुहि सारा । जोइ भुसुक फटै अंधियारा ॥

× × ×

सहज महातरु स्फुरै त्रिलोके । ख-सम स्वभावे बन्ध मुक्त कोइ ॥
जिमि जले पानी डाले भेद न जान । तिमि मन रतन समरस गगन समान ॥
जासु न आपा तासु पराया काह । आदि-अन्त न जन्म-मरण भव नाहि ॥
भूसुक भनै मूढ़, राउत भनै मूढ, सकल एह स्वभाव ॥
जाइ न आवै रे नातहँ भावाभाव ॥

लुईपा

काया तरुवर पाँचउ डाल । चंचल चित्ते पइठा काल ॥
दृढ़ करि महासुख परिमान । लुई भनै गुरु पूछिय जान ॥
सकल समाधिहिं काह करिज्जै । सुख-दुःखनतें निचित मरिज्जै ।
छाड़ि छन्द-बन्ध कर ना कपट की आश । शून्य - पक्ष भीडि लेहु रे पाश ।
भनै लुई मैं ध्याने दीठा । धमन-चमन दोउहि ऊपर बैठा ।

× × ×

भाव न होइ अभाव न होइ । ऐस संबोधिहिं को पतियाइ ।
लुई भनै मूढ़ ! दुर्लख विज्ञाना । त्रिधातुहिं विलसै ऊह लागै ना ।
जाहि-वर्ण चिन्ह-रूप न जानी । से कैसे आगम - वेद बखानी ।
काहे रे कैसे भनि मैं देबों पूछा । उदक-चंद जिमि साँच न मिथ्या ।
लुई भनै मैं भावौं कैसे । जे लेइ रहौ तेहि ऊह न दीसै ॥

विरूपा

एक से सूँडिन दुइ घरे सांधै । चीअ न बाकल वारुणी बांधै ।
सहजे थिर करि वारुणि साँधा । जे अजरामर होइ (न) दृढ़ स्कंधा ।
दशम दुवारे चिन्ह देखि कहँ । आयउ ग्राहक अपन लेन कहँ ।
चौसठ-घड़िया देल पसारा । पइठु गराहक नाहि निसारा ।
एक घड़ुल्ली स्वरूपी नाल । भनै बिरूपा थिर करु चाल ।

डोम्बिपा

गंगा-जमुना माँझे चलै नाई । तहँ बूडल मातंगी पुतिया लीलें पार करेइ ।
ले चल डोम्बी ले चल डोम्बी - बाट सोभारा ।

सद्‌गुरु - पाद - प्रसादे जायेब पुनि जिन - पूरा ।
पाँच केडुआल पड़त माँगे में पीठ में कच्छी बँधी ।
गगन दुखोलेहिं सींचहु पानी न पइठै सँधी ।
चन्द्र - सूर्य दुइ चक्का सृष्टिसंहार - पुलिन्दा ।
वाम-दहिन दोउ मार्ग न दीसइ (नाव) चलाव स्वछंदा ।
कौड़ी न लेइ बौड़ी न लेइ छूछे पार करेइ ।
जो एहिं चढ़ि चलावन न जानै कूलहिं कूल बुड़ेई ।।

दारिकपा

शून्य करुणा अभिन्न काय - वाक् - चित्ते ।
विलसै दारिक गगनतें पारिमकूले ।।
अलख लखै चित्त महामुत्ते ।
विलसै दारिक गगनतें पारिमकूले ।।
की तोर मंत्रे की तोर तंत्रे की तोर ध्यान बखानें ।
आप पईठा महसुख लीले दुर्लख परम - निवाणे ।।
दुःख सुख एक करी भचै इन्द्रजाली ।
स्व-परापर न चीन्है दारिक सकल अनुत्तर मानी ।।
राजा राजा राजा अवर राजा मोह बँधाया ।
लुईपाद - पद्मे दारिक द्वादश भुवनहिं पाया ।।

गुंडरीपा

तियड़ा चांपि जोगिनि दे अँकवारी । कमल-कुलिश घोंटि करहु बियाली ।
जोगिनि तोहि बिनु खणहुँ न जीयौं । तव मुख-चूमि कमल रस पीयौं ।
फेंकेहु जोगिनि लेप न जाय । मणि - कुण्डल बहि उड्यानें समाय ।
सासु घरे डाली कुंजी - ताल । चाँद - सूर्य दोउ पाखहिं फाल ।
भनै गुंडरी मैं कुन्दुरे वीरा । नर-नारी माँझे दीनेउँ चीरा ।

कुक्कुरीपा

कूर्म दूहि पात्र धरन न जाय। वृत्तेर इम्ली कुम्भीर खाय।
आँगन घर पुनि सुनु कुविशाती। कानेट चोरि लियेउ अधराती।
सासु नींदि गइल बहुवा जागै। कानेट चोरि लिय कागहिं माँगै।
दिवसहिं बहू काग डर खाय। राति भइले कामरूप जाय।
ऐसन चर्या कुक्कुरि गाए। कोटि माँझ एक हियहिं समाए।

कमरि (कम्बल) पा

सोनेहि भरती करुणा नावी।
रूपा थापै नाहिक ठाँवीं॥
ले चल कामलि गगन-उदेसे।
गैला जन्म बहुरिहै कैसे॥
खूँटी उपाड़ि फेंकल काछी।
ले चल कामलि सद्गुरु पूछी॥
माँगे चढ़ल चतुर्दिश देखै।
(नाव-पीठ चढ़ि बलहीं पड़ै)।
केडुआल नाहीं कैसे चलायब पारै॥
बाम-दहिन चांपि मिलि माँगा।
बाटेहिं मिलल महासुख-संगा॥

कण्हपा

निस्तरंग सम सहज रूप, सकल-कलुष-विरहिए।
पाप-पुण्य-रहित किछु नाहिं, काण्हे फुर कहिए॥
बाहर निकालिय शून्याशून्य प्रविष्ट।
शून्याशून्य दोउ मध्ये, मूढ़ा! किछुअ न इष्ट॥
सहज एक पर अहै तहँ फुर काण्ह परि-जानै।
शास्त्रागम बहु पढ़ै सुनै मूढ़! किछुउ न जानै॥
अधो न जाई ऊर्ध्व न जाइ। द्वैत-रहित तासु निश्चल ठाइ।
भनै काण्ह मन कैसहु न फूटै। निश्चल पवन घरनी घरे बाटै॥
वर-गिरि-कंदर-कुहरे, जग तहँ सकल टुट्टै।
विमल-सलिल सुख जाइ, काल अगिन पइट्ठै॥

प्रभा वहन्ना निज मन, बंधन कियेऊ जेहिं।
त्रिभुवन सकलउ फारिया, पुनि संहारिय तेहिं॥
सहजे निश्चल जेहिं किय, सम रस निज मन राग।
सिद्धा सो पुनि तत्क्षणे, न जरामरणहँ भाग॥

× × ×

नारी शक्ति दृढ़ धरिके खाटे। अनहद डमरू बजै वीर-नादे॥
काण्ह कपाली जोगी पइठो आचारे। देह-नगरी विहरै एकाकारे॥
आली-काली-घण्टा-नूपुर चरणे। रवि-शशि-कुंडल कियउ आभरणे॥
राग-द्वेष-मोहि लाई छार। परम-मोक्ष लिए मुक्ताहार॥
मारे उसासु-ननद घरे साली। मातु मारि काण्ह भइल कपाली॥

× × ×

भव निर्वाणे पटह माँदला। मन-पवन दोऊ करौं कशाला॥
जय 'जय' दुंदुभि शब्द उचरिला। काण्हे डोम्बि-विवाहे चलिला॥
डोम्बि वियाहि अहारेउ जन्म। जौतुक कियउ अनुत्तर-धर्म॥
अहनिशि सुरत-प्रसंगे जाय। जोगिनि-जाले रजनि बिनाय॥
डोम्बी संग जोउ रक्त। क्षण ना छाड़ै सहजुन्मत्त॥

× × ×

मन तरु पाँच इन्द्रि-तसु साखा। आशा बहुल पत्र-फल-वाहा॥
वरगुरु-वचन कुठारेहिं छीजै। काण्ह भनै तरू पुनि न उपजै॥
बढ़ै सो तरु शुभाशुभ पानी। छेवै विदु-जन गुरु परिमाणी॥
जो तरु छेवै भेद न जानै। सड़ पड़्यो मूढ़! न भव मानै॥
शून्या तरूवर गगन-कुठार। छेवै सो तरु मूल न डार॥

× × ×

शून्य वाहें तथता प्रहारिय। मोह-भंडार लेइ सकल अहारी॥
सुतै न चिन्तै स्व-पर-विभंगा। सहज-निद्रालु काण्हिला नंगा॥
चेतन न वेदन भर नींदि गेला। सकल मुक्त करि सुखे सुतेला॥
स्वप्ने मैं देखउ त्रिभुवन शून्य। घोरि के आवागमन-बिहून॥
साखि करब जालंधरपाद। पास न देखौं मोर पंडिताचार॥

गोरक्षपा (गोरखनाथ)

हबकि न बोलिबा ठबकि न चालिबा धीरै धोरवा पाँव।
गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरष राव॥

सहज पलांण पवन करि घोड़ा, लै लगाम चित चबका।
चेतनि असवार ग्यान गुरू करि, और तजौ सब ढबका॥
जिहि घर चन्द - सूर नहिं ऊगै, तिहि घरि होसी उजियारा।
तिहाँ जे आसण पूरौ तौ सहजका भरौ पियाला मेरे ज्ञानी॥
सहज गोरखनाथ वणिजे कराई, पंच बलद नौ गाई।
सहज सुभावै बाषर ल्याई, मोरे मन उड़ियानी आई॥
गिरही सो जो गिरहै काया। अभि-अन्तर की त्यागै माया।
सहज-सील का धरै सरीर। सो गिरही गंगा का नीर॥

× × ×

काया गढ़ लेबा जुगे जुगे - जीवा।
काया गढ़ भीतरि नौ लष खाई, जंत्र फिरै गढ़ लिया न जाई।
ऊँचे नीचे पर्वत झिलमिल षाई, कोठड़ी का पाणी पूरनगढ़ जाई।
इहाँ नहीं उहाँ नहीं त्रिकुटी - मंझारी, सहज - सुनि मैं रहनि हमारी।
आदिनाथ नाती मंछिन्दर नाथ पूता, कायागढ़ जीति ले गोरख अवधूता॥

× × ×

मारौं खपर्णीं जगाई ल्यौ भौंरा,
जिनि मारी खपर्णीं ताकौं कहा करै जौंरा।
खपर्णीं कहै मैं अबला बलिया,
ब्रह्मा बिस्न महादेव छलिया।
माती माती खपनीं दसौ दिसि धावै,
गोरखनाथ गारुड़ी पवन वेगि ल्यावै।

× × ×

सिष्टि-उतपती बेली प्रकास, मूल न थी, चढ़ी आकास।
उरध गोढ़ कियौ विसतार, जाणै जोसी करै विचार॥
भणत गोरखनाथ मछिन्द्रना पूता, मारयौ मृघ भया अवधूता।
याहि हियाली जो कोई बूझै, ता जोगी को त्रिभुवन सूझै॥

× × ×

गुरू जी ऐसा करम न कीजै, ताथैं अमी-महारस छीजै।
दिवसे वाघणि मन मोहै राति सरोवर सोषै।
जाणि बूझि रे मूरिष लोया घरि-घरि बाघणि पोषे॥
नदी तीरै विरषा नारी संगै पुरषा अलप-जीवन की आशा।
मनथैं उपज मेर षिसि पड़ई ताथैं कंध विनासा॥

गोड़ भये डगमग पेट भया डीला, सिर बगुला की पंखियाँ।
अमी-महारस बाघणी सोष्या घोर मथन जैसी अंखिया ॥

बाघिनी को निंदिलै बाघनी को विंदिलै बाघनी हमारी काया।
बाघनी षोषि षोषि सुन्दर षाये भणन्त गोरखराया ॥

× × ×

बैठा अवधू लोकी षूंटी, चलता अवधू पवन की मूठी।
सोवता अवधू जीवता मूवा, बोलता अवधू प्यंजरै सूवा ॥

दृष्टि अग्रे दृष्टि लुकाइबा, सुरति लुकाइबा कान।
नासिका अग्रे पवन लुकाइबा, तब रहि गया पद निर्वान ॥

उल्टय्या पवना गगन समोइ, तब बाल रूप परतषि होइ।
उदै ग्रहि अस्त हेम ग्रहि पवन मेला, बधिलै हस्तिया निज साल भेला ॥

अहंकार तूटिबा निराकार फूटिबा, सोषीला गंग-जमन का पानी।
चंद सूरज दोऊ सनमुषि राखीला, कहो हो अवधू तहाँ की सहिनाणी ॥

× × ×

नैण महारस फिरै जिनि देस। जटा भार बंधौ जिनि केस।
रूष-बिरष - बाड़ी जिनि करौ। कुवा-निवाण षोदि जिनि मरौ।

छोड़ौ बैद - वणज - व्यौपार। पढ़िवा गुणिबा लोकाचार।
पूजा - पाठ जपौ जिनि जाप। जोग मांहि विटंबौ आप।

जड़ी - बूटी भूलै मति कोइ। पहली राँड़ बैद की होइ।
जड़ी - बूटी अमर जे करे। तौ बैद धनवन्तर काहे को मरै।

सोनै रूपै सीझै काज। तौ कत राजा छोड़ै राज।
पसुवा दोइ जपै नहिं जाप। सो पसुवा षोषि क्यों जात।

× × ×

निसपती जोगी जानिबा कैसा। अगनी पाणी लोहा माने जैसा।
राजा-परजा सम करि देष। तब जानिबा जोगी निसपति का भेष ॥

टेंटण (तंति) पा

नगर-माँझ मोर घर, नाहिं पड़ोसी।
हाँड़ी ते भात नाहीं नित्य आवेशी ॥

बेगेहिं साँप बधिल जाय।
कच्छू दूध कि मेंटे समाय ॥

बरध बियाइल गैया बाँझी ।
मेंटहि दुहिय तीनों साँझी ।।
जो जो बुद्धी सोइ निर्बुद्धी ।
जो सो चोर सोई साहु ।।
नित्य सियारा सिंह से जूझै ।
टेटणपा के गीति बिरलै बूझै ।।

मही (महीधर) पा

तीन पाटे लागल अनहद-स्वन घन गाजै ।
तेहि सुनि मार भयंकर विषय-मंडल सकल भाजै ।।
मातल चित्त-गयन्दा धावै, निरंतर गगनते तुष (रवि शशि) घोलै ।
पाप-पुण्य द्वैत तोड़ि साँकल मरोड़ी खम्भा-थान ।
गगन टकटकी लागलि रे चित्त पइठ निर्वाण ।।
महारस पाने मातल रे त्रिभुवन सकल उपेक्षी ।
पंच विषय - नायकरे विपख काहु न देखी ।।
खर-रवि किरण संतापेहिं गगनांगण जाइ पइठा ।
भणै महीश्रा मैं एहिं बूड़त किछू न दीठा ।।

भादे (भद्र) पा

एतन काल हौं रलों स्वमोहे ।
अब मैं बुझलों सद्गुरू - बोधे ।।
अब चित्त - राग मोरा नष्टा ।
गगन - समुद्रे टलिके पइठा ।।
पेखौं दश - दिशि सर्वहि शून्य ।
चित्त - विहूने पाप पुण्य ।।
बाजुल ने दीलो मोहिं लक्ष्य भानी ।
मैं आहारिल गगन से पानी ।।
भादे भनै अभागे लियेउ ।
चित्त - राग मैं आहार कियेउ ।।

धाम (धर्म) पा

कमल - कुलिश माँझे भ्रमई लेली ।
समता - योगेहि ज्वलिल चँडाली ।।

डाह डोम्बि - घरे लागलि आगी ।
शशधर लेइ सींचहु पानी ।।
नहिं खरे ज्वाल धूम न दीसै ।
मेरु - शिखर लेइ गगन पईसै ।।
डाहे हरि - हर - ब्रह्म भट्टा ।
डाहे नव - गुण - शासन पट्टा ।।
भनै धाम फुर लेहु रे जानी ।
पंच नालेंहि उठि गइल पानी ।।

देवसेन

यदि गृहस्थ दानहि बिना, जग में भणियत कोइ ।
तो गृहस्थ पंछिहु हवै, जे घर ताहउ होइ ।।
धर्म करौ यदि होइ धन, एहु दुर्वचन न बोल ।
हंकारउ जम - भटनते, आवइ आज कि कालि ।।
काह बहूतहिं संपदहिं, यदि कृपणहिं घर होइ ।
उदधि - नीर खारे भरेउँ, पानिउ पियै न कोइ ।।

× × ×

धर्महि सुख पापहि दुख, एह प्रसिद्धउ लोक ।
ताते धर्म समाचरहु, जे हिय-वांछित होइ ।।
काइ बहूते जल्पने, जो अपने प्रतिकूल ।
काहू दुख सो ना करइ, एहु जे धर्म को मूल ।।

× × ×

धर्म विशुद्ध सोइ पर, जो कीजइ कामेन ।
अथवा सो धन उज्ज्वल, जो आवइ न्यायेन ।।
रूपहि ऊपर रति न करु, नयन विवारहु जांत ।
रूपासक्त पतंगडा, पेखहु दीप पडन्त ।।
गुणवानैं सह संग करु, भल्लो पावइ जेमु ।
सुमन - सुपत्रन - वर्जितउ, वर तस कहियतु केमु ।।
अन्याये आवइ यदि, आवइ धरेउ न जाइ ।
उन्मार्गे चल्लन्त कहँ, कंटक भंजइ पाउ ।।
कूट - तुला - मानादि कहँ, हरि-करि-खर-विष - मेष ।
जो नाचइ नट प्रेक्षणउ, सो गृएहइ बहु - वेष ।।

दुर्लभ लहि मनुजत्व कहँ, भोगेहि प्रेरेउ येन।
लोह-लाइं दुस्तर तरणि, नाव बिगाड़ेउ तेन॥

तिलोपा

सहजे भावाभाव न पूछिय। शून्य-करुण-तहँ समरस इच्छिय॥
मारहु चित्त निर्वाणे हनिया। त्रिभुवन शून्य निरंजन पेलिया॥
आदि-रहित एहु अन्त-रहित। वर-गुरू-पाद अद्वय कथित॥
मूढ़-जन लोग-अगोचर तत्व। पण्डित लोग अगम्य॥
जो गुरू पाद प्रसन्न हो। तेहि की चित्त-अगम्य॥

× × ×

तीर्थ तपोवन न करहु सेवा। देह शुची ना होवै पापा॥
ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर-देवा। बोधिसत्व ना करहु रे सेवा॥
देव न पूजहु तीर्थ न जावा। देव पूजतें मोक्ष न पावा॥
बुद्ध अराधहु अ-विकल चित्ते। भव-निर्वाणे न करहु स्थित्वे॥

× × ×

जिमि विष भक्षै विषहि प्रलुप्ता।
तिमि भव भोगै भवहि न युक्ता॥
क्षण आनन्द भेद जो जानै। सोएहि जन्महिं जोगि भनीजै॥
हौं शून्य जग शून्य त्रिभुवन शून्य। निर्मल-सहजे न पाप न पुण्य॥
जहँ इच्छै तहँ जाउ मन, एहिं न कीजै भ्रान्ति।
अधो उघारि अवलोकने, ध्याने होइ रे स्थित्ति॥

पुष्पदन्त

संध्या वर्णन

अस्तमे दिनेश्वरे जिमि शकुना। तिमि पंथिक ठिउ माणिक शकुना।
जिमि फुरियेउ दीपक-दीप्तियऊ। तिमि कान्ताभरणहि दीप्तियऊ।
जिमि सन्ध्या-रागे रंजियऊ। तिमि वेशा-रागे रंजियऊ।
जिमि भुवनल्लउ संतापियऊ। तिमि चक्कुल्लौ संतापियऊ।
जिमि दिशि-दिशि तिमिरहिं मिलियाइँ। तिमि दिशि-दिशि जारहि मिलियाइँ।
जिमि रजनिहिं कमलहिं मुकुलिताइँ। तिमि विरहिनि-बदनइँ मुकुलिताइँ।
जिमि घरह कपाटउ दिन्नाइँ। तिमि वल्लभ सम्पति दिन्नाइँ।
जिमि चंदेहिं निज-कर-प्रसर कियेउ। तिमि पिय केशहि कर-प्रसर कियेउ।

जिमि कुवलय - कुसुमा विकसियऊ। तिमि कोरय मिथुना विकसियऊ।
जिमि पीयें पानहिं मधुराई। तिमि अधरइ मधुरस मधुराई।
जिमि जिमि बीतै यामिनि - प्रहरा। तिमि निर्मि विकीर्ण मृदु-रति-प्रहरा।
जिमि नहिं शुक्रोदया दरसियऊ। तिमि निड़ि शुक्रोदगम दरसियऊ।
तो चक्रकुलहँ पंकजहँ ताम्रकिरणपूरित भुवनोदर।
विरही नर-नारीजनहू जोवन देत सम ऊगेउ दिनकर।

× × ×

स्कंधावरँह ऊपर अहनिरा। तो नादहिं विकारिश पावस।
मृगकुल त्रसै रसै वरसैघन। पीयल श्यामल विलसै सुरधनु।
महिं नीखरिउ हरित बाड़े तनु। प्रवसित - प्रियहिं तप्पै मन।
फुल्लु कदंव ताम्र दीसै वन। तीमै तामै मणि भूरै जनु।
तड़ि तड़तड़ै पड़ै रागै हरि। तरु कड़कड़ै फुटै विहरै गिरि।
जल परिचलै घुरै घूमै दरि। अतिरय सरै भरै पूरै सरि।
जल-थल सकल जलहि सं-जायेउ। मार्ग-अमार्ग न कछुअहु जानेउ।
शर-कुसुम-सर नितान्त साँधै। विरहे पंथिक पंथिय बिंधै॥

हिमालय वर्णन

शीतल्ल - बेलि तरुवर-गहना। हिमवंतहु दक्षिण-गिरि-गहना।
जहँ व्याघ्र-सिंह-गज गैंड आईं। मृग दुर्गह करि-भालू-शताईं।
साँभर वेकुल्ला रोहिताईं। एणी जहँ पुलकित कूदियाईं।
जहँ संचरइ वहु मूँगुसाईं। गर्त्ताहिं जहाँ निर घर्घसाईं।
जहँ परडा कोक्कंता भ्रमंति। झिल्ली खच्चेल्ले गुमगुमंति।
जहँ भील - पुलिन्दा नाहराईं। बीनंता तरु - बल्ली - फलाईं।
जहँ कुक्करंति शाखामृगाईं। झूलंता तरु - शाखा - गताईं।
उड्डुन-शीला ताम्बूल - लागु। जहँ हरि खादंता कतहुँ भागु।
जहँ घुरघरंति दाठा - कराल। शूलाद्वहिं सँग जूझंति कोल।
कंदुल्ल-गहर गर्दभा जहाँ। हरि हुल्लहिं जहँ दूषियेउ पंथ।
पंचासहु थूने विदारिताईं। जहँ भीली हरिनहिं मारियाईं।
जहँ गहिरै धारैं परिभ्रमति। नित बादल-कुलहीं चुमचुमंति।
जहँ बेलो-वेष्टित तरुवराईं। जनु क्रीडै अवगुंठन पराईं।

देश विजय

सुरसिन्धु-सरिहिं देहलिय धरब, प्रति सरन करबी,
पूर्वावरेहिं परिसंस्थिताईं, वैरस्थिताईं।

वेताढ़ गिरिहिं ओइल्लयाइँ, सुधनिल्लयाइँ,
चंडाइँ म्लेच्छ-खंडाइँ ताइँ, दुःसाधियाइँ।
करवालें जीतेउ आर्यखण्ड, प्रस्थापि दण्ड।
मालव - मगध - वंग'ङ्ग - गंग कालिंग - कोंग।
पारस - बर्बर - गुर्जर, वराड - कर्नाट - लाट।
आभीर - कीर - गंधार - गौड़ नेपाल - चोल।
चेदीश - चेरु - मरू - दर्दुरंडि पंचाल - पंडि।
कोंकण - केरल - करु-कामरूप, सिंहल प्रभूय।
जालंधर - यादव - पारियात्र, जीतेहू राय।
प्रत्यन्तवासि निःशेष लेइ, निज मुद्रा देइ।
हेलहिं तिरखंडा,वनि हरेइ, असि करे करेइ।

रानियों का जीवन

कोइ मलय-तिलक देविहिं करई। कोइ आरसिहीं आगे धरई।
कोई अर्पे वर - रत्नाभरना। कोई लेपै कुंकुमहीं चरणा।
कोई नाचै गावै मधुर-स्वरा। कोई प्रारम्भै विनोद अपरा।
कोई परि-रच्छै निशिता-सि करी। कोइ द्वारे परिट्ठिउ दण्डधरी।
आख्यानहु कोइ किछू कहई। दीनेउ कनइल्लु कोइ बहई।
कोइ बार बार विनये नमई। कोइ सुरसरि-सँर सलिलेहिं स्नपई।
कोइ मालउ चोलिउ उज्ज्वलऊ। धोवै सब लहण सुपरिमलऊ।

नारी सौन्दर्य

ताहि वरनि मरुदेवि भटारी। जाहि रूपश्री अति गुरुकारी।
अमरन् पंक्तिहिं पद - प्रणमंतिइ। लंघायऊ हमरो नख - पंक्तिइ।
कमतल राये काह गवेषिउ। एहि न्याइँ नूपुरेहि प्रघोषिउ।
पर्षिणहिं रक्तऊ चित्त प्रदर्शेउ। अंगुलियहिं सरलत्व प्रकाशिउ।
अंगुठ-उन्नति ही जिमि गूढ़ा। गुल्फउ सो फुर पिशना मूढ़ा।
नी-रोमउ विसिरिउ वर्त्तुलियउ। मसृणउ सोहियाउ अंगुलियउ।
जंघउ क्रमहानी अवधरियऊ। दीसेउ जनु खल-मित्रहँ किरियउ॥

शान्तिपा

स्वसंवेदन स्वरूप विचारे। अलख लख्यो ना जाई।
जो जो ऋजुवाटे गइला, अन्य वाटे भइला सोई॥

कायारूप ना बूझै मूढ़ै ऋजु बाटा संसारा।
मधु - करहिं एक भक्ष्य, राजहिं कनकधारा॥
मायामोह समुद्रहि अन्त न बूझसि थाहा।
आगे (न) नाव नभेला दीसै, भ्रान्तिहिं पूछसि न नाहा॥
शून्य - प्रान्तर ऊह न दीसै भ्रान्ति न वामने जाये।
एही अष्ट महासिद्धि सिद्धै, ऋजुबाटे' हीं जाये॥
बायँ दहिन दो बाट छाड़ी शान्ति बोलेउ संकेलिय।
घाटे न शुल्क खरतरी न होइ, आंखि बुयझिबाट जाइय॥

× × ×

तुला धुनि धुनि रेशहि रेशू। धुनि धुनि निरवर शेषू।
तउ सो हेतु न पाइयइ। शान्ति भनै की सो भावियइ।
तुल धुनि धुनि शून्ये धारेउ। पुनि लेइय आप चट्टारिउ।
बहुत मूढ़! दुइ भाग न दीसै। शान्ति भनै बालाग्र न पइसै।
कार्य न कारण न एहु जुगती। स्वक - संवेदन बोलै शान्ती॥

योगीन्दु

ज्ञान समाधि

जे जायेउ ध्यानाग्नियेहिं, कर्म कलंक डहाइ।
नित्य - निरंजन ज्ञानमय, ते परमात्म नमामि॥
तिन हौं वन्दौं सिद्धगण, रहैं जोउ होवन्त।
परम-समाधि महाग्नियेहिं, कर्मेन्धनहिं होमन्त॥
भावहिं प्रणवौं पंचगुरू, श्री योगीन्दु जिनाव।
भट्ट प्रभाकर वीनवेउ, निर्मल करिके भाव॥
गयउ संसार वसंतहीं, स्वामी काल अनन्त।
पर मैं किछु पायउँ न सुख, दुःखइ पायउँ महन्त॥

आत्मा

हौं गोरो हौं सामलो, हौं हिं विभिन्नउ वर्ण।
हौं तनु-अंगौं स्थूल हौं, ऐसो मूढ़ै मन्व॥
हौं वर - ब्राह्मण वैश्य हौं, हौं क्षत्रिय हौं शेष।
पुरुष नपुंसक इस्त्रि हौं, मानै मूढ विशेष॥
आत्मा गोरा कृष्ण नहिं, आत्मा रक्त न होइ।
आत्मा सूक्ष्महु स्थूल नहिं, ज्ञानी ज्ञाने जोइ॥

आत्मा पंडित मूर्ख नहिं, नहिं ईश्वर न अनीश।
तरुण बूढ़ बालहु नहीं, अन्यहु कर्म विशेष॥
पुण्यउ पापउ काल नभ, धर्मा धर्मंहु काय।
एकहु आत्मा होइ नहिं, छड़ि एक चेतन भाव॥
अन्यहिं तीर्थ न जाहिं जिय, अन्य गुरूहिं न सेव।
अन्यहिं देव न चिंत तुहुँ छाड़ि एक विमलात्माहि॥
आत्मा निज मन निर्मले नियमेहिं बसै न जासु।
शास्त्र-पुराणहु तप-चरण, मोक्ष कि करिहै तासु॥

पंथ पोथी-पत्रा की निन्दा

देव शास्त्र-मुनिवरन की, भक्तिहिं पुण्य हवेइ।
कर्मक्षय पुनि होय नहिं, आरज शान्ति भनेइ॥
देव निरंजन यों भनै, ज्ञानेहिं मोक्ष न भ्रान्ति।
ज्ञान विहीना जीवड़ा, चिर संसार भ्रमन्ति॥
शास्त्र पढ़ंतौ होइ जड़, जो न हनेइ विकल्प।
देह वसंतउ निर्मलउ, नहिं भानै परमात्म॥
तीर्थहिं तीर्थ भ्रमन्त कहिं, मूढ़हिं मोक्ष न होइ।
ज्ञानविवर्जित जो कि जिव, मुनिवर होइ न सोइ॥
चेला-चेली-पोथियहिं, तूषै मूढ़ निभ्रान्त।
एतहि लज्जै ज्ञानियउ, बन्धन हेतु बुझन्त॥
भलन करेहू नशैं गुण, जहँ संसर्ग खलेहिं।
वैश्वानर लोहहिं मिल्लेउ, तेहि पिट्टियइ घनेहिं॥
रूपे पतंगा शब्दे मृग, गज स्पर्शे नाशंति।
अलिकुल गन्धे, मत्स्य रसे, किमि अनुराग करंति॥
देवल देवउ शास्त्र गुरू, तीर्थहु वेदहु काव्य।
वृक्ष जो दीसै कुसुमित, इंधन होइहै सर्व॥

सभी देव सम्मानीय

सो शिव शंकर विष्णु सो, सो रुद्रहु सो बुद्ध।
सो जिन ईश्वर ब्रह्म सो, सो अनंत सो सिद्ध॥

ऐसे लक्षण-लक्षितउ, जो पर निष्कल देव।
देह-मध्य ही सो बसै, तासु नहीं है भेद॥

रामसिंह

व्याख्यानड़ा करन्त बहु, आत्महिं दियउ न चित्त।
कणहिउँ रहित पुआल जिमि, पर संग्रहउ बहुत्त॥
पंडित पंडित पंडिता, कण छाँडिउँ तुष कूटिया।
अर्थहिं ग्रन्थहिं तुष्टोसि, परमार्थ न जानइ मूढोसि॥
अक्खरडेहि जे गर्विया, कारण ते न जानंत।
बांस विहूनो डोम जिमि, पर हाथडा धुनंत॥
बहुतहि पढ़िया मूढ़ पर, तालू सूखइ जेहिं।
एकहि अक्षर सो पढ़हु, शिवपुर जावे जेहिं॥
हौं सगुणी प्रिय निर्गुण, निर्लक्षण, निस्संग।
एकइ अंक वसंतहु, मिलेउ न अंगहि अंग॥
मूल छोड़ि जो डाल चढ़ि, कहँ तेहि योगाभ्यास।
चीर न बीनेउ जाइ मुढ़, बिनु ओटिया कपास॥
खट दर्शन धन्धे पड़ी, मनहि न टूटी भ्रान्ति।
एक देव छ भेद किय, ताते मोक्ष न यान्ति॥

× × ×

हे सखि! काह करिय सो दर्पण। अहै प्रतिबिम्ब न दीसइ आपन॥
धंधवाल मोहि जग प्रतिभासइ। घर अछते ण घरपति दीसइ॥

जासु जीवनहि मनु मुयो, पंचेन्द्रियहिं समान।
सो जानीयइ मोचलउ, लाहेउ पथ निर्वाण॥
मुंडिया - मुंडिया-मुंडिया, सिर मूडेउ चित्त न मूडिया।
चित्तहि मुंड न जिन कियउ, संसारहि खंडन तिन कियो॥
पोथा पढ़नी मोक्षकहँ, मनहि असुद्धउ जान।
बध - कारक लुब्धक नवै, मूले ठिय हरिणास॥
भल न काह नाशइ गुण, जहँ लह संग खलेहिं।
वैश्वानर लोहहि मिलेउ, पिट्टीयत सुवनेहि॥
मूँड मुँडाइवि सीख धरि, धर्महि बाँधी आस।
न निक कुटुम्बहि छोड़ियह, छोड़ फैकान पराश॥
जे पढ़िया, जे पंडिया, जेहि कि मान मर्याद।
ते मेहरी पिंडहि पड़ी, भ्रमियत जेम घरट्ठ॥
देवल पाहन तीर्थ जल, पोथिहि सर्वहि काव्य।
वस्तु जो दीसइ कुसुमित, इंधन होइहै सर्व॥

तीर्थहि तीर्थ भ्रमन्तयहँ, किछु नाही फल होत ।
वाहिर सुद्धो पानियहँ, अभ्यन्तर किमि होत ॥
तीर्थहिं तीर्थ भ्रमेउ मूढ़, धोयेउ चाम जलेहि ।
एहु मन किमि धोयेसि तुहूँ, मइलउ पाप मलेहि ॥

जंत्र मंत्र

मंत्र न तंत्र न ध्येय न धारण ।
नापि उछासहि कीजिय कारण ।
इमिहि परम सुख मुनि सोवह । एही गडवड कासु न रूचइ ।
दो पंथहि न गमियइ पंथा, दो मुँह सुई सीइय कंथा ।
दोउ न होहिं अजाना । इन्द्रिय - सुख - अरू मोक्खहू ।
वाद - विवाद जे करहिं, जाह न फाटी भ्रान्ति ।
जे रक्ता गोपायित, ते गोप्यन्त भ्रमन्ति ।
कालहि पवनहिं रविशशिहिं, चहु एकठेइ वास ।
हउँ तोहिं पूँछउ जोगिया, पहिले कासु विनाश ॥

गुरु महिमा

जे लिखेउ न पूछेउ कहुँपि जाय, कहियउ काहुपि न चित्त ठाइ ।
अथ गुरु - उपदेसे चित्तु ठाइ, सो तिमि धारंतोहि कहुँ'पि ठाइ ॥
दो भंजाविय एक किय, मनहि न चारी वेलि ।
तेहि गुरुवहि हउँ शिष्यणी, अन्यहिं करउँ न लाल ॥
आगेहि पाछेहि, दस दिसिहिं, जहँ जोवउँ तहँ सोइ ।
सो मम काटी भ्रान्तडी, अवश न पूछिय कोइ ॥
मूढ़ा ! जोवइ देवलहँ, लोगहिं जाहिं कियाह ।
देह न पेखइ आपणी, जहँ शिव संत थिताह ॥
आत्मा परहिं न मेलियउ, आवागमन न भाग ।
तुष कूटंते काल गउ, तंदुल हाथ न लाग ॥
उज्जड बसिया जो करइ, बसिया करइ जो सुन्न ।
बलिहारी तेहि जोगियहिं, जासु न पाप न पुन्न ॥

धनपाल

वसंत वर्णन

घत्ता—इतहू मधु मासह आगमनू । इतहू प्रिय पुत्र समागमनू ।
परमोत्सवे रोमांचित - भुजहू । मुह विकसिउ धनदत्तह सुतहू ॥

जिम तीर्थ तेमि पंचहु शतेहिं। कियउ भवन सहि निर्वतिगतेहिं।
घर घर मंगलइ प्रघोषिताइँ। घर घर मिथुने परितोषिताइ॥
घर घर तोरणै प्रसाधिताइँ। घर घर स्वजने अल्पाधिकाइँ।
घर घर बहुचन्दन - छटा दीन। मरु-कुन्द-वनय-दवना - प्रकीर्ण॥
घर घर स-रेणु-रज - पिन्जरीउ। सोहंति चूत तरू मंजरीउ।
घर घर चर्चरि कौतूहलाइँ। घर घर अन्दोलै सोहलाइँ॥
घर घर कृत-वस्त्राभरण सोह। घर घर आरब्ध महायशोघ।
घर घर स्वरूप - रंजित-मनाइँ। युवती जोवै मुँह दर्पणाइँ॥
घत्ता–घर घर जल मंगल-कलश-किय। घर घर देवय अवतारिणा।
घर घर शृङ्गार वेष धरेऊ। नाचेउ वरयुवतिहिं उच्छलिया॥
सो गजपुर सो पौरसमागम। सो सित-पद्म वसंतहँ आगम।
सोइँ निरन्तराइँ चूत वनइँ। सोइ धवल पुंजवियइँ भवनइँ॥
सो बहु परिमलाढ्य, वन-तूर्यउ। प्रिय सुख शीतल दक्षिण मारुत।
सो-पुर - शोभा कासु पमिज्जै। जा पंखिय सुर अचरज दिज्जै॥
जहँ उद्यानपुरै सुख - संचित। दक्षिण-पवन - प्रहत - कुसुमंचित।
जहँ मरुकुन्दकुसुम संचलियउ। दवना - मंजरीउ नव-हिलियउ॥
जहँ आताम्रहु फुल्लपलाशउ। सोहै न्याइँ प्रदीप्त – हुताशउ।
जहँ बहु रसविशेष-शव कमलइँ। वह कुसुमै धुनंति भ्रमर कुलइँ॥
घत्ता–जहँ मालति कुसुमामोदरत। चुवंत भ्रमैं बने मधुकरऊ।
अतिमुक्तएउ जहँ रति करई। सो वर - वसंत को न स्मरई॥

नारी सौन्दर्य

दीख कुमारि विजने सोवनघरे। लक्ष्मि न्याइँ नव कमल दलंतरे।
जिन-शासने छै जीव दया इव। पंडित मरने सुगति-वरिमा इव।
मुख-मारुते मलय वन राजि'व। सिंघलद्वीपे रतन विख्याति'व।
सोहै दर्पणे क्रीडा करंती। चिकुर - तरंग - भंग विवरंती।
सो स्फटिकांतरेहिं तहिं पेखइ। सापि तासु आगमन न लक्खई।
घत्ता– जनु मन्मथ - भल्ल - विधान शील युवान जने।
ताहि पेखिय कान्ति, विस्मेउ झट्ट कुमार मने॥
उत्पलदल - दीरघ - पायहिं। नख-मणि-किरण-करंवित-छायहिं।
जंघ - उरू गुह्यान्तर - पासइँ। सुनि वसितैं झीन परिवासइँ।
पोतान्तर - उद्भिन्न - प्रयासइँ। तेहिं वह संति पिहित - परिहासैं।
विकट-नितंब-बिम्ब - सोहिल्लउ। राजै अर्धोअर्ध कटिल्लउ।
रोमावलि वलि अंगे विभावै। पिउ पिपीलि - देखा इव नावै।

रसना दाम निबंधन सोहै। किंकिणि रण-झणंत तन चोभै।
सम-चक्कर कटितट कृश-मध्यउ। आवे करतल - मुष्टिहु ग्राह्यउ।
त्रिवलि - तरंगइ नाभीमंडल। ननु आवंता ऋद्धि - महाजल।
पीनोन्नत- निविडइँ स्तन बट्टैं। निर्भिंदै हारावलि ठट्टैं।
मालति-माला-कोमल - बाहउ। रतन कटक - केयूर - सनाथउ।
सरलांगुलि-सुरेख कोमल कर। सन्ध्या वयव न्याइ नभ तामर।
रतनाभरण - विभूषित कंठे। वेला श्रीव। उदधि - उपकंठे।
किउ अपमान अनूप मखल्लउ। अधरउ नावइ दाडिम - फुल्लउ।
उत्तंगे तीक्ष्णाग्रे नासें। प्रच्छन्नेहिं व अज्ञात श्वासें।
कर्णें कुण्डल-युग गण्डस्थले। नयनेहिं दीर्घ - कृष्ण - चल-धवले।
भौंहा युगलएहिं सुविभक्ते। भाल तलेहिं अर्ध शशि पत्रे।
मधु-प्रिय-पेशल - मधुरालापें। शिर आच्छादिय केश कलापें।
सो पेखिया अनूपम रूपा। अप्सराँइँ विभ्रम संभूता।
बोलेरू नागर परिहासइँ। मनहर - कामु - त्कोपन भाषइँ।
"हे मालूर प्रवर पीवर थनि। आछेहि का इहाँ विर्जित जने।
कारन काइँ नगर जो सूना। मठ - बिहार देवलहिं रमन्ना।
राना कवन आसि एहिं राउले। ध्वज-तोरण-मणि खंभ समाकुले।"
सो सुनियाउ सलज्जिय वदनी। थिउ हेट्ठामुख पघरियनयनी।
मइल-कपोल कज्जला-मिश्रिय। निज कुल देवत्ताइँ जनु भीषिय।

घत्ता–वरयात पुत्रियह तवकेरउ, मुख-कमल निहारहिं करि विनय।
लेइ जल पक्खारै लोचनइँ, जनु चिर करि दुःखुत्कोचनइँ॥

शिक्षा

घत्ता–चिन्हैं दर्शन्त महत्तरहिं, सज्जन-जन-हृदयउ भरै।
आनंदनंदि - कलकल-रवेहिं, पाध्या - शाला पईसरै॥

तहौं तेहिं गुरु वचन-नियुक्ते। परमागम-कला - गुण संयुक्ते।
पुनि अक्षर - संकेत - कृतार्थे। बहु व्याकरण शब्द - शास्त्रार्थे।
सकल-कला - कलाप-परिजानिय। अवगाहन शक्तिए बहु जानिय।
ज्योतिष - मंत्र - तंत्र बहु भेदइँ। धनु - विज्ञान बाण-गुण छेदइँ।
विविध आयुधइँ विविध संवरणैं। रणे हस्तापहस्त व्यापरणैं।
दीनु प्रहर प्रति प्रहर प्रमुँचइँ। लक्षण-चलन - चंचला हुक्कइँ।
मल्लयुद्ध आवल्गन संचइँ। ढोक्कर कर्तरि करन प्रपंचइँ।
गज - तुरंग - परिवाहन संज्ञइँ। सारासार - परीक्षण गिन्नइँ।

घत्ता–एताइँ विशिष्टइँ, अन्यहँऊ अंगउँ, गुणेहि तासु वरिऊ।
जिन - महिम - पूज दानोत्सवेहिं, पाध्याशालहिं नीसरिऊ।

अज्ञात कवि (१०१० ई०)

सुखी कुटुम्ब

भोली मुग्धे ! न गर्व करु, पेखेवि प्रति - रूपाइँ।
चौदह सै छेहत्तरा, मुंजह गजह गताइँ॥

चारि बइल्ला धेनु दुइ, मिट्ठा - बोली नारि।
काह मुंज ! कुटुम्बियइँ, गज वर बांधे द्वारि॥

नीति वाक्य

जे थाके गोदा नदी, हौं बलि कीजौं ताह।
मुंज न देखेउ विहरियउ, ऋद्धि न दीसु खलाहँ॥

जा मति पाछे ऊपजै, सा मति पहिले होइ।
मुंज भनै मृणालवति, विघन न बाढ़ै कोइ॥

दासी प्रेम

दासिहि स्नेह न होइ, नाना निरंखी जानियइ।
राव मुंजेश्वर जोइ, घर घर भीख भ्रमावई॥

वेसा छाड़ि वडायती, जे दासिहिं रंजंति।
ते नर मुंज-नरेन्द्र जिमि, परिभव घना सहंति॥

वैराग्य

कासु कर रे पुत्र-कलत्र-धी, कासु कर रे कर्षण-वाड़ी।
एकले आइब एकले जाइब हाथ-पग दोनों झाड़ी॥

मुंज का पश्चाताप

एहि राजहिं नहिं काज, भोज गुणागर ताहि बिनु।
काठ दिवारउ आज, जिमि जाई भोजहँ मिलौं॥

स्वामिय अतिहि अजान, जो इन पर बोलै हिय।
ज्ञान्या एहु प्रमाण, कीधौ जो न कदर्थियइ॥

अब्दुर्रहमान

ग्रीष्म

"नव - ग्रीष्मागमे पथिक ! नाथ जब प्रवसितऊ,
करव करांजलि सुख - समूह मम निवसितऊ।
तसु पाछहीं लउट्टि विरह - अगि - तपित - तना,
तबहिं आइ निजभवन विसंस्थुल - विकल - मना।"
तिमि अनरति – रणरणक – असुख असहंतियहीं,
दुस्सह मलय – समीरण मदनाक्रान्तियहीं।
विषमज्वाल झलकंत ज्वलंतिय तीव्रतरा,
महियल वन - तृण - दहन तपंते तरणिकरा॥

वर्षा

इमि तपिअउ बहु ग्रीष्म सकौं कस बोलियऊ।
पथिक ! आव पुनि पावस ढीठ न आव पियऊ।
चौदिसि घोरंधार छाय गउ गरूअ - भरो।
गगन - कुहर घुरघुरै सरोषउ अंबुधरो॥
वक छाड़िय सलिल - ह्रद तरू शिखरहिं चढ़ेऊ।
तांडव करिय शिखंडिहि वर शिखरे रटेऊ।
सलिलेहिं वर शालूरेंहि परसेउ रसेउ स्वरे।
कल कल किउ कल कंठहिं चढ़ि आमहि शिखरे॥
मच्छरभय आ - पड़ेउ ठाँव गाई - गणहीं।
मनहर रमिअइ नाथ रंगे गोपागंनहीं।
हरियावल धरावलय कदम्बन महमहिऊ।
कियउ भंग अंगांग अनंगेहिं मम अतिहू।
झाँपी तम बद्दलो दसहु दिशि छाई अम्बर।
उट्ठविउ घुरघुरा घोर घन कृष्णाडम्बर।
नभहि मार्ग नभवल्ली तरल तड़तड़ै तड़क्कै।
दर्दुर रटन कठोर शब्द कोइ सहउ न सक्कै।
निपट निरन्तर नीरधर दुर्धर - धर - धारौघभर।
किमि सहौं पथिक ! शिखरस्थितहँ कोइल रसै स्वर।
यामिनि ! जो वचनीय तुव, सों त्रिभुवन न अमाइ।
दुक्खिहिं होई चौगुनी, छीजै सुख संगाहि।

शरद्

इमि विलपंति पछिम दिन पायउ,
गीति गयंत पढंतहु प्राकृत।
प्रिय - अनुरागि रजनि रमणीया,
गीयइ पथिक! जानि अरमणीया॥
दक्षिण - मार्ग देखन्ती भक्तिहिं,
देखें अगस्त्य ऋषी मैं झट्टिहिं।
जानेउ सो पावसहिं गमायउ,
प्रिय परदेश रहेउ ना रमियउ॥
गउ फाढियइ वलाहक गगनेहिं,
मनहर तारक लोकिय रजनिहिं।
हुयो वास भूमितले फणीन्द्रा,
फुरिय जुन्ह निशि निर्मल चन्द्रा॥

हेमन्त

तिमि उत्कंठि निरन्तर पेखै दिशि पसरी,
ले ढूकेउ चातुरिहिं हिमंतु तुषार भरी।
हुयउ अनादर - शीतल भवने पथिक! जल,
अपसारिय सत्थरेहिं सकल पद्मनउ दल।
सरैन्ध्री घनसार न चन्दन पीसैही,
अधर कपोलालंकृत मदन समिश्रैही।
श्रीखंडेहिं विवर्जित कुम्कुम लेपियही।
चम्प तैल भृग नाभि सह से विर्चाही।
धूँइज्जै तहँ अगर कुम्कुम ले पियहीं,
चम्प - तैल मृगनाभि सह से वियहीं।
धूँइज्जै तहँ अगर कुम्कुम तन लाइयई।
गाढउ निपटा-लिंगन अंगे सुहाइयई।
अन्यहिं दिवँसहि सन्निधि अंगुलिमात्र हुआ।
मै एक्कै पर पथिक! निवेशिय ब्रह्मयुगा।
हेमन्ते कन्त! विलपंतिय, यदि न लवटि आश्वासिही।
तालेहीं मूर्ख! खल! पापि! मोही, मरे वैद्य कि आइयही।

शिशिर

इमि कष्टेहिं मम गयउ, पथिक! हेमन्त - ऋतू,
शिशिर पहूँचेउ धूर्त्त, नाथ दूरन्तरितू।

उठेउ झखड़ गगनें, खर-परुष पवन - हतेउ,
तेहिं छूटेउ झरि करि अशेष तहँ रूप मिटेउ ।।
छाय - फूल - फल - रहित असेवित शकुनि - जनेहिं,
तिमिरान्तरित दिशाहिं तुहिन - धूँआ - भरिया ।
मार्ग भागु पथिकन न प्रवसहिं हिमडरिया,
उद्यानहु ढंखर - सम सूखेउ कुसुम - वन ।।

वसंत

गउ शिशिर वन - तृण - दहंत, मधुमास मनोहर इहाँ प्राप्त ।
गिरिमलय-समीरण वहु बहंत, मदनाग्नि वियोगिहिं विस्फुरंत ।।
वहु विविध राग घन मन हरेहि, सित सर्व रक्त पुष्पावरेहिं ।
पंगुरणेहिं चर्चित तनु विचित्र, मिलि सखियाँ गावै गीत नित्य ।।
महमहेउ अंगे बहु गंधमोद, जिमि तरणि प्रमुंचेउ शिशिर शोक ।
सो पेखिय मैं मध्ये सखीन, लंकोडउ पढ़ेउ नव वल्लभीन ।।
किंशुकहि कृष्ण घनरक्तवर्ण, प्रत्यक्ष परासै धुत परास ।
सब दुःसह हुआ प्रभंजनेहिं, संजनेउ असुख ही सुहंजनेहिं ।।
भुइँ पड़ती रेणू पिंजरीहिं, अधिकतर तपी नवमंजरीहिं ।
मरु शितल बहै महि शीतलंत, न होइ शीत न नशै ताप ।।
जसु नाम अलीकै कहै लोक, ना हरै क्षणार्ध अशोक शोक ।
कंदर्प - दर्प संतपित अंग, साहारै नाथान सहकार अंग ।।
क्षण बुझेउ दुसह यम-कालपाश, वर कुसुमहिं सोहै दश दिशासु ।
गये निविड़-निरन्तर गगने चूअ, नव मंजरि तहौं वसंत हूअ ।।
जल - रहित मेघ संतपै काय, किमि कोइल कलरव सहेउ जाय ।
रमणी-गण रथ्येहिं परिभ्रमन्ति, तूरी - रव त्रिभुवन बधिरयंति ।।
चाचरिहिं गीत ध्वनि-करिय ताल, नाचीय अपूर्व वसंतकाल ।
घन - निविड - हार परिवेष्टितेहि, रुनझुन-रव मेखल-किंकिणीहि ।।

× × ×

यदि अनक्षर कहेउ पथिक ! मैं ।
घन दुःखपूर्ण मदनाग्नि विरहेहिं प्रलिप्ता ।
सो पुरुष छोड़ि विनयमार्ग मत भणियहु ।
तिमि बोलेहु जिमि कोपु नाहि सो बोलेउ जो युक्त ।
आशं षिय वर कामिनिहिं बट्टोही विनियुक्त ।।
तेहिं पठाइ चली दीर्घाक्षि अति तुरतैं,
एंहि बिच दिश दक्षिण तेहि याम दरसी,

पास रोकि पथ दीठेउ नाथ (तिय) झट हर्षिय ।
जिमि अचिंतहू कार्य तसु सिझेउँ क्षणार्ध महन्त ।
तैस पढ़न्त सुनन्तयहूँ, जयतु अनादि अनन्त ।।

बब्बर

गरीबी का जीवन

शीत वृष्टी कीजिय, जीवा लीजिय, बाला बूढ़ा कंपंता ।
वह पछुआँ वाता, लागे कायहँ, सर्वा दिशा झाँपता ।
यदि जाड़ा रूसै, चिता हवासै, पेटे अग्नी थप्पीया ।
कर-पादा संहरि, कीजै भीतरि, आपा-अप्पो लुक्कीया ।।

तौ लौं बुद्धी तौ लौ शुद्धी, तौ लौं दाना तो लौं माना, तो लौं गर्वा ।
जौलौं जौलो हाथे नाचै, बिज्जूरेखारंगा न्याई एक द्रव्या ।
एही बीच आत्म दोषे, दैव रोषे होइ नष्ट, सोइ सर्व ।
कोई बुद्धि कोई शुद्धि, कोई दान, कोई मान, को गर्व ।

सुखी जीवन

पुत्र पवित्र बहूत धना, भक्तों कुटुम्बिनि शुद्ध मना ।
हाके त्रसई भृत्य - गणा, को करे बब्बर स्वर्गे मना ।।
स्वधर्म-चित्ता गुणवन्त पुत्रा, सुकर्म रक्ता विनता कलत्रा ।
विशुद्ध-देहा धनवंत-गेहा, करंति के बब्बर स्वर्ग नेहा ।।

सो मानिय पुणवंत, जासु भक्त पंडिस तनय ।
जासु धरनि गुणवंति, सोउ पुहुमि स्वर्गह निलय ।।
ऊँचो छाजन वि-मल घरा, तरुणी घरनी विनयपरा ।
वित्तके पूरल मूँदघरा, वर्षा समया सुक्खकरा ।।

प्रिय भक्त प्रिया गुणवंत सुता ।
धनवंत धरा, बहु सक्ख करा ।।
गुणा जासु शुद्धा वधू रूप-मुग्धा ।
घरे वित्त जग्गा, मही तासु स्वग्गा ।।

कमल - नयनि, अमिय - बयनि ।
तरुणि घरनि, मिलै सुपुणि ।।
गुरुजन - भक्तउ, बहुगुण - युक्तउ ।
जसु जिय पुत्रउ, सोइ गुणवंतउ ।।

ओगर-भत्ता रंभा-पत्ता, गाय के घीवा दुग्ध-संयुक्ता।
माँगुर-मच्छा नालिय-शाका, दीजै कांता खाइ पुणवंता।

कुलक्षणा स्त्री

भौंहा कपिला ऊँच लिलारा। मांझे पियरा नेत्रा युगला।
रूक्षा वदना दंताविरला। कैसे जीविय ताका प्रियला।

ग्रीष्म

तरुण - तरणि तपै धरणि, पवन बहै खरा।
लाग नाहिं जल वड़ मरुथल, जन-जीवन-हरा।
दिश चलै हृदय डुलै, हम एँकली बधू।
घरे नहिं पिय सुनहि पथिक! मन-इच्छै कहू।

पावस

वरिस जल भ्रमै घन गगन, शीतल पवन मन-हरन।
कनक - पियरि नचै बिजुरि, फूलिया निम्बा।
पत्थर - विस्तर - हियरा पियरा, नियर न आवई।
नाचै चंचल विज्जुरिया सखि! जाइ।
मन्मथ खड्गहँ धरसै जलधर शानै।
फुल्ल कदंबक अम्बर डम्बर दीसै।
पावस आउ घनाघन सुमुखि! वरीसै।
फुल्ला निम्बा भ्रम भ्रमरा, दिट्ठा मेघा जल-श्यामला।
नाचै बिज्जू प्रिय सखिया, आवे कंता कहु कहिया।
जो नाचै बिज्जू मेघधारा, प्रफ्फुल्ला निम्बा शब्दइ मोरा।
बीजंता मंदा शीता बाता, कंपता काया कन्त न आया।

शरद

नेत्रा नन्दा ऊगो चन्द्रा, धवल-चमर-सम सित-अरविन्दा।
ऊगे तारा तेजस् सारा, विकसु कुमुद-वन-परिमल कन्दा।
भासै काशा सर्वा आशा, मधुर पवन लहलहिय करंता।
हंसा शब्दै फूला बन्धू, शरद-समय सखि! हिय हहरंता।

शिशिर

जो फूलु कमल-वन वहै लघु पवन, भ्रमै भ्रमर-कुल दिशि विदिशं।
झंकार परै बन रवै कोइल-गण विरहिय-हिय हुओ डर-विरसं॥

आनंदिय युवजन हुलस उठिय मन, सरस-नलिनि-दल कृत-शयना।
बीतउ शिशिरउ दिवस दिरघ भउ, कुसुम समय अवतरिय वना।

वसंत वर्णन

भ्रमै मधुकर फुल्ल अरविन्द, नव किंशु कानन ज्वालिया।
सर्वदेश - पिक राव चुल्लिय, शीतल - पवन लघु बहै।
मलय - कुहर नव - वेलि पेरिय।
चित्ते मनोभव - शर हनै, दूर - दिगंतर कंत।
किमि परि अपहि धारिहउ, इमि परि-पडिय दुरंत।

कनकामर मुनि

पति विरह

हल्ला हल हूयो सकल जन, अपरा पर जानै संचलहीं।
हा हा रवउठेउ करुण-स्वर, पुनि शोके नरवर कलकलहीं॥
जो नर - पंचानन विकसित - आनन जले पड़ेऊ।
तो सकलहिं लोकहिं प्रसरित शोकहि अति डरेऊ॥
रति - वेग सुभामिनि जनु फणि - कामिनि विमन - भया।
सर्वांगे कंपिय चित्ते चमक्किय मूर्छगता॥
कृत चमर सुवातें सलिल सहायें गुण - भरिया।
उट्ठाइय रमणिहिं मुनिमन - दमनिहि मणहरिया॥
सा करतल कमलहिं सुललित सरलहिं उर हनई।
उद् - व्याकुल - नयनी गदगद - वदनी पुनि भनई॥
"हा बैरी बीवस पाप—मलीमस की कियऊ।
मम अहेयु वराकियु रमण परायउ की हियऊ॥
हा दैव! पराङ्मुख दुर्नय दुर्मुख तुहुँ भयऊ।
हा स्वामि! सलक्षण सुष्ट विचक्षण कहँ गयऊ॥
मम उपर भटारा नरवर सारा करुण करो।
दुख - जलधि - पडंती प्रलयहँ जांती नाथ धरो॥
हौ नारि वराकी आपति आये को सुमिरऊँ।
पर छाडिय तुम्हहिं जीवौं एवं की मरऊँ॥
इमि शोक - विमुग्धइ लपियहुँ लुब्धहिं जो हियई।
हौ बोलेसु तइयहुँ मिलिहै जइहउँ मोर पती॥

पत्नी विरह

आवासहो आवई जाव राव । मदनावलि ना पेखैउ ताव ।
जोइयै चुतुर्दिश हृदयहीन । उद्वेगिर हिंडै महिहे दीन ।।
तो शंकेउ नरवरे गलित-गर्व । कहँ गउ कलग सर्वाङ्ग-भव्य ।
मदनावलि जा आनंद भूग्र । सा एवं की विपरीत हूग्र ।
तत्र प्रेषेउ किंकर वट नृपेहिं । अवलोकहु स्वामिनि दिशि पथेहि ।
जोयउ दिसीहिं आगत वलेइ ! पुक्कारहिं ऊँचा कर करेइ ।
तब राय देखियउ ते सोवंत । परि मुंच अश्रु नयनहिं तुरंत ।
"हे प्रजापति तुहुँ श्रवणानुवंध । मोहि आखहु सुन्दर नेहबंधु ।
हा मुग्धे मुग्धे तुहुँ केहिं नीउ । की एवं लुक्किय कतहुँ ठीय ।
हा कुंजर ! की तुहुँ यमहँ दूत । की दोषहिं मोहि प्रतिकूल हूग्र ।
घत्ता--चिर मोह वहंतउ कोउ हियहिं, सुन्दर रूप अग्रे हुयउ ।
विद्याधर आयउ सोक तहिं, विद्यासागर पार गउ ।

तुच्छ संसार

सो सुनिय वचन राजाधिराव । संसारहँ उपर विरक्त भाव ।
धिक धिक असोहावउ मर्त्यलोक । दुख-कारण मनोरथ अंगभोग ।
रतनाकर - तुल्यउ यत्र दुःख । मधु विन्दु समानो भोग सुक्ख ।
घत्ता--हा मानव दुःखइँ स्तब्ध-तन, विरस हसंतउ जहँ मरै ।
भन निघृण विषयासक्त मन, सो छाडिय को तहँ रति करै ।
कर्मेहि परिट्ट - ठिउ जो उबरे, यमराजेहिं सो लेउ निजय-पुरे ।
जो बाल्येहिं बालउ लालियऊ, सो विधिना निजपुरे चालियऊ ।
नवयौवन चढ़िमउ जो प्रवरू । यम जाइ लिवावन सोउ नरू ।
जो बूढउ व्याधिशतेंहि कलिऊ । यमदूतहिं सो पुनि परिमार्दिऊ ।
बलभद्रहु सम हरि अतुल - बलू । सो विधिना लीपउ करिय छलू ।
छै खंड वसुन्धर जेउ जिया । चक्रेश्वर ते कालेहिं लिया ।
विद्याधर किन्नर जे खचरा । बलवन्ता यम - मुखे पड़ेउ सुरा ।
फणिनाथै सरिस अमर - पती । यम लेतउ कवन नु ना मुवई ।

सिंहल द्वीप

ता एकहिं दिन करकंडएहिं । पुनि दिन्न प्रयाणहिं तूर्ययेहिं ।
गउ सिंहलद्वीपहु निवसमान । करकंड नराधिप नर प्रधान ।
जहँ पावस पिल्लइ मनहरंति । सुर-खेचर-किन्नर जहँ रमंति ।
गज लीलहिं महिलउ जहँ चलंति । निज रूपे प्रति रूपहँ खलंति ।

जहँ देखिय लोकहँ केर भोग। बीसरियउ देवहँ देवलोक।
आवासेउ नगरहँ वहि प्रदेशे। अरि शंका बाढी ताहि देशे।
आवास छाड़ि सहचर समेत। करकंड गयेउ रमणिहिं अमेय।
तहँ गरुअउ स्रवण शतेहिं भरिउ। जनु कल्पवृक्ष देवेहिं धरिउ।
दलवंतहि पत्रहिं परिचरिऊ। वट देखु राव सम - विस्तरिऊ।
घत्ता--करकंडेहिं दीसेउ सो वट, दीरघ सुष्ट सुकोमलह।
तो लेइय गोली धनु हडिया, वेधउ अशेषइँ शाद्वलइ।

जिनदत्त-सूरि

वेश्या निन्दा

यौवनार्थ जो नाचै दारी। सो लागै श्रावकहँ पियारी।
तेहि निमित श्रावक श्रुत - फाडै। जाते दिवसे धमहि फोडै।
बहुत लोग रागांध सो पेखहिं। जिन-मुख-पंकज विरला वांछहिं।
जन जन भवने शुभार्थ जो आयउ। मरै सो तीक्ष्ण कटाक्षे घायलु।

दुर्लभ मानुष जन्म

लाभेउ मानुष जन्म महारघु। आपे भव समुद्र तें तारहु।
आपु न अर्पहु रागहँ रोषहँ। काहु निधान न सर्वहँ दोषहँ।

गुरु सब कुछ

दुर्लभ मानुष जन्म जो पायउ। सह लघु करहु तुम्म सुनिरुक्तउ।
शुभ गुरु दर्शन बिनु सो सहलउ। होइ न करते बहलउ बहलउ।
सु-गुरु सो उच्चै सच्चै भाषै। पर परिवादि निकर जसु नाशै।
सर्व जीव जिव आपउ राखै। मुख्य मार्ग पूछियउ जो आखै।
इहँ विषमी गुरु गिरहिं सम्-उट्ठिय। लोक प्रवाह सरित को पइट्ठिय।
जाँस गुरु पाद नाहि श्रवणिज्जै। तासु प्रवाहे पडिय परिखिद्यै।
पर न मानै तदार्थ जो अच्छै। लोक प्रवाहि पडिय सोउ गच्छै।
यदि गेयार्थ कोउ तेहिं कारै। सो तेहिं उड्डिय लगुडहिं मारै।
तिमि तिमि धर्म कहंति सयाना। जिमि ते मरि होहि सुरराना।
चित्ता शोक करंता थाइय। जन तहँ कृत भवंति नष्टा हित।

धर्मोपदेश

विक्रम संवत्सर शत - बारह। होई प्रनष्टउ सुख - घरबारह।
इति संसारे स्वभावे शांतेहि। वर्त्ते सुम्मति सुक्खु वसंतेहि।

तहाँ बात न पूछै धर्महँ। जिन गुरु मीलहि कार्ये दामहँ।
फल न पावै मानुष्र जन्मह। दूरे होंति त्याग शिव शर्मह।
मोह निद्र जनु सुत्तु न जागै। सो उट्ठिउ शिव मार्ग न लागै।
यदि शुभार्थ कोइ गुरु जग्गावै। तोउ तद्वचन तासु ना भावै।
परमार्थे ते सूतउ जागै। सुगुरु - वचने जे उठिया लागै।
राग द्वेष मोहउ जे गंजै। सिद्धि - पुरंध्रि ते निश्चय भुंजै।
बहुत लोग लुंचित शिर दीसै। पर राग द्वेषहि संग विलसै।
पढ़ै गुनै शास्त्रहि वक्खानै। पर परमार्थ - तीर्थ सो न जानै।
दुग्ध होइ गो-यकृतउ धवलउ। पर पीवंतै अंतर वहलऊ।
एक शरीर सुक्खु सं - पातै। अवर पियउ पुनि मांसउ स्वादै।
ईश्वर-धर्म प्रमत्त जे आछहिं। पाप करिय ते कुगतिहिं गच्छहि।
धार्मिक धर्म करंत जे मर्षहि। ते सुख सकल मनीच्छित लभिहैं।
कार्य करै (जो) बुहारी बुद्धी। सोहै गेह करेइ समृद्धी।
यदि पुनि सोउ युग युग कीजै। ता का कार्य हीय सा भीजै।
इति जिनदत्त-उपदेश जे सुनहीं। पढ़ै गुनै परिज्ञान जे करहीं।
ते निर्वाण रमणि-संग विलसहिं। बलेउ न संसारे संग मिलिसहिं।

हेमचन्द्र-सूरि

कुनारी

जसु अंगहिं घन नसा-जाल, जसु पिंगल-नयन-युग।
जसु दन्त प्रविरल - विकटोन्नत।
न धरीजै दुख-करिणि मत्त-करिणि इव घरिणि दुर्नय।
गाँव पाटन हाट चौहट, रावल देवल पुर जो दीसै।
सुंदरांगी विरहेन्द्रजालकेहिं, तेहिं सा एकउ कृत-बहुरूप-कलिता।

शृंगार रस

विप्रियकारक यदपि पिउ, तउ तेहिं आनहु आज।
आगिहिं डाहा यदपि घर, तउ तेहिं आगीं काज।
जिमि जिमि वंकिम लोचनहँ, वहु साँवारि सीखाय।
तिमि तिमि मन्मथ विजय शर, खर - पाथर तीखाय।

× × ×

तुच्छ मध्ये तुच्छ जल्पने।
तुच्छ अच्छ रोमावलिहें। तुच्छ राग तुच्छतर हासे।
प्रियवचन अलभंतियहँ, तुच्छकाय मन्मथ निवसहे।

गयउ सो केसरि पियहु जल, निश्चिन्ते हरिनाइँ।
जासु केर दह्हाडये, मुखइँ पडंति तृणाइँ।
शिर चढ़िया खावइँ फलहिं, पुनि डालिहिं मोडंति।
तऊ महाद्रुत शकुनहीं, अपराधी न करंति।

वीर रस

भल्ला हुआ जो मारिया, बहिनि! हमारा कन्त।
लज्जिज्जेहु वयस्ययहि, यदि भागा घर एन्त।
जहँ काटिज्जै शरहि शर, छियै खङ्गहि खङ्ग।
तहँ तेही भटघट-निवहे, कंत प्रकाशै मग्ग।
कंत हमारो रे सखिय, निश्चै रूसै जासु।
अस्त्रहि-शस्त्रहि हाथियहि ठावहि फोड़ै तासु।
हम हैं थोड़े रिपु बहुत, कायर एम भनंति।
मूढ निहारै गगन तल, कवि जन जोन्ह करंति।
खङ्ग बेसाहिव जहँ लहउ, प्रिय! तहँ देशहिं जाहु।
रण-दुर्भिक्षे भागई, विनु युद्धेहिं बलाहु।

× × ×

करहत-स्तन-धर गलिय लोल मनोहर हारय।
गंडस्थले लुलित मइल-जटिल-कुंतल भारय।
अनवरत-वाहनि-वट-प्रसून शोण-विलोचन।
तव हुअ नरपति-तिलक संप्रति वैरि-वधू-जन।

हरिभद्र सूरि

वसंत

पाणि-सं-ठिय मंजु सिजंत भ्रमरावलि श्यामलिय, दले कुसुम, सहकार-मंजरि।
पसरंत हर्षिल सित-पुलक-भरें राजंत शिरवरे।
विरचिय कर-संपुट भनै उद-जानिय आगंत।
जिमि प्रभु हर्षिय भुवन जन, संप्रति आउ वसंत।
जो एहि पसरेउ दयित-संग इव मलयानिल अंग-सुख प्राप्तविभव पुनि कुसुम-परिमल।
संचारिय तूर्य-रव रम्य फुरेउ कलकंपि-कलकल।

पद्मारुण कंकेलि - तरु - कुसुमा नयन - सुखाइँ।
तपनीय ज्वल कुसुंभ भर हुअ कोरिंट वनाइँ।
यत्र माधवि लतिक तोमरिय-शेफालिक कुंतलिय जालकित लघु, सुरभि-लइयउ।
भुर्जद्रुम मंजरिय बहु गुल्म - पादप अशोकउ,
आलिंगिज्जै पूग फले तरू कामुक सर्वाङ्ग।
नागवल्लि तरुणिहिं जनहँ, उज्जीवियहि अनंग।
जिमि प्रवालांकुरेहिंकृत शोभ डिंभाइव तिलककृत गरुव - महिम कामिनि मुखाइव।
बहु लक्षण-चित्र शत - मनहरा नरपति - गृहा इव।
उत्तम जाति प्रसवकृत, महि मंडना वनाइँ।
विलसै भुवनानन्द कर, जनु नर नाथ कुलाइँ।
जाहि फुटिय सित - कुसुम कर्णिकार - वन - राजि कंचन - मृदउ करै पथिक-हृदयाहँ विभ्रम।
अभिकांक्षै भुवनतले सकल-मिथुन निज-दयित-संगम।
गाइज्जै रासहि चर्चरिउ, पीइज्जै वर - मदिराव।
मानिज्जै तुंग - स्तनिउ, क्रिज्जै जल क्रीडाव।

कृष्ण सौन्दर्य

नीलकुंतल कमल-नयनिल्ल, विंबाधर सित-दशन कंबुग्रीव, पुर-अरर उरतल।
युग-दीरघ-भुज-युगल-वदन सीस जिमि कमल-उत्पल।
पद्मदलारुण कर - चरण तप्तकनक गोरंग।
आठ वर्ष वय प्रभु हयेउँ, समधिक - विजित - अनंग।

विवाहोत्सव

तव प्रभूतइ लग्न समये मिलितेहिं सुहृद्-साजनहितैषि, कुमर कुमरीह दोनउ।
प्रारब्ध विवाह-विधि तपनः खचर प्रभ दुहित अन्यउ।
निज निज जनकानुग्रहेउ, कृत - सादर - शृङ्गार।
लाब कुमारह पाणितले, फुरिय मलय पहूहार।
तो कुमार - कृत - विवाहे पसरंत महोत्सवे, नगर लोग सकलउ संहर्षेउ।
आशीषहँ शत - सहस देइ करै मंगलिय प्रकर्षउ।
अथ नरनाथें विस्तरें निज नगर ही अशेषे।
प्रारंभेउ वधावनउ, तेहिं विवाह विशेषे॥

वाजंत गाजंत वहु भेद-बरं । लभिजंत दीयंतकर्पूर पूरं ।
प्रा-नचंत नाचंत वेश्या - समूहं, द्रशिज्जंत हिंडंत वामन - समूहं ।
जांत आवंत तिट्ठंत वहु सज्जनं । लेत विवरंत सुप्रशान्त जनरंजनं ।
खात पीयन्त दीयन्त बहु भक्षणं । लोक उल्लसिय बहु भेद मनसुक्खयं ।
धावन्त क्रीडन्त वल्गंत कुब्जक-गणं । वांत उट्ठंत निपतंत बालकजनं ।

नारी विलाप

हरिन-नयनिय चम्पक-छाय शशि सौम्य वदनांबुरूह,
कुंदकलिय - सित - दंत - पंक्तिया ।
परिदेवेउ रव-भरिय धरणि - गगन - अंतरमय इव ।।
कूटैं शिर कर मुद्गरिहिं, पीडैं उरु पादाहँ ।
ताड़ै वक्षोरुह विकट निज निज कर शाखाहिं ।।
रोवैं गावैं ललैं मूर्छैं सीत्कारैं पुक्कारैं, सखिहि गहिउ उरहार तोड़हीं ।
उल्लूरै चिकुर - भर कनक - रतन - वलयालि मोड़हीं ।
सुमिर सुमिर निज प्रियहँ महा गुण-गण तहँ विलपंति ।
जिमि स-तिरस्कृत - तरु विहग, नितरुअ रोआपंति ।।

अज्ञात कवि (११६०)

कालहिं वोर जो वीनती, आज न जानै कक्ख ।
पुनरपि अटविहिं करिसु घर, ना सँग एह अनक्ख ।।
भूमि गुणेहीं यदि कहबि, तुंगिमा तुज्झ होउ ता होउ ।
तिमि तव फलाहँ ऋद्धी होही बीजानुसारेहीं ।

आमभट्ट

रे राखै लघु जीव वडउ रणे मदक गल मारै ।
न पिउ अनर्गल नीर हेरि राजहँ संहारै ।
अवर न बांधै कोइ स - घर रतनाकर बांधै,
परनारी परिहरै लक्ष्मि पर - राजहँ रुंधै ।
कुमरपाल कोपी चढ़ेउ फोडै सप्तकडाहि जिमि ।
जो निज धर्म न मानिहैं, तेहहिं चाढिसु ताम तिमि ।

× × ×

गर्जंति गगन कवि आम भन, सुर-मणि फणि-मणि एक हुअ ।
मागहि हिम गहि मम गहि मगहि मुंच मुंछ जयसिंह तुव ।

विद्याधर

चन्दा कुन्दा काशा हारा हीरा त्रिलोचना कैलाशा।
जेत्ता जेत्ता श्वेता, तेत्ता काशीश जीतिया तव कीर्ति।
विमुख चलिय रणे अचल, परिहरिय हय-गज-बल।
हलहलिय मलय नृपति, यासु यश त्रिभुवन पिवई।
वनरसि - नरपति लुलिय सकल - उपरि यश फुरिया।

× × ×

जेहिं कीजिय धारा जित्तु नेपाला, भोट्टंता पिट्टंत चले।
भंजावेउ चीना दर्पहि हीना, लोहाबले 'हा' क्रंदि पड़े॥
ओड्डा उड्डापेउ कीर्ती पायेउ, मोडिय मालव - राज बले।
तेलंगा भागेउ पुनहुँ न लागेउ काशी-राजा जक्खन चले।
भट्ट पत्ति-पाद भूमि कंपिया, टाप खूँदि खेह सूर भंपिया।
गौड-राज जित्तु मान मोड़िया, कामरूप-राज वंदि छोड़िया।

शालिभद्र सूरि

पेखेउ पुरहँ प्रवेश, दूत बहूतउ राजघरे।
स्वयं प्रतिहार प्रवेश, पाइय नरवर पद नमैं।
चउकी माणिक थंभ माँझ बईठउ वाहु बल।
रूपे जैसी रम्भ चमरधारि चालैं चमर।
मंडित मणिमय दण्ड, मेघाडम्बर पशर धरिय।
जसु प्रकटे भुजदण्ड, जयवंती जयश्री वसिय।
जिमि उदयाचल सूर, तिमि शिर सोहै मणि-मुकुट।
कस्तुरि - कुसुम कपूर कच्चूमर महमह - महइ।
झलकै कुंडल कान, रवि शशि मंडित जनु अवर।
गंगा - जल गजदान, ग्रंथित गुण - गज गुडगुडै।
उरवरे मोती हार, वीर वलय करे झलझलै।
नवल अंग शृङ्गार, खलकतो टोडर वामए।
पहिरन चादर चीर, कंकोलह करि भाल करे।
गुरुओ गुण - गम्भीर, दीसेउ अपर कि चक्रधर।

× × ×

रवि उद्‌गमे पूरब दिशहिं पहिलेइ चालिय चक्र।
धूनिय धरतल थरथरै, चलिय कुलाचल-चक्र ।।
पीछे प्रयाण तब दियो, भुजबलि भरत नरेन्द्र।
पिडि पंचानन परदलहँ, धर-दल अपर सुरेन्द्र ।।
बाजिय समभेरि संचरिय, सेनापति सामन्त।
मिलिय महाधर मंडलिय, अन्थित गुण गर्जन्त।

× × ×

एक उतारा करिय तुरग हयसारे बांधै।
एक रगड़ घोड़ा हँ खान एक चारा रांधै।
एक पकड़ नदनीर तीर सो त्रिय बोलावै।
एक बार असवार सार साधन वेलावै।
एक आकुलिया तापे तरल तड़ि · चढ़िय झँपावै।
एक गूदर साबान सुभट चौरा देवरावै।

सोमप्रभ

विरह वर्णन

पिय ! हउँ रहिया सकल दिन, तब विरहाग्नि किलान्त।
थोड़इ जले जिमि माछरी, तल्लोबिल्ल करंत।
मैं जानेउँ पिय विरहियह, कोइ धरा होइ विकाल।
नतरु मयंकउ तिमि तपै, तिमि दिनकर क्षय काल।

नरक भय

तहँ नरकवास जो परवशेहिं। मैं नरकपाल-मुदगर-हतेहिं।
लिपटिया वज्रकंटक सँनाह। सेमलतरु जनित शरीर बाध ।।
क्रंदन्त करुण जो हठेहि धरवि। खाइय निज मांस भक्षा करावि।
जो वेदन-विफुरिय सर्व गात्र। हौ पादेउँ तड़पेउँ ताम्र तप्त ।।
जो पूत रुधिरवश वाहिनीइ। मज्जावेउ वैतरणी नदीइ।
जो तप्त पुलिने चलताहु भोग। जो शूलवेध दुख पाव दुर्ग ।।

इन्द्रिय शत्रु

नागम्य अगम्यउ किछउ गनै। अब्रह्म कलुष अभिलाष करै।
सकलत्रहु होतेउ चहै वेश। पररमणि-गमन प्रकटेउ किलेश।
शिशिरेहिं नि-वात घरेऽग्नि सिगड़ि। घन-घुसृण-तेल बहु वस्त्र सँपड़ि।

चंदन - रस - कुसुम जलावगाह। धरागृहे ग्रीष्मे चहै न्हाय।
पावस पदपंक प्रसंग स्तब्ध। वांछै अच्छिद्र भवनतल लब्ध।

वसंत

पुनि आव कदाचि - वसंत समय। संजनिय सकल चित्त प्रमद।
उल्लासिय वृत्त - प्रवाल - जाल। प्रसरंत चारु चर्चरिव माल॥
जहँ वनलता प्रकटिय कुसुम-वर्ष। मधुकान्त समागत - जनित हर्ष।
पवमान चलिय नव पल्लवेहिं। नाचंति न्याइँ कोमल करेहिं॥
नव पल्लव रक्त अशोक विटप। मधु लब्धिमहिं संगे परिणयइँ-करब।
जहँ राजै नारि कुसुंभ - रक्त। वस्त्रेहिं आच्छादिय सकल-गात्र॥
हसई इव फुल्ल मल्लीगणेहिं। नचाइब पवन - कंपरि - बनेहिं।
गावै भ्रमरावलि - रवहिं न्याइँ। जो स्वयमपि मदनोन्मत्त भाइ॥

नीति वाक्य

बसइ कमल कलहंसी, जीव दया जसु चित्त।
तसु प्रक्षालन जलहीं, होइह अशिव निवृत्ति॥
आभरण-किरण दीप्यंत देह। अधरीकृत सुरवधु - रूपरेख।
घन कुंकुम-कर्दम घर-दुवार। लिपटन्त चरण नाचंति नारि॥
तीयहँ तीन पियारईं, कलि काजल सिन्दूर।
अन्यउ तीन पियारईं, दूध जमाई तूर्य॥
वेशविशिष्ट-हिं वारियत, यदपि मनोहर गात्र।
गंगा जल प्रक्षालियउ, सुनह कि होइ पवित्र॥
नयने रावै मन हँसे, जनु जाने सब तत्व।
वेश विशिष्टहँ सो करै, जो काठहँ करपत्र॥
रावण जायेउँ जसु दिनहिं, दशमुख एक शरीर।
चिंतविया तहिया जननि, कौन पियाअउँ क्षीर॥

जिनपद्म सूरि

झिर झिर झिर झिर झिर झिर ए मेघा बरसंति।
खल खल खल खल खल खल ए बादला बहंति।
झब झब झब झब झब झब ए बीजुली झबक्कै।
थर थर थर थर थर थर ए विरहिनि मन कंपै।
मधुर गभीर स्वरे मेघ जिमि जिमि गाजंते।
पंच बाण निज कुसुम बाण तिमि तिमि साजंते।

जिमि जिमि केतकि मह महंत परिमल विहसावै।
तिमि तिमि कामिय चरण लागि निज रमणि मनावै।
शीतल कोमल सुरभि वायु, जिम जिमि वायंते।
मान - मडफ्फर माननिय तिमि तिमि नाचंते।
जिमि जिमि जलधर भरिय, मेघ गगनांगने मिलिया।
तिमि तिमि कामीकेर नयन नीरहिं झलझलिया।
भास—मेघारव भर उलसिय, जिमि जिमि नाचै मोर।
तिमि तिमि माननि खलबलै, साहीता जिमि चोर।

शृंगार

अति शृङ्गार करेइ वेष मोटै मन ऊलटि।
रचित रंग बहुरंग चंग चंदन रस ऊबटि।
चंपक केतकि जाति कुसुम शिर खोंप भरेई।
अति आछत सुकुमार चीर पहिरन पहिरेई।
लहलह लहलह लहलहए उर मोतिय हारो।
रणरण रणरण रणरणइ पग नूपुर सारो।
जगमग जगमग जगमगै कानहिं वर - कुण्डल।
झलमल झलमल झलमलै आमरणहँ मण्डल।
मदन खड्ग जिमि लहलहंत जसु वेणी - दण्डो।
सरलउ तरलउ श्यामलउ रोमावलि दण्डो।
तुंग पयोधर उल्लसै शृङ्गार स्तबक्का।
कुसुम वाण निज अमृत कुम्भ जनु थापन रक्खा।

हावभाव

नयन कटाक्षहँ आ हनई वाको जोयंती।
हाव भाव शृङ्गार - भंगि नव-नविय करंती।
तबउ न बींधै मुनि - प्रवरो तब बोलावै।
"तपन तुल्य देह नाथ! मम तनु संतापै।
वारह वर्षहँ केर नेह केहिं कारण छड्डिउ।
एवड निठुरपनइ का मोसे तुम मण्डिउ।"
थूलि भद्र प्रभनेइ "वेश! इह खेद न कीजै।
लोहेहिं गठियउ हृदय मोर, तुव वचन न बिंधै।"
"मम विलपंतिय उपर नाथ! अनुराग धरीजै।
ऐसो पावस - काल सकल मो सो मानीजै।"

मुनिपति जल्पै "वेश, सिद्धि-रमणी परिणेवा।
मन लीनउ संयम श्री सो भोग रमेवा।

विनय चन्द्र सूरि

भादों

भादों भरिया सर पेखेइ। सकरुण रोवै राजल-देइ।
"हा एकलड़ी मैं निराधार। का उद्वेजिस करुणासार।"
भनै सखी राजल मन रोइ। नीठुर नेमि न आपन होइ।
सिंचिय तरुवर परि प्लवंति। गिरिवर पुनि करडेरा होंति।
साँचउ सखि! वारि गिरि भिंद्यति। काह न भिद्यै श्यामल कांति।
घन वर्षन्ते सर फूटंति। सागर पुनि घन ओघ डुलंति।

कातिक

कातिक क्षितिग ऊगै साँझ। छीजेउ होइ अति झाँझ।
राति-दिवस आछै विलपंत, "बलि-बलि दयाँ करु दयाँ करु कंत।"
नेमि केर सखि मुँचउ आश। कायर भागेउ सों घर वास।
एहुँ ऐसहि सनेहल नारि। जाइ कोइ छाडिय गिरिनार।
कायर का सखि! नेमि जिनेन्द्र। जिन रणों जीतेउ लाख नरेन्द्र।
फुरै श्वास जौ आगल नास। तौ लो न छोड़उँ नेमिहिं आश।

पूस

"पूस रोष सब छाड़हु नाह। राखु राखु मोहिं पद-नह-पाँह।
पड़ै शीत ना रजनि विहाइ। लहिय छिद्र सब दुःख अमाइ।"
"नेमि नेमि तू करती मुग्धे। यौवन जाइ न जानसि शुद्ध।
पुरुष - रतन भरियउ संसार। परनहुँ अन्य कोई भर्तार।"
"भोली तैं सखि! खरी गँवारि। वर अच्छंते नेमि कुमार।
अन्य पुरुष कोइ आपन नहई। गज-वर लहे को रासभ चढ़ई।"

माघ

माघ मास मातै हिम राशि। देवि भनै "मोहिं प्रिय लेउँ पास।
तब बिनु स्वामिय! दहै तुषार। नव नव मारहिं मारै मार।"
"एहुँ सखि रोवसि जिमि आरण्ये। हाथ कि जोये धरियौं कर्णे।
तौ न पतीजसि हम्मर माइ। सिद्धि रमणि रातो नेमि जाइ।"
कंत वसंतै हियरा मांहि। बात पहीजौ किमिहि लसाइ।
सिद्धि जाइ तोहि कोई भीय। ओहि संग जाऊ उगसे न धीय।"

फागुन

फागुन पवना पर्ण पड़ंति। राजल दुःख कि तरु रोवंति।
"गर्भ गलिय हौं काह न मूय"। भनै विह्वल धारिणि धूय।
अजउ भनेंउ कर सखी विमर्षि। अछै भलो वर नेमिह-पास।
"पुनि सखि! मोदक यदि ना होंति। छुधितें सो हारी किन रुच्चंति।"
"मनह पास यदि जल्दी होइ। नेमिहिं पास तेतनउ ना कोइ।
यदि सखि! वरौं त श्यामल-वीर। घन विनु पियै कि चातक नीर।"

वैशाख

वैशाखह विहसिय वनराजि। मदनमित्र मलयानिल वाइ।
फुट्टिय हियरा माँझ वसंत। विलपै राजल पेखिय कंत।
सखी दुःख बीसरिबा भनई। सुनु सुनु भ्रमरउ का रुनझुनई।
"दिवस पंच थिर यौवन होइ। खाहु पियहु विलसहु सब कोइ।"
रमणु प्रशंसिय राजल-कन्य। "जाहि कंत वशे ते पर धन्य।
जसु पिय न करै किछुउ पुछारी। सों हौं एकइ फूट-लिलारी।"

लक्खण

काव्य महिमा

सो सुनिय भनेउ साहुल-सुतेहिं। जिन-चारणार्चन-प्रसरिय-भुजेहिं।
"हे लंबकंचु-कुल-कमल-सूर। कुल मानव चित्ताशा-प्रपूर।
घत्ता—तुहुँ कवि-मन-रंजन, पाप-विभंजन, गुण-गण-मणि-रतनाकरऊ।
उच्छेदि कुवर्त्तन-सुनयउ मार्जउ, निखिल-कलामल-नागरऊ।
तुहुँ धन्य जासु ऐसहू चित्त। त्रिपदार्थ रसोज्ज्वल मति-पवित्र।
शयनासना स्तंवेरम तुरंग। ध्वज छत्र चमर बालावरंग।
धन-कण-कंचन-धन द्रविण-कोश। झंपान-यान-भूषण संतोष।
घर पुर नगरागर देश ग्राम। पट्टोल-अम्बर-पट्टन समान।
संसारसार पद-वस्तु भाव। जो जो दीसै नाना स्वभाव।
सो सो सुखेहिं पाइयै सर्व। लभियै न काव्य-माणिक्य भव्य।

× × ×

इहँ यमुना नदि उत्तर तटस्थ। महनगरि रायभा (है) प्रशस्त।
धन-कण-कंचन-वन-सरि-समृद्ध। दानोन्नत कर-जन ऋद्धि-ऋद्ध।

किर्मीर कर्म निर्मिय रमण्य। स'ऽट्टल स-त्तोरण विविधवर्ण।
पांडुर प्राकार - उन्नति समेत। जहँ रहैं निरंतर श्रीनिकेत।
चौहट्ट चर्चर - ेद्दाम यत्र। माँगन - गण-कोलाहल-समर्थ।
जहँ विपणि विपणि घन कूप्यभाड। जहँ कसियैं नित्य पिषंग-खंड।
निश्चित यान सम्मान सोह। जहँ वसैं महाजन शुद्ध-बोध।
व्यवहार चारु श्री शुद्धलोक। विहरैं प्रसन्न चौवर्ण लोक।

मंत्री की प्रशंसा

अहमल्लराय महामंत्रि शुद्ध। जिन - शासन-परिणय-गुण प्रबद्ध।
कान्हड-कुल - कैरव - श्वेतभानु। प्रभुहूँ समाज सर्व्वहैं प्रधान।
गंजोल्लिय मन लक्षण वहूव। स्वीकारिउ काव्य - करणा नुरूप।
निज-घरे आयउ वन गंध-हस्ति। मदमत्त फुरिय मुखरुह-गभस्ति।
वश हुयउ स्व स्वर दशदिशि-भरंत। मन कोन प्रतीच्छै तह तुरंत।
सुप्रसन्न राव घरई तबेइ। भनु कौन दुवार - किवाड़ देइ।
जानीय वचन लिन चातुरंग। धन-कन - कंचन - सम्पूर्ण चंग।
घर समुँह आइ पेखेबि सवार। भनु कौन वप्प झंपइ दुवार।

मंत्रि पत्नी की प्रशंसा

प्रियातासु सुल्लक्षणा लक्षणाढ्या। गुरूणां पदे भक्ति-करणे विदग्धा।
स्वभर्त्तार पादारविन्दानुगामी। घरारंभ व्यापार सम्पूर्ण कामी।
शुभाचार चारित्र चीरांकयुक्ता। सुचेतन्न गंधोदकेही पवित्रा।
स्वप्रसाद-कासार-सारा मराली। कृपादान-संतोषिया वंदिताली।
प्रसन्ना सुवाचा अचंचल्ल-चित्ता। रमा राम रम्या मदेवाल-नेत्रा।
खलों-को मुखाम्भोज संपूर्ण ज्योत्सना। पुराग्रोमहासाहु सोढ़ाको सुन्हा।
दया - बल्लरी - मेघ - मुक्ताबुधारा। सतीत्वत्तने शुद्ध - सीत - प्रकारा।
यथा चन्द्रचूड़ानुगामी भवानी। यथा सर्व वेदेहिं सर्वाङ्ग वाणी।
यथा गोत्र निर्दारिणहरंभा रामा। रमा दानवारी कि संपूर्ण कामा।
यथा रोहिणी ओषधीशाह संगो। महाढ्या सँपूर्णाहु साराहु रानी।
यथा सूरि की मुक्ति वेदो मनीषा। कृशानार्क स्वाहा यथा रूप मीसा।

जज्जल

ढोला मारिय दिल्लि महँ मूर्छिय म्लेच्छ शरीर।
पुर जज्जल्ला मंत्रिवर चलिय वीर हम्मीर।

चलिय वीर हम्मीर पाद - भर मेदनि कंपै,
दिग - मग - नभ अंधार धूलि सूरज - रथ झंपै।
दिग - मग - नभ अंधार आनि खुरसान के ओल्ला।
दर मरि दमसि विपच्छ मार दिल्ली महँ ढोल्ला।

× × ×

घर लागै आग जलै धह-धह।
करि दिग-मग नभ-पथ अनल-भरे।
सब दीस पसरि पाइक्क चलै।
धनि थन-भर - जघन दियेउ करे।
भय लुक्किय थाकिय बैरि तरुणि-
जन भैरव - भेरिय शब्द पड़ै।
महि लोटै - पोटे रिपु - शिर टुट्टै।
जखन वीर हम्मीर चलै।

× × ×

खुर-खुर खुदि-खुदि महि घघर रव करे।
न न न नगिदि करि तुरग चले।
ट ट ट गिदि परै टाप धँसै धरणि वपु।
चकमक करि बहु दिशि चमरे।
चलु दमकि दमकि बल चलै पइक बल।
घुलुकि घुलुकि करि करि चलिया।
वर मनुष दल कमल विपख हृदय सल,
हमिर वीर जब रण चलिया।

× × ×

यथा भूत - बेताल नाचंत गावंत खाएँ कवंधा।
शिवाकार फेक्कार हक्का रवंता फोड़ैं कर्ण-रंध्रा।
कॉया टुट फोड़ेइ मत्था कबंधा नचंता हसंता,
तथा वीर हम्मीर संग्राम-मध्ये तुरंता जुझंता।

अज्ञात कवि

जेहि वेद धरिज्जै महितल लिज्जै पीठहिं दंतहिं ठावं धरा।
रिपु-वच्छ विदारे छल-तनु धारे, बंधिय शत्रु स्वराज्य हरा।

कुल-क्षत्रिय तापे दशमुख कप्पे, कंशय केशि विनाश करा।
करुणा प्रकटे म्लेच्छहँ विदले, सो देउ नरायण तुम्ह वरा।

राम

बापह उक्ति शिरे जिनि लिज्जिउ। त्यागिय राज्य वनंत चलेविउ।
सोदर सुन्दरि संगहि लग्गिय। मार विराध कवंध तथा हन।
मारुति मेल्लिय बालि विघट्टिय, राज सुग्रीवहिं दिज्ज अकंटक।
वंध समुद्र विनाशिय रावण, सो तोहुँ राघव दिज्जिउ निर्भय।

कृष्ण

अरे रे चालहि कान्ह नाव, छोटि डगमग कुगति न देहि।
तै एहि नदिहि संतार देइ, जो चाहि सो लेहि॥
जिन कंस विनाशिय कीर्ति प्रकाशिय, मुष्टि अरिष्ट विनाश करे, गिरि हाथ धरे।
यमलार्जुन भंजिय पदभर गंजिय, कालिय-कुल-संहार करे, यश भुवन भरे।
चाणूर विखंडिय निज-कुलमंडिय, राधामुख मधु-पान करे, जिमि भ्रमरवरे।
सो तुम्ह नारायण, विप्र-परायण, चित्ते चिंतित देहु वरे, भय-भीति-हरे।
भुवन - अनंदा त्रिभुवन कंदा। भ्रमर - सवर्णा स जयतु कृष्णा।
परिणत - शशिधर - वदनं, विमल-कमल-दल - नयनं।
विहित - असुरकुल - दलनं, प्रणमहु श्री मधुमथनं।

शंकर

जेहि अर्धंगे पार्वती, शीशे गंगा जासु।
जो लोकन कर वल्लभ, वंदे पादहँ तासु।
जसु सीसहि गंगा गौरि अर्धंगा, ग्रिव पहिरिय फणि हारा।
कंठे ठिय वीषा पहिरन दीशा, संतारिय संसारा।
किरणावलि कन्दा वंदिय चन्दा, नयनहि अनल फुरंता।
सो सम्पति दिज्जउ बहु - सुख किज्जउ, तुम्ह भवानी कंता।
रण-दक्ष दक्ष हनु, जित्तु कुसुम धनु अंध क-अंध विनाश करो।
सो रक्षउ शंकर असुर - भयंकर, गिरि नागरि अर्धाङ्ग धरो।
जो वंदिय शिर गंग हनिय अनंग, अर्धंगहि परिकर धरणू।
सो योगि-जन - मित्र हरहु दुरित्त, शंकाहर शंकर - चरणू।

× × ×

जयति जयति हर वलयित-विषधर, तिलकित सुन्दर चंद्रं मुनि-आनंदं जनकंदं।
वृषभ-गमन कर त्रिशुल-डमरु-धर, नयनहिं डाहु अनंगं शिर गंगं गौरि अर्धंगं।

जयति-जयति हरि भुज युग धरु गिरि, दशमुख-कंस-विनाशा-प्रियवासा सुन्दर-हासा ।
बलि छलु महि धरु असुर - विलय करु, मुनि-जन-मानस-हंसा प्रिय भाषा उत्तम वंशा ।

× × ×

सेर एक यदि पावउ घृत्ता, मण्डा बीस पकावउँ नित्ता ।
टंक एक यदि सेंधा पाया, जो हौं रंकउ सो हौं राजा ।
राजा लुब्ध समाज खल, वधु कलहारिनि सेवक धूर्त्तउ ।
जीवन चाहसि सुक्ख यदि, परिहर घर यदि बहु-गुण-युक्तउ ।
पांडव - वंशहि जन्म धरीजे, सम्पति अर्जिय धर्म को दीजै ।
सोउ युधिष्ठर संकट पावा, देवके लिक्खल कौन मिटावा ।
सो जन जनमेंउ सो गुणवंतउ । जो कर पर - उपकार हसंतउ ।
जो पुनि पर-उपकार विरुद्धउ । ताकि जननि किनु थाकेउ बाँझउ ।

हरि ब्रह्म

यथा शरद-शशि - बिम्ब यथा हर - हार-हँस ठिय ।
यथा फुल्ल-सित-कमल, यथा श्रीखण्ड-खुण्ड किय ।
यथा गंग - कल्लोल, यथा रोषाणित रुपै ।
यथा दुग्धवर - शुद्ध - फेन फंफाइ तलप्पै ।
प्रियपाद प्रसादे दृष्टि पुनि, निभृत हसै जिमि तरुणि जन ।
वर मंत्रि चन्डेश्वर कीर्ति तव, तत्र पेखु हरिब्रह्म भन ।

अंवदेव सूरि

समर सिंह की प्रशंसा

जिन दिनं दिन दह्वाउ, समर सिंह जिनधर्म-वणि ।
तसु गुण करउँ उजोअ, जिमि अंधारैं फटिकमणि ।
सरणी अमियतनीय, जिन बहाइ मरु मण्डलहिं ।
किउ कृत युग अवतार, कलियुग जीतेउ बाहुबल ।
ओसवाल कुल - चन्द्र, उदयेउ एउ समान नहिं ।
कलियुग कालइ पाश, छेदीयऊ सचराचरहिं ।

रतनकुक्खि कुल निर्मलीय भोली पुतु जाया।
सहजउ साधन समरसीह बहु पुण्यहिं आया।
लहु अलगइ सुविचार चतुर सुविवेक सुजाना।
रतन-परीक्षा रंजवई राजा अरु राना।
तौ देसल निज कुलप्रदीप एहु पुत्र सधन्या।
रूपवन्त अरु शीलवन्त परिनाविय कन्या।
गोसल-सुत आवास कियउ अनहिल पुर नगरे।
पुण्य लहै जिमि रतन माझ नर समुदह लहरे।

तीर्थ यात्री सेना

आगे मुनिवर संघ श्रावक-जना। तिल न खिड़ै तिमि मिलिय लोग घना।
मादल-वंश-वीणा धुनि बाजई। गहिर भेरीरव अंवरे गाजई।
नवक पाटन नवउ रंग अवतारेउ। सुखेहिं देवालय शंखारी संचारेऊ।
घरे वइसवि करि कोइ समाहिया। समर-गुण-रंजित विरलउ राहिया।
जयतु कान्ह दुइ संघपति चालिया। हरिपालो लंढुको महाधर दृढ़ ठिया।

अज्ञात कवि (१३०० ई०)

कहाँ वास कुवलय-नयन, शालिभद्र सुकुमार।
भद्रा प्र-भनै देव तुहु, कहँ रहु एत्तिय वार।
खरउ कुड्ड ता पुत्र कहँ, का देशन किउ वीर।
कौन अर्थ वर-वाणिइउ, कंचन गौर शरीर।
खार समुद्रहँ आगलउ, मा हर कढेउ संसार।
संयम-प्रवहण-हीन तसु, किये न लब्भै पार।
गमय-मत्त वीर्य प्रवर, जे जग पुरुष प्रधान।
शालिभद्र भद्रा भनै, संयम सोहै तान।
घनकुंकुम चन्दन रसेहिं, तव तन वासेउ वत्स।
व्रतहँ परीसह किमि सहिसि, मुनि गंगाजल स्वच्छ।
नववय छीजै तरुणपन, शालिभद्र सुकुमार।
मम कुल-मण्डन कुल-तिलक, कुलप्रदीप कुलपाल।
× × ×
कीर्ति सा सलहिज्जै जा सुनीय आपनेहि कानेहिं।
पाछे मुए प'सुंदरि! सा कीर्ती होहु न होहु।
यश-सहित जो नर हुआ रवि पहिला ऊगंत।
युगाँ जाते दीहड़े गिरि-पत्थरा डुलंति।

राजशेखर सूरि

श्यामल कोमल केशपाश जनु मोरकलाप।
अर्धचन्द्रसम भाल मदनपोसै भउवाहँ।
वाकंडिया लिय भोंहडियहँ भर भुवन भ्रमाडइ।
लारी लोचन लह कुडले सुस्वर्गह पातै।
जनु शशिबिम्ब कपोल कर्ण हिंडोल फुरन्ता।
नासावंशा गरुड़-चंचु, दाडिमफल दन्ता।
अधर प्रवालहँ रेख, कण्ठ राजल सर रुडऊ।
जनु-वीणा रणरणै, जान कोइलटहकलऊ।
सरल तरल भुजवल्लरीय, थन-पीन-तुंग।
उदर-देशे लंका सोहै त्रिबली तरङ्ग।
कोमल विमल नितंब बिम्ब जनु गंगापुलिना।
करि-कर उरुयुग हरिन-जंघ पल्लव कर-चरणा।
मलपति चालति बेलीइव हंसला हरावै।
सन्ध्याराग अकाल वाल नखकिरण करावै।
सहजैं सुन्दर-राजमति, सुलखन सुकुमारा।
घनउ घनेरउ गहगहे, नवयौवन वाला।
भंत्रलभोली नेमि जिन वीवाह सुनेइ।
नेह गहिल्ली गोरडी हियरेई विहसेइ।
श्रावण शुक्ल छट्ठ दिन, बीई सवउँ जिनेन्द्र।
चल्लै राजल परिणयन, कामिनि नयनानन्द।

× × ×

किमि किमि राजलदेवि केर शृङ्गार भनेबउ।
चम्पकगोरी अतीधौत अंग चन्दन लेपेबउ।
खोंप भरावेउ जाति-कुसुम कस्तूरी सारी।
सीमन्तें सिन्दूर-रेख मोतीसर सारी।
नवरंग कुंकुम तिलक किय रतन तिलक तसु भाले।
मोती कुण्डल कर्णे ठिय विम्बालिय कर जाले।
नरतिय कज्जल-रेख नयने मुख कमल तँबूलो।
नागोदर कण्ठलउ कंठ अनुहार विरोलो।
मरगत-जादर कंचुकहउ फुर फूलहँ माला।
करहीं कंकण-मणिवलय चूड़ खड़कावै वाला।

रुनझुन - रुनझुन - रुनझुनै कटि घाघरियाली।
रिमझिम - रिमझिम - रिमझिमै पद नूपुर युगली।
नखे अलक्तक बलबलउ श्वेतांशु - विमिश्रित।
अंखड़ियाली राजमति प्रिय जोवै मन रसि।

चन्दबरदाई

साटक

आदि देव प्रनम्य नम्य गुरयं, वानीय वन्दे पयं॥
सिष्टं धारन धारयं वसुमती, लच्छीस चरनाश्रयं॥
तंगु तिष्टति ईश दुष्ट दहनं, सुरनाथ सिद्धिश्रयं॥
थिर चर जंगम जीव चन्द नमयं, सर्वेस वर्दामयं॥

अरिल्ल

तर्क वितर्क उतर्क सुजत्तिय। राज सभा सुभ भासन भत्तिय।
कवि आदर सादर बुध चाहौ। पढ़ि करि गुन रासौ निर्वाहौ।
धर्म्म अधर्म्म न बुद्धि विचारौ। नयन नारि निय नेह निहारौ।
कोल कला कल केलि प्रकासौं। अरथ करौं गुन रासौं भासौं।
पारासर जो पुंत्त विहासह। सतवन्ती ग्रम्मं गुर भासह।
प्रब्व अठरि सवा लष लष्षै। तौ भारथ गुर तत्त विसष्षै।

साटक

मुक्ताहार विहार सार सुवुधा, अब्धा बुधा गोपिनी।
सेत चीर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगिनी।
बीना पानि सुबानि जानि दधिजा, हँसा रसा आसेनी।
लंवोजा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नासिनी।
छत्रंजा मद गंध राग रुचयं, अलि भूव आच्छादिता।
गुंजाहार अथार सार गुनजा, झंझा पया भासिता।
अग्रेजा श्रुति कुण्डलं करि, करस्तुछीरं उच्छारयं।
सोयं पातु गनेस सेस सफलं, पृथ्राज काव्यं कृतं।

कवित्त

नयन सुकज्जल रेष, तष्षि तिष्षिन छवि कारिय।
श्रवनन सहज कटाच्छ, चित्त कर्षन नर नारिय।

भुज मृनाल कर कमल, उरज अम्वुज कल्लिय कल।
जंघ रंभ कटि सिंघ, गमन दुति हंस करी छल।
देव अरु जष्षि नागिन नरिय, गरहि गर्व दिष्षत नयन।
इंछिनी इष्षि लज्जा सहज, कितक सक्ति कव्विय वयन।
दर्पन दल नष जोति, सुरग महदी रुचि रुरिय।
एडी इंगुर रंग—, उपम ओपियै सु संचिय।
सो तिन सकल सुहाग, भाग जावक तल वंधिय।
विकसित अंग अंग अंग, चारु मुसकनि वै संधिय।
दिष्षंत नैन दंपति कजहि, हर्ष सोम वर्षंत अकल।
जेहरि नूपुर नद्द, सद्द घूघर कोतूहल।
विछिय निसाल, सद्द भिंगुर कल कूहल।
अगुठनि जटित अनोट। षोंट कुंदन नग मंडित।
निरषद द्रप्पन नैन। वदन वीरी रद षंडित।
हाव अरु भाव संभ्रम विभ्रम। वड पुन्य करि प्रभु पिथ्य लहि।
इंछनिय इच्छ अच्छर अवनि। सुनिय सोम ससि कव्वि कहि।
जरकस घुघर घमण्ड। जांनु रवि क्रिन्न कदलि ग्रह।
कसंभु लरे नीसार। रंग छवि छंडि हंड हर।
पीत कंचकी संचि। षंडि कस अंग उपट्टिय।
आलोल नैन गति बचन बहु। सषिन सोम मण्डिय तनह।
फुल्ली सुसाँझ कवि चन्द कहि। मनहु बीजु घरकी घनह।

नाराच

चली अली घनं बनं। सुमंत सथ्थ संघनं।
विहंग भंगयो पुरं। चलंत सोभ नोपुरं।
अलीन जुथ्थ आवरं। मनो विहंग सावरं।
जुवंत पत्त रत्त जा। उवंत जानि अंबजा।
कलिन्द सीस केसयं। अनंग अंग लोभयं।
उठंत कुम्भ कुच्चयं। उपंव कब्वि सुच्चयं।
मनो जरंत बालकी। धरी सु-आनि लालकी।
मनोज कूप नाभिका। चलंत लोभ आलिका।
सुरंग सोभ पिंडुरी। षरादि काम पिंडुरी।
नितंब तुंग सोभए। अनंग अंग लोभए।
मनौ कि रथ्थ रंभ के। सुरंभ चक्क संभ के।
नषादि आदि अच्छनं। मनो कि इन्द्र द्रप्पनं।

ढरंत रत्त एडियं। उपम्म कब्बि टेरियं।
मनौ कि रत्त रत्तजा। चिकंत पत्र अम्बुजा।

चंद्रायना

गहत बाल पिय पानि। सु-गुर जन संभरे।
लोचन मोचि सुरंग। सु, अंसु वहे परे।
अपमंगल जिय जानि। सु नेन मुप बही।
मनो षंजन मुष मुत्ति। भरक्कत नंषही।
दुहु कपोल कल भेद। सुरंग ढरक्कही।
सज्जन बाल विसाल। सु उरज परक्कही।
सो ओपम कवि चन्द। चित्त में वस रही।
मनु कनक कसौटी मंडि। म्रग्ग मद कस रही।

कवित्त

कुमुद उघरि मूंदिय। सुवंधि सतपत्र प्रकारय।
चकिय चक्क विच्छुरहि। चक्कि शशि वृत्त निहारय।
जुवती जन चढ़ि काम। जाहि कोतर तर पंषी।
अवृत वृत्त सुंदरिय। काम वढ़िढय वर अंषी।
नव नित्त हंस हंसहि मिलै। विमल चंद उग्यौ सुनम।
सामंत सूरंन्नप रषि कै। करहि बीर वीश्राम सम।

× × ×

सरस काव्य रचना रचौ। खल जन सुनिन हसंत।
जैसे सिंधुर देखि मग। स्वान सुभाव भुसंत।
तौ पनि सुजन निमित्त गुन। रचिये तन मन फूल।
जू का भय जिय जानि कै। क्यों डारिए दुकूल।
पूरन सकल विलास रस। सरस पुत्र फल दान।
अंत होइ सहगामिनी। नेह नारि को मान।
समदरसी ते निकट है। भुगति भुगति भरपूर।
विषम दरस वा नरन तें। सदा सरवदा दूरि।

काव्यं

बंभे कंड कमंडले कलिमले कांतिहरः कः कविः।
तं तुष्टां त्रैलोक्य तुंग गहनी तुं गीयसे सांमवी ॥
अर्ध विष्णु अगामिनि अविभ्रले अस्दष्ट ज्वालाहवी।
जंजाले जग मार पार करनी दरसाइ सा जाह्नवी ॥

त्रोटक

झिप थिक्कति गंगजि अंग सिता ।
मुनि मंजन नीर जि अंग हिता ॥
तट मंडल जा भमरे भमरं ।
भव संगति जे अमरे अमरं ॥
गुन ग्रंध्रव ग्रंध्रव नीति सुनी ।
दिवि भूमि पयालह दिव्व धुनी ॥
तल ताल तमालह साल वटी ।
विचि अंब गंभीर जंभीर वटी ॥
कल केलि स जंबु स निंबवरा ।
गत पाप स आपस मे सियरा ॥
सुभ वाय तरंग सुरंग धरे ।
उर हार तु मुत्तिय जामु हरै ॥
दिन दुल्लभ जा वरमं चरनं ।
भइ बंभ - कमंडल आभरनं ॥
गिरि तुंग तुखार सदा धरनं ।
नर पाप विमाप न तो सरनं ॥
सुर ईस सु दीस सु सादरनं ।
मिलि अंभसु रंभसु सागरनं ॥
सुभ ट्ठिय मग्ग जु मग्ग ।
जसु दंसन जंवुयदीप हलं ।
किस मंगन जाथइ पाप मलं ॥

हर गंगे हर गंगे हर गंगे ।
तमि तरल तरंगे अघ क्रितभंगे क्रितचंगे ॥
हर सिर परसंगे जटन विलंगे अरधंगे ।
गिरि तुंग तरंगे विहरित दंगे जल गंगे ॥
गन गंध्रव छुंदे जग जस कंदे मुख चंदे ।
मति उच्च गति मंदे वरसत नंदे गत वंदे ।
वपु अप विलसंदे जमभ्रित जंदे कह गंदे ॥
छिति मति उरमालं मुकति विसालं सहसालं ।
सुर नर टट चालं कुसुमति लालं अलिजालं ।
हिम रिम प्रति पालं हरि चर नालं विधिवालं ॥
दरसन रस राजं जय जुग काजं भय भाजं ।

अमरच्छरि करजं चामर वरजं सुव साजं ॥
अमलत्तिन मंजरि निय तन जंजरि चख पंजरि ।
करुणा रस रंजरि नतम पुनंजरि सा संकरि ॥
करिमल हरि मंजन जनहित सज्जन अरिगंजन ॥
उभय कमल सोभा भ्रिंग कंठाव लीला ।
पुनर पुहप पूजा वंदते विप्रराज ॥
उरिल मुतिय हारं सब्द घंटी ति वंब ।
मुकति मुकति भारं नंग रंग त्रिवल्ली ॥

चन्द्रायणी

दिख्खिय नयर सुभाइ न कवियन यूँ कहइ ।
है मनु अच्छि पुरंदर इंदुज इह रहइ ॥
चख चंचल तन सुद्धि ति सिद्धिहु मनु हरिह ।
कंचन करस झकोलति गंगह जलु भरहि ॥

नाराच छन्द

भरन्ति नीर सुंदरी ति पान पत्त अंगुरी ।
कनंक बक्क जज्जुरी ति लग्गि कड्ढि जे हरी ॥
सहज्ज॰ सोभ पंडुरी जु मीन चित्र ही भरी ।
सकोल लोज जंघया ति लीन कच्छ रंभया ॥
करिब्ब सोभ सेसरी मनो जुवान केसरी ।
अनेक छब्बि छत्तिया कहूँ तु चंद रत्तिया ॥
दुराइ कुच्च उच्छरे मनो अनंग ही भरे ।
हरंत हार सोहए विचित्र चित्त मोहए ॥
उठंति हत्थ अंचलं रुरंति मुत्ति सुज्जलं ।
कपोल उच्च उज्जले लहंति मोल सिंघले ॥
अधर अद्ध रत्तए सुकील कीर वद्धए
सोहंत दंत आलमी कहंत बीय दालमी ॥
गहग्ग कंठ नासिका विनान राग सासिका ।
सुभाइ मुत्ति सोहए दुभाइ गंज लग्गए ॥
दुराइ कोई लोचने प्रतख्ख काम मोचने ।
अवद्ध और भौंह ही चलंत सोह सोहही ॥
लिलाट लाट लग्गए सरद्द चंदु लग्गए ॥

दूहा

ढिल्लिय जुहि अलकै लता स्रवन सुनै चहुवान ।
मनु भुवंग साम्हो चढ़ै कंचन खंभ प्रमान ॥
रहहि चंद मम कव्व करि करहित कव्व विचार ।
जि तुम नयरि सुंदरि कही सवि दीठी पनिहार ॥
जांह नदी तट पिक्खियहि रूव रासि वै दासि ।
नगर ति नागर नर घरनि रहहिं अवासि अवासि ॥
दंसन दिनयर दुल्लही निय मंडन भरतार ।
सहु कारन विहि निम्मयी दुह कत्तिज करतार ॥
कुवलय रवि लज्जा रहनि रहि भजि भंग सरन्नि ।
सरसइ सुध वरनन कियो दुल्लह तरुन तरन्नि ॥

छंद

पुनरजन्म जेते जानि जग्गं ।
मोहिन्नि ले मुत्ति वानी ।
मनो धार आहार कहं दुद्ध तानी ॥
तिलक नग निरखि जगि जोति जग्गी ।
मनो रोहिनी रूव उर इंदु लग्गी ॥
रूप भुव देखि अवरेग्व ढग्ग्यो ।
मनो काम करि चंपि उडि अप्पु लग्ग्यो ॥
पंगुरे अैन ते नैन दीसं ।
विचे जोति सारंग निर्वात दीसं ॥
तेज ताटंक ता स्रवन डोलं ।
मनो अर्क राका उदै अस्त लोलं ॥
जलद जंभीर भइ मध्य जोलं ।
दिव्य दरसी तिहां ढील बोलं ॥
अधर आरत्त तारत्त साई ।
चंद विय बीय अरुनै बनाई ॥
कपोलं कलंगी कलिंदीव सोहं ।
अलक्कं अरोहं प्रवाहे खिमोहं ॥
सिता स्वाति छुट्टै जितेहार भारं ।
उभै ईस सीसं मनो गंग धारं ॥
करं कोक नंदं न कंचू समज्झं ।
मनो तित्थराया त्रिवल्ली अलुज्झं ॥

उप्पमे पानि अंगून लब्भं ।
लज्जि दुर केलि कुल मज्झ गब्भं ।।
नखं निम्मलं दप्पनं भाव दीसं ।
समीपं समीवं कियं मान रीसं ।।
नितंबं उतंगं जुरे बे गयंदं ।
मध्य रिपु खीन रक्ख्यो मयंदं ।।
सक्कि सोवन्न मोहन्न थंभं ।
सीत उसनेह रितु दोख रंभं ।।
नारंग रंगीय पींडी छछोरी ।
कनक कुंडीनु कुकुम्भ लोरी ।।
रोहि आरोहि मंजीर सद्दे ।
मंद म्रिदु तेज प्राकार वद्दे ।।
एडि इम आडंबरं स्रोन वानी ।
फिरै कच्च रच्चीन मुदरत पानी ।।
अंबरं रत्त नीलं सु पीतं ।
मनो पावसे धनुख सुरपत्ति कीतं ।।
सुकीवं समीपं न वे सामि जानं ।
पंग रवि दरिस अरविंद मानं ।।

दूहा

हय गय दल सुंदर सुहर जे वरनइ बहुवारि ।
यह चरित्त कब लगि गिनै चलउ संदेह दुवार ।।

नरपति नाल्ह

उड़ीसा अभियान

गवरी को नन्दन आव्यो छइ भाव । दोय कर जोड़े लागु हो पाय ।।
'नाल्ह' रसायण रस भणइ । भूलों अषिर आणजो ठाई ।।
एकदतों ! करूं वीनती । रास प्रगासुं वीसल-दे - राई ।।
गरब करि ऊभो छई सांभर्‌यो-राव । मो सरीखा नही ऊर भुवाल ।।
म्हां घरि सांभर उगहइ । चिंहु दिस थाण जेसलमेर ।।
लाख तुरी पाषर पड़इ । राजिकउ थानिक गढ़ अजमेर ।।
गरब न बोलो हो मो भरतार । बाजा-बाजे राजा असिय हजार ।।
लंकापति रावण धणी । सात समंद बिच बस्ती फेर ।।

"लंक बिंधुसी बांनरां । थे काई सराहो राजा गठ अजमेर ।।
गरभि न बोलो हो सांभरया-राव । तो सरीखा घणा और भुवाल ।।
एक उड़ीसा को धणी । बचन हमारइ तुं मानु जु मानि ।।
ज्युं थारइ सांभर उगहइ । राजा उणि घरि उगहइ हीरा खान ।।
"धणक बोल बस्यो मन मांहि । चित चमकियउ बीसलराय ।।
हूँ बीसद्धयो तें वेदिठा । म्हा तु बरस बारइ की लांब ।।
कह म्हारइ हीरा ऊगहई । नहीं तो गोरी ! तिजूहूँ पराण ।।"
"हूँ बराकी धणी ! मोकियउ रोस । पांव की पाणही सुं कियउ रोस ।।
मे य हसंती बोलीयो । आपणइ मान हतौ मानस छइ साँस ।।
उभी मेल्हे चालीयौ । जल विण राजा क्युं जीवइ हाँस ?"
"जनमी गोरी तुं जेसलमेर । परणी आवी गठ अजमेर ।।
वार [ह] बरस की गोरड़ी । कूं समरयो उड़सिय जगनाथ ।।
अन मेल्हुँ पाणी तिजुं । कहित[ो]गोरी थारा जनम की बात ।।
"जइ तुं पूछइहो धरह नरेस ! । वन खंड रहती हरिणि कइ वेस ।।
निरजला करती एकादसी । एक अहेड़ी वनह मंझारी ।।
ले बांणां उरहु हणी । जनम दीज्यो जगंनाथ दुवार ।।
हरिणी मणि संभरया जगनाथ । संख - चक्र - गदा - धरीय ।।
मांगिहै हरणली मनह विचार । तो तुंठा त्रिभुवन धणी ।।
पूरब देस म्हारो जनम निवारि" ।।
"क्यु बीसरायो गोरी पूरब देस ? । पाप तणउ तिहां नहीं प्रवेस ।।
अति चतुराई दीसइ घणी । गङ्गा गया छै तीरथ योग ।।
वाणारसी तिहाँ परसजे । तिणि दरसण जाई पतिग न्हासि ।।"
"पूरब देस को पूरब्या लो । पान फूलाँ तरुण तु लहइ भोग ।।
कण संचइ कुकस भखइ । अति चतुराई राजा गठ ग्वालेर ।।
गोरड़ी जेसलमेर की । भोगो लोक दक्षण को देस ।।
जनम हुवउ थारउ मारू कइ देस । राज कुंवरि अति रूप असेस ।।
रूप नीरोपमी मेद्दनी । आछा कापड़ झीणइ लंक ।।
ललयांगी - धन कूंवली । अहिरध बाला, निर्मल दंत ।।
कूंवर कहई "सुणों ! साभरया-राव । कांई स्वामी तुं उलगई जाई ? ।।
कह्यउ हमारूउ जइ सुणउ । थारइ छइ साठि अंतेवरी नारि ।।"
कर जोडे धन वीनवई । "राजकुंवरी निति भोगवि राय ।।"
रावइ कहइ "सुणी ! राजकुमारि । दूमनी काई हीयउइ बर नारि ।।
कह्यउ हमारो जउ सुणइ । आंणिसु - कोड़ि - टकाउल - हार ।।
देस उड़ीसइ गम करूँ । जाई जुहारूँ जादवराई ।।"

मइ धणी ! थार मिल्हीय आस। भइला राजा थारउ कीसउ हो वेसास ।।
तो हूँ दासी करि गीणी। सगा सुणी जी मांहि ना गमीमा ।।
जीवत ही मुआँ वड़इ। बालूँ लोभी हूँ थारा दाम ।।"
"कढ़वा बोल न बोलीस नारि !। तुं मो मेल्हसी चित विसारि ।।
जीभ न जीभ विगोयनो। दब का दाधा कुपली मेल्ही ।।
जीभ का दाधा नु पांगूरई। 'नाल्ह' कहइ सुणाजइ सब कोई ।।
पंच सखी मीली बइठी छुई आई। "निगुणी ! गुण होई तो प्रीव क्युं जाई ।।
फूल पगर जू गाहजइ। थारउ आँचल बंध्यो नाह कुंजाई ? ।।
राव कहइ "सुणि राजकुंमार। दूमनी काई हीयड़इ वरनारि ।।
कह्यो हमारउ जै सुणइं। येक बार रहस्युं खटमास ।।
देव जुहारे आवस्युं। ते छइ त्रिभुवन - मुगति - दातार ।।"
राई कुंवरि बोलइ ईक चिंत। बीप्र हुँकारे बेग तुरंत ।।
आवीयो प्रोहित राव को। "पाड्या ! हु थारे गुणदास ।।
देई सचा वर वइसणइं। मुहूरत देई वीर ! कातिग मास ।।"
"पांड्या ! वीरा ! हूँ थारी गुणदास। दिन दस महूरत मौड़उ परगास ।।
मास एक बीलंबावज्यो। दूजइ फेरई प्रथि समझाई ।।
देइस हाथ कउ मुंदड़उ। सोवन - सिंगी नई कपिला गाई ।।"
पाड्या ! तोहि बोलावइ छइ राय। ले पतड़ो जोसी वेगो आई ।।
सूदन कहै रूड़ा जोईसी। बाचइ पतड़ो बोलइ छइ साँच ।।
"मास एकां लगी दिन नहीं। तिथि तेरस वार सोमवार ।।
चन्द्रई ग्यारमौ देव है। तीसरो चन्द्र छइ खोडीला जोगि ।।
काल जोगण भद्रा नहीं। पुष नक्षत्र नई कातिक मास ।।
जीण दिन स्वामी थे गम करउ। ज्युं घणी आगइ पूरइ हो आस ।।"
"पाड्यो कहु कइ परतिष (इ) भांड। झूठ कहइ छइ नै बोलइ छइ मांड ।।
राज - कुली महूरत कीसउ ?। हां तो ओलग चालस्यां आज ।।
कह्यो हमारउ जोसी ! जइ सुणई। जाइ उडसिई पूजं जगनाथ ।।
पाड्यां हूँ तो ओलग जाऊँ। जाई उड़ीसेइ बात कहाँउ ।।
कह्यो हमारौ जइ सूणइं। मो हइ घर की गोरड़ी कह्यो कुबोल ।।
मोहि न मन्दिर आलिगइ। जाइ उड़ीसइ तइ राखस्युं बोल ।।
"आव दमोदर वइसि नु पाट। कहि न वीरा म्हाँ का पीउ की बात ।।"
"षरौ हो अयाँणउ उफिरई। आठमो ठाँव रवि वारमो राहु ।।
ग्रह गणतो अतिहि वीरा"। सिर धुणी मूका छइ धाह ।।
"दासी होई करि निरवहुँ। पाय पषारसुं ठोलसुं वाई ।।
पुहर पुहर प्रति जागसुं। इण हर सेवस्युं आपणउ नाह" ।।

"गहिली है त्री तोहइ लागी छई वाय। अस्त्रीय ले कोई उलगि जाई ? ।।
गहिली मुंधउ तुं वावली। चन्द क्यु कूडइ ढाँकाणउ जाई ? ।।
रतन छिपायों क्यु रहई ? । आगहं बाचा को हीणो छइ पूरव्यो राइ" ।।
उलगी जाँण सजौ समदाव। हंसि कर गोरी पूछइ राव ।।
"सात बरस पेहलो रह्यो। चीरी जणइ न मोकल्यै कोई ।।
लाहो लेता जनम गौ। तुय करै तिंसी तोथी होई" ।।
अंचल गह तिय बइसाड़ी छइ आणी। हंसि गल लाई भोजी सो काण ।।
आज ऊलँभउ भाँजवा। "या धनवीरा ! थारइ हिये न समाई ।।
कै या बोल को आकरी। कौणे दुख देवर ! उलग जाई" ।।
उभी भावज दइ छइ सीष। "रतन कचौलौ राय सांपजै भीष ।।
ते नाउं पगसूं ठेलीजै। इसीन रायां तणौ नहीच अबास ।।
ईसीय न देवल पूतली। नयण सलूँणां वचन सुमीत ।।
ईसीय न खाती कौ घड़इ। इसी अस्त्री नहीं रवि तलै दीठ" ।।
"रही ! रही ! भावज वचन तूं बोल। राज-कुंवर मोहइ कह्यो हो कुबोल ।।
मोहि रयणी दिन [न] बिसरइ। राज कुंवर आवे जो साथ ।।
तो विस खाये मरूँ। बारइ बरस पूजूँ जगनाथ" ।।
आज सखी मोहि विहाँण। पीड़वा कइ दिन कहइ छइ जाण ।।
"आज नीरालइ सीय पड्यो। च्यारि पहूर माँही नू मीली अंख ।।
उछइ पाँणो ज्यु माछली। जिंव जागु तिंव उठुछुं भंषि ।।
बीज अंध्यारी नइ सुक्रजोवार। महूरत नहीया कहइ वर-नार ।।
महा — उपग्रह उपजइ। जै नर उलग ईण महूरत जाई ।।
आवण का साँसा पड़ई। जाणि हीमालइ राजा गलीया हो जाई ।।
तीजें घरि घरि मंगलचार। चिहुँ दिसी कामनी करई हो सयंगार ।।
रमइ सहेली काजली। घरि घरि कामिनी मड़इ छइ खेल ।।
चन्द्र बदन विलखी फिरई। स्नेह - तुठी राजा औलगी मेलही ।।
"चउथ अंधारी [दि] नई मंगलवार। चन्द उजालउ घरि घरि वारि ।।
वरति करह घरि आपणइँ। चउथ जुहारउ सांमरया—राव ।।
वचन हमारउ मानज्यो। हरिष के पूजो ईणी ठाई ।।
पंचम कउ दिन पहूतो छइ आई। अउत होइ घरि छौड़ो हो राय ।।
तु अजमेराँ राजीयो। पुत्र कलत्र सहू परिवार ।।
सईभंर यांणउ बइसणइं। राई चहुवांण ! औलगि नीवार ।।
"रही [रही] कांमणी अंचल छोड़ी। औलग जाऊँ हूँ अंक न बहोड़ी ।।
देस उड़ीसइ गम करूँ।" ये बचन बोल्या तिणि ठाई ।।
छइ सातम दिन आवीयो। निहचइ औलगि चालण - हार ।।

पूरी सभा बइठो साभरयो - राव । चउरास्या सहू लीयो बोलाई ॥
माई तेड़ावी राव की । सबी मिलि मंत्र कियो तिणि ठाई ॥
कहेउ हमारउ जइ सुणो । "कोक भतीजौ सूंपजए राज" ॥
राइ कहई "भली हुई आजि" । "कोकि भतीजौ सौंप्यौउ राज ॥
थाप्या साहण वर जरी । थाप्या मंदिर घरि कविलास ॥
थाप्या चौरा चउखंडि । थाप्या सॉभरि का रीणवास ॥
राजा चाल्यो उलगइं । सहू अंतेवरी मेल्ही नीसास ॥
ओलग चाल्यो धन कउ नाह । सहू अंतेवरी झूरई राउँ ॥
झूरई सहोवर राव का । कुली छतीसइ झूरइ सोही ॥
धार झूरई राजा भोज सूं । सॉभरया राव सो पड़यो विछोह ॥
झूरई राइ वइहनंडी अंकन कुंवार । महाजन झूरई राई सॉधार ॥
माता झूरइ राव की । झूरइ बंभण भॉट बीयास ॥
येकइं बोल कइ करिणाइं । चाल्यो राजा मेल्ही निसास ॥
राव उड़ीसइं पहुँतउ जाई । देव जुहारे लागुं पाय ॥
धन दिहाड़उ आज कउ । देव उठि दीयो चउगिणउ मान ॥
मेल्ही चावर बइसणइ । राव उडीसा को परधान ॥
राई प्रधानपणइं रह्यो जाई । चउरास्या सहू लागइ पाय ॥
देश देसा का राजिया । देव कहइ "राजा ! म्हारो तु वीर" ॥
मेल्ही चाँवर वइसणइ । मनवाछित भोजन अरु चीर ॥
जे नर सूनइ संवाद संजूत । अविचल लिषमी घरे राजा बहूत ॥
'नाल्ह' रसायण नर भणइ । जू राणी सूं पड़इ विजोग ॥
बीघन - हरण जो वर दीयो । पणिहु बहोडू करूं संजोग ॥
दूजौ षंड चव्यो परिमाण । जे नर सूणइ ते गंगा न्हाण ॥
'नाल्ह' नसायण नर भणइ । राजा रह्यो उड़ीसई जाय ॥
बाग - वाणी मो वर दीयो । अस्त्री रसायण करूँ बखाण ॥

विद्यापति

(१)

नन्द क नन्दन कदम्बेरि तरू तरे,
धिरे धिरे मुरलि बजाव ।
समय संकेत निकेतन वइसल,
बेरि बेरि बोलि पठाव ॥

सामरि, तोरा लागि,
अनुखने विकल मुरारि ।।
जमुनाक तिर उपवन उद्वेगल,
फिरि फिरि ततहि निहारि ।।
गोरस बिके निके अबइते जाइते,
जनि जनि पुछ वनवारि ।।
तोंहे मतिमान, सुमति मधुसूदन,
वचन सुनह किछु मोरा ।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति,
वन्दह नन्द किसोरा ।।

(२)

नव वृन्दावन नव नव तरुगन,
नव नव विकसित फूल ।
नवल वसंत नवल मलयानिल,
मातल नव अलिकुल ।।
विहरइ नवल किसोर ।
कालिन्दी पुलिन - कुंज बन सोभन ।
नव नव प्रेम विभोर ।।
नवल रसाल - मुकुल - मधु मातल ।
नव कोकिल कुल गाय,
नव जुवती गन चित उमता अई—
नव रस कानन धाय ।।
नव जुवराज नवल बर नागरि,
मीलए नव नव भांति ।
निति निति ऐसन नव नव खेलन,
विद्यापति मति भाति ।।

(३)

सहजहि आनन सुन्दर रे,
भउँह सुरेखलि आंखि ।
पंकज मधु - पिवि मधुकर,
उड़ए पसारए पांखि ।।

ततहि धाश्रोल दुहु लोचन रे,
जतहि गेलि वर नारि।
आसा - लुबुधल न तेजए रे,
कृपन क पाछु भिखारि॥
इंगित नयन तरंङ्गित देखल,
बाम भउँह भेल भङ्ग।
तखने ना जानल तेसरे,
गुपुत मनोभव रङ्ग॥
चन्दने चरचु पयोधर,
गृम गज मुक्ता हार।
भसमे भरल जनि शङ्कर,
सिर सुरसरि जल धार॥
बाम चरण आगुसारल,
दाहिन तेजइते लाज।
तखन मदन सरे पूरल,
गति गञ्जए गजराज॥
आज जाइते पथ देखलि रे,
रूप रहल मन लागि।
तेहि खन सयँ गुन गौरव रे,
धैरज गेल भागि॥
रूप लागि मन धाश्रोल रे,
कुच कंचन गिरि सांधि।
ते अपराधे मनोभव रे,
ततहि धएल जनि बांधि॥
विद्यापति कवि गाश्रोल रे,
रस बुझ रसमन्ता।
रूप नारायन नागर रे,
लखिमा देविक सकुन्ता।

(४)

विरह व्याकुल बकुल तरु-तर,
पेखल नन्द कुमार रे।
नील नीरज नयन सयँ सखि,
ढ़रइ नीर अपार रे॥

पेखि मलयज पंक मममद,
ताम रस घनसार रे।
निज - पानि पल्लव मूदि लोचन,
धरनि पड़ असम्भार रे॥
बहइ मन्द सुगन्ध सीतल,
मन्द मलय समीर रे।
जानि प्रलय कालक प्रबल पावक,
दहइ सून सरीर रे॥
अधिक बेपथ टूटि पडु खिति,
मसृन मुकुता - माल रे।
अनिल - तरल तमाल तरुवर,
मुंच सुमनस जाल रे॥
मान-मनि तेजि सुदति चलु जहि,
राए रसिक सुजान रे।
सुखद सुति अति सरस दण्डक
कवि विद्यापति भान रे॥

(५)

मधु सम वचन कुलिस सम मानस,
प्रथमहि जानि न भेला।
आन चतुरपन पिसुन हाथ देल,
गरुअ गरब दूर गेला॥
सखि हे, मन्द पेम परिनामा,
बड़ कए जीवन कएल पराधिन।
नहिं उपचर एक ठामा॥
झाँपल कूप देखहि नहिं पारल,
आरति चल लहु धाई।
तखन लघु गुरु किछु नहि गूनल,
अब पछतावेक आई॥
एत दिन अछलह आन भान हम,
अब बूझल अवगाहि।
अपन मुर अपने हम चाँछल,
दोख देबि गए काहि॥

भनइ विद्यापति सुन वर जौवति,
चिते गनब नहि आने।
पेमक कारन जीउ उपेखिए,
जग जन के नहि जाने॥

(६)

एत दिन छलि नव रीति रे।
जल मिन जेहन प्रीति रे॥
एकहिं वचन भेल बीच रे।
हास पहु उतरो न देल रे॥
एकहिं पलँग पर कान्ह रे।
मोर लेख दूर देस भान रे॥
जाहि बन केओ न डोल रे।
ताहि बन पिया हास बोल रे॥
धर जोगिनिआक भेस रे।
करब में पहुक उदेस रे॥
भनहिं विद्यापति भान रे।
सुपुरुष न करे निदान रे॥

(७)

करतल कमल नयन ढरे नीर।
न चेतए सभरन कुन्तल चीर॥
तुअ पथ हेरि हेरि चित नहिं थीर।
सुमिरि पुरुष नेहा दगध सरीर॥
कत पर माधव साधव मान।
विरही जुबति माँग दरसन दान॥
जल - मध कमल गगन मध सूर।
आँतर चान कुमुद कत दूर॥
गगन गरज मेघ सिखर मयूर।
कत जन जानसि नेह कत दूर॥
भनइ विद्यापति विपरित मान।
राधा बचन जलायल कान॥

(८)

आएल रितुपति - राज वसंत ।
धाओल अलिकुल माधवि पंथ ॥
दिनकर - किरण भेल पौगंड ।
केसर कुसुम धएल हेमदण्ड ॥
नृप आसन नव पीठल पात ।
काँचन कुसुम छत्र धरू माथ ॥
मौलि - रसाल - मुकुल भेल ताय ।
समुख हि कोकिल पंचम गाय ॥
सिखिकुल नाचत अलिकुल जन्त्र ।
द्विज कुल-आन पढ़ आसिख मन्त्र ॥
चन्द्रातप उड़े कुसुम - पराग ।
मलय - पवन सह भेल अनुराग ॥

(९)

मधु रितु मधुकर पांति । मधुर कुसुम मधुमाति ॥
मधुर वृन्दावन माझ । मधुर मधुर रसराज ॥
मधुर जुवति जन संग । मधुर मधुर॰ रस रंग ॥
मधुर मृदंग रसाल । मधुर मधुर करताल ॥
मधुर नटन गति भंग । मधुर नटिनी नटसंग ॥
मधुर मधुर रस गान । मधुर विद्यापति भान ॥

(१०)

मोर पिया सखि गेल दूर देस ।
जौवन दए गेल साल सनेस ॥
मास असाढ उनत नव मेघ,
पिया बिसलेख रहओं निरथेघ ।
कौन पुरुष सखि कौन से देस,
करब मोयँ तहाँ जोगिनी भेस ॥
साओन मास वरसि घन वारि,
पंथ न सूझे निसि अँधिआरि ।
चौदिस देखिए बिजुरी रेह,

हे सखि कामिनि जीवन संदेह ।।
भादव मास वरिस घन. घोर,
समादिसि कुहुकए दादुल मोर ।
चेहुँकि चेहुँकि पिया कोर समाय,
गुनमति सूतलि अंक लगाय ।।
आसिन मास आस धर चीत,
नाह निकारुन न भेलाह हीत ।
सरवर खेलए चकवा हास,
विरहिन बैरि भेल असिन मास ।।
कातिक कंत दिगम्बर वास,
पिय पथ हेरि हेरि भेलहु निरास ।
सुख सखराति सबहु का भेल,
हमे दुख साल सोआमि दय गेल ।।
अगहन मास जीव के अन्त,
अबहु न आयेल निरदय कंत ।
एकसरि हम धनि सूतओ जागि,
नाहक आअति खाएत मोहि आग ।।
पूस खीन दिन दीघरि राति ।
पिआ परदेस मलिन भेल कांति ।।
हेरओं चौदिस अँखओं रोय ।
नाह विछोह काहु जन होय ।।
माघ मास घन उड़ए तुसार ।
झिलमिल केचुआँ उनत थन हार ।
पुनमति सूतलि पियतम कोर ।
विधि वस दैव बाम भेल मोर ।।
फागुन मास धनि जीव उचाट,
विरह विखिन भेल हेरओ बाट ।
आयल मत्त पिक पंचम गाव,
से सुनि कामिनि जीवहु सताव ।।
चैत चतुरपन पिय पर वास,
माली जाने कुसुम विकास ।
भमि भमि भमरा करु मधुपान,
नागर भइ पहु भेल असयान ।।
बैसाख तवेखर मरन समान,

कामिनि कंत हनय पंचबान।
नहिं जुड़ि छाहरि न वरसि वारि,
हम जे अभागिनि पापिन नारि॥
जेठ मास अजर नव रंग,
कंत चहए खलु कामिनि संग।
रूप नारायन पूरथु आस,
भनइ विद्यापति बारह मास॥

× × ×

उधसल केसपास लाजे गुपुत हास
रजनि उजागरे मुख न उजला,
नखपद सुन्दर पीन पयोधर
कनकसंभु जनि केसु पूजला॥
न न न न कर सखि परिनत ससिमुखि
सकल चरित तोर बुझल विसेखी॥
अलस गमन तोर वचन बोलसि भोर
मदन मनोरथ मोहगता।
जृम्भसि पुनु पुनु जासि अरस तनु
आतपे छुइलि मृणाल लता॥
बेस पिन्धु विपरित तिलक तिरोहित
नयन कजर जले अधर भरू।
एत सब लछन संग बिचछन
कपट रहत कतखन जे धरू॥
भनै कवि विद्यापति अरे वर यौवति
मधुकरे पावलि मालति फुलली॥
हासिनि देवपति देवसिंह नरपति
गरुड़ नरायन संगे भुलली॥

× × ×

दए गेलि सुन्दरि दए गेली रे दए गेलि दुइ दिठे मेरा।
पुनु मन कर ततहि जाइअ देखिअ दोसरि बेरा॥
सार चुनि चुनि हार जे गाँथल केवल तारा जोती।
अधर रूप अनुपम सुन्दर चान्दे परीहलि मोती॥
भमर मधु पिवि पिवि मातल शिशिरे भीजल पाँखी।
अलप काजरे नयन आँजल ननूमि देखिअ आँखी।

कत जतने दूती पठाओल आनय गुआ पान।
सगर रजनी बइसि गमाओल हृदय तासु पखान॥
भनइ विद्यापति सुनह नागर ओनहि ओरस जान।
राजा शिवसिंह रूपनरायण लखिमा देवि रमान॥

× × ×

ससन-परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर चमकए रे जानि बीजुरि रेह॥
आज देखलि धनि जाइते रे मोहि उपजल रंग।
कनकलता जनि संचर रे महि निरअवलम्ब॥
ता पुन अपरुब देखल रे कुच जुग अरविन्द।
विगसित नहि किछु कारन रे सोझा मुखचन्द॥
विद्यापति कवि गाओल रे रस बुझए रसमन्त।
देवसिंह नृप नागर रे हासिनि देवि कन्त॥

× × ×

कमल मिलल दल मधुप चलल घर विहग गइल निज ठामे।
अरे रे पथिक जन थिर रे करिअ मन बड़ पाँतर दुर गामे॥
ननदि रूसिए रहु परदेस बस पहु सासुहि न सुझ समाजे।
निठुर समाज पुछार उदासीन आओर कि कहब बेआजे॥
चन्दन चारू चम्प घन चामर अगर कुङ्कम घरवासे।
परिमल लोभे पथिक नित संचर तँइ नहि बोलय उदासे॥
विद्यापति भन पथिक वचन सुन चिते बुझि कर अवधाने।
राजा शिवसिंह रूपनारायण लखिमा देई रमाने॥

× × ×

नील कलेवर पीत वसन धर चन्दन तिलक धवला।
सामर मेघ सौदामिनी मंडित तथिहि उदित ससिकला॥
हरि हरि अनतए जनु परचार सपने मोए देखल नन्दकुमार॥
पुरुब देखल पय सपने न देखिअ ऐसनि न करवि बुधा।
रस सिंगार पार के पाओत अमोल मनोभव सिधा॥
भनइ विद्यापति अरे वर जोवति जानल सकल मरमे।
सिवसिंघ राय तोरा मन जागल कान्ह कान्ह करसि भरमे॥

× × ×

सरस बसन्त समय भल पाओलि दखिन पवन बहु धीरे।
सपनहुँ रूप वचन एक भाखिए मुख सो दूरि करु चीरे।

तोहर वदन सम चान होअथि नहि जइओ जतन विहि देला।
कए वेरि काटि बनाओल नव कए तइओ तुलित नहि भेला।
लोचन तुअ कमल नहि भए सक से जग के नहि जाने।
से फेरि जाए नुकेलाइ जल-भय पंकज निज अपमाने।
भनइ विद्यापति सुनु वर यौवति ई सब लछमी समाने।
राजा शिवसिंघ रूपनारायन लखिमा देइ पति भाने।

× × ×

दहए बुलिए भमरि करुना कर आहा दइ आइ की भेल।
कोर सुतल पिया आन्तरो न देअ हिया के जान कओन दिग गेल॥
अरे कैसे जीउब मञे रे सुमरि बालभू नव नेह॥
एकहि मन्दिर बसि पिया न पुछए हसि मोरे लेखे समुदक पार।
इ दुइ जौवना तरुन लाख लह से आवे परस गमार॥
पट सुति बुनि बुनि मोति सरि किनि किनि मोरे पियाञे गाथल हार।
लाख लेखि तन्हि हम हरवा गाथल से आवे तोलत गमार॥
अरेरे पथिक भइआ समाद लए जइह जाहिं देस बस मोर नाह।
हमर से दुख सुख तन्हि पिया कहिह सुन्दरि समाइलि बाह॥
भनइ विद्यापति अरे रे जुवति अवे चिते करह उछाह।
राजा सिवसिंह रूपनरायन लखिमा देवि बर नाह॥

× × ×

सरसिज विनु सर सर बिनु सरसिज की सरसिज बिनु सूरे।
जौवन बिनु तन तन विनु जौवन की जौवन पिय दूरे॥
सखि हे मोर बड़ दैव विरोधी।
मदन वेदन बड़ पिया मोर बोल छड़ अबहु देहे परबोधी॥
चौदिस भमर भम कुसुमे कुसुमे रम नीरसि माजरि पिवइ।
मन्द पवन वह पिक कुहु कुहु कह सुनि विरहिनि कइसे जीवइ॥
सिनेह अछल जत हम भेल न टूटत बड़ बोल जत सवेइ थीरे॥
अइसन कए बोलदहु निअसिम तेजि कहु उछल पयोनिधि नीरे॥
भनइ विद्यापति अरेरे कमलमुखि गुन गाहक पिया तोरा।
राजा सिवसिंघ रुपनरायन सहजे एको नहि भोरा॥

× × ×

माधव मास तीर्थि छल माधव अवधि करिये पहु गेला।
कुचयुग शंभु परसि हसि कहललि तेंह परतीति मोहि भेला॥

अवधि ओर भेल समय वेयापति जीवन बहि गेल आशे।
तखनुक विरह युवती नहि जीउति कि करत माधव मासे॥
छन छन कचकइ दिवस गमाओलि दिवस दिवस कय मासे।
मास मास कइ बरस गमाओलि आब जीवन कोन आशे॥
आम मजर धरु मन मोर गहर कोकिल शबद भेल मन्दा।
एहन वयस तेजि पहु परदेश गेल कुसुम पिउलि मकरन्दा॥
कुमकुम चानन आगि लगाओलि केओ कहे शीतल चन्दा।
पहु परदेश अनेक कइ राखलि विपति चिन्हिये भलमन्दा॥
भनहि विद्यापति सुन वर यौवती हरिक चरण करु सेवा।
परल अनाइत तेँइ छथि अन्तर बालभु दोष न देवा॥

× × ×

सखि हे मोरे बोले पुछब कन्हाइ।
हमर सपथ थिक बिसरि न हलवे गए तेजि अवसर पाइ॥
हुन्हि सयँ पेम हठहि हमे लाओल हित उपदेस न लेला।
तृनतरुअर छायातर वैसलाहु जइसन उचित से भेला॥
एक हमे नारि गमारि सबहु तह दोसरे सहज मतिहीनी।
अपनुक दोष दैवके कि कहब ओ नहि भेलाहे चिन्ही॥
अकुलिन बोल नहिं ओड़ धरि निरवह धरए अपन वेवहारे।
आगिल दुर कर पाहिल चित धर जइसन बड़ि कुसियारे॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति चिते जनु मानह आने।
राजा सिवसिंघ रुपनारायन सकल कलारस जाने॥

× × ×

करे कुचमण्डल रहलिहुँ गोए।
कमले, कनक-गिरि झांपि न होए॥
हरख सहित हेरलन्हि मुख-कांति।
पुलकित तनु मोर धर कत भांति॥
तखने हरल हरि अञ्चल मोर।
रस भरे ससरू कसनिकेर डोर॥
सपना एकि सखि देखल मोयँ आज।
तखनुक कौतुक कहइते लाज॥
आनन्दे नोरे नयन भरि गेल।
पेमक आँकुरे पल्लव देल॥
भनइ विद्यापति सपना सरूप।
रस बुझ रुपनरायन भूप॥

× × ×

कि आरे ! नव जौवन अभिरामा ।
जत देखल तत कहए न पारिअ छओ अनुपम एक ठामा ॥
हरिन इन्दु अरविन्द करिनि हेम पिक बुझल अनुमानी ।
नयन रयन परिमल गति तनु-रुचि अओ अति सुललित बानी ।
कुच-युग पर चिकुर फुजि पसरल ता अरुझायल हारा ।
जनि सुमेरु उपर मिलि ऊगल चाँद विहिन सब तारा ।
लोल कपोल ललित मनि-कुण्डल अधर विम्ब अध जाई ।
भौंह भ्रमर, नासापुट सुन्दर से देखि कीर लजाई ।
भनइ विद्यापति से वर नागरि आन न पावए कोई ।
कसदलन नारायन सुन्दर तसु रंगिनी पए होई ।

× × ×

सबहु सखि परबोधि कामिनि आनि देलि पिया पास ।
जनु बांधि ब्याधा विपिन सयँ मृग तेज तीख निसास ॥
बैठलि सयन समीपे सुवदनि जतने समूहि न होइ ।
भेल मानस बुलए दहोदिस देल मनमथे फोइ ॥
सकल गात दुकूल दढ़ अति कतहु नहि अवकास ।
पानि परस परान परिहर पूरति की रति आस ॥
कठिन काम कठोर कामिनि मान नहि परबोध ।
निविड़ नीविवन्ध कठिन कंचुक अधरे अधिक निरोध ॥
करब की परकार आवे हमे किछु न पर अवधारि ।
कोपे कौसले करए चाहिअ हठहि हल हिअ हारि ॥
दिवस चारि गमाए माधव करब रति समधान ।
बड़हिक बड़ होय धैरज सिंघ भूपति भान ॥

× × ×

माधव सिरिस कुसुम सम राही ।
लोभित मधुकर कौसल अनुसर नव रस पिबु अवगाही ॥
पहिल वयस धनि प्रथम समागम पहिलुक जामिनि जामें ।
आरति पति परतीति न मानथि कि करथि केलक नामें ॥
अंकम भरि हरि सयन सुतायल हरल वसन अविसेखे ।
चाँपल रोस जलज जनि कामिनि मेदनि देल उपेखे ॥
एक अधर कै नीवि निरोपलि दू पुनि तीनि न होई ।
कुच-जुग पाँच पाँच ससि उगल कि लय धरथि धनि गोई ॥
अकुल अलप बेआकुल लोचन आँतर पूरल नीरे ।
मनमथि मीन वनसि लय वेधल देह दसो दिसि फीरे ॥

मानिनि आव उचित नहिं मान ।
एखनुक रंग एहन सन लगइछि जागल पय पचोवान ।।
जुड़ि रयनि चकमक कर चानन एहन समय नहिं आन ।
एहि अवसर पहु मिलन जेहन सुख जकरहिं होए से जान ।।
रभसि रभसि अलि विलसि विलसि करि जेकर अधर मधु पान ।
अपन अपन पहु सबहु जेमाओलि भूखल तुअ जजमान ।।
त्रिवलि तरंग सितासित संगम उरज सम्भु निरमान ।
आरति पति परतिग्रह मगइछि करु धनि सरवस दान ।
दीप दिपक देखि थिर न रहय मन दृढ़ करु अपन गेआन ।
संचित मदन वेदन अति दारुन विद्यापति कवि भान ।।

× × ×

त्रिवलि-तरंगिनी पुर पुर दुग्गम जनि मनमथे पत्र पठाउ ।
जौवन - दलपति समर तोहर ऋतुपति - दूत पठाउ ।।
माधव, आवे साजिए दहु बाला ।
तसु सैसव तोहे जे सन्तापलि से सब आओति बाला ।।
कुण्डल चक्क तिलक अंकुस कए चन्दन कवच अभिरामा ।
नयन कटाख वान गुनधनु साजि रहल अछि रामा ।।
सुन्दरि साजि खेत चलि अइलि विद्यापति कवि भाने ।

× × ×

दृढ़ परिरम्भन पीड़लि मदने ।
उवरि अएलहुँ सखि पूरब पुने ।।
टूटि छिड़िआएल मोतिन हार ।
सिन्दूर लोटायल सुरंग पॅवार ।।
सुन्दर कुचजुग नख - खत भरी ।
जनि राजकुम्भ विदारल हरी ।।
अधर दसन देखि जिउ मोरा कांपे ।
चाँदमण्डल जनि राहुक झांपे ।।
समुद्र ऐसन निसि न पारिए उर ।
कखन उगत मोर हित भए सूर ।।
मोय नहि जाएब सखि तन्हि पिया ठाम ।
बरु जिव मारि नड़ाबथि काम ।
भनइ विद्यापति तेज भय लाज ।।
आगि जारिये पुनु आगिक काज ।।

× × ×

कि कहब ए सखि केलि विलासे।
विपरीत सुरत नाह अभिलासे॥
कुचजुग चारु धराधर जानी।
हृदय परत तें पहु देल पानी॥
मातलि मनमथें दुर गेल लाजे।
अविरल किङ्किनी कङ्कन बाजे॥
घाम विन्दु मुख सुन्दर जोती।
कनक कमल जनि फरि गेल मोती॥
कहहि न परिअ परिअ पिय मुख भासा।
समुहु निहारि दूहू मने हासा॥
भनइ विद्यापति रसमय वाणी।
नागरि रम पिय अभिमत जानी॥

× × ×

सजनी भल कए पेखल न भेल।
मेघ-माल सयँ तड़ित-लता जनि हिरदये सेल दई गेल॥
आध आँचर खसि आध वदन हसि आधहिं नयन-तरङ्ग।
आध उरज हेरि आध आँचर भरि तब धरि दगधे अनंग॥
एक तनु गोरा कनक-कटोरा अतनु काँचला उपाम।
हारल हरल मन जनि बुझि ऐसन फाँस पसारल काम॥
दसन मुकुता-पांति अधर मिलायल मृदु मृदु कहतहिँ भासा।
विद्यापति कह अतए से दुख रह हेरि हेरि न पुरल आसा॥

× × ×

सहि हे मन्दप्रेम - परिनामा।
बराक जीवन कयल पराधीन नाहि उपकार एकठामा॥
झाँपल कूप लखइ न पारल जाइत पड़लहुँ धाइ।
तखनुक लघु-गुरु कछु ना विचारलुँ अब पाछु तरइते चाइ॥
मधु सम वचन प्रेम सम मानुख पहिलहुँ जानन न भेला।
अपन चतुरपन पर हाते सौंपलुं हृदिसे गरब दूरे गेला॥
एत दिन आज भाने हम आछलुँ अब बुझलु अवगाहि।
अपन सूल हम आपहि चाँछल दोख देयब अब काहि॥
अनये विद्यापति सुन वरजुवति चिते नाहि गूनबि आने।
प्रेमक कारन जीउ उपेखिअ जगजन को नाहि जाने॥

× × ×

सखि अवलम्बन चलवि नितम्बिनि थम्भवि थम्भ समीपे।
जब हरि करे धरि कोर वइसाओब आँचरे चोरायबि दीपे॥
सखि मान न रहत उदासे।
सत सम्भासने वचन न परगासव जेहन कृपन असोयासे॥
लहु लहु हसि हसि मुख मोड़वि दसन देखाओब हासे।
वदन आध विनु साध न पूरब कुच दरसाओव पासे॥
वहुविध आदरे पहुक कातर लखि विमुखि बइसब बामे।
करे कर ठेलब आलिंगन बारब सेज तेजि बइसब ठामे॥
करे कर जोरि मोरि तनु उठब अम्बर सम्बरि पीठे।
भनइ विद्यापति उतकट संकट उपजायव दीठे॥

× × ×

विगलित चिकुर मिलित मुखमण्डल चाँद बेढ़ल घनमाला।
मनिमय-कुण्डल स्रवणे दुलित भेल घामे तिलक बहि गेला॥
सुन्दरि तुआमुख मंगल-दाता।
रति-विपरीत-समय-यदि राखबि कि करब हरि हर धाता॥
किंकिनी किनि किनि कंकन कनकन कलरव नूपुर बाजे।
निज मदे मदन पराभव मानल जय जय डिंडिम बाजे।
तिल एक जघन सघन रव करइत होयल सैनक भंग।
विद्यापति पति ओ रस गाहक जामुने मिलिलो गंग तरंग॥

× × ×

कि कहब हे सखि रातुक बात।
मानिक पड़ल कुबानिक हात॥
काँच कंचन न जानइ मूल।
गुंजा रतन करए समतूल॥
जे किछु कभु नहि कलारस जान।
नीर खीर दुहू करए समान॥
तन्हि सौ कहाँ पिरीत रसाल।
बानर-कण्ठ कि मोतिम माल॥
भनइ विद्यापति इह रस जान।
बानर मुँह की सोभए पान॥

× × ×

फुटल कुसुम नव कुंज कुटिर बन कोकिल पंचम गाओइ रे।
मलयानिल हिमसिखरे सिधारल पिया निज देसन आओइ रे॥

चाँद चन्दन तनु अधिक उतापए उपवने अलि उतरोल ।
समय वसन्त कन्त रहु दुरदेस जानल विहि प्रतिकूल ।।
आनमिख नयने नाह मुख निरखइते तिरपति न होये नयान ।
इ सुख समय सहए एत संकट अबला कठिन परान ।।
दिने दिने खिन तनु हिम कमलिनि जनि न जानि कि जिब परजन्त ।
विद्यापति कह धिक धिक जीवन माधव निकरुन अन्त ।।

× × ×

सजनि, के कह आओब मधाई ।
विरह-पयोधि पार किए पाओब मझु मने नहि पतिआई ।।
एखन-तखन करि दिवस गोडायलु दिवस दिवस करि मासा ।
मास मास करि बरस गमाओल छोड़लुँ जीवनक आसा ।।
बरखि बरखि कर समय गोडयालुँ खोयालुँ कानुक आशे ।
हिमकर-किरणे नलिनि जदि जारब कि करब माधव-मासे ।।
अंकुर तपन - ताप जदि जारब कि करब बारिद मेहे ।
इह नवजौवन विरह गोडायब की करब से पिया नेहे ।।
भनइ विद्यापति सुन वर युवति अब नहि होइ निराश ।
सो ब्रजनन्दन हृदय - आनन्दन झटिति मिलब तुअ पाश ।।

× × ×

माधव सो अब सुन्दरि बाला ।
अविरत नयने बारि झरु निर्झर जनु घन-साओन माला ।।
पुनमिक इन्दु निन्दि मुख सुन्दर से भेल अब ससि-रेहा ।
कलेवर कमल काति जिनि कामिनी दिने दिने खीन भेल देहा ।।
उपवन हेरि मुरछि पडु भूतले चिन्तित सखीगन संग ।
पद अंगुलि देइ खिति पर लिखइ पानि कपोल अवलम्ब ।।
ऐमन हेरि तुरिते हम आओलुँ अव तुहुँ करह बिचार ।
विद्यापति कह निकरुन माधव बुझलु कुलिसक सार ।।

× × ×

माधव ओ नवनायरि बाला ।
तुहुँ बिछुरलि विहि कटावलि भेलि निमालिक माला ।।
से जे सोहागिनी खेदे दिन गिनि पन्थ निहारइ तोरा ।
निचल लोचन ना शुने वचन ढरि ढरि पडु लोरा ।।
तोहरि मुरली से दिग छोड़लि झामर झामर देहा ।
जनु से सोनारे कसि कसटिक तेजल कनह रेहा ।।

फुयल कबरि न बान्धे सम्बरि धनि जे अबस एता।
रुखलि भुखलि दुखलि देखलि सखिनि-सङ्ग समेता॥
उससि उससि पडु खसि खसि आलि-आलिंगन चाहे।
याकर वेयाधि पराधिन औखधि ताकर जीवन काहे॥
भनइ विद्यापति करिये शपति आर अपरुप कथा।
भावित भावित तोहारि चरित भरम होइल यथा॥

× × ×

अनुखन माधव माधव सोङरिते सुन्दरि भेलि मधाई।
ओ निज भाव सभावहि बिसरल आपन गुन लुबुधाई॥
माधव, अपरूप तोहारि सिनेह।
अपने विरह अपन तनु जरजर जिवइते भेल सन्देह॥
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छल छल लोचन पानि।
अनुखन राधा राधा रटइत आधा आधा कहु बानि॥
राधा सयें जब पुनतहि माधव माधव सयें जब राधा।
दारुन प्रेम तबहि नहि टूटत बाढ़त विरहक बाधा॥
दुहु दिशे दारुदहने जैसे दगधइ आकुल कीट परान।
ऐसन बल्लभ हेरि सुधामुखि कवि विद्यापति भान॥

ढोला-मारूरा दूहा

गाहा

पूगळि पिंगळ राऊ, नळ राजा नरवरे नयरे।
अदिठा दूरिट्ठा ये, सगाई दईय संजोगे॥

दोहा

पूगळ देस दुकाळथियुँ, किणहीं काळ विसेसि।
पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवरचइ देसि॥
नळराजा आदर दियउ, जउ राजवियाँ जोग।
देस वास सवि रावळा, अइ घोड़ा अइ लोग॥
नरवर नळराजा-तणउ, ढोलउ कुँवर अनूप।
रांणि राउ पिंगळ-तणी, रीझी देखे रूप॥
पिंगळ-पुत्री पदमिणी, मारवणी तिणि नाँम।
जोड़ी जोइ विचारियउ, धन्न विधाता - काँम॥

सारीखी जोड़ी जुड़ी, आ नारी अउ नाह।
रॉणी राजासूँ कहइ, कीजइ अउ वीमॉह ।।

राजा रॉणीनूँ कहइ, बात विचारउ जोइ।
आज विखइ द्यॉ दीकरी, हॉसउ हसिसी लोइ ।।

अंब तजइ नहि कोइलॉ, सरवर सालूराह।
राज हिवइ मा पॉतरउ, आ धण द्यउ अवरॉह ।।

ज्यूँ थे जाणउ त्यूँ करउ, राजा आइस दीध।
राणी राजानूँ कहइ, ओ म्हॉ नातरउ कीध ।।

ढोलउ मारू परणिया, वरदळ हुवउ उछाह।
आ पूगळची पदमिणी, अउ नरवरचउ नाह ।।

पिंगल पूगल आवियउ, देसे थयउ सुगाळ।
तेणि न राखी सासरइ, अजे स मारू बाळ ।।

जिम जिम मन अमले किअइ, तार चढंती जाइ।
तिम तिम मारवणी-तणइ, तन तरणापउ थाइ ।।

हंस चलण, कदळीह जॅघ, कटि केहर जिम खीण।
मुख सिसहर खंजर नयण, कुच श्रीफळ, कॅठ वीण ।।

असइ आरखइ मारुवी सूती सेज विछाइ।
साल्हकुँवर सुपनइँ मिल्यउ, जागि निसासउ खाइ ।।

ऊलंबे सिर हथ्थड़ा, चाहंदी रस-लुध्ध।
विरह महाघण ऊमटयउ, थाह निहाळइ मुध्ध ।।

उक्कंबी सिर हथ्थड़ा, चाहंती रस-लुध्य।
ऊँची चढि चातृंगि जिउँ मागि निहालइ मुध्ध ।।

थाह निहालइ, दिन गिणइ, मारू आसा-लुध्ध।
परदेसे धाँधल घणा, विखउ न जाणइ मुध्ध ।।

ऊनमियऊ उत्तर दिसइँ, गाज्यउ गुहिर गॅभीर।
मारवणी प्रिउ संभरयऊ, नयणे वूठउ नीर ।।

मारूनूँ आखइ सखी; आज स कॉइ उदास।
कॉम-चित्रॉम जु दिट्ठ मइँ, रूप न भूलइ तास ।।

अम्हॉ मन अचरिज भयउ, सखियॉ आखइ एम।
तइँ अणदिट्ठा सज्जणॉ किउँ करि लग्गा पेम ।।

जे जीवण तिन्हॉ-तणा तन ही माहि वसंत।
धारइ दूध पयोहरे बाळक किम कादंत ।।

ससनेही समदाँ परइ, वसत हिया मंझार।
कुसनेही घर आँगणाई, जाँण समंदाँ पार॥
सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ।
खिण खिण अंतर संभरइ, नहीं विसारइ सोइ॥
मारूनूँ आखइ सखी, एह हमारी बुज्झ।
साल्हकुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुंदरि, सउ वर तुज्झ॥
सखी-वयण सुंदरि सुण्या, उठी मदन की झाळ।
सुंदरिनूँ सज्जण-विरह ऊपन्नउ ततकाळ॥
हे सखिए, परदेस प्री, तनह न जावइ ताप।
बाबहियउ आसाढ जिम विरहणि करइ विलाप॥
बाबहियउ नइ विरहणी, दुहुवाँ एक सहाव।
जब ही बरसइ घण घणउ, तबही कहइ प्रियाव॥
बाबहिया, चढि गउखसिरि, चढि ऊँचइरी भीत।
मत ही साहिब बाहुड़इ, कउ गुण आवइ चीत॥
बाबहिया, चढि डूगरे, चढि ऊँचइरी पाज।
मत ही साहिब बाहुड़इ, सुणि मेहाँरी गाज॥

सोरठा

बाबहिया, तूँ चोर, थारी चाँच कटाविसूँ।
राति ज दीन्ही लोर, मइँ जाण्यउ प्री आवियउ॥

दोहा

बाबहिया निल-पंखिया, मगर ज काली रेह।
मति पावस सुणि विरहणी तळफि तळफि जिउ देह॥
बाबहिया तर-पंखिया, तइँ किउँ दीन्ही लोर।
मइँ जाण्यउ प्रिउ आवियउ ससहर चंद चकोर॥
बाबहिया निल-पंखिया, बाढत दइ दइ लूण।
प्रिउ मेरा मइँ प्रीउकी, तूँ प्रिउ कहइ स कूण॥
बाबहिया रत - पंखिया, बोलइ मधुरी वांणि।
काइ लवंतउ माठि करि, परदेसी प्रिउ आंणि॥
बाबहिया प्रिउ प्रिउ न कहि, प्रिउ को नाम न लेह।
काइक जागइ विरहणी, प्रीउ कह्याँ जिउ देह॥

बाबहिया डूँगर-दहण, छांडि हमारउ गाँम ।
सारी रात पुकारियउ लइ लइ प्रिउकउ नाँम ॥
[चहुँ दिसि दामिनि सघन घन, पीउ तजी तिण वार ।
मारू मर चातग भए, निउ पिउ करत पुकार ॥
पावस आयउ साहिबा, बोलर लागा मोर ।
कंता, तूँ घरि आव नवि, जोबन कीधउ जोर ॥
गिरिवर मोर गहक्किया, तरवर मॅक्या पात ।
धणियाँ धण सालण लगा, वूठैतौ बरसात ॥
राजा, परजा, गुणिय-जण, कवि-जण, पंडित, पात ।
सगळाँ मन ऊछव हुअउ, वूठैतौ बरसात ॥
ऊनमि आई बद्दळी, ढोलउ आयउ चित्त ।
यो बरसइ रितु आपणी, नइण हमारे नित्त ॥
ऊनमीयऊ उत्तर दिसइँ मेड़ी ऊपर मेह ।
ते विरहिणि किम जीवसे, ज्याँरा दूर सनेह ॥
ऊनमीयऊ उत्तर दिसइँ काळी कंठळि मेह ।
हूँ भीजूँ घर - अंगणइ, पिउ भीजइ परदेह ॥
बीजुळियाँ चहलावहलि आभइ आभइ एक ।
कदी मिलूँ उण साहिबा कर काजळ की रेख ॥]
बीजुळियाँ चहलावहलि आभइ आभइ च्यारि ।
कद रे मिलउँली सजना लाँबी बाँह पसारि ॥
बीजुळियाँ चहलावहलि आभय आभय कोडि ।
कद रे मिलउँली सज्जना कस कंचूकी छोडि ॥
गिरह पखालण, सर भरण, नदी हिंडोलणहारि ।
सूती सेजइँ एकली, हइ हइ दइव म मारि ॥
दादुर-मोर टबक्क घण, बीजलड़ी तरवारि ।
सूती सेजइँ एकली, हइ हइ दइव म मारि ॥
जळ थळ, थळ जळ हुइ रह्यउ, बोलइ मोर किंगार ।
स्रावण दूभर हे सखी, किहाँ मुझ प्राण-अधार ॥
बिज्जुळियाँ नीळजियाँ जळहर तूँ ही लजि ।
सूनी सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गजि ॥
राति सखी इणि ताल मइँ काइ ज कुरळी पंखि ।
उवै सरि, हूँ घरि आपणइ, बिहूँ न मेळी आँखि ॥

ए सारस कहिजइ, पसू पंखी केरा राव।
उवै बोल्या सर ऊपरइ थाँ कीधी अगुराव ॥
राति जु सारस कुरळिया, गुंजि रहे सब ताल।
जिणकी जोड़ी बीछड़ी, तिणका कवण हवाल ॥
कूँझड़ियाँ करळव कियउ घरि पाछिले वणेहि।
सूती साजण संभर्‌या, द्रह भरिया नयणेहि ॥
कूँझड़ियाँ कळरव कियउ घरि पाछिले दरंगि।
सूती साजण संभर्‌या, करवत बूही अंगि ॥
कूँझड़ियाँ कुरळाइयाँ ओलइ बइसि करीर।
सारहली जिउँ सल्हियाँ सज्जण मंझ सरीर ॥
मंझि समंदा वींट घर, जळसूँ जामोपत्त।
किणहीं अवगुण कूँझड़ी, कुरली मांझिम रत्त ॥
कुंझड़िया कळिअळ कियउ, सुणी उ पंखइ वाइ।
ज्याँकी जोड़ी बीछड़ी त्याँ निसि नींद न आइ ॥
कूँझड़ियाँ कळिअळ कियउ, सरवर पइलइ तीर।
निसिभरि सज्जण सल्लियाँ, नयणे वूहा नीर ॥

सोरठा

मारवणी मनि रंगि, वाटइ तिणि आवीं वहइ।
कुँझी एकणि संगि, तालि चरंती दिट्ठियाँ ॥

दोहा

आडा डूँगर, दूरि घर, वणइ न जाणइ भत्त।
सज्जण-सन्दइ कारणइ हियउ हिलूसइ नित्त ॥
कुंझा, द्यउ नइ पंखड़ी, थाकउ विनउ वहेसि।
सायर लंघी प्री मिलउँ, प्री मिलि पाछी देसि ॥
म्हे कुरझाँ सरवर-तणा पाँखाँ किणहिँ न देस।
भरिया सर देखी रहाँ, उड़ आघेरि वहेस ॥
उत्तर दिसि उपराठियाँ, दक्खिण साँमहियाँह।
कुरझाँ एक सँदेसड़उ ढोलानइ कहियाँह ॥
माणस हवाँ त मुख चवाँ, म्हे छाँ कूँझड़ियाँह।
प्रिउ संदेसउ पाठविसु, लिखि दे पंखड़ियाँह ॥

पाँखे पाँणी थाहरइ, जळि काजळ गहिलाइ ।
सयणाँ तणाँ संदेसड़ा, मुख वचने कहवाइ ॥

तालि चरंती कुंझड़ी, सर संधियउ गँमार ।
कोइक आखर मनि बस्यउ, ऊडी पंख सँमार ॥

जिम जिम सज्जण-संभरइ, तिम तिम लग्गइ तीर ।
पंख हुवइ तो जाइ मिलि, मनाँ बँधोड़ाँ धीर ॥

आडा डूँगर, बन घणा, खरा पियारा मित्त ।
देह विधाता, पंखड़ी, मिलि मिलि आवउँ नित्त ॥

आडा डूँगर, भुइ घणी, सज्जण रहइ विदेस ।
माँगी-ताँगी पंखुड़ी केती वार लहेस ॥

पाँखड़ियाँ ई किउँ नहीँ, दैव अवाडू ज्याँह ।
चकवीकइ हइ पंखड़ी, रयणि न मेळउ त्याँह ॥

आडा डूँगर, भुइँ घणी, तियाँ मिळीजइ एम ।
मनिहूँ खिणहि न मेल्हियइ, चकवी दिणियर जेम ॥

ज्यूँ ए डूँगर संमुहा, त्यूँ जइ सज्जण हुंति ।
चंपावाड़ी भमर ज्यउँ, नवण लगाइ रहंति ॥

जिणि देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ ।
उआँ लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ ॥

कउआ, दिऊँ बधाइयाँ, प्रीतम मेळइ मुज्झ ।
काढि कळेजउ आपणउ भोजन दिउँली तुज्झ ॥

जब सोऊँ तब जागवइ, जब जागूँ तब जाइ ।
मारू ढोलउ संभरइ, इणि परि रयण विहाइ ॥

सखियाँ राँणीसूँ कहइ, मारू-मन, भाँणी ।
साल्हकुँमर पासइ विना, पदमिणि कुँमलाँणी ॥

सखियाँ राँणीसूँ कहइ, तनह न जावइ ताप ।
साल्ह-विरह तिल तिल मइँ, मारू करइ विलाप ॥

इणि परि ऊमा देवड़ी जाणी मारू-वत्त ।
सु प्रभाति कहिबाभणी, पिंगळ पासि पहुत्त ॥

आखय ऊना देवड़ी, संभळि पिंगळ राइ ।
विरह-वियापी मारुई, नहिँ राखणकउ दाइ ॥

नितु नितु नवला सांढ़िया, नितु नितु नवला साजि ।
पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेड़न काजि ॥

न को आवइ पूगळइ, सहु को नरवर जाइ।
मारू-तणा संदेसवा बगड़ बिचाहू खाइ॥
एक दिवस पूगळ सहर, सउदागर आवंत।
तिणपइ घोड़ा अति घणा, बेच्या लाख लवंत॥
पिंगळ राजानूँ मिल्यउ, सउदागर तिणि वार।
राज-दुवारइ तेड़ियउ, आदर करे अपार॥
सउदागर पिंगळ मिल्यउ, बहुत दियउ सनमाँन।
रात-दिवस प्रेमइ मिल्यउ, इम पिंगल राजाँन॥
सउदागर राजा तिहाँ बइठा मंदिर मंझ।
मारू दीठी अउझकइ, जांणि खिवी घण संझ॥
सुंदरि, सोवन वर्ण तसु, अहर अलत्ता रंगि।
केसरि लंकी, खीण कटि, कोमल नेत्र कुरंगि॥
सउदागर खवासनूँ पूछइ, लइ तिण मन्न।
दीसइ रायंगणमहीँ कुँवरी कंचन-व्रन्न॥
ते देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि।
किह पीहर, किह सासरउ, विगतइ कहइ विचारि॥
कुँवरी पिंगळ रायनी, मारुवणी तसु नाँम।
नरवरगढ़ ढोलइ भणी परणी पुहकर ठाँम॥
दउढ वरसरी मारुवी, त्रिहुँ वरसाँरउ कंत।
बाळपणइ परण्याँ पछइ, अंतर पड़यउ अनंत॥
सउदागर राजा कन्हे अरज करइ एकंति।
साल्हकुँवर सूँ वीनती कहि किण दाखूँ भंति॥
सल्हकुवर सुरपति जिसउ रूपे अधिक अनूप।
लाखाँ बगसइ माँगणा, लाख भड़ाँ सिर भूप॥
माळवगढ़ राजा सुधू, कुँवरी माळवणीह।
ढोलइ तिण वहु प्रीति छइ अति रंग नेह घणीह॥
मइँ घोड़ा बेच्या घणा, रहियउ मास चियारि।
राति दिवस ढोलइ कन्हइ, रहतउ, राज दुवारि॥
राजा, कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ।
माळवणी मारइ तियउ, पूगळ पंथ जिकोइ॥
सउदागर राजसुँ कह, सुणउ हमारी कथ्थ।
मारवणी छानी रही, से माळवणी तथ्थ॥

सही समाँणी साथि करि, मंदिरकूँ मल्हपंत ।
सउदागर-नेड़ी बहइ, सुणिवा प्रीतम-वत्त ।।

सउदागर संदेसड़ा, साँभळिया स्रवणेहि ।
मारुवणी ते मन दहइ, मूक्यउ जळ नयणेहि ।।

सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार ।
राँणी राय विमासियउ, तेड़इ, साल्हकुमार ।।

राजा प्रोहित तेड़ियउ, तूँ जाइ ढोलउ ल्याव ।
सखियाँ मारूनूँ कहइ, हुवउ अणंद उछाव ।।

राँणी राजानूँ कहइ, मेल्हउ माँगणहार ।
माँगणगारा रीझवइ, ल्यावइ साल्हकुमार ।।

राजा प्रोहित राखिजइ, जिण की उत्तिम जाति ।
मोकलि घरना मंगता, विरह जगावइ राति ।।

पाछइ प्रोहित राखियउ, तेड़या माँगणहार ।
जे भेदक गीताँ-तणा, बात करइ सुविचार ।।

ढाढी गुणी बोलाविया राजा तिणही ताळ ।
नरवरगढ़ ढोलइ-कन्हइ जावउ वागरवाळ ।।

सीख करे पिंगळ कन्हाँ, घर आया तिणि बार ।
मेल्हि सखी तेड़ाविया मारू माँगणहार ।।

मारू सनमुख तेड़िया, दियण संदेसा कज्ज ।
कहउ कदे थे चालिस्यउ, काँइ विहाणइ अज्ज ।।

आज निसह म्हे चालिस्याँ, बहिस्याँ पंथी-वेस ।
जउ जीव्या तउ आविस्याँ, मुया त उणिहिज देस ।।

मारुवणी भगताविया मारू राग निपाइ ।
दूहा संदेसाँ - तणाँ दीया तियाँ सिखाइ ।।

नरवर देस सुहाँमणउ, जइ जावउ पहियाह ।
मारू - तणा संदेसड़ा ढोलइनूँ कहियाह ।।

संदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जाणइ कोइ ।
ज्यूँ धणि आखइ नयण भरि, ज्यँउ जइ आखइ सोइ ।।

ढाढी, एक संदेसड़उ प्रीतम कहिया जाइ ।
सा धण बलि कुइला भई, भसम ढँढोलिसि आइ ।।

ढाढी, जे प्रीतम मिलइ, यूँ कहि दाखवियाह ।
पंजर नहिं छइ प्रांणियउ, थाँ दिस झळ रहियाह ।।

पंथी, एक संदेसड़उ, भल माणसनइ भख्ख।
आतम तुझ पासइ अछइ, ओळग रूड़ा रख्ख॥
ढाढी, जे राज्यँद मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।
जोबण-हस्ती मद चढ्यउ, अंकुस लइ घरि आइ॥
ढाढी, जे साहिब मिलइ, यू दाखविया जाइ।
आँख्याँ-सीप विकासियाँ, स्वाति ज बरसउ आइ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ कहि ढोला समझाइ।
जोबण-आँबउ फल रह्यउ, साख न खाअउ आइ॥
ढाढी, जइ प्रीतम मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।
जोबण छत्र उपाड़ियउ, राज न बइसउ काइ॥
ढाढी, जइ साहिब मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।
जोबण-कमळ विकासियउ, भमर न। बइसइ आइ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ।
जोबन चाँपउ मउरियउ, कळी न चुट्टइ आइ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ।
कण पाकउ, करसण हुअउ, भोग लियउ घरि आइ॥
ढाढी, एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ।
जोबण फट्टि तलावड़ी, पाळि न बंधउ काँइ॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलउ पैहचाइ।
विरह-महादव जागियउ, अगिन बुझावउ आइ॥
पही, भमंता जइ मिलइ, तउ प्री आखे भाय।
जोबण बंधन तोड़सइ, बंधण घातउ आय॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहचाइ।
निकस वेणी-सापणी, स्वात न वरसउ आइ॥
पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहचाइ।
तन मन उत्तर बाळियउ, दख्खिण वाजइ आइ॥
पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहचाइ।
विरह-महाविस तन वसइ, ओखद दियइ न आइ॥
पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहचाइ।
विरह-वाघ वनि तनि वसइ, सेहर गाजइ आइ॥
पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहचाइ।
धँण कँमलाँणी, कमलणी, सिसहर ऊगइ आइ॥

पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
धँण कँमलाँणी कँमलणी, सूरिज ऊगइ आइ ॥

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
जोवन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ ॥

पंथी, एक संदेसड़इ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
जंघा-केळिनि फळि गई, स्वात जु बरसउ आइ ॥

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याइ ।
सावज संबल तोड़स्यइ, बैसासणइ न जाइ ॥

पंथी, एक संदेसड़उ लग ढोलइ पैहच्याय ।
जोबन जायइ प्राहुणउ वेमइरउ घर आय ॥

पही, भमंतउ जउ मिलइ, कहे अम्हीणी बत्त ।
धण कँणयररी कंब ज्यउँ, सूकी तोइ सुरत्त ॥

पंथी, एक संदेसड़उ कहिज्यउ सात सलाँम ।
जबथी हमतुम बीछड़े, नयणे नींद हराँम ॥

पंथी - हाथ संदेसड़इ, धण बिललंती देह ।
पगसूँ काढइ लीहटी, उर आँसुआँ भरेह ॥

ढोला, ढीली हर किया, मूँक्या मनह विसारि ।
संदेसउ हन पाठवइ, जीवाँ किसइ अधारि ॥

ढोला, ढीली हर मुझ दीठउ घणो जणेह ।
चोल - बरन्ने कप्पड़े, सावर धन अणेह ॥

कागळ नहीं, क मस नहीं, नहीं क लेखणहार ।
संदेसा ही नाविया, जीवुँ किसइ आधार ॥

कागळ नहीं, क मसि नहीं, लिखताँ आळस थाइ ।
कइ उण देस संदेसड़ा, मोलइ वड़इ विकाइ ॥

सोरठा

वायस वीजउ नाँम, ते आगलि लल्लउ ठवइ ।
जइ तू हुई सुजाँड़, तउ तूँ वहिलउ मोकळे ॥

दोहा

संदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यउँ हीया फूटि ।
पारेवाका भूल जिउँ, पड़िनइँ आँगणि त्रूटि ॥

संदेसा मति मोकळउ, प्रीतम, तूँ आवेस।
आँगलड़ी ही गळि गयाँ, नयण न वाँचण देस॥
फागुण मासि वसंत रुत आयउ जइ न सुणेसि।
चाचरिकइ मिस खेलती, होळी झंपावेसि॥
जइ तूँ ढोला नावियउ, कइ फागुण कइ चेत्रि।
तउ म्हे घोड़ा बांधिस्याँ, काती कुड़ियाँ खेत्रि॥
जउ साहिब तू नावियउ, मेहाँ पहलइ पूर।
विचइ वहेसी वाहळा, दूर स दूरे दूर॥
सज्जणिया, सावण हुया, घड़ि उलटी भंडार।
विरह - महारस ऊमटइ, के ताकहूँ सँभार॥
जउ तूँ साहिब, नावियउ सावण पहिली तीज।
बीजळ - तणइ झबूकड़इ मूँध मरेसी खीज॥
जइ तूँ ढोला, नावियउ काजळियारी तीज।
चमक मरेसी मारवी, देख खिवंताँ बीज॥
बीजुलियाँ जालउमिल्याँ, ढोला, हूँ न सहेसि।
जउ आसाढ़ि न आवियउ, सावण समकि मरेसि॥
वीज, न देख चहड्डियाँ प्री परदेस गयाँह।
आपण लीय झबुक्कड़ा, गळि लागी सुहराँह॥
बीजुळियाँ पारोकियाँ नीठ ज नीगमियाँह।
अजइ न सज्जन बाहुड़े, वळि पाछी वळियाँह॥
जउ तूँ ढोला, नावियउ मेहाँ नीगमताँह।
किया करायइ सज्जणा, दाधा मांहि घणाँह॥
वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाँण।
तुझविण धणविलखी फिरइ, गुणबिन लाल कमाण॥
राति ज रूँनी निसह भरि, सुणी महाजनि लोइ।
हाथळी छाला पड़या, चीर निचोइ निचोइ॥
ढोला, मिलिसिमवीसरिसि, नवि आविसि, नालेसि।
मारू - तणइ करंकडइ वाइस ऊडावेसि॥
हियड़इ भीतर पइसि करि ऊगउ सज्जण रूँख।
नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख॥
अकथ कहाणी प्रेमकी किणसूँ कही न जाइ।
गूँगाका सुपना भया, सुमर सुमर पिछताइ॥

प्रीतम, तोरइ कारणइ ताता भात न खाहि ।
हियड़ा भीतर प्रिय बसइ, दाभ्रणती डरपाहि ।।
चंदण - देह कपूर - रस सीतळ गंग - प्रवाह ।
मन - रंजण, तन - उल्हवण, कदे मिलेसी नाह ।।
मत जाणे प्रिउ, नेह गयउ दूर विदेस गयाँह ।
बिवणउ बाधइ सज्जणाँ ओछउ ओहि खळाँह ।।
हूँ कुँमलाणी कंत विण, जळह विहूणी वेल ।
विणजारारी भाइ जिउँ गया धुकंती मेल्ह ।।
आडा डूँगर, वन घणा, आडा घणा पलास ।
सो साजण किम वीसरइ, बहु गुणतणा निवास ।।
आँखड़ियाँ डंबर हुई, नयण गमाया रोय ।
से साजण परदेसमइँ ह्या विडाणा होय ।।
मुख नीसाँसाँ मूँकती, नयणे नीर प्रवाह ।
सूळी सिरखी सेझड़ी तो विण जाणे नाह ।।
वालँभ, एक हिलोर दे आइ सकइ तउ आइ ।
बाँहड़ियाँ बे थक्कियाँ काग उडाइ उडाइ ।।
जिम सालूराँ सरवराँ, जिम धरणी अर मेह ।
चंपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह ।।
वालिभ गरथ वसीकरण, वीजा सहु अकयथ्थ ।
जिए चख्या दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ ।।
वासर चित्त न वीसरइ, निसिभरि अवर न कोइ ।
जइ निद्रा-भरि भोगवूँ, तउ सुपनंतरि सोइ ।।

सोरठा

जेती जउ मनमांहि, पंजर जइ तेती पुळइ ।
मनि वइराग न थाइ, वालँभ वीछुड़ियाँ तणी ।।

दोहा

फूलाँ फळाँ निघट्टियाँ, मेहाँ धर पड़ियाँह ।
परदेसाँका सज्जणा, पत्तीजूँ मिळियाँह ।।
सालूरा पाँणी विना रहइ विलक्खा जेम ।
ढाढ़ी, साहिबसूँ कहइ, मो मन तो विण एम ।।

पावस मास, विदेस प्रिय घरि तरुणी कुळसुध्ध ।
सारँग सिखर, निसइ करि, मरइ स कोमळ मुध्ध ।।

तुँही ज सज्जण, मित्त तूँ, प्रीतम तूँ परिवाँण ।
हियड़इ भीतरि तूँ वसइ, भावइँ जाँण म जाँण ।।

हूँ बळिहारी सज्जणाँ, सज्जण मो बळिहार ।
हूँ सज्जण पग पानही, सज्जण मो गळहार ।।

लोभी ठाकुर, आवि घरि, काँई करइ विदेसि ।
दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि ।।

बहु धंधाळू आव घरि, काँसू करइ वदेस ।
संपत सबळी संपजे, आ दिन कदी लहेस ।।

अवसर जे नहिं आविया, वेळा जे न पहुत्त ।
सज्जण तिण संदेसड़इ करिज्यउ राज बहुत्त ।।

सोरठा

संभारियाँ सँताप, वीसारिया न वीसरइ ।
काळेजा बिचि काप, परहर तूँ फाटइ नहीं ।।

दोहा

यहु तन जारी मसि करूँ, धूँआ जाहि सरग्गि ।
मुझ प्रिय बद्दल होइ करि, वरसि बुझावइ अग्गि ।।

भरइ, पळट्टइ, भी भरइ, भी भरि, भी पळटेहि ।
ढाढी-हाथ संदेसड़ा धण विललंती देहि ।।

दूहा संदेसा मिसइँ दीधा तिणा सिखाइ ।
प्रीतम आगळि वीनती करिया इणि विधि जाइ ।।

स्रवण संदेसा साँभळे ढाढी किया प्रयाँण ।
मागरवाळ जु आविया देसे साल्ह सुजाँण ।।

पूगळहूँताँ पुहकरइ ढाढी कीध प्रयाँण ।
माळवणीका माणसाँ आए मिल्या अजाँण ।।

ढाढी रात्यूँ ओळग्या, गाया बहु बहु भंत ।
माँगण-पंथी जांणि कइ, तब छंडिया निचंत ।।

वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीध ।
साल्ह - महलहूँ ढूकड़ा ढाढी डेरउ लीध ।।

ढाढी गाया निसह भरि राग मल्हार निवाज।
च्यार पहर झड़ मंडियउ, घण गुहिरइ सुरगाज ॥

सिंधु परइ सउ जोयणाँ खिबियाँ वीजुळियाँह।
ढोलउ नरवर सेरियाँ, धण पूगळ गळियाँह ॥

सिंधु परइ सत जोअणे खिवियाँ वीजळियाँह।
सुरहउ लोद्र महक्कियाँ, भीनी ठोवड़ियाँह ॥

सिंधु परइ सउ जोअणे नीवी खिवइ निहल्ल।
उर भेदंती सज्जणाँ, ऊचेड़ंती सल्ल ॥

ढाढी गाया निसह भरि, सुणियउ साल्ह सुजाँण।
ओछइ पाँणी मच्छ ज्यउँ वेलत थयउ विहाँण ॥

दुख-वीसारण, मनहरण, जउ ई नाद न हुँति।
हियड़उ रतन-तळाव ज्यउँ फूटी दह दिसि जंति ॥

मंदिरहूँताँ ऊतर्यउ रवि ऊगंतइ वार।
माँगणहार बोलाविया पूछण तास विचार ॥

कवण देसतइँ आविया, किहाँ तुम्हारउ वास।
कुँण ढोलउ, कुँण मारुवी, राति मल्हाया जास ॥

पूगळहुँता आविया, पूगळ म्हाँकउ वास।
पिंगळ राना तास धू मेल्ह्या थाँकइ पास ॥

मारुवणी पिंगळ सुधू, अपछररइ उणिहार।
बाळपणइ परणी पछइ, भूल न कीन्ही सार ॥

दुजण वयण न संभरइ, मनाँ न वीसारेह।
कूँझाँ लाल बचाँह ज्यउँ खिण खिण चीतारेह ॥

सज्जण, दुजण के कहे भड़िक न दीजइ गालि।
हळिवइ हळिवइ छंडियइ जिम जळ छंडइ पाळि ॥

संदेसे ही घर भरयउ कइ अंगणि कइ वार।
अवसि ज लग्गा दीहड़ा, सेई गिणइ गँवार ॥

जळमंहि वसइ कमोदणी, चंदउ वसइ अगासि।
ज्यउ ज्याँहीकइ मनि वसइ, सउ त्याँही कइ पासि ॥

चुगइ, चितारइ, भी चुगइ, चुगि चुगि चित्तारेह।
कुरझी बच्चा मेल्हिकइ, दूरि थकाँ पाळेह ॥

चीतारंती बुगतियाँ कुंझी रोवहियाँह।
दूराहुँता तउ पलइ, जऊ न मेल्ह हियाँह ॥

दिसि चाहंती सज्जणा, नेहाळंदी मुंघ।
सा धण कुम्भि-बचाह ज्यउँ, लंबी थई तु कंघ ॥
चीतारंती सज्जणा, नीहाळंती मग्ग।
धण कुम्झह - बचाहि, जिउँ लाँबा हूया पग्ग ॥
आसालुध्धी हूँ न मुइय, सज्जन - जंजाळेइ।
मारू सेकइ हथ्थड़ा, झीणे अंगारेइ ॥
चंदमुखी, हंसा - गमणि, कोमळ दीरघ केस।
कंचन-वरणी कामनी, वेगउ आवि मिलेस ॥
ढोलइ मनि आरति हुई, सांभळि ए विरतंत।
जे दिन मारू विण गया, दई न ग्याँन गिणंत ॥
माँगणहारा सीख दी, ढोलइ तिणहि ज ताळ।
सोवन-जड़ित सिंगार दे, नाँख्यउ दळिद उलाळ ॥
माँगणहाराँ सीख दी, आयउ मंदिर मांहि।
ढोलइ मन आणँद भयउ, मारूतणइ उछाहि ॥
मन सींचाणउ जइ हुवइ, पाँखाँ हुवइ त प्राँण।
जाइ मिलीजइ साजणाँ, डोहीजइ महिराँण ॥
आडा डूँगर वन घणा, ताँह मिलीजइ केम।
ऊलाळीजइ मूँठ भरि, मन सींचाणउ जेम ॥
इहाँ सु पंजर मन उहाँ, जय जाणइला लोइ।
नयणा आडा वींझ वन, मनह न आडउ कोइ ॥
जिउँ मन पसरइ चिहुँ दिसइ, जिम जउ कर पसरंति।
दूरि थकाँ ही सज्जणाँ, कंठा ग्रहण करंति ॥
मालवणी सिणगार सझि, आई वालँभ पास।
मन संकोची पद्मिणी, प्रीतम देखि उदास ॥
जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नाँहीं अज्ज।
माथि त्रिसूळउ, नाक सळ, कोइ विणट्ठा कज्ज ॥
मनह सँकाणी माळवणि, प्रियु कांई चलचित्त।
कइ मारुवणी सुधि सुणी, कइ का नवली वित्त ॥
साहिब हँसउ न बोलिया, मुझसूँ रीस ज आज।
अंतरि आमणदूमणा, किसउ ज इवड़उ काज ॥
चिंता डाइणि ज्याँ नराँ, त्याँ दृढ अंग न थाइ।
जइ धीरा मन धीरवइ, तउ तन भीतर खाइ ॥

चिंता बंध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न बिध्ध ।
जे नर चिंता वस करइ, ते माणस नहि सिध्ध ॥

माळवणी, तूँ मन-समी, जाणइ सहू विवेक ।
हिरणाखी, हसिनइ कहइ, करउँ दिसाउर एक ॥

गढ नरवर अति दीपता, ऊँचा महल अवास ।
घरि कामिण हरणाखियाँ, किसउ दिसावर तास ॥

तंती-नाद तँबोळ-रस, सुरहि सुगंधउ जाँह ।
आसण तुरि घरि गोरड़ी, किसउ दिसाउर त्याँह ॥

ईडरकी धर अउळगउँ, जइ तूँ कहइ तु जाँह ।
अउथि घड़ाऊँ आभरन माल्हवणी, मेलाँह ॥

ईडरकी धर अउलगण, हूँ तउ जाण ण देसि ।
घरि बइठाही आभरण, मोल मुहंगा लेसि ॥

मुळताणी धर मन वसी, सुहँगा नइ सेलार ।
हिरणाखी, हसि नइ कहइ, आणउँ हेडि तुखार ॥

घरि बइठा ही आविस्यइ, लाखे लियाँ लडंग ।
तिणिमइँ लेस्याँ टाळिमा, वाँकड़ मुहाँ विडंग ॥

काछी करह बिथूँभिया, घड़ियउ जोइण जाइ ।
हरणाखी, जउ हसि कहइ, आणिसि एथि विसाइ ॥

साहिब, कछ्छ न जाइयइ, तिहाँ परेरउ द्रंग ।
भीभळ नयण सुवंक धण, भूलउ जाइसि संग ॥

सउ सहसे एकोतरे, सिरि मोतीहरि सुध्ध ।
नदी निवासउ उत्तरइ, आणूँ एक अविंध ॥

मरजीवउ पाँणी तणउ, साल्ह, उघटनइ खाइ ।
दुख सहणा, पुहरा दियण, कंत, दिसाउर जाइ ॥

गयगमणी, गूजर धरा आणाँ दखणी चीर ।
मनह सँकोडी माळवी, सोहइ तुझ्झ सरीर ॥

सहसे लाखे साटविसु, परिघळ आणाँ वेसि ।
घरि बइठा ही पीतमा, पट्टोळा पहिरेसि ॥

गाहा

दीसइ विवहचरीयं, जाणिजइ सयण दुजण सहावो ।
अप्पाणं च कळिजइ, हंडिजइ तेण पुहवीए ॥

साहिब, रहउन राखिया कोड़ि प्रकार कियाह।
का थाँ कांमिण मन वसी, का म्हाँ दूहवियाह ॥
वळि माळवणी बीनवइ हुँ प्री, दासी तुझ्झ।
का चिंता चित अंतरे सा प्री, दाखउ मुझ्झ ॥
ढोला आमण दूमणउ, नख ती खूदइ भीति।
हमथी कुण छइ आगळी, बसी तुहारइ चीति ॥
सुणि सुंदरि, सच्चउ चवाँ, भाँजइ मनची भ्रंति।
मो मारू मिळिवातणी, खरी विलग्गी खंति ॥
माळवणीकउ तन तप्यउ, विरह पसरियउ अंगि।
ऊभी थी खड़हड़ पड़ी, जाणे डसी भुयंगि ॥
छाँटी पाँणी कुमकुमइँ, वीझण वीझया वाइ।
हुई सचेती माळवी, प्री आगलि विललाइ ॥
थळ तत्ता लू साँमुही, दाझोला पहियाह।
म्हाँकउ कहियउ जउ करउ घरि बइठा रहियाह ॥
कहिए माळवणी तणइ, रहियउ साल्ह विमास।
ऊन्हाळउ ऊतारियउ, प्रगट्यउ पावस-मास ॥
गउखे बइठा एकठा, माळवणी नइ ढोल।
अंबर दीठउ ऊनयउ, तिम संभाव्यउ बोल ॥
पगि पगि पाँणी पंथसरि, ऊपरि अंबर-छाँह।
पावस प्रगट्यउ पदमिणी, कहउ त पूगळ जाँह ॥
लागे साद सुहाँमणउ, नस भर कुंझड़ियाँह।
जळ पोइणिए छाइयउ, कहउ त पूगळ जाँह ॥
जिण रुति बग पावस लियइ धरणि न मेल्हइ पाइ।
तिण रुति साहिब वल्लहा, कोइ दिसावर जाइ ॥
जिण रुति बहु पावस झरइ, बाबहियउ बोलंत।
तिण रुति साहिब बल्लहा, को मंदिर मेल्हंत ॥
प्रीतम कामणगारियाँ थळ थळ बादळियाँह।
घण बरसंतइ सूकियाँ, लूसूँ पाँगुरियाँह ॥
कप्पड़, जीण, कमाण गुण भीजइ सब हथियार।
इण रुति साहिब ना चलइ, चालइ तिके गिमार ॥
बाजरियाँ हरियाळियाँ, बिचि बिचि बेलाँ फूल।
जउ भरि बूठउ भाद्र वउ, मारू देस अमूल ॥

धर नीली, धण पुंडरी, धरि गहगहइ गमार।
मारू-देस सुहामणउ, साँवणि साँझी वार॥
बाबहियउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरँगइ साद।
प्रिय, तिण रुति आळिग रह्याँ, ताह सुं किसउ सवाद॥
डूँगरिया हरिया हुया, वणे झिंगोर्‌या मोर।
इणि रिति तीनइ नीसरइ, जाचक, चाकर, चोर॥
चोर मन आलस करि रहइ, जाचक रहइ लुभाइ।
राज्यँद, जे नर क्यउँ रहइ, माल पराया खाइ॥
फौज घटा, खग दाँमणी, बूँद लगइ सर जेम।
पावस पिउ विण वल्लहा, कहि जीवीजइ केम॥
नदियाँ, नाळा, नीझरण, पावस चढिया पूर।
करहउ कादिम तिलकस्यइ, पंथी पूगळ दूर॥
अति घण ऊनिमि आवियउ, झाझी रिठि झड़वाइ।
वग ही भला त बप्पड़ा, धरणि न मुक्कइ पाइ॥
पावस-मास प्रगट्टिउं, जगि आणंद विहाय।
बग ही भला जु बापड़ा, धरण न मेल्हइ पाय॥
जिण रुति बहु बादळ झरइ, नदियाँ नीर प्रवाह।
तिण रुति साहिब वल्लहा, मो किम रयण विहाय॥
च्यारइ पासइ घण घणउ, वीजलि खिवइ अगास।
हरियाली रुति तउ भली, घर संपति, पिउ पास॥
जिण दीहे पावस झरइ, बाबीहउ, कुरळाइ।
तिणि दिनकउ दुख वल्लहा, मइँ क्यउँ सहणउ जाइ॥
जिण दीहे पावस झरइ, समनेहाँ सुख होइ।
तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ॥
महि मोराँ मंडव करइ, मनमथ अंगि न माइ।
हूँ एकलड़ी किम रहउँ, मेह पधारउ माइ॥
मेहाँ बूठाँ अन बहळ, थळ ताढा जळ रेस।
करसणपाका, कण खिरा, तद कउ वलण करेस॥
जिण दाहे वण हर धरइ, नदी खळक्कइ नीर।
तिण दिन ठाकुर किम चलइ, धण किम बाँधइ धीर॥
जिण दीहे पावस झरइ, वाजइ ताढो वाय।
तिण रिति मेल्हे माळविण, प्री परदेस म जाय॥

काळी कंठळि बादळी, वरसि ज मेल्हइ वाउ।
प्री विण लागइ बूँदड़ी, जांणि कटारी घाउ॥

ऊँचउ मंदिर अति घणउ, आवि सुहावा कंत।
वीजळि लियइ झबूकड़ा, सिहराँ गळि लागंत॥

सावण आयउ साहिबा, पगइ विलंबी गार।
अच्छ विलंबी बेलड़याँ, नराँ विलंबी नार॥

पावस-मास प्रगट्टियउ, पगइ विलंबइ गारि।
धण की आही वीनती, पावस पंथ निवारि॥

आज धरा-दस ऊनम्यउ, काली घड़ सखराँह।
उवा धण देसी ओळंबा, कर कर लाँबी बाँह॥

आज धरा-दस ऊनम्यउ, महलाँ ऊपर मेह।
बाहर थाजइ ऊगरइ, भीगा माँझ घरेह॥

ढोला, रहिसि निवारियउ, मिलिसि दई कइ लेखि।
पूगळ हुइस ज प्राहुणउ, दसराहा लग देखि॥

दसराहा लग भी रह्यउ, मालवणीरी प्रीत।
वरिखा-रुति पाछी वळी, आवी सरद सुचीत॥

वयणे माळवणी-तणइ, रहियउ साल्हकुमार।
प्रेमइ बंध्यउ, प्री रहइ, जउ प्री चालणहार॥

माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हाँ सीख करेह।
ऊन्हाळउ, वरखा विन्हे, रहिया तुज्झ सनेह॥

सीयाळइ तउ सी पड़इ, ऊन्हाळइ लू वाइ।
वरसालइ भुइँ चीकणी, चालण रुत्ति न काइ॥

मालवणी, म्हे चालिस्याँ, म करि हमारा तात।
का हसि करि म्हाँ सीख दे, खड़िस्याँ मांझिन रात॥

जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर तुरी सहाइ।
तिणि रिति बूढ़ी ही झुरइ, तरुणी केम रहाइ॥

जिणि दीहे पाळउ पड़इ, टापर पड़ तुरियाँइ।
तियाँ दिहाँरी गोरड़ी, दिन दिन लाख लहाँइ॥

जिणि रिति मोती नीपजइ, सीप समंदाँ माहिं।
तिणि रिति ढोलउ ऊमह्यउ, इँम को माणस जाहि॥

जिणि दीहे तिल्ली त्रिड़इ, हिरणी झालइ गाभ।
ताँह दिहाँरी गोरड़ी, पड़तउ झालइ आभ॥

जिणि दीठे पाळउ पड़इ, माथउ त्रिड़इ तिलाँह ।
तिण दिन जाए प्राहुणउ, कळियळ कुरभड़ियाँह ।।
जिण रित नाग न नीसरइ, दाझइ वनखँड दाह ।
जिण रित मालवणी कहइ, कुँण परदेसाँ जाह ।।
दिन छोटा, मोटी रयण, थाडा नीर पवन्न ।
तिण रित नेह न छाडियइ, हे बालम वडमन्न ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, सही पड़ेसी सीह ।
वालँभ, घरि किमि छंडियइ, जाँ नित चंगा दीह ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, पड़सी वाहळियाँह ।
उर ओले प्रो राखियइ, मूँधा काहळियाँह ।।
उत्तर आज स बज्जियउ, सीय पड़ेसी पूर ।
दहिसी गात निरध्धणाँ, धण चंगी घर दूर ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, पल्लांणियाँ दरक्क ।
दहिसी गात कुँवारियाँ, थळ जाळी, बळि अक्क ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पड़ेसी थट्ट ।
सोहागिण घर आँगणइ, दोहागिणरइ घट्ट ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़िसी रीठ ।
दोहागिण-घट साँमुहउ, साहागिणरी पीठ ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ असेस ।
दहिसी गात जु विरहिणी, जाका प्री परदेस ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ तरंत ।
माळवणी इम वीनवइ, हूँ किम जीवूँ कंत ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पड़इ रवंद ।
का वासंदर सेवियइ, कइ तरुणी कइ मंद ।।
उत्तर आज स उत्तरउ, ऊकटिया सारेह ।
बेलाँ बेलाँ परहरइ, एकल्लाँ मारेह ।।
उत्तर आज स उत्तरइ, ऊपड़िया सी कोट ।
काय दहेसइ पोयणी, काय कुँवारा घोट ।।
उत्तर आज स वज्जियउ, ऊकठियइ केकाँण ।
कांमिण काँम-कमेड़ि ज्यउँ, हइ लागउ सींचाण ।।
उत्तर आज स उतरइ, वाजइ लहर असाधि ।
संजोगणी सोहामणइ, विजोगणी अँग दाधि ।।

उत्तरदी भुइँ ज्ञु उपड़इ, पाळउ, पवन घणाँह।
हरणाखी, इस नइ कहइ, साँम्हो साले जाह ॥
माह महारस समय सब, अति ऊलहइ अनंग।
मो मन लागो मारवण, देखल पूगळ द्रंग ॥
उत्तर आज न जाइयइ, जिहाँ स सीत अगाध।
ता भइ सूरिज डरपतउ, ताकि चलइ दखिणाध ॥
फागण मास सुहामणउ, फाग रमइ नव वेस।
मो मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस ॥
आवी सव रस आँमली, त्रिया करइ सिणगार।
जिका हिया न फाटही, दूर गया भरतार ॥
ढोलउ हल्लाणउ करइ, धण हल्लिवा न देह।
झबझब झूँबइ पागड़इ, डबडब नयण भरेह ॥
हल्लउँ हल्लउँ मत करउ, हियड़इ साल म देह।
जे साचे ई हल्लस्यउ, सूताँ पल्लाँणेह ॥
थाँ सूताँ म्हे चालिस्याँ, एह निचिंती होइ।
रइबारी, ढोलइ कहइ, करहउ आछउ कोइ ॥
ढोलइ चित्त विमासियउ, मारू देस अळग्ग।
आपण जाए जोइयउ, करहा हुंदउ वग्ग ॥
पलाणियउ उपवने मिलइ, घड़िए जोइण जाय।
रइबारी, ढोलउ कहइ, सो मो आवइ दाय ॥
दूजा दोवड़ - चोवड़ा, ऊँटकटाळउ - खाँण।
जिण मुखि नागरबेलियाँ, सो करहउ के काँण ॥
नागरबेली नित चरइ, पाँणी पीवइ गंग।
ढोला, रयबारी कहइ, करहउ एक सुचंग ॥
जिण मुख नागरबेलड़ी, करहउ एह सुरंग।
माँगळोर बाड़ी चरइ, पाणी पीवइ गंग ॥
किणि गळि घालूँ घूघरा, किण मुखि वाहूँ लज्ज।
कवण भलेरउ करहलउ मूँध मिलावइ अज्ज ॥
मो गळि घालउ घूघरा, मो मुखि वाहउ लज्ज।
हूँ ज भलेरउ करहलउ, मूँध मिलाऊँ अज्ज ॥
सुणि करहा, ढोलउ कहइ, साची आखे जोइ।
अग्गर जेहा झूँपड़ा, तउ आसंगे मोइ ॥

सुणि ढोला, करहउ कहइ, सांमि-तणउ मो काज ।
सरढी - पेट न लेटियइ, मूँघ न मेलूँ आज ।।

माळवणी मनि दूमणी, आवी वरग विमासि ।
रइबारी पूछी करी, आई करहा पासि ।।

माळवणी करहइ कन्हइ, ए बीनती करेह ।
साहिब मारू ऊमह्या, खोड़उ होइ रहेह ।।

खोड़उ हुँ तउ डांभिज्यउँ, बाँध्यउ भूख मरेसि ।
थे बिहुँ सजण रळि मिल्यउ, हूँ बिच दुक्ख सहेसि ।।

खोड़उ हउँ तउ डांभिज्यउँ, बँधियउ भुक्ख मरूँह ।
जाउँ ढोला-रइ सासरइ, सफळा मूँग चरूँह ।।

बाँधउँ बड़री छाँहड़ी, नीरूँ नागरवेल ।
डाँभ सँभाळूँ करहला, चोपड़िसूँ चंपेल ।।

रह रह, सुंदरि, माठ करि, हळफळ लग्गी काइ ।
डाँभ दिरावइ करहलउ, सेकंतां मरि जाइ ।।

करहा, तूँ मनि रूअड़उ, वेध्याँ करइ बिछोह ।
अजइ कुआरउ बप्पड़ा, नहीं ज कांमिण मोह ।।

अबही मेली हेकली, करही करइ कलाप ।
कहियउ लोपाँ सांमि-कउ, सुंदरि, लहाँ सराप ।।

सुंदरि, मो सारउ नहीं, कुँअर वहेसी मग्ग ।
साहिब चित्त उपाड़ियउ, जिम केकाँणाँ वग्ग ।।

करहा सुणि, सुंदरि कहइ, मिहर करउ मो आज ।
साहिब म्हारउ ऊमह्यउ, हिव सगळी तो लाज ।।

भाई कहि बतळावसूँ, नागरबेल निरेस ।
हउ हउ करहा, कुँवर-नइ, मत ले जाय विदेस ।।

करहा, माळवणी कहइ, खोड़उ होइ रहेस ।
जे ढोलउ राखण करइ, डाँभण तुज्झ न देस ।।

सुंदर, थाँके ही कहइ, खोड़उ होय रहेस ।
जउ ढोलउ डाँभण करइ, डाँभण मुज्झ न देस ।।

करहानूँ समझाइ कइ, घर आई बहु जाँण ।
करहउ साल्ह मँगावियउ, आणयउ मांडि पलाँण ।।

करहउ मन कूड़इ, थयउ राखे यूँ ही पग्ग ।
ढोलइ मन चिंता हुई, दीजइ केइक दग्ग ।।

रइबारी तेड़ावियउ, दाग दियउ दुइ च्यारि ।
करहइ तउ पग राखियउ, दूती मेल्हइ नारि ॥
राखउ करहउ डाँभस्यउँ, रे मूरखाँ अजाँण ।
नरवर-कउ जाँणइ नहीं, करहा-तणउ सँधाण ॥
साहिब, म्हाँका बापकइ, छइ करहाँकउ वग्ग ।
जइ करहउ खोड़उ हुवइ, गादह दीजइ दग्ग ॥
तब बोली चंपावती, साल्हकुँवररी मात ।
रे बाजारण, छोहरी, काँइ खेलाड़इ घाति ॥
गादह दाध्यउ दग्ग करि, सासू कहइ वचन्न ।
करहउ ए कूड़इ मनइ, खोड़उ करइ यतन्न ॥
करहउ कूड़इ मनि थकइ, पग राखीयउ जाँण ।
ऊकरड़ी डोका चुगइ, अपस डँभायउ आँण ॥
साइधर हल्लण साँभळइ, ऊभी आँगण छेह ।
काजळ जळ मेळा करी, नाँखी नाँख भरेह ॥
डूँगर - केरा वाहळा, ओछा - केरा नेह ।
वहता वहइ उतामळा, झटक दिखावइ छेह ॥
पिय खोटाँरा एहवा, जेहा काती मेह ।
आडंबर अति दाखवइ, आस न पूरइ तेह ॥
थे सिध्धावउ, सिध करउ, बहु-गुणवंता नाह ।
सा जीहा सतखंड हुइ, जेण कहीजइ जाह ॥
हिव माळवणी वीनवइ, हूँ प्रिय, दासी तोहि ।
हिव थे चढिस जु चालिया, सूती मेल्हे मोहि ॥
पनरह दिनहूँ जागती, प्रीसूँ प्रेम करंत ।
एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जांणि निचंत ॥
ढोलउ करहउ सज कियउ, कसबी घाति पलाँण ।
सोवन - वानी घूघरा, चालण - रइ परियाँण ॥
सगुणी-तणा संदेसड़ा, कही जु दीन्हा आणि ।
ससिवदनी-कइ कारणइ, हुई पलांणि पलांणि ॥
घाली टापर वाप मुखि, झेक्यउ राजदुआरि ।
करहइ किया टहूकड़ा, निद्रा जागी नारि ॥
सजि कसणा, करि लाज ग्रहि, चढियउ साल्ह कुमार ।
करह करंकउ श्रवण सुणि, निद्रा जागी नार ॥

ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणगार अपार।
आस्याँ तउ मिळस्याँ वळे, नरवर कोट जुहार।।

धावउ धावउ हे सखी, दो दाँवणि, को लाज।
साहिब म्हाँकउ चालियउ, जइ कउ राखइ आज।।

ढोलउ चाल्यउ हे सखी, वाज्या विरह-निसाँण।
हाथे चूड़ी खिस पड़ी, ढीला हुया सँधाण।।

सखि हे, राजिंद चालियउ, पल्लांणियाँ दमाज।
किहिं पुनवंती साँमुहउ, म्हाँ उपराठउ आज।।

सज्जण चाल्या हे सखी, पड़हउ वाज्यउ द्रंग।
काँही रळी-बधाँमणाँ, काँदी अँवळउ अंग।।

सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह-निसाँण।
पालंखी विसहर भई, मंदिर भयउ मसाँण।।

ढोलउ चाल्यउ हे सखी, बज्या दमाँमा-ढोल।
माळवणी तीने तज्या, काजळ, तिलक, तँबोळ।।

सज्जण चाल्या हे सखी, पाछे पीळी पज्ज।
नव पाड़ा नग्गर बसइ, मो मन सूँनउ अज्ज।।

सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दोड़ेह।
सायधण लाल कबाँण ज्यउँ, ऊभी कड़ मोड़ेह।।

सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारंग।
जिण वाटइ सज्जण गया, सा वाटड़ी सुरंग।।

सज्जण चाल्या हे सखी, नयणे कीयो सोग।
सिर साड़ी, गळि कंचुवउ, हुवउ निचोवण जोग।।

सज्जण चाल्या हे सखी, सूना करे अवास।
गळेय न पाणी ऊतरइ, हिये न मावइ सास।।

चाल, सखी, तिण मंदिरइँ, सज्जण रहियउ जैण।
कोइक मीठउ बोलड़इ, लागो होसइ तैंण।।

ढोल वळाव्यउ हे सखी, झीणी ऊडइ खेह।
हियड़उ बादळ छाइयउ, नयण टबूकइ मेह।।

ढोलइ चढि पड़ताळिया, डूँगर दीन्हा पूठि।
खोजे वावू हथ्थड़ा, धूड़ि भरेसी मूठि।।

साल्ह चलंतउ हे सखी, गउखे चढ़ि मइँ दीठ।
हियड़उ उवाँहीसूँ गयउ, नयण बहोड़्या नोठ।।

ढोलइ करह पलांणिया, सुँदरि सलूणी कज्ज।
प्री मारुवणी सामुहउ, म्हाँ उपराठउ अज्ज॥

सयणाँ, पाँखाँ प्रेम की, तइँ अब पहिरी तात।
नयण कुरंगउ ज्यँ बहइ, लगइ दीह नइँ रात॥

प्रिव माळवणी परहरे, हाल्यउ पुंगळ देस।
ढोला म्हाँ बिच मोकळा, वासा घणा वसेस॥

साल्ह चलंतइ परठिया, आँगण वीखड़ियाँह।
सो मइँ हियइ लगाड़ियाँ, भरिं भरि मूठड़ियाँह॥

साल्ह चलंतइ परठिया, आँगण वीखड़ियाँह।
कूवा-केरी कुहड़ि ज्यूँ, हियड़इ हुइ रहियाँह॥

ढोला, जाइ वळि आविज्यउ, आसा सहि फळियाँह।
सावण-केरी वीज ज्यउँ, झाबूकइ मिळियाँह॥

बीछुड़ताँ ई सज्जणाँ, राता किया रतन्न।
वाराँ विहुँ चिहुँ नांखिया, आँसू मोती व्रन्न॥

प्रीतम-हूती बाहिरी, कवड़ी ही न लहाँइ।
जब देखूँ घर-आँगणइ, लाखे मोल लहाँइ॥

सज्जणियाँ वउळाइ कइ, मंदिर बइठी • आइ।
मंदिर काळउ नाग जिउँ, हेलउ दे दे खाइ॥

सज्जणिया ववळाइ कइ, गउखे चढ़ी लहक्क।
भरिया नयण कटोर ज्यउँ, मुंधा हुई डहक्क॥

हइ रे जीव, निळज्ज तूँ, निकस्यू जात न तोहि।
प्रिय विछुड़त निकस्यउ नहीं, रह्यउ लजावण मोहि॥

सज्जण वल्ले, गुण रहे, गुण भी वल्लणहार।
सूकण लागी बेलड़ी, गया ज सींचणहार॥

खूँटइ जीण न मोजड़ी, कड़्याँ नहीं केकाँण।
साजनिया सालइ नहीं, सालइ आही ठाँण॥

सजण, गुणे समुद्द तूँ, तर तर थक्की तेण।
अवगुण एक न साँभरइ, रहूँ बिलंबी जेण॥

साई दे दे सजना, रातइ इंणि परि रूँन।
उरि ऊपरि आँर ढळइ, जांणि प्रवाळी चन॥

सोरठा

सूती पड़ी रणेहि, जोयइ दिसि जाताँ-तणी।
जागी हाथ मळेहि, बिलखी हूई, वल्लहा ॥
रूनी रड़ी चड़ेहि, जोई दिसि जाताँ-तणी।
ऊभी हाथ मळेहि, बिलखी हूई, वल्लहा ॥
गया गळंती राति, परजळती पाया नहीं।
से सज्जण परभाति, खड़हड़िया खुरसाँण ज्यूँ ॥

दोहा

बीछड़ताँ ही सज्जणा, क्याँही कहण न लध्ध।
तिण वेळाँ कँठ रोकियउ, जाँणक सिंघी खध्ध ॥
सज्जण ज्यूँ ज्यूँ संभरइ, देख्याँ आही ठाँण।
झुरि झुरि नइ पंजर हुई, समर समर सहिनाँण ॥
ए वाड़ी, ए बावड़ी, ए सर-केरी पाळ।
वै साजण, वै दोहड़ा, रही सँभाल सँभाळ ॥
छोटी वीख न आपड़ाँ, लाँबी लाज मरेहि।
सयण बटाऊ वालरे, लंबउ साद करेहि ॥
साद करे किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्के पाँव।
सयणे घाटा वउळिया, वइरि जु हूआ वाव ॥
बाबा, बाळूँ देसड़उ, जिहाँ डूँगर नहिं कोइ।
तिणि चढि मूकउँ धाहड़ी, हीयउ उरळउ होइ ॥
उर मेहाँ पवनाँह ज्यऊँ, करह उडंदउ जाइ।
पूगळ जाइ प्रगडउ करइ, करइ मारवणि दाइ ॥
भूली सारस - सद्दड़इ, जाणइ करहउ थाय।
धाई धाई थळ चढ़ी, पग्गे दाधी माय ॥
सारसड़ी मोती चुणइ, चुणइ त कुरळइ काँइ।
सगुण पियारा जउ मिलइ, मिलइ त बिछुड़इ काँइ ॥
थळ-मथ्थइ जळ-बाहिरी, काँइ लबूकी बूरि।
मीठा—बोला घण-सहा, सज्जण मूक्या दूरि ॥
थळ-मथ्थइ जळ बाहिरी, तूँ काँइ नीली जाळ।
कँइ तूँ सींची सज्जणे, कँइ बूठउ अग्गाळि ॥
ना हूँ सींची सज्जणे, ना बूठउ अग्गाळि।
तो ताळि ढोलउ बहि गयउ, करहउ वाँध्यउ डाळि ॥

ढोला, हूँ तुझ बाहिरी, झीलण गइय तळाइ ।
ऊ जळ काळा नाग जिउँ, लहिरी ले ले खाइ ।।
सुंदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर - पाळ ।
चंद मुळक्कयउ, जळ हँस्यउ, जळहर कंपी पाळ ।।
चंदा तो किण खंडियउ, मो खंडी किरतार ।
पूनिम पूरउ ऊगसी, आवंतइ अवतार ।।
चंपा - केरी पाँखड़ी, गूँथूँ नवसर हार ।
जउ गळ पहरूँ पीव बिन, तउ लागे अंगार ।।
सुणि सूड़ा, सुंदरि कहय, पंखी, पड़गन पाळि ।
प्रीतम पूगळ-पंथ-सिरि, किमि ही पाछउ वाळि ।।
सूवा एक संदेसड़उ, वार सरेसी तुझ्झ ।
प्रीतम वाँसइ जाइ नइँ, मुई सुणावे मुझ्झ ।।
ढोलउ चलताँ परिठव्यउ, अग्गणि मोजाँ सल्ल ।
ढोलउ गयउ न बाहुड़इ, सुया मनावण चल्ल ।।
चंदेरी बँदी बिची, सरवर - केरइ तीर ।
ढोलइ दाँतण फाड़ताँ, आइ पुहत्तउ कीर ।।
कहि सूवा, किम आवियउ, किहींक कारण कथ्थ ।
तूँ माळवणी मेल्हियउ, किनाँ अम्हीणइ सुथ्थ ।।
साल्ह कुँअर, सूड़उ कहइ, माळवणी मुख जोइ ।
प्राँण तजेसी पदमणी, लंछण देस्यइ लोइ ।।
प्रीतम वीछुड़ियाँ पछइ, मुई न कहिजइ काइ ।
चोली-केरे पाँन ज्यूँ, दिनदिन पीली थाइ ।।
बोलि न सक्कूँ वीहतउ, हेक ज वात हुई ।
राजि अपूठा वाहुड़उ, माळवणी मूई ।।
सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हाँकउ कह्यउ करे ज ।
नव मण चंदण, मण अगर, माळवणी दागे ज ।।
सूड़ा, सगुण ज पंखिया, म्हाँकउ कह्यउ करेह ।
साई देज्यो सजणाँ म्हाँ साम्हाँ जोएह ।।
थे सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ थाँकी आस ।
वीछुड़ताँ ही माणसाँ, मेळउ दियउ उल्हास ।।
थे सिध्धावउ सिध करउ, पूजउ थाँकी आस ।
मत वीसारउ मन-थकी, उवा छइ थाँकी दास ।।

ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पंछी, ग्रह वास।
उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी-कइ पास ॥

लाँबी काँब चटक्कड़ा, गय लंबावइ जाळ।
ढोलउ अजे न बाहुड़इ, प्रीतम मो मन साल ॥

रहि नीमाँणी, माठ करि, सयणाँ वयण न कथ्थ।
ज्याँ पग दीधा पागड़इ, वाग उवाँही हथ्थ ॥

प्यारा, पाखर पेम की, काँइ ज पहिरी अंगि।
वयण खटक्कइ वाण ज्यूँ, कोइ न लागइ अंगि ॥

साहिब, तुम्भ सनेहड़इ, प्रीति-तणी पति जाइ।
जळ खिण ही जाणइ नहीं, मच्छ मरइ खिणमाँइ ॥

बाँवळि काँइ न सिरिजियाँ, मारू मंभ थळाँह।
प्रीतम बाढ़त काँबड़ी, फळ सेवंत कराँह ॥

साँवळि काँइ न सिरजियाँ, अंबर लागि रहंत।
वाट चलंताँ साल्ह प्रिव, ऊपर छाँह करंत ॥

सोंगण काँइ न सिरजियाँ, प्रीतम हाथ करंत।
काठी साहँत मूठि-माँ, कोडी कासी संत ॥

हित विण प्यारा सज्जणाँ, छळ करि छेतरियाह।
पहिली लाड लडाइ कइ, पाछइ परहरियाह ॥

आवि विदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह।
मतवाळा रो वतक ज्यउँ, पिय नइँ परहरियाह ॥

आडा वनखँड दे गया, परबत दीन्हा पूठ।
हियड़ा ऊपर राखती, कदे न कहती ऊठ ॥

सज्जण अळगा ताँ लगइ, जाँ लग नयणे दिट्ठ।
जब नयणाँहूँ बीछुड़े, तब उर मंभ पइट्ठ ॥

सज्जण देसंतर हुवा, जे दीसंता नित्त।
नयणे तो वीसारिया, तूँ मत विसरे चित्त ॥

कुसळ विहावउ सज्जणाँ, पर मंडले थयाँह।
जउ बिह हिया न हारिस्यइ, वळे मिळेवउ त्याँह ॥

माळवणी इणि विधि घणउ विकळ विलपंति।
ढोलउ पूगळ पंथ सिरि, आणँद अधिक खड़ंति ॥

अति आणँद ऊमाहियउ, वहइ ज पूगळ वट्ट।
त्रीजइ पुहरि उलांघियउ, आडवळारउ घट्ट ॥

करहउ पांणि तिसाइयउ, आयउ पुहकर तीर।
ढोलइ ऊतर पाइयउ, निरमळ सरवर नीर।।

करहा, पाणी खंच पिउ, आसा घणा सहेसि।
छीलरियउ ढूकिसि नहीं, भरिया केथि लहेसि।।

देस विरंगउ ढोलणा, दुखी हुया इहाँ आइ।
मनगमता पाम्या नहीं, ऊँटकटाळा खाइ।।

करहा, नीरूँ जउ चरइ, कंटाळउ नइ फोग।
नागरवेलि किहाँ लहइ, थारा थोबड़ जोग।।

करहा, नीरूँ सोइ चर, वाट चलंतउ पूर।
द्राख विजउरा नीरती, सो धण रही स दूर।।

करहा, इण कुळिगाँमड़इ, किहाँ स नागरवेलि।
करि कइराँ ही पारणउ, अइ दिन यूँ ही ठेलि।।

सुणि ढोला, करहउ कहइ, मो मनि मोटी आस।
कइराँ कूँपळ नवि चरूँ, लंघण पड़इ पचास।।

करहा, देस सुहामणउ, जे मूँ सासरवाड़ि।
आँब सरीखउ आक गिणि, जाळि करीराँ भाड़ि।।

करहा लंब-कराड़िआ, बे-बे अंगुळ कन्न।
राति ज चीन्हो वेलड़ी, तिण लाखीणा पन्न।।

करहा, चरि चरि म चरि चरि चरि चरि मचरि मभूर।
जे वन कालिह विरोळियउ, ते वन मेल्हे दूर।।

ढोलइ करह विमासियउ, देखे वीस वसाळ।
ऊँचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ।।

उजळ-दंता घोटड़ा, करहइ चढ़ियउ जाहि।
तइँ घर मुंध कि नेहवी, जे कारणि सी खाहि।।

जइ रूँखाँ मारू हुई, छवडउ पड़ियउ तास।
तइ हुंती चन्दउ कियइ, लइ रचियउ आकास।।

ढोला, खील्यौरी कहइ, सुँणे कुढंगा वैण।
मारू म्हाँजी गोठणी, सैं मारूदा सैण।।

आडवळे आघोफरइ, एवड़ मांहि असन्न।
तिण अजाँण ढोलइ तणइ मूरख भागइ मन्न।।

क्रम-क्रम, ढोला, पंथ कर, ढाण म चूके ढाळ।
आ मारू बीजी महल, आखइ भूठ एवाळ।।

चारण एक ऊँमर तणउ, मिलियउ एह असन्न ।
ढोलउ जातउ देखि कइ, मूरख भागउ मन्न ॥
जिण धण कारण ऊमह्यउ, तिण धण संदावेस ।
तिण मारूरा तन खिस्या, पंडर हुवा ज केस ॥
ढोला, मोड़ो आवियउ, गइ बाळापण वेस ।
अब धण होई खोरड़ी, जाए कहा करेस ॥
ढोलइ मन चिंता हुई, चारण-वचन सुणेह ।
हिव आव्यउ पाछउ वळइ, करहा केम करेह ॥
करहा, कहि कासूँ करौं, जो ए हुई जकाह ।
नरवर - केरा माणसाँ, कासूँ कहिस्याँ जाह ॥
दुरजण-केरा बोलड़ा, मत पाँतरजउ कोय ।
अणहुंती हुंती कहइ, सकळी साच न होय ॥
ढोलउ म चलपत थयउ, ऊभउ साहइ लाज ।
साम्हउ वीसू आवियउ, आइ कियउ सुभराज ॥
वीसू सुणि, ढोलउ कहइ, एकइ कहियउ एम ।
मारवणी बूढ़ी हुई, कहि साँचो तूँ केम ॥
जे तइँ दीठी मारवी, कहि सहिनाँण प्रगट्ट ।
साँच कहे तूँ दाखवइ, वहाँ ज पूगळ-वट्ट ॥
दउढ वरसरी मारुवी, त्रिहुँ वरसांरिउ कंत ।
उणरउ जोवन बहि गयउ, तूँ किउँ जोवनवंत ॥
गति गंगा, मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ ।
महिलाँ सरहर-मारुई अवर न दूजी काइ ॥
नमणी, खमणी, वहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ ।
गोरी गंगा-नीर ज्यूँ, मन गरवी, तन अच्छ ॥
रूप अनूपम मारुवी, सुगुणी नयण सुचंग ।
सा धण इण परि राखिजइ, जिम सिव-मसतक गंग ॥
गति गयंद, जँघ केळिग्रभ, केहरि जिम कटि लंक ।
हीर डसण, विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयंक ॥
मारू-घूँघटि दिट्ठ मइँ, एता सहित पुणिंद ।
कीर, भमर, कोकिल, कमळ, चंद, मयंद, गयंद ॥
नमणी, खमणी, बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ ।
जे धण एही संपजइ, तउ जिम ठल्लउ जाइ ॥

मारू - देस उपन्नियाँ, ताँहका दंत सुफेत ।
कूँझ - बचाँ गोरंगियाँ, खंजर जेहा नेत ।।

खंजर नेत विसाल, गय चाही लागइ चक्ख ।
एकण साटइ मारुवी, देह एराकी लक्ख ।।

तीखा लोयण, कटि करल, उर रत्तड़ा बिबीह ।
ढोला, थाँकी मारुई जांणि विलूधउ सीह ।।

डींभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही वांणि ।
ढोला, एही मारुई, जेहा हंभ निवांणि ।।

मारू-लँक दुइ अंगुळाँ, वर नितंब उस मंस ।
मल्हपइ माँझ सहेलियाँ, माँन-सरोवर हंस ।।

चंपा-वरनी, नाक सळ, उर सुचंग, विचि हीण ।
मंदिर बोली मारुवी, जांणि भणक्की वीण ।।

आदीताहूँ ऊजळो, मारवणी - मुख - ब्रन्न ।
झीणा कप्पड़ पहिरणइ, जांणि झँखइ सोव्रन्न ।।

सोरठा

मारुवणी मुँह - वंन्न, आदित्ताहूँ उज्जळी ।
सोइ झाँखउ सोवंन्न, जो गळि पहिरउ रूपकुउ ।।

दोहा

भुमुहाँ ऊपरि सोहलो परिठिउ जांणि क चंग ।
ढोला, एही मारुवी, नव नेही, नव रंग ।।

मृगनयणी, मृगपति-मुखी, मृगमद तिलक निलाट ।
मृगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट ।।

पर-मन-रंजन कारणइ, भरम म दाखिस कोइ ।
जेही दीठी मारुवी, तेहा आखे मोइ ।।

थळ भूरा, वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ ।
गुणे सुगंधी मारवी, महकी सहु वणराइ ।।

लखण बतीसे मारुवी, निधि, चंद्रमा निलाट ।
काया कूँकूँ जेहवी, कटि केहरि सै घाट ।।

अहर, पयोहर, दुइ नयण, मीठा जेहा मक्ख ।
ढोला, एही मारुई, जाणे मीठी दक्ख ।।

अंगि अभोखण अच्छियउ, तन सोवन सगळाइ।
मारू अंबा-मउर जिम, कर लग्गइ कुँमळाइ॥
अहर अभोखण ढंकियउ, सो नयणे रँग लाय।
मारू पक्का अंब ज्यूँ, झरइ ज लग्गे वाय॥
जंघ सुपत्तळ, करि कुँअळ, झीणी लंब-प्रलंब।
ढोला, एही मारुई जांणि क कणयर-कंब॥
उरि गयवर, नइ पग भमर, हालंती गय हंझ।
मारू पारेवाह ज्यूँ, अंखी रत्ता मंझ॥
मारू मारइ पहियड़ा, जउ पहिरइ सोवन्न।
दंती, चूड़इ, मोतियाँ, त्रीयाँ हेक वरन्न॥
कसतूरी कड़ि केवड़ो मसकत जाय महक्क।
मारू दाड़म-फूल जिम, दिन दिन नवी डहक्क॥
ढोला, सायधण माँणने, झीणी पाँसळियाँह।
कइ लाभे हर पूजियाँ, हेमाळे गळियाँह॥
मारू सी देखी नहीं, अण मुख दोय नयणाँह।
थोड़ो सो भोळे पड़इ, दणयर उगहंताँह॥
चंदवदण, मृगलोयण, भीसुर ससदळ भाल।
नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभसुकमाळ॥
दंत जिसा दाड़म-कुळी, सीस फूल सिणगार।
काने कुंडळ भळहळइ, कंठ टँकावळ हार॥
बांहे सुंदरि बहरखा, चासू चुड़ स वचार।
मनुहरि कटि-थळ मेखळा, पग झांझर झणकार॥
बाँहड़िया रूँआळियाँ, धण बंके नयणेह।
जण-जण साथ म बोलही, मारू बहुत गुणेह॥
मारू-देस उपन्नियाँ, नड़ जिम नीसरियाँह।
साइ धण, ढोला, एहवी, सरि जिम पध्धरियाँह॥
मारू-देस उपन्नियाँ, सर ज्यऊँ पध्धरियाँह।
कड़ुआ बोल न जाणही, मीठा बोलणियाँह॥
देस सुहावउ, जळ सजळ, मीठा बोला लोइ।
मारू काँमण भुइँ दखिण, जइ हरि दियइ त होइ॥
गह छंडइ गहिलउ हुअउ, पूछइ वळि पूछंत।
मारू - तणइ संदेसड़इ, ढोलउ नहु धापंत॥

तेता मारू मांहि गुण, जेता तारा अम्भ।
उज्चळचित्ता साजणाँ, कहि क्यउँ दाखउँ सम्भ ।।

एकणि जीभ किसा कहूँ, मारू-रूप अपार।
जे हरि दियइ त पांमियइ, उदियइ इण संसार ।।

वीसू कहिया दूहड़ा, मारू रूप विचार।
ऊतर मुहर पसाउ करि, दीन्ही साल्हकुमार ।।

वीसू, सुणि, ढोलउ कहइ, हिव खड़ि पूगळ जात।
देह वधाई दिन थकइ, म्हे आएस्याँ रात ।।

दीह गयउ डर डंबरे, नीले नीभरणेहि।
काली - जाया करहला, बोल्यउ किसे गुणेहि ।।

सड़-सड़ वाहि म कंबडी, राँगाँ देह म चूरि।
बिहुँ दीपाँ बिचि मारूई, मो-थी केती दूरि ।।

करहा, तो बेसासड़उ, मो विण-सारया काज।
अंतरि जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ आज ।।

ढोला, वाहिम कंबड़ी, दसिए एकणि पूरि।
जे साजण वीहंगडे, वीहंगड़उ न दूरि ।।

विहाँगड़े ज उदाध्धयाँ, सर ज्यउँ, पंडुरियाँह।
कालर काभा कमळ ज्यउँ, ढळि-ढळि ढेर थियाह ।।

करहा काळी काळिया, भुइँ भारी, घर दूर।
हथड़ा काँइ न खंचिया, राह गिलंतइ सूर ।।

करहा, वामन रूप करि, चिहुँ चलणे पग पूरि।
तूँ थाकउ, हूँ ऊसनउ, भुइँ भारी, घर दूरि ।।

करहा, लंबी वीख भरि, पवनाँ ज्यूँ वहि जाह।
भंभ वळंतइ दीवळइ, धण जागंती जाँह ।।

करहा, काळी काळिया, चाली गइ किरणाँह।
संभ वळंतइ दीवळइ, धण जागंती जाँह ।।

सकती बांधे वीटुळी, ढीली मेल्हे लज्ज।
सरढी पेट न लौटियउ, मूँध न मेळउँ अज्ज ।।

जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात।
मारू सुहिणऊ लहि कह्यउ, सखियाँ सूँ परभात ।।

सुपनइ प्रीतम मुझ मिळया, हूँ लागी गळि रोइ।
डरपत पलक न खोलही, मतिहि विछोहउ होइ ।।

आज फरूकइ अंखियाँ, नाभि, भुजा, अहराँह ।
सही ज घोड़ा सजणाँ, साम्हाँ किया घराँह ।।

अहर फुरक्कइ, तन फुरइ, तन फुर नयँण फुरंत ।
नाभी-मंडळ सहु फुरइ, साँझइ नाह मिळंत ।।

आज उमाहल मो घणउ, ना जाणूँ किव केण ।
पुरुख परायउ वीर वड, अहर फुरक्कइ केण ।।

सहिए; साहिब आविस्यइ, मो मन हुई सुजाँण ।
आगम - बाधाऊ हुया, अंग - तणा अहिनाँण ।।

आंखि निमाँणी क्या करइ, कउवा लवइ निलज्ज ।
सउ जोइन साहिब बसइ, सो किम आवइ अज्ज ।।

काली-कंठळि वीजुळी नीची खिवइ निहल्ल ।
उर भेदंती सजणां, ऊचेड़ंती सल्ल ।।

सांझी बेळा सामहलि, कंठळि थई अगासि ।
ढोलह करह कँबाइयउ, आयउ पूगळ पासि ।।

ऊँडा पाणी कोहरइ, थल चढीजइ निट्ठ ।
मारवणी - कइ कारणइ, देस अदीठा दिट्ठ ।।

ऊँडा पाणा कोहरे, दीसइ तारा जेम ।
ऊसारंता थाकिस्यइ, कहउ, काढिष्यइ केम ।।

तुम्ह जावउ घर आपणइ, न्हाँरी केही तात ।
दीहे - दीह उसारिस्याँ, भरिस्याँ मांझिम रात ।।

एण समईयइ आवियउ, वीसू तिणहीं वार ।
पिंगळ - राजानूँ कहइ, आयउ साल्हकुमार ।।

राजा-राँणी हरखिया, हरख्यउ नगर अपार ।
साल्हकुँवर पध्यारिउ, हरखी मारू नार ।।

साहिब आया, हे सखी, कज्जा सहु सरियाँह ।
पूनिम-केरे चंद ज्यूँ, दिसि च्यारे फळियाँह ।।

सखिए; साहिब आविया, जाँहकी हूँती चाइ ।
हियड़उ हेमांगिर भयउ, तन-पंजरे न माइ ।।

संपहुता सजण मिल्या, हूँता मुझ हीयाह ।
आजूणइँ दिन ऊपरइ, बीजा वळि कीयाह ।।

आजूणउ धन दीहड़उ, साहिब-कउ मुख दिट्ठ ।
माथा भार उळाथियउ, आँख्याँ अमी पयट्ठ ।।

सखिए, साहिब आविया, मन चाहंदी मोइ ।
वाड़ी हुआ वधाँमणा, सजण मिळिया सोइ ।।
सखी, सु सजण आविया, हुंता मुझ्झ हियाह ।
सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ।।
सज्जण मिळिया सज्जणाँ, तन मन नयण ठरंत ।
अणपीयइ पाणग्ग ज्यूँ, नयणे छाक चचंत ।।
सखिए ऊगट मांजिणउ, खिजमति करइ अनंत ।
मारू-तन मंडप रच्यउ, मिलण सुहावा कंत ।।
मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूँ मल्हपंति ।
सखी सुरंगी साथ करि, गयगयणी गय गंति ।।
घम्मघमन्तइ घाघरइ, उलट्यउ जाँण गयंद ।
मारू चाली मंदिरे, भीणे बादळ चंद ।।
मारू चाली मंदिराँ, चन्दउ बादळ मांहि ।
जांणे गयँद उलट्टियउ, कज्जळ-वन महँ जाहि ।।
घम्म घमंतइ घूघरइ, पग सोनेरी पाळ ।
मारू चाली मंदिरे, जांणि छुटो छंछाळ ।।
बोली वीणा, हंस गत, पग वाजंती पाळ ।
रायजादी घर - अंगणइ, छुटे पटे छंछाळ ।।
सोई सज्जण आविया, जाँहकी जोती बाट ।
थाँभा नाचइ, घर हँसइ, खेलण लागी खाट ।।
सखि वउळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकंत ।
मुळकत ढोलउ चमकियउ, बीजळ खिवी क दंत ।।
ढोलइ जाँण्यउ बीजळी, मारू जाँण्यउ मेह ।
च्यारि आँख एकठि हुई, सयणे वध्यो सनेह ।।
ढोलउ मिळियउ मारवी, दे आलिंगण चित्त ।
कर ग्रह आँणी अंक-मइँ, सेज सुणेसी वत्त ।।
मारू वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास ।
पूनिम - केरे चंद ज्यूँ, मंदिर हुवउ उजास ।।
काया झबकइ कनक जिम, सुंदर, केहे सुक्ख ।
तेह सुरंगा जिम हुवइँ, जिण वेहा बहु दुक्ख ।।
मनि संकाणी मारुवी, खुणसउ राखइ कंत ।
हँसताँ पीसूँ वीनवइ, सांभळि, प्री, विरतंत ।।

पहुर हुवउ ज पधारियाँ, मो चाहंती चित्त ।
डेडरिया खिण-मइ हुवइ, घँण बूठइ सरजित्त ॥

पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ ।
रवि ऊगइ विहसइ कँमळ, खिण इक विमणउ थाइ ॥

ढोलउ मन आणंदियउ, चतुर तणे वचनेह ।
मारू - मुख सोरंभियउ, आवि भमर भणकेह ॥

कंठ विलग्गी मारवी, करि कंचूवा दूर ।
चकवी मनि आणँद हुवउ, किरण पसारया सूर ॥

आसालूँध उतारियउ, धण कुंचुवउ गळाँह ।
घूमइ पड़िया हंसड़ा, भूला माँनसराँह ॥

मन मिळिया, तन गड्डिया, दोहग दूरि गयाह ।
सज्जण पाणी-खीर ज्यूँ, खिल्लोखिल्ल थयाह ॥

पंचाइण नइ पाखरयउ, मइँगळ नइ मद कीध ।
मोहण वेली मारुई, कंत पेम - रस पीध ॥

ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ केळि ।
जाँणे चंदन - रूँखड़इ, विळगी नागर - वेळि ॥

लहरी सायर - संदियाँ, बूठउ - संदउ वाव ।
वीछुड़ियाँ साजण मिळइ, वळि किउँ ताढउ ताव ॥

हियमाँ करइ वधाँमणाँ, सही त सीधा काज ।
जे सुपनंतर दीखता, नयणे मिळिया आज ॥

जिणनूँ सुपनें देखती, प्रगट भए प्रिव आइ ।
डरती आँख न मूँदही, मत सुपनउ हुय जाइ ॥

आजे रळी - वधाँमणाँ, आजे नवला नेह ।
सखी, अम्हीणी गोठमइँ, दूधे वूठा मेह ॥

सजण मिल्या, मन ऊमग्यउ, अउगुण सहि गाळयाह ।
सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ॥

सेज रमंताँ मारुवी, खिण मेल्हणी म जाइ ।
जांणि क विकसी केतकी, भमर वयट्ठउ आइ ॥

जिम मधुकर नइ कमलणी, गंगासागर वेळ ।
लुबधा ढोलउ - मारुवी, काम - कतूहल - केळ ॥

धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि ।
मजीठाँ जिम रच्चणाँ, दई, सु सजण मेळि ॥

ज्यूँ सालूराँ सरवराँ, ज्यूँ धरतीसूँ मेह ।
चंपक - वरणउ वालहउ, चंदमुखीसूँ नेह ।।

चन्द्रायणा

बेऊँ चतुर सुजाँण पेम - रँग - रस पिया ।
वरखा-रुति घण वरख जाणि कु हरखिया ।।
भी सिणगार सँवारि क आई सेज परि ।
(परिहाँ) जाँणे अपछर इंद्र क बैठा आप घरि ।।
दोउ मयमंत सुजाँण सेज दिसि बाहुड़इ ।
जाँणे धरती - काज असप्पति आहुड़इ ।।
अहरे अहर लगाइ तने तन मेळिया ।
(परिहाँ) जांणि क गाँधी-हाट जुवांने भेळिया ।।

दोहा

मारवणी इम वीनवइ, धनि आजूणी राति ।
गाहा - गूढ़ा - गीत - गुण, कहि का नवली वाति ।।
गाहा - गीत - विनोद - रस, सगुणाँ दीह लियंति ।
कइ निद्रा, कइ कळह करि, मूरिख दीह गमंति ।।
विरह बियापी रयण भरि, प्रीतम विणु तन खीण ।
वीण अलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही वीण ।।
वीण अलापी देखि ससि, रयणी नाद सलीण ।
ससिहर-मृगरथ मोहियउ, तिण हसि मेल्ही वीण ।।
सुंदरि चोरे संग्रही, सब लीया सिणगार ।
नक-फूली लीधी नहीं, कहि सखि, कवण विचार ।।
अहर-रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि ब्रन्न ।
जाँणयउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न ।।
परदेसाँ प्री आवियउ, मोती आँण्या जेण ।
धण कर-कँवळाँ झालिया, हसि करि नाँख्या केण ।।
कर रत्ता मोती नूमळ, नयणे काजल-रेह ।
धण भूली गुंजाहळे, हसिकरि नाँख्या तेह ।।

गाहा

तरुणी पुणोवि गहियं परयच्चय भिंतरेण पिउ दिट्ठं ।
कारण कवण सयाणे दीपक्को धूणए सीसं ।।

दोहा

वालँभ, दीपक पवन-भय, अंचळ-सरण पयट्ठ।
कर - हीणउ धूणइ कमळ, जाँण पयोहर दिट्ठ ।।

गाहा

वनिता-पति विदेस गय, मंदिर-मझे अद्धरयणीए।
बाळा लिहइ भुयंगो, कहि सुंदरि, कवण चुज्जेण ।।

दोहा

सा बाळा प्री चिंतवइ, खिणखिण रयणि बिहाइ।
तिण हर-हार परट्ठव्यउ, ज्यूँ दीवळउ बुझाइ ।।
बहु दिवसे प्री आविवउ, सझिया त्री सिणगार।
निजरि दिखाई आदिरस, किम सिणगार उतार ।।
इन्द्राँ - वाहण - नासिका, तासु तणइ उणिहार।
तस भख हूवउ प्राहुणउ, तिणि सिणगार उतार ।।
ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रही रस लाइ।
चिहुँ पहुरे चटकउ कियउ, वैरणि गई बिहाइ ।।
पहिलइ पोहरे रैणकै, दिवला अम्बर डूल।
धण कसतूरी हुइ रही, प्रिव चंपारौ फूल ।।
दूजै पोहरे रयणकै, मिळियत गुप्फागुध्ध।
धण पाळी, पिव पाखर्यौ, विहूँ भला भड़ जुध्ध ।।
त्रीजै प्रहरै रैणकै, मिळिया तेहा-तेह।
धन नहिं धरती हुइ रही, कंत सुहावौ मेह ।।
चौथै प्रहरै रैणकै, कूकड़ मेल्ही राळि।
धण संभाळे कंचुवौ, प्री मूँछाँरा बाळि ।।
पँचमै प्रहरै दीहरै, सायधण दियै बुहारि।
रिमझिम रिमझिम हुई रही, हुइ धण-त्री जौहारि ।।
छट्ठै प्रहरैं दिवसकै, हुई ज जीमणवार ।।
मन चावळ, तन लापसी, नैंण ज घीकी धार ।।
सत्तम प्रहरैं दिवसकै, धण जु वाड़ियाँ जाइ।
आँणै द्राख-विजोरियाँ, धण छोलइ, प्रिउ खाइ ।।
आठम प्रहर संझा समै, धण ठव्वै सिणगार।
पान कजळ पाखर करै, फूलाँकौ गळि हार ।।

प्रहरै - प्रहर ज ऊतर्‌यु ँ, दिवला साख भरेह ।
धण जीती, प्रिव हारियउ, वेल्हा मिलण करेह ॥

म्हंने ढोंलो भूँबिया, लूँगे - लक्कड़ियेह ।
म्हांने प्रिउजी मारिया, चंपारै कळियेह ॥

म्हंने ढोलो भूंबिया, म्हाँनूँ आवी रीस ।
चोवा - केरै कूँपळै, ढोळी साहिब - सीस ॥

राति-दिवसि रंगइँ रमइ, विलसइ नवरस भोग ।
जोड़ी सारीखी जुड़ी, केसव - तणइ सँजोग ॥

पनरह दिन लग सासरइ, रहियउ साल्हकुमार ।
पूगळ भगताँ नव-नवी, कीधी हरख अपार ॥

सोवँन - जड़ित सिंगार बहु, मारुवणी मुकलाइ ।
गय, हैंवर, दासी बहुत, दीन्हीं पिंगळ-राइ ॥

साथे दीन्ही छोकरी, दीन्हो पिंगळ-राव ।
ढोलउ नरवरनूँ खड़इ, आणँद अधिक उछाव ॥

कबीर

साधो भजन भेद है न्यारा ।
कर माला मुद्रा के पहिरै चंदन घसे लिलारा ।
मूड़ मुड़ाये जटा रखाये अंग लगाये छारा ।
का पानी पाहन के पूजै कंद मूल फरहारा ।
कहा नेम तीरथ व्रत कीन्हें जो नहीं तत्त विचारा ।
का गोये का पढ़ि दिखलाये का भरमे संसारा ।
का संध्या तरपन के कीन्हें का षटकर्म अचारा ।
जैसे बधिक ओटु टाटी के हाथ लिये विष चारा ।
ज्यों बक ध्यान धरै घट भीतर अपने अंग विकारा ।
दै परचै स्वामी होई बैठे करै विषय व्यवहारा ।
ज्ञान ध्यान को मरम न जानै बाद करै निःकारा ।
फूके कान कुमति अपनी से बोझ लियो सिर भारा ।
बिन सतगुरु गुरु केतिक बहिगे लोग लहर की धारा ।
गहिर गंभीर पार नहिं पावै खंड अखंड से न्यारा ।
दृष्टि अपार चलन को सहजै करै भस्म कै जारा ।

निर्मल दृष्टि आतमा जाकी साहेब नाम अधारा।
कहत कबीर वही जन आवै तैं मैं तजे बिकारा।

× × ×

संतो, राह दोऊ हम दीठा।
हिन्दू तुरक हटा नहिं माने स्वाद सबन को मीठा।
हिन्दू बरत एकादसि साधै दूध सिंघाड़ा सेती।
अन को त्यागै मन नहिं हटकै पारन करै स गोती।
रोजा तुरक नमाज गुजारै बिसमिल बाँग पुकारै।
उनको भिस्त कहाँ तो होइहै सांझै मुरगी मारै।
हिन्दू दया मेहर को तुरकन दोनों घट सों त्यागी।
वे हलाल वे झटका मारैं आगि दुनों घर लागी।
हिन्दू तुरुक की एक राह है सतगुरु इहैं बताई।
कहहि कबीर सुनो हो संतों राम कहेउ खोदाई।

× × ×

बाबा अगम अगोचर कैसा।
ताते कहि समझाऊं ऐसा।

जो दीसै सो तो है नाहीं, है सो कहा न जाई।
सैना-बैना कहि समझाऊँ, गूँगे का गुर भाई।
दृष्टि न दीसै मुष्टि न आवै, बिनसै नाहिं नियारा।
ऐसा ज्ञान कथा गुरु मेरे, पंडित करै बिचारा।
बिन देखे परतीत न आवै, कहे न कोउ पतियाना।
समझा होइ सो सब है चीन्हो, अचरज होय अयाना।
कोई ध्यावै निराकार को, कोइ ध्यावै साकारा।
वह तो इन दोउन ते न्यारा, माने जानन हारा।
काजी कथै कतेव कुराना, पंडित वेद पुराना।
वह अच्छर तो लखो न जाई, माला लगै न काना।
नादी वादी पढ़ना गुनना, बहु चतुराई खीना।
कह कबीर सो परै न परलै, नाम भक्ति जिन चीना।

× × ×

माया महा ठगिनि हम जानी।
तिरगुन फाँस लिये कर डोलै बोलै मधुरी बानी।

केशव के कमला ह्वै बैठी शिव के भवन भवानी।
पंडा के मूरति ह्वै बैठी तीरथ में भई पानी।
योगी के योगिन ह्वै बैठी राजा के घर रानी।
काहू के हीरा ह्वै बैठी काहु के कौड़ी कानी।
भक्तन के भक्तिनि ह्वै बैठी ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहै कबीर सुनो हो संतो यह सब अकथ कहानी।

× × ×

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।
चंदन खाट कै बनल खटोलना तापर दुलहिन सूतल हो॥
उठो सखी मोर माँग सँवारो दुलहा मोसे रूसल हो॥
आये जमराज पलँग चढ़ि बैठे नैनल आँसू टूटल हो॥
चारि जने मिलि खाट उठाइन चहुँ दिसि धू धू ऊठल हो॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जग से नाता टूटल हो॥

× × ×

रमैया तोर दुलहिन लूटा बाजार।
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा तीन लोक मचा हाहाकार॥
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे नारद मुनि के परी पिछार।
स्त्रिगी की मिंगी करि डारी पारासर कै उदर बिदार॥
कनफूँका चिरकासी लूटे लूटे जोगेसर करत बिचार।
हम तो बचिगे साहब दया से शब्द डोर गहि उतरे पार॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो इस ठगनी से रहो हुसिआर।

× × ×

जब हम रहल रहा नहिं कोई। हमर माँह रहल सब कोई॥
कहहु सो राम कौन तोर सेवा। सो समुझाय कहो मोहिं देवा॥
फुर फुर कहो मारू सब कोई। झूठे झूठा संगति होई॥
आँधर कहै सबै हम देखा। तहँ दिठियार पैठि मुँह पेखा॥
एहि बिधि कहौं मानु सब कोई। जस मुख तस जो हृदया होई॥
कहत कबीर हंस मुकुताई। हमरे कहले छूटिहौ भाई॥
हम न मरैं मरिहैं संसारा। हमको मिला जिआवन-वारा।
अब ना मरी मोर मन माना। सोइ मुवा जिन राम न जाना।
साकत मरैं संत जन जीवै। भरि भरि राम रसायन पीवैं।
हरि मरिहैं तो हमहूँ मरिहैं। हरि न मरैं हम काहे को मरिहैं।
कह कबीर मन मनहिं मिलावा। अमर भए सुख सागर पावा।

× × ×

संतो देखउ जग बौराना।
साँच कहो तो मारन धावै झूठे जग पतियाना।
नेमी देखे धरमी देखे प्रात करहिं असनाना।
आतम मारि पखानहिं पूजैं उनमें कछू न ज्ञाना।
बहुतक देखे पीर औलिया पढ़ैं किताब कुराना।
कै मुरीद तदबीर बतावै उनमें उहै गिआना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे तीरथ गरब भुलाना।
माला पहिरे टोपी दीन्हें छाप तिलक अनुमाना।
साखी सबदै गावत भूले आतम खबरि न जाना।
कह हिन्दू मोहिं राम पियारा तुरक कहै रहिमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूए मरम न काहू जाना।
घर घर मंत्र जे देत फिरत हैं महिमा के अभिमाना।
गुरुवा सहित शिष्य सब बड़े अंतकाल पछिताना।
कहत कबीर सुनो हो संतो ई सब भरम भुलाना।
केतिक कहौं कहा नहि मानैं आपहिं आप समाना।

× × ×

मन फूला फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे।
माता कहै यह पुत्र हमारा बहिन कहै बिर मेरा।
भाई कहै यह भुजा हमारी नारि कहै नर मेरा ॥
पेट पकरि के माता रोवै बाँह पकरि के भाई।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै हंस अकेला जाई ॥
जब लगि माता जीवै रोवै बहिन रोवै दस मासा।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै फेर करै घर बासा ॥
चार गजी चरगजी मँगाया चढ़ा काठ की घोड़ी।
चारों कोने आग लगाया फूँक दियो जस होरी ॥
हाड़ जरै जस लाह कड़ी को केस जरै जस घासा।
सोना ऐसी काया जरि गई कोई न आयो पासा ॥
घर की तिरिया ढूँढन लागी ढूँढ़ि फिरी चहुँ देसा।
कहै कबीर सुनो भइ साधो छोड़ौ जग की आसा ॥

× × ×

आई गवनवाँ की बेला उमिरि अबहीं मोरी बारी ॥
साज समाज पिया लै आये और कहरिया चारी।

बम्हना बेदरदी अचरा पकरि कै जोरत गंठिया हमारी।
सखी सब गावत गारी ॥
बिधि गति बाम कछु समझ परत ना बैरी भई महतारी।
रोय रोय अँखियाँ मोर पोंछत घरवाँ से देत निकारी।
भई सब कौ हम भारी ॥
गवन कराय पिया लै चाले इत उत बाट निहारी।
छूटत गाँव नगर से नाता छूटै महल अटारी ॥
करम गति टरै न टारी ॥
नदिया किनारे बलम मोर रसिया दीन्ह घूँघट पट टारी।
थर थराय तन काँपन लागे काहू न देख हमारी।
पिया लै आये गोहारी ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो यह पद लेहु विचारी।
अब के गौना बहुरि नहि औना करिले भेंट अकवारी।
एक बेर मिलि ले प्यारी ॥

× × ×

राम के नाम ते पिंड ब्रह्मंड सब राम का नाम सुनि भरम मानी।
निरगुन निरंकार के पार परब्रह्म है तासु को नाम रंकार जानी ॥
बिष्णु पूजा करै ध्यान शंकर धरै
मनहि सुबिरंचि बहु बिबिध बानी।
कहै कब्बीर कोउ पार पावै नहीं
राम को नाम है अकह कहानी ॥

× × ×

राम का नाम संसार में सार है
राम का नाम है अमृत बानी।
राम के नाम ते कोटि पातक टरै
राम का नाम बिस्वास मानी ॥
राम का नाम लै साधु सुमिरन करै
राम का नाम लै भक्ति ठानी।
राम का नाम लै सूर सनमुख लरै
पैठि संग्राम में युद्ध ठानी ॥
राम का नाम लै नारि सत्ती भई
खेह बनि कंत सँग जरि उड़ानी।
राम का नाम लै तीर्थ सब भरमिया
करत अस्नान झक्कोर पानी ॥

राम का नाम लै मूर्तिपूजा करै
राम का नाम लै देत दानी।
राम का नाम लै बिप्र भिच्छुक बनै
राम का नाम दुर्लभ्भ जानी ॥
राम का नाम चौबेद का मूल है
निगम निच्चोर करतत्व छानी।
राम का नाम षट सासतर मथिये
चली षटदरसनों में कहानी ॥
राम का नाम अग्गाध लीला बड़ी
खोजत खोज नहिं हार मानी।
राम का नाम लै विष्णु सुमिरन करै
राम का नाम शिवजोग ध्यानी ॥
राम का नाम लै सिद्ध साधक बने
संभु सनकादि नारद गिआनी।
राम का नाम लै दृष्टि लइ रामचन्द
भये वासिष्ठ गुरु मंत्र दानी ॥
कहाँ लौं कहों अग्गाध लीला रची
राम का नाम काहू न जानी।
राम का नाम लै कृष्ण गीता कथी
बांधिया सेत तब मर्म जानी ॥
है परम जोति औ गुन निराकार है
तासु को नाम निरंकार मानी।
रूप बिन रेख बिन निगम अस्तुति करै
सत्त की राह अनकथ कहानी ॥
विष्णु सुमिरन करै जोग शिव जेहि धरै
भनै सब ब्रह्म वेदान्त गाया।
ब्रह्म सनकादि कोई पार पावै नहीं
तासु का नाम कह रामराया।
कहैं कब्बीर वह शख्श तहकीक कर
राम का नाम जो पृथी लाया ॥

× × ×

नाम अमल उतरै ना भाई।
और अमल छिन छिन चढ़ि उतरै नाम अमल दिन बढ़े सवाई ॥

देखत चढ़ै सुनत हिय लागै सुरत किये तन देत घुमाई।
पियत पियाला भये मतवाला पायो नाम मिटी दुचिताई॥
जो जन नाम अमल रस चाखा तर गइ गनिका सदन कसाई।
कह कबीर गूँगे गुड़ खाया बिन रसना का करै बड़ाई॥

× × ×

साधो शब्द साधना कीजै।
जासु शब्द ते प्रगट भए सब शब्द सोई गहि लीजै॥
शब्दहिं गुरू शब्द सुनि सिख भे शब्द सो बिरला बूझै।
साइ सिष्य और गुरू महातम जेहि अंतरगत सूझै॥
शब्दै वेद पुरान कहत है शब्दै सब ठहरावै।
शब्दै सुर मुनि संत कहत हैं शब्द भेद नहिं पावै॥
शब्दै सुनि सुनि भेख धरत हैं शब्द कहै अनुरागी।
षट दरशन सब शब्द कहत हैं शब्द कहै बैरागी॥
शब्दै माया जग उतपानी शब्दै केर पसारा।
कह कबीर जहँ शब्द होत है तवन भेद है न्यारा॥

× × ×

अवधू अंध कूप अँधियारा।
या घट भीतर सात समुन्दर याहि में नद्दी नारा।
या घट भीतर काशि द्वारिका याहि में ठाकुरद्वारा॥
या घट भीतर चंद सूर है याहि में नौ लख तारा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो याहि में सत करतारा॥

× × ×

साधो एक आपु जगमाही।
दूजा करम भरम है किरतिम ज्यों दरपन में छाहीं।
जल तरंग जिमि जल ते उपजै फिर जल माहिं रहाई॥
काया झाईं पाँच तत्त की बिनसे कहाँ समाई॥
या बिधि सदा देह गति सबकी या बिधि मनहिं बिचारो।
आया होय न्याव करि न्यारो परम तत्व निरवारो॥
सहजै रहै समाय सहज में ना कहुँ आया न जावै।
धरै न ध्यान करै नहिं जप तप राम रहीम न गावै।
तीरथ बरत सकल परित्यागै सुन्न डोर नहि लावै॥
यह धोखा जब समुझि परै तब पूजै काहि पुजावै।
जोग जुगत में भरम न छूटै जब लग आप न सूझै।
कह कबीर सोइ सतगुरु पूरा जो कोइ समुझै बूझै॥

× × ×

साधो सहजै काया सोधो।
करता आपु आप में करता लख मन को परमोधो॥
जैसे बट का बीज ताहि मैं पत्र फूल फल छाया।
काया मद्धे बुन्द बिराजै बुन्दै मद्धे काया॥
अग्नि पवन पानी पिरथी नभ ता बिन मेला नाहीं।
काजी पंडित करो निबेरा काके माहिं न सांई॥
साँचे नाम अगम की आसा है वाही में साँचा।
करता बीज लिये है खेतै त्रिगुन तीन तत पाँचा॥
जल भरि कुंभ जलै बिच धरिया बाहर भीतर सोई।
उनको नाम कहन को नाँही दूजा धोखा होई॥
कठिन पंथ सतगुरु को मिलना खोजत खोजत पाया।
इक लग खोज मिटी जब दुबिधा ना कहुँ गया न आया॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो सत्त शब्द निज सारा।
आपा मद्धे आपै बोलै आपै सिरजनहारा॥

× × ×

मन तू मानत क्यों न मना रे।
कौन कहन को कौन सुनन को दूजा कौन जना रे॥
दरपन में प्रतिबिंब जो भासे आप चहूँ दिसि सोई।
दुबिधा मिटै एक जब होवै तौ लख पावै कोई॥
जैसे जल ते हेम बनत है हेम धूप जल होई।
तैसे या तत वाहू तत सों फिर यह अरु वह सोई॥
जो समझै तो खरी कहन है ना समझै तो खोटी।
कहै कबीर दोऊ पख त्यागै ताकी मति है मोटी॥

× × ×

ना मैं धरमी नाहिं अधरमो ना मैं जती न कामी हो।
ना मैं कहता ना मैं सुनता ना मैं सेवक स्वामी हो॥
ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता ना निरबंध सरबंगी हो।
ना काहू से न्यारा हुआ ना काहू को संगी हो॥
ना हम नरक लोक को जाते ना हम सरग सिधारे हो।
सब ही कर्म हमारा कीया हम कर्म्मन ते न्यारे हो॥
या मत को कोइ बिरला बूझै सो सतगुरु हो बैठे हो।
मत कबीर काहू को थापे मत काहू को मेटे हो॥

× × ×

अपनपो आप ही बिसरो ।
जैसे सोनहा काँच मँदिर में भरमत भूँकि मरो ।
ज्यों केहरि बपु निरखि कूप जल प्रतिमा देखि परो ।
ऐसेहि मदगज फटिक शिला पर दसननि आनि अरो ।
मरकट मुठी स्वाद ना बिसरे घर घर नटत फिरो ।
कह कबीर ललनी के सुवना तोहि कौने पकरो ॥

× × ×

ऐसो भरम बिगुरचन भारी ।
बेद किताब दीन औ दोजख को पुरुषा को नारी ॥
माटी के घर साज बनाया नादे बिंदु समाना ।
घट बिनसे क्या नाम धरहुगे अहमक खोज भुलाना ॥
एकै हाड़ त्वचा मल मूत्रा रुधिर गुदा एक मुद्रा ।
एक बिंदु ते सृष्टि रच्यो है को ब्राह्मण को शुद्रा ॥
रजगुण ब्रह्म तमोगुण शंकर सतोगुणी हरि सोई ।
कहै कबीर राम रमि रहिया हिंदू तुरुक न कोई ॥

× × ×

तोको पीव मिलैंगे घूँघट को पट खोल रे ।
घट घट मैं वह साँई रमता कटुक बचन मत बोल रे ॥
धन जोबन को गरब न कीजै झूठा पँचरँग चोल रे ।
सुन्न मइल में दियना बारि ले आसा सों मत डोल रे ॥
जाग जुगत सों रंग महल में पिय पायो अनमोल रे ।
कहैं कबीर अनन्द भयो है बाजत अनहद ढोल रे ॥

× × ×

पायो सतनाम गरै के हरवा ।
साँकर खटोलना रहनि हमारी दुबरे दुबरे पाँच कँहरवा ।
ताला कुंजी हमें गुरु दीन्ही जब चाहौं तब खोलौं किवरवा ॥
प्रेम प्रीति की चुनरी हमारी जब चाहौं तब नाचौं सहरवा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो बहुर न ऐबै एही नगरवा ॥

× × ×

मिलना कठिन है, कैसे मिलौंगो पिय जाय ।
समुझि सोच पग धरौं जतन से बार बार डिग जाय ॥
ऊँची गैल राह रपटीली पाँव नहीं ठहराय ।
लोक-लाज कुल की मरजादा देखत मन सकुचाय ।
नैहर बास बसा पीहर में लाज तजी नहिं जाय ।

अधर भूमि जहँ महल पिया का हम पै चढ़ो न जाय ।।
धन भई बारी पुरुख भये भोला सुरत झकोरा खाय ।
दूती सतगुरु मिलै बीच में दीन्हों भेद बताय ।
साहब कबिरा पिया सों भैंट्यो सीतल कंठ लगाय ।।

× × ×

दुलहिन गावो मंगलचार ।
हमरे घर आये राम भतार ।
तन रति कर मैं मन रति करिहौं पाँचों तत्व बराती ।
रामदेव मोहिं ब्याहन आए मैं जोबन मदमाती ।
सरिर सरोवर वेदी करिहौं ब्रह्मा वेद उचारा ।
रामदेव सँग भाँवर लैहौं धन धन भाग हमारा ।
सुर तैतीसो कौतुक आए मुनिवर सहस अठासी ।
कह कबीर मोहिं ब्याहि चले हैं पुरुष एक अबिनासी ।।

× × ×

साँईं के सँग सासुर आई ।
संग न सूती स्वाद न जानी जोबन गो सपने की नाँईं ।
जना चारि मिलि लगन सोधाई जना पाँच मिलि मंडप छाई ।
सखी सहेली मंगल गावैं दुख सुख माथे हरदि चढ़ाई ।।
माना रूप परी मन भाँवरि गाँठी जोरि भई पति आई ।
अरघ देइ देइ चली सुवासिनी चौकहिं राँड़ भई सँग साईं ।
भयो बियाह चली बिन दूलह बाट जान समधी समुझाई ।
कहै कबीर हम गौने जैबै तरब कंत ले तूर बजाई ।।

× × ×

बालम आओ हमारे गेह रे ।
तुम बिन दुखिया देह रे ।।
सब कोइ कहै तुमारी नारी मोको यह संदेह रे ।
एकमेक है सेज न सोवै तब लग कैसे नेह रे ।।
अन्न न भावे नींद न आवे गृह बन धरे न धीर रे ।
ज्यों कामी को कामिनि प्यारी ज्यों प्यासे को नीर रे ।।
है कोइ ऐसा पर-उपकारी पिय से कहै सुनाय रे ।
अब तो बेहाल कबीर भए हैं बिन देखे जिउ जाय रे ।।

× × ×

सतगुरु हो महाराज, मोपै साईं रँग डारा ।
शब्द की चोट लगी मेरे मन में बेध गया तन सारा ।।

औषध मूल कछू नहिं लागे क्या करे बैद बिचारा।
सुर नर मुनि जन पीर औलिया कोइ न पावै पारा।
साहब कबिर सर्व रंग रँगिया सब रंग से रंग न्यारा॥

× × ×

कैसे दिन कटिहै जतन बताये जइयो।
एहि पार गंगा वोही पार जमुना बिचवाँ मँड़इया हमकाँ छवाये जइयो।
अँचरा फारि के कागद बनाइन अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो बहियाँ पकरि के रहिया बताये जइयो॥

× × ×

तलफै बिन बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया तलफ तलफ के भोर किया॥
तन मन मोर रहँठ अस डोलै सून सेज पर जनम छिया।
नैन थकित भए पंथ न सूझै साँई बेदरदी सुध न लिया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरो पीर दुख जोर किया॥

× × ×

डर लागै हाँसी आवे है अजब जमाना आया रे।
धन दौलत ले माल खजाना बेस्या नाच नचाया रे॥
मुट्ठी अन्न साध कोई माँगै कहैं नाज नहिं आया रे।
कथा होय तहँ स्त्रोता सोवैं वक्ता मूँड़ पचाया रे॥
होय जहाँ कहिं स्वाँग तमासा तनिक न नींद सताया रे।
भंग तमाखू सुलफा गाँजा सूखा खूब उड़ाया रे।
गुरु चरनामृत नेम न धारै, मधुवा चाखन आया रे।
उलटी चलन चली दुनियाँ में, तातें जिय घबराया रे।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, फिर पाछे पछताया रे॥

× × ×

मैं केहि समझावों यह जग अंधा।
इक दुइ होय उन्हें समझावों, सब ही भुलाना पेट के धंधा॥
पानी कै घोड़ा पवन असवरवा, ढरकि परै जस ओस कै बुन्दा।
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा, खेवनहारा पड़िगा फन्दा।
घर की वस्तु निकट नहि आवत, दियना बारिके ढूँढत अंधा।
लागी आग सकल बन जरिगा, बिन गुर ज्ञान भटकिगा बन्दा।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इक दिन जाय लँगोटी झार बन्दा॥

× × ×

चली है कुलबोरनी गंगा नहाय ।
सतुवा कराइन बहुरी भुँजाइन घूँघट ओटे मसकत जाय ।।
गठरी बाँधिन मोटरी बांधिन, खसम के मूड़े दिहिन धराय।
बिछुवा पहिरिन औंठा पहिरिन, लात खसम के मारिन जाय।
गंगा न्हाइन जमुना न्हाइन, नौ मन मैल हैं लिहिन चढ़ाय ।।
पाँच पचीस कै धक्का खाइन, घरहुँ की पूँजी आईं गँवाय।
कहत कबीर हेत करु गुरु सौं नहिं तोर मुकती जाइ नसाय ।।

× × ×

पंडित बाद बदौ सो झूठा।
राम के कहे जगत गति पावै खाँड़ कहे मुख मीठा ।।
पावक कहे पाँव जो दाहै जल कहे तृखा बुझाई।
भोजन कहे भूख जो भागै तो दुनिया तरि जाई ।।
नर के संग सुवा हरि बोलै, हरि प्रताप नहिं जानै।
जो कबहूँ उड़ि जाय जंगल को तौ हरि सुरति न आनै ।।
बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिये का होई।
धन के कहे धनिक जो होतो निरधन रहत न कोई ।।
साँची प्रीति विषय माया सों हरि भगतन की हाँसी।
कह कबीर एक राम भजे बिन बांधे जमपुर जासी ।।

× × ×

पंडित देखा मन मों जानी ।
कहु धौं छूत कहाँ ते उपजी तबहिं छूत तुम मानी ।।
नादरु बिंद रुधिर एक संगै घटही में घट सज्जै।
अष्ट कमल को पुहुमी आई कहँ यह छूत उपज्जै ।।
लख चौरासी बहुत बासना सो सब सरि भो माटी।
एकै पाट सकल बैठारे सींचि लेत धौं काटी ।।
छूतहि जेवन छूतहि अचवन छूतहि जग उपजाया।
कह कबीर ते छूत बिबर्जित जाके संग न माया ।।

× × ×

पंडित देखो हृदय बिचारी कौन पुरुष को नारी!
सहज समाना घट घट बोलै वाको चरित अनूपा।
वाको नाम कहा कहि लीजै ना ओहि बरन न रूपा ।।
तैं मैं काह करे नर बौरे क्या तेरा क्या मेरा।
राम खोदाय शक्ति शिव एकै कहुवौं काहि निबेरा ।।

बेद पुरान कुरान कितेबा नाना भाँति बखानी।
हिंदू तुरुक जैन औ जोगी एकल काहु न जानी॥
छ दरशन में जो परवाना तासु नाम मनमाना॥
कह कबीर हमहीं हैं बौरे ई सब खलक सयाना॥

× × ×

नैनन आगे ख्याल घनेरा।
अरध उरध बिच लगन लगी है क्या संध्या रैन सबेरा।
जेहि कारन जग भरमत डोलैं सौ साहब घट लिया बसेरा॥
पूरि रह्यो असमान धरनि में जित देखो तित साहब मेरा।
तसबी एक दिया मेरे साहब कह कबीर दिलही बिच फेरा॥

× × ×

जागु रे जिव जागु रे अब क्या सोवै जिय जागु रे।
चोरन को डर बहुत रहत है उठि उठि पहिरे लागु रे॥
ररो खोलि ममो करि भीतर ज्ञान रतन करि जागु रे।
ऐसे जो अजरायल मारै मस्तक आवै भागु रे।
ऐसी जागनि जो कोइ जागै तो हरि देह सोहागु रे।
कह कबीर जागोई चहिए क्या गिरही बैरागु रे॥

× × ×

फिरहु का फूले फूले फूले।
जो दस मास उरध मुख भूले सो दिन काहें भूले।
ज्यों माखी स्वादै लहि बिहरै सोचि सोचि धन कीन्हा।
त्यौंही पीछे लेहु लेहु करि भूत रहनि कुछ दीन्हा।
देहरीं लौं वर नारि संग है आगे संग सहेला।
मृतक थान सँग दियो खटोला फिरि पुनि हंस अकेला।
जारे देह भसम ह्वै जाई गाड़े माटी खाई।
कांचे कुंभ उदक ज्यों भरिया तन की इहै बड़ाई।
राम न रमसि मोह में माते परस्यो काल बस कूवा।
कह कबीर नर आप बँधायो ज्यों नलिनी भ्रम सूवा।

× × ×

अल्लह राम जीव तेरी नाईं,
जन पर मेहर करहु तुम साईं।
क्या मूँड़ो भीमहिं सिर नाए क्या जल देह नहाए।
खून करे मसकीन कहावै गुन को रहै छिपाए।

क्या भो उज्जू मज्जन कीने क्या मसजिद सिर नाए।
हृदये कपट नेवाज गुजारे का भो मक्का जाए।
हिन्दू एकादशि चौबिस रोजा मुसलिम तीस बनाए।
बारह मास कहो क्यों टारो ये केहि माहँ समाए।
पूरब दिसि में हरि को बासा पच्छिल अलह मुकामा।
दिल में खोज दिले में देखो यहै करीमा रामा।
जो खोदाय मसजिद में बसतु है और मुलुक केहि केरा।
तीरथ मूरत राम निवासी दुइ महँ किनहुँ न हेरा।
बेद किताब कीन किन झूठा झूठा जो न बिचारै।
सब घट माहिं एक करि लेखै भै दूजा करि मारै।
जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा।
कबिर पोंगड़ा अलह राम का सो गुरु पीर हमारा।

× × ×

बहुर नहिं आवना या देस।
जो जो गए बहुर नहिं आए, पठवत नाहिं सँदेस॥
सुर नर मुनि औ पीर औलिया देवी देव गनेस।
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं ब्रह्मा विष्णु महेस॥
जोगी जंगम और सन्यासी दीगंबर दरवेस।
चुंडित मुंडित पंडित लोई सरग रसातल सेस॥
ज्ञानी गुनी चतुर औ कविता राजा रंक नरेस।
कोइ रहीम कोइ राम बखानै कोइ कहै आदेस।
नाना भेख बनाय सबै मिलि ढूँढि फिरे चहुँदेस।
कहैं कबीर अंत ना पैहो बिन सतगुरु उपदेस॥

× × ×

वा दिन की कछु सुध कर मन माँ।
जा दिन लै चलु लै चलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई॥
तात मात सुत नारी रोई, माटी के संग दियो समोई।
सो माटी काटेगी तन माँ।
उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी बीबी किसकी बाँदी।
किसका सोना किसकी चाँदी, जा दिन जम ले चलिहै बाँधी॥
डेरा जाय परै वहि बन माँ।
टाँड़ा तुमने लादा भारी, बनिज किया पूरा ब्योपारी।
जूआ खेला पूँजी हारी, अब चलने की भई तयारी॥
हित चित मात तुम लाओ धन माँ।

जा कोइ गुरु से नेह लगाई। बहुत भाँति सोई सुख पाई।
माटी में काया मिलि जाई। कह कबीर आगे गोहराई।
साँच नाम साहेब को सँग माँ॥

× × ×

ना जाने तेरा साहेब कैसा।
महजिद भीतर मुल्ला पुकारै क्या साहेब तेरा बहिरा है।
चिउँटी के पग नेवर बाजै सो भी साहब सुनता है॥
पंडित होय के आसन मारै लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी सो भी साहब लखता है॥
ऊँचा नीचा महल बनाया गहरी नेव जमाता है।
चलने का मनसूबा नाहीं रहने को मन करता है॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी गाड़ि जमीं में धरता है।
जेहि लहना है सो लै जैहे पापी बहि बहि मरता है॥
सतवंती को गजी मिलै नहिं बेश्या पहिरे खासा है।
जेहि घर साधू भीख न पावै भँडुवा खात बतासा है॥
हीरा पाय परख नहिं जानै कौड़ी परखन करता है।
कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसे को तैसा है॥

× × ×

मुखड़ा क्या देखै दरपन में, तेरे दया धरम नहिं मन में।
आम की डार कोइलिया बोलै सुवना बोलै बन में॥
घरबारी तो घर में राजी फक्कड़ राजी बन में।
ऐंठी धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफन में॥
गली गली की सखी रिझाईं दाग लगाया तन में।
पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहै छन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो वे क्या चढ़िहैं रन में॥

× × ×

मोरे जियरा बड़ा अँदेसवा, मुसाफिर जैहो कौनी ओर।
मोह का सहर कहर नर नारी दुइ फाटक घन घोर॥
कुमती नायक फाटक रोकै, परिहो कठिन झँझोर।
संसय नदी अगाड़ी बहती बिषम धार जल जोर॥
क्या मनुवाँ तू गाफिल सोवै, इहाँ मोर और तोर।
निसि दिन प्रीति करो साहब से, नाहिन कठिन कठोर।
काम दिवाना क्रोध है राजा बसै पचीसो चोर॥

सत्त पुरुख इक बसै पच्छिम दिसि तासों करो निहोर।
आवै दरद राह तोहि लावै तब पैहो निज ओर॥
उलटि पाछिलो पैंड़ा पकड़ो पसरा मना बटोर।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो तब पैहो निज ठोर॥

× × ×

नाम सुमिर, पछतायगा।
पापी जियरा लोभ करत है आज काल उठि जायगा।
लालच लागी जनम गँवाया माया भरम भुलायगा।
धन जोवन का गरब न कीजै कागद ज्यों गलि जायगा।
जब जम आइ केस गहि पटकै ता दिन कछु न बसायगा।
सुमिरन भजन दया नहिं कीन्हीं तो मुख चोटा खायगा।
धरमराय जब लेखा मांगे क्या मुख लेके जायगा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो साध संग तरि जायगा।

× × ×

जाके नाम न आवत हिए।
काह भए नर कासि बसे से का गंगा-जल पिए॥
काह भए नर जटा बढ़ाए का गुदरी के लिए।
काह भयो कंठी के बाँधे काह तिलक के दिये॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो नाहक • ऐसे जिए।

× × ×

सुमिरो सिरजनहार, मनुख तन पाय के।
काहे रहो अचेत कहा यह अवसर पैहो।
फिर नहिं मानुख जनम बहुरि पीछे पछतैहो॥
लख चौरासी जीव जन्तु में मानुख परम अनूप।
सो तन पाय न चेतहू कहा रंक का भूप॥
गरभ बास में रह्यो कह्यो मैं भजिहौं तोहीं।
निसि दिन सुमिरौं नाम कष्ट से काढ़ौ मोहीं॥
इक मन इक चित ह्वै रहों रहों नाम लव लाय।
पलक न तुमैं बिसारिहौं यह तन रहै कि जाय॥
इतना कियो करार तबै प्रभु बाहर कीना।
बिसर गयो वह ठाँव भयो माया आधीना॥
भूली बात उदर की यहाँ तो मत भइ आन।
बारह बरस ऐसही बीते डोलत फिरत अजान॥

बिखया पवन समान तबै ज्वानी मद्‌माते।
चलत निहारै छाँह तमक के बोलै बातें।।
चोवा चन्दन लाइ के पहिरे बसन बनाय।
गलियों में डोलत फिरै परतिय लख मुसुकाय।।
गा तरुनापा बीत बुढ़ाया आइ तुलाना।
कंपन लागे सीस चलत दोउ पाँव पिराना।।
नैन नासिका चूवन लागे करन सुनै नहिं बात।
कंठ माहिं कफ घेरि लियो है बिसर गए सब नात।।
मात पिता सुत नारि कहौ काके सँग लागी।
तन मन भजि लो नाम काम सब होयँ सुभागी।।
नहि तो काल गरासिहै परिहौ जम के जार।
बिन सतगुरु नहिं बाँचिहौ हिरदय करहु बिचार।।
सुफल होय यह देह नेह संतगुरु से कीजै।
मुक्ती मारग यही संत चरनन चित दीजै।।
नाम जपो निरभय रहो अंग न व्यापै पीर।
जरा मरन बहु संसय मेटे गावैं दास कबीर।।

× × ×

तोरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया का रे सोवै।
पाँच पचीस तीन हैं चोरवा, यह सब कीन्हा सोर।
जाग सबेरा बाट अनेरा, फिर नहिं लागे जोर।
भव सागर एक नदि बहत है, बिन उतरे जीव बोर।।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, जागत कीजै भोर।

× × ×

का सोवो सुमिरन की बेरिया।
जिन सिरजा तिन की सुधि नाहीं,
झकत फिरो झकझलनि झलरिया।
गुरु उपदेस संदेस कहत हैं,
भजन करो चढ़ि गगन अटरिया।
नित उठि पाँच पचिसकै झगरा,
ब्याकुल मोरी सुरति सुँदरिया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
भजन बिना तोरी सूनि नगरिया।।

× × ×

सुमिरन बिन गोता खाओगे।
मुट्ठी बाँधि गर्भ से आए हाथ पसारे जाओगे।
जैसे मोती झरत ओस के बेर भए झर जाओगे।
जैसे हाट लगावै हटवा सौदा बिन पछताओगे।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सौदा लेकर जाओगे॥

× × ×

अरे मन समझ के लादु लदनियाँ।
काहे क टट्टुवा काहे क पाखर काहे क भरी गौनियाँ।
मन कै टट्टुवा सुरति कै पाखर भर पुन पाप गौनियाँ॥
घर के लोग जगाती लागे छीन लेयँ करधनियाँ।
सौदा करु तो यहिं करु भाई आगे हाट न बनियाँ।
पानी पी तो यहीं पी भाई आगे देस निपनियाँ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सत्त नाम का बनियाँ॥

× × ×

दिवाने मन भजन बिना दुख पैहो।
पहिले जनम भूत का पैहो सात जनम पछितैहो।
काँटा पर कै पानी पैहो प्यासन ही मरि जैहो॥
दूजा जनम सुवा का पैहो बाग बसेरा लइहो।
टूटे पंख बाज मँड़राने अधफड़ प्रान गँवइहो॥
बाजीगर के बानर होइहौ लकड़िन नाच नचैहो।
उँच नीच से हाथ पसरिहो मांगे भीख न पैहो॥
तेली के घर बैला होइहो आंखिन ढाँप ढंपैहो।
कोस पचास घरै में चलिहो बाहर होन न पैहो॥
पँचवाँ जनम ऊँट के पैहो बिन तौले बोझ लदैहो।
बैठे से तो उठै न पैहो घुरच घुरच मरि जैहो॥
धोबी घर के गदहा होइहौ कटी घास ना पैहो।
लादी लादि आपु चढ़ि बैठे लै घाटे पहुँचैहो॥
पच्छी माँ तो कौवा होइहो करर करर गुहरैहो।
उड़ि के जाइ बैठि मैले थल गहिरे चोंच लगैहो।
सत्त नाम की टेर न करिहौ मन ही मन पछितैहो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो नरक निसानी पैहो॥

× × ×

साधो यह तन ठाठ तँबूरे का।
ऐंचत तार मरोरत खूँटी निकसत राग हजूरे का।

टूटे तार बिखरि गई खूँटी हो गया धूरम धूरे का ॥
या देही का गरब न कीजै उड़ि गया हंस तँबूरे का ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अगम पंथ कोइ सूरे का ।

× × ×

गगन घटा घहरानी,
साधौ गगन घटा घहरानी ।

पूरब दिसि से उठी बदरिया रिमझिम बरसत पानी ।
आपन आपन मेंड़ सम्हारो बह्यो जात यह पानी ॥
मन कै बैल सुरत हरवाहा जोत खेत निरबानी ।
दुबिधा दूब छोल करु बाहर बोव नाम की घानी ॥
जोग जुगुत करि करु रखवारी चरन जाय मृगधानी ।
बाली झार कूट घर लावै सोई कुसल किसानी ॥
पाँच सखी मिल कीन रसोइया एक से एक सयानी ।
दूनों थार बराबर परसे जेवै मुनि अरु ज्ञानी ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निरबानी ।
जो या पद को परिचै पावे ता को नाम बिज्ञानी ॥

× × ×

नैहर में दाग लगाय आई चुनरी ।
ऊ रँगरेजवा कै मरम न जानै नहिं मिलै धोबिया कवन करै उजरी ।
तन कै कूँड़ी ज्ञान कै सउँदन साबुन महँग बिकाय या नगरी ।
पहिरि ओढ़ि के चली ससुररिया गौवाँ के लोग कहैं बड़ी फुहरी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी ॥

× × ×

मोरी चुनरी में परि गयो दाग पिया ।
पाँच तत्त कै बनी चुनरिया सोरह सै बँद लागे जिया ।
यह चुनरी मोरे मैके ते आई ससुरे में मनुआ खोय दिया ॥
मलि मलि धोई दाग न छूटै ज्ञान को साबुन लाय पिया ।
कहत कबीर दाग तब छुटि है जब साहब अपनाय लिया ॥

× × ×

पिया ऊँची रे अटरिया, तोरी देखन चली ।
ऊँची अटरिया जरद किनरिया लगी नाम की डोरिया ।
चाँद सुरज सम दियना बरतु हैं ता बिच भूली डगरिया ॥
पाँच पचीस तीन घर बनिया मनुआँ है चौधरिया ।
मुंशी है कोतवाल ज्ञान को चहुँ दिस लगी बजरिया ॥

आठ मरातिब दस दरवाजा नौ में लगी किवरिया।
खिरकि बैठ गोरी चितवन लागी उपराँ झाँप झोंपरियाँ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो गुरु चरनन बलिहरिया।
साध संत मिलि सौदा करिहैं झींखै मुरुख अनरिया॥

× × ×

का लै जैबो ससुर घर ऐबो।
गाँव के लोग जब पूछन लगिहैं तब हम का रे बतैबो॥
खोल घुँघट जब देखन लगिहै तब हम बहूत लजैबो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो फिर सासुर नहिं पैबो॥

× × ×

जेहि कुल भगत भाग बड़ होई।
अबरन बरन न गनिय रंक धनि बिमल बास निज सोई॥
बाम्हन छत्री बैस सूद्र सब भगत समान न कोई।
धन वह गाँव ठाँव असथाना है पुनीत सँग लोई॥
होत पुनीत जपै सतनामा आपु तरे तारे कुल दोई।
जैसे पुरइन रह जल भीतर कह कबीर जग में जन सोई॥

× × ×

ये अँखियाँ अलसानी, पिय हो सेज चलो।
खंभा पकरि पतंग अस डोलै बोलै मधुरी वानी।
फूलन सेज बिछाइ जो राख्यो पिया बिना कुम्हलानी।
धीरे पाँव धरो पलँगा पर जागत ननद जिठानी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो लोक लाज बिछलानी॥

× × ×

आयो दिन गौने कै हो, मन होत हुलास।
पाँच भीट कै पोखरा हो, जामें दस द्वार।
पाँच सखी बैरिन भईं हो, कस उतरब पार।
छोट मोट डोलिया चन्दन कै हो, लागे चार कहार।
डोलिया उतारै बीच बनवाँ हो, जहँ कोइ न हमार।
पइयाँ तोरी लागो कहरवा हो, डोली धर छिन बार।
मिल लेउ सखिया सहेलर हो, मिलो कुल परिवार।
साहब कबीर गावैं निरगुन हो, साधो करि लो बिचार॥
नरम गरम सौदा करि लो हो, आगे हाट न बजार॥

× × ×

खेल ले नैहरवाँ दिन चारि।
पहिली पठौनी तीन जन आए नौवा बाम्हन बारि॥
बाबुल जी मै पैयाँ तोरी लागों अब की गवन दे टारे।
दुसरी पठानी आपै आए लेके डोलिया कहार॥
धरि बहियाँ डोलिया बैठारिन कोउ न लागै गोहार।
ले डोलिया जाइ बन उत्तारिन कोइ नहिं संगी हमार॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो इक घर हैं दस द्वार॥

× × ×

करो जतन सखी साँईं मिलन की।
गुड़िया गुड़वा सूप सुपेलिया, तज दे बुध लरिकैयाँ खेलन की॥
देवता पित्तर भुइयाँ भवानी, यह मारग चौरासी चलन की।
ऊँचा महल अजब रँग रँगला साँईं सेज वहाँ लागी फुलन की॥
तन मन धन सब अपरन कर वहाँ सुरत सम्हारु परु पैयाँ सजन की।
कह कबीर निरभय होय हंसा कुंजी बता देउँ ताला खुलन की॥

× × ×

साधो सो सतगुरु मोहिं भावै।
सत्त नाम का भर भर प्याला आप पिवे मोहि पिलावे॥
मेले जाय न महँत कहावै पूजा भेंट न लावै।
परदा दूरि करे आंखिन का निज दरसन दिखलावै॥
जाके दरसन साहब दरसैं अनहद शब्द सुनावै।
माया के सुख दुख कर जानै संग न मुखन चलावै॥
निसि दिन सत-संगति में राचै शब्द में सुरत समावै।
कह कबीर ताको भय नाहीं, निरभय पद परसावै॥

× × ×

अरे इन दोउन राह न पाई।
हिंदू अपनी करै बड़ाई गागर छुवन न देई।
वेश्या के पायन तर सोवै यह देखो हिंदुआई॥
मुसलमान के पीर औलिया मुरगी मुरगा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहैं घरहि में करैं सगाई।
बाहर से इक मुर्दा लाए धोय धाय चढ़वाई।
सब सखियाँ मिलि जेवन बैठी घर भर करैं बड़ाई॥
हिंदुन को हिन्दुआई देखी तुरकन की तुरकाई॥
कहै कबीर सुनो भाई साधौ कौन राह ह्वै जाई॥

× × ×

अवधू भजन भेद है न्यारा।
क्या गाए क्या लिखि बतलाए क्या भरमे संसारा।
क्या संध्या तरपन के कीन्हें जो नहिं तत्त बिचारा॥
मूँड़ मुँड़ाए जटा रखाए क्या तन लाए छारा।
क्या पूजा पाहन की कीन्हे क्या फल किए अहारा॥
बिन परचै साहब होइ बैठे करे बिषय ब्योपारा।
ज्ञान ध्यान का मरम न जाने बाद करै हंकारा॥
अगम अथाह महा अति गहिरा बीजन खेत निवारा।
महा सो ध्यान मगन है बैठे काट करम की छारा॥
जिनके सदा अहार अंतर में केवल तत्त बिचारा।
कहत कबीर सुनो हो गोरख तरैं सहित परिवारा॥

× × ×

मन न रंगाए रँगाए जोगी कपरा।
आसन मारि मंदिर में बैठे नाम छांड़ि पूजन लगै पथरा।
कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौलै दाड़ी बढ़ाय जोगी होइ गैलै बकरा।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौलै काल जराय जोगी बनि गैलै हिजरा।
मथवा मुँड़ाय जोगी कपड़ा रँगौलै गीता बाँच के होइ गैलै लबरा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जम दरवजवा बाँधल जैबे पकरा॥

× × ×

रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया बूँद पड़े घुल जाना है।
यह संसार काँट की वाड़ी उलझ पुलझ मरि जाना है॥
यह संसार झाड़ औ झाँखर आगि लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु नाम ठिकाना है॥

× × ×

जियरा जावगे हम जानी।
पाँच तत्त को बनो पींजरा जामें बस्तु बिरानी।
आवत जावत कोइ न देखो डूबि गयो बिन पानी॥
राजा जैहैं रानी जैहैं औ जैहैं अभिमानी।
जोग करंते जोगी जइहैं कथा सुनंते ज्ञानी॥
पाप पुन्न की हाट लगी है धरम दन्ड दरबानी।
पाँच सखी मिलि देखन आई एक से एक सयानी॥

चंदा जइहैं सुरजौ जइहैं जइहैं पवनो पानी।
कह कबीर इक भक्त न जइहैं जिनकी मति ठहरानी ॥

× × ×

सुगवा पिंजरवा छोरि भागा।
इस पिंजरे में दस दरवाजा दस दरवाजे किवरवा लागा ॥
अँखियन सेती नीर बहन लाग्यो अब कस नाहिं तू बोलत अभागा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो उड़िगो हंस टूटि गयो तागा ॥

× × ×

झीनी झीनी बीनी चदरिया।
काहे कै ताना काहे कै भरनी कौन तार से बीनी चदरिया।
इँगला पिंगला ताना भरनी सुषमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कँवल दल चरखा डोलै पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया ॥
साँई को सियत मास दस लागे ठोक ठोक के बीनी चदरिया।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़े ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया ॥

× × ×

तोर हीरा हेराइल बा कचरे में।
कोइ पूरब कोइ पच्छिम ढूंढ़े कोइ ढूंढ़े पानी पथरे में।
सुर नर मुनि अरु पीर औलिया सब भूलल बाड़े नखरे में ॥
साहब कबीर हिरा यह परखैं बाँध लिहलैं लँगोटी के अँचरे में ॥

× × ×

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौं पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय ॥

सतगुरु दीनदयाल है, दया करो मोहि आय।
कोटि जनम का पंथ था, पल में पहुँचा जाय ॥

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट ?
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ॥

सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बन राय।
सात समुँद की मसि करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय ॥

कबिरा ते नर अंध हैं, गुरू को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरू रूठे नहीं ठौर ॥

तीन लोक नौ खंड में, गुरु तैं बड़ा न कोइ।
करता करै न कर सके, गुरू करै सो होइ ॥

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय॥
सुमिरन सों मन लाइये, जैसे नाद कुरंग।
कह कबीर बिसरे नहीं, प्रान तजै तेहि संग॥
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥
कबिरा माला काठ की, बहुत जतन का फेर।
माला स्वाँस उसाँस की, जामें गाँठ न मेर॥
माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं।
मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरे, यह तो सुमिरन नाहिं॥
आज कहै कल भजूँगा, काल कहै फिर काल।
आज काल के करत ही, औसर जासी चाल॥
बाजीगर का बन्दरा, ऐसा जिउ मन साथ।
नाना नाच नचाय के, राखै अपने हाथ॥
बहुतक पीर कहावते, बहुत करत हैं भेस।
यह मन कहर खुदाय का, मारै सो दरवेस॥
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
परमातम को पाइये, मनही के परतीत॥
मन पाँचों के बस परा, मन के बस नहिं पाँच।
जित देखूँ तित दौं लगी, जित भागूँ तित आँच॥
गो-धन, गज धन, बाजि-धन, और रतन-धन-खान।
जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान॥
तेरा सांई तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि फिरि ढूँढै घास॥
यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिलैं, तौ भी सस्ता जान॥
बहे बहाये जात थे, लोक बेद के साथ।
पैंड़ा में सत गुरु मिले, दीपक दीन्हा हाथ॥
ऐसा कोई ना मिला, सत्त नाम का मीत।
तन मन सौंपे मिरग ज्यौं, सुनै वधिक का गीत॥
सतगुरु साँचा सूरमा, नख सिख मारा पूर।
बाहर घाव न दीसई, भीतर चकनाचूर॥

सुख के माथे सिलि परै, (जो) नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुक्ख की, पल पल नाम रटाय॥

लेने को सतनाम है, देने को अन दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान॥

सुमिरन की सुधि यों करै, ज्यों गागर पनिहार।
हालै डोलै सुरति में, कहै कबीर विचार॥

गगन मँडल के बीच में, जहाँ सोहंगम डोरि।
सबद अनाहद होत है, सुरत लगी तहँ मोरि॥

कबीर गर्ब न कीजिये, काल गहे कर केस।
ना जानौं कित मारि है, क्या घर क्या परदेस॥

हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब तन जरता देखि कर, भये कबीर उदास॥

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद॥

पानी केरा बुद बुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायगी, ज्यों तारा परभात॥

रात गँवाई सोय करि, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥

आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करै, चिड़िया चुग गई खेत॥

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पलमें परलै होयगी, बहुरि करैगा कब्ब॥

कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली, बहुरि न देखौ आय॥

पाँचो नौबत बाजती, होत छतीसों राग।
सो मन्दिर खाली पड़ा, बैठन लागे काग॥

कहा चुनावै मेड़ियाँ, लम्बी भीति उसारि।
घर तो साढ़े तीन हथ, घना तो पौने चारि॥

माटी कहै कुम्हार को, तू क्या रूंधे मोहिं।
इक दिन ऐसा होइगा, मैं रूँधूगी तोहिं॥

यह तन काँचा कुम्भ है, लिये फिरै था साथ।
टपका लागा फूटिया, कछु नहिं आया हाथ॥

आये हैं सो जाँयगे, राजा रंक फकीर।
एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बंधे जँजीर॥
आसपास जोधा खड़े, सभी बजावैं गाल।
मंझ महल से लै चला, ऐसा काल कराल॥
या दुनिया में आय के, छाड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना होय सो लेइ, ले उठी जात है पैंठ॥
कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय॥
ऐसी गति संसार की, ज्यों गाड़र की ठाट।
एक पड़ा जेहि गाड़ में, सबै जाहिं तेहि बाट॥
तू मत जानै बावरे, मेरा है सब कोय।
पिंड प्रान से बंधि रहा, सो अपना नहिं कोय॥
इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिं।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाहिं॥
नाम भजो तो अब भजो, बहुरि भजोगे कब्ब।
हरियर हरियर रूखड़े, ईंधन हो गये सब्ब॥
माली आवत देखि कै, कलियाँ करी पुकार।
फूली फूली चुनि लिये, काल्हि हमारी बार॥
हम जानैं थे खाहिंगे, बहुत जमी बहु माल।
ज्यों का त्यों ही रहि गया, पकरि लै गया काल॥
भक्ति भाव भादों नदी, सबै चलीं घहराय।
सरिता सोई सराहिये, जो जेठ मास ठहराय॥
जब लगि भक्ति सकाम है, तब लगि निष्फल सेव।
कह कबीर वह क्यों मिले, निःकामी निज देव॥
लागी लागी क्या करे, लागी बुरी बलाय।
लागी सोई जानिये, जो वार पार ह्वै जाय॥
लागी लगन छुटै नहीं, जीभ चोंच जरि जाय।
मीठा कहा अँगार में, जाहि चकोर चबाय॥
सोओं तो सुपने मिलै, जागौं तो मन माहिं।
लोचन राता सुधि हरी, बिछुरत कबहूँ नाहिं॥
ज्यों तिरिया पीहर बसै, सुरति रहै पिय माहिं।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि को भूलैं नाहिं॥

कबिरा हँसना दूर करु, रोने से करु चीत।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम पियारा मीत॥
हँसौ तो दुख ना बीसरै, रोवौं बल घटि जाय।
मनहीं माहिं बिसूरना, ज्यों घुन काठहिं खाय॥
हँस हँस के तन पाइया, जिन पाया तिन रोय।
हाँसी खेले पिउ मिलै, तो कौन सुहागिनि होय॥
सुखिया सब संसार है, खावै औ सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै औ रोवै॥
माँस गया पिञ्जर रहा, ताकन लागे काग।
साहिब अजहुँ न आइया, मंद हमारे भाग॥
हवस करै पिय मिलन की, औ सुख चाहै अंग।
पीर सहे बिनु पद्मिनी, पूत न लेत उछंग॥
बिरहिनि ओदी लाकड़ी, सपचे औ धुँधुआय।
छूटि पड़ौं या बिरह से, जो सिगरो जरि जाय॥
पावक रूपी नाम है, सब घट रहा समाय।
चित चकमक चहुटै नहीं, धूवाँ ह्वै ह्वै जाय॥
जो जन बिरही नाम के, तिनकी गति है येह।
देही से उद्यम करैं, सुमिरन करैं विदेह॥
बिरहा बिरहा मत कहो, बिरहा है सुल्तान।
जा घट बिरह न संचरै, सो घट जान मसान॥
आगि लगी आकास में, झरि झरि परै अँगार।
कबिरा जरि कचन भया, काँच भया ससार॥
कबिरा वैद बुलाइया, पकरि के देखी बाहिं।
वैद न वेदन जानई, करक करेजे माहिं॥
जाहु वैद घर आपने, तेरा किया न होय।
जिन या वेदन निर्मई, भला करैगा सोय॥
सीस उतारै भुइँ धरै, तापर राखै पाँव।
दास कबीरा यों कहै, ऐसा होय तो आव॥
प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाय॥
छिनहिं चढ़ै छिन ऊतरै, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिञ्जर बसै, प्रेम कहावै सोय॥

प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्है कोय।
आठ पहर भीना रहै, प्रेम कहावै सोय॥
जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाहिं॥
जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्रान॥
प्रेम तो ऐसा कीजियो, जैसे चंद चकोर।
घींच टूटि भुइँ माँ गिरै, चितवै वाही ओर॥
जहाँ प्रेम तहँ नेम नहिं, तहाँ न बुधि व्यौहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि वार॥
प्रेम छिपाया ना छिपै, जा घट परघट होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैन देत हैं रोय॥
पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यान में दो खड़्ग, देखा सुना न कान॥
कबिरा प्याला प्रेम का, अन्तर लिया लगाय।
रोम रोम में रमि रहा, और अमल क्या खाय॥
नैनों की करि कोठरी, पुतली पलँग बिछाय।
पलकों की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाय॥
जल में बसै कमोदिनी, चन्दा बसै अकास।
जो है जाको भावता, सो ताही के पास॥
प्रीतम को पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय बिदेस।
तन में मन में नैन में, ताको कहा संदेस॥
साईं इतना दीजिये, जा में कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥
बिनवत हौं करि जोरि कै, सुनिये कृपा-निधान।
साधु सँगति सुख दीजिये, दया गरीबी दान॥
क्या मुख लै बिनती करौं, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत औगुन करौं, कैसे भावौं तोहिं॥
अवगुन मेरे बाप जी, बकसु गरीब निवाज।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता को लाज॥
साहिब तुमहि दयाल हौ, तुम लगि मेरी दौर।
जैसे काग जहाज को, सूझै और न ठौर॥

सिख तो ऐसा चाहिये, गुरु को सब कछु देय।
गुरु तो ऐसा चाहिये, सिख से कछु नहि लेय ॥

सिंहों के लेहँड़े नहीं, हंसों की नहिं पाँत।
लालों की नहिं बोरियाँ, साधु न चलैं जमात ॥

साधु कहावन कठिन है, ज्यों खांड़े की धार।
डगमगाय तो गिरि परे, निःचल उतरै पार ॥

गाँठी दाम न बाँधई, नहिं नारी से नेह।
कह कबीर ता साधु के, हम चरनन की खेह ॥

साधु हमारी आतमा, हम साधुन के जीव।
साधुन मद्धे यों रहौं, ज्यों पय मद्धे घीव ॥

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥

कबीर संगत साधु की हरै, और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि ॥

कबीर संगत साधु की, जौ की भूसी खाय।
खीर खाँड़ भोजन मिले, साकट संग न जाय ॥

कबीर संगत साधु की, ज्यों गंधी का बास।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तौ भी बास सुबास ॥

कबीर संगत साधु की, निष्फल कभी न होय।
होसी चंदन बासना, नीम न कहसी कोय ॥

संगति भई तो क्या भया, हिरदा भया कठोर।
नौ नेजा पानी चढ़े, तऊ न भीजै कोर ॥

हरियर जानै रूखड़ा, जो पानी का नेह।
सूखा काठ न जानही, केतहु बूड़ा मेह ॥

मारी मरै कुसंग की, ज्यों केले ढिग बेर।
वह हालै वह चीरई, साकट संग निबेर ॥

केला तबहि न चेतिया, जब ढिग जामी बेरि।
अब के चेते क्या भया, काँटों लीन्हा घेरि ॥

समदृष्टी सतगुरु किया, मेटा भरम बिकार।
जहँ दखों तहँ एक ही, साहिब का दीदार ॥

सहज मिलै सो दूध सम, माँगा मिलै सो पानि।
कह कबीर वह रक्त सम, जा में ऐंचातानि ॥

साधू ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा दई उड़ाय॥

आटा तजि भूसी गहै, चलना देखु निहार।
कबीर सारहि छांड़ि कै, करै असार अहार॥

उततें कोई न बाहुरा, जातें बूझूँ धाय।
इततें सब ही जात हैं, भार लदाय लदाय॥

उततें सत गुरु आइया, जा की बुधि है धीर।
भवसागर के जीव को, खेइ लगावैं तीर॥

जो आवै तो जाय नहिं, जाय तो आवै नाहिं।
अकथ कहानी प्रेम की, समझ लेहु मन माहिं॥

सूली ऊपर घर करै, विष का करै अहार।
ताको काल कहा करै, जो आठ पहर हुसियार॥

नाँव न जानौं गाँव का, बिन जाने कित जाँव।
चलता चलता जुग भया, पाव कोस पर गाँव॥

चलन चलन सब कोई कहै, मोहिं अंदेसा और।
साहिब से परिचय नहीं, पहुँचैंगे केहि ठौर॥

कबीर का घर सिखर पर, जहाँ सिलहली गैल।
पाँव न टिकै पिपीलिका, पंडित लादे बैल॥

मरिये तो मरि जाइये, छूटि परै जंजार।
ऐसा मरना को मरै, दिन में सौ सौ बार॥

कस्तूरी कुन्डल बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहिं।
ऐसे घट में पीव है, दुनियाँ जानै नाहिं॥

द्वार धनी के षड़ि रहै, धका धनीका खाय।
कबहूँक धनी निवाजई, जो दर छाड़िन जाय॥

जरा मीच व्यापै नहीं, मुआ न सुनिये कोय।
चलु कबीर वा देश को, जहँ बैद साइयाँ होय॥

साध सती औ सूरमा, ज्ञानी औ गज-दन्त।
एते निकसि न बहुरैं, जो जुग जाहि अनन्त॥

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।
जैसे बाती दीप की, कटि उजियारा होय॥

जूझैंगे तब कहैंगे, अब कछु कहा न] जाय।
भीड़ पड़े मन मसखरा, लड़ै किधौं भगि जाय॥

अगिनि आँच सहना सुगम, सुगम खड़ग की धार।
नेह निभावन एकरस, महा कठिन व्यौहार॥

सूरा नाम धराइ के, अब का डरपै बीर।
माँडि रहना मैदान में, सन्मुख सहना तीर॥

पतिबरता को सुख घना, जाके पति है एक।
मन मैली बिभिचारनी, ताके खसम अनेक॥

पतिबरता पति को भजै, और न आन सुहाय।
सिंह बचा जो लंघना, तौ भी घास न खाय॥

नैनो अंतर आव तूँ, नैन झापि तोहि लेव।
ना मैं देखौ और को, ना तोहिं देखन देवँ॥

मै सेवक समरत्थ का, कबहुँ न होय अकाज।
पतिबरता नाँगी रहै, तो वाही पति को लाज॥

सब आये उस एक में, डार पात फल फूल।
अब कहो पाछे क्या रहा, गहि पकड़ा जब मूल॥

चन्दन गया बिदेसड़े, सब कोइ कहै पलास।
ज्यो ज्यो चूल्हे झोंकिया, त्यों त्यों अधिकी बास॥

लाली मेरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन मै गई, मैं भी हो गई लाल॥

हम बासी वा देस जहँ, बारह मास बिलास।
प्रेम झिरै बिगसै कँवल, तेज पुंज परकास॥

कबीर जब हम गावते, तब जाना गुरु नाहिं।
अब गुरु दिल में देखिया, गावन को कछु नाहिं॥

ज्ञानी से कहिये कहा, कहत कबीर लजाय।
अंधे आगे नाचते, कला अकारथ जाय॥

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहिं फूल को फूल है, वाको है तिरसूल॥

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
बिना जीवकी स्वास से, लोह भसम होजाय॥

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय॥

हस्ती चढ़िये ज्ञान की, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूकन दे झख मारि॥

आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक॥
कथा कीरतन रात दिन, जाके उद्यम येह।
कह कबीर ता साधु की, हम चरनन की खेह॥
बन्दे तू कर बन्दगी, तौ पावै दीदार।
औसर मानुष जनम का, बहुरि न बारम्बार॥
साधु भया तो क्या भया, बोलै नाहिं बिचार।
हतै पराई आतमा, जीभ बांधि तरवार॥
मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर॥
बोलत ही पहिचानिये, साहु चोर को घाट।
अन्तर की करनी सबै, निकसै मुख की बाट॥
जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठि।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि॥
पढ़ना गुनना चातुरी, यह तो बात सहल।
काम दहन मन बसि करन, गगन चढ़न मुस्कल॥
भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति।
जब हिरदे से भय गया, मिटी सकल रस रीति॥
कथनी मीठी खाँड़ सी, करनी विष की लोय।
कथनी तजि करनी करै, तौ विष से अमृत होय।
लाया साखि बनाय करि, इत उत अच्छर काट।
कह कबीर कब लग जिये, जूठी पत्तल चाट॥
पानी मिलै न आपको, औरन बकसत छीर।
आपन मन निस्चल नहीं, और बँधावत धीर॥
मारग चलते जो गिरै, ताको नाहीं दोस।
कह कबीर बैठा रहै, ता सिर करड़े कोस॥
रोड़ा होइ रहु बाटका, तजि आपा अभिमान।
लोभ मोह तृस्ना तजै, ताहि मिलै निज नाम॥
रोड़ा भया तो क्या भया, पंथी को दुख देह।
साधू ऐसा चाहिये, ज्यों पैंड़े की खेह॥
खेह भई तो क्या भया, उड़ि उड़ि लागै अंग।
साधू ऐसा चाहिये, जैसे नीर निपंग॥

चलौ चलौ सब कोई कहै, पहुँचै बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥

पर नारी पैनी छुरी, मत कोइ लावो अंग।
रावन के दस सिर गये, पर नारी के संग॥

सब सोने की सुन्दरी, आवै बास सुबास।
जो जननी ह्वै आपनी, तऊ न बैठे पास॥

छोटी मोटी कामनी, सब ही बिष की बेल।
बैरी मारै दाँव दै, यह मारै हँसि खेल॥

जागत में सोवन करै, सोवन में लौ लाय।
सुरति डोर लागी रहै, तार टूटि नहिं जाय॥

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥

तिनका कबहुँ न निन्दिये, जो पाँबन तर होथ।
कबहूँ उड़ि आंखिन परै, पीर घनेरी होय।

दोष पराये देख करि, चले हसंत हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत॥

माखी गुड़ में गड़ि रही, पंख रह्यो लिपटाय।
हाथ मलै औ सिरधुनै, लालच बुरी बुलाय॥

औगुन कहौं सराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय।
मानुष से पसुआ करै, द्रव्य गांठि को देय॥

रूखा सूखा खाइ कै, ठंढा पानी पीव।
देखि बिरानी चूपड़ी, मत ललचावै जीव॥

कबीर साईं मुज्झको, रूखी रोटी देय।
चुपड़ी माँगत मैं डरूँ, रूखी छीनि न लेय॥

सत्त नाम को छांड़ि कै, करै और को जाप।
बेस्या केरे पूत ज्यों, कहै कौन को बाप॥

एके साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
जो गहि सेवै मूल को, फूलै फलै अघाय॥

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पुजौं पहार।
तातैं ये चाकी भली, पीसि खाय संसार॥

काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय॥

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥
सपने में साईं मिले, सोवत लिया जगाय।
आंखि न खोलूँ डरपता, मति सुपना ह्वै जाय॥
साँझ पड़े दिन बीतवै, चकवी दीन्हा रोय।
चल चकवा वा देस को, जहाँ रैन ना होय।
चातक सुतहिं पढ़ावही, आन नीर मति लेय।
मम कुल यही स्वभाव है, स्वाति बूँद चित देय॥
जूआ चोरी मुखबिरी, ब्याज घूस पर नार।
जो चाहै दीदार को, एती वस्तु निवार॥
अछै पुरुष इक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।
तिरदेवा साखा भये, पात भया संसार॥

नानक देव

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख बार।
चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिवतार॥
भुखिआ, भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि॥

× × ×

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई।
हुकमि होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥

× × ×

गावै को ताणु होवै किसै ताणु। गावै को दाति जाणै नीसाणु॥
गावै को गुण वडिआईआ चार। गावै को विदिआ विखमु विचारु॥
गावै को साजि करे तनु खेह। गावै को जीअ लै फिरि देह॥

गावै को जापै दिसै दूरि । गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि । कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि । जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाहे राहु । नानक विगसै वेपरवाहु ॥

× × ×

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥

× × ×

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ।
गुरा इक देहि बुझाई ।
सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई ॥

× × ×

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ।
जे तिसु नदरि न आवई त बात न पुछै केइ ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ।
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ।
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥

× × ×

असंख नाव असंख थाव । अगंम अगंम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ।
अखरी नामु अखरी सालाह । अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि । अखरा सिरि संजोगु बखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिर नाहि । जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ । विणु नावै नाही को थाउ ॥

कुदरति कवरा कहा वीचारु । वारिश्रा न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ॥

× × ×

तीरथु तपु दइश्रा दतु दान । जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिश्रा मंनिश्रा मनि कीता भाउ । अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मैं नाही कोइ । विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुश्रसति श्राथि बाणी बरमाउ । सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
कवणु सु बेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ।
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होवा श्राकारु ॥
वेल न पाईश्रा पंडती जि होवै लेखु पुराणु ।
वखतु न पाइश्रो कादीश्रा जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ।
जा करता सिरठी कउ साजै श्रापे जाणै सोई ॥
किव करि श्राखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ।
नानक श्राखणि सभु को श्राखै इकदू इकु सिश्राणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ।
नानक जे को श्रापौ जाणै श्रगै गइश्रा न सौहै ॥

× × ×

श्रंतु न सिफती कहणि न श्रंतु । श्रंतु न करणै देणि न श्रंतु ॥
श्रंतु न वेखणि सुणणि न श्रंतु । श्रंतु न जापै किश्रा मनि मंतु ॥
श्रंतु न जापै कीता श्राकारु । श्रंतु न जापै पारावारु ॥
श्रंत कारण केते बिललाहि । ता के श्रंत न पाए जाहि ॥
एहु श्रंतु न जाणै कोइ । बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ । ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ । तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवड श्रापि जाणै श्रापि श्रापि । नानक नदरी करमी दाति ॥

× × ×

श्रमुल गुण श्रमुल वापार । श्रमुल वापारीए श्रमुल भंडार ॥
श्रमुल श्रावहि श्रमुल लै जाहि । श्रमुल भाइ श्रमुला समाहि ॥
श्रमुलु धरमु श्रमुलु दीबाणु । श्रमुलु तुलु श्रमुलु परवाणु ॥
श्रमुलु बखसीस श्रमुलु नीसाणु । श्रमुलु करमु श्रमुलु फुरमाणु ॥
श्रमुलो श्रमुलु श्राखिश्रा न जाइ । श्राखि श्राखि रहे लिव लाइ ॥
श्राखहि वेद पाठ पुराण । श्राखहि पड़े करहि वखिश्राण ॥

आखहि बरमे आखहि इंद। आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध। आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव। आखहि सुर नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखहि पाहि। केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि। ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ। नानक जाणै साचा सोइ ॥
जे को आखै बोलुविगाडु। ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥

× × ×

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले।
बाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितुगुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद इंदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावनि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले।
गावनि रतनि उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे।
गावहि खड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसारे।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥

× × ×

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ।
करमी आपा आपणी के नेड़े के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ।
नानक ते मुख उजले केती छूटी नालि ॥

× × ×

मोती त मंदर ऊसराहि रतनी त होहि जड़ाउ ।
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ।
मतु देखि भूला बीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ।
मैं आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥
धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ।
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ।
मतु देखि भूला बीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ।
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला बीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ।
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ।
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥

× × ×

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ।
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥
साचा निरंकारु निज थाइ ।
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करै तमाइ ॥
कुसा कुटीआ वार-वार पीसणि पीसा पाइ ।
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥
भी तेरी कीमती ना पावै हउ केवडु आखा नाउ ।
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ।
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥
नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ।

मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ।।
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ।।

× × ×

लबु कुता कूड़ चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ।।
पर निंदा पर मलु मुखसुधी अगनि क्रोधु चंडालु ।।
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार ।।
बाबा बोलीऐ पति होइ ।
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच करम बहि रोइ ।।
रसु सुइना रसु रूपा कामणि रसु परमल की वासु ।
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ।
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ।।
जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ।
फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ।
जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ।।
तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ।
तिनका किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ।
नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ।।

× × ×

सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ।
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ।
छतीह अंमृत भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ।।
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ।
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ।।
रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ।
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ।
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ।।
बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ।
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ।।
घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ।
तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ।।
बाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ।।
बाबा होरु चड़ना खुसी खुआरु ।।

जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ।।
घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ।।
हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ।
नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ।।
बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ।
जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ।।

× × ×

गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ।
जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूर ।।
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ।।
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ।
गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ।।
प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ।
मोती हीरा तिरमला कंचन कोट रीसाल ।।
बिन पउड़ी गड़ि किउ चड़उगुर हरि धिआन निहाल ।।
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ।
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथ दरीआउ ।।
जे तिसु भावै ऊजली सतसरि नावणु जाउ ।।
पूरो - पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ।
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ।।
नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुणतास ।।

× × ×

आवहु भैण गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ।
मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह ।
साचे साहिब सभि गुण अउगुण सभि असाह ।।
करता सभु को तेरै जोरि ।
एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ।।
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी ।
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ।।
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबद सुणी ।।
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ।
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिन राति ।।

केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥
सुरति होवै पति ऊगवै गुरवचनी भउ खाइ ।
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥

× × ×

तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ।
अउगुण फिरि लागू भए कूरि बजावै तूरु ॥
बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ॥
मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ।
जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ।
भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥
सची नदरि नीहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ॥
साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ।
जल ते त्रिभवणु साजिआ घटि-घटि जोति समोइ ॥
निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥
इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ।
पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥
नानक अउगुण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥

× × ×

मरणै की चिंता नही जीवण की नहीं आस ।
तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥
अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥
जीअरे राम जपत मनु मानु ।
अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआन ॥
अन्तर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ।
मुइआ जितु घरि जाईते तितु जीवदिआ मरु मारि ॥
अनहद सबद सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥
अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ।
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरवाणै तासु ॥
खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरिनाम निवासु ॥
जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ।
त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥

विजोगी दुखि बीछड़े मनमुखि लहहि न मेलु ।।
मनु बैरागी घरि बसै सच भै राता होइ ।
गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ।।
नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ।।

× × ×

एहु मनो मूरख लोभीआ लोभे लगा लोभानु ।
सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ।।
साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ।।
मन रे हउमै छोड़ि गुमानु ।
हरिगुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ।।
रामनामु जपि दिनसु राति गरमुखि हरि धनु जानु ।।
सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ।।
निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगरि दीआ नामु ।।
कूकर कुडु कमाईऐ गरनिंदा पचै पचानु ।
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ।।
मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ।।
एथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखत परवानु ।।
हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी परधानु ।।
नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ।।

× × ×

भरमै भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ।
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु धृगु वेसु ।।
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतगुर के उपदेस ।।
मन रे गुरमुखि अगिनि निवारि ।
गुर का कहिआ मनि वरै हउमै तृसना मारि ।।
मनु माणकु निरमोलु है रामनामि पति पाइ ।
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ।।
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ।।
जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ।
जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजल पचै पचाइ ।।
इहु माणुक जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदले जाइ ।।
जिंना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाणु ।

गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥
नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥

× × ×

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ।
पबणि केरे पत जिउ ढल ढुलि जुंमणहार ॥
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउहुला ॥
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥
सजण मेरे रंगुले जाइ सुवे जीराणि ।
हंभी वंञा डुंमणी रोवा झीणी बाणि ॥
की न सुणही गोरीए आपन कंनी सोइ ।
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ।
गुणा गवाई गंठड़ी अवगुण चली बंनि ॥

× × ×

एका सुरति जेते है जीअ । सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥
जेही सुरति तेहा तिन राहु । लेखा इको आवहु जाहु ॥
काहे जीअ करहि चतुराई । लेवै देवै ढिल न पाई ॥
तेरे जीअ जीआ का तोहि । कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥
जे तू साहिब आवहि रोहि । तू ओना का तेरे ओहि ॥
असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल । तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥
जह करणी तह पूरी मति । करणी बाझहु घटे घटि ॥
प्रणवति नानकु गिआनी कैसा होइ । आपु पछाणै बूझै सोइ ॥
गुर परसादि करै बीचारु । सो गिआनी दरगह परवाणु ॥

× × ×

आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ।
आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥
साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥
हरि जीउ तूं करता करतारु ।
जिउ भावै तिउ राखु तूं हरिनामु मिलै आचारु ॥
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ।
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥
गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥

आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु।
साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु।
निडुरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु॥
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ।
आपे निरमलु एक तूं होर बंधी धंधै पाइ।
गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ॥
हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि।
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु।
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु॥
जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि।
हउमै तृसना मारि कै सचु रखिआ उरधारि॥
जगु महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि॥
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि।
साचो दरगह बैसई भगति सची अरदासि॥
पति सिउ लेखा निबड़ै रामु नामु परगासि॥
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ।
जह देखा तह एक तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ॥
जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ॥

× × ×

मछुली जालुँ न जाणिआ सरु खारा असगाहु।
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु।
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु॥
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु।
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु॥
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु।
सचि रते से उबरे दुबिधा छोड़ि विकार।
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर॥
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि।
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि॥
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि॥
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु।
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु॥
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु॥

सतिगुरि अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ।
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ।।
नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ ।।
बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ।
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ।।
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ।।
तूं है साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ।
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ।।
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ।
हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ।।
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ।।

× × ×

मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ।
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउकरि सूचा होइ ।।
बिनु अभ सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ ।।
मुँधे गुणहीनी सुखु केहि ।
पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ।।
पिरु परदेसी जे थीऐ धन वाढ़ी झूरेइ ।।
जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ।।
पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ।।
पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ।
तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ।
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावै गुण नालि ।।
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ।
ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली बेकारि ।।
आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ।।
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ।
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ।।
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ।।
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ।
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ।।
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ।
केते पंडित जोतकी वेदा करहि बीचारु ।।

वादि विरोधि सलाहणै वादे आवणु जाणु ।।
बिनु गुर करम न छुटसी कहि सुणि आखि बखाणु ।।
सभ गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ।
हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ।
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ।।

× × ×

सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ।
मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ।।
मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ।।
भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ।
पूछउ ब्रहमे नारदै वेदबिआसै कोइ ।।
गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ।
सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ।।
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ।।
गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ।
साचो बखर संचीऐ पूरै करमि अपारु ।।
सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुरु संघारु ।।
भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ।
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ।।
सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ।।
इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ।
जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ।
घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ।।
मेरी-मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ।
बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारग आथि ।।
साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुख अकथो काथि ।।
आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ।
पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ।
बिनु हरिनाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ।।
तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ।
हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ।।
नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ।।

× × ×

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ।
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ।
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥
मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ।
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ।
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि सांति सरीर ॥
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चात्रिक मेह ।
सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ।
करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ।
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥
आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ।
खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥
मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥
मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ।
ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥
गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥
सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ।
गिआन पदारथु पाईऐ त्रिभवण सोझी होइ ॥
निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥
खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तालि ।
घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥
जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ।
सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥
मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ।
मनमुख सोझी न पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥
नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥

× × ×

तृसना मइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ।
धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ।।
मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ।।
मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ।
मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ।।
नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ।
जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ।।
वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ।।
आखणि आखहि केतड़े गुर बिन बूझ न होइ ।
नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ।।
जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ।।
गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटो रासि ।
असट धातु पतिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ।।
आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ।।
तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि बजाइ ।
कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ।।
गुरमति तूं सालाहणा होर कीमति कहणु न जाइ ।।
जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ।
गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ।।
आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ।
आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ।।
अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ।।
सरबे थाई एकु तूं जिउ भाव तिउ राखु ।
गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साथु ।।
सउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ।।
आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ।
आपे भगती भाउ तूं आपे मिलिहि मिलाइ ।।
नानक नामु न वीसरै जिव भावै तिवै रजाइ ।।

× × ×

राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ।
सबद सरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ।।
जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरिनामु अधारु ।।
मन रे साची खसम रजाइ ।
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ।।

तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ।
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥
हरिनामै तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ ॥
अरध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ।
तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥
हरिनामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि बजाइ ॥
कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ।
भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥
रामनामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥
मन हठ बुधी केतीआ केते बेद बिचार ।
केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोखदुआरु ॥
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ।
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥
करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥
साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ।
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥
पी अंमृतु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥
घटि घटि बाजै किंगुरी अनिदिनु सबदि सुभाइ ।
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥
नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥

× × ×

मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ।
पंच चेले वस कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥
जोग जुगति इव पावसिता ।
एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥
मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ।
त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥
करि पटंबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता ।
एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥
जपसि निरंजनु रचसि मना । काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥
काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ।
प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥

× × ×

अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि दृड़ु चितु कीजै रे ।
जनम जनम के पाप करम के काटन हारा लीजै रे ।।
मन एको साहिबु भाई रे ।
तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ।।
सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ।
राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ।।
मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ।
जो तिनि कीआ सोई होवा किरतु न मेटिआ जाई रे ।।
सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ।
तिनकी पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ।।

× × ×

कत की माई बापु कत केरा किदू थावउ हम आए ।
अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ।।
मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ।
कहे न जानी अउगुण मेरे ।।
केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ।
केते नाग कुली महि आए केते पंख उड़ाए ।।
हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै ।
अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ।।
तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ।
लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि बणजारा ।।
जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ।
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ।।
जीअड़ा अगनि बराबर तपै भीतरि वगै काती ।
प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुख होवै दिनु राती ।।

× × ×

हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ।
गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ।।
मैं बनजारनि राम की । तेरा नामु वखरु वापारु जी ।।
कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ।
सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ।।
मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ।
उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ।।

नागनि होवा धर वसा सबहु वसै भप जाइ।
नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥

× × ×

ना मनु मरै न कारजु होइ। मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥
मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥
निरगुण रामु गुणह वसि होइ। आपु निवारि वीचारे सोइ ॥
मनु भूलो बहु चितै विकारु। मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥
मनु मानै हरि एकंकारु।
मनु भूलो माइआ घरि जाइ। कामि विरूधउ रहै न टाइ ॥
हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥
गैवर हैवर कंचन सुत नारी। बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥
जूऐ खेलणु काची सारी ॥
संपउ संची भए विकार। हरख सोग उभे दरबारि ॥
सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥
नदरि करे ता मेलि मिलाए। गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ॥
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥
बिनु नावै सभ दूख निवासु। मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥
गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥
मनु चंचलु धावतु फुनि धावै। साचे सूचे मैलु न भावै ॥
नानक गुरमुखि हरिगुण गावै ॥

× × ×

मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै।
सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥
धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए।
सीगार मिठ रस भोजन भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥
मैमत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥
नानक साधन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥
मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे।
किउ सुखु पावैगी बिनु उरधारे ॥
नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ।
बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सहेलीआ ॥
सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ।
नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥

मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा।
गुर पुछि लिखिउगी जीउ सबदि सनेहा॥
सबदु साचा गुर दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ।
निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ॥
साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलओ।
नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो॥
मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ।
मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ।
गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ।
साजन रहसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ॥
कर जोड़ि साधन करै विनती रैणि दिनु रसि भिनीआ।
नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ॥

× × ×

सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे।
किउ धरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे॥
धन नाह बाझहु रहि न सकै बिखम रैणि घणेरीआ।
नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरीआ॥
बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए।
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए॥
पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै।
रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै॥
सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै।
सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै॥
सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अंमृत बाणी।
नानक सा धन ता पिरु रावै जा तिस कै मति भाणी॥
माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे।
किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे॥
हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै।
पुंन दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै॥
नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रह बेबाणै।
नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै॥
तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो।
तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो॥

नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो।
तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिन खिनो ॥
परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ।
नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥

× × ×

इस दम दा मैनूँ कीबे भरोसा,
आया आया न आया न आया।
या संसार रैन दा सुपना,
कहि दीखा कहि नाहिं दिखाया।
सोच विचार करे मत मन में,
जिसने ढूँढा उसने पाया ॥
नानक भक्तन के पद परसे,
निस दिन राम चरन चित लाया ॥

× × ×

सब कछु जीवत को व्योहार।
मात पिता भाई सुत बाँधव अरू पुन गृह की नार ॥
तन ते प्रान होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥
आध घरी कोऊ नाहीं राखै घर ते देत निकार ॥
मृग तृश्ना ज्यों जग रचना यह देखो हृदयँ विचार ॥
कहु नानक भज राम नाम नित जाते होत उधार ॥

× × ×

मन की मन ही माहिं रही।
ना हरि भजे न तीरथ सेये चोटी काल गही।
दारा मीत पूत रथ संपति धन जन पूर्न मही।
और सकल मिथ्या यह जानो भजना राम सही।
फिरत फिरत बहुते जुग हारयो मानस देह लही।
नानक कहत मिलन की बिरिया सुमिरत कहा नही ॥

× × ×

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरू भय नहिं जाके कंचन माटी जानै।
नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष शोक ते रहे नियारो नाहिं मान अपमाना।

आसा मनसा सकल त्यागि कै जगते रहै निरासा।
काम क्रोध जेहि परसै नाहिन तेहि घट ब्रह्म निवासा।
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्ही तिन यह जुगति पिछानी।
नानक लीन भयो गोविन्द सो ज्यो पानी सँग पानी।

× × ×

रे मन कौन गत होइहै तेरी।
गहि जग मे राम नाम सो तो नहिं सुन्यो कान।
विषयन सो अति लुभान मति नाहिन फेरी।
मानस को जनम लीन्ह सिमरन नाहिं विषय कीन्ह।
दारा सुत भयो दीन, पगहूँ परी बेरी।
नानक कह जन पुकार, सुपने ज्यों जग पसार।
सुमिरत नहि क्यों मुरार माया जाकी चेरी॥

× × ×

कलियाँ थी धड़ले भये, धड़ लियो भये सुपैदु।
नानक मता मतो दियाँ, उज्जरि गइया गेडु॥
जागोरे जिन जागना, अब जागनि की बारि।
फेरि कि जागो नानका, जब सोवउ पाँव पसारि॥
मित्राँ दोस्त माल धन, छड्डि चले अति भाइ।
संगि न कोई नानका, उड़ि हंस अकेला जाइ॥
जेही पिरीति लगंदिया तोड़ निबाहू होइ।
नानक दरगह जानियाँ, तुक न सक्के कोइ॥
मन की दुविधा न मिटै, मुक्ति कहाँ ते होइ।
कउड़ी बदले नानका, जन्म चला नर खोइ॥
हिरदे जिनके हरि बसे से जन कहियहि सूर।
कही न जाई नानका पूरि रहया भरपूर॥

सूरदास

चरन-कमल बंदौ हरि-राइ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाइ।
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बंदौ तिहिं पाइ॥

× × ×

प्रभु कौ देखौ एक सुभाइ।
अति-गंभीर-उदार-उदधि हरि, जान-सिरोमनि राइ।
तिनका सौं अपने जनकौ गुन मानत मेरु-समान।
सकुचि गनत अपराध-समुद्रहिं बूँद तुल्य भगवान।
बदन-प्रसन्न कमल सनमुखे ह्वै देखत हौं हरि जैसें।
विमुख भए अकृपा न निमिषहूँ, फिरि चितयौं तौ तैसें!
भक्त-बिरह-कातर करुनामय, डोलत पाछैं लागे।
सूरदास ऐसे स्वामी कौं देहिं पीठि सो अभागे॥

× × ×

काहू के कुल तन न विचारत।
अविगत की गति कहि न परति है, व्याध अजामिल तारत।
कौन जाति अरु पांति बिदुर की, ताही कैं पग धारत।
भोजन करत मांगि घर उनकैं, राज मान-मद टारत।
ऐसे जनम-करम के ओछे, ओछनि हूँ ब्यौहारत।
यहै सुभाव सूर के प्रभु कौ, भक्त-बछल-पन पारत॥

× × ×

सरन गए को को न उबारयौ।
जब जब भीर परी संतनि कौं, चक्र सुदरसन तहाँ सँभारयौ।
भयौ प्रसाद जु अंबरीष कौं, दुरबासा कौ क्रोध निवारयौ।
ग्वालनि हेत धरयौ गोबर्धन, प्रकट इंद्र कौ गर्ब प्रहारयौ।
कृपा करी प्रहलाद भक्त पर, खंभ फारि हिरनाकुस मारयौ।
नरहरि रूप धरयौ करुनाकर, छिनक माहिं उर नखनि बिदारयौ।
ग्राह ग्रसत गज कौं जल बूड़त, नाम लेत वाकौ दुख टारयौ।
सूर स्याम बिनु और करै को, रंग भूमि मैं कंस पछारयौ॥

× × ×

स्याम गरीबनि हूँ के गाहक।
दीनानाथ हमारे ठाकुर, सांचे प्रीति-निवाहक।
कहा बिदुर की जाति-पांति, कुल, प्रेम-प्रीति के लाहक।
कह पांडव कैं घर ठकुराई? अरजुन के रथ-बाहक।
कहा सुदामा कैं धन हौ? तौ सत्य-प्रीति के चाहक।
सूरदास सठ, तातैं हरि भजि आरत के दुख-दाहक॥

× × ×

जैसैं तुम गज कौ पाउँ छुड़ायौ।
अपने जन कौं दुखित जानि कै पाउँ पियादें धायौ।

जहँ जहँ गाढ़ परी भक्तनि कौं, तहँ तहँ आपु जनायौ।
भक्ति हेत प्रहलाद उबार्‌यौ, द्रौपदि - चीर बढ़ायौ।
प्रीति जानि हरि गए बिदुर कैं, नामदेव - घर छायौ।
सूरदास द्विज दीन सुदामा, तिहि दारिद्र नसायौ॥

× × ×

जापर दीनानाथ ढरै।
सोइ कुलीन, बड़ौ सुंदर सोइ, जिहिं पर कृपा करै।
कौन बिभीषन रंक-निसाचर, हरि हंसि छत्र धरै।
राजा कौन बड़ौ रावन तैं, गर्बहिं - गर्ब गरै।
रंकव कौन सुदामाहूँ तैं, आप समान करै।
अधम कौन है अजामील तैं, जम तहँ जात डरै।
कौन विरक्त अधिक नारद तैं, निसि-दिन भ्रमत फिरै।
जोगी कौन बड़ौ संकर तैं, ताकौं काम छरै।
अधिक कुरूप कौन कुबिजा तैं, हरि पति पाइ तरै।
अधिक सुरूप कौन सीता तैं, जनम बियोग भरै।
यह गति-मति जानै नहिं कोऊ, किहिं रस रसिक ढरै।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु फिरि फिरि जठर जरै॥

× × ×

हमारे निर्धन के धन राम।
चोर न लेत, घटत नहिं कबहूँ, आवत गाढ़ैं काम।
जल नहिं बूड़त, अगिनि न दाहत, है ऐसौ हरि नाम।
बैकुँठनाथ सकल सुख - दाता, सूरदास-सुख-धाम।

× × ×

बंदौं चरन-सरोज तिहारे।
सुंदर स्याम कमल-दल-लोचन, ललित त्रिभंगी प्रान-पियारे।
जे पद-पदुम सदा सिव के धन, सिंधु-सुता उर तैं नहिं टारे।
जे पद-पदुम तात-रिसु-त्रासत, मन-बच-क्रम प्रहलाद सँभारे।
जे पद - पदुम - परस-जल-पावन, सुरसरि-दरस कटत अघ भारे।
जे पद-पदुम-परस रिषि-पतिनी बलि, नृग, ब्याध, पतित बहु तारे।
जे पद-पदुम रमत बृंदाबन अहि-सिर धरि, अगनित रिपु मारे।
जे पद-पदुम परसि ब्रज-भामिनि सरबस दै, सुत-सदन बिसारे।
जे पद-पदुम रमत पांडव-दल दूत भए, सब काज सँवारे।
सूरदास तेई पद - पंकज त्रिबिध - ताप - दुख - हरन हमारे।

× × ×

अब कैं राखि लेहु भगवान।
हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।
ताकैं डर मैं भाज्यौ चाहत, ऊपर ढुक्यौ सचान।
दुहूँ भांति दुख भयौ आनि यह, कौन उबारै प्रान।
सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान।
सूरदास सर लग्यौ सचानहिं, जय जय कृपानिधान।

× × ×

आजु हौं एक-एक करि टरिहौं।
कै तुमहीं, कै हमहीं माधौ, अपने भरोसैं लरिहौं।
हौं तो पतित सात पीढ़िनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं।
अब हौं उघरि नच्यौ चाहत हौं, तुम्हैं बिरद बिन करिहौं।
कत अपनी परतीति नसावत, मैं पायौ हरि हीरा।
सूर पतित तबहीं उठिहैं, प्रभु जब हंसि देहौ बीरा॥

× × ×

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल।
काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा - सब्द - रसाल।
भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना बिधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोक-तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल-थल सुधि नहि काल।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नंदलाल।

× × ×

हमारे प्रभु, औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ।
इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरौ।
इक नदिया इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ।
जब मिलि गए तब एक बरन ह्वै, गंगा नाम परौ।
तन माया, ज्यों ब्रह्म कहावत, सूर सु मिलि बिगरौ।
कै इनको निरधार कीजियै, कै प्रन जात टरौ॥

× × ×

मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसें उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै।

कमल-नैन कौ छांड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै ॥
परम गंग कौं छांड़ि पियासौ, दुरमति कूप खनावै ।
जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै ।
सूरदास - प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै ॥

× × ×

हमैं नँदनंदन मोल लिये ।
जम के फंद काटि मुकराए, अभय अजाद किये ।
भाल तिलक, स्रवननि तुलसीदल, मेटे अंक बिये ।
मूँड्यौ मूँड़, कंठ बनमाला, मुद्रा - चक्र दिये ।
सब कोउ कहत गुलाम स्याम कौ, सुनत सिरात हिये ।
सूरदास कौं और बड़ौ सुख, जूठनि खाइ जिये ॥

× × ×

राखौ पति गिरिवर गिरि-धारी !
अब तौ नाथ, रह्यौ कछु नाहिन, उघरत माथ अनाथ पुकारी ।
बैठी सभा सकल भूपनि की, भीषम - द्रोन - करन व्रतधारी ।
कहि न सकत कोउ बात बदन पर, इन पतितनि मो अपति बिचारी ।
पांडु-कुमार पवन से डोलत, भीम गदा कर तैं महि डारी ।
रही न पैज प्रबल पारथ की, जब तैं धरम-सुत धरनी हारी ।
अब तौ नाथ न मेरौ कोई, बिनु श्रीनाथ - मुकुंद - मुरारी ।
सूरदास अवसर के चूकैं फिरि पछितैहौ देखि उघारी ॥

× × ×

करी गोपाल की सब होइ ।
जो अपनी पुरषारथ मानत, अति झूठौ है सोइ ।
साधन, मंत्र, जंत्र, उद्यम, बल, ये सब डारौ धोइ ।
जो कछु लिखि राखी नँदनंदन, मेटि सकै नहिं कोइ ।
दुख-सुख, लाभ-अलाभ समुझि तुम, कतहिं मरत हौ रोइ ।
सूरदास स्वामी करुनामय, स्याम-चरन मन पोइ ॥

× × ×

भावी काहू सौं न टरे ।
कहँ वह राहु, कहाँ वै रवि ससि, आनि सँयोग परे !
मुनि बसिष्ट पंडित अति ज्ञानी, रचि-पचि लगन धरे ।
तात-मरन, सिय-हरन, राम बन बपु धरि बिपति भरे ।
रावन जीति कोटि तैंतीसौ, त्रिभुवन राज करे ।
मृत्युहिं बांधि कूप मैं राखै, भावी-बस सो मरे ।

अरजुन के हरि हुते सारथी, सोऊ बन निकरे।
द्रुपद-सुता कौ राजसभा, दुस्सासन चीर हरे।
हरीचंद सो को जगदाता, सो घर नीच भरे।
जौ गृह छांड़ि देस बहु धावै, तउ संग फिरे।
भावी कैं बस तीन लोक हैं, सुर नर देह धरे।
सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै, को करि सोच मरे॥

× × ×

किते दिन हरि-सुमिरन बिनु खोए।
पर-निंदा रसना के रस करि, केतिक जनम बिगोए।
तेल लगाइ कियौ रुचि-मर्दन, बस्तर मलि-मलि धोए।
तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै, विषयिनि के मुख जोए।
काल बली तैं सब जग काँप्यौ, ब्रह्मादिक हूँ रोए।
सूर अधम की कहौ कौन गति, उदर भरे, परि सोए॥

× × ×

सब तजि भजिऐ नंद कुमार।
और भजे तैं काम सरै नहिं, मिटै न भव जंजार।
जिहिं जिहिं जौनि जन्म धारयौ, बहु जोरयौ अघ कौ भार।
तिहिं काटन कौ समरथ हरि कौ तीछन नाम-कुठार।
बेद, पुरान, भागवत, गीता, सब कौ यह मत सार।
भव समुद्र, हरि-पद-नौका बिनु कोउ न उतारै पार।
यह जिय जानि, इही छिन भजि, दिन बीते जात असार।
सूर पाइ यह समौ लाहु लहि, दुर्लभ फिरि संसार॥

× × ×

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहैं।
या देही कौ गरब न करियै, स्यार-काग-गिध खैहैं।
तीननि मैं तन कृमि, कै बिष्टा, कै ह्वै खाक उड़ैहैं।
कहँ वह नीर, कहाँ वह सोभा, कहँ रँग-रूप दिखैहैं।
जिन लोगनि सौं नेह करत है, तेई देखि घिनैहैं।
घर के कहत सबारे काढ़ौ, भूत होइ धर खैहैं।
जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी-देव मनैहैं।
तेई लै खोपरी बाँस दै, सीस फोरि बिखरैहैं।
अजहूँ मूढ करौ सतसंगति, संतनि मैं कछु पैहैं।

नर-बपु धारि नाहिं जन हरि कौं, जम की मार सो खैहै।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु बृथा सु जनम गंवैहै॥

× × ×

भक्ति कब करिहौ, जनम सिरानौ।
बालापन खेलतहीं खोयौ, तरुनाई गरबानौ।
बहुत प्रपंच किए माया के, तऊ न अधम अघानौ।
जतन जतन करि माया जोरी, लै गयौ रंक न रानौ।
सुत-वित-बनिता-प्रीति लगाई, झूठे भरम भुलानौ।
लोभ-मोह तैं चेत्यौ नाहीं, सुपनें ज्यों डहकानौ।
बिरध भएं कफ कंठ बिरौध्यौ, सिर धुनि धुनि पछितानौ।
सूरदास भगवंत-भजन-बिनु, जम कैं हाथ बिकानौ॥

× × ×

तजौ मन, हरि बिमुखनि कौ संग।
जिनकैं संग कुमति उपजति है, परत भजन में भंग।
कहा होत पय पान कराएं, बिष नहिं तजत भुजंग।
कागहिं कहा कपूर चुगाएं, स्वान न्हावएं गंग।
खर कौं कहा अरगजा-लेपन, मरकट भूषन-अंग।
गज कौं कहा सरित अन्हवाएं, बहुरि धरै वह ढंग।
पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतौ करत निषंग।
सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग॥

× × ×

रे मन मूरख जनम गँवायौ।
करि अभिमान विषय-रस गीध्यौ स्याम-सरन नहिं आयौ।
यह संसार सुवा-सेमर ज्यौं, सुंदर देखि लुभायौ।
चाखन लाग्यौ रुई गई उड़ि, हाथ कछू नहिं आयौ।
कहा होत अब के पछिताएं, पहिलैं पाप कमायौ।
कहत सूर भगवंत-भजन बिनु, सिर धुनि-धुनि पछितायौ॥

× × ×

चकई री, चलि चरन-सरोवर, जहाँ न प्रेम वियोग।
जहँ भ्रम-निसा होति नहिं कबहूँ, सोइ सायर सुख जोग।
जहाँ सनक-सिव हंस, मीन मुनि, नख रवि-प्रभा प्रकास।
प्रफुलित कमल, निमिष नहिं ससि-डर, गुंजत निगम सुवास।

जिहिं सर सुभग - मुक्ति-मुक्ताफल, सुकृत-अमृत-रस पीजै।
सो सर छांड़ि कुबुद्धि बिहंगम, इहाँ कहा रहि कीजै।
लक्ष्मी सहित होति नित क्रीड़ा, सोभित सूरजदास।
अब न सुहात विषय-रस-छीलर, वा समुद्र की आस॥

× × ×

सुवा, चलि ता बन कौ रस पीजै।
जा बन राम-नाम अम्रित-रस, स्रवन पात्र भरि लीजै।
को तेरौ पुत्र, पिता तू काकौ, घरनी, घर कौ तेरौ।
काग सृगाल-स्वान कौ भोजन, तू कहै मेरौ मेरौ!
बन बारानिसि मुक्ति क्षेत्र है, चलि तोकौं दिखराऊँ।
सूरदास साधुनि की संगति, बड़े भाग्य जो पाऊँ।

× × ×

अचंभौ इन लोगनि कौ आवै।
छाँड़ैं स्याम-नाम-अम्रित फल, माया-विष-फल भावै।
निंदक मूढ़ मलय चंदन कौं, राख अंग लपटावै।
मानसरोवर छांड़ि हंस तट काग - सरोवर न्हावै।
पग तर जरत न जानै मूरख, घर तजि घूर बुझावै।
चौरासी लख जोनि स्वाँग धरि, भ्रमि-भ्रमि जमहिं हँसावै।
मृगतृस्ना आचार-जगत जल, ता सँग मन ललचावै।
कहतु जु सूरदास संतनि मिलि हरि जस काहे न गावै॥

× × ×

भजन बिनु कूकर-सूकर जैसौ।
जैसे घर बिलाव के मूसा, रहत विषय-बस वैसौ।
बग-बगुली अरु गीध-गीधिनी, आइ जनम लियौ तैसौ।
उनहूँ कैं गृह, सुत, दारा है, उन्हैं भेद कहु कैसौ।
जीव मारि कै उदर भरत हैं; तिनकौ लेखौ ऐसौ।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु, मनौ ऊँट-बृष-भैंसौ॥

× × ×

जौ लौं मन-कामना न छूटै।
तौ कहा जोग-जज्ञ ब्रत कीन्हैं, बिनु कन तुस कौं कूटै।
कहा सनान कियैं तीरथ के, अंग भस्म जट जूटै?
कहा पुरान जु पढ़ैं अठारह, ऊर्ध्व धूम के घूटैं।

जग सोभा की सकल बड़ाई, इनतैं कछू न खूटै।
करनी और, कहै कछु औरै, मन दसहूँ दिसि टूटै।
काम, क्रोध, मद, लोभ सत्रु हैं, जो इतननि सौं छूटै।
सूरदास तबहीं तम नासै, ज्ञान-अगिनि-झर फूटै॥

× × ×

अपुनपौ आपुन ही बिसर्यौ।
जैसें स्वान काँच-मंदिर मैं, भ्रमि-भ्रमि भूकि पर्यौ।
ज्यौं सौरभ मृग-नाभि बसत है, द्रुम तृन सूंघि फिर्यौ।
ज्यौं सपने मैं रंक भूप भयौ, तसकर अरि पकर्यौ।
ज्यौं केहरि प्रतिबिंब देखि कै, आपन कूप पर्यौ।
जैसें गज लखि फटिकसिला मैं, दसननि जाइ अर्यौ।
मर्कट मूँठि छांड़ि नहीं दीनी, घर-घर-द्वार फिर्यौ।
सूरदास नलिनी कौ सुवटा, कहि कौनैं पकर्यौ॥

× × ×

अपुनपौ आपुन ही मैं पायौ।
सब्दहि सब्द भयौ उजियारौ, सतगुरु भेद बतायौ।
ज्यौं कुरंग-नाभी कस्तूरी, ढूँढत फिरत भुलायौ।
फिरि चितयौ जब चेतन ह्वै करि, अपनैं ही तन छायौ।
राज-कुमारि कंठ-मनि-भूषन, भ्रम भयौ कहूँ गँवायौ।
दियौ बताइ और सखियनि तब, तनु कौ ताप नसायौ।
सपने माहिं नारि कौं भ्रम भयौ, बालक कहूँ हिरायौ।
जागि लख्यौ, ज्यौं कौ त्यौं ही है, ना कहुँ गयौ न आयौ।
सूरदास समुझे की यह गति, मनहीं मन मुसुकायौ।
कहि न जाइ या सुख की महिमा, ज्यौं गूँगैं गुर खायौ॥

× × ×

आजु नंद के द्वारैं भीर।
इक आवत, इक जात बिदा ह्वै, इक ठाढ़े मंदिर कै तीर।
कोउ केसरि कौ तिलक बनावति, कोउ पहिरति कंचुकी सरीर।
एकनि कौं भूषन पाटंबर, एकनि कौं जु देत नग हीर।
एकनि कौं पहुपनि की माला, एकनि कौं चंदन घसि नीर।
एकनि माथैं दूब-रोचना, एकनि कौं बोधति दै धीर।
सूरदास धनि स्याम सनेही, धन्य जसोदा पुन्य-सरीर॥

× × ×

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोई कछु गावै।
मेरे लाल कौ आउ निंदरिया, कहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावै।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि-करि सैन बतावै।
इहिं अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ, सो नँद भामिनि पावै॥

× × ×

कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौढ़े पालनैं अकेले, हरषि-हरषि अपनैं रंग खेलत।
सिव सोचत, बिधि बुद्धि विचारत, बट बाढ़्यौ सागर-जल झेलत।
बिडरि चले घन प्रलय जानि कै, दिगपति दिग दंतीनि सकेलत।
मुनि मन भीत भए, भुव कंपित सेष सकुचि सहसौ फन पेलत।
उन ब्रज-बासिनि बात न जानी, समुझे सूर सकट पग ठेलत॥

× × ×

हरि किलकत जसुमति की कनियाँ।
मुख मैं तीनि लोक दिखराए, चकित भइ नँद-रनियाँ।
घर-घर हाथ दिखावति डोलति, बाँधति गरैं बघनियाँ।
सूर स्याम की अदभुत लीला नहिं जानत मुनिजनियाँ॥

× × ×

लाल हौं वारी तेरे मुख पर।
कुटिल अलक, मोहनि-मन बिहँसनि, भृकुटी बिकट ललित नैननि पर।
दमकति दूध-दँतुलिया बिहँसत, मनु सीपज घर कियौ बारिज पर।
लघु-लघु लट सिर घूँघरवारी, लटकन लटकि रह्यो माथैं पर।
यह उपमा कापै कहि आवै, कछुक कहौं सकुचित हौं जिय पर।
नव-तन-चंद्र रेख-मधि राजत, सुरगुरु सुक्र-उदोत परसपर।
लोचन लोल कपोल ललित अति, नासा कौ मुकता रदछद पर।
सूर कहा न्यौछावर करिये अपने लाल ललित लरखर पर॥

× × ×

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि-लेप किये।

चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन - तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिये।
कठुला-कंठ, बज्र केहरि-नख, राजत रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिये।।

× × ×

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिंब पकरिबैं धावत।
कबहुँ निरखि हरी आपु छाँह कौं, कर सौं पकरन चाहत।
किलकि हँसत राजत द्वैदतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत।
कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।
करि-करि प्रतिपद प्रतिमनि बसुधा, कमल बैठकी साजति।
बाल दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
अँचरा तर लै ढांकि, सूर के प्रभु को दूध पियावति।।

× × ×

सिखवति चलन जसोदा मैया।
अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया।
कबहुँक सुन्दर बदन बिलोकति, उर आनँद भरि लेत बलैया।
कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया।
कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति, इहिं आँगन खेलौ दोउ भैया।
सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नँदरैया।।

× × ×

कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सों बाबा बाबा, अरु हलधर सों भैया।
ऊँचे चढ़ि चढ़ि कहति जसोदा, लै लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहु लला रे, मारेगी काहु की गैया।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, चरननि की बलि जैया।

× × ×

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी - मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै नागिन सी भुइँ लोटी।
काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।।

× × ×

जागौ, जागौ हो गोपाल।
नाहिं न इतौ सोइयत सुनि सुत, प्रात परम सुचि काल।
फिर-फिर जात निरखि मुख छिन, सब गोपनि के बाल।
बिन बिकसे कल-कमल कोष ते मनु मधुपनि की माल।
जो तुम मोहिं न पत्याहु सूर प्रभु, सुन्दर स्याम तमाल।
तौ तुमही देखौ आपुन तजि, निद्रा नैन बिसाल॥

× × ×

कमल-नैन हरि करौ कलेवा।
माखन-रोटी, सद्य जम्यौ दधि, भांति-भांति के मेवा।
खारिक, दाख, चिरौंजी, किसमिस, उज्ज्वल गरी बदाम।
सफरी, सेव, छुहारे, पिस्ता, जे तरबूजा नाम।
अरु मेवा बहु भांति-भांति हैं, षटरस के मिष्ठान्न।
सूरदास प्रभु करत कलेवा, रीझे स्याम सुजान॥

× × ×

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ।
मोसौं कहत मोल कौ लीन्हौ, तू जसुमति कब जायौ।
कहा करौं इहि रिस के मारैं, खेलन हौं नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरौ तात।
गोरे नंद, जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात।
तू मोहिं कौं मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै।
मोहन मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।
सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।

× × ×

मैया री, मोहिं माखन भावै।
जो मेवा पकवान कहति तू, मोहिं नहीं रुचि आवै।
ब्रज-जुवती इक पाछे ठाढ़ी, सुनत स्याम की बात।
मन-मन कहति कबहु अपनैं घर, देखौं माखन खात।
बैठे जाइ मथनियाँ कैं ढिग, मैं तब रहौं छुपानी।
सूरदास प्रभु अंतरजामी, ग्वालिनि मन की जानी॥

× × ×

मैया मैं नहिं माखन खायौ।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरैं मुख लपटायौ।

देखि तुही सींके पर भोजन, ऊँचैं धरि लटकायौ।
हौं जु कहत नान्हे कर अपनैं मैं कैसैं करि पायौ।
मुख दधि पोंछि, बुद्धि एक कीन्ही, दोना पीठि दुरायौ।
डारि सांटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ।
बाल-बिनोद मोद मन मोह्यो, भक्ति-प्रताप दिखायौ।
सूरदास जसुमत कौ यह सुख, सिव बिरञ्चि नहिं पायौ॥

× × ×

ऐसी रिस मैं जौ धरि पाऊँ।
कैसे हाल करौं धरि हरि के, तुमकौं प्रगट दिखाऊँ।
संटिया लिए हाथ नँदरानी, थरथरात रिस गात।
मारे बिना आजु जौ छाँड़ौं, लागै मेरैं तात।
इहिं अंतर ग्वारिनि इक औरै, धरे बाँह हरि ल्यावति।
भली महरि सूधौ सुत जायौ, चोली-हार बतावति।
रिस मैं रिस अतिहीं उपजाई, जानि जननि अभिलाष।
सूर स्याम भुज गहे जसोदा, अब बाँधौं कहि माष॥

× × ×

बाँधौं आजु कौन तोहिं छोरैं।
बहुत लँगरई कीन्हौ मोसौं, भुज गहि रजु ऊखल सौं जोरैं।
जननी अति रिस लानि बँधायौ, निरखि बदन, लोचन जल ढोरैं।
यह सुनि ब्रज-जुवतीं सब धाईं कहतिं कान्ह अब क्यौं नहिं छोरैं।
ऊखल सौं गहि बांधि जसोदा, मारन कौं साँटी कर तोरैं।
साँटी देखि ग्वालि पछितानी, बिकल भई जहँ-तहँ मुख मोरैं।
सुनहु महरि ऐसी न बूझिए सुत बाँधति माखन दधि थोरैं।
सूर स्याम कौं बहुत सतायौ, चूक परी हम तैं यह भोरैं॥

× × ×

यह सुनि कै हलधर तहँ धाए।
देखि स्याम ऊखल सौं बांधे, तबहीं दोउ लोचन भरि आए।
मैं बरज्यौ कै बार कन्हैया, भली करी दोउ हाथ बँधाए।
अजहूँ छाँड़ौगे लँगराई, दोउ कर जोर जननि पै आए।
स्यामहिं छोरि मोहिं बांधै बरु, निकसत सगुन भले नहिं पाए।
मेरे प्रान-जिवन-धन कान्हा, तिनके भुज मोहिं बंधे दिखाए।
माता सौं कह करौं ढिठाई, सो सरूप कहि नाम सुनाए।
सूरदास तब कहति जसोदा, दोउ भैया तुम इक मत पाए॥

× × ×

ब्रह्मा बालक-बच्छ हरे।
आदि अंत प्रभु अंतरजामी, मनसा तैं जु करे।
सोइ रूप वै बालक गो-सुत, गोकुल जाइ भरे।
एक बरष निसि बासर रहि सँग, काहु न जानि परे।
त्रास भयौ अपराध आपु लखि, अस्तुति करति खरे।
सूरदास स्वामी मनमोहन, तामैं मन न धरे।

× × ×

अब कैं राखि लेहु गोपाल।
दसहूँ दिसा दुसह दावागिनि, उपजी है इहिं काल।
पटकत बाँस, काँस कुस चटकत, लटकत ताल तमाल।
उचटत अति अंगार, फुटत फर, झपटत लपट कराल।
धूम धूँधि बाढ़ी धर अंबर, चमकत बिच-बिच ज्वाल।
हरिन, बराह, मोर, चातक, पिक, जरत जीव बेहाल।
जनि जिय डरहु, नैन मूँदहु सब, हंसि बोले नँदलाल।
सूर अगिनि सब बदन समानी, अभय दिये ब्रज-बाल ॥

× × ×

बन तैं आवत धेनु चराए।
संध्या समय साँवरे मुख पर, गो-पद-रज लपटाए।
बरह मुकुट कैं निकट लसति लट, मधुप मनौ रुचि पाए।
बिलसत सुधा जलज-आनन पर, उड़त न जात उड़ाए।
बिधि बाहन-भच्छन की माला, राजत उर पहिराए।
एक बरन बपु नहिं बड़ छोटे, ग्वाल बने इक धाए।
सूरदास बलि लीला प्रभु की, जीवत जन जस गाए ॥

× × ×

मैया बहुत बुरो बलदाऊ।
कहन लग्यो बन बड़ो तमासौ, सब मौड़ा मिलि आऊ।
मोहूँ कौं चुचकारि गयौ लै, जहाँ सघन बन झाऊ।
भागि चलौ कहि गयौ उहाँ तैं, काटि खाइ रे हाऊ।
हौ डरपौं, कापौ अरु रोवौं, कोउ नहिं धीर धराऊ।
थरसि गयौं नहिं भागि सकौं, वै भागे जात अगाऊ।
मोसौं कहत मोल कौ लीनो, आपु कहावत साऊ।
सूरदास बल बड़ौ चबाई, तैसेहिं मिले सखाऊ ॥

× × ×

मैया हौं न चरैहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देत रिसाइ।
मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ॥

× × ×

धनि यह बृंदाबन की रेनु।
नंद-किसोर चरावत गैयाँ, मुखहिं बजावत बेनु।
मन-मोहन कौ ध्यान धरैं जिय, अति सुख पावत चैनु।
चलत कहाँ मन और पुरी तन, जहँ कछु लेन न दैनु।
इहाँ रहहु जहँ जूठनि पावहु, ब्रजवासिनि कैं ऐनु।
सूरदास ह्याँ की सरवरि नहिं, कल्पबृच्छ सुर-धैनु॥

× × ×

जागि उठे तब कुंवर कन्हाई।
मैया कहाँ गई मो ढिग तैं, संग सोवति बल भाई।
जागे नंद, जसोदा जागी, बोलि लिए हरि पास।
सोवत झझकि उठे काहे तैं, दीपक कियौ प्रकास।
सपनैं कूदि परयौ जमुना दह, काहूँ दियौ गिराइ।
सूर स्याम सौं कहति जसोदा, जनि हो लाल डराइ॥

× × ×

मैं बरज्यौ जमुना-तट जात।
सुधि रहि गई न्हात की तेरैं, जनि डरपौ मेरे तात।
नंद उठाय लियौ कोरा करि, अपनैं संग पौढ़ाइ।
बृंदाबन मैं फिरत जहाँ तहँ, किहिं कारन तू जाइ।
अब जनि जैहौ गाइ चरावन, कहँ को रहति बलाइ।
सूर स्याम दंपगि बिच सोए, नींद गई तब आइ।

× × ×

जसुमति टेरति कुँवर कन्हैया।
आगैं देखि कहत बलरामहिं, कहाँ रह्यौ तुव भैया।
मेरौ भैया आवत अबहीं, तौहिं दिखाऊँ मैया।
धीरज करहु, नैंकु तुम देखहु, यह सुनि लेति बलैया।

पुनि यह कहति मोहि परमोधत, धरनि गिरी मुरझैया।
सूर बिना सुत भई अति व्याकुल, मेरौ बाल नन्हैया॥

× × ×

अति कोमल तनु धर्यौ कन्हाई।
गए तहाँ जहँ काली सोवत, उरग-नारि देखत अकुलाई।
कह्यौ कौन कौ बालक है तू, बार बार कही; भागि न जाई।
छनकहि मैं जरि भस्म होइगौ, जब देखे उठि जाग जम्हाई।
उरग-नारि की बानी सुनि कै, आपु हंसे मन मैं मुसुकाई।
मौकौं कंस पठायौ देखन, तू याकौं अब देहि जगाई।
कहा कंस दिखरावत इनकौं, एक फूंकही मे जरि जाई।
पुनि-पुनि कहत सूर के प्रभु कौ, तू अब काहे न जात पराई॥

× × ×

जब हरि मुरली अधर धरत।
थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहैं, जमुना जल न बहत।
खग मोहैं, मृग-जूथ भुलाहीं, निरखि मदन-छबि छरत।
पसु मोहैं, सुरभी विथकित, तृन दंतनि टेकि रहत।
सुक सनकादि सकल मुनि मोहैं, ध्यान न तनक गहत।
सूरजदास भाग हैं तिनके, जे या सुखहिं लहत॥

× × ×

मुरली तऊ गुपालहिं भावति।
सुनि री सखी जदपि नँदलालहिं, नाना भांति नचावति।
राखति एक पाइ ठाढ़ौ करि, अति अधिकार जनावति।
कोमल तन आज्ञा करवावति, कटि टेढ़ौ ह्वै आवनि।
अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति।
आपुन पौंढ़ि अधर सज्जा पर, कर पल्लव पलुटावति।
भृकुटी कुटिल, नैन नासा-पुट, हम पर कोप करावति!
सूर प्रसन्न जानि एकौ छिन, धर तैं सीस डुलावति॥

× × ×

अधर-रस मुरली लूटन लागी।
जा रस कौ षट रितु तप कीन्हौ, सो रस पियति सभागी॥
कहाँ रही, कहँ तै इह आई, कौनें याहि बुलाई?
चकित भई कहतिं ब्रजबासिनि, यह तौ भलौ न आई।

हमहीं कहति बजावहु मोहन, यह नाहीं तब जानी।
हम जानी यह बाँस बँसुरिया, को जानै पटरानी ॥
बारे तैं मुँह लागत-लागत, अब ह्वै गई सयानी।
सुनहु सूर हम भोरी-भोरी, याकी अकथ कहानी ॥

× × ×

मुरली स्याम बजावन दै री।
स्रवननि सुधा पियति काहैं नहिं, इहिं तू जनि बरजै री ॥
सुनति नहीं वह कहति कहा है, राधा राधा नाम।
तू जानति हरि भूल गए मोहिं, तुम एकै पति बाम ॥
वाही कै मुख नाम धरावत, हमहिं मिलावत ताहि।
सूर स्याम हमकौ नहिं बिसरे, तुम डरपति हौ काहि ॥

× × ×

मुरलिया मोकौं लागति प्यारी।
मिली अचानक आइ कहूँ तैं, ऐसी रही कहाँ री ॥
धनि याके पितु मातु, धन्य यह, धन्य-धन्य मृदु बोलनि।
धन्य स्याम गुन गुनि कै ल्याए, नागरि चतुर अमोलनि ॥
यह निरमोल मोल नहिं याकौ, भली न यातैं कोई।
सूरदास याके पटतर कौ, तौ दीजै जौ होई ॥

× × ×

जमुना तट देखे नँद नंदन।
मोर-मुकुट मकराकृत-कुंडल, पीत-बसन तन चंदन ॥
लोचन तृप्त भए दरसन तैं, उर की तपनि बुझानी।
प्रेम-मगन तब भई सुंदरी, उर गदगद मुख-बानी ॥
कमल-नयन तट पर हैं ठाढ़े, सकुचहिं मिलि ब्रज-नारी।
सूरदास प्रभु अन्तरजामी, व्रत - पूरन पगधारी ॥

× × ×

नीकै तप कियौ तनु गारि।
आपु देखत कदम पर चढ़ि, मानि लियौ मुरारि ॥
वर्ष भर ब्रत - नेम - संजम, स्रम कियौ मोहि काज।
कैसे हूँ मोहिं भजै कोऊ, मोहिं बिरद की लाज ॥
धन्य व्रत इन कियौ पूरन, सीत तपति निवारि।
काम - आतुर भजीं मोकौं, नव तरुनि ब्रज-नारि ॥

कृपा-नाथ कृपाल भए तब, जानि जन की पीर।
सूर प्रभु अनुमान कीन्हौ, हरौं इनके चीर ॥

× × ×

हमारे अंबर देहु मुरारी।
ले सब चीर कदम चढ़ि बैठे, हम जल-माँझ उघारी ॥
तट पर बिना बसन क्यौं आवैं, लाज लगति है भारी।
चोली हार तुमहिं कौं दीन्हौं, चीर हमहिं द्यौ डारी ॥
तुम यह बात अचंभौ भाषत, नाँगी आवहु नारी।
सूर स्याम कछु छोह करौ जू, सीत गई तनु मारी ॥

× × ×

लाज ओट यह दूरि करौ।
जोइ मैं कहौं करौ तुम सोई, सकुच बापुरिहिं कहा करौ ॥
जल तैं तीर आइ कर जोरहु, मैं देखौं तुम बिनय करौ।
पूरन ब्रत अब भयौ तुम्हारौ, गुरुजन संका दूरि करौ ॥
अब अन्तर मोसौं जनि राखहु, बार-बार हठ बृथा करौ।
सूर स्याम कहै चीर देत हौं, मो आगैं सिंगार करौ ॥

× × ×

मेरौ कह्यौ सत्य करि जानौ।
जौ चाहौ ब्रज की कुसलाई, तौ गोबर्धन मानौ ॥
दूध दही तुम कितनौ लेहौ, गोसुत बढ़ैं अनेक।
कहा पूजि सुरपति सैं पायौ, छांड़ि देहु यह टेक ॥
मुँह मांगै फल जौ तुम पावहु, तौ तुम मानहु मोहिं।
सूरदास प्रभु कहत ग्वाल सौं, सत्य बचन करि दोहिं ॥

× × ×

गिरिवर स्याम की अनुहारि।
करत भोजन अधिक रुचि यह, सहस भुजा पसारि ॥
नंद कौ कर गहे ठाढ़े, यहै गिरि कौ रूप।
सखी ललिता राधिका सौं, कहति देखि स्वरूप ॥
यहै कुंडल, यहै माला, यहै पीत पिछौरि।
सिखर सोभा स्याम की छबि, स्याम-छबि गिरि जोरि ॥
नारि बदरौला रही, बृषभानु - घर रखवारि।
तहाँ तैं उहिं भोग अरप्यौ, लियौ भुजा पसारि ॥

राधिका-छबि देखि भूली, स्याम निरखैं ताहिं ।
सूर प्रभु बस भई प्यारी, कोर - लोचन चाहि ॥

× × ×

गिरि पर बरषन लागे बादल ।
मेघवर्त्त, जलवर्त्त, सैन सजि, आए लै लै आदर ॥
सलिल अखंड धार धर टूटत, किये इंद्र मन सादर ।
मेघ परस्पर यहै कहत हैं, धोइ करहु गिरि खादर ॥
देखि देखि डरपत ब्रजबासी, अतिहिं भए मन कादर ।
यहै कहत ब्रज कौन उबारै, सुरपति कियैं निरादर ॥
सूर स्याम देखैं गिरि अपनैं, मेघनि कीन्हौ दादर ।
देव आपनौ नहीं सम्हारत, करत इंद्र सौं ठादर ॥

× × ×

स्याम लियौ गिरिराज उठाइ ।
धीर धरौ हरि कहत सबनि सौं, गिरि गोबर्धन करत सहाइ ॥
नंद गोप ग्वालनि के आगैं, देव कह्यौ यह प्रगट सुनाइ ।
काहे कौं व्याकुल भएँ डोलत, रच्छा करै देवता आइ ॥
सत्य बचन गिरि-देव कहत हैं, कान्ह लेहि मोहिं कर उचकाइ ।
सूरदास नारी-नर ब्रज के, कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाइ ॥

× × ×

गिरि जनि गिरै स्याम के कर तैं ।
करत बिचार सबै ब्रजबासी, भय उपजत अति उर तैं ॥
लै लै लकुट ग्वाल सब धाए, करत सहाय जु तुरतैं ।
यह अति प्रबल, स्याम अति कोमल, रबकि रबकि हरबर तैं ॥
सप्त दिवस कर पर गिरि धारयौ, बरसि थक्यौ अंबर तैं ।
गोपी ग्वाल नंद सुत राख्यौ, मेघ धार जलधर तैं ॥
जमलार्जुन दोउ सुत कुबेर के, तेउ उखारे जर· तैं ॥
सूरदास प्रभु इंद्र - गर्व हरि, ब्रज राख्यौ करबर तैं ॥

× × ×

घरनि घरनि ब्रज होति बधाई ।
सात बरष कौ कुँवर कन्हैया, गिरिवर धरि जीत्यौ सुरराई ॥
गर्ब सहित आयौ ब्रज बोरन, वह कहि मेरी भक्ति घटाई ।
सात दिवस जल बरषि सिरान्यौ, तब आयौ पाइनि तर धाई ॥

कहाँ कहाँ नहि संकट मेटत, नर-नारी सब करत बड़ाई ।
सूर स्याम अब कै ब्रज राख्यौ, ग्वाल करत सब नंद दोहाई ॥

× × ×

मातु पिता इनके नहिं कोइ ।
आपुहिं करता, आपुहिं हरता, त्रिगुन रहित हैं सोइ ॥
कितिक बार अवतार लियौ ब्रज, ये हैं ऐसे ओइ ।
जल-थल, कीट-ब्रह्म के व्यापक, और न इन सरि होइ ॥
बसुधा - भार उतारन काजै, आपु रहत तनु गोइ ।
सूर स्याम माता हित कारन, भोजन माँगत रोइ ॥

× × ×

मानौ माई घन घन अंतर दामिनि ।
घन दामिनि दामिनि घन अंतर, सोभित हरि-ब्रज भामिनि ॥
जमुन पुलिन मल्लिका मनोहर, सरद - सुहाई - जामिनि ।
सुन्दर ससि गुन रूप-राग-निधि, अंग - अंग अभिरामिनि ॥
रच्यौ रास मिलि रसिक राइ सौं, मुदित भई गुन ग्रामिनि ।
रूप निधान स्याम सुन्दर तन, आनँद मन बिस्रामिनि ॥
खंजन - मीन - मयूर - हंस-पिक, भाइ - भेद गज-गामिनि ।
को गति गनै सूर मोहन सँग, काम बिमोह्यौ कामिनि ॥

× × ×

कृपा सिंधु हरि कृपा करौ हो ।
अनजानै मन गर्व बढ़ायौ, सो जिनि हृदय धरौ हो ॥
सोरह सहस पीर तनु एकै, राधा जिव, सब देह ।
ऐसी दसा देखि करुनामय, प्रगटौ हृदय - सनेह ॥
गर्व-हत्यौ तनु, विरह प्रकास्यौ, प्यारी व्याकुल जानि ।
सुनहु सूर अब दरसन दीजै, चूक लई इनि मानि ॥

× × ×

पनघट रोके रहत कन्हाई ।
जमुना-जल कोउ भरन न पावै, देखत हीं फिर जाई ॥
तबहिं स्याम इक बुद्धि उपाई, आपुन रहे छपाई ।
तट ठाढ़े जे सखा संग के, तिनकौं लियौ बुलाई ॥
बैठारयौ ग्वालिनि कौं द्रुम-तर, आपुन फिर-फिर देखत ।
बढ़ी वार भई कोउ न आई, सूर स्याम मन लेखत ॥

× × ×

जुवति इक आवत देखी स्याम ।
द्रुम कै ओट रहे हरि आपुन, जमुना तट गई वाम ॥
जल हलोरि गागरि भरि नागरि, जबहीं सीस उठायौ ।
घर कौं चली जाइ ता पाछैं, सिर तैं घट ढरकायौ ॥
चतुर ग्वालि कर गह्यौ स्याम कौ, कनक लकुटिया पाई ।
औरनि सौं करि रहे अचगरी, मोसौं लगत कन्हाई ॥
गागरि ले हंसि देत ग्वारि-कर, रीतौ घटि नहिं लेहौं ।
सूर स्याम ह्याँ आनि देहु भरि तबहि लकुट कर दैहौं ॥

× × ×

घट भरि दियौ स्याम उठाइ ।
नैकु तन की सुधि न ताकौं, चली ब्रज समुहाइ ॥
स्याम सुन्दर नैन - भीतर, रहे आनि समाइ ।
जहाँ-जहाँ भरि दृष्टि देखै, तहाँ - तहाँ कन्हाइ ॥
उतहिं तै इक सखी आई, कहति कहा भुलाइ ।
सूर अबहीं हँसत आई, चली कहा गवाँइ ॥

× × ×

ग्वारिनि जब देखे नँद-नंदन ।
मोर मुकुट पीतांबर काछे, खौरि किए तन चंदन ॥
तब यह कह्यौं कहाँ अब जैहौ, आगैं कुँवर कन्हाई ।
यह सुनि मन आनंद बढ़ायौ, मुख कहैं, बात डराई ॥
कोउ-कोउ कहति चलौ री जैये, कोउ कहै घर फिर जैये ।
कोउ-कोउ कहति कहा करिहैं हरि, इनसौं कहा परैयै ॥
कोउ-कोउ कहति कालिहीं हमकौं, लूटि लई नँद लाल ।
सूर स्याम के ऐसे गुन हैं, घरहिं फिरीं ब्रज-बाल ॥

× × ×

हमहिं और सो रोकै कौन ।
रोकनहारौ नंदमहर सुत, कान्ह नाम जाकौ है तौन ॥
जाकैं बल है काम नृपति कौ, टगत फिरति जुवतिनि कौं जौन ।
टोना डारि देत सिर ऊपर, आपु रहत ठाढ़ौ ह्वै मौन ॥
सुनहु स्याम ऐसी न बूझियै, बानि परी तुमकौं यह कौन ।
सूरदास प्रभु कृपा करहु अब, कैसेंहु जाहिं आपनै भौन ॥

× × ×

राधा सौं माखन हरि माँगत।
औरनि की मटुकी कौ खायौ, तुम्हरौ कैसौ लागत॥
लै आई बृषभानु - सुता, हंसि सद लवनी है मेरौ।
लै दीन्हौं अपने कर हरि-मुख, खात अल्प हंसि हेरौ॥
सबहिनि तै मीठौ दधि है यह, मधुरैं कह्यौ सुनाइ।
सूरदास प्रभु सुख उपजायौ, ब्रज ललना मन भाइ॥

× × ×

गोपी कहति धन्य हम नारी।
धन्य दूध, धनि दधि, धनि माखन, हम परुसति जेंवत गिरधारी॥
धन्य घोष, धनि दिन, धनि निसि वह, धनि गोकुल प्रगटे बनवारी।
धन्य सुकृत पाछिलौ, धन्य धनि नंद, धन्य जसुमति महतारी॥
धनि धनि ग्वाल, धन्य वृन्दावन, धन्य भूमि यह अति सुखकारी।
धन्य दान, धनि कान्ह मंगैया, धन्य सूर त्रिन द्रुम बन डारी॥

× × ×

रीती मटुकी सीस धरैं।
बन की घर की सुरति न काहूँ, लेहु दही यह कहति फिरैं॥
कबहुँक जाति कुंज भीतरि कौं, तहाँ स्याम की सुरति करैं।
चौंकि परतिं, कछु तन सुधि आवति, जहाँ तहाँ सखि सुनति ररैं॥
तब यह कहतिं कहौ मैं इनसौं, भ्रमि भ्रमि बन मैं बृथा मरैं।
सूर स्याम कै रस पुनि छाकतिं, वैसैं हीं ढँग बहुरि ढरैं॥

× × ×

तरुनी स्याम रस मतवारि।
प्रथम जोबन-रस चढ़ायौ, अतिहि भई खुमारि॥
दूध नहिं, दधि नहीं, माखन नहीं, रीतौ माट।
महा-रस अँग-अंग पूरन, कहाँ घर, कहँ बाट॥
मातु-पितु गुरुजन कहाँ के, कौन पति, को नारि।
सूर प्रभु कै प्रेम पूरन, छकि रहीं ब्रज नारि॥

× × ×

कोउ माई लैहै री गोपालहिं।
दधि कौ नाम स्याम सुन्दर-रस, बिसरि गयौ ब्रज-बालहिं॥
मटुकी सीस, फिरत ब्रज-बीथिनि, बोलति बचन रसालहिं।
उफनत तक्र चहुँ दिसि चितवत, चित लाग्यौ नँद-लालहिं॥

हँसति, रिसाति, बुलावति, बरजति, देखहु इनकी चालहिं।
सूर स्याम बिनु और न भावै, या बिरहिनि बेहालहिं॥

× × ×

लोक-सकुच कुल-कानि तजी।
जैसैं नदी सिंधु कौं धावै, वैसैंहि स्याम भजी॥
मातु पिता बहु त्रास दिखायौ, नैकुँ न डरी, लजी।
हारि मानि बैठे, नहिं लागति, बहुतै बुद्धि सजी॥
मानति नहीं लोक मरजादा, हरि कैं रंग मजी।
सूर स्याम कौं मिलि, चूनौ-हरदी ज्यौं रंग रँजी॥

× × ×

कहा कहति तू मोहिं री माई।
नंद-नँदन मन हरि लियौ मेरौ, तब तैं मोकौं कछु न सुहाई॥
अब लौं नहिं जानति मैं को ही, कब तैं तू मेरैं ढिग आई।
कहाँ गेह, कहँ मातु पिता हैं, कहाँ सजन, गुरुजन कहँ भाई॥
कैसी लाज, कानि है कैसी, कहा कहति ह्वै ह्वै रिसहाई?।
अब तौ सूर भजी नँद-लालहिं, की लघुता की होइ बड़ाई॥

× × ×

मेरे कहे मैं कोउ नाहिं।
कह कहौं, कछु कहि न आवै, नैंकुहूँ न डराहिं॥
नैन ये हरि-दरस-लोभी, स्रवन सब्द-रसाल।
प्रथमहीं मन गयौ तन तजि, तब भई बेहाल॥
इंद्रियनि पर भूप मन है, सबनि लियौ बुलाइ।
सूर प्रभु कौं मिले सब ये, मोहिं करि गए बाइ॥

× × ×

अब तौ प्रगट भई जग जानी!
वा मोहन सौं प्रीति निरंतर, क्यौंऽब रहैगी छानी॥
कहा करौं सुन्दरि मूरति, इन नैननि माँझ समानी।
निकसति नहीं बहुत पचि हारी, रोम रोम अरुझानी॥
अब कैसैं निरवारि जाति है, मिली दूध ज्यौं पानी।
सूरदास प्रभु अन्तरजामी, उर अन्तर की जानी॥

× × ×

नंदलाल सौं मेरौ मन मान्यौ, कहा करेगौ कोउ ।
मैं तौ चरन-कमल लपटानी, जो भावै सो होउ ।।
बाप रिसाइ, माइ घर मारै, हंसैं बिराने लोग ।
अब तौ स्यामहिं सौं रति बाढ़ी, बिधना रच्यौ सँजोग ।।
जाति महति पति जाइ न मेरी, अरु परलोक नसाइ ।
गिरिधर बर मैं नैंकु न छाँड़ौं, मिली निसान बजाइ ।।
बहुरि कबहिं यह तन धरि पैहौं, कहँ पुनि श्रीबनबारि ।
सूरदास स्वामी कै ऊपर, यह तन डारौं वारि ।।

× × ×

करन दै लोगनि कौं उपहास ।
मन क्रम बचन नंद-नंदन कौ, नैकु न छाड़ौं पास ।।
सब या ब्रज के लोग चिकनियाँ, मेरे भाएं घास ।
अब तौ यहै बसी री माई, नहिं मानौं गुरु त्रास ।।
कैसैं रह्यौ परै री सजनी, एक गाँव कै बास ।
स्याम मिलन की प्रीति सखी री, जानत सूरजदास ।।

× × ×

देखौ माई सुन्दरता कौ सागर ।
बुधि-बिबेक बल पार न पावत, मगन होत मन नागर ।।
तनु अति स्याम अगाध अंबु-निधि, कटि पत पीत तरंग ।
चितवत चलत अधिक रुचि उपजति, भँवर परति सब अंग ।।
नैन - मीन, मकराकृत कुंडल, भुज सरि सुभग भुजंग ।
मुक्ता - माल मिलीं मानौ, द्वै सुरसरि एकै संग ।।
कनक खचित मनिमय आभूषण, मुख, स्रम-कन सुख देत ।
जनु जल-निधि मथि प्रगट कियौ ससि, श्री अरु सुधा समेत ।।
देखि सरूप सकल गोपी जन, रहीं बिचारि-बिचारि ।
तदपि सूर तरि सकीं न सोभा, रहीं प्रेम पचि हारि ।।

× × ×

स्याम अँग जुवती निरखि भुलानी ।
कोउ निरखति कुंडल की आभा, इतनेहिं माँझ बिकानी ।।
ललित कपोल निरखि कोउ अटकी, सिथिल भई ज्यौं पानी ।
देह-गेह की सुधि नहिं काहूँ, हरषति कोउ पछितानी ।।
कोउ निरखति रही ललित नासिका, यह काहू नहिं जानी ।
कोउ निरखति अधरनि की सोभा, फुरति नहीं मुख बानी ।।

कोउ चकित भई दसन-चमक पर, चकचौंधी अकुलानी।
कोउ निरखति दुति चिबुक चारु की, सूर तरुनि बितताnी॥

× × ×

मैं बलि जाउँ स्याम-मुख-छबि पर।
बलि-बलि जाउँ कुटिल कच बिथुरे, बलि भृकुटी लिलाट पर॥
बलि-बलि जाउँ चारु अवलोकनि, बलि बलि कुंडल-रबि की।
बलि-बलि जाउँ नासिका सुललित, बलिहारी वा छबि की॥
बलि-बलि जाउँ अरुन अधरनि की, बिद्रुम-बिंब लजावन।
मैं बलि जाउँ दसन चमकनि की, बारौ तड़ितनि सावन॥
मैं बलि जाउँ ललित टोड़ी पर, बलि मोतिनि की माल।
सूर निरखि तन-मन बलिहारौं, बलि बलि जसुमति-लाल॥

× × ×

स्याम-कमल पद-नख की सोभा।
जे नख चंद्र इंद्र-सिर परसे, सिव बिरंचि मन लोभा॥
जे नख चंद्र सनक मुनि ध्यावत, नहि पावत भरमाहीं।
ते नख चंद्र प्रगट ब्रज-जुवती, निरखि निरखि हरषाहीं॥
जे नख चंद्र फनिंद-हृदय तैं, एकौ निमिष न टारत।
जे नख चंद्र महा मुनि नारद, पलक न कहूँ बिसारत॥
जे नख चंद्र भजन खल नासत, रमा हृदय जे परसति।
सूर स्याम नख-चंद्र बिमल-छबि, गोपी जन मिलि दरसति॥

× × ×

नैन न मेरे हाथ रहे।
देखत दरस स्याम सुंदर कौ, जल की ढरनि बहे॥
वह नीचे कौ धावत आतुर, वैसेहि नैन भए।
वह तौ जाइ समात उदधि मैं, ये प्रति अंग रए॥
वह अगाध कहुँ वार पार नहिं, येउ सोभा नहिं पार।
लोचन मिले त्रिबेनी ह्वै कै, सूर समुद्र अपार॥

× × ×

इन नैननि मोहिं बहुत सतायौ।
अब लौ कानि करी मैं सजनी, बहुतै मूँड़ चढ़ायौ॥
निदरे रहत गहे रिस मोसौं, मोहीं दोष लगायौ।
लूटत आपुन श्री-अँग-सोभा, ज्यौं निधनी धन पायौ॥

निसिहूँ दिन ये करत अचगरी, मनहिं कहा धौं आयौ ।
सुनहु सूर इनकों प्रतिपालत, आलस नैकु न लायौ ॥

× × ×

नैननि सौं झगरौ करिहौं री ।
कहा भयौ जौ स्याम-संग हैं, बाँह पकरि सम्मुख लरिहौं री ॥
जन्महिं तैं प्रतिपालि बड़े किये, दिन-दिन कौ लेखौ करिहौं री ।
रूप-लूट कीन्ही तुम काहैं, अपने बांटे कौ धरिहौं री ॥
एक मातु-पितु भवन एक रहे, मैं काहैं उनकौं डरिहौं री ।
सूर अस जो नहीं देहिगे, उनकैं रँग मैं हूँ ढरिहौं री ॥

× × ×

नैना घूँघट मैं न समात ।
सुन्दर बदन नंद-नंदन कौ, निरखि-निरखि न अघात ॥
अति रस लुब्ध महा मधु लंपट, जानत एक न बात ।
कहा कहौं दरसन-सुख माते, ओट भएं अकुलात ॥
बार बार बरजत हौं हारी, तऊ टेव नहिं जात ।
सूर तनक गिरिधर बिनु देखै, पलक कलप सम जात ॥

× × ×

ये नैना मेरे ढीठ भए री ।
घूँघट-ओट रहत नहिं रोकैं, हरि-मुख देखत लोभि गए री ॥
जउ मैं कोटि जतन करि राखे, पलक-कपाटनि मूँदि लए री ।
तउ ते उमंगि चले दोउ हठ करि, करौं कहा मैं जान दए री ॥
अतिहिं चपल, बरज्यौ नहिं मानत, देखि बदन तन फेरि नए री ।
सूर स्याम सुन्दर-रस अटके, मानहुँ लोभी उहँइ छए री ॥

× × ×

अंखियाँ हरि के हाथ बिकानी ।
मृदु मुसुकानि मोल इनि लीन्ही, यह सुनि सुनि पछुतानी ॥
कैसै रहति रहीं मेरैं बस, अब कछु औरै भांति ।
अब वै लाज मरतिं मोहिं देखत, बैठीं मिलि हरि-पांति ॥
सपने की सी मिलनि करति हैं, कब आवतिं कब जाति ।
सूर मिलीं ढरि नंद-नंदन कौं, अनत नहीं पतियाति ॥

× × ×

बूझत स्याम कौन तू गोरी ।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी ॥

काहे कौं हम ब्रज-तन आवति, खेलति रहतिं आपनी पौरी ।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद-ढोटा, करत फिरत माखन-दधि-चोरी ।।
तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौ संग मिलि जोरी ।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी ।।

× × ×

बड़ौ मंत्र कियौ कुँवर कन्हाई ।
बार-बार लै कंठ लगायौ, मुख चूम्यौ दियौ घरहिं पठाई ।।
धन्य कोषि वह महरि जसोमति, जहाँ अवतरयौ यह सुत आई ।
ऐसौ चरित तुरतहीं कीन्हौ, कुँवरि हमारी मरी जिवाई ।।
मनहीं मन अनुमान कियौ यह, बिधिना जोरी भली बनाई ।
सूरदास प्रभु बड़े गारुड़ी, ब्रज घर-घर यह धैरु चलाई ।।

× × ×

तुम सौं कहा कहौ सुन्दर घन ।
या ब्रज मैं उपहास चलत है, सुनि सुनि स्रवन रहति मनहीं मन ।।
जा दिन सवनि पछारि, नोइ करि, मोहि दुहि नई धेनु बंसीबन ।
तुम गही बाहँ सुभाइ आपनै हौं, चितई हंसि नैकु बदन तन ।।
ता दिन तै घर मारग जित तित, करत चवाव सकल गोपीजन ।
सूर स्याम अब साँच पारिहौं, यह पतिव्रत तुम सौं नँद-नंदन ।।

× × ×

मोसौं कहा दुरावति राधा ।
कहाँ मिली नँद-नंदन कौं, जिनि पुरई मन की साधा ।।
व्याकुल भई फिरहि अबहीं, काम - बिथा तनु वाधा ।
पुलकित रोम रोम गद गद, अब अँग अँग रूप अगाधा ।।
नहिं पावत जो रस जोगी जन, जप तप करत समाधा ।
सुनहुँ सूर तिहिं रस परिपूरन, दूरि कियौ तनु दाधा ।।

× × ×

स्याम कौन कारे की गोरे ।
कहाँ रहत काके पै ढोटा, बृद्ध, तरुन की धौं हैं भोरे ।।
रहँई रहत कि और गाउँ कहुँ, मैं देखे नाहिं न कहुँ उनको ।
कहै नहीं समुझाइ बात यह, मोहिं लगावति हौ तुम जिनकौ ।।
कहाँ रहौं मैं, वैं धौं कहँकै, तुम मिलवति हो काहैं ऐसी ।
सुनहु सूर मोसी भोरी कौं, जोरि जोरि लावति हौ कैसी ।।

× × ×

खेलन कौं मैं जाउँ नहीं।
और लरिकिनी घर घर खेलहिं, मोहीं कौं पै कहत तुहीं॥
उनकै मातु पिता नहिं कोई, खेलत डोलति जहीं तहीं।
तोसीं महतारी बहि जाइ न, मैं रैहौं तुमहीं बिनुहीं॥
कबहूँ मोकौं कछू लगावति, कबहुँ कहति जनि जाहु कही।
सूरदास बातैं अनखौहीं, नाहिंन मौ पै जाति सही॥

× × ×

मनहीं मन रीझति महतारी।
कहा भई जौ बाढ़ि तनक गई, अबहीं तौ मेरी है बारी॥
झूठें हीं यह बात उड़ी है, राधा-कान्ह कहत नर-नारी।
रिस की बात सुता के मुख की, सुनत हँसति मनहीं मन भारी॥
अब लौं नहीं कछू इहिं जान्यौ, खेलत देखि लगावै गारी।
सूरदास जननी उर लावति, मुख चूमति पोंछति रिस टारी॥

× × ×

चितवनि रोकै हूँ न रही।
स्याम सुंदर सिंधु-सनमुख, सरित उमंगि बही॥
प्रेम-सलिल प्रवाह भँवरनि, मिति न कबहुँ लही।
लोभ - लहर - कटाच्छ, घूँघट - पट - करार ढही॥
थके पल पथ, नाव धीरज परति नहिंन गही।
मिली सूर सुभाव स्यामहिं, फेरिहू न चही॥

× × ×

राधा परम निर्मल नारि।
कहति हौं मन कर्मना करि, हृदय-दुविधा टारि॥
स्याम कौं इक तुहीं जान्यौ, दुराचारिनि और।
जैसै घट पूरन न डोलै, अध भरौ डगडौर॥
धनी धन कबहूँ न प्रगटै, धरै ताहि छपाइ।
तै महानग स्याम पायौ, प्रगटि कैसै जाइ॥
कहति हौं यह बात तोसौं, प्रगट करिहौ नाहिं।
सूर सखी सुजान राधा, परसपर मुसुकाहिं॥

× × ×

राधा स्याम की प्यारी।
कृष्न पति सर्बदा तेरे, तू सदा नारी॥

सुनत बानी सखी-मुख की, जिय भयौ अनुराग।
प्रेम-गदगद, रोम पुलकित, समुझि अपनौ भाग ॥
प्रीति परगट कियौ चाहै, बचन बोलि न जाइ।
नंद - नंदन काम - नायक, रहे नैननि छाइ ॥
हृदय तै कहुँ टरत नाहीं, कियौ निहचल बास।
सूर प्रभु रस भरी राधा, दुरत नहीं प्रकास ॥

× × ×

जा दिन तैं हरि दृष्टि परे री।
ता दिन तैं मेरे इन नैननि, दुख सुख सब बिसरे री ॥
मोहन अंग गुपाल लाल के, प्रेम - पियूष भरे री।
बसे उहाँ मुसुकनि-बाँह ले, रचि रुचि भवन करे री ॥
पठवति हौं मन तिनहिं मनावन, निसिदिन रहत अरे री।
ज्यों ज्यों जतन करति उलटावति, त्यों त्यों उठत खरे री ॥
पचिहारी समुझाई ऊँच-निच, पुनि-पुनि पाइ परे री।
सो सुख सूर कहाँ लौ बरनौं, इक टक तैं न टरे री ॥

× × ×

स्याम करत हैं मन की चोरी।
कैसे मिलत आनि पहिले ही, कहि-कहि बतियाँ भोरी ॥
लोक-लाज की कानि गँवाई, फिरति गुड़ी बस डोरी।
ऐसे ढंग स्याम अब सीख्यौ, चोर भयौ चित कौ री ॥
माखन की चोरी सहि लीन्ही, बात रही वह थोरी।
सूर स्याम भयौ निडर तबहिं तैं, गोरस लेत अँजोरी ॥

× × ×

तुम जानति राधा है छोटी।
चतुराई अँग-अंग भरी है, पूरन-ज्ञान, न बुद्धि की मोटी ॥
हमसौं सदा दुराव कियौ इहिं, बात कहै मुख चोटी-पोटी।
कबहुँ स्याम तै नै कुन बिछुरति, किये रहति हमसौ हठ ओटी ॥
नँद-नंदन याही कै बस हैं, बिबस देखि बेंदी छबि-चोटी।
सूरदास प्रभु वै अति खोटे, यह उनहूँ ते अतिहीं खोटी ॥

× × ×

कुल की लाज अकाज कियौ।
तुम बिनु स्याम सुहात नहीं कछु, कहा करौं अति जरत हियौ ॥

आपु गुप्त करि राखी मोकौं, मैं आयसु सिर मानि लियौ ।
देह-गेह-सुधि रहसि बिसारे, तुम तै हितु नहिं और बियौ ।।
अब मोकौं चरननि तर रखौ, हंसि नँद नँदन अंग छियौ ।
सूर स्याम श्रीमुख की बानी, तुम पै प्यारी बसत जियौ ।।

× × ×

सुंदर स्याम कमल-दल लोचन ।
विमुख जननि की संगति कौ दुख, कब धौं करिहौ मोचन ।।
भवन मोहिं भाठी सौ लागत, मरति सोचहीं सोचन ।
ऐसी गति मेरी तुम आगै, करत कहा दिय दोचन ।।
धिक वै मातु-पिता, धिक भ्राता, देत रहत मोहिं खोंचन ।
सूर स्याम मन तुमहिं लगान्यौ, हरद - चून-रँग-रोचन ।।

× × ×

कुल की कानि कहाँ लगि करिहौं ।
तुम आगै मैं कहौं जु साँची, अब काहू नहिं डरिहौं ।।
लोग कुटुंब जग केजे कहियत, पेला सबहिं निदरिहौं ।
अब यह दुख सहि जात न मोपै, बिमुख बचन सुनि मरिहौं ।।
आपु सखी तौ सब नीके हैं, उनके सुख कह सरिहौं ।
सूरदास प्रभु चतुर-सिरोमनि, अबकै हौं कछु लरिहौं ।।

× × ×

राधा डर डरति घर आई ।
देखत हीं कीरति महतारी, हरषि कुँवरि उर लाई ।।
धीरज भयौ सुता-माता जिय; दूरि गयौ तनु-सोच ।
मेरी कौं मैं काहैं त्रासी, कहा कियौ यह पोच ।।
लै री मैया हार मोतिसारी, जा कारन मोहिं त्रासी ।
सूर राधिका के गुन ऐसे, मिलि आई अबिनासी ।।

× × ×

मैं अपनी सी बहुत करी री ।
मोसौं कहा कहति तू माई, मन कै सँग मैं बहुत लरी री ।।
राखौं हटकि उतहिं कौ धावत, वाकी ऐसियै परनि परी री ।
मोसौं बैर करै रति उनसौं, मोकौं राख्यौ द्वार खरी री ।।
अजहूँ मान करौं, मन पाऊँ, यह कहि इत-उत चितै डरी री ।
सुनहुँ सूर पाँचननि मत एकै, मैं ही मोही रही परी री ।।

× × ×

स्याम भए राधा बस ऐसै ।
चातक स्वाति, चकोर चंद ज्यौं चक्रवाक रवि जैसै ।।
नाद कुरंग, मीन जल की गति, ज्यौं तनु कै बस छाया ।
इकटक नैन अंग-छबि मोहे, थकित भए पति जाया ।।
उठै उठत, बैठै बैठत हैं, चलैं चलत सुधि नाहीं ।
सूरदास बड़भागिनि राधा, समुझि मनहिं मुसुकाहीं ।।

× × ×

निरखि पिय-रूप तिय चकित भारी ।
किधौ वै पुरुष मैं नारि, की वै नारि, मैं ही हौं तन सुधि बिसारी ।।
आपु तन चितै सिर मुकुट, कुंडल स्रवन, अधर मुरली, मालबन बिराजै ।
उतहिं पिय-रूप सिर माँग बेनी सुभग, भाल बेंदी-बिंदु महा छाजै ।।
नागरी हठ तजौ, कृपा करि मोहिं भजौ, परी कह चूक सो कहौ प्यारी ।
सूर नागरी प्रभु बिरह रस मगन भई, देखि छबि हँसत गिरिराज धारी ।।

× × ×

स्यामा स्याम कुंज बन आवत ।
भुज भुज-कंठ परस्पर दीन्हे, यह छबि उनहीं पावत ।।
इततै चंद्रावली - जाति ब्रज, उततै ये दोउ आए ।
दूरिहि तै चितवति उनहीं तन, इक टक नैन लगाए ।।
एक राधिका दूसरि को है, याकौं नहिं पहिचानौं ।
ब्रज वृषभानु-पुरा जुवतिनि कौं, इक-इक करि मैं जानौं ।।
यह आई कहुँ और गाँव तै, छबि साँवरी सलोनी ।
सूर आजु यह नई बतानी, एकौ अँग न बिलोनी ।।

× × ×

इनकौं ब्रजहीं यों न बुलावहु ।
की वृषभानु पुरा, की गोकुल, निकटहिं आनि बसावहु ।।
येऊ नवल, नवल तुमहूँ हौ, मोहन कौ दोउ भावहु ।
मोकौ देखि कियौ अति घूँघट, काहैं न लाज छुड़ावहु ।।
यह अचरज देख्यौ नहिं कबहूँ, जुवतिहिं जुवति दुरावहु ।
सूर सखी राधा सों पुनि पुनि, कहति जु हमहिं मिलावहु ।।

× × ×

ऐसी कुँवरि कहाँ तुम पाई ।
राधा हूँ तै नख-सिख सुंदरि, अब लौं कहाँ दुराई ।।

काकी नारि, कौन की बेटी, कौन गाउँ तै आई।
देखी सुनी न ब्रज, बृंदाबन, सुधि-बुधि हरति पराई॥
धन्य सुहाग भाग याकौ, यह जुवतिनि की मनभाई।
सूरदास प्रभु हरषि मिले हंसि, लै उर कंठ लगाई॥

× × ×

अबिगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूँगैं मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौं अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जाति जुगति-बिनु निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै॥

× × ×

चलौ किन मानिनि कुंज-कुटीर।
तुव बिनु कुँवर कोटि बनिता तजि, सहत मदन पीर॥
गदगद स्वर संभ्रम अति आतुर, स्रवत सुलोचन नीर।
क्वासि क्वासि बृषभानु नंदनी, बिलपत बिपिन अधीर॥
बंसी बिसिष, माल ब्यालावलि, पंचानन पिक कीर।
मलयज गरल, हुतासन मारुत, साखामृग रिपु चीर॥
हिय मैं हरषि प्रेम अति आतुर, चतुर चली पिय तीर।
सुनि भयभीत बज्र के पिंजर, सर सुरति - रनधीर॥

× × ×

स्याम नारि कैं बिरह भरे।
कबहुँक बैठत कुँज द्रुमनि तर, कबहुँक रहत खरे॥
कबहुँ तन की सुरति बिसारत, कबहुँक तनु सुधि आवत।
तब नागरि के गुनहि बिचारत, तेई गुन गनि गावत॥
कहूँ मुकुट, कहुँ मुरलि रही गिरि, कहूँ कटि पीत पिछौरी।
सूर स्याम ऐसी गति भीतर, आई दूतिका दौरी॥

× × ×

नैकु निकुज कृपा करि आइयै।
अति रिस कृस ह्वै रही किसोरी, करि मनुहारी मनाइयै॥
कर कपोल अंतर नहिं पावत, अति उसास तन ताइयै।
छूटे चिहुर बदन कुम्हिलानौ, सुहथ सँवारि बनाइयै॥

इतनौ कहा गांठि कौ लागत, जौ बातनि सुख पाइयै।
रूठेहिं आदर देत सयाने, यहै सूर जस गाइयै॥

× × ×

रहि री मानिनि कान न कीजै।
यह जोबन अँजुरी कौ जल है, ज्यौं गुपाल मांगै त्यौं दीजै॥
छिनु छिनु घटति, बढ़ति नहिं रजनी, ज्यों ज्यों कलाचंद्र की छीजै।
पूरब पुन्य सुकृत फल तेरौ, काहैं न रूप नैन भरि पीजै॥
सौंह करति तेरे पाँइनि की, ऐसी जियनी दसौ दिन जीजै।
सूर सु जीवन सफल जगत कौ, बैरी बांधि बिबस करि लीजै॥

× × ×

यह ऋतु रूसिबे की नाहीं।
बरषत मेघ मेदिनी कै हित, प्रीतम हरषि मिलाहीं॥
जेती बेलि ग्रीष्म ऋतु डाहीं, ते तरवर लपटाहीं।
जे जल बिनु सरिता ते पूरन, मिलन समुद्रहिं जाहीं॥
जोबन धन है दिवस चारि कौ, ज्यों बदरी की छाहीं॥
मैं दंपति-रस-रीति कही है, समुझि चतुर मन माहीं।
यह चित धरि री सखी राधिका, दै दूती कौं बाहीं॥
सरद उठि चली री प्यारी, मेरैं सँग पिय पाहीं॥

× × ×

तोहि किन रूठन सिखई प्यारी।
नवल बैस नव नागरि स्यामा, वे नागर गिरिधारी॥
सिगरी रैनि मनावति बीती, हा हा करि हौं हारी।
एते पर हठ छाँड़ति नाहीं, तू वृषभानु-दुलारी॥
सूरदास-समय-ससि-दरस समर सर, लागै उन तन भारी।
मेटहु त्रास दिखाइ बदन-बिधु, सूर स्याम हितकारी॥

× × ×

हरि-मुख राधा-राधा बानी।
धरिनी परे अचेत नहीं सुधि, सखी देखि अकुलानी॥
बासर गयौ, रैनि इक बीती, बिनु भोजन बिनु पानी।
बाहँ पकरि तब सखिनि जगायौ, धनि-धनि सारँगपानी॥
ह्याँ तुम बिबस गए हौ ऐसे, ह्याँ तौ वे बिबसानी।
सूर बने दोउ नारि पुरुष तुम, दुहुँ की अकथ कहानी॥

× × ×

झूलत स्याम स्यामा संग।
निरखि दंपति अंग सोभा, लजत कोटि अनंग॥
मंद त्रिविध समीर सीतल, अंग अंग सुगंध।
मचत उड़त सुबास सँग, मन रहे मधुकर बंध॥
तैसियै जमुना सुभग कहँ, रच्यौ रंग हिंडोल।
तैसियै बृज-बधू बनि, हरि चितै लोचन कोर॥
तैसोई बृंदा-बिपिन-घन-कुँज-द्वार बिहार।
बिपुल गोपी, बिपुल बन गृह, रवन नंदकुमार॥
नित्य लीला, नित्य आनँद, नित्य मंगल गान।
सूर सुर मुनि मुखनि अस्तुति, धन्य गोपी कान्ह॥

× × ×

हरि सँग खेलति हैं सब फाग।
इहिं मिस करति प्रगट गोपी, उर-अंतर कौ अनुराग॥
सारी पहिरि सुरँग, कसि कंचुकि, काजर दै-दै नैन।
बनि-बनि निकसि-निकसि भईं ठाढ़ी, सुनि माधौ के बैन॥
डफ, बाँसुरी रुंज अरु महुअरि, बाजत ताल मृदंग।
अति आनंद मनोहर बानी, गावत उठत तरंग॥
एक कोध गोबिंद ग्वाल सब, एक कोध ब्रज-नारि।
छांड़ि सकुच सब देतिं परस्पर, अपनी भाई गारि॥
मिलि दस पाँच अली चली कृष्नहिं, गहि लावतिं अचकाइ।
भरि अरगजा अबीर कनक-घट, देतिं सीस तैं नाइ॥
छिरकतिं सखी कुमकुमा केसरि, भुरकतिं बंदन धूरि।
सोभित है तनु साँझ-समै-घन, आए हैं मनु पूरि॥
दसहूँ दिसा भयौ परिपूरन, सूर सुरंग प्रमोद।
सुर-बिमान कौतूहल भूले, निरखत स्याम-बिनोद॥

× × ×

आजु रैनि नहिं नींद परी।
जागत गिनत गगन के तारे, रसना रटत गोविंद हरी॥
वह चितवनि, वह रथ की बैठनि, जब अक्रूर की बाँह गही।
चितवति रही ठगीसी ठाढ़ी, कहि न सकति कछु काम दही॥
इते मान ब्याकुल भइ सजनी, आरजपंथहुँ तैं बिडरी।
सूरदास प्रभु जहाँ सिधारे, कितिक दूर मथुरा नगरी॥

× × ×

जसुदा कान्ह कान्ह कै बूझै।
फूटि न गईं तुम्हारी चारौ, कैसैं मारग सूझै॥
इक तौ जरी जात बिनु देखैं, अब तुम दीन्हौ फूँकि।
यह छतिया मेरे कान्ह कुँवर बिनु, फटि न भई द्वै टूक॥
धिक तुम धिक ये चरन अहौ पति, अध बोलत उठि धाए।
सूर स्याम बिछुरन की हम पै, दैन बधाई आए॥

× × ×

नंद हरि तुमसौं कहा कह्यौ।
सुनि सुनि निठुर बचन मोहन के, कैसे हृदय रह्यौ॥
छांड़ि स्नेह चले मंदिर कत, दौरि न चरन गह्यौ।
दरकि न गई बज्र की छाती, कत यह सूल सह्यौ॥
सुरति करत मोहन की बातैं, नैननि नीर बह्यौ।
सुधि न रही अति गलित गात भयौ, मनु डसि गयौ अह्यौ॥
उन्हैं छांड़ि गोकुल कत आए, चाखन दूध दह्यौ।
तजे न प्रान सूर दसरथ लौं, हुतौ जन्म बिबह्यौ॥

× × ×

कहाँ रह्यौ मेरौ मन-मोहन।
वह मूरति जिय तैं नहिं बिसरति, अंग अंग सब सोहन॥
कान्ह बिना गौवैं सब व्याकुल, को ल्यावै भरि दोहन।
माखन खात खवावत ग्वालनि, सखा लिए सब गोहन॥
जब वै लीला सुरति करति हौं, चित चाहत उठि जोहन।
सूरदास प्रभु के बिछुरे तैं, मरियत है अति छोहन॥

× × ×

वै कह जानैं पीर पराई।
सुंदर स्याम कमल-दल लोचन, हरि हलधर के भाई॥
मुख मुरली सिर मोर पखौवा, बन बन धेनु चराई।
जे जमुना जल रंग रंगे हैं, अजहुँ न तजत कराई॥
वहई देखि कूबरी भूले, हम सब गईं बिसराई।
सूरज चातक बूँद भई है, हेरत रहे हिराई॥

× × ×

लै आवहु गोकुल गोपालहिं।
पाइंनि परि क्यौं हूँ बिनती करि, छल बल बाहु बिसालहिं॥
अब की बार नैकु दिखरावहु, नंद आपने लालहिं।
गाइनि गनत ग्वार गोसुत सँग, सिखवत बैंन रसालहिं॥

जद्यपि महाराज सुख संपति, कौन गनै मनि लालहिं।
तदपि सूर वै छिन न तजत हैं, वा घुँघुची की मालहिं।।

× × ×

करि गए थोरे दिन की प्रीति।
कहँ वह प्रीति कहाँ यह बिछुरनि, कहँ मधुबन की रीति।।
अब की बेर मिलौ मनमोहन, बहुत भई बिपरीति।
कैसे प्रान रहत दरसन बिनु, मनहु गए जुग बीति।।
कृपा करहु गिरिधर हम ऊपर, प्रेम रह्यौ तन जीति।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु, भईं भुस पर की भीति।।

× × ×

प्रीति करि दीन्ही गरैं छुरी।
जैसे बधिक चुगाइ कपट-कन, पाछैं करत बुरी।।
मुरली मधुर चेप काँपा करि, मोर चंद्र फँदवारि।
बंक बिलोकनि लगी, लोभ बस, सकी न पंख पसारि।।
तरफत छांड़ि गए मधुबन कौं, बहुरि न कीन्ही सार।
सूरदास प्रभु संग कल्पतरु, उलटि न बैठी डार।।

× × ×

नाथ अनाथनि की सुधि लीजै।
गोपी, ग्वाल, गाइ, गोसुत सब, दीन मलीन दिनहिं दिन छीजैं।।
नैननि जलधारा बाढ़ी अति, बूड़त ब्रज किन करि गहि लीजै।
इतनी बिनती सुनहु हमारी, बारक हूँ पतिया लिखि दीजै।।
चरन कमल दरसन नव नवका, करुनासिंधु जगत जस लीजै।
सूरदास प्रभु आस मिलन की, एक बार आँवन ब्रज लीजै।।

× × ×

अब वै बातें उलटि गईं।
जिन बातनि लागत सुख आली, तेऊ दुसह भईं।।
रजनी स्याम स्याम सुंदर सँग, अरु पावस की गरजनि।
सुख समूह की अवधि माधुरी, पिय रस बस की तरजनि।।
मोर पुकार गुहार कोकिला, अलि गुंजार सुहाई।
अब लागति पुकार दादुर सम, बिनही कुँवर कन्हाई।।
चंदन चंद समीर अगिन सम, तनहिं देत दव लाई।
कालिंदी अरु कमल कुसुम सब, दरसन ही दुखदाई।।

सरद बसंत सिसिर अरु ग्रीषम, हिम-रितु की अधिकाई।
पावस जरैं सूर के प्रभु बिनु, तरफत रैनि बिहाई॥

× × ×

मधुबन तुम क्यों रहत हरे।
बिरह बियोग स्याम सुंदर के, ठाढ़े क्यों न जरे॥
मोहन बेनु बजावत तुम तर, साखा टेकि खरे।
मोहे थावर अरु जड़ जंगम, मुनि जन ध्यान टरे॥
वह चितवनि तू मन न धरत है, फिरि फिरि पुहुप धरे।
सूरदास प्रभु बिरह दवानल, नख सिख लौं न जरे॥

× × ×

बहुरौ देखिबौ इहि भांति।
असन बाँटत खात बैठे, बालकन की पांति॥
एक दिन नवनीत चोरत, हौं रही दुरि जाइ।
निरखि मम छाया भजे, मैं दौरि पकरे धाइ॥
पोंछि कर मुख लई कनियाँ, तब गई रिसि भागि।
वह सुरति जिय जाति नाहीं, रहे छाती लागि॥
जिन घरनि वह सुख बिलोक्यौ, ते लगत अब खान।
सूर बिनु ब्रजनाथ देखे, रहत पापी प्रान॥

× × ×

फिरि ब्रज बसौ गोकुलनाथ।
अब न तुमहिं जगाइ पठवैं, गोधननि के साथ॥
बरजै न माखन खात कबहूँ, दह्यौ देत लुटाइ।
अब न देहिं उराहनौ, नँद-घरनि आगैं जाइ॥
दौरि दावरि देहि नहिं, लकुटी जसोदा पानि।
चोरी न देहिं उधारि कै, औगुनन कहिहैं आनि॥
कहिहैं न चरननि देन जावक, गुहन बेनी फूल।
कहिहैं न करन सिंगार कबहूँ, बसन जमुना कूल॥
कहिहैं न कबहूँ मान हम, हठिहैं न माँगत दान।
कहिहैं न मृदु मुरली बजावन, करन तुमसौं गान॥
देहु दरसन नंद - नंदन, मिलन की जिय आस।
सूर हरि के रूप कारन, मरत लोचन प्यास॥

× × ×

बारक जाइयौ मिलि माधौ।
को जानै तन छूटि जाइगौ, सूल रहै जिय साधौ॥
पहुनैंहु नंद बबा के आवहु, देखि लेउँ पल आधौ।
मिलैं ही मैं बिपरीत करी बिधि, होत दरस कौ बाधौ॥
सो सुखसिव सनकादि न पावत, जो सुख गोपिन लाधौ।
सूरदास राधा बिलपति है, हरि कौ रूप अगाधौ॥

× × ×

सखी इन नैननि तैं घन हारे।
बिनहीं रितु बरषत निसि बासर, सदा मलिन दोउ तारे॥
ऊरध स्वास समीर तेज अति, सुख अनेक द्रुम डारे।
बदन सदन करि बसे बचन खग, दुख पावस के मारे॥
दुरि दुरि बूँद परत कंचुकि पर, मिलि अंजन सौं कारे।
मानौ परनकुटी सिव कीन्ही, बिबि मूरति धरि न्यारे॥
घुमरि घुमरि बरषत जल छाँड़त, डर लागत अंधियारे।
बूड़त ब्रजहिं सूर को राखै, बिनु गिरिवरधर प्यारे॥

× × ×

निसि दिन बरषत नैन हमारे।
सदा रहति बरषा रितु हम पर, जब ते स्याम सिधारे॥
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे॥
आँसू सलिल सबै भइ काया, पल न जात रिस टारे।
सूरदास प्रभु यहै परेखौ, गोकुल काहैं बिसारे॥

× × ×

हरि दरसन को तरसतिं अंखियाँ।
झाँकतिं झखतिं झरोखा बैठी, कर मीड़तिं ज्यों मखियाँ॥
बिछुरीं बदन-सुधानिधि-रस तैं, लागतिं नहीं पल पंखियाँ।
इकटक चितवतिं उड़ि न सकतिं जनु, थकित भईं लखि सखियाँ॥
बार-बार सिर धुनतिं बिसूरतिं, बिरह-ग्राह जनु भखियाँ।
सूर सुरूप मिले तै जीवहिं, काट किनारे नखियाँ॥

× × ×

(मेरे) नैना बिरह की बेलि बई।
सींचत नैन-नीर के सजनी, मूल पताल गई॥
बिगसित लता सुभाई आपनै, छाया सघन भई।
अब कैसै निरवारौं सजनी, सब तन पसरि छई॥

को जानै काहू के जिय की, छिन छिन होत नई।
सूरदास स्वामी के बिछुरै, लागी प्रेम जई ॥

× × ×

हो, ता दिन कजरा मैं दैहौं।
जा दिन नंदनँदन के नैननि, अपने नैन मिलैहैं ॥
सुनि री सखी यहै जिय मेरै, भूलि न और चितैहैं।
अब हठ सूर यहै व्रत मेरौ, कौंकिर खै मरि जैहैं ॥

× × ×

लिखि नहिं पठवत हैं द्वै बोल।
द्वै कौड़ी के कागद मसि कौ, लागत है बहु मोल ?
हम इहि पार, स्याम पैले तट, बीच बिरह कौ जोर।
सूरदास प्रभु हमरे मिलन कौं, हिरदै कियौ कठोर ॥

× × ×

पिय बिनु नागिनि कारी रात।
जौ कहुँ जामिनि उवति जुन्हैया, डसि उलटी ह्वै जात ॥
जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत, प्रीति सिरानी जात।
सूर स्याम बिनु बिकल बिरहिनी, मुरि-मुरि लहरैं खात ॥

× × ×

मोकौं माई जमुना जम ह्वै रही।
कैसे मिलौं स्यामसुंदर कौं, बैरिनि बीच बही ॥
कितिक बीच मथुरा अरु गोकुल, आवत हरि जु नहीं।
हम अबला कछु मरम न जान्यौ, चलत न फेंट गही ॥
अब पछिताति प्रान दुख पावत, जाति न बात कही।
सूरदास प्रभु सुमिरि-सुमिरि गुन, दिन-दिन सूल सही ॥

× × ×

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ ॥
अलि-सुत प्रीति करी जल सुत सौं, संपुट माँज गह्यौ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ ॥
हम जौ प्रीति करी माधव सौं, चलत न कछू कह्यौ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ ॥

× × ×

प्रीति तौ मरिबौऊ न बिचारै।
निरखि पतंग ज्योति-पावक ज्यों, जरन न आपुं सँभारै ॥

प्रीति कुरंग नाद मन मोहित, बधिक निकट ह्वै मारै।
प्रीति परेवा उड़त गगन तै, गिरत न आपु सँभारै॥
सावन मास पपीहा बोलत, पिय पिय करि जु पुकारै।
सूरदास प्रभु दरसन कारन, ऐसी भांति बिचारै॥

× × ×

जनि कोउ काहू कैं बस होहि।
ज्यों चकई दिनकर बस डोलत, मोहि फिरावत मोहि॥
हम तौ रीझि लट्टू भई लालन, महा प्रेम तिय जानि।
बंधन अवधि भ्रमति निसि-बासर, को सुरझावत आनि॥
उरझे संग अंग अंगनि प्रति, बिरह बेलि की नाई।
मुकुलित कुसुम नैन निद्रा तजि, रूप सुधा सियराई॥
अति आधीन हीन-मति ब्याकुल, कहँ लौ कहौ बनाई।
ऐसी प्रीति-रीति रचना पर, सूरदास बलि जाई॥

× × ×

ये दिन रूसिबे के नाहीं।
कारी घटा पौन झकझोरै, लता तरुन लपटाहीं॥
दादुर मोर चकोर मधुप पिक, बोलत अंमृत बानी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बैरिन रितु नियरानी॥

× × ×

बहुरि हरि आवहिंगे किहि काम।
रितु बसंत अरु ग्रीषम बीते, बादर आए स्याम॥
छिन मंदिर छिन द्वारैं ठाढ़ी, यौं सूखति हैं घाम।
तारे गनत गगन के सजनी, बीतैं चारौ जाम॥
औरौ कथा सबै बिसराई, लेत तुम्हारौ नाम।
सूर स्याम ता दिन तैं बिछुरे, अस्थि रहे कै चाम॥

× × ×

किधौं घन गरजत नहिं उन देसनि!
किधौं हरि हरषि इंद्र हठि बरजे, दादुर खाए सेषनि॥
किधौं उहिं देस बगनि मग छांड़े, धरनि न बूँद प्रवेसनि
चातक मोर कोकिला उहिं बन, बधिकनि बधे बिसेषनि॥
किधौं उहिं देस बाल नहिं झूलतिं, गावतिं सखि न सुदेसनि।
सूरदास-प्रभु पथिक न चलहीं, कासौं कहौं संदेसनि॥

× × ×

आजु घन स्याम की अनुहारि।
आए उनइ साँवरे सजनी, देखि रूप की आरि॥
इंद्र धनुष मनु पीत बसन छबि, दामिनि दसन बिचारि।
जनु बगपांति माल मोतिनि की, चितवत चित्त निहारि॥
गरजत गगन गिरा गोबिंद मनु, सुनत नयन भरे वारि।
सूरदास गुन सुमिरि स्याम के, बिकल भईं ब्रजनारि॥

× × ×

हमारे माई मोरवा बैर परे।
घन गरजत बरज्यौ नहिं मानत, त्यों त्यों रटत खरे॥
करि करि प्रगट पंख हरि इनके, लै लै सीस धरे।
याही तैं न बदत बिरहिनि कौं, मोहन ढीठ करे॥
को जानै काहे तैं सजनी, हमसौं रहत अरे।
सूरदास परदेस बसे हरि, ये बन तैं न टरे॥

× × ×

सखी री चातक मोहिं जियावत।
जैसेहिं रैनि रटति हौं पिय पिय, तैसेहिं वह पुनि गावत॥
अतिहिं सुकंठ, दाह प्रीतम कैं, तारू जीभ न लावत।
आपुन पियत सुधा-रस अमृत, बोलि बिरहिनी प्यावत॥
यह पंछी जु सहाइ न होतौ, प्रान महा दुख पावत।
जीवन सुफल सूर ताही कौ, काज पराएँ आवत॥

× × ×

कोकिल हरि कौ बोल सुनाउ।
मधुबन तैं उपटारि स्याम कौं, इहिं ब्रज कौ लै आउ॥
जा जस कारन देत सयाने, तन मन धन सब साज।
सुजस बिकात बचन के बदलैं, क्यों न बिसाहतु आज॥
कीजै कछु उपकार परायौ, इहै सयानौ काज:
सूरदास पुनि कहँ यह अबसर, बिनु बसंत रितुराज।

× × ×

माई मोकौ चंद लग्यौ दुख दैन।
कहँ वै स्याम कहाँ वै बतियाँ, कहँ वै सुख की रैन।
तारे गनत गनत हैाँ हारी, टपकत लागे नैन
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, बिरहिनि कौं नहिं चैन॥

× × ×

अब या तनहिं राखि कह कीजै ।
सुनि री सखी स्याम सुंदर बिनु, बादि बिषम बिष पीजै ।।
कै गिरिऐ गिरि चढ़ि सुनि सजनी, सीस संकरहि दीजै ।
कै दहिऐ दारुन दावानल, जाइ जमुन धंसि लीजै ।।
दुसह बियोग बिरह माधौ के, को दिन ही दिन छीजै ।
सूर स्याम प्रीतम बिनु राधे, सोचि सोचि कर मींजै ।।

× × ×

सबैं सुख ले जु गए ब्रजनाथ ।
बिलखि बदन चितवतिं मधुबन तन, इन न गईं उठि साथ ।।
वह मूरति चित तै बिसरति नहिं, देखि साँवरे गात ।
मदन गोपाल ठगौरी मेली, कहत न आवै बात ।।
नंद-नँदन जु बिदेस गवन कियौ, बैसी मींजतिं हाथ ।
सूरदास प्रभु तुम्हरै बिछुरे, हम सब भई अनाथ ।।

× × ×

कबहुँ सुधि करत गुपाल हमारी ।
पूछत पिता नंद ऊधौ सौ, अरु जसुदा महतारी ।।
बहुतै चूक परी अनजानत, कहा अबकैं पछिताने ।
बासुदेव घर भीतर आए, मैं अहीर करि जाने ।।
पहिलै गर्ग कह्यौ हुतौ हमसौं, संग दुःख गयौ भूल ।
सूरदास स्वामी के बिछुरैं, राति दिवस भयौ सूल ।।

× × ×

ऊधौ कहा करैं लै पाती ।
जौ लौं मदनगुपाल न देखैं, बिरह जरावत छाती ।।
निमिष निमिष मोहि बिसरत नाहीं सरद सुहाइ राती ।
पीर हमारी जानत नाहीं, तुम हौ स्याम सँघाती ।।
यह पाती लै जाहु मधुपुरी, जहँ वै बसैं सुजाती ।
मन जु हमारे उहाँ लै गए, काम कठिन सर घाती ।।
सूरदास प्रभु कहा चहत हैं, कोटिक बात सुहाती ।
एक बेर मुख बहुरि दिखावहु, रहैं चरन रज-राती ।।

× × ×

इहि अंतर मधुकर इक आयौ ।
निज स्वभाव अनुसार निकट ह्वै, संदर सब्द सुनायौ ।।

पूछन लागीं ताहि गोपिका, कुबिजा तोहिं पठायौ।
कीधौं सूर स्याम सुंदर कौ, हमें संदेसौ लायौ॥

× × ×

(मधुप तुम) कहौ कहाँ तैं आए हौ।
जानति हौं अनुमान आपनैं, तुम जदुनाथ पठाए हौ॥
वैसेइ बसन, बरन तन सुंदर, वेइ भूषन सजि ल्याए हौ।
लै सरबसु सँग स्याम सिधारे, अब का पर पहिराए हौ॥
अहो मधुप एकै मन सबकौ, सु तौ उहाँ लै छाए हौ।
अब यह कौन सयान बहुरि ब्रज, ता कारन उठि धाए हौ॥
मधुबन की मानिनी मनोहर, तहीं जात जहँ भाए हौ।
सूर जहाँ लौं स्याम गात हैं, जानि भले करि पाए हौ॥

× × ×

रहु रे मधुकर मधु मतवारे।
कौन काज या निरगुन सौं, चिर जीवहु कान्ह हमारे॥
लोटत पीत पराग कीच मैं, बीच न अंग सँम्हारे।
बारंबार सरक मदिरा की, अपरस रटत उघारे॥
तुम जानत हौ वैसी ग्वारिनि, जैसे कुसुम तिहारे।
घरी पहर सबहिनि बिरमावत, जेते आवत कारे॥
सुंदर बदन कमल-दल लोचन, जसुमति नंद - दुलारे।
तन मन सूर अरपि रहीं स्यामहिं, कापै लेहिं उधारे॥

× × ×

मधुकर हम न होहिं वै बेलि।
जिन भजि तजि तुम फिरत और रंग, करन कुसुम-रस केलि॥
बारे तैं बर बारि बढ़ी हैं, अरु पोषी पिय पानि।
बिनु पिय परस प्रात उठि फूलत, होति सदा हित हानि॥
ये बेली बिरहीं बृंदाबन, उरझीं स्याम तमाल।
प्रेम - पुहुप - रस - बास हमारे, बिलसत मधुप गोपाल।
जोग समीर धीर नहिं डोलतिं, रूप डार दृढ़ लागीं।
सूर पराग न तजतिं हिए तैं, श्री गुपाल अनुरागीं॥

× × ×

प्रकृति जो जाकै अंग परी।
स्वान पूँछ कोउ कोटिक लागै, सूधी कहुँ न करी॥
जैसे काग भच्छ नहिं छांड़ै, जनमत जौन घरी।
धोए रंग जात नहिं कैसेहुँ, ज्यौं कारी कमरी॥

ज्यों अहि डसत उदर नहि पूरत, ऐसी धरनि धरी।
सूर होइ सो होइ सोच नहिं, तैसेइ एऊ री॥

× × ×

ऊधौ हरि गुन हम चकडोर।
गुन सौ ज्यों भावै त्यौं फेरौ, यहै बात को ओर॥
पैड़ पैड़ चलियै तो चलियै, ऊबट रपटे पाइँ।
चकडोरी की रीति यहै फिरि, गुन हीं सौं लपटाइ॥
सूर सहज गुन ग्रंथि हमारैं, दई स्याम उर माहि।
हरि के हाथ परे तौ छूटै, और जतन कछु नाहिं॥

× × ×

अँखियाँ हरि दरसन की प्यासी।
देख्यौ चाहति कमलनैन कौं, निसि-दिन रहति उदासी॥
आए ऊधौ फिरि गए आँगन, डारि गए गर फाँसी।
केसरि तिलक मोतिनि की माला, बृंदावन के बासी॥
काहू के मन की कोउ जानत, लोगनि के मन हाँसी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, करवत लैहौं कासी॥

× × ×

जब ते सुंदर बदन निहार्‌यौ।
ता दिनतैं मधुकर मन अटक्यौ, बहुत करी निकरै न निकार्‌यो॥
मातु, पिता, पति, बंधु, सुजन नहिं, तिनहूँ कौ कहिबौ सिर धार्‌यौ।
रही न लोक लाज मुख निरखत, दुसह क्रोध फीकौ करि डार्‌यौ॥
ह्वैबौ होइ सु होइ कर्मबस, अब जी कौ सब सोच निवार्‌यौ।
दासी भई जु सूरदास प्रभु, भलौ पोच अपनौ न बिचार्‌यौ।

× × ×

ऊधौ अंखियाँ अति अनुरागी।
इकटक मग जोवतिं अरु रोवतिं, भूलेहुँ पलक न लागी॥
बिनु पावस पावस करि राखी, देखत हौ बिदमान।
अब धौं कहा कियौ चाहत हौ, छाँड़ौ निरगुन ज्ञान॥
तुम हौ सखा स्याम सुंदर के, जानत सकल सुभाइ।
जैसे मिलैं सूर के स्वामी, सोई करहु उपाइ॥

× × ×

आए जोग सिखावन पांड़े।
परमारथी पुराननि लादे, ज्यों बनजारे टांड़े॥

हमरे गति-पति कमल-नयन की, जोग सिखैं ते रांड़े।
कहौ मधुप कैसे समाहिंगे, एक म्यान दो खांड़े॥
कहु षट्पद कैसें खैयतु है, हाथिनि कैं सँग गांड़े।
काकी भूख गई बयारि भषि, बिना दूध घृत मांड़े॥
काहे कौ झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डांड़े।
सूरदास तीनौ नहिं उपजत, धनिया, धान कुम्हाड़े॥

× × ×

हमकौ हरि की कथा सुनाउ।
ये आपनी ज्ञान गाथा अलि, मथुरा ही लै जाउ॥
नागरि नारि भलैं समझैंगी, तेरौ बचन बनाउ।
पा लागौं ऐसी इन बातनि, उनही जाइ रिझाउ॥
जौ सुचि सखा स्याम सुंदर कौ, अरु जिय मैं सति भाउ।
तौ बारक आतुर इन नैननि, हरि मुख आनि दिखाउ॥
जौ कोउ कोटि करै कैसिहुँ बिधि, बल विद्या व्यवसाउ।
तउ सुनि सूर मीन कौं जल बिनु, नाहिं न और उपाउ॥

× × ×

ऊधौ तुम ब्रज की दसा बिचारौ।
ता पाछै यह सिद्धि आपनी, जोग कथा बिस्तारौ॥
जा कारन तुम पठए माधौ, सो सोचौ जिय माहीं।
केतिक बीच बिरह परमारथ, जानत हौ किधौं नाहीं॥
तुम परवीन चतुर कहियत हौ, संतत निकट रहत हौ।
जल बूड़त अवलंब फेन कौ, फिरि फिरि कहा कहत हौ॥
वह मुसकान मनोहर चितवनि, कैसे उर तैं टारौं।
जोग जुक्ति अरु मुक्ति परम निधि, वा मुरली पर वारौं॥
जिहिं उर कमल-नयन जु बसत हैं, तिहिं निरगुन क्यौं आवै।
सूरदास सो भजन बहाऊँ, जाहि दूसरौ भावै॥

× × ×

ऊधौ हरि काहे के अंतरजामी।
अजहुँ न आइ मिलत इहँ अवसर, अवधि बतावत लामी॥
अपनी चोप आइ उड़ि बैठत, अलि ज्यों रस के कामी।
तिनकौ कौन परेखौ कीजौ, जे हैं गरुड़ के गामी॥
आई उघरि प्रीति कलई सी, जैसी खाटी आमी।
सूर इते पर अनखनि मरियत, ऊधौ पीवत मामी॥

× × ×

निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै, बूझति साँच न हाँसी ॥
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी ।
कैसे बरन, भेष है कैसौ, किहिं रस मैं अभिलाषी ॥
पावैगौ पुनि कियौ आपनौ, जो रे करैगौ गाँसी ।
सुनत मौन ह्वै रह्यौ बावरौ, सूर सबै मति नासी ॥

× × ×

साँवरौ साँवरी रैनि कौ जायौ ।
आधी राति कंस के त्रासनि, बसुद्यौ गोकुल ल्यायौ ॥
नंद पिता अरु मातु जसोदा, माखन मही खवायौ ।
हाथ लकुट कामरि कांधे पर, बछरुन साथ डुलायौ ॥
कहा भयौ मधुपुरी अवतरे, गोपीनाथ कहायौ ।
ब्रज बधुअनि मिलि साँट कटीली, कपि ज्यौं नाच नचायौ ॥
अब लौं कहाँ रहे हो ऊधौ, लिखि-लिखि जोग पठायौ ।
सूरदास हम यहै परेखौ, कुबरी हाथ बिकायौ ॥

× × ×

जा दिन तैं गोपाल चले ।
ता दिन तैं ऊधौ या ब्रज के, सब स्वभाव बदले ॥
घटे अहार विहार हरष हित, सुख सोभा गुन गान ।
ओज तेज सब रहित सकल बिधि, आरति असम समान ॥
बाढ़ी निसा, बलय आभूषन, उर-कंचुकी उसास ।
नैननि जल अंजन अंचल प्रति, आवन अवधि की आस ॥
अब यह दसा प्रगट या तन की, कहियौ जाइ सुनाई ।
सूरदास प्रभु सो कीजौ जिहिं, बेगि मिलहिं अब आइ ॥

× × ×

हम तौ कान्ह केलि की भूखी ।
कहा करैं लै निर्गुन तुम्हरौ, बिरहिनि बिरह बिदूषी ॥
कहियै कहा यहै नहिं जानत, कहौ जोग किहि जोग ।
पालागौं तुमहीं से वा पुर, बसत बावरे लोग ॥
चंदन, अभरन, चीर चारु बर, नेकु आपु तन कीजै ।
दंड, कमंडल, भसम, अधारी, तब जुवतिनि कौं दीजै ॥
सूर देखि दृढ़ता गोपिन की, ऊधौ दृढ़ ब्रत पायौ ।
करी कृपा जदुनाथ मधुप कौं, प्रेमहिं पढ़न पठायौ ॥

× × ×

मधुकर स्याम हमारे ईस।
तिनकौ ध्यान धरैं निसि बासर, औरहिं नवै न सीस।।
जोगिनि जाइ जोग उपदेसहु, जिनके मन दस-बीस।
एकै चित एकै वह मूरति, तिन चितवतिं दिन तीस।।
काहें निरगुन ग्यान आपनौ, जित कित डारत खीस।
सूरदास प्रभु नंदनँदन बिनु, हमरे को जगदीस।

× × ×

ऊधौ मन नहि हाथ हमारैं।
रथ चढ़ाइ हरि संग गए लै, मथुरा जबहिं सिधारे।।
नातरु कहा जोग हम छाँड़हि, अति रुचि कै तुम ल्याए।
हम तौ झँखतिं स्याम की करनी, मन लै जोग पठाए।।
अजहूँ मन अपनौ हम पावैं, तुम तैं होइ तौ होइ।
सूर सपथ हमैं कोटि तिहारी, कही करैंगी सोइ।।

× × ×

ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहत तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद-नंदन बिनु और, नहीं जगदीस।।

× × ×

मधुकर स्याम हमारे चोर।
मन हरि लियौ तनक चितवनि मैं, चपल नैन की कोर।।
पकरे हुते हृदय उर अन्तर, प्रेम प्रीति कैं जोर।
गए छुँड़ाइ तोरि सब बंधन, दैं गए हँसनि अँकोर।।
चौकि परीं जागत निसि बीती, दूर मिल्यौ इक भौंर।
सूरदास प्रभु सरबस लूट्यौ, नागर नवल-किसोर।।

× × ×

बिलग जनि मानौ ऊधौ कारे।
वह मथुरा काजर की ओवरी, जे आवैं ते कारे।।
तुम कारे सुफलक सुत कारे, कारे कुटिल सँवारे।
कमलनैन की कौन चलावै, सबहिनि मैं मनियारे।।

मानौ नील माट तैं काढ़े, जमुना आइ पंखारे।
तातैं स्याम भई कालिंदी, सूर स्याम गुन न्यारे ॥

× × ×

बिलग हम मानैं उधौ काकौ।
तरसत रहे बसुदेव देवकी, नहिं हित मातु पिता कौ ॥
काके मातु पिता को काकौ, दूध पियौ हरि जाकौ।
नंद जसोदा लाड़ लड़ायौ, नाहिं भयौ हरि ताकौ ॥
कहियौ जाइ बनाइ बात यह, को हित है अबला कौ।
सूरदास प्रभु प्रीति है कांसौं, कुटिल मीत कुबिजा कौ ॥

× × ×

ऊधौ हमरी सौं तुम जाहु।
यह गोकुल पूनौ कौ चंदा, तुम ह्वै आए राहु ॥
ग्रह के ग्रसे गुसा परगास्यौ, अब लौं करि निरबाहु।
सब रस लै नँदलाल सिधारे, तुम पठए बड़ साहु ॥
जोग बेचि कै तंदुल लीजै, बीच बसेरे खाहु।
सूरदास जबहीं उठि जैहौ, मिटिहै मन कौ दाहु ॥

× × ×

प्रेम न रुकत हमारे बूतैं।
किहिं गयंद बाँध्यौ सुन मधुकर, पदुम नाल के कांचे सूतैं ॥
सोवत मनसिज आनि जगायौ, पठै संदेस स्याम के दूतैं।
बिरह-समुद्र सुखाइ कौन बिधि, रंचक जोग अगिनि के लूतैं ॥
सुफलक सुत अरु तुम दोऊ मिलि, लीजै मुकुति हमारे हूतैं।
चाहतिं मिलन सूर के प्रभु कौं, क्यों पतियाहिं तुम्हारे धूतैं ॥

× × ×

ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।
अबला सार-ज्ञान कह जानैं, कैसैं ध्यान धराहीं ॥
तेई मूँनद नैन कहत हौ, हरि मूरति जिन माहीं।
ऐसी कथा कपट की मधुकर, हमतैं सुनी न जाहीं ॥
स्रवन चीरि सिर जटा बँधावहु, ये दुख कौन समाहीं।
चंदन तजि अँग भस्म बतावत, बिरह-अनल अति दाहीं ॥
जोगी भ्रमत जाहि लगि भूले, सो तौ है आप माहीं।
सूरस्याम तैं न्यारी न पल छिन, ज्यौं घट तै परछाहीं ॥

× × ×

ऊधौ कोकिल कूजत कानन।
तुम हमकौं उपदेस करत हौ, भस्म लगावन आनन ॥
औरौ सिखी सखा सँग लै लै, टेरत चढ़े पखानन।
बहुरौ आइ पपीहा कै मिस, मदन हनत निज बानन ॥
हमतौ निपट अहीरि बावरी, जोग दीजिऐ जानन।
कहा कथत मासी के आगै, जानत नानी नानन ॥
तुम तौ हमैं सिखावन आए, जोग होइ निरवानन।
सूर मुक्ति कैसे पूजति है, वा मुरली के तानन ॥

× × ×

ऊधौ जोग कहा है कीजतु।
ओढ़ियत है कि बिछैयत है, किधौं खैयत है किधौं पीजतु ॥
कीधौं कछू खिलौना सुंदर, की कछु भूषन नीकौ।
हमरे नंद-नँदन जो चहियतु, मोहन जीवन जी कौ ॥
तुम जु कहत हरि निगुन निरंतर, निगम नेति है रीति।
प्रगट रूप की रासि मनोहर, क्यों छांड़े परतीति ॥
गाइ चरावन गए घोष तैं, अबहीं हैं फिरि आवत।
सोई सूर सहाइ हमारे, बेनु रसाल बजावत ॥

× × ×

अपने स्वारथ के सब कोऊ।
चुप करि रहौ मधुप रस-लंपट, तुम देखे अरु ओऊ ॥
जो कछु कह्यौ कह्यौ चाहत हौ, कहि निरवारौ सोऊ।
अब मेरैं मन ऐसियै षटपद, होनी होउ सु होऊ ॥
तब कत रास रच्यौ वृंदावन, जौ पै ज्ञान हतोऊ।
लीन्हे जोग फिरत जुवतिनि मैं, बड़े सुपत तुम दोऊ ॥
छुटि गयौ मान परेखौ रे अलि, हृदै हुतौ वह जोऊ।
सूरदास प्रभु गोकुल बिसरयौ, चित चिंतामनि खोऊ ॥

× × ×

मधुकर प्रीति किये पछितानी।
हम जानी ऐसैंहिं निबहैगी, उन कछु औरै ठानी ॥
वा मोहन कौं कौन पतीजै, बोलत मधुरी बानी।
हमकौं लिखि लिखि जोग पठावत, आपु करत रजधानी ॥
सूनी सेज सुहाइ न हरि बिनु, जागत रैनि बिहानी।
जब तैं गवन कियौ मधुबन कौं, नैननि बरषत पानी ॥

कहियौ जाइ स्याम सुंदर कौं, अंतरगत की जानी।
सूरदास प्रभु मिलि कै बिछुरे, तातैं भई दिवानी।।

× × ×

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मनक्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह - कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ सूर नितहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

× × ×

मधुकर आपुन होहिं बिराने।
बाहर हेत हितू कहवावत, भीतर काज सयाने।।
ज्यौं सुक पिंजर माहिं उचारत, ज्यौं ज्यौं कहत बखाने।
छूटत हीं उड़ि मिलै अपुन कुल, प्रीति न पल ठहराने।।
जद्यपि मन नहिं तजत मनोहर, तद्यपि कपटी जाने।
सूरदास प्रभु कौन काज कौं, माखी मधु लपटाने।।

× × ×

ऊधौ मन माने की बात।
दाख छुहारा छांड़ि अमृत-फल, विषकीरा बिष खात।।
ज्यौं चकोर कौं देइ कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर कोरि काठ मैं, बँधत कमल के पात।।
ज्यौं पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात।
सूरदास जाकौ मन जासौं, सोई ताहि सुहात।।

× × ×

ऊधौ सुधि नाहीं या तन की।
जाइ कहौ तुम कित हौ भूले, हमऽब भई बन-बन की।।
इक बन ढूँढ़ि सकल बन ढूँढ़े, बन बेली मधुबन की।
हारी परीं बृंदाबन ढूँढ़त, सुधि न मिली मोहन की।।
किए बिचार उपचार न लागत, कठिन बिथा भइ मन की।
सूरदास कोउ कहै स्याम सौं, सुरति करैं गोपिनि की।।

× × ×

बिनु गुपाल बैरिनि भईं कुंजैं।
तब वै लता लगति तन सीतल, अब भईं बिषम ज्वाल की पुंजैं।।

वृथा बहति जमुना, खग बोलत, वृथा कमल-फूलनि अलि-गुंजैं।
पवन पान, घनसार, सजीवन, दधि-सुत किरनि भानु भईं भुंजैं॥
यह ऊधौ कहियौ माधौ सौं, मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कौं, मन-जोवत अँखियाँ भईं छुंजैं॥

× × ×

ऊधौ इतनी कहियौ बात।
मदन गुपाल बिना या ब्रज मैं, होन लगे उतपात॥
तृनावर्त, बक, बकी, अघासुर, धेनुक फिरि-फिरि जात।
ब्योम, प्रलंब, कंस केसी इत, करत जिअनि की घात॥
काली काल-रूप दिखियत है, जमुना जलहिं अन्हात।
बरुन फाँस फाँस्यौ चाहत है, सुनियत अति मुरझात॥
इंद्र आपने परिहँस कारन, बार - बार अनखात।
गोपी, गाइ, गोप, गोसुत सब, थर थर काँपत गात॥
अंचल फारति जननि जसोदा, पाग लिये कर तात।
लागौ बेगि गुहारि सूर प्रभु, गोकुल बैरिनि घात॥

× × ×

ऊधौ इतनी कहियौ जाइ।
अति कृस गात भई ये तुम बिनु, परम दुखारी गाइ॥
जल समूह बरषति दोउ अँखियाँ, हूँकति लीन्हैं नाउँ।
जहाँ जहाँ गो दोहन कीन्हौ, सूँघति सोई ठाउँ॥
परति पछार खाइ छिन ही छिन, अति आतुर ह्वै दीन।
मानहु सूर काढ़ि डारी हैं, बारि मध्य तैं मीन॥

× × ×

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
बृंदाबन गोकुल बन उपवन, सघन कुंज की छाहीं॥
प्रात समय माता जसुमति अरु, नंद देखि सुख पावत।
माखन रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत॥
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात।
सूरदास धनि-धनि ब्रजबासी, जिनसौं हित जदु-तात॥

× × ×

ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छाँहीं॥
वै सुरभी वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।
ग्वाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहिं बाहीं॥

यह मथुरा कंचन की नगरी, मनि - मुक्ताहल जाहीं।
जबहिं सुरति आवति वा सुख की, जिय उमगत तन नाहीं ।।
अनगन भांति करी बहु लीला, जसुदा नंद निबाहीं।
सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै, यह कहि-कहि पछिताहीं ।।

× × ×

ऐसी प्रीति की बलि जाउँ।
सिंहासन तजि चले मिलन कौं, सुनत सुदामा नाउँ ।।
कर जोरे हरि बिप्र जानि कै, हित करि चरन पखारे।
अंकमाल दै मिले सुदामा, अर्धासन बैठारे ।।
अर्धंगी पूछत मोहन सौं, कैसे हितू तुम्हारे।
तन अति छीन मलीन देखियत, पाउँ कहाँ तैं धारे ।।
संदीपन कैं हमऽरु सुदामा, पढ़े एक चटसार।
सूर स्याम की कौन चलावै, भक्तनि कृपा अपार ।।

× × ×

सुदामा मंदिर देखि डरयौ।
इहाँ हुती मेरी तनक मड़ैया, को नृप आनि छरयौ ।।
सीस धुनै दोउ कर मींड़ै, अंतर सोच परयौ।
ठाढ़ी तिया जु मारग जीवै, ऊँचै, चरन धरयौ ।।
तोहिं आदरयौ त्रिभुवन कौ नायक, अब क्यौं जात फिरयौ।
सूरदास प्रभु की यह लीला, दारिद दुःख हरयौ ।।

× × ×

राधा नैन नीर भरि आए।
कब धौं मिलैं स्याम सुंदर सखि, जदपि निकट हैं आए ।।
कहा करौं किहिं भांति जाहुँ अब, पंखा नहीं तन पाए।
सूर स्याम सुंदर घन दरसैं, तन के ताप नसाए ।।

× × ×

पथिक, कहियौ हरि सौं यह बात।
भक्त बछल है बिरद तुम्हारौ, हम सब किए सनाथ ।।
प्रान हमारे संग तिहारैं, हमहूँ हैं अब आवत।
सूर स्याम सौं कहत संदेसौ, नैनन नीर बहावत ।।

× × ×

राधा माधव भेंट भई।
राधा माधव, माधव राधा, कीट भृङ्ग गति ह्वै जु गई ।।

माधव राधा के रँग रांचे, राधा माधव रंग रई।
माधव राधा प्रीति निरंतर, रसना करि सो कहि न गई॥
बिहंसि कह्यौ हम तुम नहिं अंतर, यह कहिकै उन ब्रज पठई।
सूरदास प्रभु राधा माधव, ब्रज-बिहार नित नई नई॥

× × ×

बैठी जननि करति सगुनौती।
लछिमन-राम मिलैं अब मोकौं, दोऊ अमोलक मोती॥
इतनी कहत सुकाग उहाँ तैं, हरी डार उड़ि बैठ्यौ।
अंचल गांठि दई, दुख भाज्यौ, सुख जु आनि उर पैठ्यौ॥
जब लौं हौं जीवौं जीवन भर, सदा नाम तब जपिहौं।
दधि-ओदन दोना भरि दैहौं, अरु भाइनि मैं थपिहौं॥
अब कैं जौ परचौ करि पावौं, अरु देखौं भरि आंखि।
सूरदास सोने कै पानी मढ़ौं चोंच अरु पांखि॥

× × ×

हमारी जन्मभूमि यह गाउँ।
सुनहु सखा सुग्रीव-विभीषन, अवनि अजोध्या नाउँ॥
देखत बन-उपवन-सरिता-सर, परम मनोहर ठाउँ।
अपनी प्रकृति लिए बोलत हौं, सुरपुर मैं न रहाउँ॥
ह्याँ के बासी अवलोकत हौं, आनँद उर न समाउँ।
सूरदास जौ बिधि न सँकोचै, तौ बैकुंठ न जाउँ॥

× × ×

बिनती किहि बिधि प्रभुहिं सुनाऊँ।
महाराज रघुबीर धीर कौं, समय न कबहूँ पाऊँ!
जाम रहत जामिनि के बीतैं, तिहिं औसर उठि धाऊँ।
सकुच होत सुकुमार नींद मैं, कैसे प्रभुहिं जगाऊँ॥
दिनकर - किरनि - उदित, ब्रह्मादिक-रुद्रादिक इक ठाऊँ।
अगनित भीर अमर-मुनि गन की, तिहिं तैं ठौर न पाऊँ॥
उठत सभा दिन मधि, सैनापति भीर देखि, फिरि आऊँ।
न्हात-खात सुख करत साहिबी, कैसे करि अनखाऊँ॥
रजनी-मुख आवत गुन-गावत, नारद तुंबुर नाऊँ।
तुमहीं कहौ कृपानिधि रघुपति, किहिं गिनती मैं आऊँ?
एक उपाय करौ कमलापति, कहौ तौ कहि समुझाऊँ।
पतित-उधारन नाम सूर प्रभु, यह रुक्का पँहुँचाऊँ॥

उहै धनुक बेधा हुत राहू। मारा ओहीं सहस्सर बाहू॥
उहै धनुक मैं ओपहँ चीन्हा। धानुक आपु बेझ जग कीन्हा॥
उन्ह भौंहन्हि सरि केउ न जीता। आछरिं छपीं छपीं गोपीता॥
भौंह धनुक धनि धानुक दोसरि सरि न कराइ।
गगन धनुक जो ऊगवै लाजन्ह सो छपि जाइ॥

नैन बाँक सरि पूज न कोऊ। मान समुँद अस उलथहिं दोऊ॥
राते कँवल करहि अलि भवाँ। घूमहिं मांति चहहिं उपसवाँ॥
उटहिं तुरंग लेहिं नहिं बागा। चाहहिं उलथि गगन कहँ लागा॥
पवन झकोरहिं देहिं हलोरा। सरग लाइ भुइँ लाइ बहोरा॥
जग डोलै डोलत नैनाहाँ। उलटि अड़ार चाह पल माहाँ॥
जबहिं फिराव गँगन गहि बोरा। अस वै भँवर चक्र के जोरा॥
समुँद हिंडोर करहि जनु झूले। खंजन लुरहि मिरिग जनु भूले॥
सुभर समुँद अस नैन दुइ मानिक भरे तरंग।
आवत तीर जाहि फिरि काल भँवर तेन्ह संग॥

बरुनी का बरनौं इमि बनी। सांधे बान जानु दुइ अनी॥
जुरी राम रावन कै सैना। बीच समुंद भए दुइ नैना॥
वारहिं पार बनावरि साँधी। जासौं हेर लाग बिख बाँधी॥
उन्ह बानन्ह अस को को न मारा। बेधि रहा सगरौं संसारा॥
गँगन नखत जस जाहिं न गने। हैं सब बान ओहि के हने॥
धरती बान बेधि सब राखी। साखा ठाढ़ि देहिं सब साखी॥
रोवँ रोवँ मानुस तन ठाढ़े। सोतहि सोत बेधि तन काढ़े॥
बरुनि बान सब ओपहँ बेधे रन बन ढंख।
सउजन्ह तन सब रोवाँ पंखिन्ह तन सब पंख॥

नासिक खरग देउँ केहि जोगू। खरग खीन ओहि बदन सँजोगू॥
नासिक देखि लजानेउ सुआ। सूक आइ बेसरि होइ उआ॥
सुआ सो पिअर हिरामनि लाजा। औरु भाउ का बरनौं राजा॥
सुआ सो नाँक कठोर पँवारी। वह कोंवलि तिल पुहुप सँवारी॥
पुहुप सुगध करहिं सब आसा। मकु हिरगाइ लेइ हम बासा॥
अधर दसन पर नासिक सोभा। दारिवँ देखि सुआ मन लोभा॥
खंजन दुहुँ दिसि केलि कराहीं। दहुँ वह रस को पाव को नाहीं॥
देखि अमिअ रस अधरन्हि भएउ नासिका कीर।
पवन बास पहुँचावै अस रम छाँड़ न तीर॥

अधर सुरंग अमिअ रस भरे। बिंब सुरंग लाजि बन फरे॥
फूल दुपहरी मानहुँ राता। फूल झरहिं जब जग कह बाता॥
हीरा गहै सो बिद्रुम धारा। बिहँसत जगत होइ उजियारा॥
भए मँजीठ पानन्ह रंग लागे। कुसुम रंग थिर रहा न आगे॥
अस कै अधर अमिअ भरि राखे। अबहिं अछूत न काहू चाखे॥
मुख तँबोल रँग धारहिं रसा। केहि मुख जोग सो अंब्रित बसा॥
राता जगत देखि रँग राते। रुहिर भरे आछहिं बिहँसाते॥
अमिअ अधर अस राजा सब जग आस करेइ।
केहि कहँ कँवल बिगासा को मधुकर रस लेइ॥

दसन चौक बैठे जनु हीरा। औ बिच बिच रँग स्याम गँभीरा॥
जनु भादौं निसि दामिनि दीसी। चमकि उठी तसि भीनि बतीसी॥
वह जो जोति हीरा उपराहीं। हीरा दीपहिं सो तेहि परिछाहीं॥
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुतन्ह जोति जोति ओहि भई॥
रबि ससि नखत दीन्ह ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती॥
जहँ जहँ बिहंसि सुभावहिं हँसी। तहँ तहँ छिटक जोति परगसी॥
दामिनि दमकि न सरबरि पूजा। पुनि वह जोति औरु को दूजा॥
बिहँसत हँसत दसन तस चमके पाहन उठे झरक्कि।
दारिवँ सरि जो न कै सका फाटेउ हिया दरक्कि॥

रसना कहौं जो कह रस बाता। अंब्रित बचन सुनत मन राता॥
हरै सो सुर चाँत्रिक कोकिला। बीन बंसि वह बैनु न मिला॥
चात्रिक कोकिल रहहिं जो नाहीं। सुनि वह बैन लाजि छपि जाहीं॥
भरे पेम मधु बोलै बोला। सुनै सो माति घुमिं कै डोला॥
चतुर बेद मति सब ओहि पाहाँ। रिग जजु साम अथर्बन माहाँ॥
एक एक बोल अरथ चौगुना। इंद्र मोह बरम्हा सिर धुना॥
अमर भारथ पिंगल औ गीता। अरथ जूझ पंडित नहिं जीता॥
भावसती ब्याकरन सरसुती पिंगल पाठ पुरान।
बेद भेद सैं बात कह तस जनु लागहि बान॥

पुनि बरनौं का सुरंग कपोला। एक नारँग के दुऔ अमोला॥
पुहुप पंक रस अंब्रित सांधे। केइँ ये सुरँग खिरौरा बांधे॥
तेहि कपोल बाएँ तिल परा। जेइँ तिल देख सो तिल तिल जरा॥
जनु घुंघुची वह तिल करमुहाँ। बिरह बान साँधा सामुहाँ॥
अगिनि बान तिल जानहुँ सूझा। एक कटाख लाख दुइ जूझा॥
सो तिल काल मेंटि नहिं गएऊ। अब वह गाल काल जग भएऊ॥
देखत नैन परी परिछाहीं। तेहितें रात स्याम उपराहीं॥

सो तिल देखि कपोल पर गँगन रहा धुव गाड़ि।
खिनहि उठै खिन बूड़ै डोलै नहिं तिल छांड़ि।।

स्रवन सीप दुइ दीप सँवारे। कुंडल कनक रचे उंजिआरे।।
मनि कुंडल चमकहिं अति लोने। जनु कौंधा लौंकहिं दुहुँ कोने।।
दुहुँ दिसि चाँद सुरुज चमकाहीं। नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं।।
तेहि पर खूँट दीप दुइ बारे। दुई धुव दुऔ खूँट बैसारे।।
पहिरे खुंभी सिंघल दीपी। जानहुँ भरी कचपची सीपी।।
खिन खिन जबहिं चीर सिर गहा। काँपत बीज दुहूँ दिसि रहा।।
डरपहिं देव लोक सिंघला। परै न बीच टूटि एहि कला।।

करहिं नखत सब सेवा स्रवन दिपहिं अस दोउ।
चाँद सुरज अस गहने औरु जगत का कोउ।।

बरनौं गीवँ कूँज कै रीसी। कंज नार जनु लागेउ सीसी।।
कुंदै फेरि जानु गिउ काढ़ी। हरी पुछारि ठगी ज़नु ठाढ़ी।।
जनु हिय काढ़ि परेवा ठाढ़ा। तेहि तें अधिक भाउ गिउ बाढ़ा।।
चाक चढ़ाइ साँच जनु कीन्हा। बाग तुरंग जानु गहि लीन्हा।।
गिउ मँजूर तँवचुर जो हारा। वहै पुकारहिं साँझ सँकारा।।
पुनि तिहि ठाउँ परी तिरि रेखा। घूँटत पीक लीक सब देखा।।
धनि सो गीव दीन्हेउ बिधि भाऊ। दहुँ कासौं लै करै मेराऊ।।

कंठ सिरी मुकुताहल माला सोहै अभरन गीवँ।
को होइ हार कंठ ओहि लागै केइँ तपु साधा जीवँ।।

कनक दंड दुइ भुजा कलाई। जानहुँ फेरि कुंदेरैं भाई।।
कदलि खाँभ की जानहुँ जोरी। औ राती ओहि कँवल हथोरी।।
जानहुँ रकत हथोरीं बूड़ीं। रबि परभात तात वह जूड़ीं।।
हिया काढ़ि जनु लीन्हेसि हाथाँ। रकत भरी अँगुरी तेहिं साथाँ।।
औ पहिरें नग जरी अँगूठी। जग बिनु जीव जीव ओहि मूठी।।
बाँहू कंगन टाड़ सलोनी। डोलति बाँह भाउ गति लोनी।।
जानहुँ गति बेड़िनि देखराई। बाँह डोलाइ जीउ लै जाई।।

भुज उपमा पँवनारि न पूजी खीन भई तेहि चिंत।
ठाँवहिं ठाँव बेह भे हिरदैं ऊभि साँस लेइ निंत।।

हिया थार कुच कंचन लाडू। कनक कचोर उठे करि चाडू।।
कुन्दन बेल साजि जनु कूँदे। अंब्रित भरे रतन दुइ मूँदे।।
बेधे भँवर कंट केतुकी। चाहहिं बेध कीन्ह कँचुकी।।
जोबन बान लेहि नहिं बागा। चाहहिं हुलसि हिएँ हठि लागा।।

अगिनि बान दुइ जानहु सांधे। जग बेधहिं जौं होहिं न बांधे॥
उतँग जँभीर होइ रखवारी। छुइ को सकै राजा कै बारी॥
दारिवँ दाख फरे अनचाखे। अस नारँग दहुँ का कहँ राखे॥
राजा बहुत मुए तपि लाइ लाइ भुइँ माथ।
काहू छुअै न पारे गए मरोरत हाथ॥

पेट पत्र चंदन जनु लावा। कुंकुह केसरि बरन सोहावा॥
खीर अहीर न कर सुकुवाँरा। पान फूल के रहै अधारा॥
स्याम भुअंगिनि रोमावली। नाभी निकसि कँवल कहँ चली॥
आइ दुहूँ नारंग बिच भई। देखि मँजूर ठमकि रहि गई॥
जनहुँ चढ़ी भँवरन्हि कै पाँती। चंदन खाँभ बास कै माँती॥
कै कालिंद्री बिरह सताई। चलि पयाग अरइल बिच आई॥
नाभो कुंडर बानारसी। सौहँ को होइ मीचु तहँ बसी॥
सिर करवत तन करसी लै लै बहुत सीझे तेहि आस।
बहुत धूम घूँटत मैं देखे उतरु न देइ निरास॥

बैरिनि पीठि लीन्ह ओइँ पाछें। जनु फिरि चली अपछरा काछें॥
मलयागिरि कै पीठि सँवारी। बेनी नाग चढ़ा जनु कारी॥
लहरैं देत पीठि जनु चढ़ा। चीर ओढ़ावा कंचुकि मढ़ा॥
दहुँ का कहँ असि बेनी कीन्ही। चंदन बास भुअंगन्ह दीन्ही॥
किस्न कै करा चढ़ा ओहि माथें। तब सो छूट अब छूट न नाथें॥
कारी कँवल गहे मुख देखा। ससि पाछें जस राहु बिसेखा॥
को देखै पावै वह नागू। सो देखै माथें मनि भागू॥
पन्नग पंकज मुख गहे खंजन तहाँ बईठ।
छात सिंघासन राजधन ता कहँ होइ जो डीठ॥

लंक पुहुमि अस आहि न काहूँ। केहरि कहौं न ओहि सरि ताहूँ॥
बसा लंक बरनै जग झीनी। तेहि तें अधिक लंक वह खीनी॥
परिहँस पिअर भए तेहिं बसा। लीन्हे लंक लोगन्ह कहँ डँसा॥
जानहुँ नलिनि खंड दुइ भई। दुहूँ बिच लंक तार रहि गई॥
हिय सौं मोरि चलै वह तागा। पग देत कत सहि सक लागा॥
छुद्र घंटिका मोहहिं नर राजा। इंद्र अखार आइ जनु साजा॥
मानहुँ बीन गहे कामिनी। रागहिं सबै राग रागिनी॥
सिंघ न जीता लंक सरि हारि लीन्ह बन बासु।
तेहिं रिस रकत पिअै मनई कर खाइ मार कै मांसु।

नाभी कुंडर मलै समीरू। समुँद भँवर जस भंवै गँभीरू॥
बहुतै भँवर बौंडरा भए। पहुँचि न सके सरग कहँ गए॥

चंदन माँझ कुरंगिनि खोजू । दहुँ को पाव को राजा भोजू ।।
को ओहि लागि हिवंचल सीझा । का कहँ लिखी अैस को रीझा ।।
तीवइ कँवल सुगंध सरीरू । समुँद लहरि सोहै तन चीरू ।।
झूलहिं रतन पाट के झोंपा । साजि मदन दहुँ काकहँ कोपा ।।
अबहिं सो आहि कँवल कै करी । न जनौं कवन भँवर कहँ धरी ।।
बेधि रहा जग बासना परिमल मेद सुगंध ।
तेहि अरघानि भँवर सब लुबुधे तजहिं न नीवी-बंध ।।

बरनौं नितँब लंक कै सोभा । औ गज गवन देखि सब लोभा ।।
जुरे जंघ सोभा अति पाए । केरा खाँभ फेरि जनु लाए ।।
कँवल चरन अति रात बिसेखे । रहहिं पाट पर पुहुमि न देखे ।।
देवता हाथ हाथ पगु लेहीं । पगु पर जहाँ सीस तहँ देहीं ।।
माँथें भाग को दहुँ अस पावा । कँवल चरन लै सीस चढ़ावा ।।
चूरा चाँद सुरुज उजिआरा । पायल बीच करहिं झनकारा ।।
अनवट बिछिआ नखत तराई । पहुँचि सकै को पावन्हि ताई ।।
बरनि सिंगार न जानेउँ नखसिख जैस अभोग ।
तस जग किछौं न पावौं उपमा देउँ ओहि जोग ।।

सुनतहि राजा गा मुरुछाई । जानहुँ लहरि सुरुज कै आई ।।
पेम घाव दुख जान न कोई । जेहि लागे जानै पै सोई ।।
परा सो पेम समुँद अपारा । लहरहिं लहर होइ बिसँभारा ।।
बिरह भँवर होइ भाँवरि देई । खिन खिन जीव हिलोरहि लेई ।।
खिनहि निसास बूड़ि जिउ जाई । खिनहि उठै निसंसै बौराई ।।
खिनहि पीत खिन होइ मुख सेता । खिनहि चेत खिन होइ अचेता ।।
कठिन मरन तें पेम बेवस्था । ना जिअँ जिवन न दसइँ अवस्था ।।
जनु लेनिहारन्ह लीन्ह जिउ हरहिं तरासहिं ताहि ।
एतना बोल न आव मुख करहि तराहि तराहि ।।

जहँ लगि कुटुंब लोग औ नेगी । राजा राय आए सब बेगी ।।
जाँवत गुनी गारुरी आए । ओझा बैद सयान बोलाए ।।
चरचहिं चेष्टा परिखहिं नारी । निअर नाहिं ओषद तेहि बारी ।।
है राजहिं लष्बन कै करा । सकति बान मोहा है परा ।।
नहिं सो राम हनिवँत बड़ि दूरी । को लै आव सजीवनि मूरी ।।
बिनौ करहिं जेते गढ़पती । का जिउ कीन्ह कवनि मति मती ।।
कहहु सो पीर काह बिनु खाँगा । समुँद सुमेरु आव तुम्ह माँगा ।।
धावन तहाँ पठावहु देहिं लाख दस रोक ।
है सो बेलि जेहि बारी आनहिं सबै बरोक ।।

जौं भा चेत उठा बैरागा। बाउर जनहुँ सोइ अस जागा ॥
आवत जगत बालक जस रोवा। उठा रोइ हा ग्यान सो खोवा ॥
हौं तौ अहा अमरपुर जहाँ। इहाँ मरनपुर आएहुँ कहाँ ॥
केइँ उपकार मरन कर कीन्हा। सकति जगाइ जीउ हरि लीन्हा ॥
सोवत अहा जहाँ सुख साखा। कस न तहाँ सोवत बिधि राखा ॥
अब जिउ तहाँ इहाँ तन सूना। कब लगि रहै परान बिहूना ॥
जौं जिउ घटिहि काल के हाथाँ। घटन नीक पै जीव निसाथाँ ॥

अहुठ हाथ तन सरवर हिया कँवल तेहि माँह।
नैनन्हि जानहु निअरें कर पहुँचत अवगाह ॥

सबन्हि कहा मन समझहु राजा। काल सतें कै जूझि न छाजा ॥
तासौं जूझि जात जौं जीता। जात न किरसुन तजि गोपीता ॥
औ नहि नेहु काहु सौं कीजै। नाउँ मीठ खाएँ जिउ दीजै ॥
पहिलेहिं सुक्ख नेहु जब जोरा। पुनि होइ कठिन निबाहत ओरा ॥
अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू। पहुँचि न जाइ परा तस फेरू ॥
गँगन दिस्टि सौं जाइ पहूँचा। पेम अदिस्ट गँगन सौं ऊँचा ॥
धुव तें ऊँच पेम धुव उवा। सिर दै पाउँ देइ सो छुवा ॥

तुम्ह राजा औ सुखिया करहु राज सुख भोग।
एहि रे पंथ सो पहुँचै सहै जो दुक्ख वियोग ॥

सुअैं कहा मन समुझहु राजा। करत पिरीत कठिन है काजा ॥
तुम्ह अबहीं जेईं० घर पोई। कँवल न बैठि बैठहहु कोई ॥
जानहि भँवर जो तेहि पँथ लूटे। जीउ दीन्ह औ दिएँ न छूटे ॥
कठिन आहि सिंघल कर राजू। पाइअ नाहिं राज के साजू ॥
ओहिं पँथ जाइ जो होइ उदासी। जोगी जती तपा संन्यासी ॥
भोग जोरि पाइत वह भोगू। तजि सो भोग कोइ करत न जोगू ॥
तुम्ह राजा चाहहु सुख पावा। जोगहि भोगहि कत बनि आवा ॥

साधन्ह सिद्धि न पाइअ जौ लहि साध न तप्प।
सोई जानहिं बापुरे जो सिर करहिं कलप्प ॥

का भा जोग कहानी कथें। निकसै न घिउ बाजु दधि मथें ॥
जौं लहि आपु हेराइ न कोई। तौ लहि हेरत पाव न सोई ॥
पेम पहार कठिन बिधि गढ़ा। सो पै चढ़ै सीस सों चढ़ा ॥
पंथ सूरिन्ह कर उठा अँकूरू। चोर चढ़ै कि चढ़ै मंसूरू ॥
तू राजा का पहिरसि कंथा। तोरें घटहिं माँह दस पंथा ॥
काम क्रोध तिस्ना मद माया। पाँचौ चोर न छाड़हिं काया ॥
नव सेंधैं ओहि घर मँझिआरा। घर मूसहिं निसि कै उजिआरा ॥

अबहूँ जागु अयाने होत आव निसु भोर।
पुनि किछु हाथ न लागिहि मूसि जाहिं जब चोर॥

सुनि सो बात राजा मन जागा। पलक न मार पेम चित लागा॥
नैनन्ह ढरहिं मोति औ मूँगा। जस गुर खाइ रहा होइ गूँगा॥
हिएँ की जोति दीप वह सूझा। यह जो दीप अँधिअर भा बूझा॥
उलटि दिस्टि माया सौं रूठी। पलटि न फिरी जानि कै झूठी॥
जौं पै नाहीं अस्थिर दसा। जग उजार का कीजै बसा॥
गुरू बिरह चिनगी पै मेला। जो सुलगाइ लेइ सो चेला॥
अब कै फनिग भृंगि कै करा। भँवर होउँ जेहि कारन जरा॥

फूल फूल फिरि पूछौं जौं पहुँचौं ओहि केत।
तन नेवछावर कै मिलौं ज्यौं मधुकर जिउ देत॥

× × ×

पदुमावति तेहि जोग सँजोगा। परी पेम बस गहें बियोगा॥
नींद न परै रैनि जौं आवा। सेज केवाँछ जानु कोइ लावा॥
दहै चाँद औ चंदन चीरू। दगध करै तन बिरह गँभीरू॥
कलप समान रैनि हठि बाढ़ी। तिल तिल मरि जुग जुग बर गाढ़ी॥
गहै बीन मकु रैनि बिहाई। ससि बाहन तब रहै ओनाई॥
पुनि धनि सिंघ उरेहै लागै। ऐसी बिथा रैनि सब जागै॥
कहाँ सो भँवर कँवल रस लेवा। आइ परहु होइ घिरिनि परेवा॥

सो धनि बिरह पतग होइ जरा चाहै तेहि दीप।
कंत न आवहु भृंगि होइ को चंदन तन लीप॥

परी बिरह बन जानहुँ घेरी। अगम असूझ जहाँ लगि हेरी॥
चतुर दिसा चितवै जनु भूली। सो बन कवन जो मालति फूली॥
कँवल भँवर ओही बन पावै। को मिलाइ तन तपनि बुझावै॥
अंग अनल अस कँवल शरीरा। हिय भा पियर पेम की पीरा॥
चहै दरस रबि कीन्ह बिगासू। भँवर दिस्टि महँ कै सो अकासू॥
पूँछै धाइ बारि कहु बाता। तूँ जस कँवल करी रँग राता॥
केसरि बरन हिया भा तोरा। मानहुँ मनहिं भएउ कछु फोरा॥

पवनु न पावै संचरै भँवर न तहाँ बईठ।
भूलि कुरंगिनि कसि भई मनहुँ सिंघ तुइ डीठ॥

धाइ सिंघ बरु खातेउ मारी। कै तसि रहति अही जसि बारी॥
जोबन सुनेउँ कि नवल बसंतू। तेहि बन परेउ हस्ति मैमंतू॥
अब जोबन बारी को राखा। कुंजर बिरह बिधांसै साखा॥

मैं जाना जोबन रस भोगू। जोबन कठिन सँताप बियोगू ।।
जोबन गरुअ अपेल पहारू। सहि न जाइ जोबन कर भारू ।।
जोबन अस मैमंत न कोई। नवै हस्ति जौं आँकुस होई ।।
जोबन भर भादौं जस गंगा। लहरैं देइ समाइ न अंगा ।।

परी अथाह धाइ हौं जोबन उदधि गँभीर।
तेहिं चितवौं चारिउँ दिसि को गहि लावै तीर ।।

पदुमावति तूँ सुबुधि सयानी। तोहिं सरि समुँद न पूजै रानी ।।
नदी समाहिं समुँद महँ आई। समुँद डोलि कहु कहाँ समाई ।।
अबहीं कँवल करी हिय तोरा। आइहि भँवर जो तो कहँ जोरा ।।
जोबन तुरै हाथ गहि लीजै। जहाँ जाइ तहँ जाइ न दीजै ।।
जोबन जो रे मतंग गज अहै। गहु गिआन जिमि आँकुस गहै ।।
अबहिं बारि तूँ पेम न खेला। का जानसि कस होइ दुहेला ।।
गँगन दिस्टि करु जाइ तराहीं। सुरुज देखि कर आवै नाहीं ।।

जब लगि पीउ मिलै तोहिं साधु पेम कै पीर।
जैसें सीप सेवाति कहँ तपै समुँद मँझ नीर ।।

दहै धाइ जोबन औ जीऊ। होइ न बिरह अगिनि महँ घीऊ ।।
करवत सहौं होत दोइ आधा। सही न जाइ बिरह कै दाधा ।।
बिरहा सुभर समुंद असँ भारा। भँवर मेलि जिउ लहरन्हि मारा ।।
बिरह नाग होइ सिर चढ़ि डसा। औ होइ अगिनि चंदन महँ बसा ।।
जोबन पंखी बिरह बिआधू। केहरि भयो कुरंगिनि खाधू ।।
कनक बान जोगन कत कीन्हा। औ तन कठिन बिरह दुख दीन्हा ।।
जोबन जलहिं बिरह मसि छुवा। फूलहिं भँवर फरहिं भा सुवा ।।

जोबन चाँद उवा जस बिरह भएउ संग राहु।
घटतहि घटत खीन भा कहै न पारौं काहु ।।

नैन जो चक्र फिरै चहुँ ओराँ। चरचै धाइ समाइ न कोराँ ।।
कहेसि पेम जौं उपना बारी। बाँधु सत्त मन डोल न भारी ।।
जेहि जिय महँ सत होइ पहारू। परै पहार न बांकै बारू ।।
सती जो जरै पेम पिय लागी। जौं सत हिएँ तौ सीतल आगी ।।
जोबन चाँद जो चौदिसि करा। बिरह कि चिनगि चाँद पुनि जरा ।।
पवन बंध होइ जोगी जती। काम बंध होइ कामिनि सती ।।
आउ बसंत फूल फुलवारी। देव बार सब जैहहिं बारी ।।

पुनि तुम्ह जाहु बसंत लै पूजि मनावहु देव।
जिउ पाइअ जग जनमे पिउ पाइअ कै सेव ।।

जब लगि अवधि चाह सो आई । दिन जुग बर बिरहिनि कहँ जाई ।।
नींद भूख अह निसि गै दोऊ । हिएं माँझ जस कलपै कोऊ ।।
रोवंहिं रोवँ लागे जनु चांटे । सोतहि सोत वेधे बिख कांटे ।।
दगध कराह जरै सब जीऊ । बेगि न आउ मलैगिरि पीऊ ।।
कवन देव कहँ जाय परासौं । जेहि सुमेरू हिय लाइ गरा सौं ।।
गुपुत जो फल साँसहि परगटे । अब होइ सुभर चहहिं पुनि घटे ।।
भए सँजोग जौं रे अस मरना । भोगी भएँ भोग का करना ।।

जोबन चंचल ढीठ है करै निकाजहि काज ।
धनि कुलवंति जो कुल धरै करि जोगन महँ लाज ।।

× × ×

तेहि बियोग हीरामनि आवा । पदुमावति जानहुँ जिउ पावा ।।
कंठ लागि सो हीसुर रोई । अधिक मोह जो मिलै बिछोई ।।
आगि बुझी दुख हियँ जो गँभीरू । नैनन्ह आइ चुवा होइ नीरू ।।
रही रोइ जब पदुमिनि रानी । हँस पूछहिं सब सखी सयानी ।।
मिले रहस चाहिअ भा दूना । कत रोइअ जौं मिले बिछूना ।।
तेहि क उतर पदुमावति कहा । बिछुरन दुक्ख हिएँ भरि रहा ।।
मिला जो आइ हिएँ सुख भरा । वह दुख नैन नीर होइ बहा ।।

बिछुरंता जब भेंटिअै सो जानै जेहि नेहु ।
सुक्ख सुहेला उग्गवइ दुक्ख झरै जेउँ मेहु ।।

पुनि रानी हंसि कूसल पूँछा । कत गवनेहु पिंजर कै छूँछा ।।
रानी तुम्ह जुग जुग सुख पाटू । छाज न पंखिहि पिंजर ठाटू ।।
जौं भा पंख कहाँ थिर रहना । चाहै उड़ा पंखि जौं डहना ।।
पिंजर महँ जो परेवा घेरा । आइ मँजारि कीन्ह तहँ फेरा ।।
देवसेक आइ हाथ पै मेला । तेहि डर बनोबास कहँ खेला ।।
तहाँ बिआध जाइ नर साँधा । छूट न पाव मीचु कर बाँधा ।।
ओइँ धरि बेचा बाँभन हाथाँ । जंबू दीप गएउँ तेहि साथाँ ।।

तहाँ चित्र गढ़ चितउर चित्रसेनि कर राज । ·
टीका दीन्ह पुत्र कहँ आपु लीन्ह सिव साज ।।

बैठ जो राज पिता के ठाऊँ । राजा रतनसेनि ओहि नाऊँ ।।
का बरनों धनि देस दियारा । जहँ अस नग उपना उजियारा ।।
धनि माता धनि पिता बखाना । जेहि कें बंस अंस अस आना ।।
लखन बतीसौ कुल निरमरा । बरनि न जाइ रूप औ करा ।।
ओइँ हौं लीन्ह अहा अस भागू । चाहै सोनहि मिला मोहागू ।।

सो नग देखि इंछु भैं मोरी। है यह रतन पदारथ जोरी ।।
है ससि जोग इहै पै भानू। तहाँ तुम्हार मैं कीन्ह बखानू ।।

कहाँ रतन रतनाकर कंचन कहाँ सुमेरु।
दै जौं जोरी दुहुँ लिखी मिलै सो कवनेहु फेरु ।।

सुनि कै बिरह चिनगि ओहि परी। रतन पाव जौं कंचन करी ।।
कठिन पेम बिरहा दुख भारी। राज छांड़ि भा जोगि भिखारी ।।
मालति लागि भँवर जस होई। होइ बाउर निसरा बुधि खोई ।।
कहेसि पतंग होइ धँसि लेऊँ। सिंघल दीप जाइ जिउ देऊँ ।।
पुनि होहि कोउ न छाड़ अकेला। सोरह सहस कुँवर भए चेला ।।
औरु गनै को संग सहाई। महादेव मढ़ मेला जाई ।।
सुब्रुज परस दरस की ताईं। चितवै चाँद चकोर की नाईं ।।

तुम्ह बारीं रस जोग जेहि कँवलहि जस अरघानि।
तस सूरज परगासि कै भँवर मिलाएउँ आनि ।।

हीरामनि जौं कही रस बाता। सुनि कै रतन पदारथ राता ।।
जस सूरुज देखत होइ ओपा। तस भा बिरह काम दल कोपा ।।
पै सुनि जोगी केर बखानू। पदुमावति मन भा अभिमानू ।।
कंचन जौं कसिऔ कै ताता। तब जानिअ दहुँ पीत की राता ।।
कंचन करी काँचहि लोभा। जौं नग होइ पाव तब सोभा ।।
नग कर मरम सो जरिया जाना। जरै जो अस नग हीर पखाना ।।
को अस हाथ स्यिंघ मुख घाला। को यह बात पिता सौं चाला ।।

सरग इंद्र डरि काँपै बासुकि डरैं पतार।
कहाँ अैस बर प्रिथिमी मोहिं जाग संसार ।।

तूँ रानी ससि कंचन करा। वह नग रतन सूर निरमरा ।।
बिरह बजागि बीच का कोई। आगि जो छुवै जाइ जरि सोई ।।
आगि बुझाइ ढोइ जल काढ़ै। यह न बुझाइ आगि असि बाढ़ै ।।
बिरह की आगि सूर नहिं टिका। रातिहुँ दिवस जरा औ धिका ।।
खिनहिं सरग खिन जाइ पतारा। थिर न रहै तेहि आगि अपारा ।।
धनि सो जीव दगध इमि सहा। तैस जरे नहिं दोसर कहा ।।
सुलुगि सुलुगि भीतर होइ स्यामा। परगट होइ न कहा दुख नामा ।।

काह कहौं मैं ओहि कहँ जेइ दुख कीन्ह अमेंट।
तेहि दिन आगि करौं यह बाहर होइ जेही दिन भेंट ।।

हीरामनि जौं कही रस बाता। पाएउ पान भएउ मुख राता ।।
चला सुआ रानी तब कहा। भा जो परावा सो कैसें रहा ।।

जो निति चलै सँवारै पाँखा। आजु जो रहा कालिह को राखा॥
न जनौं आजु कहाँ दिन उवा। आएहु मिलैं चलेहु मिलि सुवा॥
मिलि कैं बिछुरन मरन की आना। कत आएहु जौं चलेहु निदाना॥
अनु रानी हौं रहतेउ राँधा। कैसे रहौं बचा कर बाँधा॥
ताकरि दिस्टि अैस तुम्ह सेवा। जैस कूँज मन सहज परेवा॥
बसै मीन जल धरती अंबा बिरखि अकास।
जौं रे पिरीति दुहन महँ अंत होहिं एक पास॥
आवा सुवा बैठ जहँ जोगी। मारग नैन बियोग बियोगी॥
आइ पेम रस कहा सँदेसू। गोरख मिला मिला उपदेसू॥
तुम्ह कहँ गुरू मया बहु कीन्हा। लीन्ह अदेस आदि कहँ दीन्हा॥
सबद एक होइ कहा अकेला। गुरु जस भृंगि फनिग जस चेला॥
भृंगि ओहि पंखिहि पै लेई। एकहिं बार छुएँ जिउ देई॥
ताकहँ गुरू करै असि माया। नव अवतार देइ नै काया॥
होइ अमर अस मरि कै जिया। भँवर कँवल मिलि कै मधु पिया॥
आवै रितू बसंत जब तब मधुकर तब बासु।
जोगी जोग जो इमि करहि सिद्धि समापति तासु॥

× × ×

पदुमावति सब सखीं बोलाईं। चीर पटोर हार पहिराईं॥
सीस सबन्हि के सेंदुर पूरा। सीस पूरि सब अंग सेंदूरा॥
चंदन अगर चतुरसम भरीं। नएँ चार जानहुँ अवतरीं॥
जनहु कँवल सँग फूली कईं। कै सौ चाँद सँग तरईं उईं॥
धनि पदुमावति धनि तोर नाहूँ। जेहि पहिरत पहिरा सब काहूँ॥
बारह अभरन सोरह सिंगारा। तोहि सोहइ यह ससि संसारा॥
ससि सो कलंकी राहुहि पूजा। तोहि निकलंक न होइ सरि दूजा॥
काहूँ बीन गहा कर काहूँ नाद म्रिदंग।
सब दिन अनँद गँवावा रहस कोड एक संग॥
भै निसि धनि जसि ससि परगसी। राजैं देखि पुहुम फिरि बसी॥
मै कातिकी सरद ससि उवा। बहुरि गंगन रबि चाहै छुवा॥
पुनि धनि धनुक भौहँ कर फेरी। काम कटाख टँकोर सो हेरी॥
जानहुँ नहिं कि पैज पिय खाँचौ। पिता सपथ हौं आजु न बाँचौ॥
कालिह न होइ रहे सह रामा। आजु करौ रावन संग्रामा॥
सेन सिंगार महूँ है सजा। गज गति चाल अंचर गति धुजा॥
नैन समुंद्र खरग नासिका। सरवरि जूझि को मो सौं टिका॥
हौं रानी पदुमावति मैं जीता सुख भोग।
तूँ सरवरि करु तासौं जस जोगी जेहिं जोग॥

हौं अस जोगि जान सब कोऊ। बीर सिंगार जिते मैं दोऊ ॥
उहाँ त समुँह रिपुन दर माहाँ। इहाँ त काम कटक तुव पाहाँ ॥
उहाँ त कोपि बैरिदर मंडौं। इहाँ त अधर अमिअ रस खंडौं ॥
उहाँ त खरग नरिंदन्ह मारौं। इहाँ त बिरह तुम्हार संघारौं ॥
उहाँ त गज पेलों होइ केहरि। इहाँ त कामिनि करसि हहेहरि ॥
उहाँ त लूसौं कटक खंधारू। इहाँ त जितों तुम्हार सिंगारू ॥
उहाँ त कुंभस्थल गज नावौं। इहाँ त कुच कलसन्ह कर लावौं ॥
परा बीचु धरहरिया पेम राज कै टेक।
मानहिं भोग छहूँ रितु मिलि दूनौं होइ एक ॥

प्रथम बसंत नवल रितु आई। सुरति चैत बैसाख सोहाई ॥
चंदन चीर पहिरि धनि अंगा। सेंदुर दीन्ह बिहंसि भरि मंगा ॥
कुसुम चीर औ परिमल बासू। मलयागिरि छिरिका कबिलासू ॥
सौर सुपेती फूलन्ह डासी। धनि औ कंत मिले मुखबासी ॥
पिउ संजोग धनि जोबन बारी। भँवर पुहुप सँग करहिं धमारी ॥
होइ फागु भलि चाँचरि जोरी। बिरह जराइ दीन्ह जसि होरी ॥
धनि ससि सियरि तपै पिउ सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू ॥
जेहि घर कंता रितु भली आउ बसंता नित्तु।
सुख बहरावहि देवहरै दुक्ख न जानहिं कित्तु ॥

रितु ग्रीखम कै तपिन न तहाँ। जेठ असाढ़ कंत घर जहाँ ॥
पहिरें सुरँग चीर धनि झीना। परिमल मेद रहै तन भीना ॥
पदुमावति तन सियर सुबासा। नैहर राज कंत कर पासा ॥
अधर तँबोर कपूर भिवँसेना। चंदन चरचि लाव नित बेना ॥
ओबरि जूड़ि तहाँ सोवनारा। अगर पोति सुख नेत ओहारा ॥
सेत बिछावन सौर सुपेती। भोग करहिं निसि दिन सुखसेंती ॥
भा अनंद सिंघल सब कहूँ। भागिवंत सुखिया रितु छहूँ ॥
दारिवँ दाख लेहिं रस बेरसहिं आँब सहार।
हरियर तन सुवटा कर जो अस चाखनहार ॥

रितु पावस बिरसै पिउ पावा। सावन भादौं अधिक सोहावा ॥
कोकिल बैन पांति बग छूटी। धनि निसरी जेउँ बीर बहूटी ॥
चमकै बिज्जु बरिस जग सोना। दादर मोर सबद सुठि लोना ॥
रँग राती पिय सँग निसि जागै। गरजै चमकि चौंकि कँठ लागै ॥
सीतल बुंद ऊँच चौबारा। हरियर सब देखिअ संसारा ॥
मलै समीर बास सुख बासी। बेइलि फूल सेज सुख डासी ॥
हरियर भुम्मि कुसुंभी चोला। औ पिय संगम रचा हिंडोला ॥

पौन झरक्के हिय हरख लागै सियरि बतास।
धनि जानै यह पौनु है पौनु सो अपनी आस॥

आइ सरद रितु अधिक पियारी। नौ कुवार कातिक उजियारी॥
पदुमावति भै पूनिवँ कला। चौदह चाँद उए सिंघला॥
सोरह करा सिंगार बनावा। नखतन्ह भरे सुरुज ससि पावा॥
भा निरमर सब धरनि अकासू। सेज सँवारि कीन्ह फुल डासू॥
सेत बिछावन औ उजियारी। हंसि हंसि मिलहिं पुरुख औ नारी॥
सोने फूल पिरिथिमी फूली। पिउ धनि सों धनि पिउ सों भूली॥
चखु अंजन दै खँजन देखावा। होइ सारस जोरी पिउ पावा॥

एहि रितु कंता पास जेहि सुख तिन्हके हिय माँह।
धनि हंसि लागै पिय गले धनि गल पिय कै बाँह॥

आइ सिसिर रितु तहाँ न सीऊ। अगहन पूस जहाँ घर पीऊ॥
धनि औ पिउ महँ सीउ सोहागा। दुहूँक अंग एक मिलि लागा॥
मन सौं मन तन सौं तन गहा। हिय सौं हिय बिच हार न रहा॥
जानहुँ चंदन लागेउ अंगा। चंदन रहै न पावै संगा॥
भोग करहिं सुख राजा रानी। उन्ह लेखें सब सिस्टि जुड़ानी॥
जूझै दुहूँ जोबन सौं लागा। बिच हुत सीउ जीउ लै भागा॥
दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं। ऐस मिलहिं तबहूँ न अघाहीं॥

हंसा केलि करहिं जेउँ सरवर कुंदहिं कुरलहिं दोउ।
सीउ पुकारै ठाढ़ भा जस चकई क बिछोउ॥

रितु हेवंत संग पीउ न पाला। माघ फागुन सुख सीउ सियाला॥
सौर सुपेती महँ दिन राती। दगल चीर पहिरहिं बहु भाँती॥
घर घर सिंघल होइ सुख भोगू। रहा न कतहूँ दुख कर खोजू॥
जहँ धनि पुरुख सीउ नहिं लागा। जानहुँ काग देखि सर भागा॥
जाइ इंद्र सौं कीन्ह पुकारा। हौं पदुमावति देस निकारा॥
एहि रितु सदा संग मैं सोवा। अब दरसन हुत मारि बिछोवा॥
अब हंसि कै ससि सूरहि भेंटा। अहा जो सीउ बीच हुत मेंटा॥

भएउ इंद्र कर आएसु प्रस्थावा यह सोइ।
कबहुँ काहु कै प्रभुता कबहुँ काहु कै होइ॥

× × ×

नागमती चितउर पँथ हेरा। पिउ जो गए फिरि कीन्ह न फेरा॥
नागरि नारि काहुँ बस परा। तेइँ बिमोहि मोसौं चितु हरा॥
सुवा काल होइ लै गा पीऊ। पिउ नहिं लेत लेत बरु जीऊ॥

भएउ नरायन बावन करा। राज करत बलि राजा छरा।।
करन बान लीन्हेउ कै छंदू। भारत भएउ झिलमिल आनंदू।।
मानत भोग गोपीचंद भोगी। लै उपसवा जलंधर जोगी।।
लै कान्हहि भा अकरुर अलोपी। कठिन बिछोउ जिअै किमि गोपी।।
सारस जोरी किमि हरी मारि गएउ किन खग्गि।
झुरि झुरि पाँजरि धनि भई बिरह कै लागी अग्गि।।

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस बोलै पिउ पीऊ।
अधिक कम दगधै सो रामा। हरि जिउ लै सो गएउ पिय नामा।।
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज भीजि तन चोली।।
सखि हिय हेरि हार मैन मारी। हहरि परान तजै अब नारी।।
खिन एक आव पेट महँ स्वाँसा। खिनहि जाइ सब होइ निरासा।।
पौनु डोलावहिं सींचहिं चोला। पहरक समुझि नारि मुख बोला।।
प्रान पयान होत केइँ राखा। को मिलाव चात्रिक कै भाखा।।
आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक।
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक।।

पाट महादेइ हिएँ न हारू। समुझि जीउ चित चेतु सँभारू।।
भँवर कँवल संग होइ न परावा। संवरि नेह मालति पहँ आवा।।
पीउ सेवाति सौं जैस पिरीती। टेकु पियास बाँधु जिय थीती।।
धरती जैस गँगन के नेहा। पलटि भरै बरखा रितु मेहा।।
पुनि बसंत रितु आव नवेली। सो रस सो मधुकर सो बेली।।
जनि अस जीउ करसि तूँ नारी। दहि तरिवर पुनि उठहिं सँभारी।।
दिन दस जल सूखा का नंसा। पुनि सोइ सरवर सोई हंसा।।
मिलहिं जो बिछुरै साजना गहि गहि भेंट गहंत।
तपनि मिरगिसिरा जे सहहिं अद्रा ते पलुहंत।।

चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।।
धूम स्याम धौरे घन आए। सेत धुजा बगु पांति देखाए।।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।।
दादुर मौर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्ब।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्ब।।

सावन बरसि मेह अति पानी । भरनि भरइ हौं बिरह झुरानी ।।
लागु पुनर्बसु पीउ न देखा । भै बाउरि कहँ कंत सरेखा ।।
रकत क आँसु परे भुइँ टूटी । रेंगि चली जनु बीर बहूटी ।।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला । हरियर भुइं कुसुंभि तन चोला ।।
हिय हिंडोल जस डोलै मोरा । बिरह झुलावै देइ झँकोरा ।।
बाट असूझ अथाह गँभीरा । जिउ बाउर भा भवै भँभीरा ।।
लग जल बूड़ि जहाँ लगि ताकी । मोर नाव खेवक बिनु थाकी ।।

परबत समुंद अगम बिच बन बेहड़ घन ढंख ।
किमि करि भेटौं कंत तोहि ना मोहि पाँव न पंख ।।

भर भादौं दूभर अति भारी । कैसें भरौं रैनि अंधियारी ।।
मंदिल सून पिय अनतै बसा । सेज नाग भै धै धै डसा ।।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी । नैन पसारि मरौं हिय फाटी ।।
चमकि बीज घन गरजि तरासा । बिरह काल होइ जीउ गरासा ।।
बरिसै मघा झंकोरि झंकोरी । मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी ।।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी । आक जवास भई हौं झूरी ।।
धनि सूखी भरि भादौं माहाँ । अबहूँ आइ न सींचति नाहाँ ।।

जल थल भरे अपूरि सब गंगन धरति मिलि एक ।
धनि जोबन औगाह महँ दे बूड़त पिय टेक ।।

लाग कुआर नीर जग घटा । अबहुँ आउ पिउ परभुमि लटा ।।
तोहि देखे पिउ पलुहै काया । उतरा चित्त फेरि करु माया ।।
उए अगस्ति हस्ति घन गाजा । तुरै पलानि चढ़े रन राजा ।।
चित्रा मिंत मीन घर आवा । कोकिल पीउ पुकारत पावा ।।
स्वाति बुंद चातिक मुख परे । सीप समुंद्र मोंति लै भरे ।।
सरवर सँवरि हंस चलि आए । सारस कुरुरहिं खँजन देखाए ।।
भए अवगास कास बन फूले । कंत न फिरे बिदेसहि भूले ।।

बिरह हस्ति तन सालै खाइ करै तन चूर ।
बेगि आइ पिय बाजहु गाजहु होइ सदूर ।।

कातिक सरद चंद उजियारी । जग सीतल हौं बिरहैं जारी ।।
चौदह करा कीन्ह परगासू । जानहुँ जरें सब धरति अकासू ।।
तन मन सेज करै अगिडाहू । सब कहँ चाँद मोहिं होइ राहू ।।
चहूँ खंड लागै अँधियारा । जौं घर नाहिंन कंत पियारा ।।
अबहूँ निठुर आव एहिं बारा । परब देवारी होइ संसारा ।।

सखि झूमक गावहि अँग मोरी। हौं झूरौं बिछुरी जेहि जोरी ।।
जेहि घर पिउ सो मुनिवरा पूजा। मो कहँ बिरह सवति दुख दूजा ।।
सखि मानहिं तेवहार सब गाइ देवारी खेलि।
हौं का खेलौं कंत बिनु तेहिं रही छार सिर मेलि ।।

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाइ किमि काढ़ी ।।
अब धनि देबस बिरह भा राती। जरै बिरह ज्यों दीपक बाती ।।
काँपा हिया जनावा सीऊ। तौ पै जाइ होइ संग पीऊ ।।
घर घर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रंग लै गा नाहूँ ।।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई ।।
सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा ।।
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम करै भसमंतू ।।
पिय सौं कहेहु संदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि गई तेहिक धुआँ हम लाग ।।

पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरुज जड़ाइ लंक दिसि तापा ।।
बिरह बाढ़ि भा दारुन सीऊ। कंपि कंपि मरौं लेहि हरि जीऊ ।।
कंत कहाँ हौ लागौं हियरें। पंथ अपार सूझ नहि नियरें ।।
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूड़ी ।।
चकई निसि बिछुरै दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला ।।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी ।।
बिरह सैचान भंवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएं नहिं छाँड़ा ।।
रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख ।।

लागेउ माँह परै अब पाला। बिरहा काल भएउ जड़काला ।।
पहल पहल तन रुई जो झांपै। हहलि हहलि अधिकौ हिय कांपै ।।
आइ सूर होइ तपु रे नाहाँ। तेहि बिनु जाड़ न छूटै माहाँ ।।
एहि मास उपजै रस मूलू। तूँ सो भँवर मोर जोबन फूलू ।।
नैन चुवहिं जस माँहुट नीरू। तेहि जल अंग लाग सर चीरू ।।
टूटहिं बुंद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारै झोला ।।
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। गियँ नहिं हार रही होइ डोरा ।।
तुम्ह बिनु कंता धनि हरुई तन तिनुवर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल ।।

फागुन पवन झँकोरै बहा। चौगुन सीउ जाइ किमि सहा ।।
तन जस पियर पात भा मोरा। बिरह न रहै पवन होइ झोरा ।।

तरिवर झरै झरै बन ढाँखा । भइ अनपत्त फूल कर साखा ।।
करिन्ह बनाफति कीन्ह हुलासू । मो कहँ भा जग दून उदासू ।।
फाग करहि सब चाँचरि जोरी । मोहिं जिय लाय दीन्हि जसि होरी ।।
जौं पै पियहि जरत अस भावा । जरत मरत मोहि रोस न आवा ।।
रातिहु देवस इहै मन मोरें । लागौं कंत थार जेउँ तोरें ।।
यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाउ ।
मकु तेंहि मारग होइ परौं कंत धरैं जहँ पाउ ।।

चैत बसंता होइ धमारी । मोहि लेखें संसार उजारी ।।
पंचम बिरह पंच सर मारै । रकत रोइ सगरौ बन ढारैं ।।
बूड़ि उठे सब तरिवर पाता । भीज मंजीठ टेसू बन राता ।।
मोरैं आँब फरैं अब लागे । अबहुँ सँवरि घर आउ सभागे ।।
सहस भाव फूली बनफती । मधुकर फिरे सँवरि मालती ।।
मो कहँ फूल भए जस कांटे । दिस्टि परत तन लागहिं चांटे ।।
भर जोबन एहु नारँग साखा । सोवा बिरह अब जाइ न राखा ।।
घिरिनि परेवा आव जस आइ परहु पिय टूटि ।
नारि पराएं हाथ है तुम्ह बिनु पाव न छूटि ।।

भा बैसाख तपनि अति लागी । चोला चीर चंदन भौ आगी ।।
सुरुज जरत हिवंचल ताका । बिरह बजागि सौहँ रथ हाँका ।।
जरत बजागिनि होउ पिय छाँहाँ । आइ बुझाउ, अंगारन्ह माहाँ ।।
तोहि दरसन होइ सीतल नारी । आइ आगि सौं करु फुलवारी ।।
लागिउँ जरे जरे जस भारू । बहुरि जो भूँजसि तजौं न बारू ।।
सरवर हिया घटत निति जाई । टूक टूक होइ होइ बिहराई ।।
बिहरत हिया करहु पिय टेका । दिस्टि दवँगरा मेरवहु एका ।।
कँवल जो बिगसा मानसर छारहिं मिलै सुखाइ ।
अबहुँ बेलि फिरि पलुहै जौं पिय सींचहु आइ ।।

जेठ जरै जग बहै लुवारा । उठै बवंडर धिकै पहारा ।।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा । लंक डाह करै तन लागा ।।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी । लंका डाहि पलंका लागी ।।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी । बिरह कि आगि कठिन असि मंदी ।।
उठै आगि औ आवै आँधी । नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी ।।
अधजर भई माँसु तन सूखा । लागेउ बिरह काग होइ भूखा ।।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा । अबहूँ आउ ।आवत सुनि भागा ।।

परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिऐ जरै जो अस पिय लागि॥

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी। भै मोकहँ यह छाजनि गाढ़ी॥
तन तिनुवर भा झूरौं खरी। भै बिरहा आगरि सिर परी॥
सांठि नाहिं लगि बात को पूँछा। बिनु जिय भएउ मूँज तन छूँछा॥
बंध नाहिं औ कंध न कोई। बाक न आव कहौं केहि रोई॥
ररि दूबरि भई टेक बिहूनी। थंभ नाहि उठि सकै न थूनी॥
बरसहिं नैन चुवहि घर माहाँ। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाँहाँ॥
कोरे कहाँ ठाट नव साजा। तुम्ह बिनु कंत न छाजन छाजा॥

अबहूँ दिस्टि मया करु छान्हिन तजु घर आउ।
मंदिल उजार होत है नव कै आनि बसाउ॥

रोइ गँवाएउ बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा॥
तिल तिल बरिस बरिस बरु जाई। पहर पहर जुग जुग न सिराई॥
सो न आउ पिउ रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सो नारी॥
साँझ भए झुरि झुरि पँथ हेरा। कौनु सो घरी करै पिउ फेरा॥
दहि कोइल भै कंत सनेहा। तोला माँस रहा नहिं देहा॥
रकत न रहा बिरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्हि ढरा॥
पाव लागि चेरी धनि हाहा। चूरा नेहु जोरु रे नाहा॥

बरसि देवस धनि रोइ कै हारि परी चित झांखि।
मानुस घर घर पूँछि कै पूँछै निसरी पांखि॥

भई पुछारि लीन्ह बनबासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिल्हवाँसू॥
कै खर बान कसै पिय लागा। जौं घर आवै अबहूँ कागा॥
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौनु परेवा॥
धौरी पंडुक कहु पिय ठाऊँ। जौ चित रोख न दोसर नाऊँ॥
जाहि बया गहि पिय कँठ लवा। करे मेराउ सोई गौरवा॥
कोइलि भई पुकारत रही। महरि पुकारि लेहु रे दही॥
पियरि तिलोरि आव जलहंसा। बिटहा पैठि हिएँ कत नंसा॥

जेहि पंखी कहँ अढ़वौं कहि सो बिरह कै बात।
सोई पंखि जाइ डहि तरिवर होइ निपात॥

कुहुकि कुहुकि जसि कोइलि रोई। रकत आँसु घुंघुची बन बोई॥
पै करमुखी नैन तन राती। को सिराव बिरहा दुख ताती॥
जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनबासी। तहँ तहँ होइ घुंघुचिन्ह कै रासी॥
बुंद बुंद महँ जानहुँ जीऊ। कुंजा गुंजि करहिं पिउ पिऊ॥

तेहि दुख डहे परास निपाते। लोहू बूड़ि उठे परभाते ॥
राते बिंब भए तेहि लोहू। परवर पाक फाट हिय गोहूँ ॥
देखिअ जहाँ सोइ होइ राता। जहाँ सो रतन कहै को बाता ॥

ना पावस ओहि देसरें ना हेवंत बसंत।
ना कोकिल न पपीहरा केहि सुनि आवहि कंत ॥

× × ×

यह जो पदुमिनि चितउर आनी। कुंदन कया दुवादस बानी ॥
कुंदन कनक न गंध न बासा। वह सुगंध जनु कँवल बिगासा ॥
कुंदन कनक कठोर सो अंगा। वह कोवंलि रँग पुहुप सुरंगा ॥
ओहि छुइ पवन बिरिख जेहि लागा। सो मलयागिरि भएउ सभागा ॥
काह न मूँठि भरी ओहि खेही। असि मूरति कै दैयँ उरेही ॥
सबै चितेर चित्र कै हारे। ओहिक चित्र कोइ करै न पारे ॥
कया कपूर हाड़ जनु मोती। तेहि तें अधिक दीन्ह बिधि जोती ॥

सूरुज क्रांति करा जसि निरमल नीर सरीर।
सौहँ निरखि नहिं जाइ निहारी नैनन्ह आवै नीर ॥

कत हौं अहा काल कर काढ़ा। जाइ धौराहर तर भौ ठाढ़ा ॥
कत वह आइ झरोखें झाँखी। नैन कुरंगिनि चितवनि बाँकी ॥
बिहँसी ससि तरई जनु परीं। कै सो रैनि छूटी फुलझरीं ॥
चमकि बीज जस भादों रैनी। जगत दिस्टि भरि रही उड़ैनी ॥
काम कटाख दिस्टि बिख वसा। नागिनि अलक पलक महँ डसा ॥
भौहँ धनुक तिल काजर ठोड़ी। वह भै धानुक हौं हियँ ओड़ी ॥
मारि चली मरतहि मैं हँसा। पाछें नाग अहा ओइँ डसा ॥

पाछें घालि काल सो राखा मंत्र न गारुरि कोइ।
जहाँ मँजूर पीठि ओइँ दीन्हे कासुँ पुकारौं रोइ ॥

बेनी छोरि झारु जौं केसा। रैनि होइ जग दीपक लेसा ॥
सिर हुति सोहरि परहिं भुइँ बारा। सगरे देस होइ अँधियारा ॥
जानहुँ लोटहिं चढ़े भुवंगा। बेधे बास मलैगिरि संगा ॥
सगबगाहिं बिख भरे बिसारे। लहरिआहिं लहकहिं अति कारे ॥
लुरहिं मुरहिं मानहिं जनु केली। नाग चढ़ा मालति की बेली ॥
लहरै देइ जानहुँ कालिंदी। फिरि फिरि भँवर भए चित फंदी ॥
चवँर ढरत आछहिं चहुँ पासा। भवँर न उड़हिं जो लुबुधे बासा ॥

होइ अँधियार बीजु खन लोकै जबहिं चीर गहि झाँपु।
केस काल ओइ कत मैं देखे सँवरि सँवरि जिय काँपु ॥

कनक माँग जो सेंदुर रेखा। जनु बसंत राता जग देखा ॥
कै पत्रावलि पाटी पारी। औ रचि चित्र बिचित्र सँवारी ॥
भएउ उरेह पुहुप सब नामा। जनु बग बगरि रहे घन स्यामा ॥
जमुँना माँझ सुरसती माँगा। दुहुँ दिसि चित्र तरंगहि गाँगा ॥
सेंदुर रेख सो ऊपर राती। बीर बहूटिन्ह की जनु पाँती ॥
बलि देवता भए देखि सेंदुरू। पूजै माँग भोर उठि सूरू ॥
भोर साँझ रबि होइ जो राता। ओहीं सो सेंदुर राता गाता ॥

बेनी कारी पुहुप लै निकसी जमुना आइ।
पूजा इंद्र अनंद सो सेंदुर सीस चढ़ाइ ॥

दुइज लिलाट अधिक मनि करा। संकर देखि माँथ भुइँ धरा ॥
एहि निति दुइज जगत महँ दीसा। जगत जोहारै देइ असीसा ॥
ससि होइ छपी न सरबरि छाजै। होइ जो अमावस छपि मन लाजै ॥
तिलक सँवारि जो चूनी रची। दुइज माहँ जानहुँ कचपची ॥
ससि पर करवत सारा राहू। नखतन्ह भरा दीन्ह परदाहू ॥
पारस जोति लिलाटहि ओती। दिस्टि जो करै होइ तेहि जोती ॥
सिरी जो रतन माँग बैसारा। जानहुँ गँगन टूट निसि तारा ॥

ससि औ सूर जो निरमल तेहि लिलाट की ओप।
निसि दिन चलहिं न सरबरि पावहिं तपि तपि होहिं अलोप ॥

भौहैं स्याम धनुक जनु चढ़ा। बेझ करै मानुस कहँ गढ़ा ॥
चाँद कि मूँठि धनुक तहँ ताना। काजर पनच बरुनि बिख बाना ॥
जा सहुँ फेर छोहाइ न मारे। गिरिवर टरहिं सो भौहँन्ह टारे ॥
सेतबंध जेइँ धनुक बिडारा। उहौ धनुक भौहँन्ह सौं हारा ॥
हारा धनुक जो बेधा राहू। औरु धनुक कोइ गनै न काहू ॥
कत सो धनुक मैं भौहँन्हि देखा। लाग बान तेत आव न लेखा ॥
तेत बानन्ह झाँझर भा हिया। जेहि अस मार सो कैसें जिया ॥

सोत सोत तन बेधा रोवँ रोवँ सब देह।
नस नस महँ भै सालहिं हाड़ हाड़ भए बेह ॥

नैन चतुर वै रूप चितेरे। कँवल पत्र पर मधुकर घेरे ॥
समुँद तरंग उठहि जनु राते। डोलहिं तस घूमहिं जनु मांते ॥
सरद चंद महँ खंजन जोरी। फिरि फिरि लरहि अहोर बहोरी ॥
चपल बिलोल डोल रह लागी। थिर न रहहिं चंचल बैरागी ॥
निरखि अवाहिं न हत्या हतें। फिरि फिरि स्रवनन्हि लागहिं मतें ॥

अंग सेत मुख स्याम जो ओहीं। तिरिछ चलहिं खिन सूध न होहीं ।।
सुर नर गंध्रप लालि कराहीं। उलटे चलहिं सरग कहँ जाहीं ।।

अस वै नैन चक्र दुइ भवँर समुँद उलथाहिं।
जनु जिउ घालि हिंडोरैं लै आवहिं लै जाहिं ।।

नासिक खरग हरे धनि कीरू। जोग सिंगार जिते औ बीरू ।।
ससि मुख सौहँ खरग गहि रामा। रावन सौं चाहै संग्रामा ।।
दुहूँ समुंद्र रचा जेन्हँ बीरू। सेत बंध बांधेउ नल नीरू ।।
तिलक पुहुप अस नासिक तासू। औ सुगंध दीन्हेउ बिधि बासू ।।
करन फूल पहिरें उजियारा। जानु सरद ससि सोहिल तारा ।।
सोहिल चाहि फूल वह गढ़ा। बिगसि फूल सब चाहहिं चढ़ा ।।

अस वह फूल बास कर आकर भा नासिक सनमंध।
जेत फूल ओहि फूलहिं हिरगे ते सब भए सुगंध ।।

अधर सुरंग पान अस खीने। राते रंग अमिअ रस भीने ।।
आछहिं भीज तँबोर सों राते। जनु गुलाल दीसहिं बिहँसाते ।।
मानिक अधर दसन नग हेरा। बैन रसाल खाँड मकु मेरा ।।
काढ़े अधर डाभ सौं चीरी। रुहिर चुवैं जौं खंडहि बीरी ।।
धारे रसहिं रसहिं रस गीले। रकत भरे वै सुरंग रँगीले ।।
जनु परभात रात रबि रेखा। बिगसे बदन कवँल जनु देखा ।।
अलक भुवंगिनि अधरन्ह राखा। गहै जो नागिनि सो रस चाखा ।।

अधर धरहिं रस पेम का अलक भुअंगिनि बीच।
तब अंम्रित रस पाउ पिउ ओहि नागिनि गहि खींचु ।।

दसन स्याम पानन्ह रँग पाके। बिहँसत कवँल भँवर अस ताके ।।
चमतकार मुख भीतर होई। जस दारिवँ औ स्याम मकोई ।।
चमकै चौक बिहँसु जौं नारी। बीज चमक जस निसि अँधियारी ।।
सेत स्याम अस चमकै डीठी। स्याम हीर दुहुँ पांति बईठी ।।
केइँ सो गढ़े अस दसन अमोला। मारैं बीज बिहँसि जौं बोला ।।
रतन भीज रँग मसि भै स्यामा। ओही छाज पदारथ नामा ।।
कत वह दरस देखि रँग भीने। लै गौ जोति नैन भौ खीने ।।

दसन जोति होइ नैन पँथ हिरदै माँझ बईठि।
परगट जग अँधियार जनु गुपुत ओहि पै डीठि ।।

रसना सुनहु जो कह रस बाता। कोकिल बैन सुनत मन राता ।।
अंम्रित कोंप जीभ जनु लाई। पान फूल असि बात मिठाई ।।
चात्रिक बैन सुनत होइ साँती। सुनै सो परै पेम मद माँती ।।

बीरौ सूख पाव जस नीरू । सुनत बैन तस पलुह सरीरू ।।
बोल सेवाति बुंद जेंउ परहीं । स्रवन सीप मुख मोंती भरहीं ।।
धनि वह बैन जो प्रान अधारू । भूखे स्रवननि देहिं अहारू ।।
ओन्ह बैनन्ह कै काहि न आसा । मोहहिं मिरिग बिहँस भरि स्वाँसा ।।

कंठ सारदा मोहहिं जीभ सुरसती काह ।
इंद्र चंद्र रबि देवता सबै जगत मुख चाह ।।

स्रवन सुनहु जो कुंदन सीपी । पहिरें कुंडल सिंघल दीपी ।।
चाँद सुरुज दुहुँ दिसि चमकाहीं । नखतन्ह भरे निरखि नहिं जाहीं ।।
खिन खिन करहिं बिज्जु अस कांपे । अंबर मेघ रहहिं नहिं झांपे ।।
सूक सनीचर दुहुँ दिसि मतें । होहिं निरार न स्रवनन्हि हुतें ।।
काँपत रहहिं बोल जौं बैना । स्रवनन्हि जनु लागहिं फिरि नैना ।।
जो जो बात सखिन्ह सौं सुना । दुहुँ दिसि करहिं सीस वै धुना ।।
खूँट दुहूँ धुव तरई खूँटी । जानहुँ परहिं कचपचीं टूटी ।।

बेद पुरान ग्रंथ जत सबै सुनै सिखि लीन्ह ।
नाद बिनोद राग रस बिंदक स्रवन ओहि बिधि दीन्ह ।।

कँवल कपोल ओहि अस छाजे । और न काहु दैयँ अस साजे ।।
पुहुप पंक रस अमिअ सँवारे । सुरंग गेंदु नारँग रतनारे ।।
पुनि कपोल बाएँ तिल परा । सो तिल बिरह चिनिगि कै करा ।।
जो तिल देख जाइ डहि सोई । बाईं दिस्टि काहु जनि होई ।।
जानहुँ भँवर पदुम पर टूटा । जीउ दीन्ह औ दिएहुँ न छूटा ।।
देखत तिल नैनन्ह गा गाड़ी । औरु न सूझै सो तिल छाँड़ी ।।
तेहि पर अलक मंजरी डोला । छुअै सो नागिनि सुरँग कपोला ।।

रख्या करै मँजूर ओहि हिरदैं ऊपर लोट ।
केहि जुगुति कोइ छुइ सकै दुइ परबत की ओट ।।

गीवँ मँजूर केरि जनु ठाढ़ी । कुंदै फेरि कुंदेरैं काढ़ी ।।
धन्य गीवँ का बरनौं करा । बाँक तुरंग जानु गहि धरा ।।
घुरत परेवा गीवँ उँचावा । चहै बोल तवँचूर सुनावा ।।
गीवँ सुराही कै असि भई । अमिय पियाला कारन नई ।।
पुनि तिहि ठाउँ परी तिरि रेखा । नैन ठाँव जिउ होइ सो देखा ।।
सूरुज क्रांति करा निरमली । दीसै पीकि जाति हिय चली ।।
कंज नार सोहै गिवँ हारा । साजि कँवल तेहि ऊपर धारा ।।

नागिनि चढ़ी कवँल पर चढ़ि कै बैठ कमंठ ।
जो ओहि काल गहि हाथ पसारै सो लागै ओहि कंठ ।।

कनक डंड भुज बनीं कलाई। डाँड़ी कँवल फेरि जनु लाई ॥
चँदन गाभ की भुजा सँवारी। जनु सुमेल कौंवलि पौंनारी ॥
तिन्ह डाँड़िन्ह वह कँवल हथोरी। एक कँवल कै दूनौ जोरी ॥
सहजहिं जानहुँ मेंहदी रची। मुकुता लै जनु घुँघुची पची ॥
कर पल्लौ जो हथोरिन्ह साथाँ। वै सुठि रकत भरे दुहुँ हाथाँ ॥
देखत हिए काढ़ि जिउ लेहीं। हिया काढ़ि लै जाहिं न देहीं ॥
कनक अँगूठी औ नग जरी। वह हत्यारिनि नखतन्ह भरी ॥

जैसनि भुजा कलाई तेहि बिधि जाइ न भाखि।
कंगन हाथ होइ जहँ तहँ दरपन का साखि ॥

हिया थार कुच कनक कचोरा। साजे जनहुँ सिरीफल जोरा ॥
एक पाट जनु दूनौं राजा। स्याम छत्र दूनहुँ सिर साजा ॥
जानहुँ लटू दुऔं एक साथाँ। जग भा लटू चढ़ै नहिं हाथाँ ॥
पातर पेट आहि जनु पूरी। पान अधार फूल असि कोवँरी ॥
रोमावलि ऊपर लट भूमा। जानहुँ दुऔ स्याम औ रूमा ॥
अलक भुवंगिनि तेहि पर लोटा। हेंगुरि एक खेल दुइ गोटा ॥
बाँह पगार उठे कुच दोऊ। नाग सरन उन्ह नाव न कोऊ ॥

कैसेहुँ नावहिं न नाएँ जोबन गरब उठान।
जो पहिलें कर लावै सो पाछें रति मान ॥

भ्रिंगि लंक जनु माँझ न लागा। दुइ खँड नलिनि माँझ जस तागा ॥
जब फिरि चली देख मैं पाछे। आछरि इंद्र *केरि जस काछें ॥
उजहि चली जनु भा पछिताऊ। अबहूँ दिस्टि लागि ओहि भाऊ ॥
ओहि के गवन छपि अछरीं गईं। भईं अलोप नहिं परगट भईं ॥
हंस ॰जाइ समुँद कहँ खेले। लाज गयंद धूरि सिर मेले ॥
जगत इस्त्रीं देखी महूँ। उदै अस्त असि नारि न कहूँ ॥
महि मंडल तौ ऐस न कोई। ब्रह्म मँडल जौं होइ तो होई ॥

बरनी नारि तहाँ लगि दिस्टि झरोखें आइ।
औरु जो रही अदिस्टि भै सो कछु बरनि न जाइ ॥

राघौ जौं धनि बरनि सुनाई। सुना साह मुरुछा गति आई ॥
जनु मूरति वह परगट भई। दरस देखाइ तबहिं छपि गई ॥
जो जो मँदिल पदुमिनी लेखी। सुनत सो कवँल कुमुद जेउँ देखी ॥
मालति होइ असि चित्त पईठी। औरु पुहुप कोइ आव न डीठी ॥
मन ह्वै भवँर भँवै बैरागा। कँवल छाँड़ि चित औरु न लागा ॥
चाँद के रंग सुरुज जस राता। अब नखतन्ह सौं पूँछ न बाता ॥
तब अलि अलाउदीन जग सूरू। लेउँ नारि चितउर कै चूरू ॥

जौं वह मालति मानसर अलि न बेलंबै जात।
चितउर महँ जो पदुमिनी फेरि वहै कहु बात।।

ए जग सूर कहौ तुम्ह पाहाँ। औरु पाँच नग चितउर माहाँ।।
एक हंस है पंखि अमोला। मोंती चुनै पदारथ बोला।।
दोसर नग जेहि अंब्रित बसा। सब बिख हरै जहाँ लगि डसा।।
तीसर पाहन परस पखाना। लोह छुवत होइ कंचन बाना।।
चौथ अहै सादूर अहेरी। जेहिं बन हस्ति धरे सब घेरी।।
पाँचौ है सोनहा लागना। राज पंखि पंखी कर जाना।।
हरिन रोझ कोइ बाँच न भागा। जस सैचान तैस उड़ि लागा।।

नग अमोल अस पाँचौं मान समुँद ओहि दीन्ह।
इसकंधर नहि पाएउ जौ रे समुँद धँसि लीन्ह।।

पान दीन्ह राघौ पहिरावा। दस गज हस्ति घोर सौ पावा।।
औ दोसर कंगन कर जोरी। रतन लागि तेहि तीस करोरी।।
लाख दिनार देवाई जेंवा। दारिद हरा समुद कै सेवा।।
हौं जेहि देवस पदुमिनी पावौं। तोहि राघौ चितउर बैसावौं।।
पहिलें कै पाँचौ नग मूँठी। सो नग लेउँ जो कनक अँगूठी।।
सरजा सेर पुरुख बरियारू। ताजन नाग सिंघ असवारू।।
दीन्ह पत्र लिखि बेगि चलावा। चितउर गढ़ राजा पहँ आवा।।

पत्र दीन्ह लै राजहि किरिपा लिखी अनेग।
सिंघल की जो पदुमिनी सो चाहौं यहिं बेगि।।

× × ×

सखिन्ह बुझाई दगधि अपारा। गै गोरा बादिल के बारा।।
कँवल चरन भुइँ जरम न धरे। जात तहाँ लगि छाला परे।।
निसरि आए सुनि छत्री दोऊ। तस कांपे जस काँप न कोऊ।।
केस छोरि चरनन्ह रज झारे। कहाँ पाउ पदुमावति धारे।।
राखा आनि पाट सोनवानी। बिरह बियोग न बैठी रानी।।
चँवरिधारि होइ चँवर डोलावहिं। माथें छाहँ रजायसु पावहिं।।
उलटि बहा गंगा कर पानी। सेवक बार न आवै रानी।।

का अस कीन्ह कस्ट जिय जो तुम्ह करत न छाज।
अग्याँ होइ बेगि कै जीव तुम्हारे काज।।

कहै रोइ पदुमावति बाता। नैनन्ह रकत देखि जग राता।।
उलथि समुँद जस मानिक भरे। रोई रुहिर आँसु तस ढरे।।
रतन के रंग नैन पै वारौं। रती रती कै लोहू ढारौं।।

कँवलन्ह ऊपर भवर उड़ावौं। सूरज जहाँ तहाँ लै आवौं॥
हिय कै हरद बदन कै लोहू। जिउ बलि देउँ सो सँवरि बिछोहू॥
परहिं आँसु सावन जस नीरू। हरियर भुइँ कुसुंभि तन चीरू॥
चढ़े भुवंग लुरहि लट केसा। भै रोवत जोगिनि के भेसा॥

बीर बहूटी होइ चली तबहूँ रहहिं न आँसु।
नैनन्हि पंथ न सूझै लागेउ भादवँ मासु॥

तुम्ह गोरा बादिल खँभ दोऊ। जस भारथ तुम्ह औरु न कोऊ॥
दुख बिरिखा अब रहै न राखा। मूल पतार सरग भइ साखा॥
छाया रही सकल महि पूरी। बिरह बेलि होइ बाढ़ि खजूरी॥
तेहि दुख केत बिरिख बन बाढ़े। सीस उघारें रोवहि ठाढ़े॥
पुहुमी पूरि सायर दुख पाटा। कौड़ी भई बिहरि हिय फाटा॥
बिहरा हिए खजूरि क बिया। बिहरैं नहिं यह पाहन हिया॥
पिय जहँ बंदि जोगिनि होइ धावौं। हौं होइ बंदि पियहि मोकरावौं॥

सूरज गहन गरासा कवँल न बैठे पाट।
महूँ पंथ तेहि गवनब कंत गए जेहि बाट॥

गोरा बादिल दुवौ पसीजे। रोवत रुहिर सीस पाँ भीजे॥
हम राजा सौं इहै कोहाने। तुम्ह न मिलहु धरियेहु तुरुकाने॥
जो मत सुनि हम आइ कोंहाई। सो निआन हम माँथें आई॥
जब लगि जियहि न ताकहिं दोहू। स्यामि जिऐ कस जोगिनि होहू॥
उऐ अगस्ति हस्ति वन गाजा। नीर घटा घर आइहि राजा॥
का बरखा अगस्ति की डीठी। परे पलानि तुरंगम पीठी॥
वेधौं राहु छड़ावौं सूरू। रहै न दुख कर मूल अँकूरू॥

वह सूरज तुम्ह ससि सरद आदि मिलावहिं सोइ।
तस दुख महँ सुख उपनै रैनि माँझ दिन होइ॥

लेहु पान बादलि औ गोरा। केहि लै देउँ उपमा तुम्ह जोरा॥
तुम्ह सावँत नहिं सरबरि कोऊ। तुम्ह अंगद हनिवँत सम दोऊ॥
तुम्ह बलबीर जाज जगदेऊ। तुम्ह मुस्टिक औ मालकंडेऊ॥
तुम्ह अरजुन औ भीम भुआरा। तुम्ह नल नील मेंड़ देनिहारा॥
तुम्ह टारन भारन जग जाने। तुम्ह सो परसु औ करन बखाने॥
तुम्ह भोरे बादिल औ गोरा। काकर मुख हेरौं बंदिछोरा॥
जस हनिवँत राघौ बंदि छोरी। तस तुम्ह छोरि मिलावहु जोरी॥

जैसें जरत लखा ग्रिहँ साहस कीन्हेउ भीवँ।
जरत खंभ तस काढ़हु कै पुरुखारथ जीवँ॥

गोरा बादिल बीरा लीन्हा। जस अंगद हनिवंत बर कीन्हा ।।
साजि सिंहासन तानहिं छातू। तुम्ह माँथे जुग जुग अहिवातू ।।
कवँल चरन भुइँ धरत दुखावहु। चढ़हु सिंघासन मंदिल सिधावहु ।।
सुनि सूरज कवंलहि जिय जागा। केसरि बरन बोल हियँ लागा ।।
जनु निसि महँ रबि दीन्ह देखाई। भा उदोत मसि गई बिलाई ।।
चढ़ि सो सिंघासन झमकत चली। जानहुँ दुइज चाँद निरमली ।।
औ संग सखी कमोद तराई। ढारत चवर मंदिल लै आई ।।

देखि सो दुइज सिंघासन संकर धरा लिलाट।
कवँल चरन पदुमावति लै बैसारेन्हि पाट ।।

× × ×

पदुमावति मन अही जो झूरी। सुनत सरोवर हिय गा पूरी ।।
अद्रा महँ हुलास जस होई। सुख सोहाग आदर भा सोई ।।
नलिनि निकंदी लीन्ह अँकूरू। उठा कँवल उगवा सुनि सूरू ।।
पुरइनि पूरि सँवारे पाता। पुनि बिधि आनि धरा सिर छाता ।।
लागे उदै होइ जस भोरा। रैनि गई दिन कीन्ह बहोरा ।।
अस्तु अस्तु सुनि भा किलकिला। आगें मिलै कटक सब चला ।।
देखि चाँद असि पदुमिनि रानी। सखी कमोद सबै बिगसानी ।।

गहन छूट दिनकर कर ससि सौं होइ मेराउ।
मंदिल सिंघासन साजा बाजा नगर बधाउ ।।

बिहंसि चंद दै माँग सेंदुरा। आरति करै चली जहँ सूरा ।।
औ गोहने सब सखीं तराई। चितउर की रानी जहँ ताई ।।
जनु बसंत रितु फूली छूटी। कै सावन महँ बीरबहूटी ।।
भा अनंद बाजा पंच तूरा। जगत रात होइ चला सेंदूरा ।।
राजा जनहुँ सूर परगासा। पदुमावति मुख कँवल बिगासा ।।
कँवल पाय सूरुज के परा। सूरुज कँवल आनि सिर धरा ।।
दुंद मृदंग मुर ढोलक बाजे। इंद्र सबद सो सबद सुनि लाजे ।।

सेंदुर फूल तंबोर सिउँ सखी सहेलीं साथ।
धनि पूजै पिय पाय दुइ पिय पूजै धनि माथ ।।

पूजा कवनि देउँ तुम्ह राजा। सबै तुम्हार आव मोहि लाजा ।।
तन मन जोबन आरति करेऊँ। जीउ काढ़ि नेवछावरि देऊँ ।।
पंथ पूरि कै दिस्टि बिछावौं। तुम्ह पगु धरहु नैन हौं लावौं ।।
पाय बुहारत पलक न मारौं। बरुनिन्ह सेंति चरन रज झारौं ।।
हिया सो मंदिल तुम्हारै नाहाँ। नैनन्हि पंथ आवहु तेहि माहाँ ।।

बैठहु पाट छत्र नव फेरी। तुम्हरें गरब गरुइ हौं चेरी ॥
तुम्ह जियं हौं तन जौं अनि मया। कहै जो जीउ करे सो कया ॥

जौं सूरुज सिर ऊपर आवा तब सो कँवल सुख छात।
नाहिं तौ भरे सरोवर सूखै पुरइनि पात ॥

परसि पाय राजा के रानी। पुनि आरति बादिल कहँ आनी ॥
पूजे बादिल के भुजडंडा। तुरिअ के पाउ दाबि कर खंडा ॥
यह गज गवन गरब सिउं मोरा। तुम्ह राखा बादिल औ गोरा ॥
सेंदुर तिलक जो आँकुस अहा। तुम्ह माँथें राखा तब रहा ॥
काज रतन तुम्ह जिय पर खेला। तुम्ह जिय आनि मंजूसा मेला ॥
राखेउ छात चँवर औ ढारा। राखेउ छुद्रघंट झनकारा ॥
तुम्ह हनिवंत होइ धुजा बईठे। तब चितउर पिय आइ पईठे ॥

पुनि गज हस्ति चढ़ावा नेत बिछावा बाट।
बाजत गाजत राजा आइ बैठ सुख पाट ॥

निसि राजैं रानी कंठ लाई। पिय मरजिया नारि ज्यौं पाई ॥
रंग कै राजैं दुख अगुसारा। जियत जीव नहिं करौ निनारा ॥
कठिन बंदि लै तुरुकन्ह गहा। जौं सँवरौं जिय पेट न रहा ॥
खनि गड़ ओबरी महँ लै मेला। साँकर औ अँधियार दुहेला ॥
राँध न तहँवा दोसर कोई। न जनौं पवन पानि कस होई ॥
खिन खिन जीव संडासिन्ह आँका। आवहिं डोंब छुवावहिं बाँका ॥
बीछी साँप रहहिं निति पासा। भोजन सोइ डसहिं हर स्वाँसा ॥

आस तुम्हारे मिलन की रहा जीव तब पेट।
नाहिं तो होत निरास जौं कत जीवन कत भेंट ॥

तुम्ह पिय भँवर परी अति बेरा। अब दुख सुनहु कँवल धनि केरा ॥
छांड़ि गएहु सरबर महँ मोहीं। सरवर सूखि गएउ बिनु तोहीं ॥
केलि जो करत हंस उड़ि गएऊ। दिनअर मीत सो बैरी भएऊ ॥
गई भीर तजि पुरइन पाता। मुइउँ धूप सिर रहा न छाता ॥
भइउँ मीन तन तलफै लागा। बिरहा आइ बैठ होइ कागा ॥
काग चोंच तस साल न नाहाँ। जसि बंदि तोरि साल हिय माँहाँ ॥
कहेउँ काग अब लै तहँ जाही। जहँवाँ पिव देखै मोहि खाही ॥

काग निखिद्ध गीध अस का मारहिं हौं मंदि।
एहि पछताएँ सुठि मुइउँ गइउँ न पिय सँग बंदि ॥

तेहि ऊपर का कहौं जो मारी। बिखम पहार परा दुख भारी ॥
दूति एक देवपाल पठाई। बाँभनि भेस छरै मोहि आई ॥

कहै तोरि हौं आदि सहेली। चलु लै जाउँ भँवर जहँ बेली॥
तब मैं ग्यान कीन्ह सतु बाँधा। ओहि के बोल लागु तिख साँधा॥
कहेऊँ कँवल नहि करै अहेरा। जौं है भँवर करिहि सै फेरा॥
पाँच भूत आतमा नेवारेउँ। बारहि बार फिरत मन मारेउँ॥
औ समुझाएउँ आपन हियरा। कंत न दूरि अहै सुठि नियरा॥

बास फूल घिउ छीर जस निरमल नीर मंठाहँ।
तस कि घटै घट पुरुख ज्यों रे अगिनि कठाहँ॥

× × ×

पदुमावति नइ पहिरि पटोरी। चली साथ होइ पिय की जोरी॥
सूरुज छुपा रैनि होइ गई। पूनिवँ ससि सो अमावस भई॥
छोरे केस मोंति लर टूटे। जानहुँ रैनि नखत सब टूटे॥
सेंदुर परा जो सीस उघारी। आगि लाग जनु जग अँधियारी॥
एहि देवस हौं चाहति नाहाँ। चलौं साथ बाहौं गल बाँहाँ॥
सारस पंखि न जियै निनारे। हौं तुम्ह बिनु का जियौं पियारे॥
नेवछावरि कै तन छिरिआवौं। छार होइ संगि बहुरि न आवौं॥

दीपक प्रीति पतंग जेउँ जनम निबाह करेउँ।
नेवछावरि चहुँ पास होइ कंठ लागि जिउ देउँ॥

नागमती पदुमावति रानीं। दुवौ महासत सती बखानीं॥
दुवौ आइ चढ़ि खाट बईठीं। औ सिवलोक परा तिन्ह डीठीं॥
बैठौ कोइ राज औ पाटा। अन्त सबै बैठिहि एहि खाटा॥
चंदन अगर काढ़ि सर साजा। औ गति देइ चले लै राजा॥
बाजन बाजहिं होइ अकूता। दुऔ कंत लै चाहहि सूता॥
एक जो बाजा भएउ बियाहू। अब दोसरें होइ ओर निबाहू॥
जियत जो जरहिं कंत की आसा। मुँए रहसि बैठहिं एक पासा॥

आजु सूर दिन अँथवा आजु रैनि ससि बूड़ि।
आजु बांचि जिय दीजिअ आजु आगि हम जूड़ि॥

सर रचि दान पुन्नि बहु कीन्हा। सात बार फिरि भाँवरि दीन्हा॥
एक भँवरि भै जो रे बियाहीं। अब दोसरि दै गोहन जाहीं॥
लै सर ऊपर खाट बिछाई। पौढ़ीं दुवौ कंत कँठ लाई॥
जियत कंत तुम्ह हम कँठ लाई। मुए कंठ नहिं छाँड़हिं साँई॥
औ जो गांठि कंत तुम्ह जोरी। आदि अंत दिन्हि जाइ न छोरी॥
एहि जग काह जो आथि निआथी। हम तुम्ह नाहँ दुहूँ जग साथी॥
लागीं कंठ आगि दै होरीं। छार भईं जरि अंग न मोरीं॥

रातीं पिय के नेह गइँ सरग भएउ रतनार।
जो रे उवा सो अँथवा रहा न कोई संसार॥

ओइ सह गवन भईं जब ताईं। पातसाहि गढ़ छेंका आई॥
तब लगि सो औसर होइ बीता। भए अलोप राम औ सीता॥
आइ साहि सब सुना अखारा। होइ गा राति देवस जो बारा॥
छार उठाइ लीन्हि एक मूँठी। दीन्हि उड़ाइ पिरिथमी झूठी॥
जौ लगि ऊपर छार न परई। तब लगि नाहिं जो तिस्ना मरई॥
सगरैं कटक उठाई माटी। पुल बाँधा जहँ जहँ गढ़ घाटी॥
भा ढोवा भा जूझि असूझा। बादिल आइ पँवरि होइ जूझा॥

जौहर भईं इस्तिरी पुरुख भए संग्राम।
पातसाहि गढ़ चूरा चितउर भा इसलाम॥

तुलसी दास

जो सुमिरत सिधि होय गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन॥
बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर॥

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती॥
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी॥
श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती॥
दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू॥
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के॥
सूझहिं राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक॥

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ।।

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन ।।
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनउँ राम चरित भव मोचन ।।
बंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ।।
सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ।।
साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ।।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहिं जग जस पावा ।।
मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ।।
राम भक्त जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ।।
बिधि निषेधमय कलि मल हरनी । करम कथा रबिनंदनि बरनी ।।
हरि हर कथा बिराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ।।
बटु बिस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ।।
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ।।
अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ।।

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ।।

मज्जन फल पेखिअ ततकाला । काक होहिं पिक बकउ मराला ।।
सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगति महिमा नहिं गोई ।।
बालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी ।।
जलचर थलचर नभचर नाना । जे जड़ चेतन जीव जहाना ।।
मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ।।
सो जनाब सतसंग प्रभाऊ । लोकहुँ बेद न आन उपाऊ ।।
बिनु सतसंग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ।।
सतसंगत मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।।
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परस कुधात सुहाई ।।
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।।
बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी । कहत साधु महिमा सकुचानी ।।
सो मो सन कहि जात न कैसें । साक बनिक मनि गुन गन जैसें ।।

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ।।

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ।।

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ।।
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें।।
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से।।
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी।।
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा।।
उदय केत सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके।।
पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं।।
बंदउँ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइ पर दोषा।।
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना।।
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही।।
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा।।

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति।।

मै अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा।।
बायस पलिअहि अति अनुरागा। होहि निरामिष कबहुँ कि कागा।।
बंदउँ संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना।।
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं।।
उपजहि एक संग जग माहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।।
सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू।।
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अँपलोक बिभूती।।
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू।।
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई।।

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु।।

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा।।
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने।।
भलेउ पोच सब बिधि उपजाए। गनि गुन दोष बेद बिलगाए।।
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना।।
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती।।
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू।।
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा।।
कासी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु मारव महिदेव गवासा।।
सरग नरक अनुराग बिरागा। निगमागम गुन दोष बिभागा।।

जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंत गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहिं मनु राता॥
काल सुभाउ करम बरिआईं। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाईं॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं॥
खलउ करहि भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू॥
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ॥
उघरहि अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥
किएहुँ कुबेषु साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहि राम देहि गनि गारीं॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता॥

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहि कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह॥

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदउँ किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी॥
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोहू॥
निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें बिनय करउँ सब पाहीं॥
करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा॥
सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ॥
मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न आछी॥
छमिहहि सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बाल बचन मन लाई॥
जौं बालक कह तोतरि बाता। सुनहि मुदित मन पितु अरु माता॥
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी॥

निज कबित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका॥
जे पर भनिति सुनत हरषाहीं। ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥
जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई॥
सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई॥

भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास॥

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहि कलकंठ कठोरा॥
हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहि मलिन खल बिमल बतकही॥
कबित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू॥
भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी॥
प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागिहि फीकी॥
हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुबर की॥
राम भगति भूषित जियँ जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी॥
कबि न होउँ नहि बचन प्रबीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू॥
आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक बिधाना॥
भाव भेद रस भेद अपारा। कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा॥
कबित बिबेक एक नहि मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागज कोरें॥

भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व बिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहि सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन *पुरान श्रुति सारा॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥
भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ॥
बिधुबदनी सब भांति सँवारी। सोह न बसन बिना बर नारी॥
सब गुन रहित कुकवि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी॥
सादर कहहि सुनहि बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही॥
जदपि कबित रस एकउ नाहीं। राम प्रताप प्रगट एहि माहीं॥
सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा॥
धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई॥
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी॥

मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कबिता सरसि की ज्यों सरिस पावन पाथ की॥
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी॥

प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग।
दारु बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग॥
स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान॥

× × ×

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा॥
बंदउँ सब के चरन सुहाए। अधम सरीर राम जिन्ह पाए॥
रघुपति चरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते॥
बंदउँ पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे॥
सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर बिग्यान बिसारद॥
प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा॥
जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥
पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदउँ सब लायक॥
राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक॥

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू॥
महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ॥
जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेईं पिय संग भवानी॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को॥
नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
रामं नाम बर बरन जुग सावन भादव मास॥

आखर मनुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहु॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक बिसेषि जन त्राता॥
भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन॥

स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के।।
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से।।

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ।।

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी।।
नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।।
को बड़ छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू।।
देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना।।
रूप बिसेष नाम बिनु जानें। करतल गत न परहि पहिचानें।।
सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें।।
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी।।
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर।।

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।
ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहि तेऊ।।
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहि कुसंकट होहिं सुखारी।।
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा।।
चहूँ चतुर कहुँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा।।
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ।।

सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किए मन मीन।।

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।।
मोरें मत बड़ नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें।।
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की।।
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू।।
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें।।
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन घन आनँद रासी।।
अस प्रभु हृदयँ अछत अबिकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी।।
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें।।

निरगुन तें एहि भांति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार।।
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी।।
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहि मुद मंगल बासा।।
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी।।
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी।।
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा।।
भंजेउ राम आप भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू।।
दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन।।
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन।।
सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ।।
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ।।
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे।।
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा।।
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं।।
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा।।
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी।।
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती।।
फिरत सनेहँ मगन सुख अपनें। नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें।।
ब्रह्म राम ते नामु बड़ बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि।।
नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी।।
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी।।
नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू।।
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रहलादू।।
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ।।
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ।।
कहौ कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।
नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु।।
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव बिसोका।।
बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू।।

ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजें । द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥
कलि केवल मल मूल मलीना । पाप पयोनिधि जन मन मीना ॥
नाम कामतरु काल कराला । सुमिरत समन सकल जग जाला ॥
राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥
नहिं कलि करम न भगति बिबेकू । राम नाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥
राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥
भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । नाम जपत मंगल दिःसि दसहूँ ॥
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती । जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो । निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥
लोकहुँ बेद सुसाहिब रीती । बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्रामनर नागर । पंडित मूढ मलीन उजागर ॥
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी । नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुसील नृपाला । ईस अंस भव परम कृपाला ॥
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी । भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोतें । को जग मंद मलिन मति मोतें ॥
सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु ।
उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ॥
हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥

× × ×

रामकथा सुंदर कर तारी । संसय बिहग उड़ावनिहारी ॥
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥
राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥
जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना ॥
तदपि जथा श्रुति जसि मति मोरी । कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई । सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥
एक बात नहिं मोहि सोहानी । जदपि मोह बस कहेहु भवानी ॥
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना ॥
कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जो मोह पिसाच ।
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साच ॥

जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा॥
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा॥
असि सब भांति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी॥

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥

कासीं मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करउँ बिसोकी॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुबर सब उर अंतरजामी॥
बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं॥
राम सो परमातमा भवानी। तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी॥
अस संसय आनत उर माहीं। ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं॥
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना। मिटि गै सब कुतरक कै रचना॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुन असंभावना बीती॥

पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि।
बोलीं गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि॥

× × ×

बैठे सुर सब करहिं बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई॥
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीती। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती॥
तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ। अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ॥
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी॥
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना॥

सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर॥

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥

जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ॥

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा। तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ॥
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउँ दिनकर बंस उदारा ॥
कस्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा ॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा। कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा ॥
तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई। रघुकुलतिलक सो चारिउ भाई ॥
नारद बचन सत्य सब करिहउँ। परम सक्ति समेत अवतरिहउँ ॥
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई। निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा। अभय भई भरोस जियँ आवा ॥

निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥

गए देव सब निज निज धामा। भूमि सहित मन कहुँ बिश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा। हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥
बनचर देह धरी छिति माहीं। अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा। हरि मारग चितवहिं मतिधीरा ॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी। रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा। अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा ॥
अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ ॥
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी। हृदयँ भगति मति सारँगपानी ॥

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत ।।

एक बार भूपित मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं ।।
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला ।।
निज दुख सुख सब गुरहि सुनयउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ ।।
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ।।
सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्ग करावा ।।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हें ।।
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ विचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ।।
यह हबि बांटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई ।।

तब अदृस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ।:

तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाईं। कौसल्यादि तहाँ चलि आईं ।।
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा ।।
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ ।।
कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ।।
एहि बिधि गर्भसहित सब नारी। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी ।।
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए ।।
मंदिर महँ सब राजहिं रानी। सोभा सील तेज की खानीं ।।
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ।।

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ।।

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ।।
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा ।।
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ ।।
बन कुसुमित गिरिगन मनि आरा। स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ।।
सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना ।।
गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्व बरूथा ।।
बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ।।
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा ।।

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम ।।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी॥
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी॥
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठन करत मति धीरा॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई॥
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा॥
गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृपराजा॥
अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई॥

नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा। कहि न जाइ जेहि भांति बनावा॥
सुमनबृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद मगन सब लोई॥
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं। सहज सिंगार किएँ उठि धाईं॥
कनक कलस मंगल भरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा॥

करि आरति नेवछावरि करहीं । बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ।।
मागध सूत बंदिगन गायक । पावन गुन गावहिं रघुनायक ।।
सर्बस दान दीन्ह सब काहू । जेहिं पावा राखा नहिं ताहू ।।
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा । मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा ।।

गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद ।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ।।

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ ।।
वह सुख संपति समय समाजा । कहि न सकइ सारद अहिराजा ।।
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती । प्रभुहि मिलन आई जनु राती ।।
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि बनी संध्या अनुमानी ।।
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी । उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी ।।
मंदिर मनि समूह जनु तारा । नृप गृह कलस सो इंदु उदारा ।।
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी । जनु खग मुखर समय जनु सानी ।।
कौतुक देखि पतंग भुलाना । एक मास तेइँ जात न जाना ।।

मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ ।
रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ।।

× × ×

देखन बागु कुअँर दुइ आए । बय किसोर सब भांति सुहाए ।।
स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ।।
सुनि हरषीं सब सखीं सयानी । सिय हियँ अति उतकंठा जानी ।।
एक कहइ नृपसुत तेइ आली । सुने जे मुनि सँग आए काली ।।
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । कीन्हे स्वबस नगर नर नारी ।।
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू । अवसि देखिअहिं देखन जोगू ।।
तासु बचन अति सियहि सोहाने । दरस लागि लोचन अकुलाने ।।
चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखइ न कोई ।।

सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ।।

कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ।।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही । मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही ।।
अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ।।
भए बिलोचन चारु अचंचल । मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ।।
देखि सीय सोभा सुखु पावा । हृदयँ सराहत बचनु न आवा ।।
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई । बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ।।

सुंदरता कहुँ सुंदर करई। छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई॥
सब उपमा कबि रहे जुठारी। केहिं पटतरौं बिदेहकुमारी॥

सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि॥

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई॥
पूजन गौरि सखीं लै आईं। करत प्रकासु फिरइ फुलवाईं॥
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा॥
सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता॥
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरी॥
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी। नहिं पावहि परतिय मनु डीठी॥
मंगन लहहि न जिन्ह कै नाहीं। ते नरबर थोरे जग माहीं॥

करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान॥

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृपकिसोर मनु चिंता॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी॥
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥
थके नयन रघुपति छबि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें॥
अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी॥
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी॥

लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ॥

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजात सरीरा॥
मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुम कलीके॥
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषन छबि छाए॥
बिकट भृकुटि कच घूँघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे॥
चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला॥
मुखछबि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं॥
उर मनि माल कंबु कल ग्रीवा। काम कलभ कर भुज बलसींवा॥
सुमन समेत बाम कर दोना। सावँर कुअँर सखी सुठि लोना॥

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ।।

धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी ।।
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू ।।
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ।।
नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ।।
परबस सखिन्ह लखी जब सीता। भयउ गहरु सब कहहिं सभीता ।।
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली ।।
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ बिलंबु मातु भय मानी ।।
धरि बड़ि धीर रामु उर आने। फिरी अपनपउ पितुबस जाने ।।

देखन मिस मृग बिहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि ।।

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति ।।
प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी ।।
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित्त भीतीं लिख लीन्ही ।।
गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ।।
जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ।।
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ।।
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना ।।
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि ।।

पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ।।

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी ।।
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ।।
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें ।।
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं ।।
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी ।।
सादर सीयँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ।।
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ।।
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ।।

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।

एहि भाति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।।
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ।।

हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ।।
राम कहा सबु कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ।।
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ।।
सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ।।
करि भोजनु मुनिबर बिग्यानी लगे कहन कछु कथा पुरानी ।।
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई । संध्या करन चले दोउ भाई ।।
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ।।
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माही । सीय बदन सम हिमकर नाहीं ।।

जनमु सिंधु पुनि बंधु बिषु दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ।।

घटइ बढ़इ बिरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ।।
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ।।
बैदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ।।
सिय मुख छबि बिधु ब्याज बखानी । गुर पहिं चले निसा बड़ि जानी ।।
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ।।
बिगत निसा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ।।
उयउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ।।
बोले लखनु जोरि जुग पानी । प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बानी ।।

अरुनोदय सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ।।

× × ×

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी । जगदंबिका रूप गुन खानी ।।
उपमा सकल मोहि लघु लागीं । प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ।।
सिय बरनिअ तेइ उपमा देई । कुकबि कहाइ अजसु को लेई ।।
जौ पटतरिअ तीय सम सीया । जग असि जुबति कहाँ कमनीया ।।
गिरा मुखर तन अरध भवानी । रति अति दुखित अतनु पति जानी ।।
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही । कहिअ रमासम किमि बैदेही ।।
जौ छबि सुधा पयोनिधि होई । परम रूपमय कच्छपु सोई ।।
सोभा रजु मंदरु सिंगारू । मथै पानि पंकज निज मारू ।।

एहि बिधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल ।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय समतूल ।।

चलीं संग लै सखीं सयानी । गावत गीत मनोहर बानी ।।
सोह नवल तनु सुंदर सारी । जगत जननि अतुलित छबि भारी ।।
भूषन सकल सुदेस सुहाए । अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए ।।
रंगभूमि जब सिय पगु धारी । देखि रूप मोहे नर नारी ।।
हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं । बरषि प्रसून अपछरा गाईं ।।
पानि सरोज सोह जयमाला । अवचट चितए सकल भुआला ।।
सीय चकित चित रामहि चाहा । भए मोहबस सब नरनाहा ।।
मुनि समीप देखे दोउ भाई । लगे ललकि लोचन निधि पाई ।।

गुरजन लाज समाजु बड़ देख सीय सकुचानि ।
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुबीरहि उर आनि ।।

राम रूपु अरु सिय छबि देखें । नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें ।।
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं । बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं ।।
हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई । मति हमारि असि देहि सुहाई ।।
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू । सीय राम कर करै बिबाहू ।।
जगु भल कहिहि भाव सब काहू । हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू ।।
एहिं लालसा मगन सब लोगू । बरु साँवरो जानकी जोगू ।।
तब बंदीजन जनक बोलाए । बिरुदावली कहत चलि आए ।।
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा । चले भाट हिय हरषु न थोरा ।।

बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ।।

नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू । गरुअ कठोर बिदित सब काहू ।।
रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गवंहिं सिधारे ।।
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा । राज समाज आजु जोइ तोरा ।।
त्रिभुवन जय समेत बैदेही । बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ।।
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । भटमानी अतिसय मन माखे ।।
परिकर बांधि उठे अकुलाई । चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ।।
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । उठइ न कोटि भांति बलु करहीं ।।
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं । चाप समीप महीप न जाहीं ।।

तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ ।
मनहुँ पाइ भट बाहु बलु अधिकु अधिकु गरुआइ ।।

भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा॥
डगइ न संभु सरासनु कैसे। कामी बचन सती मनु जैसे॥
सब नृप भए जोगु उपहासी। जैसें बिनु बिराग संन्यासी॥
कीरति बिजय बीरता भारी। चले चाप कर बरबस हारी॥
श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा॥
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने॥
दीप दीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना॥
देव दनुज धरि मनुज सरीरा। बिपुल बीर आए रनधीरा॥

कुअँरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा। काहुँ न संकर चाप चढ़ावा॥
रहउ चढ़ाउब तोरब भाई। तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न बिधि बैदेहि बिबाहू॥
सुकृत जाइ जौं पनु परिहरऊँ। कुअँरि कुआरि रहै का करऊँ॥
जौं जनतेउँ बिनु भट भुवि भाई। तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भए दुखारी॥
माखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें। रदपट फरकत नयन रिसौंहें॥

कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई। तेहिं समाज अस कहइ न कोई॥
कही जनक जस अनुचित बानी। विद्यमान रघुकुल मनि जानी॥
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं॥
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुकु करौं बिलोकिअ सोऊ॥
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं। जोजन सत प्रमान लै धावौं॥

तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ॥

लखन सकोप बचन जब बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले॥
सकल लोग सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने॥
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं॥
सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे॥

बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी॥
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा॥
सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा। हरषु बिषादु न कछु उर आवा॥
ठाढ़ भए उठि सहज सुभाएँ। ठवनि जुबा मृगराजु लजाएँ॥

उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने॥
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा॥
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी॥
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं॥

रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।
सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ॥

सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं॥
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा॥
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं॥
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा॥
रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु त्रिभुवन तम भागा॥

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपनें बस कीन्हे॥
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी॥
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती॥
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदय बिनवति जेहि तेही।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी॥
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई॥

गननायक बरदायक देवा । आजु लगें कीन्हिउँ तुम्ह सेवा ॥
बार बार बिनती सुनि मोरी । करहु चाप गुरुता अति थोरी ॥

देखि देखि रघुबीर तन सुर मानव धरि धीर ।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा । पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी । समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई । बुध समाज बड़ अनुचित होई ॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
बिधि केहि भांति धरौं उर धीरा । सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ॥
सकल सभा कै मति भै भोरी । अब मोहि संभु चाप गति तोरी ॥
निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अति परिताप सीय मन माहीं । लव निमेष जुग सय सम जाहीं ॥

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मडल डोल ॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
लोचन जलु रह लोचन कोना । जैसें परम कृपन कर सोना ॥
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर पनु साचा । रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥
तौ भगवानु सकल उर बासी । करिहि मोहि रघुबर कै दासी ॥
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ॥
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । कृपानिधान राम सब जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें । चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसें ॥

लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु ।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥
रामु चहहिं संकर धनु तोरा । होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप समीप रामु जब आए । नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥
सब कर संसउ अरु अग्यानू । मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥
भृगुपति केरि गरब गरुआई । सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई ॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा । रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥
संभुचाप बड़ बोहितु पाई । चढ़े जाइ सब संगु बनाई ॥
राम बाहुबल सिंधु अपारू । चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू ॥

राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कलप सम तेही॥
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा॥
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें॥
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी॥
गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडलसम भयऊ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥

भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं॥

संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबल।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस॥

× × ×

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा। मुदित मातु पद नायउ माथा॥
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे। भूषन बसन निछावरि कीन्हे॥
बार बार मुख चुंबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए। स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए॥
प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई। रंक धनद पदवी जनु पाई॥
सादर सुंदर बदनु निहारी। बोली मधुर बचन महतारी॥
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी॥
सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई। जनम लाभ कइ अवधि अघाई॥

जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भांति।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू॥
पितु समीप तब जाएहु भैआ। भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ॥
मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुरतरु के फूला॥
सुख मकरंद भरे श्रियमूला। निरखि राम मनु भवँरु न भूला॥
धरम धुरीन धरम गति जानी। कहेउ मातु सन अति मृदु बानी॥
पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भांति मोर बड़ काजू॥
आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें॥

बरष चारिदस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान ।
आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ।।

बचन बिनीत मधुर रघुबर के । सर सम लगे मातु उर करके ।।
सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ।।
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू । मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू ।।
नयन सजल तन थर थर काँपी । माजहि खाइ मीन जनु मापी ।।
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । गदगद बचन कहति महतारी ।।
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे । देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ।।
राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहिं अपराधा ।।
तात सुनावहु मोहि निदानू । को दिनकर कुल भयउ कृसानू ।।

निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ बुझाइ ।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जाइ ।।

राखि न सकइ न कहि सक जाहू । दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू ।।
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू । बिधि गति बाम सदा सब काहू ।।
धरम सनेह उभयँ मति घेरी । भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ।।
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू । धरमु जाइ अरु बंधु बिरोधू ।।
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी । संकट सोच बिबस भइ रानी ।।
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी । रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ।।
सरल सुभाउ राम महतारी । बोली बचन धीर धरि भारी ।।
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका । पितु आयसु सब धरमक टीका ।।

राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु ।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ।।

जौं केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ।।
पितु बनदेव मातु बनदेवी । खग मृग चरन सरोरुह सेवी ।।
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू । बय बिलोकि हियँ होइ हरासू ।।
बड़भागी बनु अवध अभागी । जो रघुबंसतिलक तुम्ह लागी ।।
जौं सुत कहौं संग मोहि लेहू । तुम्हरे हृदयँ होइ संदेहू ।।
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के । प्रान प्रान के जीवन जी के ।।
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ । मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ ।।

यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ाइ ।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ।।

देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं । राखहुँ पलक नयन की नाईं ।।
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना । तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ।।

अस बिचारि सोइ करहु उपाई । सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई ।।
जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ।।
सब कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु बिपरीता ।।
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ।।
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा । बरनि न जाहिं बिलाप कलापा ।।
राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई ।।

समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।
जाइ सासु पद कमल जुगि बंदि बैठि सिरु नाइ ।।

दीन्हि असीस सास मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ।।
बैठि नमित मुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनीता ।।
चलन चहत बन जीवन नाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ।।
की तनु प्रान कि केवल प्राना । बिधि करतबु कछु जाइ न जाना ।।
चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ।।
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं । हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं ।।
मंजु बिलोचन मोचति बारी । बोली देखि राम महतारी ।।
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सास ससुर परिजनहि पिआरी ।।

पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु ।
पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ।।

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई । रूप रासि गुन सील सुहाई ।।
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई ।।
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ।।
फूलत फलत भयउ बिधि बामा । जानि न जाइ काह परिनामा ।।
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सियँ न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ।।
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहऊँ । दीप बाति नहिं टारन कहऊँ ।।
सोइ सिय चलन चहति बन साथा । आयसु काह होइ रघुनाथा ।।
चंद किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी ।।

करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिका कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ।।

बन हित कोल किरात किसोरी । रचीं बिरंचि बिषय सुख भोरी ।।
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ ।।
कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ।।
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती ।।

सुरसर सुभग बनज बन चारी। डाबर जोगु कि हंसकुमारी॥
अस बिचारि जस आयसु होई। मैं सिख देउँ जानकिहि सोई॥
जौं सिय भवन रहै कह अंबा। मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधा जनु सानी॥
कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं॥
राजकुमारि सिखावनु सुनहू। आन भांति जिय जनि कछु गुनहू॥
आपन मोर नीक जौं चहहू। बचनु हमारि मानि गृह रहहू॥
आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनि भवन भलाई॥
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा॥
जब जब मातु करिहि सुध मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी। सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी॥
कहउँ सुभायँ साथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखउँ तोही॥
गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ बिनहिं कलेस।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा॥
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा॥
काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी॥
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना॥
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे॥
कंदर खोह नदीं नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा॥
भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं सबुइ समय अनुकूल॥

नर अहार रजनीचर चरहीं। कपट बेष बिधि कोटिक करहीं॥
लागइ अति पहार कर पानी। बिपिन बिपति नहिं जाइ बखानी॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ॥
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू॥
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली। जिअइ कि लवन पयोधि मराली॥
नव रसाल बन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला॥
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी। चंद बदनि दुखु कानन भारी।

सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि ।
सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ।।

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के । लोचन ललित भरे जल सिय के ।।
सीतल सिख दाहक भइ कैसें । चकइहि सरद चंद निसि जैसें ।।
उतरु न आव बिकल बैदेही । तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ।।
बरबस रोकि बिलोचन बारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ।।
लागि सासु पद कह कर जोरी । छमबि देबि बड़ि अविनय मोरी ।।
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि बिधि मोर परम हित होई ।।
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ।।

प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान ।।

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ।।
सासु ससुर गुर सजन सहाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ।।
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ।।
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ।।
भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ।।
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ।।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद बिमल बिधु बदनु निहारें ।।

खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल ।।

बनदेबी बनदेव उदारा । करिहहिं सासु ससुर सम सारा ।।
कुस किसलय साथरी सुहाई । प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ।।
कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ।।
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी ।।
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय बिषाद परिताप घनेरे ।।
प्रभु बियोग लवलेस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ।।
अस जिय जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि ।।
बिनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ।।

राखिअ अवध जो अवधि लगि रहत न जनिअहिं प्रान ।
दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान ।।

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ।।
सबहि भांति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ।।

पाय पखारि बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें ॥
सम महि तृन तरुपल्लव डासी। पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
बार बार मृदु मूरति जोही। लागिहि तात बयारि न मोही ॥
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा। सिंघबधुहि जिमि ससक सिग्रारा ॥
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुम्हहि उचित तप मो कहँ भोगू ॥

ऐसेउ बचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ॥

× × ×

रथु हांकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसें। प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसें ॥
बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए ॥
मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउर आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपाल केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ॥
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा ॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई ॥
नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ॥
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ॥

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ ॥
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ ॥

× × ×

सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥

बहुरि सोचबस भे सियरवनू। कारन कवन भरत आगवनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितु बच इत बंधु सकोचू ॥
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाहीं ॥
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने ॥
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू ॥
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं। सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं ॥
तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥

नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान।
सब पर प्रीति प्रतीति जिय जानिअ आपु समान ॥

बिषई जीव पाइ प्रभुताई। मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥
भरतु नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥
तेऊ आजु राम पदु पाई। चले धरम मरजाद मिटाई ॥
कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी। जानि राम बनबास एकाकी ॥
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू। आए करै अकंटक राजू ॥
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई। आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
जौं जिय होत न कपट कुचाली। केहि सोहति रथ बाजि गजाली ॥
भरतहि दोसु देइ को जाएँ। जग बौराइ राज पदु पाएँ ॥

ससि गुर तिय गामी नहुषु चढ़ेउ भूमिसुर जान ।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान ।।

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ।।
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंच न राखब काऊ ।।
एक कीन्हि नहि भरत भलाई । निदरे रामु जानि असहाई ।।
समुझि परिहि सोउ आजु बिसेषी । समर सरोष राम मुखु पेखी ।।
एतना कहत नीति रस भूला । रन रस बिटपु पुलक मिस फूला ।।
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी । बोले सत्य सहज बलु भाषी ।।
अनुचित नाथ न मानब मोरा । भरत हमहि उपचार न थोरा ।।
कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथ साथ धनु हाथ हमारें ।।

छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ।।

उठि करि जोरि रजायसु मागा । मनहुँ बीर रस सोवत जागा ।।
बांधि जटा सिर कसि कटि भाथा । साजि सरासनु सायकु हाथा ।।
आजु राम सेवक जसु लेऊँ । भरतहि समर सिखावन देऊँ ।।
राम निरादर कर फलु पाई । सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ।।
आइ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ।।
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ।।
तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ।।
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारउँ रन राम दोहाई ।।

अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ।।

जगु भय मगन गगन भइ बानी । लखन बाहुबलु बिपुल बखानी ।।
तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा । को कहि सकइ को जाननिहारा ।।
अनुचित उचित काजु कछु होऊ । समुझि करिअ भल कह सबु कोऊ ।।
सहसा करि पाछें पछिताहीं । कहहि बेद बुध ते बुध नाहीं ।।
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने । राम सीय सादर सनमाने ।।
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तें कठिन राजमदु भाई ।।
जो अचवँत नृप मातहिं तेई । नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ।।
सुनहु लखन भल भरत सरीसा । बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा ।।

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ।।

तिमिर तरुन तरनिहि मकु गिलई। गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई॥
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज छमा बरु छाड़ै छोनी॥
मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई। होइ न नृपमदु भरतहि भाई॥
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना॥
सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता॥
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजिआरी॥
कहत भरत गुन सील सुभाऊ। पेम पयोधि मगन रघुराऊ॥

सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु॥

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को॥
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा॥
लखन राम सिय सुनि सुर बानी। अति सुख लहेउ न जाइ बखानी॥
इहाँ भरतु सब सहित सहाए। मंदाकिनी पुनीत नहाए॥
सरित समीप राखि सब लोगा। मांगि मातु गुर सचिव नियोगा॥
चले भरतु जहँ सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघु भाई॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं॥
रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ॥

मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौं सनमानहिं सेवकु मानी॥
मोरें सरन रामहि की पनही। राम सुस्वामि दोसु सब जनही॥
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना॥
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेह सिथिल सब गाता॥
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी॥
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ। तब पथ परत उताइल पाऊ॥
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रबाह जल अलि गति जैसी॥
देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू॥

लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोचु होइहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु॥

× × ×

बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ।
निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ॥

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा। सोह चाप कर कटि तूनीरा॥
आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥
जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥
मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥
बन दिसि देव सौंपि सब काहू। चले जहाँ रावन ससि राहू॥
सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती कें बेषा॥
जाकें डर सुर असुर डेराहीं। निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं॥
सो दससीस स्वान की नाईं। इत उत चितइ चला भड़िहाईं॥
इमि कुपंथ पग देत खगेसा। रह न तेज तन बुधि बल लेसा॥
नाना बिधि करि कथा सुनाई। राजनीति भय प्रीति देखाई॥
कह सीता सुनु जती गोसाईं। बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं॥
तब रावन निज रूप देखावा। भई सभय जब नाम सुनावा॥
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा। आइ गयउ प्रभु, रहु खल ठाढ़ा॥
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा। भएसि कालबस निसिचर नाहा॥
सुनत बचन दससीस रिसाना। मन महुँ चरन बंदि सुख माना॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ॥

हा जगदीश देव रघुराया। केहिं अपराध बिसारेहु दाया॥
आरति हरन सरन सुखदायक। हा रघुकुल सरोज दिननायक॥
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा। सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा॥
बिबिध बिलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही॥
बिपति मोरि को प्रभुहि सुनावा। पुरोडास चह रासभ खावा॥
सीता कै बिलाप सुनि भारी। भए चराचर जीव दुखारी॥
गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी॥
अधम निसाचर लीन्हें जाई। जिमि मलेछ बस कपिला गाई॥
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहउँ जातुधान कर नासा॥
धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसे॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही। निर्भय चलेसि न जानेहि मोही॥
आवत देखि कृतांत समाना। फिरि दसकंधर कर अनुमाना॥
की मैनाक कि खगपति होई। मम बल जान सहित पति सोई॥
जाना जरठ जटायू एहा। मम कर तीरथ छाड़िहि देहा॥
सुनत गीध क्रोधातुर धावा। कह सुनु रावन मोर सिखावा॥
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू। नाहिं त अस होइहि बहुबाहू॥

राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ।।
उतरु न देत दसानन जोधा । तबहिं गीध धावा करि क्रोधा ।।
धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ।।
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही । दंड एक भइ मुरुछा तेही ।।
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ।।
काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ।।
सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी ।।
करति बिलाप जाति नभ सीता । ब्याध बिबस जनु मृगी सभीता ।।
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ।।
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ । बन असोक महँ राखत भयऊ ।।

हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति देखाइ ।
तब असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ ।।

जेहि बिधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम ।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम ।।

रघुपति अनुजहि आवत देखी । बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी ।।
जनकसुता परिहरिहु अकेली । आयहु तात बचन मम पेली ।।
निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ।।
गहि पद कमल अनुज कर जोरी । कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ।।
अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ । गोदावरि तट आश्रम जहवाँ ।।
आश्रम देखि जानकी हीना । भए बिकल जस प्राकृत दीना ।।
हा गुन खानि जानकी सीता । रूप सील ब्रत नेम पुनीता ।।
लछिमन समुझाए बहु भाँती । पूछत चले लता तरु पाँती ।।
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ।।
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रबीना ।।
कुंद कली दाड़िम दामिनी । कमल सरद ससि अहिभामिनी ।।
बरुन पास मनोज धनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ।।
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । नेकु न संक सकुच मन माहीं ।।
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू । हरषे सकल पाइ जनु राजू ।।
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ।।
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी । मनहुँ महा बिरही अति कामी ।।
पूरनकाम राम सुख रासी । मनुजचरित कर अज अबिनासी ।।
आगें परा गीधपति देखा । सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ।।

कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुबीर ।
निरखि राम छबि धाम मुख बिगत भई सब पीर ।।

तब कह गीध बचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजन भव भीरा ।।
नाथ दसानन यह गति कीन्ही । तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही ।।
लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं । बिलपति अति कुररी की नाईं ।।
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपा निधाना ।।
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता ।।
जा कर नाम मरत मुख आवा । अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ।।
सो मम लोचन गोचर आगें । राखौं देह नाथ केहि खाँगें ।।
जल भरि नयन कहहिं रघुराई । तात कर्म निज तें गति पाई ।।
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ।।
तनु तजि तात जाहु मम धामा । देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ।।

सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ ।
जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ ।।

गीध देह तजि धरि हरि रूपा । भूषन बहु पट पीत अनूपा ।।
स्याम गात बिसाल भुज चारी । अस्तुति करत नयन भरि बारी ।।

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ।।

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।
निति नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं ।।

बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ।
गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं ।।

जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं ।।

जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ।।

सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई ।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ।।

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा ।
पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा ।।

सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी ।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ।।

अबिरल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम ।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम ।।

कोमल चित अति दीनदयाला । कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गीध अधम खग आमिष भोगी । गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी ॥
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई । चले बिलोकत वन बहुताई ॥
संकुल लता बिटप घन कानन । बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
आवत पंथ कबंध निपाता । तेहि सब कही साप कै बाता ॥
दुरबासा मोहि दीन्ही सापा । प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा ॥
सुनु गंधर्ब कहउँ मैं तोही । मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥

मन क्रम बचन कपट तजि जो कर भूसुर सेव ।
मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताके सब देव ॥

सापत ताड़त परुष कहंता । बिप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना । सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा । निज पद प्रीति देखि मन भावा ॥
रघुपति चरन कमल सिरु नाई । गयउ गगन आपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा । सबरी कें आश्रम पगु धारा ॥
सबरी देखि राम गृहँ आए । मुनि के बचन समुझि जिय भाए ॥
सरसिज लोचन बाहु बिसाला । जटा मुकुट सिर उर बनमाला ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ॥
प्रेम मगन मुख बचन न आवा । पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ॥
सादर जल लै चरन पखारे । पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ॥

पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी । प्रभुहि बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी । अधम जाति मैं जड़मति भारी ॥
अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता । मानउँ एक भगति कर नाता ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ॥
नवधा भगति कहउँ तोहि पाही । सावधान सुनु धरु मन माही ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा । दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ॥

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा ॥

छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोते संत अधिक करि लेखा॥
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई॥
मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा॥
जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबरगामिनी॥
पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा। जानतहूँ पूछहु मतिधीरा॥
बार बार प्रभु पद सिरु नाई। प्रेम सहित सब कथा सुनाई॥

× × ×

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना॥
सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा॥
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई। लंका मनहुँ बिभीषन पाई॥
नगर फिरी रघुबीर दोहाई। तब प्रभु सीता बोलि पठाई॥
यह सपना मैं कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गए दिन चारी॥
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं॥

जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति संगिनि तैं मोरी॥
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई॥
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई॥
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी॥
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि॥
निसि न अनल मिलि सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी॥
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला॥
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा॥

पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

कपि करि हृदय बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदय अकुलानी ॥
जीति को सकइ अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ॥
रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई ॥
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिर बैठीं मन बिसमय भयऊ ॥
राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसें ॥

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना ॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ॥
बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी ॥
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन.बिनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
जनि जननी मानहुँ जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेम राम के दूना ॥

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता ॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू ॥

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा ।।
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ।।
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई ।।
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा ।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ।।
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ।।
कह कपि हृदय धीर धरु माता। सुमिरु राम सेवक सुखदाता ।।
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई ।।

निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ।।

जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई ।।
राम बान रबि उए जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की ।।
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ।।
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ।।
निसिचर मारि तोहि लै जैहहि। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहि ।।
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना ।।
मोरे हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ।।
कनक भूधराकार सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा ।।
सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ।।

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल ।।

मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी ।।
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना ।।
अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ।।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ।।
बार बार नाएसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा ।।
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता ।।
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा ।।
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी ।।
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ।।

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु ।
रघुपति चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ।।

× × ×

प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज।
पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ।।
जामवंत कह सुन रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ।।
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ।।
सोइ बिजई बिनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ।।
प्रभु की कृपा भयउ सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू ।।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ।।
पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए ।।
सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ।।
कहहु तात केहि भांति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की ।।
नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ।।
चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही ।।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी ।।
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना ।।
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ।।
अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ।।
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ।।
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ।।
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह बिरहागी ।।
सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ।।
निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ।।
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आए जल राजिव नयना ।।
बचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ।।
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई ।।
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी ।।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।।
सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखउँ करि बिचार मन माहीं ।।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता ।।
सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ।।

× × ×

बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ।।

निज बिकलता बिचारि बहोरी । बिहंसि गयउ ग्रह करि भय भोरी ।।
मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकहीं पाथोधि बँधायो ।।
कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली परम मनोहर बानी ।।
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ।।
नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ।।
तुम्हरि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ।।
अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे । महाबीर दितिसुत संघारे ।।
जेहिं बलि बांधि सहसभुज मारा । सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ।।
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाके हाथा ।।

रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ।।

नाथ दीनदयाल रघुराई । बाघउ सनमुख गए न खाई ।।
चाहिअ करन सो सब करि बीते । तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ।।
संत कहहिं असि नीति दसानन । चौथेंपन जाइहि नृप कानन ।।
तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ।।
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी । भजहु नाथ ममता सब त्यागी ।।
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी । भूप राजु तजि होहिं बिरागी ।।
सोइ कोसलाधीस रघुराया । आयउ करन तोहि पर दाया ।।
जौं पिय मानहु मोर सिखावन । सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ।।

अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात ।।

तब रावन मयसुता उठाई । कहै लाग खल निज प्रभुताई ।।
सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ।।
बरुन कुबेर पवन जम काला । भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ।।
देव दनुज नर सब बस मोरें । कवन हेतु उपजा भय तोरें ।।
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई । सभा बहोरि बैठ सो जाई ।।
मंदोदरी हृदयँ अस जाना । काल बस्य उपजा अभिमाना ।।
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा । करब कवन बिधि रिपु सैं जूझा ।।
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । बार बार प्रभु पूछहु काहा ।।
कहहु कवन भयं करिअ बिचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ।।

सब के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि।
नीति बिरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि॥

× × ×

प्रभु आग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ।
सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु॥
स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहि आदर दियउ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियउ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई॥
प्रभु प्रताप उर सहज असंका। रन बाँकुरा बालिसुत बंका॥
पुर पैठत रावन कर बेटा। खेलत रहा सो होइ गै भेटा॥
बातहिं बात करष बढ़ि आई। जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई॥
तेहिं अंगद कहुँ लात उठाई। गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई॥
निसिचर निकर देखि भट भारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी॥
एक एक सन मरमु न कहहीं। समुझि तासु बध चुप करि रहहीं॥
भयउ कोलाहल नगर मझारी। आवा कपि लंका जेहिं जारी॥
अब धौं कहा करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं बिचारा॥
बिनु पूछें मगु देहिं दिखाई। जेहि बिलोक सोइ जाइ सुखाई॥

गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज।
सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज॥

तुरत निसाचर एक पठावा। समाचार रावनहि जनावा॥
सुनत बिहंसि बोला दससीसा। आनहु बोलि कहाँ कर कीसा॥
आयसु पाइ दूत बहु धाए। कपिकुंजरहि बोलि लै आए॥
अंगद दीख दसानन वैसें। सहित प्रान कज्जलगिरि जैसें॥
भुजा बिटप सिर सृंग समाना। रोमावली लता जनु नाना॥
मुख नासिका नयन अरु काना। गिरि कंदरा खोह अनुमाना॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा। बालितनय अतिबल बाँकुरा॥
उठे सभासद कपि कहुँ देखी। रावन उर भा क्रोध बिसेषी॥

जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ।
राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभा सिरु नाइ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर॥
मम जनकहि तोहि रही मिताई। तव हित कारन आयउँ भाई॥
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती। सिव बिरंचि पूजेउ बहु भाँती॥
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा। जीतेहु लोकपाल सब राजा॥

नृप अभिमान मोह बस किंबा। हरि आनिहु सीता जगदंबा ।।
अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ।।
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी ।।
सादर जनकसुता करि आगें। एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें ।।

प्रनतपाल रघुबंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि।
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि ।।

रे कपिपोत बोलु संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ।।
कहु निज नाम जनक कर भाई। केहि नातें मानिए मिताई ।।
अंगद नाम बालि कर बेटा। तासों कबहुँ भई ही भेटा ।।
अंगद बचन सुनत सकुचाना। रहा बालि बानर मैं जाना ।।
अंगद तहीं बालि कर बालक। उपजेहु बंस अनल कुल घालक ।।
गर्भ न गयहु ब्यर्थ तुम्ह जायहु। निज मुख तापस दूत कहायहु ।।
अब कहु कुसल बालि कहँ अहई। बिहंसि बचन तब अंगद कहई ।।
दिन दस गए बालि पहिं जाई। बूझेहु कुसल सखा उर लाई ।।
राम बिरोध कुसल जसि होई। सो सब तोहि सुनाइहि सोई ।।
सुनु सठ भेद होइ मन ताकें। श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाकें ।।

हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस।
अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस ।।

सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई। चाहत जासु चरन सेवकाई ।।
तासु दूत होइ हम कुल बोरा। अइसिहुँ मति उर बिहर न तोरा ।।
सुनि कठोर बानी कपि केरी। कहत दसानन नयन तरेरी ।।
खल तव कठिन बचन सब सहऊँ। नीति धर्म मैं जानत अहऊँ ।।
कह कपि धर्मसीलता तोरी। हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी ।।
देखी नयन दूत रखवारी। बूड़ि न मरहु धर्म ब्रतधारी ।।
कान नाक बिनु भगिनि निहारी। छमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी ।।
धर्मसीलता तव जग जागी। पावा दरसु हमहुँ बड़भागी ।।

जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल ससि ग्रसन हेतु सब राहु ।।

पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास।
सोभत भयउ मराल इव संभु सहित कैलास ।।

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद। मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ।।
तव प्रभु नारि बिरह बलहीना। अनुज तासु दुख दुखी मलीना ।।

तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा। सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥
सिल्पि कर्म जानहिं नल नीला। है कपि एक महा बलसीला ॥
आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा। सुनत बचन कह बालिकुमारा ॥
सत्य बचन कहु निसिचर नाहा। सांचेहुँ कीस कीन्ह पुर दाहा ॥
रावन नगर अल्प कपि दहई। सुनि अस बचन सत्य को कहई ॥
जो अति सुभट सराहेहु रावन। सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥
चलइ बहुत सो बीर न होई। पठवा खबर लेन हम सोई ॥

सत्य नगरु कपि जारेउ बिनु प्रभु आयसु पाइ।
फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहि भय रहा लुकाइ ॥
सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारे कटक अस तो सन लरत जो सोइ ॥
प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि।
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥
जद्यपि लघुता राम कहुँ तोहि बधें बड़ दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुन छत्र जाति कर रोष ॥
बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहु काढ़त भट दससीस ॥
हंसि बोलेउ दसमौलि तब कपि कर बड़ गुन एक।
जो प्रतिपालइ तासु हित करइ उपाइ अनेक ॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥
नाचि कूदि करि लोग रिझाई। पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती। प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती ॥
मैं गुन गाहक परम सुजाना। तव कटु रटनि करउँ नहिं काना ॥
कह कपि तव गुन गाहकताई। सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥
बन बिधंसि सुत बधि पुर जारा। तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा ॥
सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई। दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरें लाज न रोष न माखा ॥
जौं असि मति पितु खाए कीसा। कहि असि बचन हँसा दससीसा ॥
पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही। अबहीं समुझि परा कछु मोही ॥
बालि बिमल जस भाजन जानी। हतउँ न तोहि अधम अभिमानी ॥
कहु रावन रावन जग केते। मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते ॥

बलिहि जित न एक गयउ पताला । राखेउ बांधि सिसुन्ह हयसाला ।।
खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ।।
एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा ।।
कौतुक लागि भवन लै आवा । सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ।।

एक कहत मोहि सकुच अति रहा बालि की काँख ।
इन्ह महुँ रावन तैं कवन सत्य बदहि तजि माख ।।

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ।।
जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ।।
सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ।।
भुज बिक्रम जानहिं दिगपाला । सठ आजहूँ जिन्ह कें उर साला ।।
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई । जब जब भिरउँ जाइ बरिआई ।।
जिन्ह के दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव टूटे ।।
जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ।।
सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । सुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ।।

तेहि रावन कहँ लघु कहसि नर कर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ग्यान ।।

सुनि अंगद सकोप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ।।
सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ।।
जासु परसु सागर खर धारा । बूड़े नृप अगनित बहु बारा ।।
तासु गर्ब जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ।।
राम मनुज कस रे सठ बंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ।।
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ।।
बैनतेय खग अहि सहसानन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ।।
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा ।।

सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुर जारि ।
कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ।।

सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई ।।
जौं खल भएसि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ।।
मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला । राम बयर अस होइहि हाला ।।
तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । परिहहिं धरनि राम सर लागें ।।
ते तव सिर कंदुक सम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ।।
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक ।।
तब कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस बिचारि भजु राम उदारा ।।
सुनत बचन रावन परजरा । जरत महानल जनु घृत परा ।।

कुंभकरन अस बंधु मम सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥

सठ साखामृग जोरि सहाई। बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई ॥
नाघहिं खग अनेक बारीसा। सूर न होहिं ते सुनु सब कीसा ॥
मम भुज सागर बल जल पूरा। जहँ बूड़े बहु सुर नर सूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पाइहि पारा ॥
दिगपालन्ह मैं नीर भरावा। भूप सुजस खल मोहि सुनावा ॥
जौं पै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा ॥
तौ बसीठ पठवत केहि काजा। रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ॥
हरगिरि मथन निरखु मम बाहू। पुनि सठ कपि निज प्रभुहि सराहू ॥

सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहिं सीस।
हुने अनल अति हरष बहु बार साखि गौरीस ॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला। बिधि के लिखे अंक निज भाला ॥
नर कें कर आपन बध बाँची। हसेउँ जानि बिधि गिरा असाँची ॥
सोउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें। लिखा बिरंचि जरठ मति भोरें ॥
आन बीर बल सठ मम आगें। पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें ॥
कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥
लाजवंत तव सहज सुभाऊ। निज मुख निज गुन कहसि न काऊ ॥
सिर अरु सैल कथा चित रही। ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेहु उर घाली। जीतेहु सहसबाहु बलि बाली ॥
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा। काटें सीस कि होइअ सूरा ॥
इंद्रजालि कहुँ कहिअ न बीरा। काटइ निज कर सकल सरीरा ॥

जरहिं पतंग मोह बस भार बहहिं खर बृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करहीं। सुनु मम बचन मान परिहरही ॥
दसमुख मैं न बसीठीं आयउँ। अस बिचारि रघुबीर पठायउँ ॥
बार बार अस कहइ कृपाला। नहिं गजारि जसु बधें सृकाला ॥
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे ॥
नाहिं त करि मुख भंजन तोरा। लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी। सूनें हरि आनिहि परनारी ॥
तैं निसिचर पति गर्ब बहूता। मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥
जौं न राम अपमानहि डरऊँ। तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥

तोहि पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ ।
तव जुबतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ।।

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि बधें नहिं कछु मनुसाई ।।
कौल कामबस कृपिन बिमूढा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ।।
सदा रोगबस संतत क्रोधी । बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी ।।
तनु पोषक निंदक अघ खानी । जीवत सव सम चौदह प्रानी ।।
अस बिचारि खल बधउँ न तोही । अब जनि रिस उपजावसि मोही ।।
सुनि सकोप कह निसिचर नाथा । अधर दसन दिसि मीजत हाथा ।।
रे कपि अधम मरन अब चहसी । छोटे बदन बात बड़ि कहसी ।।
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकें । बल प्रताप बुधि तेज न ताकें ।।

अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता बनबास ।
सो दुख अरु जुबती बिरह पुनि निसि दिन मम त्रास ।।

जिन्ह के बल कर गर्ब तोहि अइसे मनुज अनेक ।
खाहिं निसाचर दिवस निसि मूढ समुझु तजि टेक ।।

जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा । क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा ।।
हरि हर निंदा सुनइ जो काना । होइ पाप गोघात समाना ।।
कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ।।
डोलत धरनि सभासद खसे । चले भाजि भय मारु ग्रसे ।।
गिरत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ।।
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे । कछु अंगद प्रभु पास पबारे ।।
आवत मुकुट देखि कपि भागे । दिनहीं लूक परन बिधि लागे ।।
की रावन करि कोप चलाए । कुलिस चारि आवत अति धाए ।।
कह प्रभु हंसि जनि हृदयँ डेराहू । लूक न असनि केतु नहिं राहू ।।
ए किरीट दसकंधर केरे । आवत बालितनय के प्रेरे ।।

तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि दिनकर सरिस प्रकास ।।

उहाँ सकोपि दसानन सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहि धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ।।

एहि बिधि बेगि सुभट सब धावहु । खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु ।।
मर्कटहीन करहु महि जाई । जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ।।
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा । गाल बजावत तोहि न लाजा ।।
मरु गर काटि निलज कुलघाती । बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती ।।

रे त्रिय चोर कुमारग गामी। खल मल रासि मंदमति कामी॥
सन्यपात जल्पसि दुर्बादा। भएसि कालबस खल मनुजादा॥
याको फलु पावहिगो आगें। बानर भालु चबेटन्हि लागें॥
रामु मनुज बोलत असि बानी। गिरहिं न तव रसना अभिमानी॥
गिरिहहिं रसना संसय नाहीं। सिरन्हि समेत समर महि माहीं॥

सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर।
बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़॥

तव सोनित कीं प्यास तृषित राम सायक निकर।
तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम॥

मैं तव दसन तोरिबे लायक। आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक॥
असि रिस होति दसउ मुख तोरौं। लंका गहि समुद्र महँ बोरौं॥
गूलरि फल समान तव लंका। बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका॥
मैं बानर फल खात न बारा। आयसु दीन्ह न राम उदारा॥
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई। मूढ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई॥
बालि न कबहुँ गाल अस मारा। मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबारा॥
सांचेहुँ मैं लबार भुज बीहा। जौं न उपारिउँ तव दस जीहा॥
समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा॥
जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥
सुनहु सुभट सब कह दससीसा। पद गहि धरनि पछारहु कीसा॥
इंद्रजीत आदिक बलवाना। हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती। टरइ न कीस चरन एहि भाँती॥
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी। मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी॥

कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिर नाइ॥

भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग।
कोटि बिघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग॥

कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि के परचारे॥
गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा॥
गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥
भयउ तेजहत श्री सब गई। मध्य दिवस जिमि ससि सोहई॥
सिंघासन बैठेउ सिर नाई। मानहुँ संपति सकल गँवाई॥

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी। त्रिबिध ताप भव भय दायनी॥
महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं॥
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंतकाल रघुपति पुर जाहीं॥
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहिं भगति गति संपति नई॥
खगपति राम कथा मैं बरनी। स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी॥
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी। मोह नदी कहँ सुंदर तरनी॥
नित नव प्रीति राम पद पंकज। सबकें जिन्हहि नमत सिव मुनि अज॥
मंगन बहु प्रकार पहिराए। द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए॥

ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभु पद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं। जिमि परद्रोह संत मन माहीं॥
तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिरु नाए॥
परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई॥
ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे॥
अनुज राज संपति बैदेही। देह गेह परिवार सनेही॥
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना। मृषा न कहउँ मोर यह बाना॥
सब के प्रिय सेवक यह नीती। मोरे अधिक दास पर प्रीती॥

अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदा सर्बगत सर्बहित जानि करेहु अति प्रेम॥

सुनि प्रभु बचन मगन सब भए। को हम कहाँ बिसरि तन गए॥
एकटक रहे जोरि कर आगे। सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे॥
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा। कहा बिबिध बिधि ग्यान बिसेषा॥
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं। पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं॥
तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए। बसन भरत निज हाथ बनाए॥
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए। लंकापति रघुपति मन भाए॥
अंगद बैठ रहा नहिं डोला। प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला॥

जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ।
हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ॥

तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि।
अति बिनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेम रस बोरि॥

सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो। दीन दयाकर आरत बंधो॥
मरती बेर नाथ मोहि बाली। गयउ तुम्हारेहिं कोंछें घाली॥
असरन सरन बिरदु संभारी। मोहि जनि तजहु भगत हितकारी॥
मोरे तुम्ह प्रभु गुर पितु माता। जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता॥
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा। प्रभु तजि भवन काज मम काहा॥
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना। राखहु सरन नाथ जन दीना॥
नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ। पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही। अब जनि नाथ कहहु गृह जाही॥

अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव।
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव॥

निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ।
बिदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ॥

भरत अनुज सौमित्र समेता। पठवन चले भगत कृत चेता॥
अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा। फिरि फिरि चितव राम की ओरा॥
बार बार कर दंड प्रनामा। मन अस रहन कहहिं मोहि रामा॥
राम बिलोकनि बोलनि चलनी। सुमिरि सुमिरि सोचत हंसि मिलनी॥
प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी। चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी॥
अति आदर सब कपि पहुँचाए। भाइन्ह सहित भरत पुनि आए॥
तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भांति बिनय कीन्हे हनुमाना॥
दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा॥
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥
अस कहि कपि सब चले तुरंता। अंगद कहइ सुनहु हनुमंता॥

कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि।
बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा॥
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू। मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहू॥
तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता॥
बचन सुनत उपजा सुख भारी। परेउ चरन भरि लोचन बारी॥
चरन नलिन उर धरि गृह आवा। प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा॥
रघुपति चरित देखि पुरबासी। पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी॥
राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न हीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना॥
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥

राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी॥
सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी॥
सोउ जाने कर फल यह लीला। कहहिं महा मुनिबर दमसीला॥
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥
सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥
एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥

दंड जाति कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ।।
सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ।।
लता बिटप मागें मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ।।
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी ।।
प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी ।।
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी ।।
सागर निज मरजादाँ रहहीं। डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ।।
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा ।।

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज ।।

× × ×

अवधेसके द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे।
अवलोकि हौं सोच बिमोचनको ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक से ।।
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन नैन सुखंजन-जातक से।
सजनी ससिमें समसील उभै नवनील सरोरुह-से बिकसे ।।

पग नूपुर औ पहुँची करकंजनि मंजु बनी मनिमाल हिएँ।
नवनील कलेवर पीत झँगा झलकै पुलकैं नृपु गोद लिएँ ।।
अरबिंदु सो आननु, रूप मरंदु अनंदित लोचन-भृंग पिएँ।
मनमो न बस्यौ अस बालकु जौं तुलसी जगमें फलु कौन जिएँ ।।

तनकी दुति स्याम सरोरुह लोचन कंजकी मंजुलताई हरैं।
अति सुंदर सोहत धूरि भरे, छबि भूरि अनंगकी दूरि धरैं ।।
दमकैं दँतियाँ दुति दामिनि ज्यों, किलकैं कल बालबिनोद करैं।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिरमें बिहरैं ।।

कबहूँ ससि मागत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिंब निहार डरैं।
कबहूँ करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ।।
कबहूँ रिसिआइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिरमें बिहरैं ।।

बर दंतकी पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलनकी।
चपला चमकैं घन बीच जगै छबि मोतिन माल अमोलनकी ।।
घुंघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलनकी।
नेवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलनकी ।।

पदकंजनि मंजु बनीं पनहीं, धनुहीं सर पंकल-पानि लिएँ।
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरजू-तट चौहट हाट हिएँ॥
तुलसी अस बालक सों नहि नेहु, कहा जप जोग समाधि किएँ।
नर वे खर सूकर स्वान समान कहौ जगमें फलु कौन जिएँ॥

सरजू बर तीरहिं तीर फिरैं रघुबीर सखा अरु बीर सबै।
धनुहीं कर तीर, निषंग कसें कटि, पीत दुकूल नवीन फबै॥
तुलसी तेहि औसर लावनिता दस चारि नौ तीन इकीस सबै।
मति भारति पंगु भई जो निहारि बिचारि फिरी उपमा न पबै॥

भले भूप कहत भलें भदेस भूपनि सों,
लोक लखि बोलिये पुनीत रीति मारिषी।
जगदंबा जानकी जगतपितु रामचंद्र,
जानि जियँ जोहौ जो न लागै मुहँ कारिखी॥
देखे हैं अनेक ब्याह, सुने हैं पुरान-बेद,
बूझे हैं सुजान साधु नर-नारि पारिखी।
ऐसे सम समधी समाज न बिराजमान,
रामु से न बर दुलही न सिय-सारिखी॥

दूलह श्रीरघुनाथु बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं।
गावति गीत सबै मिलि सुंदरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं॥
रामको रूपु निहारति जानकी कंकनके नगकी परछाहीं।
यातें सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥

एहि घाटतें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु, थाह देखाइहौं जू।
परसें पगधूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू॥
तुलसी अवलंबु न और कछू, लरिका केहि भांति जियाइहौं जू।
बरु मारिए मोहि, बिना पग धोएँ हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू॥

रावरे दोषु न पायन को, पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है।
पाहन तें बन-बाहनु काठको कोमल है, जलु खाइ रहा है॥
पावन पाय पखारि कै नाव चढ़ाइहौं, आयसु होत कहा है।
तुलसी सुनि केवटके बर बैन हंसे प्रभु जानकी ओर हहा है॥

पात भरी सहरी, सकल सुत बारे-बारे,
केवटकी जाति, कछु बेद न पढ़ाइहौं।
सबु परिवारु मेरो याहि लागि, राजा जू,
हौं दीन बित्तहीन, कैसें दूसरी गढ़ाइहौं॥

गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरेगी मेरी,
प्रभुसों निषादु ह्वै कै बादु न बढ़ाइहौं।
तुलसी के ईस राम, रावरे सों साँची कहौं,
बिना पग धोएँ नाथ, नाव ना चढ़ाइहौं॥

पुरतें निकसी रघुबीरबधू, धरि धीर दए मगमें डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकीं, पुट सूखि गए मधुराधर वै॥
फिरि बूझति हैं, चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै।
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

जलको गए लक्खनु, हैं लरिका,
परिखौ, पिय! छाहँ घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं,
अरु पाय पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े॥
तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै,
बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाहको नेहु लख्यो,
पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े॥

वनिता बनी स्यामल गौरके बीच,
बिलोकहु, री सखि! मोहि-सी ह्वै।
मगजोगु न कोमल, क्यों चलिहै,
सकुचाति मही पदपंकज छ्वै॥
तुलसी सुनि ग्रामबधू बिथकीं,
पुलकीं तन, औ चले लोचन च्वै।
सब भांति मनोहर मोहनरूप,
अनूप हैं भूपके बालक द्वै॥

सीस जटा, उर-बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी-सी भौंहैं।
तून सरासन-बान धरें तुलसी बन-मारगमें सुठि सोहैं॥
सादर बारहिं बार सुभायँ चितै तुम्ह त्यों हमरो मन मोहैं।
पूँछति ग्रामबधू सिय सों, कहौ, साँवरे-से, सखि रावरे को हैं॥

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकीं जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ कछू, मुसुकाइ चली॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहु अलीं।
अनुराग-तड़ागमें भानु-उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं॥

पद कोमल, स्यामल-गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाएँ।
कर बान-सरासन, सीस जटा, सरसीरुह-लोचन सोन सुहाए ॥
जिन्ह देखे सखी ! सतिभायहु तें तुलसी तिन्ह तौ मन फेरि न पाए।
एहिं मारग आजु किसोर बधू बिधुबैनी समेत सुभायँ सिधाए ॥

मुखपंकज, कंजबिलोचन मंजु, मनोज-सरासन-सी बनीं भौंहैं।
कमनीय कलेवर कोमल स्यामल-गौर किसोर, जटा सिर सोहैं ॥
तुलसी कटि तून, धरें धनु-बान, अचानक दिष्टि परी तिरछौहैं।
केहि भांति कहौं सजनी ! तोहि सों, मृदु मूरति द्वै निवसीं मन मोहैं ॥

बासव-बरुन-बिधि-बनतें सुहावनो,
दसाननको काननु, बसंतको सिंगारु सो।
समय पुराने पात परत, डरत बातु,
पालत लालत रति-मारको बिहारु सो ॥
देखें बर बापिका तड़ाग बागको बनाउ,
रागबस भो बिरागी पवनकुमारु सो।
सीयकी दसा बिलोकि बिटप असोक तर,
'तुलसी' बिलोक्यो सो तिलोक-सोक-सारु सो ॥

'दिवस छ-सात जात जानिबे न, मातु ! धरु,
धीर, अरि-अंतकी अवधि रहि थोरिकै।
बारिधि बँधाइ सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु,
सानुज कुसल कपिकटकु बटोरि कै' ॥
बचन बिनीत कहि, सीताको प्रबोधु करि,
'तुलसी' त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरि कै।
'जै जै जानकीस दससीस-करि-केसरी',
कपीसु कूद्यो बात-घात उदधि हलोरि कै ॥

भलि भारतभूमि, भलें कुल जन्मु, समाजु सरीरु भलो लहि कै।
करषा तजि कै परुषा, बरषा, हिम, मारुत, घाम सदा सहि कै ॥
जो भजै भगवानु सयान सोई, 'तुलसी' हठ चातकु ज्यों गहि कै।
नतु और सबै बिषबीज बए, हर हाटक कामदुहा नहि कै ॥

सो जननी, सो पिता, सोइ भाइ, सो भामिनि, सो सुतु, सो हितु मेरो।
सोइ सगो, सो सखा, सोइ सेवकु, सो गुरु, सो सुरु, साहेबु, चेरो ॥
सो 'तुलसी' प्रिय प्रानसमान, कहाँ लौं बनाइ कहौं बहुतेरो।
जो तजि देहको गेहको नेहु, सनेहसों रामको होइ सबेरो ॥

रामु हैं मातु, पिता, गुरु, बंधु, औ संगी, सखा, सुतु, स्वामि, सनेही ।
रामकी सौंह, भरोसो है रामको, राम रँग्यो, रुचि राच्यो न केही ॥
जीअत रामु, मुएँ पुनि रामु, सदा रघुनाथहि की गति जेही ।
सोई जिऐ जगमें 'तुलसी' नतु डोलत और मुए धरि देही ॥

सियराम-सरूपु अगाध अनूप बिलोचन मीननको जलु है ।
श्रुति रामकथा, मुख रामको नामु, हिएँ पुनि रामहिको थलु है ॥
मति रामहि सों, गति रामहि सों, रति रामसों, रामहि को बलु है ।
सबकी न कहै, तुलसीके मतें इतनो जग जीवनको फलु है ॥

तिन्ह तें खर, सूकर, स्वान भले, जड़ता बस ते न कहैं कछु वै ।
'तुलसी' जेहि रामसों नेहु नहीं, सो सही पसु पूँछ, बिषान न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दस मास, भई किन बाँझ, गई किन च्वै ।
जरि जाउ सो जीवनु, जानकीनाथ! जियै जगमें तुम्हरो बिनु ह्वै ॥

जप, जोग, बिराग, महामख-साधन, दान, दया, दम कोटि करै ।
मुनि-सिद्ध, सुरेसु, गनेसु, महेसु-से सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम-ग्यान, पुरान पढ़ै, तपसानलमें जुगपुंज जरै ।
मनसों पनु रोपि कहै तुलसी, रघुनाथ बिना दुख कौन हरै ॥

रावरो कहावौं, गुनु गावौं राम! रावरोई,
रोटी द्वै हौं पावौं राम! रावरी हीं कानि हौं ।
जानत जहानु, मन मेरेहूँ गुमानु बड़ो,
मान्यो मैं न दूसरो, न मानत, न मानिहौं ॥
पाँचकी प्रतीति न भरोसो मोहि आपनोई,
तुम्ह अपनायो हौं तबै हीं परि जानिहौं ।
गढ़ि-गुढ़ि, छोलि-छालि कुंदकी-सी भाई बातें
जैसी मुख कहौं, तैसी जीयँ जब आनिहौं ॥

स्वारथको साजु न समाजु परमारथको,
मोसो दगाबाज दूसरो न जगजाल है ।
कै न आयों, करौं न करौंगो करतूति भली,
लिखी न बिरंचिहूँ भलाई भूलि भाल है ॥
रावरी सपथ, रामनामही की गति मेरें,
इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है ।
तुलसी को भलो पै तुम्हारें ही किएँ कृपाल,
कीजै न बिलंबु, बलि, पानीभरी खाल है ॥

रागको न साजु, न बिरागु, जोग, जाग जियँ,
काया नहि छाड़ि देत ठाटिबो कुठाटको ।
मनोराजु करत अकाजु भयो आजु लगि,
चाहै चारु चीर, पै लहै न टूकु टाटको ॥
भयो करतारु बड़े कूरको कृपालु, पायो,
नामप्रेमु-पारसु, हौं लालची बराटको ।
'तुलसी' बनी है राम ! रावरें बनाएँ, नातो,
धोबी-कैसा कूकरु, न घरको, न घाटको ॥

सब अँग हीन, सब साधन बिहीन, मन-
बचन मलीन, हीन कुल-करतूति हौं ।
बुधि-बल हीन, भाव-भगति-बिहीन, हीन
गुन, ग्यानहीन, हीन भाग हूँ, बिभूति हौं ॥
तुलसी गरीब की गई-बहोर रामनामु,
जाहि जपि जीहँ रामहूँ को बैठो धूति हौं ।
प्रीति रामनामसों, प्रतीति रामनामकी,
प्रसाद रामनामकें पसारि पाय सूतिहौं ॥

दानव-देव, अहीस-महीस, महामुनि-तापस, सिद्ध-समाजी ।
जग जाचक, दानि दुतीय नहीं, तुम्ह ही सबकी राखत बाजी ॥
एते बड़े तुलसीस ! तऊ सबरीके दिए बिनु भूख न भाजी ।
राम गरीबनेवाज ! भए हौ गरीबनेवाज गरीब नेवाजी ॥

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी ।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी ॥
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी ।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी ॥

खेती न किसानको, भिखारीको न भीख, बलि,
बनिकको बनिज, न चाकरको चाकरी ।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी ?'

बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे मबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी॥

कुल - करतूति - भूति - कीरति - सुरूप-गुन,
जौबन जरत जुर, परै न कल कहीं।
राजकाजु कुपथु, कुसाजु भोग रोग ही के,
बेद-बुध बिद्या पाइ बिबस बलकहीं॥
गति तुलसीसकी लखै न कोउ, जो करत,
पब्बयतें छार, छारै पब्बय पलक हीं।
कासों कीजै रोषु,दोषु दीजै काहि, पाहि, राम!
कियो कलिकाल कुलि खललु खलक हीं॥

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटी सों, बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
मांगि कै खैबो, मसीतको सोइबो लैबेको एकु न दैबे को दोऊ॥

मेरें जाति-पाँति न चहौं काहूँकी जाति-पाँति,
मेरे कोऊ कामको न हौं काहूँके कामको।
लोकु परलोकु रघुनाथही के हाथ सब,
भारी है भरोसो तुलसीकें एक नामको॥
अति ही अयाने उपखानो नहि बूझैं लोग,
'साह ही को गोतु गोतु होत है गुलामको।'
साधु कै असाधु, कै भलो कै पोच, सोचु कहा,
का काहूके द्वार परौं, जो हौं सो हौं रामको॥

× × ×

अज अद्वैत अनाम, अलख रूप-गुन-रहित जो।
माया पति सोइ राम, दास हेतु नर-तनु धरेउ॥
तुलसी बेद-पुरान-मत, पूरन सास्त्र बिचार।
यह बिराग-संदीपनी, अखिल ग्यानको सार॥
एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
राम-रूप स्वाती जलद, चातक तुलसीदास॥

बिरले बिरले पाइए, माया त्यागी संत।
तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी केक अनंत॥

महि पत्री करि सिंधु मसि, तरु लेखनी बनाइ।
तुलसी गनपति सों तदपि, महिमा लिखी न जाय॥

तुलसी भगत सुपच भलौ, भजै रैन दिन राम।
ऊँचो कुल केहि काम को, जहाँ न हरि को नाम॥

सोइ पंडित सोइ पारखी, सोई संत सुजान।
सोई सूर सचेत सो, सोई सुभट प्रमान॥

सोइ ग्यानी सोइ गुनी जन, सोई दाता ध्यानि।
तुलसी जाके चित भई, राग द्वेषकी हानि॥

राग द्वेष की अगिनि बुझानी। काम क्रोध बासना नसानी॥
तुलसी जबहिं सांति गृह आई। तब उरहीं उर फिरी दोहाई॥

× × ×

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरेहुँ जौं चाहसि उजिआर॥

हियँ निर्गुन नयनन्हि सगुन रसना राम सुनाम।
मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम॥

सगुन ध्यान रुचि सरस नहिं निर्गुन मन ते दूरि।
तुलसी सुमिरहु राम को नाम सजीवन मूरि॥

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरनानि पर जोउ।
तुलसी रघुबर राम के बरन बिराजत दोउ॥

नाम राम को अंक है सब साधन हैं सून।
अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गून॥

नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥

कासीं बिधि बसि तनु तजें हठि तनु तजें प्रयाग।
तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग॥

हम लखि लखहि हमार लखि हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जपु नीच॥

राम नाम अवलंब बिनु परमारथ की आस।
बरषत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास॥

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
रामनाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥
राम नाम नर केसरी कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥
राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु ।
सकल सुमंगल मूल जग गुरुपद पंकज रेनु ॥
राम नाम कलि कामतरु सकल सुमगल कंद ।
सुमिरत करतल सिद्धि सब पग पग परमानंद ॥
ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि ।
राम चरित सत कोटि महँलिय महेस जियँ जानि ॥
राम भरोसो राम बल राम नाम बिस्वास ।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल माँगत तुलसीदास ॥
राम नाम रति नाम गति राम नाम बिस्वास ।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल दुहुँ दिसि तुलसीदास ॥
रसना सांपिनि बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम ।
तुलसी प्रेम न राम सों ताहि बिधाता बाम ॥
हिय फाटहुँ फूटहुँ नयन जरउ सो तन केहि काम ।
द्रवहिं स्रवहिं पुलकइ नहीं तुलसी सुमिरत राम ॥
स्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर जस ।
ते नयना जनि देहु राम ! करहु बरु आँधरो ॥
रहैं न जल भरि पूरि राम सुजस सुनि रावरो ।
तिन आंखिनमें धूरि भरि भरि मूठी मेलिये ॥
स्वारथ सीता राम सों परमारथ सिय राम ।
तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहा कहु काम ॥
आपु आपने तें अधिक जेहि प्रिय सीताराम ।
तेहि के पग की पानहीं तुलसी तनु को चाम ॥
तुलसी जौं पै राम सों नाहिन सहज सनेह ।
मूँड़ मुड़ायो बादिहीं भाँड़ भयो तजि गेह ॥
साहिब सीतानाथ सों जब घटिहै अनुराग ।
तुलसी तबहीं भालतें भभरि भागि हैं भाग ॥
प्रीति रामसों नीति पथ चलिय राग रिस जीति ।
तुलसी संतनके मते इहै भगति की रीति ॥

तुलसी रामहु तें अधिक राम भगत जियँ जान।
रिनिया राजा राम भे धनिक भए हनुमान॥
भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप॥
ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार।
सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार॥
सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु॥
नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ।
ललित बसन भूषन ललित ललित अनुज सिसु साथ॥
परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम॥
श्रीरघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान।
तें मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन॥
बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु॥
बिनु गुर होइ न ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु॥
रामचंद्र के भजन बिनु जो चह पद निर्बान।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु बिनु पूँछ बिषान॥
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ॥
मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंसमनि हरहु बिषम भवभीर॥
राम चरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु॥
मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघ हानिकर।
जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न॥
बासर ढासनि के ढका रजनीं चहुँ दिसि चोर।
संकर निज पुर राखिऐ चितै सुलोचन कोर॥

× × ×

आजु महामंगल कोसलपुर सुनि नृपके सुत चारि भए।
सदन-सदन सोहिलो सोहावनो, नभ अरु नगर निसान हुए॥

सजि-सजि जान अमर किंनर-मुनि जानि समय-सम गान ठए।
नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन, पुनि पुनि बरषहिं सुमन चए ।।
अति सुख बेगि बोलि गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गए।
जातकरम करि कनक, बसन, मनभूषित सुरभि-समूह दए ।।
दल-फल-फूल, दूब-दधि-रोचन, जुवतिन्ह भरि भरि थार लए।
गावत चलीं भीर भइ बीथिन्ह, बंदिन्ह बाँकुरे बिरद बए ।।
कनक-कलस, चामर-पताक-धुज, जहँ तहँ बंदनवार नए।
भरहिं अबीर, अरगजा छिरकहिं, सकल लोक एक रंग रए ।।
उमगि चल्यौ आनंद लोक तिहुँ, देत सबनि मंदिर रितए।
तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत, रामकृपा चितवन चितए ।।

× × ×

सुभग सेज सोभित कौसिल्या रुचिर राम-सिसु गोद लिये।
बार बार बिधुबदन बिलोकति, लोचन चारु चकोर किये ।।
कबहुँ पौढ़ि पयपान करावति, कबहूँ राखति लाइ हिये।
बालकेलि गावति हलरावति, पुलकति प्रेम-पियूष पिये ।।
बिधि-महेस, मुनि सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।
तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये ।।

× × ×

पगनि कब चलिहौ चारो भैया ?
प्रेम-पुलकि, उर लाइ सुवन सब, कहति सुमित्रा मैया ।।
सुंदर तनु सिसु-बसन-बिभूषन नखसिख निरखि निकैया।
दलि तृन, प्रान निछावरि करि करि लैहैं मातु बलैया ।।
किलकनि, नटनि, चलनि, चितवनि, भजि मिलनि मनोहरतैया।
मनि-खंभनि प्रतिबिंब-झलक, छबि छलकिहै भरि अँगनैया ।।
बालबिनोद, मोद मंजुल बिधु, लीला ललित जुन्हैया।
भूपति पुन्य-पयोधि उमँग, घर घर आनंद-बधैया ।।
ह्वैहैं सकल सुकृत - सुख - भाजन, लोचन - लाहु लुटैया।
अनायास पाइहैं जनमफल तोतरे बचन सुनैया ।।
भरत, राम, रिपुदवन, लषनके चरित सरित-अन्हवैया।
तुलसी तबके-से अजहुँ जानिबे रघुबर - नगर - बसैया ।।

× × ×

पौढ़िये लालन, पालने हौं झुलावौं।
कर पद मुख चखकमल लसत लखि लोचन-भँवर भुलावौं ।।

बाल-बिनोद-मोद - मंजुलमनि किलकनि - खानि खुलावौं।
तेइ अनुराग ताग गुहिबे कहँ मति - मृगनयनि बुलावौं ।।
तुलसी भनित भली भामिनि उर सो पहिराइ फुलावौं।
चारु चरित रघुबर तेरे तेहि मिलि गाइ चरन चितु लावौं ।।

× × ×

ललन लोने लेरुआ, बलि मैया।
सुख सोइए नींद-बेरिया भई, चारु-चरित चार्यौ मैया ।।
कहति मल्हाइ, लाइ उर छिन-छिन, 'छगन छबीले छोटे छैया'।
मोद - कंद कुल - कुमुद - चंद्र मेरे रामचंद्र रघुरैया ।।
रघुबर बालकेलि संतनकी सुभग सुभद सुरगैया।
तुलसी दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनी धैया ।।

× × ×

ललित सुतहि लालति सचु पाये।
कौसल्या कल कनक अजिर महँ सिखवति चलन अँगुरियाँ लाये ।।
कटि किंकिनी, पैंजनी पाँयनि बाजति रुनझुन मधुर रेंगाये।
पहुँची करनि, कंठ कठुला बन्यो केहरि नख मनि-जरित जराये ।।
पीत पुनीत बिचित्र झँगुलिया सोहति स्याम सरीर सोहाये।
दंतियाँ द्वै द्वै मनोहर मुखछबि, अरुन अधर चित लेत चोराये ।।
चिबुक कपोल नासिका सुंदर, भाल तिलक मसिबिंदु बनाये।
राजत नयन मंजु अंजनजुत खंजन कंज मीन मद नाये ।।
लटकन चारु भ्रुकुटिया टेढ़ी, मेढ़ी सुभग सुदेस सुभाये।
किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि, डरपति जननि पानि छुटकाये ।।
गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत भूप देखाये।
बाल-केलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद न अमाये ।।
देखत नभ घन-ओट चरित मुनि जोग समाधि बिरति बिसराये।
तुलसिदास जे रसिक न यहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये ।।

× × ×

बिहरत अवध-बीथिन राम।
संग अनुज अनेक सिसु, नव-नील-नीरद-स्याम ।।
तरुन अरुन-सरोज-पद बनी कनकमय पदत्रान।
पीत-पट कटि तून बर, कर ललित लघु धनु-बान ।।
लोचननिको लहत फल छबि निरखि पुर-नर-नारि।
बसत तुलसीदास उर अवधेसके सुत चारि ।।

× × ×

ए कौन कहांतें आए ?
नील-पीत-पाथोज-बरन, मन-हरन, सुभाय सुहाए ॥
मुनिसुत किधौ भूप-बालक, किधौ ब्रह्म-जीव जग जाए।
रूप-जलधिके रतन, सुछबि-तिय-लोचन ललित लला ए ॥
किधौं रबि-सुवन, मदन-ऋतुपति, किधौं हरि-हरबेष बनाए।
किधौं आपने सुकृत-सुरतरुके सुफल रावरेहि पाए ॥
भये बिदेह बिदेह नेहब्रस देहदसा बिसराए।
पुलक गात, न समात हरष हिय, सलिल सुलोचन छाए ॥
जनक-बचन मृदु मंजु मधु-भरे भगति कौसिकहि भाए।
तुलसी अति आनंद उमगि उर राम लषन गुन गाए ॥

× × ×

पूजि पारबती भले भाय पाँय परिकै।
सजल सुलोचन, सिथिल तनु पुलकित,
आवै न बचन, मन रह्यो प्रेम भरिकै ॥
अंतरजामिनि, भवभामिनि स्वामिनिसों हौं,
कही चाहौं बात, मातु, अंत तौ हौ लरिकै।
मूरति कृपाल मंजु माल दै बोलत भई,
पूजो मन कामना भावतो बरु बरिकै ॥
राम कामतरु पाइ, बेलि ज्यों बौंड़ी बनाइ,
माँग-कोषि तोषि-पोषि, फैलि-फूलि-फरिकै।
रहौगी, कहौगी तब, साँची कही अंबा सिय,
गहे पाँय द्वै, उठाय, माथे हाथ धरिकै ॥
मुदित असीस सुनि, सीस नाइ पुनि पुनि,
बिदा भई देवीसों जननि डर डरिकै।
हरषीं सहेली, भयो भावतो, गावतीं गीत,
गवनी भवन तुलसीस-हियो हरिकै ॥

× × ×

दूलह राम, सीय दुलही री !
घन-दामिन बर बरन, हरन-मन, सुंदरता नखसिख निबही, री ॥
ब्याह-बिभूषन-बसन-बिभूषित, सखि अवली लखि ठगि सी रही, री।
जीवन-जनम-लाहु, लोचन-फल है इतनोइ, लह्यो आजु सही, री ॥
सुखमा सुरभि सिंगार-छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दही, री।
मथि माखन सिय-राम सँवारे, सकल भुवन छबि मनहु मही, री ॥

तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल, न जाति कही, री ।
रूप-रासि बिरची बिरंचि मनो, सिला लवनि रति-काम लही री ॥

× × ×

जानकी-बर सुंदर, माई ।
इंद्रनील-मनि-स्याम सुभग, अँग अंग मनोजनि बहु छबि छाई ॥
अरुन चरन, अंगुली मनोहर, नख दुतिवंत, कछुक अरुनाई ।
कंजदलनिपर मनहु भौम दस बैठे अचल सुसदसि बनाई ॥
पीन जानु, उर चारु, जटित मनि नूपुर पद कल मुखर सोहाई ।
पीत पराग भरे अलिगन जनु जुगल जलज लखि रहे लोभाई ॥
किंकिनि कनक कंज अवली मृदु मरकतसिखर मध्य जनु जाई ।
गई न उपर, सभीत नमितमुख, बिकसि चहूँ दिसि रही लोनाई ॥
नाभि गँभीर, उदर रेखा बर, उर भृगु-चरन-चिह्न सुखदाई ।
भुज प्रलंब भूषन अनेक जुत, बसन पीत सोभा अधिकाई ॥
जग्योपबीत विचित्र हेममय, मुक्तामाल उरसि मोहि भाई ।
कंद-तड़ित त्रिच जनु सुरपति-धनु रुचिर बलाकपांति चलि आई ॥
कंबु कंठ, चिबुकाधर सुंदर, क्यों कहौं दसननकी रुचिराई ।
पदुमकोस महँ बसे बज्र मनो निज सँग तड़ित-अरुन-रुचि लाई ॥
नासिक चारु, ललित लोचन, भ्रूकुटिल, कचनि अनुपम छबि पाई ।
रहे घेरि राजीव उभय मनो चंचरीक कछु हृदय डेराई ॥
भाल तिलक, कंचनकिरीट सिर, कुंडल लोल कपोलनि झांई ।
निरखहिं नारि-निकर बिदेहपुर निमि नृपकी मरजाद मिटाई ॥
सारद-सेस-संभु निसि-बासर चिंतत रूप, न हृदय समाई ।
तुलसिदास सठ क्यों करि बरनै यह छबि, निगम नेति कह गाई ॥

× × ×

सुनहु राम मेरे प्रानपियारे ।
वारौं सत्यबचन श्रुति-सम्मत, जाते हौं बिछुरत चरन तिहारे ॥
बिनु प्रयास सब साधनको फल प्रभु पायो, सो तो नाहिं सँभारे ।
हरि तजि धरमसील भयो चाहत, नृपति नारिबस सरबस हारे ॥
रुचिर काँचमनि देखि मूढ ज्यों करतलतें चिंतामनि डारे ।
मुनि-लोचन-चकोर-ससि राघव, सिव-जीवनधन, सोउ न बिचारे ॥
जद्यपि नाथ तात ! मायाबस सुखनिधान सुत तुम्हहिं बिसारे ।
तदपि हमहि त्यागहु जनि रघुपति, दीनबंधु, दयालु, मेरे बारे ॥

अतिसय प्रीति बिनीत बचन सुनि, प्रभु कोमल-चित चलत न पारे ।
तुलसिदास जौ रहौ मातु हित, को सुर-बिप्र-भूमि-भय टारे ।।

× × ×

राम ! हौं कौन जतन घर रहिहौ ।
बार बार भरि अंक गोद लै ललन कौनसों कहिहौं ।।
इहि आँगन बिहरत मेरे बारे ! तुम जो संग सिसु लीन्हें ।
कैसे प्रान रहत सुमिरत सुत, बहु बिनोद तुम कीन्हें ।।
जिन्ह श्रवननि कल बचन तिहारे सुनि सुनि हौं अनुरागी ।
तिन्ह श्रवननि बनगवन सुनति हौं, मोतें कौन अभागी ।।
जुग सम निमिष जाहिं रघुनंदन, बदनकमल बिनु देखे ।
जौ तनु रहै बरष बीते, बलि, कहा प्रीति इहि लेखे ! ।।
तुलसीदास प्रेमबस श्रीहरि देखि बिकल महतारी ।
गदगद कंठ, नयन जल, फिरि फिरि आवन कह्यो मुरारी ।।

× × ×

कहौ तुम्ह बिनु गृह मेरो कौन काजु ?
बिपिन कोटि सुरपुर समान मोको, जोपै पिय परिहरयो राजु ।।
बलकल बिमल दुकूल मनोहर, कंद-मूल-फल अमिय नाजु ।
प्रभुपदकमल बिलोकिहैं छिनछिन, इहितें अधिक कहा सुख-समाजु ।।
हौं रहौ भवन भोग-लोलुप ह्वै, पति कानन कियो मुनिको साजु ।
तुलसिदास ऐसे बिरह-बचन सुनि कठिन हियो बिहरो न आजु ।।

× × ×

जबहि रघुपति-सँग सीय चली ।
बिकल-बियोग लोग-पुरतिय कहैं, अति अन्याउ अली ।।
कोउ कहै, मनिगन तजत काँच लगि, करत न भूप भली ।
कोउ कहै, कुल-कुबेलि कैकेयी दुख-बिष-फलनि फली ।।
एक कहैं, बन जोग जानकी ! बिधि बड़ बिषम बली ।
तुलसी कुलिसहुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली ।।

× × ×

फिरि फिरि राम सीय तनु हेरत ।
तृषित जानि जल लेन लषन गए, भुज उठाइ ऊँचे चढ़ि टेरत ।।
अवनि कुरंग, बिहँग द्रुम-डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत ।
मगन न डरत निरखि कर-कमलनि सुभग सरासन सायक फेरत ।।

अवलोकत मग-लोग चहुँ दिसि, मनहु चकोर चंद्रमहि घेरत ।
ते जन भूरिभाग भूतलपर तुलसी राम-पथिक-पद जे रत ॥

× × ×

सखि ! सरद-बिमल-बिधुबदनि बधूटी ।
ऐसी ललना सलोनी न भई, न है, न होनी,
रत्यो रची बिधि जो छोलत छबि छूटी ॥
साँवरे गोरे पथिक बीच सोहति अधिक,
तिहुँ त्रिभुवन - सोभा मनहु लूटी ।
तुलसी निरखि सिय प्रेमबस कहैं तिय,
लोचन - सिसुन्ह देहु अमिय घूटी ॥

× × ×

बहुत दिन बीते सुधि कछु न लही ।
गए जो पथिक गोरे - साँवरे सलोने,
सखि ! संग नारि सुकुमारि रही ॥
जानि - पहिचानि बिनु आपुतें आपुनेहुतें,
प्रानहुतें प्यारे प्रियतम उपही ।
सुधाके सनेहहूके सार लै सँवारे बिधि,
जैसे भावते हैं भांति जाति न कही ॥
बहुरि बिलोकिबे कबहुक, कहत,
तनु पुलक, नयन जलधार बही ।
तुलसी प्रभु सुमिरि ग्रामजुवती सिथिल,
बिनु प्रयास परीं प्रेम सही ॥

× × ×

फटिकसिला मृदु बिसाल, संकुल सुरतरु - तमाल,
ललित लता - जाल हरति छबि बितानकी ।
मंदाकिनि - तटिनि - तीर, मंजुल मृग-बिहग-भीर,
धीर मुनिगिरा गभीर सामगानकी ॥
मधुकर-पिक-बरहि मुखर, सुंदर गिरि निरझर झर,
जल-कन घन - छाँहि, छन प्रभा न भानकी ।
सब ऋतु ऋतुपति प्रभाउ, संतत बहै त्रिबिध बाउ,
जनु बिहार - बाटिका नृप पंचबानकी ॥
बिरचित तहँ परनसाल, अति बिचित्र लषनलाल,
निवसत जहँ नित कृपालु राम - जानकी ।

निजकर राजीवनयन पल्लव-दल-रचित सयन,
प्यास परसपर पियूष प्रेम - पानकी ॥
सिय अँग लिखैं धातुराग, सुमननि भूषन - बिभाग,
तिलक - करनि का कहौं कलानिधानकी।
माधुरी-बिलास-हास, गावत जस तुलसिदास,
बसति हृदय जोरी प्रिय परम प्रानकी ॥

× × ×

आजुको भोर, और सो, माई।
सुनौं न द्वार बेद-बंदी-धुनि, गुनिगन-गिरा सोहाई ॥
निज निज सुंदर पति-सदननितें रूप-सील-छबि-छाई।
लेन असीस सीय आगे करि मापै सुतबधू न आई ॥
बूझी हौं न बिहँसि मेरे रघुबर 'कहाँ री ! सुमित्रा माता ?'।
तुलसी मनहु महासुख मेरो देखि न सकेउ बिधाता ॥

× × ×

जननी निरखति बान-धनुहियाँ।
बार बार उर-नैननि लावति प्रभुजूकी ललित पनहियाँ ॥
कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय बचन सबारे।
उठहु तात ! बलि मातु बदनपर, अनुज-सखा सब द्वारे ॥
कबहुँ कहति यों, बड़ी बार भइ, जाहु भूप पहँ, भैया।
बंधु बोलि जेंइय जो भावै, गई निछावरि मैया ॥
कबहुँ समुझि बनगवन रामको रहि चकि चित्र लिखी-सी।
तुलसिदास वह समय कहेतें लागति प्रीति सिखी-सी ॥

× × ×

जानत हौ सबहीके मनकी।
तदपि कृपालु ! करौं बिनती सोइ सादर, सुनहु दीन-हित जनकी ॥
ए सेवक संतत अनन्य अति, ज्यों चातकहि एक गति घनकी।
यह बिचारि गवनहु पुनीत पुर, हरहु दुसह आरति परिजनकी ॥
मेरो जीवन जानिय ऐसोइ, जियै जैसो अहि, जासु गई मनि फनकी।
मेटहु कुलकलंक कोसलपति, आग्या देहु नाथ मोहि बनको ॥
मोको जोइ लाइय लागै सोइ, उतपति है कुमातुतें तनकी।
तुलसिदास सब दोष दूरि करि प्रभु अब लाज करहु निज पनकी ॥

× × ×

हाथ मींजिबो हाथ रह्यो।
लगी न संग चित्रकूट हुतें, ह्याँ कहा जात बह्यो॥
पति सुरपुर, सिय-राम-लषन बन, मुनिब्रत भरत गह्यो।
हौं रहि घर मसान-पावक ज्यों मरिबोइ मृतक दह्यो॥
मेरोइ हिय कठोर करिबे कहँ बिधि कहुँ कुलिस लह्यो।
तुलसी बन पहुँचाइ फिरी सुत, क्यों कछु परत कह्यो॥

× × ×

आरत बचन कहति बैदेही।
बिलपति भूरि बिसूरि 'दूरि गए मृग सँग परम सनेही'॥
कहे कटु बचन, रेख नाँघी मैं, तात छमा सो कीजै।
देखि बधिक-बस राजमरालिनि, लषनलाल! छिनि लीजै॥
बनदेवनि सिय कहन कहति यों, छल करि नीच हरी हौं।
गोमर-कर सुरधेनु, नाथ! ज्यौं, त्यौं पर-हाथ परी हौं॥
तुलसिदास रघुनाथ-नाम-धुनि अकनि गीध धुकि धायो।
'पुत्रि पुत्रि! जनि डरहि, न जैहै नीचु! मीचु हौं आयो'॥

× × ×

राघौ गीध गोद करि लीन्हों।
नयन-सरोज सनेह-सलिल सुचि मनहु अरघजल दीन्हों॥
सुनहु, लषन! खगपतिहि मिले बन मैं पितु-मरन न जान्यौ।
सहि न सक्यौ सो कठिन बिधाता, बड़ो पछु आजुहि भान्यौ॥
बहु बिधि राम कह्यौ तनु राखन, परम धीर नहि डोल्यौ।
रोकि प्रेम, अवलोकि बदन-बिधु, बचन मनोहर बोल्यौ॥
तुलसी प्रभु झूठे जीवन लगि समय न धोखो लैहौं।
जाको नाम मरत मुनिदुरलभ तुमहि कहाँ पुनि पैहौं?॥

× × ×

मेरो सुनियो, तात! संदेसो।
सीय-हरन जनि कहेहु पितासों, ह्वैहै अधिक अंदेसो॥
रावरे पुन्यप्रताप-अनल महँ अलप दिननि रिपु दहिहैं।
कुलसमेत सुरसभा दसानन समाचार सब कहिहैं॥
सुनि प्रभु-बचन, राखि उर मूरति, चरन-कमल सिर नाई।
चल्यो नभ सुनत राम-कल-कीरति, अरु निज भाग बड़ाई॥
पितु ज्यों गीध-क्रिया करि रघुपति अपने धाम पठायो।
ऐसो प्रभु बिसारि तुलसी सठ! तू चाहत सुख पायो॥

× × ×

रघुकुलतिलक ! बियोग तिहारे।
मैं देखी जब जाइ जानकी, मनहु बिरह-मूरति मन मारे ॥
चित्र-से नयन अरु गढ़े-से चरन-कर, मढ़े-से स्रवन, नहि सुनति पुकारे।
रसना रटति नाम, कर सिर चिर रहै, नित निजपद-कमल निहारे ॥
दरसन-आस-लालसा मन महँ, राखे प्रभु-ध्यान प्रान-रखवारे।
तुलसिदास पूजति त्रिजटा नीके रावरे गुन-गन-सुमन सँवारे ॥

× × ×

जाऊँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥
कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे।
खग, मृग, ब्याध, पषान, विटप जड़, जवन कवन सुरतारे ॥
देव, दनुज मुनि, नाग, नाग मनुज सब माया बिबस विचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥

× × ×

मेरो मन हरिजू ! हठ न तजै।
निस दिन नाथ देउँ सिख बहु विधि करत सुभाउ निजै ॥
ज्यों जुवती अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै।
है अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहि भजै ॥
लोलुप भ्रम गृह पशु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहुँ न मूढ़ लजै ॥
हौं हार्‌यो करि जतन बिबिध बिध अतिसय प्रबल अजै।
तुलसीदास बस होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥

× × ×

अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं ॥
पायेउँ नाम चारु चिन्तामनि उर कर ते न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं ॥
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन निज बस ह्वै न हंसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति - पद - कमल बसैहौं ॥

× × ×

ऐसे राम दीन-हितकारी।
अति कोमल करुनानिधान बिनु कारन पर उपकारी ॥

साधन-हीन दीन निज अघ-बस सिला भई मुनि-नारी।
गृहतें गवनि परसि पद पावन घोर सापतें तारी॥
हिंसारत निषाद तामस बपु पसु-समान बनचारी।
भेंट्यो हृदय लगाइ प्रेम बस नहिं कुल, जाति बिचारी॥
यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत, कहि न जाइ अति भारी।
सकल लोक अवलोकि सोकहत सरन गये भय टारी॥
विहँग योनि आमिष अहार-पर गीध कौन व्रतधारी।
जनक-समान क्रिया ताकी निज कर सब भांति सँवारी॥
अधम जाति सवरी जोषित जड़ लोक-वेद ते न्यारी।
जानि प्रीति, दै दरस कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी॥
कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल, आयो सरन पुकारी।
सहि न सके दारुन दुख जन के, हत्यो बालि सहि गारी॥
रिपुको अनुज विभीषन निसिचर, कौन भजन अधिकारी।
सरन गये आगे ह्वै लीन्हो भेंट्यो भुजा पसारी॥
असुभ होइ जिन्हके सुमिरे ते बानर रीछ बिकारी।
वेद-विदित पावन किये ते सब, महिमा नाथ! तुम्हारी॥
कहँ लगि कहौं दीन अगनित जिन्हकी तुम विपति दिवारी।
कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर, काहे कृपा बिसारी॥

× × ×

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम बचन अरु हीते॥
सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम-हम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठि रीते॥
सुत-बनितादि जानि स्वारथरत, न करु नेह सबही ते।
अन्तहुँ तोहिं तजैंगे पामर! तू न तजै अबही ते॥
अब नाथहिं अनुरागु, जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते।
बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय भोग बहु घी ते॥

× × ×

जयति जय सुरसरी जगदखिल-पावनी।
विष्णु-पदकंज-मकरंद इव अम्बुवर वहसि,
दुख दहसि, अघवृन्द - विद्राविनी॥
मिलित जलपात्र-अज युक्त-हरिचरणरज,
विरज- वर- वारि त्रिपुरारि शिरः- धामिनी।

जह्नु-कन्या धन्य, पुण्यकृत सगर-सुत,
भूधरद्रोणि - विद्दरणि बहुनामिनी ।।
यक्ष, गंधर्व, मुनि, किन्नरोरग, दनुज,
मनुज मज्जहिं सुकृत - पुंज युत - कामिनी ।
स्वर्ग-सोपान, विज्ञान-ज्ञानप्रदे,
मोह - मद - मदन - पाथोज - हिमयामिनी ।।
हरित गंभीर वानीर दुहुँ तीरवर,
मध्य धारा विशद, विश्व अभिरामिनी ।
नील-पर्यंक-कृत-शयन सर्पेश जनु,
सहस सीसावली स्रोत सुर - स्वामिनी ।।
अमित महिमा, अमितरूप, भूपावली-
मुकुट - मनिवंद्य त्रैलोक पथगामिनी ।
देहि रघुबीर-पद-प्रीति निर्भर मातु,
दासतुलसी त्रासहरणि भवभामिनी ।।

× × ×

अब चित चेति चित्रकूटहि चलु ।
कोपित्त कलि, लोपित मंगल मगु, बिलसत बढ़त मोह-माया-मलु ।।
भूमि बिलोकु राम - पद-अंकित, बन बिलोकु रघुबर-बिहार थलु ।
सैल-सृंग भवभंग-हेतु लखु, दलन कपट-पाखंड-दंभ-दलु ।।
जहँ जनमे जग-जनक जगतपति, बिधि-हरि-हर परिहरि प्रपंच छलु ।
सकृत प्रबेस करत जेहि आश्रम, बिगत-बिषाद भये पारथ नलु ।।
न करु बिलंब बिचारु चारुमति, बरष पाछिले सम अगिले पलु ।
मंत्र सो जाइ जपहि, जो जपि भे, अजर अमर हर अचइ हलाहलु ।।
रामनाम-जप जाग करत नित, मज्जत पय पावन पीवत जलु ।
करिहैं राम भावतौ मनकौ, सुख-साधन, अनयास महाफलु ।।
कामदमनि कामता, कलपतरु सो जग-जुग जागत जगतीतलु ।
तुलसी तोहि बिसेषि बूझिये, एक प्रतीति-प्रीति एकै बलु ।।

× × ×

भूमिजा - रमण - पदकंज - मकरंद - रस-
रसिक - मधुकर भरत भूरिभागी ।
भुवन-भूषण, भानुवंश-भूषण, भूमिपाल—
मणि रामचन्द्रानुरागी ।।
जयति विबुधेश-धनदादि-दुर्लभ-महा-
राज - संम्राज - सुख-पद - विरागी

खड्ग-धाराव्रती-प्रथमरेखा प्रकट
शुद्धमति - युवति पति - प्रेमपागी ॥
जयति निरुपाधि - भक्तिभाव - यंत्रित - हृदय,
बंधु - हित चित्रकूटादि - चारी।
पादुका - नृप - सचिव, पुहुमि - पालक - परम
धरम - धुर - धीर, वरवीर भारी ॥
जयति संजीवनी-समय-संकट हनूमान
धनुबान - महिमा बखानी।
बाहुबल बिपुल परमिति पराक्रम अतुल,
गूढ़ गति जानकी - जानि जानी ॥
जयति रण - अजिर गन्धर्व - गण - गर्वहर,
फिर किये रामगुणगाथ - गाता।
माण्डवी - चित्त - चातक - नवांबुद - बरन,
सरन तुलसीदास अभय - दाता ॥

× × ×

कबहुँक अंब, अवसर पाइ।
मेरिऔ सुधि द्याइबी, कछु करुन-कथा चलाइ ॥
दीन, सब अँग हीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ ॥
बूझिहैं 'सो है कौन', कहिबी नाम दसा जनाइ।
सुनत राम कृपालुके मेरी बिगरिऔ बनि जाइ ॥
जानकी जगजननि जनकी किये बचन सहाइ।
तरै तुलसीदास भव तव नाथ-गुन-गन गाइ ॥

× × ×

रामको गुलाम, नाम रामबोला राख्यौ राम,
काम यहै, नाम द्वै हौं कबहूँ कहत हौं।
रोटी-लूगा नीके राखै, आगेहूकी बेद भाखै,
भलो ह्वै है तेरो, ताते आनँद लहत हौं ॥
बाँध्यौ हौं करम जड़ गरब गूढ़ निगड़,
सुनत दुसह हौं तौ साँसति सहत हौं।
आरत - अनाथ - नाथ, कौसलपाल कृपाल,
लीन्हों छीन दीन देख्यो दुरित दहत हौं ॥
बूझ्यो ज्यौं ही, कह्यो, मैं हूँ चेरो ह्वै हौ रावरो जू
मेरो कोऊ कहूँ नाहिं चरन गहत हौं।

गुरु पीठ, अपनाइ गहि बाँह बोलि
सेवक - सुखद, सदा बिरद बहत हौं ॥
लोग कहैं पोच, सो न सोच न सँकोच मेरे
ब्याह न बरेखी, जाति - पांति न चहत हौं ।
तुलसी अकाज - काज राम ही के रीझे - खीझे,
प्रीतिकी प्रतीति मन मुदित रहत हौं ॥

× × ×

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ॥
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो ।
मो समान आरत नहिं आरतिहर तोसो ॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो ।
तातु-मातु, गुरु-सखा तू सब बिधि हितु मेरो ॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु ! चरन-सरन पावै ॥

× × ×

केशव ! कहि न जाइ का कहिये ।
देखत तव रचना बिचित्र हरि ! समुझि मनहिं मन रहिये ॥
सून्य भीतिपर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे ।
धोये मिटइ न, मरइ भीति, दुख पाइअ एहि तनु हेरे ॥
रबिकर-नीर बसै अति दारुन मकर रूप तेहि माहीं ।
बदन-हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं ॥
कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउ मानै ।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै ॥

× × ×

दीनदयालु, दुरित दारिद दुख दुनी दुसह तिहुँ ताप तई है ।
देव दुवार पुकारत आरत, सबकी सब सुख हानि भई है ॥
प्रभुके बचन, बेद-बुध-सम्मत, 'मम मूरति महिदेवमई है' ।
तिनकी मति रिस-राग-मोह-मद, लोभ लालची लीलि लई है ॥
राज-समाज कुसाज कोटि कटु कलपित कलुष कुचाल नई है ।
नीति, प्रतीति प्रीति परमित पति हेतुबाद हठि हेरि हई है ॥
आश्रम-बरन-धरम-बिरहित जग, लोक-बेद, मरजाद गई है ।
प्रजा पतित, पाखंड-पापरत, अपने अपने रंग रई है ॥

शांति, सत्य, सुभ रीति गई घटि, बढ़ी कुरीति, कपट-कलई है ।
सीदत साधु, साधुता सोचति, खल बिलसत, हुलसति खलई है ॥
परमारथ स्वारथ, साधन भये अफल, सफल नहिं सिद्धि सई है ।
कामधेनु-धरनी कलि-गोमर-बिबस बिकल जामति न बई है ॥
कलि-करनी बरनिये कहाँ लौं, करत फिरत बिनु टहल टई है ।
तापर दाँत पीसि कर मींजत, को जानै चित कहा ठई है ॥
त्यों त्यों नीच चढ़त सिर ऊपर, ज्यों ज्यों सीलबस ढील दई है ।
सरुष बरजि तरजिये तरजनी, कुम्हिलैहै कुम्हड़ेकी जई है ॥
दीजै दादि देखि ना तौ बलि, मही मोद-मंगल रितई है ।
भरे भाग अनुराग लोग कहैं, राम कृपा-चितवनि चितई है ॥
बिनती सुनि सानंद हेरि हंसि, करुणा-बारि भूमि भिजई है ।
राम-राज भयो काज, सगुन सुभ, राजाराम जगत-बिजई है ॥
समरथ बड़ो, सुजान सुसाहब, सुकृत-सैन हारत जितई है ।
सुजन सुभाव, सराहत सादर, अनायास साँसति बितई है ॥
उथपे थपन, उजारि बसावन, गई बहोरि बिरद सदई है ।
तुलसी प्रभु आरत-आरतिहर, अभय बाँह केहि केहि न दई है ॥

× × ×

मैं हरि पतित-पावन सुने ।
मैं पतित तुम पतित-पावन दोउ बानक बने ॥
ब्याध गनिका गज अजामिल साखि निगमनि भने ।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥
जानि नाम अजानि लीन्हें नरक सुरपुर मने ।
दासतुलसी सरन आयो, राखिये आपने ॥

× × ×

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं ॥
जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहुँ प्रभु न बहुत जिय जानी ॥
जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं ।
सो संपदा बिभीषन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्हीं ॥
तुलसिदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो ॥

× × ×

रघुबर ! रावरि यहै बड़ाई।
निदरि गनी आदर गरीबपर करत कृपा अधिकाई ॥
थके देव साधन करि सब, सपनेहुँ नहिं देत दिखाई ।
केवट कुटिल भालु कपि कौनप, कियो सकल सँग भाई ॥
मिलि मुनिबृंद फिरत दंडक बन, सो चरचौ न चलाई ।
बारहि बार गीध सबरीकी बरनत प्रीति सुहाई ॥
स्वान कहे तें कियो पुर बाहिर, जती गयंद चढ़ाई ।
तिय-निंदक मतिमंद प्रजारज निज नय नगर बसाई ॥
यहि दरबार दीनको आदर रीति सदा चलि आई ।
दीन-दयालु दीन तुलसीकी काहु न सुरति कराई ॥

× × ×

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो ।
श्रीरघुनाथ कृपालु-कृपातें संत-सुभाव गहौंगो ॥
जथालाभसंतोष सदा, काहूसों कछु न चहौंगो ।
पर-हित-निरत-निरंतर, मन क्रम वचन नेम निबहौंगो ॥
परुष बचन अति दुसह श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो ।
बिगत मान, सम सीतल मन, पर-गुन नहिं दोष कहौंगो ॥
परिहरि देह-जनित चिंता, दुख-सुख सम बुद्धि सहौंगो ।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरि-भगति लहौंगो ॥

× × ×

जाके प्रिय न राम बैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥
तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद-मंगलकारी ॥
नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेब्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आंखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं ॥
तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो ।
जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो ॥

× × ×

श्रीरघुबीरकी यह बानि ।
नीचहू सों करत नेह सुप्रीति मन अनुमानि ॥
परम अधम निषाद पाँवर, कौन ताकी कानि ?
लियो सो उर लाइ सुत ज्यों प्रेमको पहिचानि ॥

गीध कौन दयालु, जो बिधि रच्यो हिंसा सानि ?
जनक ज्यों रघुनाथ ताकहँ दियो जल निज पानि ॥
प्रकृति-मलिन कुजाति सबरी सकल अवगुन-खानि ।
खात ताके दिये फल अति रुचि बखानि बखानि ॥
रजनिचर अरु रिपु बिभीषन सरन आयो जानि ।
भरत ज्यों उठि ताहि भेंटत देह-दसा भुलानि ॥
कौन सुभग सुसील बानर, जिनहिं सुमिरत हानि ॥
किये ते सब सखा, पूजे भवन अपने आनि ।
राम सहज कृपालु कोमल दीनहित दिनदानि ।
भजहि ऐसे प्रभुहि तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥

× × ×

ऐसेहि जनम-समूह सिराने ।
प्राननाथ रघुनाथ-से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल, कायर, खल, केवल कलिमल-साने ।
सूखत बदन प्रसंसत तिन्ह कहँ हरि तें अधिक करि माने ॥
सुख हितकोटि उपाय निरंतर करत न पायँ पिराने ।
सदा मलीन पंथके जल ज्यों, कबहुँ न हृदय थिराने ॥
यह दीनता दूर करिबेको अमित जतन उर आने ।
तुलसी चित-चिंता न मिटै बिनु चिंतामनि पहिचाने ॥

× × ×

राम ! रावरो नाम साधु - सुरतरु है ।
सुमिरे त्रिबिध घाम हरत, पूरत काम,
सकल सुकृत सरसिजको सरु है ॥
लाभहूको लाभ, सुखहूको सुख, सरबस,
पतित - पावन, डरहूको डरु है ।
नीचेहूको, ऊँचेहूको, रंकहूको, रावहूको,
सुलभ सुखद आपनो - सो घरु है ॥
बेद हू पुरान हू, पुरारि हू पुकारि कह्यो,
नाम - प्रेम चारिफलहूको फरु है ।
ऐसे राम - नाम सों न प्रीति, न प्रतीति मन,
मेरे जान, जानिबो सोई नर खरु है ॥
नाम-सो न मातु-पितु, मीत-हित, बंधु-गुरु,
साहिब सुधी सुसील सुधाकरु है ।

नामसों निबाह नेहु, दीनको दयालु ! देहु,
दासतुलसीको, बलि, बड़ो बरु है ॥

× × ×

बिस्वास एक राम-नामको ।
मानत नहिं परतीति अनत ऐसोइ सुभाव मन बामको ॥
पढ़िबो पर्‌यो न छुठी छु मत रिगु जजुर अथर्वन सामको ।
ब्रत तीरथ तप सुनि सहमति पचि मरै करै तन छाम को ? ॥
करम-जाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दामको ।
ग्यान बिराग जोग जप-तप, भय लोभ मोह कोह कामको ॥
सब दिन सब लायक भव गायक रघुनायक गुन-ग्रामको ।
बैठे नाम-कामतरु-तर डर कौन घोर घन घामको ॥
को जानै को जैहै जमपुर को सुरपुर पर-धामको ।
तुलसिहिं बहुत भलो लागत जग जीवन रामगुलामको ॥

× × ×

लाभ कहा मानुष-तनु पाये ।
काय-बचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये ॥
जो सुख सुरपुर-नरक, गेह-बन आवत बिनहिं बुलाये ।
तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन, समुझत नहिं समुझाये ॥
पर-दारा, पर द्रोह, मोहबस किये मूढ़ मन भाये ।
गरभबास दुखरासि जातना तीव्र बिपति बिसराये ॥
भय-निद्रा, मैथुन-अहार, सबके समान जग जाये ।
सुर-दुरलभ तनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गवांये ॥
गई न निज-पर-बुद्धि, शुद्ध है रहे न राम-लय लाये ।
तुलसिदास यह अवसर बीते का पुनि के पछिताये ॥

× × ×

रुचिर रसना तू राम राम राम क्यों न रटत ।
सुमिरत सुख सुकृत बढ़त, अघ-अमंगल घटत ॥
बिनु श्रम कलि-कलुषजाल कटु कराल कटत ।
दिनकरके उदय जैसे तिमिर-तोम फटत ॥
जोग, जाग, जप, बिराग, तप, सुतीरथ-अटत ।
बांधिबेको भव-गयंद रेनुकी रजु बटत ॥
परिहरि सुर-मनि सुनाम, गुंजा लखि लटत ।
लालच लघु तेरो लखि तुलसि तोहिं हटत ॥

संत पीपाजी

कायउ देवा काइअउ देवल, काइअउ जंगम जाती।
काइअउ धूप दीप नइवेदा, काइअउ पूजत पाती ।।
काइआ बहु षंड षोजते, नवनिधि पाई।
नाकछु आइबो ना कछु जाइबो, रामकी दुहाई ।।
जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे, जो षोजै सो पावै।
पीपा प्रणवै परम तत्तु है, सतिगुरु होइ लषावै ।।

रैदास

भगती ऐसी सुनहु रे भाई।
आइ भगति तब गई बड़ाई ।।
कहा भयो नाचे अरु गाये कहा भयो तप कीन्हे।
कहा भयो जे चरन पखारे जोलौं तत्त्व न चीन्हे ।।
कहा भयो जे मूँड़ मुड़ायो कहा तीर्थ ब्रत कीन्हे।
खाली दास भगत अरु सेवक परम तत्व नहिं चीन्हे ।।
कह रैदास तेरी भगति दूर है भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर पिपलिक ह्वै चुनि खावै ।।

× × ×

पहले पहरे रैन दे बनजरिया तैं जनम लिया संसार वे।
सेवा चूकी राम की तेरी बालक बुद्धि गँवार वे ।।
बालक बुद्धि न चेता तूँ भूला माया जाल वे।
कहा होय पीछे पछिताये जल पहिले न बाँधी पाल वे ।।
बीस बरस का भया अयाना थांभि न सक्का भार वे।
जन रैदास कहै बनजरिया जनम लिया संसार वे ।।

× × ×

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ। फल अरु मूल अनूप न पाऊँ ।।
थनहर दूध जो बछरू जुठारी। पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ।।
मलयागिरि बेधियो भुअंगा। बिष अमृत दोऊ एकै संगा ।।
मन ही पूजा मन ही धूप। मन ही सेऊँ सहज सरूप ।।
पूजा अरचा न जानूँ तेरी। कह रैदास कवन गति मेरी ।।

× × ×

रे चित चेत अचेत काहे बालक को देख रे।
जाति तें कोइ पद नहिं पहुँचा राम भगति विशेष रे॥
खट क्रम सहित जे विप्र होते हरि भगति चित दृढ़ नाहिं रे।
हरि की कथा सोहाय नाहीं स्वपच तूलै ताहि रे॥
मित्र शत्रु अज्ञात सबतें अन्तर लावे हेत रे।
लाग वाकी कहाँ जानै तीन लोक पवेत रे॥
अजामिल गज गनिका तारी काटीं कुंजर की पास रे।
ऐसे दुरमत मुक्त कीये तो क्यों न तरै रैदास रे॥

× × ×

जो तुम गोपालहि नहिं गैहौ।
तो तुमका सुख में दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ॥
माला नाय सकल जग डहको झूँटो भेख बनैहौ।
झूठे ते सांचे तब होइ हो हरि की सरन जब ऐहौ॥
कनरस, बतरस और सबै रस झूँठहि मूड़ डुलैहौ।
जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझ जैहौ॥
जो जन राम नाम रँग राते और रंग न सोहैहौ।
कह रैदास सुनो रे कृपानिधि प्रान गये पछितैहौ॥

× × ×

प्रभु जी संगति सरन तिहारी। जग जीवन राम मुरारी॥
गली गली को जल बहि आयो सुरसरि जाय समायो।
संगत के परताप महातम नाम गंगोदक पायो॥
स्वाति बूँद बरसै फदि ऊपर सीस विषै होइ जाई।
वही बूँद कै मोती निपजै संगत की अधिकाई॥
तुम चंदन हम रेंड बापुरे निकट तुम्हारे बासा।
संगत के परताप महातम आवै बास सुबासा॥
जाति भी ओछी करम भी ओछा ओछा कसब हमारा।
नीचे से प्रभु ऊँच कियो है कह रैदास चमारा॥

× × ×

बिनु देषे उपजै नहीं आसा, जो दीसै सो होइ विनासा।
वरन सहित जो जापै नामु, सो जोगी केवल निहकामु॥
परचै रामु रवै जउ कोई, पारसु परसै दुविधा न होई॥
सो मुनि मनकी दुविधा पाइ, बिनु दुआरे त्रैलोक समाइ।
मनका सुभाउ सभु कोइ करै, करता होइ सु अनभै रहै॥
फल कारन फूली बनराइ, फल लागा तब फूलु विल्हाइ।
गिआने कारन करम अभिआस, गिआनु भइआ तब करमह नासु॥

घ्रित कारन दधि मथै सइग्रान, जीवत मुकत सदा निरबान।
कहि रविदास परम वैराग, रिदै रामु कीन जपिसि ग्रभाग ॥

× × ×

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ, ग्रनभउ भाव न दरसै।
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे, जउ पारसहि न परसै ॥
देव संसै गांठि न छूटै।
काम क्रोध माइग्रा मद मतसर, इह पंचहु मिलि लूटै ॥
हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संनिग्रासी।
गिग्रानी गुनी सूर हम दाते, इह बुधि कबहि न नासी ॥
कहु रविदास सभै नहीं समझसि, भूलि परे जैसे बउरे।
मोहि ग्रधारु नामु नाराइन, जीवन प्रान धन मोरे ॥

× × ×

माधो भरम कैसेहु न बिलाइ, ताते द्वैत दरसै ग्राई ॥
कनक कुंडल सूत पट जुदा, रजु भुग्रंग भ्रम जैसा।
जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यों, ब्रह्म जीव इति ऐसा ॥
विमल एकरस उपजै न बिनसै, उदय ग्रस्त दोउ नाहीं।
विगता बिगत घटै नहिं कबहूँ, बसत बसै सब माही ॥
निस्चल निराकार ग्रज ग्रनुपम, निरभय गति गोविंदा।
ग्रगम ग्रगोचर ग्रच्छर ग्रतरक, निरगुन ग्रंत ग्रनंदा ॥
सदा ग्रतीत ज्ञानघन वर्जित, नरबिकार ग्रविनासी।
कह रैदास सहज सुन्न सत, जिवन मुक्त निधि कासी ॥

× × ×

ऐसे कछु ग्रनुभौ कहत न ग्रावै। साहिब मिलै तो को बिलगावै ॥
सब में हरि है हरि में सबहै, हरि ग्रपनो जिन जाना।
साखी नहीं ग्रौर कोइ दूसर, जाननहार सयाना ॥
बाजीगर सो राचि रहा, बाजी का मरम न जाना।
बाजी झूठ साँच बाजीगर, जाना मन पतियाना ॥
मन थिर होइ त कोइ न सूझै, जानै जाननहारा।
कह रैदास विमल विवेक सुख, सहज सरूप सँभारा ॥

× × ×

ज्यों तुम कारन केसवे, ग्रंतर लव लागी।
एक ग्रनूपम ग्रनुभवी, किमि होइ बिरागी ॥

इक अभिमानी चातृगा, बिचरत जगमाही ।
यद्यपि जल पूरन बही, कहूँ वा रुचि नाहीं ।।
जैसे कामी देखि कामिनी, हृदय सूल उपजाई ।
कोट वेदविधि ऊचरै, बाकी बिथा न जाई ।।
जो तेहि चाहै सो मिलै, आरतगति होई ।
कह रैदास यह गोप नहिं, जानै सब कोई ।।

× × ×

संतो अनिन भगति यह नाहीं ।
जब लग सिरजत मन पांचों गुन, ब्यापत है या माही ।।
सोई आन अंतर करि हरिसों, अपमारग को आनै ।
काम क्रोध मद लोभ मोहकी, पल पल पूजा ठानै ।।
सत्य सनेह इष्ट अँग लावै, अस्थल अस्थल खेलै ।
जो कछु मिलै आन आखतसों, सुत दारा सिर मेलै ।।
हरिजन हरिहि और ना जानै, तजै आन तन त्यागी ।
कह रैदास सोई जन निर्मल, निसिदिन जो अनुरागी ।।

× × ×

दूधु बछरै थनहु विटारिउ । फूलु भँवरि, जलु मीन विगारिउ ।।
माई गोविंद पूजा कहाले चरावउ । अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ।।
मैलागर वेरहे है भुइअंगा । बिषु अंम्रितु बसहिं इक संगा ।।
धूप दीप नईवेदहि बासा । कैसे पूज करहि तेरी दासा ।।
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ । गुर परसादि निरंजनु पावउ ।।
पूजा अरचा आहि न तोरी । कहि रविदास कवन गति मोरी ।।

× × ×

ऐसा ध्यान धरौं वरो बनवारी । मन पवन दै सुखमन नारी ।।
जो जप जपौं जो बहुरि न जपना । सो तप तपौं जो बहुरि न तपना ।।
सो गुरु करौं जो बहुरि न करना । ऐसो मरौं जो बहुरि न मरना ।।
उलटी गंग जमुन में लावौं । बिनही जल मंजन द्वै पावौं ।।
लोचन भरि भरि बिंब निहारौं । जोति विचारि न और बिचारौं ।।
पिंड परे जिव जिस घर जाता । सबद अतीत अनाहद राता ।।
जापर कृपा सोई भल जानै । गूंगो साकर कहा बखानै ।।
सुन्न महल में मेरा वासा । ताते जिव में रहौं उदासा ।।
कह रैदास निरंजन ध्यावौं । जिस घर जावॅ सो बहुरि न आवौं ।।

× × ×

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ । गावन हारको निकट बताऊँ ॥
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा ॥
जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बढ़ै हँकारा ।
जब मन मिल्यो रामसागर सों, तब यह मिटी पुकारा ॥
जब लग भगति मुकतिकी आसा, परम तत्व सुनि गावै ।
जहँ जहँ आस धरत है यह मन, तहँ तहँ कछू न पावै ॥
छाड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासों और करत हैं, परम तत्व अब सोई ॥

× × ×

नरहरि चंचल है मति मेरी, कैसे भगति करूँ मैं तेरी ॥
तूं मोहिं देखै हौं तोरि देखूं, प्रीति परस्पर होई ।
तूं मोहिं देखै तोहि न देखूं, यह मति सब बुधि खोई ॥
सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना ।
गुन सब तोर मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना ॥
मैं तैं तोरि मोरि असमझिसों, कैसे करि निस्तारा ।
कह रैदास कृस्न करुनामय, जै जै जगत अधारा ॥

× × ×

तोही मोही मोही तोही अंतर कैसा । कनिक कटिक जल तरंग जैसा ॥
जउपै हमन पाप करंता, अहे अनंता । पतित पावन नाम कैसे हुंता ॥
तुम जु नाइक आछहु अंतरजामी । प्रभते जनु जानीजै जनते सुआमी ॥
सरीरु अराधै बीकउ बीचारु देहू । रविदास समदल समझावै कोऊ ॥

× × ×

जउ हम बांधे मोह फांस, हम प्रेम बंधनि तुम बांधे ।
अपने छूटनको जतनु करहु, हम छूटे तुम अराधे ॥
माधवे, जानत हहु जैसी तैसी । अब कहा करहुगे ऐसी ॥
मीनु पकरि फांकिउ अरु काटिउ, रांधि कीउ बहुबानी ।
षंड षंड करि भोजन कीनो, तऊ न बिसारिउ पानी ॥
आपन बापै नाहीं किसी को, भावन को हरि राजा ।
मोहु पटलु सभु जगतु बिआपिउ, भगतनही संतापा ॥
कहि रविदास भगति इक बाढ़ी, अब इह कासिउ कहीऐ ।
जाकारनि हम तुम अराधे, सो दुषु अजहू सहीऐ ॥

× × ×

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा। जउ तुम चंद तउ हम भए हैं चकोरा ॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नहीं तोरहि।
तुमसिउ तोरि कवनसिउ जोरहि ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती। जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥
साची प्रीति हम तुमसिउ जोरी। तुमसिउ जोरि अवरसंगि तोरी ॥
जंह जंह जाउ तहा तेरी सेवा। तुमसों ठाकुरु अउरु न देवा ॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा। भगति देत गावै रविदासा ॥

× × ×

जब हम होते तब तू नाहीं, अब तूंही मैं नाहीं।
अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि, जल केवल जल माही ॥
माधवे, किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा। जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ, सुपने भइआ भिषारी।
अछत राज बिछुरत दुषु पाइआ, सो गति भई हमारी ॥
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि, अब कछु मरमु जनाइआ ॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब, कहते कहनु न आइया ॥
सरबे एकु अनेकै सुआमी, सब घट भोगावै सोई।
कहि रविदास हाथपै नेरै, सहजे होइ सु होई ॥

× × ×

सहकी सार सुहागनि जानै, तजि अभिमानु सुष रलीआ मानै।
तनु मनु देइ न अंतरु राषै, अवरा देषि न सुनै अभाषै ॥
सो कत जानै पीर पराई। जाकै अंतरि दरदु न आई ॥
दुषी दुहागनि दुइ पष हीनी, जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी।
पुरष लात का पंथु दुहेला, संगि न साथी गवनु इकेला ॥
दुषीआ दरदवंदु दरि आइआ, बहुतु पिआस जवाबु न पाइआ।
कहि रविदास सरन प्रभु तेरी, जिउ जानहु तिउ करु गति मोरी ॥

× × ×

पावन ज़स माधो तेरा, तुम दारुन अघ मोचन मेरा ॥
कीरति तेरी पाप विनासे, लोक वेद यों गावै।
जौ हम पाप करत नहि भूधर, तौ तूं कहा नसावै ॥
जब लग अंग पंक नहिं परसै, तौ जल कहा पखारै।
मन मलीन विषया रस लंपट, तौ हरि नाम सँभारै ॥
जो हम विमल हृदय चित अंतर, दोष कवन हम धरिहौ।
कह रैदास प्रभु तुम दयाल हौ, अबँध मुक्ति का करिहौ ॥

× × ×

सब कछु करत कहौं कछु कैसे, गुन विधि बहुत रहति ससि जैसे ।।
दरपन गगन अनिल अलेप जस, गंध जलधि प्रतिबिंब देखि तस ।।
सब आरंभ अकाम अनेहा, विधि निषेध कीयो अनेकेहा ।।
यह पद कहत सुनत जेहि आवै, कह रैदास सुकृत को पावै ।।

× × ×

देव कमलापति सरन आया ।
मुझ जनम संदेह भ्रम छेदि माया ।।
अति अपार संसार भवसागर, जामे जनम मरना संदेह भारी ।
काम भ्रम क्रोध भ्रम लोभ भ्रम मोह भ्रम,
अनत भ्रम छेदि मम करसि यारी ।।
पंच संगी मिलि पीड़ियो प्रान यों,
जाय न सक्यों वैराग भाग ।
पुत्र वरग कुल बंधु ते भारजा,
भरवै दसो दिसा सिर काल लागा ।।
भगति चितऊं तो मोह दुख व्यापही,
मोह चितऊं तो मेरी भगति जाई ।
उभय संदेह मोहि रैन दिन व्यापही,
दीन दाता करूँ कवन उपाई ।।
चपल चेतो नहीं बहुत दुख देखियो,
काम बस मोहिहो करम फंदा ।
सक्ति संबंध कियो ज्ञान पद हरि लियो,
हृदय विश्वरूप तजि भयो अंधा ।।
परम प्रकास अविनासी अघ मोचना,
निरखि निज रूप विसराम पाया ।
बदत रैदास वैराग पद चिंतना,
जपौ जगदीस गोविंद राया ।।

× × ×

दरसन दिजै राम, दरसन दीजै ।
दरसन दीजै विलंब न कीजै ।।
दरसन तोरा जीवन मोरा । बिन दरसन क्यों जिवै चकोरा ।।
साधो सतगुरु सब जग चेला । अबके बिछुरे मिलन दुहेला ।।
धन जोबन की झूठी आसा । सत सत भाषै जन रैदासा ।।

× × ×

जलकी भीति पवन का थंभा, रकत बुंद का गारा।
हाड मास नाडी को पिंजरु, पंषी वसै विचारा॥
प्रानी किश्रा मेरा किश्रा तेरा। जैसा तरवर पंषि वसेरा॥
राषहु कंध उसारहु नीवाँ। साढ़े तीनि हाथ तेरी सीवाँ॥
वके वाल पाग सिर डेरी। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥
ऊंचे मंदर सुंदर नारी। राम नाम विनु वाजी हारी॥
मेरी जाति कमीनी पाति कमीनी, श्रोछा जनमु हमारा।
तुम सरनागति राजा राम, कहि रविदास चमारा॥

× × ×

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो, स्रवन वानी सुजसु पूरि राषउ।
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ, रसनश्रंम्रित रामनाम भाषउ॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै। मै तउ मोलि महँगीलई जीश्र सटै॥
साध संगति विना भाउ नही ऊपजै, भाव विनु भगति नहीं होइ तेरी॥
कहै रविदास इक वेनती हरि सिउ, पैज राषहु राजा राम मेरी॥

× × ×

नाथ कछूश्र न जानउ। मनु माइश्रा कै हाथि बिकानउ॥
तुम कहीश्रत है जगतगुर सुश्रामी। हम कहीश्रत कलि जुगके कामी॥
इन पंचन मेरो मनु जु विगारिउ। पलु पलु हरिजी ते श्रंतरु पारिउ॥
जत देषउ तत दुष की रासी। श्रजै न पत्याइ निगम भए साथी॥
गोतम नारि उमापति स्वामी। सीसु धरनि सहस भगगामी॥
इन दूतन षलु वधु करि मारिउ। वडो निलाजु श्रजहू नही हारिउ॥
कहि रविदास कहा कैसे कीजै। बिनु रघुनाथ सरनि काकी लीजै॥

× × ×

जो दिन श्रावहि सो दिन जाही, करना कूचु रहनु थिरु नाही।
संगु चलत है हमभी चलना, दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना॥
किश्रा तू सोइश्रा जागु इश्राना, तै जीवनु जगि सचु करि जाना॥
जिनि जीउ दीश्रा सुरिजकु श्रंवरावै, सभ घटि भीतरि हाटु चलावै।
करि वंदिगी छाड़ि मै मेरा, हिरदै नामु संभारि सबेरा॥
जनमु सिराने पंथु न संवारा, साँझ परी दह दिसि श्रंधिश्रारा।
कहि रविदास निदानि दिवाने, चेतसि नाही दुनीश्रा फन षाने॥

× × ×

दारिदु देषि सभको हँस, श्रैसी दसा हमारी।
श्रसट दसा सिधि करतलै, सभ क्रिपा तुम्हारी॥

तू जानत मैं किछु नहीं भव षंडन राम।
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु।
ऊँच नीच तुमते तरे अलाजु संसारु॥
कहिं रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै।
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै॥

× × ×

हरि सा हीरा छाड़िकै, करै आनकी आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रैदास॥
रैदास कहै जाके हृदे, रहै रैन दिन राम।
सो भगता भगवंत सम, क्रोध न ब्यापै काम॥
जा देखे घिन उपजै, नरक कुंडमें बास।
प्रेम भगति सों ऊधरे, प्रगटत जन रैदास॥

कमाल

इतना जोग कमाय के साधू, क्या तूने फल पाया।
जंगल जाके खाक लगाये, फेर चौरासी आया॥
राम भजन है अच्छा रे। दिलमों रखो सच्चा रे॥
जोग जुगत की गत है न्यारी, जोग जहर का प्याला।
जीने पावे उने छुपावे, वोही रहे मतवाला॥
जोग कमाय के बाबू होना, ये तो बड़ा मुष्कल है।
दोनों हात जब निकल गये, फेर सुधरन भी मुष्कल है॥
सुख से बैठो आपने मेहलमो, राम भजन अच्छा है।
कछु काया झीजे नहीं खरचे, ध्यान धरो सोइ सच्चा है॥
कहत कमाल सुनो भाई साधू, सब से पंथ न्यारा है।
वेद शास्तर की बात येही, जमके माथा फत्तर है॥

× × ×

ये तनु किसोकी किसोकी। आखर बस्ती जंगलकी॥
काहे कू दिवाने सोच करे, मेरी माता और पुती।
ये तो सब झुट पसारा, राम करो अपना साती॥
खाये पिये सुख से बैठे, फेर उठके चले जाती।
बरखकी छाया सुख की मोठी, एक घड़ी का साती॥

कहत कमाल सुनो भाई साधू, सपन भया रात ।
खिन मो राजा खिन मो रंक, ऐसी रहा चलती ।।

× × ×

पीर पैगम्बर की बानी, यारो बस्त भयो निर्बानी ।।
राजा रंक दोनो बराबर, जैसे गंगाजल पानी ।
मान करो कुई मूपर मारो, दोनों मीठा बानी ।।
कांचन नारी जहर सम देखे, ना पसरे हा पानी ।
साधु संत से शीश नमावे, हात जोरकर निर्बानी ।।
कहत कमाल सुनो भाई साधू, येही हमारी बानी ।
ये ही ग्यान मान मो राखो, और कछू ना जानी ।।

× × ×

राम सुमरो राम सुमरो, राम सुमरो भाई ।
कनक कान्ता तजकर बाबा, आपनी बादशाही ।।
देस बदेस तीरथ बरतमे, कछु नहीं काम ।
बैठे जगा सुख से ध्यावो, अखिल राजाराम ।।
कहे कमाल इतना बचन, पुरानों का सार ।
झूठा सच्चा आपनो दिलमो, आपही आप पछानन हार ।।

धन्ना भगत

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि, नामदेउ मनु लीणा ।
आढ दाम को छीपरो होइउ लाषीणा ।।
बुनना तनना तिआगिकै, प्रीति चरन कबीरा ।
नीच कुला जोलाहरा भइउ गुनीय गहीरा ।।
रबिदासु ढुवंता ढोरनी, तितिन्हि तिआगी माइआ ।
परगटु होआ साधसंगि, हरि दरसनु पाइआ ।।
सैनु नाई बुतकारीआ, उहु घरिघरि सुनिआ ।
हिरदे बसिआ पारब्रह्मु भगता महि गनिआ ।।
इह बिधि सुनिकै जाटरो, उठि भगती लागा ।
मिले प्रतषि गुसाईआं, धना बड़भागा ।।

× × ×

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने, तनु मनु धनु नहीं धीरे ।
लालच बिषु काम लुबध राता, मनि बिसरे प्रैभहीरे ।।

विषु फल मीठ लगे मन वउरे, चार विचार न जानीआ ।
गुन ते प्रीति बढी अनभांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी, जलत जाल जम फंध परै ।
बिषु फल संचि भरे मन अैसे, परम पुरष प्रभ मन विसरे ॥
गिआन प्रवेस गुरहि धनु दीआ, धिआनु मानु मन एकमए ।
प्रेम भगति ठानी सुषु जानिआ, त्रिपति अघाने मुकति भए ॥
जोति समाए समानी जाकै, अछली प्रभु पहिचानिआ ।
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु, मिलि जन संत समानिआ ॥

× × ×

रे चित चेतसि कीन दयाल, दमोदर विवहित जानसि कोई ।
जे धावहि षंड ब्रहिमंड कउ, करता करै सु होई ॥
जननी केरे उदक महि, पिंडु कीआ दस दुआरा ।
देइ अहारु अगनि महि राषै, अैसा षसमु हमारा ॥
कुंभी जल माहि तन तिसु वाहरि, पंष षीरु तिन्ह नाही ।
पूरन परमानंद मनोहर, समझि देषु मन माही ॥
पाषणि कीटु गुपतु होइ रहता, ताचो मारगु नाही ।
कहै धंना पूरन ताहू को, मत रे जीअ डराही ॥

× × ×

गोपाल तेरा आरता ।
जो जन तुमरी भगति करंते, तिनके काज सँवारता ॥
दालि सीधा मांगउ घीउ, हमरा षुसी करै नित जीउ ।
पन्ही आछादनु नीका, अनाज मंगउ सतसीका ॥
गऊ भैस माँगउ लावेरी, इक ताजनि तुरी चंगेरी ।
घर की गीहनि चंगी, जनु धंना लेवै मंगी ॥

शेख फ़रीद

जिंदु बहूटी मरणु वर, लै जासी परणाइ ।
आपण हथी जोलिकै, कै गलि लगै धाइ ॥
फरीदा जो तै मारनि मुकीआं, तिना न मारे घुंमि ।
आपनडै घरि जाईअै, पैरा तिन्हांदे चुंमि ॥
फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ, सो लोइण मैं डिठु ।
कजल' रेख न सहदिआ, से पंषी सूइ बहिठु ॥

फरीदा खाकु न निदीऐ, खाकु जेडु न कोइ ।
जीवदिआ पैरा तलै, मइआ ऊपरि होइ ॥
रूषी सूषी षाइ कै, ठंढा पाणी पीउ ।
फरीदा, देषि पराई चोपड़ी, ना तरसाए जीउ ॥
फरीदा, वारि पराइऐ वैसणा, साईं मुझै न देहि ।
जे तू एवै रषसी, जीउ सरीरहु लेहि ॥
फरीदा काले मैड़े कपड़े, काला मैड़ा वेसु ।
गुनही भरिआ मैं फिरा, लोकु कहै दरवेसु ॥
फरीदा षालक षलक महि, षलक बसै रब माहिं ।
मंदा किसनो आषीऐ, जा तिसुविणु कोई नाहि ॥
फरीदा मैं जानिआ, दुषु मुझकु, दुषु सवाइऐ जगि ।
ऊंचै चड़िकै देषिआ, तो घरि घरि एहा अगि ॥
कागा करंग ढंढोलिआ, सगला षाइआ मासु ।
ए दुइ नैना मति छुहउ, पिव देषन की आस ॥
आपु सवारहि मैं मिलहि, मैं मिलिआ सुषु होइ ।
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि, सभु जगु तेरा होइ ॥
सरवर पंथी हेकड़े, फाहीवाल पचास ।
इहु तनु लहरी गडुथिआ, सचे तेरी आस ॥
विरहा विरहा आषीऐ, विरहा तू सुलतानु ।
फरीदा जितु तनि विरहु न ऊपजै, सो तनु जाण मसानु ॥
बूढा होआ शेख फरीदु, कथणि लगी देह ।
जे सउ बरिआ जीवणा, भी तनु होसी वेह ॥
फरीदा सिरु पलीआ, दाड़ी पली मूँछा भी पलीआं ।
रे मन गहिले बाबले, माणहि किआ रलीआं ॥

अंगद

जिसु पिआरेसिउ नेहु, तिसु आगै मरि चलीऐ ।
ध्रिगु जीवणु संसारि, ताकै पाछै जीवणा ॥
जो सिरु साईं ना निवै, सो सिरु दीजै डारि ।
नानक जिसु पिंजर महि विरहा नही, सो पिंजरु लै जारि ॥
अखी वाझहु वेखणा, विणु कंना सुनणा ।
पैरा वाझहु चलणा, विणु हथा करणा ॥

जीभै वाझहु बोलणा, इउ जीवत मरणा ।
नानक हुकमु पछाणिकै, तउ खसमै मिलणा ।।

नानक परखे आपकउ, ता पारखु जाणु ।
रोगु दारू दोवै बुझै, ता बैदु सुजाणु ।।

अगी पाला सिकरे, सूरज केही राति ।
चंद अनेरा किकरे, पउण पणी किआ जाति ।।

धरती चीजी किकरे, जिसु बिचि सभु किछु होइ ।
नानक तापति जाणी अै, जापति रखै सोइ ।।

जे सउ चंदा उगवहि, सूरज चड़हि हजार ।
एते चानण होदिआं, गुर बिनु घोर अंधारु ।।

इहु जगु सचै की हैं कोठड़ी, सचे का विचि वासु ।
इकन्हा हुकमि समाइलए, इकन्हा हुकमे करे विणासु ।।

जपु तपु सभु किछु मंनिअै, अवरि कारा सभि वादि ।
नानक मंनिआ मंनिअै, बुझीअै गुर परसादि ।।

नानक चिंता मति करहू, चिंता तिसही होइ ।
जल महि जंत उपाइअनु, तिनाभि रोजी देइ ।।

नानक तिन्हा वसंतु है, जिन घरि वसिआ कंतु ।
जिन्हके कंत दिसापुरी, से अहिनिसि फिरहि जलंत ।।

मिलिअै मिलिआ न मिलै, मिलै मिलिआ जे होइ ।
अंतर आतमै जो मिलै, मिलिआ कहीआ सोइ ।।

सावणु आइआ हे सखी, जलहरु वरसनहारु ।
नानक सुखि सवनु सोहागणी, जिन्ह सह नालि पिआरु ।।

अमरदास

जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ, मलु लागी दूजै भाइ ।
मलु हउमै धोती किवै न उतरै, जे सउ तीरथ नाइ ।।

बहु विधि करम कमावदे, दूणी मलु लागी आइ ।
पड़िअै मैलु न उतरै, पूछहु गिआनिआ जाइ ।।

मनु मेरे गुरु सरणि आवै, ताहि न मलु होइ ।
मनमुख हरि हरि करि थकै, मैलु न सकी धोइ ।।

मनि मैलै भगति न होवई, नामु न पाइश्रा जाइ।
मनमुख मैले मैले मुए, जासनि पति गवाइ ।।
गुर परसादी मनि वसै, मलु हउमै जाइ समाइ।
जिउ अंधेरै दीपकु वालीऐ, तिउ गुर गिआ निअगिआनि तजाइ ।।

हम कीआ हम करहगे, हम मूरख गावार।
करणै वाला विसरिआ, दूजै भाइ पिआरु ।।

माइआ जेवडु दुख नहीं, सभि भवि थके संसारु ।
गुर मती सुखु पाईऐ, सचु नामु उरधारि ।।
जिसनो मेले सो मिलै, हउ तिसु बलिहारै जाउ।
ए मन भगती रतिआ, सचु वाणी निज थाउ ।।
मनि रते जिहवा रती, हरिगुण सचे गाग।
नानक नामु न वीसरै, सचे माहि समाउ ।।

× × ×

अंदरि हीरा लालु वणाइआ। गुर कै सबदि परखि परखाइआ ।।
जिन सचु पलै सचु वखाणहि, सचु कसवटी लावणिआ ।।
हउ वारी जीउ वारी गुरकी वाणी मंनि वसावणिआ।
अंजन माहि निरंजनु पाइआ, जोती जोति मिलावणिआ ।।
इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा। नामु निरंजनु अति अगम अपारा ।।
गुरमुखि होवै सोई पाए, आपे बखसि मिलवाणिआ ।।
मेरा ठाकुरु सचु द्रिढाए। गुर परसादी सचु चिति लाए।
सचो सचु वरतै सभनी थाई, सचे सचि समावणिआ ।।
वे पर वाहु सचु मेरा पिआरा। किलविख अवगण काटणहारा ।।
प्रेम प्रीति सदा धिआइऐ, भाइ भगति द्रिढावणिआ ।।
तेरी भगति सची जे सचे भावै। आपे देइ न पछोतावै ।।
सभना जीआ का एको दाता, सबदे मारि जीवावणिआ ।।
हरि तुधु बाझहु मैं कोई नाही। हरि तुधै सेवीतै तुधु सालाही ।।
आपे मेलि लैहु प्रभ साचे, पूरै करमि तू पावणिआ ।।
मैं होरु न कोई तुधै जेहा। तेरी नदरी सीझसि देहा ।।
अनदिनु सारि समालि हरि राखहि, गुरमुखि सहज समावणिआ ।।
तुधु जे वडु मैं होरु न कोई, तुधु आपे सिरजी आपे गोई ।।
तू आवेही घड़ि भंनि सवारहि, नानक नाम सुहावणिआ ।।

× × ×

हउमै नावै नालि विरोधु है, दुइ न वसहि इकठाइ ।
हउमै विचि सेवा न होवई, तामनु बिरथा जाइ ।।
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ।
हुकमि मंनहि ता हरि मिलै, ता विचहु हउमै जाइ ।।
हउमै सभु सरीरु है, हउमै उपति होइ ।
हउमै बड़ा गुवारु है, हउमै विचि बूझि न सकै कोइ ।।
हउमै विचि भगति न होवई, हुकमु न बुझिआ जाइ ।
हउमै विचि जीउ बंधु है, नामु न बसै मनि आइ ।।
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई, ता सचु बसिआ मनि आइ ।
सचु कमावै सचि रहै, सचे सेवि समाइ ।।

× × ×

तिही गुणी त्रिभवन विआपिआ, भाई गुर मुखि बूझ बुझाइ ।
राम नामि लगि छूटिऐ, भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ।।
मनरे त्रैगुण छोड़ि चउथै चितु लाइ ।
हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई, सदा हरि केरा गुणगाइ ।।
नामै ते सभि ऊपजै भाई, नाइ विसरिऐ मरि जाइ ।
अगिआनी जगतु अंधु है भाई, सूते गए मुहाइ ।।
गुरमुखि जागे से ऊबरे भाई, भवजलु पारि उतारि ।
जगमहि लाहा हरिनामु हे भाई, हिरदै रखिआ उरधारि ।।
गुर सरणाई ऊबरे भाई, राम नाम लिव लाइ ।
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई, जितु लगि पारि जन पाइ ।।

× × ×

अतुशु किउ तोलिआ जाइ । दूजा होइ त सोझी पाइ ।।
तिसते दूजा नाही कोइ । तिसदी कीमति किकू होइ ।।
गुर परसादि वसै मनि आइ । ताको जाणै दुविधा जाइ ।।
आपि सराफु कसवटी लाए । आपे परखे आपि चलाए ।।
आपे तोले पूरा होइ । आपे जाणै एको सोइ ।।
माइआ का रूपुसभ तिसते होइ । जिसनो मेले सु नियमलु होइ ।।
जिसनोलाए लगै तिसु आइ । सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ।।
आपे लिव धातु है आपे । आपि बुझाए आपे जापे ।।
आपे सतिगुरु सबदु है आपे । नानक आखि सुणाए आपे ।।

× × ×

पूरे गुरते वड़िआई पाई । अचिंत नामु बसिआ मनि आई ॥
हउमै माइआ सबदि जलाई । दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥
जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ।
अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै, गुरमुखि मागउ तेरा नाम निवाजा ॥
मन की परतीति मनते पाइ । पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥
जीवण मरणु को समसरि वेखै । बहुड़ि न मरै नाजमु पेखै ॥
घर ही महि सभि कोट निधान । सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥
सदही लागा सहजि धिआन । अनदिनु गावै एको नाम ॥
इसु जुग महि बड़िआई पाई । पूरे गुर ते नामु धिआई ॥
जहँ देखा तहँ रहिआ समाई । सदा सुखदाता की मति नहिं पाई ॥
पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ । अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥
गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ।
नानक त्रिसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥

× × ×

जाति का गरबु न करिअहु कोई । ब्रह्मु विंदे सो ब्राह्मणु होई ॥
जाति का गरबु न करि मूरख गंवारा ।
इसु गरबते जलहि बहुत विकारा ॥
चारे वरन आषै सभु कोई । ब्रह्मु विंदु ते सभ उपति होई ॥
माटी एक सगल संसारा । बहु बिधि भांडै घड़ै कुम्हारा ॥
पंच ततु मिलि देही का आकारा । घटि वधि को करै वीचारा ॥
कहतु नानक इह जीउ करम बंधु होई ।
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥

× × ×

निरंकारु आकारु है आपे, आपे भरमि भुलाए ॥
करि करि करता आपे वेषै, जितु भावै तितु लाए ॥
सेवक कउ एहा वड़िआई, जाकउ हुकमु मनाए ॥
आपणा भाणा आपे जाणै, गुरकिरपा ते लगीऐ ॥
एका सकति सिवै घरि आवै, जीवदिआ मरि रहीऐ ॥
वेद पढ़ै पढ़ि वादु वषाणै, ब्रह्म विसनु महेसा ।
एक त्रिगुण माइआ जिनु जगतु भुलाइआ जनम, मरण का सहसा ॥
गुर परसादी एको जाणै, चूकै मनहु अंदेसा ॥
हम दीन मूरख अवीचारी, तुम चिंता करहु हमारी ॥
होहु दइआल करि दासु दासा का, सेवा करी तुमारी ॥

एकु निधान देहि तू अपणा, अहिनिसि नामु वषाणी ॥
कहत नानकु गुर परसादी बूझहु, कोई ऐसा करे वीचारा ॥
जितु जल जल ऊपरि फेनु बुदबुदा, तैसा इहु संसारा ॥
जिसते होआ तिसहि समाणा, चूकि गइआ पासारा ॥

× × ×

राम राम सभु को कहै, कहिऐ रामु न होइ ॥
गुर परसादी रामु मनि बसै, ता फलु पावै कोइ ॥
अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ।
हरि तिसु कदे न वीसरै, हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥
हिरदै जिन्हकै कपटु बसै, बाहरहु संत कहाहि ॥
त्रिसना मूलि न चूकई, अंति गए पछुताहि ॥
अनेक तीरथ जे जतन करै ता अंतरकी हउमै कदे न जाइ ॥
जिसु नर की दुविधा न जाइ, धरमराइ तिसु देइ सजाइ ॥
करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥
नानक विचरहु हउमै मारे तां हरि भेटै सोई ॥

× × ×

मनमुख मैली कामणी, कुलषणी कुनारि ॥
पिवु छोडिआ घरि आपणा, पर पुरषै नालि पिआरु ॥
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पुकार ॥
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी, परहरि छोड़ी भतारि ॥
सबदि रती सोहागणी, सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥
सदा रावे पिवु आपणा, सचै प्रेमि पिआरि ॥
हंसा वेषि तरंदिआ, वगांभि आया चाउ ॥
डूबि मुए वग वपुड़े, सिरु तलि उपरि पाउ ॥
भै विचि सभु आकारु है, निरभउ हरिजीउ सोइ ॥
सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै, तिथै भउ कदे न होइ ॥
इसु जगमहि पुरषु एकु है, होर सगली नारि सबाई ॥
सभि घट भोगवै अलिपतु रहै, अलषु न लखणा जाई ॥
हरि गुण तोटि न आवई, कीमति कहणु न जाइ ॥
नानक गुरमुखि हरिगुण रवहि, गुण महि रहै समाई ॥
धन पिवु एहि न आखिअन्हि, वहन्हि इकठे होइ ।
एक जोति दुइ मूरती, धन पिवु कहीऐ सोइ ॥
आसा मनसा जगि मोहणी, जिनि मोहिआ संसारु ॥
सभुको जमके चीरे विचि है, जेता सभु आकारु ॥

सहजि वणसपति फुलु फलु, भवरु वसै भैखंडि ॥
नानक तरवरु एकु है, एको फुलु फिरंगु ॥
मनु माणकु जिनि परखिआ, गुर सबदी बीचारि ॥
से जन विरले जाणीअहि, कलजुग बिचि संसारि ॥
आपै नो आपु मिलि रहिआ, हउमै दुविधा मारि ॥
नानक नामि रते दुतरु तरे, भउ जलु विषमु संसारु ॥

सिंगाजी

मैं तो जाणू साईं दूर है, तूझे पाया नेड़ा।
रहणी रही सामरथ भई, मुझे पखवा तेरा ॥
तुम सोना हम गहणा, मुझे लागा टाका।
तुम तो बोलो हम देह धरि, बोले कै रंग भाखा ॥
तुम चंदा हम चांदणी, रहणी उजियाला।
तुमतो सूरज हम घामला, सोई चौजुग पुरिया ॥
तुमतो दरियाव हम मीनहैं, विश्वास का रहणा।
देह गली मिट्टी भई, तेरा तूही मे समाणा ॥
तुम तरुवर हम पंछीड़ा, बैठे एक ही डाला।
चोंच मार फल भाजिया, फल अमृत सारा ॥
तुम तो वृक्ष हम वेलड़ी, मूल से लपटाना।
कह सिंगा पहचाण ले, पहचाण ठिकाणा ॥

× × ×

मन निर्भय कैसा सोवे, जग में तेरा को है ॥
काम क्रोध में अतिबल योधा, हरे नर! विख का बीज क्यों बोवे ॥
पाच रिपु तेरी संग चलत हैं, हरे वो! जड़ा मूल से खोवे।
मात पिता ने जनम दिया है, हरे वो! त्रिया संग न जोवे ॥
भरम भरम नर जनम गमांयो, हरे! ये आई बाजू खोवे।
कहे जन सिंगा अगम की वाणी, हरे नर! अन्त काल को रोवे ॥

× × ×

संगी हमारा चंचला, कैसा हाथ जो आवे।
काम क्रोध विख भरि रह्या, तासे दुख पावे ॥
मट्टी केरा सीधड़ा, पवन रंग भरिया।
पाव पलक घड़ी थिर नहीं, बहु फेरा फिरिया ॥

आया था हरि नाम को, सो तो नहीं रे विसाया।
सौदा तो सच्चा नहीं, झूठा सँग कीया॥
घुरत नगारा शून्य में, ताको सुध लीजे।
मोतियन की वर्षा वर्षे, कोइ हरिजन भीजे॥
राह हमारी बारीक है, हाथी नहीं समाय।
सिंगाजी चींटी हुई रह्या, निर्भय आवनो जाय॥

× × ×

पाणी में मीन पियासी, मोहे सुन सुन आवै हांसी॥
जल बिच कमल कमल बिच कलियां, जँह वासुदेव अविनाशी।
घट में गंगा घट में जमुना, वहीं द्वारका कासी॥
घर वस्तु बाहर क्यों ढूंढो, वन वन फिरो उदासी।
कहै जन सिंगा सुनो भाइ साधू, अमरापुर के वासी॥

× × ×

निर्गुण ब्रह्म है न्यारा, कोइ समझो समझणहारा॥
खोजत ब्रह्मा जनम सिराणा, मुनिजन पार न पाया।
खोजत खोजत शिवजी थाके, वो ऐसा अपरंपारा॥
शेष सहस मुख रटे निरंतर, रैन दिवस एक सारा।
ऋषि मुनि और सिद्ध चौरासी, वो तैंतीस कोटि पचिहारा॥
त्रिकुटी महल में अनहद बाजे, होत सब्द झनकारा।
सुकमणि सेज शून्य में झूले, वो सोंह पुरुष हमारा॥
वेद कथे अरु कहे निर्वाणी, श्रोता कहो विचारा।
काम क्रोध मद मत्सर त्यागो, ये झूठा सकल पसारा॥
एक बूंद की रचना सारी, जाका सकल पसारा।
सिंगाजी जो भर नजरा देखा, वो वोही गुरू हमारा॥

× × ×

नर नारी में देखिले, सब घट में एकतार।
कहै सिंगा पहचान ले, एक ब्रह्म है सार॥
हम पंथी पारिब्रह्म का, जो अपरंपद दूर।
निराधार जहां मठ किया, जहँ चंदा नहिं सूर॥
वास श्वास दो बैल हैं, सुर्त रास लगाव।
प्रेम पिराहणो करधरो, ज्ञान आर लगाव॥

भीषनजी

नैनहु नीरु बहै तनु षीना, भए केस दुधावनी ।
रूधा कंठु सबदु नहीं उचरै, अब किआ करहि परानी ।।
राम राइ होहि वैद बनवारी । अपने संतह लेहु उबारी ।।
माथे पीर सरीरि जलनि है, करक करेजे माही ।
ऐसी वेदन उपजि षरी भई, बाका औषधु नाही ।।
हरिका नामु अंम्रित जलु निरमलु, इहु औषधु जगि सारा ।
गुर परसादि कहै जनु भीषनु, पावउ मोष दुआरा ।।

× × ×

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु, पुंनि पदारथु पाइआ ।
अनिक जतन करि हिरदै राषिआ, रतनु न छपै छपाइआ ।।
हरिगुन कहते कहनु न जाई । जैसे गुंगे की मिठिआई ।।
रसना रमत सुनत सुषु स्रवना, चित चेते सुषु होई ।
कहु भीषन दुइ नैन संतोषे, जहं देषां तह सोई ।।

रामदास

कबको भालै घुंघरूं ताला, कबको बजावै रबाबु ।
आवत जात वार खिनु लागै, हउ तब लगु समारउ नामु ।।
मेरे मन ऐसी भगति बनि आई ।
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहिन समउ, जैसे जल बिनु मीनु मरिजाई ।।
कब कोउ मेलै पंचसत गाइण, कबको रागु धुनि उठावै ।
मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै, तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ।।
कबको नाचै पाव पसारै कबको हाथ पसारे ।
हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै, तब लगु मेरा मनु राम समारे ।।
कब कोऊ लोगन कउ पतिआवै, लोकि पतीणै ना पति होइ ।।
जन नानक हरि हिरदै स धिआवहु, ता जै जै करै सभु कोइ ।।

× × ×

माई मेरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ।।
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ, जैसे करहलु बेलि रिझाई ।।
हमरा मनु बैराग बिरकतु भइउ, हरि दरसन मीत कै भाई ।।
जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै, तैसे मोहि हरि बिनु रहन न जाई ।।

राषु सरणि जगदीसुर पिआरे, मोहि सरधा पूरि हरि गुंसाईं ।।
जन नानक कै मनु अनंदु होत है, हरि दरसनु निमष दिषाई ।।

× × ×

मेरे सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ।
हरि के संत बतावहु मारगु, हम पीछे लागि चली ।।
प्रिअके बचन सुषाने हीअरे, इह चाल बनी है भली ।
लहुरी मधुरी ठाकुर भाई उह, सुंदरि हरि ढुलि मिली ।।
एको प्रिउ सषीआ सभु प्रिअकी, जो भावै पिव सा भली ।।
नानकु गरीबु किआ करै बिचारा, हरि भावै तितु राह चली ।।

× × ×

अब हम चली ठाकुर पहि हारि ।
जब हम सरणि प्रभू की आई । राषु प्रभू भावै मारि ।।
लोकन की चतुराई उपमाते, वैसंतरि जारि ।।
कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ, हम तनु दी उहै ढारि ।।
जो आवत सरणि प्रभु तुमरी, तिसु राषहु किरपा धारि ।।
जन नानक सरणि तुमारी हरिजीउ, राषहु लाज मुरारि ।।

× × ×

हरि दरसन कउ मेरा मनु बहुतपतै, जिहु त्रिषावंतु बिनु नीर ।।
मेरे मनि प्रेमु लगो हरि तीर ।
हमरी बेदन हरि प्रभु जानै, मेरे मन अतर की पीर ।।
मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै, सोभाई सो मेरा बीर ।।
मिलु मिलु सषी गुण कहु मेरे प्रभु के, सतिगुर मति की धीर ।।
जन नानक की हरि आस पुजावहु, हरि दरसनि सांति सरीर ।।

× × ×

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति । तिउ घटि-घटि रमईआ उति पोति ।।
एको हरि रविआसवु थाइ ।
गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइ ।।
घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ । गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ।।
एको एकु रहिआ भरपूरि । साकत नर लोभी जाणहि दूरि ।।
एको इकु बरतै हरि लोइ । नानक हरि एको करे सु होइ ।।

× × ×

काइआ नगरि एकु बालकु बसिआ, षिनु पलु थिरु न रहाई ।।
अनिक उपाव जतन करि थाके, बारंबार भरमाई ।।

मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ।
सतिगुरु मिलै त पूरा पाइऐ, भजु राम नामु नीसाणु ॥
इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु, जितु राम नाम नहि वसिआ ॥
राम नामु गुरि उदकु चुआइआ, फिरि हरिआ होआ वसिआ ॥
मै निरषत निरषत सरीरु प्रभु षोजिआ, इकु गुर मुषि चलतु दिषाइआ ॥
वाहरु षोजि मुए सभि साकत, हरि गुरमती घरि पाइआ ॥
दीना दीन दइआल भए है, जिउ क्रिसनु बिदुर घरि आइआ ॥
मिलिउ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगे, दालदु भंजि समाइआ ॥
राम नाम की पैज बड़ेरी, मेरे ठाकुरि आपि रषाई ॥
जे सभि साकत करहि बषीली, इकरती तिलु न घटाई ॥
जन की उसतति है रामनामा, दह दिसि सोभा पाई ॥
निंदकु साकतु बनि न सकै तिलु, अपणै घरि लूकी लाई ॥
जनकउ जनु मिलि सोभा पावै, गुण महि गुण परगासा ॥
मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे, जो होवहि दासनि दासा ॥
आये जलु अपरंपरु करता, आपे मेलि मिलावै ।
नानक गुरमुखि सहजि मिलाए, जिउ जलु जलहि समावै ॥

× × ×

पंडितु सासत सिम्रित पडिआ । जोगी गोरषु गोरषु करिआ ।
मै मूरष हरि हरि जपु पड़िआ ॥
ना जाना किआ गति राम हमारी ।
हरि भजु मन मेरे तरु भउ जलु तू तारी ॥
संनिआसी बिभूति लाइ देह सवारी । परत्रिअ तिआगु करी ब्रह्मचारी ।
मै मूरष हरि आस तुमारी ॥
षत्री करक करे सूर तणु पावै । सूदु बैसु परकिरति कमावै ।
मै मूरष हरि नाम छड़ावै ॥
सभ तेरी स्रिसटि तू आपि रहिआ समाई । गुरमुषि नानक दे वड़िआई ।
मै अंधुले हरि टेक टिकाई ।

× × ×

हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ।
सतिगुर मोकउ हरिनामु बताइआ, हउ हरि बिनु षिनु पलु रहिन सकउ ॥
हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु, हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकुषिनु ॥
जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सके, तैसे हरि जनु कि उर है हरि सेवा बिनु ॥

किनहूँ प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि, किनहूँ प्रीति लाई मोह अपमान ।।
हरिजन प्रीति लाई हरि निरवाणपद, नानक सिमरत हरि हरि भगवान ।।

× × ×

आपे धरती साजीअनु, आपे आकासु ।।
बिचि आपे जंत उपाइअनु, मुषि आपे देइ गिरासु ।।
हरि प्रभका सभु षेतु है, हरि आपि किरसाणी लाइआ ।।
गुर मुषि बषसि जमाईअनु, मनमुषी मूलु गवाइआ ।।
बड़ भागीआ सोहागणी, जिना गुर मुषि मिलिआ हरिराइ ।।
अंतर जोति प्रगासीआ, नानक नाम समाइ ।।
सा धरती भई हरिआवली, जिथै मेरा सतिगुरु बैठा जाइ ।।
से जंत भए हरिआवले, जिनी मेरा सतिगुरु देषिआ जाइ ।।
किआ सवणा किआ जागणा, गुर मुषि ते परबाणु ।।
जिना सासि गिरासि न बिसरै, से पूरे पुरब परधान ।।
करमी सतिगुरु पाईए, अनुदिन लगै धिआनु ।।
तिनकी संगति मिलि रहा, दरगह पाई मानु ।।
मनमुषु प्राणी मुगधु है, नामहीण भरमाइ ।।
बिनु गुर मनूआ ना टिकै, फिरि फिरि जूनी पाइ ।।
अंधे चानणु ताथीऐ, जा सतिगुरु मिलै रजाइ ।।
बंधन तोड़ै सचि बसै अगिआनु अंधेरा जाइ ।।
हरिदासन सिउ प्रीति है, हरिदासन को मितु ।।
हरिदासन कै बसि है, जिउ जंती के वसि जंतु ।।
सो हरिजनु नाम धिआइदा, हरि हरिजनु इक समानि ।।
जन नानकु हरि का दासु है, हरि पैज रषहु भगवान ।।
गुरमुषि अंतरि सांति है, मनि तनि नामि समाइ ।।
नामो चितवे नामु पड़ै, नामि रहै लिव लाइ ।।
नामु पदारथु पाइआ, चिंतागई बिलाइ ।।
सतिगुर मिलिऐ नामु ऊपजै, तिसना भूष सभ जाइ ।।

धर्मदास

मोरे पिया मिले सत ज्ञानी ।
ऐसन पिय हम कबहूँ न देखा देखत सुरत लुभानी ।।
आपन रूप जब चीन्हा बिरहिन तब पिय के मन मानी ।।
जब हंसा चले मानसरोवर मुक्ति भरे जहँ पानी ।।

कर्म जलाय के काजल कीन्हा, पढ़े प्रेम की बानी ॥
धर्मदास कबीर पिय, पाये मिट गई आवाजानी ॥

× × ×

गुरु पैयाँ लागो नाम लखा दीजो रे।
जनम जनम का सोया मनुआँ शब्दन मारि जगा दीजो रे ॥
घट अँधियार नैन नहिं सूझै ज्ञान का दीपक जगा दीजो रे ॥
विष की लहर उठत घट अन्तर अमृत बूँद चुवा दीजो रे ॥
गहिरी नदिया अगम बहै धरवा खेय के पार लगा दीजो रे ॥
धरमदास की अरज गुसाईं अब के खेप निभा दीजो रे ॥

× × ×

हम सत्त नाम के बैपारी।
कोई कोई लादे काँसा पीतल कोई कोई लौंग सुपारी ॥
हम तो लाद्यो नाम धनी को पूरन खेप हमारी ॥
पूँजी न टूटै नफ़ा चौगुना बनिज किया हम भारी ॥
हाट जगाती रोक न सकिहैं, निर्भय गैल हमारी ॥
मोति बुंद घटही में उपजै सुकिरत भरत कोठारी ॥
नाम पदारथ लाद चला है धरमदास बैपारी ॥

× × ×

झरि लागै महलिया, गगन घहराय।
खन गरजै खन बिजुरी चमकै, लहर उठै शोभा बरनि न जाय ॥
सुन्न महल से अमृत बरसै, प्रेम अनन्द ह्वै साधु नहाय ॥
खुली किवरिया मिटी अँधियरिया, धन सतगुरु जिन दिया लखाय ॥
धरमदास बिनवै कर जोरी, सतगुरु चरन में रहत समाय ॥

× × ×

मितऊ मड़ैया सूनी कर गैलो।
अपन बलम परदेस निकरि गैलो,
हमरा के अछुवो न गुन दै गैलो ॥
जोगिन ह्वै के मैं बन ढूँढ़ों,
हमरा के बिरह बैराग दै गैलो ॥
सँग की सखी सब पार उतरि गैलीं,
हम धन ठाढ़ी अकेली रहि गैलो ॥
धरमदास यह अरज करतु हैं,
सार सबद सुमिरन दै गैलो ॥

दादू दयाल

हुसियार रहो मन मारेगा ।
साईं सतगुरु तारैगा ।।
माया का सुख भावै मूरिख मन बौरावे रे ।।
झूठ साच करि जाना इन्द्री स्वाद भुलाना रे ।।
दुख कौं सुख करि मानै काल झाल नहि जानै रे ।।
दादू कहि समझावै यह अवसर बहुरि न पावै रे ।।

× × ×

भाई रे ऐसा पंथ हमारा ।
द्वै पख रहित पंथ गहि पूरा अबरण एक अधारा ।।
वाद विवाद काहू सौं नाहीं माहिं जगत थै न्यारा ।
सम दृष्टी सूँ भाई सहज में आपहि आप विचारा ।।
मैं, तैं, मेरी, यहु मत नाहीं निरबैरी निरविकारा ।
पूरण सबै देखि आपा पर निरालंभ निरधारा ।।
काहू के संगी मोह न ममिता सङ्गी सिरजनहारा ।
मन ही मनसूँ समझि सयाना आनँद एक अपारा ।।
काम कलपना कदे न कीजे पूरण ब्रह्म पियारा ।
इहि पँथ पहुँचि पार गहि दादू सो तत सहजि सँभारा ।।

× × ×

आव रे सजणाँ आव, सिर पर धरि पाँव ।
जानी मैंडा जिंद असाड़े ।
तू रावैं दा राव वे सजणाँ आव ।
इत्थाँ उत्थाँ जित्थाँ कित्थाँ, हौं जीवाँ तो नाल वे ।
मीयाँ मैंडा आव असाड़े ।
तू लालों सिर लाल वे सजणाँ आव ।।
तन भी डेवाँ मन भी डेवाँ, डेवाँ प्यंड पराण वे ।
सच्चा साईं मिलि इत्थाईं ।
जिन्दा कराँ कुरवाण वे सजणाँ आव ।
तूँ पाकौं सिर पाक वे सजणाँ तू खूबौ सिर खूब ।
दादू भावै सजणाँ आवै ।
तू मीठा महबूब वे सजणाँ आव ।।

× × ×

म्हारा रे ह्वाला ने काजे रिदै जोवा ने हूँ ध्यान धरूँ ।
आकुल थाये प्राण म्हारा कोने कही पर करूँ ।।
सँभार्यो आवे रे ह्वाला ह्वेला एहों जोइ ठरूँ ।
साथी जी साथै थइनि पेली तीरे पार तरूँ ।।
पीव पाखे दिन दुहेला जाये घड़ी बरसाँ सौं केम भरूँ ।
दादू रे जन हरि गुण गाताँ पूरण स्वामी ते वरूँ ।।

× × ×

बटाऊ रे चलना आजि कि कालि ।
समझि न देखै कहा सुख सोवै रे मन राम सँभालि ।।
जैसे तरवर बिरस बसेरा पंखी बैठे आइ ।
ऐसे यहु सब हाट पसारा आप आप कौं जाइ ।।
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती जिनि खोवे मन भूल ।
यहु संसार देखि जिनि भूलै सब ही सेंवल फूल ।।
तन नहिं तेरा धन नहिं तेरा कहा रह्यो इहिं लागि ।
दादू हरि बिन क्यों सुख सोवै काहे न देखै जागि ।।
जागि रे सब रैणि बिहाणी जाइ जनम अँजुली कौ पाणी ।।
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै जे दिन जाइ से बहुरि न आवै ।।
सूरज चंद कहैं समझाइ दिन दिन आयू घटती जाइ ।।
सरवर पाणी तरवर छाया निसदिन काल गरासै काया ।।
हंस बटाऊ प्राण पयाना दादू आतमराम न जाना ।।

× × ×

बातैं बादि जाहिंगी भइये ।
तुम जिनि जानौ बातनि पइये ।।

जब लग अपना आप न जाणै तब लग कथनी काची ।
आपा जाणि साईं कूँ जाणै तब कथनी सब साची ।।
करणी बिना कंत नहिं पावै कहे सुने का होई ।
जैसी कहै करै जे तैसी पावेगा जन सोई ।।
बातनिहीं जे निरमल होवै तौ काहे कूँ कसि लीजै ।
सोना अग्निनि दहै दस बारा तब यहु प्राण पतीजै ।।
यों हम जाणा मन पतियाना करनी कठिन अपारा ।
दादू तन का आपा जारै तौ तिरत न लागै बारा ।।

× × ×

राम नाम नहिं छांड़ौं भाई, प्राण तजौं निकटि जिव जाई ।।
रती रती करि डारै मोहि, सांई संग न छांड़ौं तोहि ।।

भावै लै सिर करवत दे, जीवन-मूरी न छांड़ौं ते ॥
पावक में ले डारै मोहि, जरै सरीर न छांड़ौं तोहि ॥
इब दादू ऐसी बनि आई, मिलौ गोपाल निसान बजाई ॥

× × ×

क्यौं बिसरै मेरा पीवँ पियारा, जीव की जीवनि प्राण हमारा ॥
क्यौं करि जीवै मीन जल बिछुरै, तुम्ह बिन प्राण सनेही ।
चिंतामणि जब कर, तैं छूटै, तब दुष पावै देही ॥
माता बालक दूध न देवै, सो कैसैं करि पीवै ।
निर्धन का धन अनत भुलाना, सो कैसैं करि जीवै ॥
बरसहु राम सदा सुष अमृत, नीझर निर्मल धारा ।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा ॥

× × ×

अवधू कामधेन गहि राषी ।
बसि कीन्ही तब अमृत सरवै, आगै चारि न नांषी ॥
पोषंता पहली उठि गरजै, पीछै हाथि न आवै ।
भूषी भलैं दूध नित दूणां, यूं या धेन दुहावै ॥
ज्यूं ज्यूं षींण पड़ै त्यूं दूझै, मुकता मेल्यां मारै ।
घाटा रोकि घेरि घरि आंणै, बांधी कारज सारै ॥
सहजैं बांधी कदे न छूटै, कर्म बंधन छुटि जाई ।
काटै कर्म सहज सौं बांधै, सहजैं रहै समाई ॥
छिन छिन मांहि मनोरथ पूरै, दिन दिन होइ अनंदा ।
दादू सोई देषता पावै, कलि अजरावर कंदा ॥

× × ×

निकटि निरंजन देषिहौ, छिन दूर न जाई ।
बाहरि भीतरि येकसा, सब रह्या समाई ॥
सतगुर भेद लषाइया, तब पूरा पाया ।
नैन नहीं निरषूं सदा, घरि सहजैं आया ॥
पूरसौं परचा भया, पूरी मति जागी ।
जीव जांनि जीवनि मिल्या, ऐसैं बड़भागी ॥
रोंम रोंम मैं रमि रह्या, सो जीवनि मेरा ।
जीव पीव न्यारा नहीं, सब संगि बसेरा ॥
सुंदर सो सहजैं रहै, घंटि अन्तरजामी ।
दादू सोई देषिहौं, सारौं संगि स्वामी ॥

× × ×

निकटि निरंजन लागि रहे, तब हम जीवत मुकत भये ।।
मरिकरि मुकति जहां लगि जाइ, तहां न मेरा मन पतिआइ ।।
आगैं जन्म लहैं औतारा, तहां न मानैं मना हमारा ।।
तन छूटे गति जो पद होइ, मृतक जीव मिलै सब कोइ ।।
जीवत जन्म सुफल करि जाना, दादू राम मिलै मन माना ।।

× × ×

ऐसैं गृह मैं क्यूं न रहै, मनसा बाचा रांम कहै ।।
संपति बिपति नहीं मैं मेरा, हरिष सोक दोउ नाहीं ।
राग दोष रहित सुष दुष थैं, बैठा हरिपद मांहीं ।।
तनधन माया मोह न बांधै, बैरी मीत न कोई ।
आपा पर समि रहै निरंतर, निजजन सेवग सोई ।।
सरवर कवल रहै जल जैसैं, दधि मथि घृत करि लीन्हां ।
जैसे बनमैं रहै बटाऊ, काहूँ हेत न कीन्हां ।।
भाव भगति रहै रसिमाता, प्रेम मनग गुन गावै ।
जीवत मुकत होइ जन दादू, अमर अभैपद पावै ।।

× × ×

अलह राम छूठा भ्रम मोरा ।
हिंदू तुरक भेद कछु नाही, देषौं दरसन तोरा ।।
सोई प्राण पिंड पुनि सोई, सोई लोही मासा ।
सोई नैन नासिका सोई, सहजैं कीन्ह तमासा ।।
श्रवणौं सबद बोलता सुणियें, जिभ्या मीठा लागै ।
सोई भूष सबन कौं व्यापै, एक जुगति सोइ जागै ।।
सोई संधि बंध पुनि सोई, सोई सुष सोई पीरा ।
सोई हस्त पाव पुनि सोई, सोई एक सरीरा ।।
यहु सब षेल षालिक हरि तेरा, तैंहिं एक कर लीनां ।
दादू जुगति जानि करि ऐसी, तव यहु प्रान पतीना ।।

× × ×

क्यों करि यहु जग रच्यौ गुसाईं,
तेरे कौंन विनोद बन्यौ मन माहीं ।।
कै तुम्ह आपा परगट करणां, कै यहु रचिले जीव उधरनां ।।
कै यहु तुमको सेवग जानैं, कै यहु रचिले मनके मानैं ।।
कै यहु तुमकौं सेवग भावै, कै यहु रचिले षेल दिषावै ।।

कै यहु तुमकौं षेल पियारा, कै यहु भावै कीन्ह पसारा ॥
यहु सब दादू अकथ कहानी, कहि समझावौ सारंग पानी ॥

× × ×

थकित भयौ मन कह्यौ न जाई, सहजि समाधि रह्यौ ल्यौ लाई ॥
जे कुछ कहिये सोचि विचारा, ग्यान अगोचर अगम अपारा ॥
साइर बूंद कैसैं करि तोलै, आप अबोल कहा कहि बोलै ॥
अनल पंष परै परि दूरि, ऐसैं राम रह्या भरपूरि ॥
इन मन मेरा ऐसैं रे भाई, दादू कहिवा कहण न जाई ॥

× × ×

तू राषै त्यूंहीं रहै, तेई जन तेरा ।
तुम्ह बिन और न जानही, सो सेवग नेरा ॥
अंबर आपैही धरया, अजहूँ उपगारी ।
धरती धारी आपथैं, सबहीं सुषकारी ॥
वचन पासि सबके चलै, जैसैं तुम कीन्हा ।
पानी परगट देषिहूँ, सब सौं रहै भीना ॥
चंद चिराकी चहु दिसा सब सीतल जानैं ।
सूरज भी सेवा करैं, जैसैं भल मानैं ॥
ये निज सेवग तेरड़े, सब आग्या कारी ।
मोकौं ऐसैं कीजिये, दादू बलिहारी ॥

× × ×

घीव दूध में रमि रह्या व्यापक सब ही ठौर ।
दादू बकता बहुत हैं मथि काढ़ैं ते और ॥
दादू दीया है भला दिया करो सब कोय ।
घर में धरा न पाइये जो कर दिया न होय ॥
यह मसीत यह देहरा सतगुरु दिया दिखाइ ।
भीतरि सेवा बंदगी बाहिर काहे जाइ ॥
कहि कहि मेरी जीभ रहि सुणि सुणि तेरे कान ।
सतगुरु बपुरा क्या करै जो चेला मूढ़ अजान ॥
सुख का साथी जगत सब दुख का नाहीं कोइ ।
दुख का साथी साइयाँ दादू सतगुरु होइ ॥
दादू देख दयाल कौ सकल रहा भरपूर ।
रोम रोम में रमि रह्यो तू जिनि जानै दूर ॥

मिसरी मांहैं मेल करि माल बिकाना वंस ।
यों दादू महिंगा भया पारब्रह्म मिलि हंस ॥
केते पारिख पचि मुये कीमति कही न जाइ ।
दादू सब हैरान हैं गूँगे का गुड़ खाइ ॥
जब मन लागै राम सों तब अनत काहे को जाइ ।
दादू पाणी लूण ज्यों ऐसै रहै समाइ ॥
क्या मुँह ले हंसि बोलिये दादू दीजै रोइ ।
जनम अमोलक आपणा चले अकारथ खोइ ॥
एक देस हम देखिया जहँ सत नहि पलटै कोइ ।
हम दादू उस देस के जहँ सदा एक रस होइ ॥
सुरग नरक संसय नहीं जिवण मरण भय नाहिं ।
राम बिमुख जे दिन गये सो सालैं मन मांहिं ॥
मैं ही मेरे पोट सर मरिये ताके भार ।
दादू गुरु परसाद सों सिर थैं धरी उतार ॥
दादू मारग कठिन है जीवत चलै न कोइ ।
सोई चलि है बापुरा जे जीवत मिरतक होइ ॥
काया कठिन कमान है खींचै विरला कोइ ।
मारे पाँचौ मिरगला दादू सूरा सोइ ॥
जे सिर सौंप्या राम कौं सो सिर भया सनाथ ।
दादू दे ऊरण भया जिसका तिसके हाथ ॥
कहताँ सुनताँ देखताँ लेताँ देताँ प्राण ।
दादू सो कतहूँ गया माटी धरी मसाण ॥
जिहिं घर निंदा साधु की सो घर गये समूल ।
तिन की नीव न पाइये नाँव न ठाँव न धूल ॥
दादू सतगुर अंजन वाहि करि, नैन पटल सब षोले ।
बहरे कानौं सुणने लागे, गूंगे मुख सौ बोले ॥
सतगुर कीया फेरि करि, मन का औरै रूप ।
दादू पंचौ पलटि करि, कैसे भये अनूप ॥
आत्मवोध बंझ कर बेटा, गुर मुषि उपजै आइ ।
दादू पंगुल पंच बिन, जहां राम तहां जाइ ॥
साचा समरथ गुर मिल्या, तिन तत दिया बताइ ।
दादू मोट महाबली, घटि घृत मथि करि षाइ ॥

दादू जिहि मत साधू धरै, सो मत लीया सोध।
मन लै मारग मूल गहि, यहु सतगुर का परमोध ॥

दादू नैन न देषै नैनकूं, अंतर भी कुछ नांहि।
सतगुर दर्पन करि दिया, अरस परम मिलि मांहि ॥

दादू पंचौं ये परमोधिले, इन हीकौं उपदेस।
यहु मन अपणा हाथि कर, तौ चेला सब देस ॥

दादू चम्बक देषि करि, लोहा लागै आइ।
यौं मन गुण इंद्री एक सौं, दादू लीजै लाइ ॥

मनका आसण जे जिव जाणै, तौ बैर टौर सब सूझै।
पंचौ आणि एक घरि राषै, तब अगम निगम सब बूझै ॥

कहै लषै सो मानवी, सैंन लषै सो साध।
मनकी लषै सु देवता, दादू अगम अगाध ॥

दादू नीका नांव है, हरि हिरदै न विसतारि।
मूरति मन मांहै बसै, सांसैं सांस संभारि ॥

दादू राम अगाध है, परिमित नांहीं पार।
अबरण बरण न जांणिये, दादू नांइ अधार ॥

सर्गुण निर्गुण ह्वै रहे, जैसा है तैसा लीन।
हरि सुमिरण ल्यौ लाइये, का जाणौं का कीन ॥

नांव सपीड़ा लीजिये, प्रेम भगति गुण गाइ।
दादू सुमिरण प्रीतसौं, हेत सहित ल्यौ लाइ ॥

दादू रामनाम सबको कहै, कहिबे बहुत बमेक।
एक अनेकौं फिरि मिले, एक समाना एक ॥

सुमिरण का संसा रह्या, पछितावा मन मांहि।
दादू मीठा राम रस, सगला पाया नांहि ॥

अगनि घोम ज्यौं नीकलै, देषत सबै बिलाइ।
त्यों मन बिछुड़्या रामसौं, दहदिसि बीषरि जाइ ॥

जहां सुरति तहं जीव हैं, जहं नाहीं तह नाहिं।
गुण निर्गुण जहं राषिये, दादू घर बन माहिं ॥

दादु आपा उरझै उरझिया, दीसै सब संसार।
आया सुरझै सुरझिया, यहु गुरज्ञान विचार ॥

जब समझ्या तब सुरझिया, उलटि समाना सोइ।
कछू कहावै जब लगै, तब लग समझि न होइ ॥

जे मति पीछै ऊपजै, सो मति पहिली होइ।
कबहुँ न होवै जी दुषी, दादू सुषिया सोइ॥

दादू गऊ बच्छ का ज्ञान गहि, दूध रहै ल्यौ लाइ।
सींग पूँछ पग परहरै, अस्थन लागा धाइ॥

दादू एक घोड़ै चढ़िचलै, दूजा कोतिल होइ।
दुहु घोड़ौं चढ़ि वैसना, पारि न पहुँचा कोइ॥

श्रवना राते नाद सौं, नैना राते रूप।
जिभ्या राती स्वाद सौं, त्यौं दादू एक अनूप॥

दादू इसक अल्लाह का, जे कबहूँ प्रगटै आइ।
तौ तन मन दिल अरवाह का, सब पड़दा जलि जाइ॥

साहिब सौं कुछ बल नहीं, जिनि हठ साधै कोइ।
दादू पीड़ पुकारिये, रोता होइ सो होइ॥

पहिली आगम विरह का, पीछैं प्रीति प्रकास।
प्रेम मगन लैलीन मन, तहां मिलन की आस॥

मनही मांहै झूरणां, रोवै मन ही माहि।
मन ही मांहै धाह दे, दादू बाहरि नाहि॥

दादू बिरह जगावै दरद कौं, दरद जगावै जीव।
जीव जगावै सुरति जौं, पंच पुकारै पीव॥

प्रीति जु मेरे पीव की, पैठी पिंजर माहिं।
रोम रोम पिव पिव करै, दादू दूसर नाहिं॥

बिरह अगनि मैं जलि गये, मन के विषै विकार।
तार्थैं पंगुल ह्वै रह्या, दादू दरि दीवार॥

जे हम छांड़े राम कौं, तौ राम न छाड़ै।
दादू अमली अमल थैं, मन क्यूं करि काढ़ै॥

राम विरहनी ह्वै रह्या, विरहिन ह्वै गई राम।
दादू बिरहा बापुरा, अैसै करि गया काम॥

दादू इसक अलह की जाति है, इसक अलह का अंग।
इसक अलह औजूद है, इसक अलह का रंग॥

ज्ञान लहर जहां थैं उठै, वाणी का पाकास।
अनभै जहां थैं ऊपजै, सबदैं किया निवास॥

दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होइ।
जप यहु आपा मिटि गया, तब दूजा नाहीं कोइ॥

दादू हैं कौं भै घणां, नाहीं कौं कुछ नाहिं।
दादू नाही होइ रहु, अपणे साहिब माहिं ॥
सुन्य सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव।
दादू यहु रस बिलसिये, ऐसा अलष अभेव ॥
चर्म दृष्टि देषै बहुत, आतम दृष्टी एक।
ब्रह्म दृष्टि परचै भया, तब दादू बैठा देष ॥
येई नैना देह के, येई आतम होइ।
येई नैना ब्रह्म के, दादू पलटे दोइ ॥
दादू सबद अनाहद हम सुन्या, नषसिष सकल सरीर।
सब घटि हरि हरि होत है, सहजैं ही मन थीर ॥
जे कुछ बेद कुरान थैं, अगम अगोचर बात।
सो अनभै साचा कहै, यहु दादू अकह कहात ॥
प्राण हमारा पीव सौं, यौं लागा सहिये।
पुहप वास, घृत दूध मैं, अब कासौं कहिये ॥
दादू हरि रस पीवतां, कबहूँ अरुचि न होइ।
पीवत प्यासा नित नवा, पीवणहारा सोइ ॥
दादू लै लागी तब जाणिये, जे कबहूँ छूटि न जाइ।
जीवत यौं लागी रहै, मूवां मंझि समाइ ॥
सब तजि गुण आकार के, निहचल मन ल्यौ लाइ।
आतम चेतन प्रेम रस, दादू रहै समाइ ॥
यौं मन तजै सरीर कौं, ज्यौं जागत सो जाइ।
दादू बिसरै देषतां, सहजि सदा ल्यौ लाइ ॥
आदि अन्ति मधि एक रस, टूटै नहिं धागा।
दादू एकै रहि गया, तब जाणी जागा ॥
भगति भगति सब को कहै, भगति न जाणै कोइ।
दादू भक्ति भगवंत की, देह निरंतर होइ ॥
लै विचार लागा रहै, दादू जरता जाइ।
कबहूँ पेट न आफरै भावै तेता षाइ ॥
सोई सेवग सब जरै, जेता रस पीया।
दादू गूझ गंभीर का, परकास न कीया ॥
प्रेम पियाला राम रस, हमकौं भावै येह।
रिधि सिधि मांगै मुकति फल, चाहैं तिनकौं देह ॥

तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा पिंड परान।
सब कुछ तेरा तूं है मेरा, यहु दादू का ज्ञान ॥
दादू निराकार मन सुरति सौं, प्रेम प्रीति सौं सेव।
जे पूजै आकार कौं, तौ साधू प्रतषि देव ॥
दादू फिरता चाक कुम्भार का, यूं दीसै संसार।
साधू जन निहचल भये, जिनके राम अधार ॥
विष का अमृत करि लिया, पावक का पाणी।
बांका सूधा करि लिया, सो साध विनाणी ॥
दादू करणी हिंदू तुरक की, अपणी अपणी ठौर।
दुहुँ बिच मारग साध का, यहु संतौं की रह और ॥
काचा उछलै ऊफणै, काया हांडी माहिं।
दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नाहिं ॥
मनसा के पकबान सौं, क्यौं पेट भरावै।
ज्यौं कहिये त्यौं कीजिये, तबही बनि आवै ॥
दादू तौ तूं पावै पीव कौ, आपा कछू न जान।
आपा जिसथैं ऊपजै, सोई सहज पिछान ॥
दादू सीष्यूं प्रेम न पाइये, सीष्यूं प्रीति न होइ।
सीष्यूं दर्द न ऊपजै, जब लग आप न षोइ ॥
जहां राम तहं मैं नहीं, मैं तहं नाहीं राम।
दादू महल बारीक है, द्वै कूं नाहीं ठाम ॥
दादू सबहीं गुर किये, पसु पंषी बनराइ।
तीनि लोक गुण पंचसौं, सब हीं माहिं षुदाइ ॥
दादू देषौं जिन पीवकौं, और न देषौं कोइ।
पूरा देषौं पीव कौं, बाहरि भीतरि सोइ ॥
तन मन नाहीं मैं नहीं, नहिं माया नहिं जीव।
दादू एकै देषिये, दहदिसि मेरा पीव ॥
दह दिसि दीपक तेज के, बिन बाती बिन तेल।
चहुँ दिसि सूरज देषिये, दादू अदभुत षेल ॥
बाजी चिहर रचाइ करि, रह्या अपरछन होइ।
माया पट पड़दा दिया, तातैं लषै न कोइ ॥
जब पूरण ब्रह्म विचारिये, तब सकल आतमा एक।
काया के गुण देखिये, तौ नाना बरण अनेक ॥'

अन्धे कौ दीपक दिया, तौ भी तिमर न जाइ ।
सोधो नहीं सरीर की, तासनि का समझाइ ।।

दादू चौरासी लष जीवकी, परकीरति घट माहिं ।
अनेक जन्म दिन के करै, कोई जाणै नाहिं ।।

जीव जन्म जाणैं नहीं, पलक पलक मैं होइ ।
चौरासी लष भोगवै, दादू लषै न कोइ ।।

आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै विकार ।
निर्बैरी सब जीव सौं, दादू यहु मत सार ।।

माया बिषै विकार थैं, मेरा मन भागै ।
सोई कीजै सांइयां, तूं मीठा लागै ।।

जे साहिबा कूं भावै नहीं, सो हमथैं जिनि होइ ।
सतगुर लाजै आपणा, साध बन मानै कोइ ।।

नन्ददास

बन्दन करौं कृपानिधान श्रीसुक सुभकारी ।
सुद्ध ज्योतिमय रूप सदा सुन्दर अविकारी ।।

हरि लीला रस मत्त मुदित नित विचरत जगमें ।
अद्भुत गति कतहूँ न अटक ह्वै निकसत मगमें ।।

नीलोत्पलदल श्याम अंग नव जोवन भ्राजै ।
कुटिल अलक मुखकमल मनो अलि अवलि विराजै ।।

ललित बिसाल सुभाल दिपति जनु निकर निसाचर ।
कृष्ण भगति प्रतिबन्ध तिमिर कहँ कोटि दिवाकर ।।

कृपा रङ्ग रस ऐन नैन राजत रतनारे ।
कृष्ण रसासव पान अलस कछु घूम घुमारे ।।

श्रवन कृष्ण रसभवन गण्ड मण्डल भल दरसै ।
प्रेमानन्द मिलिन्द मन्द मुसुकनि मधु बरसै ।।

उन्नत नासा अधर बिम्ब शुक की छबि छीनी ।
तिन मह अद्भुत भांति जु कछुक लसित मसि भीनी ।।

कम्बुकण्ठ की रेख देखि हरि धरमु प्रकासै ।
काम क्रोध मद लोभ मोह जिहि निरखत नासै ।।

उरवर पर अति छबि की भीर कछु बरनि न जाई ।
जिहि भीतर जगमगत निरन्तर कुँअर कन्हाई ॥
सुन्दर उदर उदार रोमावलि राजति भारी ।
हियो सरोवर रस भरि चली मनो उमगि पनारी ॥
जिहि रस की कुण्डिका नाभि अस शोभित गहरी ।
त्रिवली तामहँ ललित भांति मनु उपजत लहरी ॥
अति सुदेस कटि देस सिंह सोभित सघनन अस ।
जोवन मद आकरसत बरसत प्रेम सुधारस ॥
गूढ़ जानु अजानु-बाहु मद-गज-गति-लोलैं ।
गङ्गादिकन पवित्र करत अवनी पर डोलैं ॥
जब दिन मनि श्रीकृष्ण दृगन तें दूरि भये दुरि ।
पसरि परयो अँधियार सकल संसार घुमड़ि घिरि ॥
तिमिर ग्रसित सब लोक-ओक लखि दुखित दयाकर ।
प्रकट कियो अद्भुत प्रभाव भागवत विभाकर ॥
श्रीवृन्दाबन चिद्‌घन कछु छबि बरनि न जाई ।
कृष्ण ललित लीला के काज गहि रह्यो जड़ताई ॥
जहँ नग खग मृग लता कुञ्ज वीरुध तृन जेते ।
नहिं न काल गुन प्रभा सदा सोभित रहैं तेते ॥
सकल जन्तु अविरुद्ध जहाँ हरि मृग सँग चरहीं ।
काम क्रोध मद लोभ रहित लीला अनुसरहीं ॥
सब दिन रहत बसन्त कृष्ण अवलोकनि लोभा ।
त्रिभुवन कानन जा बिभूति करि सोभित सोभा ॥
ज्यों लक्ष्मी निज रूप अनूपम पद सेवति नित ।
भू बिलसत जु बिभूति जगत जगमग रही जित कित ॥
श्री अनन्त महिमा अनन्त को बरनि सकै कवि ।
सङ्करषन सो कछुक कही श्रीमुख जाकी छवि ॥
देवन में श्री रमारमन नारायन प्रभु जस ।
बन में बृन्दावन सुदेस सब दिन सोभित अस ॥
या बन की बर बानिक या बनही बन आवै ।
सेस महेस सुरेस गनेस न पारहिं पावै ॥
जहँ जेतिक द्रुमजात कल्पतरु सम सब लायक ।
चिन्तामणि सम सकल भूमि चिन्तित फल दायक ॥

तिन महँ इक जु कल्पतरु लगि रही जगमग ज्योती ।
पात मूल फल फूल सकल हीरा मनि मोती ॥
तहँ मुतियन के गन्ध लुब्ध अस गान करत अलि ।
बर किन्नर गन्धर्व अपच्छर तिन पर गइ बलि ॥
अमृत फुही सुख गुही अति सुही परत रहत नित ।
रास रसिक सुन्दर पियको स्रम दूर करन हित ॥
ता सुरतरु महँ और एक अद्भुत छबि छाजै ।
साखा दल फल फूलनि हरि प्रतिबिम्ब बिराजै ॥
ता तरु कोमल कनक भूमि मनिमय मोहत मन ।
दिखियतु सब प्रतिबिम्ब मनौ धर महँ दूसर बन ॥
जमुनाजू अति प्रेम भरी नित बहत सुगहरी ।
मनि मण्डित महिमाँह दौरि जनु परसत लहरी ॥
तहँ इक मनिमय अंक चित्र को सङ्ग सुभग अति ।
तापर षोडश दल सरोज अद्भुत चक्राकृति ॥
मधि कमनीय करिनिका सब सुख सुन्दर कन्दर ।
तहँ राजत बृजराज कुँअर वर रसिक पुरन्दर ॥
निकर विभाकर दुति मेंटत सुभ मनि कौस्तुभ अस ।
सुन्दर नन्द कुँअर उर पर सोई लागति उडु जस ॥
मोहन अद्भुत रूप कहि न आवत छबि ताकी ।
अखिल खण्ड व्यापी जु ब्रह्म आभा है जाकी ॥
परमातम परब्रह्म सबनके अन्तरजामी ।
नारायन भगवान धरम करि सबके स्वामी ॥
बाल कुमर पौगण्ड धरम आक्रान्त ललित तन ।
धरमी नित्य किसोर कान्ह मोहत सबको मन ॥
अस अद्भुत गोपाल लाल सब काल बसत जहँ ।
याही ते बैकुण्ठ विभव कुण्ठित लागत तहँ ॥

× × ×

हे सखि, हे मृग-बधू इन्हें किन पूछहु अनुसारि ।
डहडहे इनके नयन अवहिं कहुँ देखे हैं हरि ॥
अहो सुभग बन गन्धि, पवनि सँग थिर जुरही चल ।
सुख के भवन दुख गमन रमन इतते चितये बलि ॥

हे चम्पक, हे कुसुम, तुम्हैं छबि सबतें न्यारी ।
नैकु बताय जु देउ, जहाँ हरि कुंज बिहारी ।।
हे कदम, हे निम्ब, अम्ब क्यों रहे मौन गहि ?
हे बट उतँग सुरँग वीर कहुँ तुम इतउत लहिं ?
हे असोक, हरि सोक लोक मनि पियहिं बतावहु ।
अहो पनस, सुभ सरस मरत तिय अमिय पियावहु ।।

× × ×

नूपुर, कंकन, किंकिन, करतल, मंजुल मुरली ।
ताल मृदंग उपंग चंग एकै सुर जु-रली ।।
मृदुल मधुर टंकार ताल, झंकार मिली धुनि ।
मधुर जंत्र के तार भँवर-गुंजर रली पुनि ।।
तैसिय मृदु पटकनि, चटकनि करतारनि की ।
लटकनि, मटकनि, झलकनि कल कुंडल हारन की ।।
सांवल पिय के संग नृतति यों वृज की वाला ।
जनु घन मंडल मंजुल खेलति दामिनि माला ।।
छबिलि तियन के पाछे आछे बिलुलत बेनी ।
चंचल रूप-लतानि-संग डोलति अलि सोनी ।।
मोहन पिय की मुसकनि, ढलकनि मोर-मुकुट की ।
सदा बसौ मन मेरे फरकन पियरे पट की ।।

× × ×

जो उनके गुन होय वेद क्यों नेति बखानै ।
निरगुन सगुन आत्म रचि ऊपर सुख ठानै ।।
वेद-पुराननि खोजि कै, पायो कितहुँ न एक ।
गुनही के गुन होहिं ते, कहौ अकासहि टेक ।।
सुनो वृज नागरी ।

जौ उनके गुन नाहिं, और गुन पाये कहाँ ते ।
बीज बिना तरु जमैं मोहि तुम कहौ कहाँ ते ।।
वा गुन की परछांह री माया दरपन बीच ।
गुन ते गुन न्यारे भये, अमल वारि मिलि कीच ।।
सखा सुन स्याम के ।

प्रेम जु कोऊ वस्तु रूप देखत लौ लागै ।
वस्तु दृष्टि बिन कहाँ कहा प्रेमी अनुरागै ।।

तरनि चन्द्र के रूप को, गुन गहि पायो जान ।
तौ उनको कहि जानिए, गुनातीत भगवान ।।
सुनो बृज नागरी ।

तरनि अकास प्रकास तेजमय रह्यो दुराई ।
दिव्य दृष्टि बिनु कहौ, कौन पै देख्यो जाई ।।
जिनकी वे आँखें नहीं, देखै कब वह रूप ।
तिन्है साँच क्यों उपजै, परे कर्म के कूप ।।
सखा सुन स्याम के ।

जो गुन आवै दृष्टि माँझ नहि ईस्वर सारे ।
इन सबहिनते वासुदेव, अच्युत हैं न्यारे ।।
इन्द्री दृष्टि-विकार ते, रहत अधोक्षज जोति ।
सुद्ध सरूपी जान जिय, तृप्ति जु ताते होति ।।
सुनो बृज नागरी ।

नास्तिक जे हैं लोग कहा जानै हित रूपै ।
प्रगट भानु को छांड़ि गहैं परछाहीं धूपै ।।
हम को बिन वा रूप के, और न कछु सुहाय ।
ज्यो करतल आभास के कोदिक ब्रह्म दिखाय ।।
सखा सुन स्याम के ।

पुनि पुनि कहै जु जाय चलौ वृन्दाबन रहिए ।
प्रेम प्रसंग कौ प्रेम जाय गोपिन संग लहिए ।।
और काम सब छांड़िकै, उन लोगन सुख देहु ।
नातरु टूट्यो जात है, अबही नेह-सनेहु ।।
करौगे तौ कहा ।

ऊधव को उपदेश सुनो ब्रजनागरी ।
रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी ।।
प्रेम धुना रस रूपिनी उपजावन सुख पुंज ।
सुन्दर स्याम बिलासिनी नव वृन्दाबन कुंज ।।
सुनो ब्रजनागरी ।

कहन स्याम सन्देस एक मैं तुम पै आयो ।
कहन समै संकेत कहूँ अवसर नहिं पायो ॥
सोचत ही मन मैं रह्यो कब पाऊँ इक ठाउँ ॥
कहि सन्देस नँदलाल को बहुरि मधुपुरी जाउँ ॥
सुनो ब्रजनागरी ।

सुनत स्याम को नाम ग्राम गृह की सुधि भूली ।
भरि आनँद रस हृदय प्रेम बेली द्रुम फूली ॥
पुलकि रोम सब अँग भये भरि आये जल नैन ।
कण्ठ घुटे गदगद गिरा बोले जात न बैन ॥
व्यवस्था प्रेम की ।

सुनत सखा के बैन नैन भरि आये दोऊ ।
विवस प्रेम आवेस रही नाही सुधि कोऊ ॥
रोम-रोम प्रति गोपिका, ह्वै रही साँवरे गात ।
कल्पतरोरुह साँवरो, ब्रजवनिता भई पात ॥
उलहि अँग अंग तें ।

कृष्णदास

बाल दसा गोपाल की सब काहू प्यारी ।
लै लै गोद खिलावहीं जसुमति महतारी ॥
पति अङ्गुलि तन सोहही, सिर कुलहि बिराजै ।
छुद्र घंटिका कटि बनी पाय नूपुर बाजै ॥
मुरि मुरि नाचै मोर ज्यों, सुर-नर-मुनि मोहै ।
कृष्णदास प्रभु नन्द के आँगन में सोहै ॥

× × ×

रास रस गोविन्द करत विहार ।
सूर-सुता के पुलिन रम्य महँ, फूले कुन्द मँदार ॥
अदभुत सतदल विगसित कोमल, मुकुलित कुमुद कल्हार ।
मलय-पवन बह सारदि पूरन चन्द मधुप झंकार ॥
सुघरराय संगीत-कला निधि-मोहन नन्द-कुमार ।
ब्रजभामिनि-सँग प्रमुदित नाचत, तन परचित घनसार ॥

× × ×

गोपालै देखन किन आई री।
आजु बने गोबिन्द मानिनी, तोकों लैन पठाई री।।
तरनि-तनया-पुलिन विमल, सरद निसि जुन्हाई री।
राका पति कर रंजित द्रुमलता भूमि सुहाई री।।
गोर्बधन धरन लाल गान सों बुलाई री।
कृष्णदास प्रभु को मिलन जुवतिनि सुखदाई री।।

× × ×

आजु पिय सों तू मिली री, मानो।
स्रम-जलकन भरि बदन की शोभा नभसि उडुराज खिसानो।।
त्रिभुवन जुवतिन कौ सुख सरबसु, जानति हौं तुव माँझ समानो।
कृष्णदास प्रभु रसिक-मुकुट-मनि, सुबस कियो गोबर्धन रानो।।

× × ×

मो मन गिरधर छबि पै अटक्यौ।
ललित त्रिभंगि चाल पै चलिकै, चिबुक चारु गढ़ि टटक्यौ।।
सजल श्याम घन-बरन लीन है, फिर चित अनत न भटक्यौ।
कृष्णदास किये प्रान निछावर, यह तन जग सिर पटक्यौ।।

× × ×

इहि मन कैसे कै रहैं राख्यो।
जिहि मधुकर ह्वै गिरधर पिय कौ बदन कमल रस चाख्यो।।
जु कछुक मैं मानी बरबस ह्वै ताही कौ सौ साख्यो।
बार बार बहुबिधि समझायो ऊचो नीचो भाख्यो।।
केहु न मानत महा हठीलौ कही तुम्हारी आख्यो।
कृष्णदास कहँ लौ हौ बरनौं, रूप मधुर मधु चाख्यो।।

× × ×

तरनि तनया तट आवत प्रात समय।
कंदुक खेलत देख्यो आनँद को कँदवा।।
नूपुर पद कुनित पीताम्बर कटि बांधे।
लाल उपसा सिर मोरन के चँदवा।।

× × ×

कंचन मनि मरकत रस ओपी।
नंद सुवन के संगम सुख कर अधिक बिराजति गोपी।।
मनहु विधाता गिरिधर पिय-हित सुरत धुजा सुख रोपी।
बदन कांति कै सुनु री भामिनी! सघन चंद श्री लोपी।।

प्राननाथ के चित चोरन को भौंह भुजंगम कोपी।
कृष्णदास स्वामी बस कीन्हें, प्रेम पुन्ज की चोपी॥

परमानन्ददास

राधे जू हारावलि टूटी।
उरज कमल दल माल मरगजी, बाम कपोल झलक लट छूटी॥
वर उर उरज करज बिन अंकित, बाहु जुगल बलयावलि फूटी।
कंचुकि चीर विविध रंग रंजित गिरधर अधर माधुरी घूँटी॥
आलस-वलित नैन अनियारे, अरुन उनींदे रजनी खूटी।
परमानंद प्रभु सुरति समय रस मदन नृपति की सेना लूटी॥

× × ×

कहा करौं बैकुंठहि जाय!
जहँ नहिं नँद जहाँ न जसोदा, नहिं जहँ गोपी ग्वाल न गाय॥
जहँ नहिं जल जमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाय।
परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी, ब्रज रज तजि मेरो जाय बलाय॥

× × ×

ब्रज के बिरही लोग बिचारे।
बिनु गोपाल ठगे से ठाढ़े, अति दुर्बल तन हारे॥
मात जसोदा पंथ निहारत, निरखत साँझ सकारे।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत आंखिन बहत पनारे॥
यह मथुरा काजर की रेखा, जे निकसे ते कारे।
परमानन्द स्वामी बिनु ऐसे, ज्यों चन्दा बिनु तारे॥

× × ×

कौन रसिक है इन बातन को।
नँद नँदन बिनु कासो कहिये, सुनि री सखी, मेरे दुखिया मन को॥
कहाँ वे जमुना पुलिन मनोहर, कहाँ वह चंद सरद रातन कौ।
कहाँ वे मंद सुगन्ध गमल रस, कहाँ षटपद जल जातन कौ॥
कहाँ वो सेज पौढ़ियो बन को फूल बिछौना मृदु पातन कौ।
कहाँ वे दरस-परस परमानन्द कोमल तन कोमल गातन कौ॥

× × ×

माई री, कमल नैन स्याम सुन्दर झूलत हैं पलना।
बाल-लीला गावति, सब गोकुल की ललना॥

अरुन तरुन कमल नख-मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत लटकत गज-मोती ॥
अँगुठा गहि कमलापति मेलत मुख माही।
अपनी प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसकाहीं ॥
जसुमति के पुन्य पुंज बार बार लाले।
परमानन्द प्रभु गोपाल सुत - सनेह पाले ॥

× × ×

गावति गोपी मधु ब्रज बानी।
जाके भवन बसत त्रिभुवन पति, राजा नन्द जसोदा रानी ॥
गावत वेद, भारती गावति, गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गंधर्व काल शिव, गोकुल नाथ महातम जानी ॥
गावत चतुरानन सुर-नायक, गावत शेष सहस मुखरास।
मन क्रम बचन प्रीति द-अम्बुज गावत परमानन्द दास ॥

× × ×

जसोदा तेरो भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ, सो प्रगटे हैं आय ॥
सिव नारद सुक सनकादिक मुनि मिलिबे को करत उपाय।
ते नँदलाल धूर धूसरित बपु रहत गोद लपटाय ॥
रहत जड़ित पौढ़ाय पालने बदन देखि मुसकाय।
झलौं लाल जाऊँ बलिहारी, परमानन्द जसु गाय ॥

× × ×

आये मेरे नँद नँदन के प्यारे।
माला तिलक मनोहर बानी त्रिभुवन के उँजियारे ॥
प्रेम समेत बसत मन मोहन, नैकहुँ टरत न टारे।
हृदय कमल के मध्य विराजत, श्री ब्रजराज दुलारे ॥
कहा जानौं कौन पुन्य प्रगट भयो, मेरे घर जो पधारे।
परमानन्द प्रभु करी निछावरि, बार बार हौ वारे ॥

× × ×

जिय की साधन जिय ही रही री।
बहुरि गोपाल देख नहीं पाये बिलपत कुंज अहीरी ॥
एक दिन सोंज समीप यह मारग बेचन जात दही री।
प्रीत के लिए दान मिस मोहन मेरी बाँह गही री ॥

बिन देखे घड़ी जात कलप सम बिरहा अनल दही री ।
परमानन्द स्वामी बिन दर्शन नैन न नींद बही री ।।

× × ×

वह बात कमल दल नैन की ।
बार बार सुधि आवत रजनी बहु दुरि देनी सेनी सेन की ।।
वह लीला वह रास सरद को जो रज रजनी आवनि ।
अरु वह ऊँची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ।।
बसन कुंज में रास खिलाया बिथा गमाई मन की ।
परमानन्द प्रभू सो क्यों जीवे जो पोखी मृदु वन की ।।

कुंभनदास

तुम नीके दुहि जानत गैया ।
चलिए कुँअर रसिक मन मोहन लगौं तिहारे पैया ।।
तुमहि जानि करि कनक दोहनी घर ते पठई मैया ।
निकटहि है यह खरिक हमारो, नागर लेहु बलैया ।।
देखियत परम सुदेस लरिकई चितू पहुँच्यो सुन्दरैया ।
कुंभनदास प्रभु मानि लई रति गिरि गोर्बधन रैया ।।

× × ×

देखिहौं इन नैननि ।
सुन्दर स्याम मनोहर मूरति, अङ्ग अङ्ग सुख दैननि ।।
वृन्दाबन बिहार दिन दिनप्रति गोप बृन्द सँग लैननि ।
हंसि हंसि हरषि पतौवनि पावन बांटि बांटि पय फैननि ।।
कुंभनदास किते दिन बीते, किये रेनु सुख सैननि ।
अब गिरधर बिनु निसि अरु बासर, मन न रहत क्यों चैननि ।।

× × ×

केते दिन जु गये बिनु देखैं ।
तरुन किसोर रसिक नँद नंदन, कछुक उठत मुख रेखैं ।।
वह सोभा वह कान्ति बदन की, कोटिक चंद विसेखैं ।
वह चितवन वह हास मनोहर, वह नटवर बपु भेखैं ।।
स्याम सुन्दर सँग मिलि खेलन की, आवति हिये अपेखैं ।
कुंभनदास लाल गिरधर बिनु जीवन जनम अलेखैं ।।

× × ×

धर्म जाव अरु लोग हँसो सब अरु गावौ कुल नारी ।
सो क्यों रहे ताहिं बिन देखे जो जाको हितकारी ॥
रस लुब्धक निमख न छाँड़त ज्यों अधीन मृग गानो ।
कुंभनदास सनेह परम श्री गोबर्धन धर जानो ॥

चतुर्भुजदास

जसोदा कहा कहौं हौं बात ?
तुम्हरे सुत के करतब मो पै कहत कहे नहिं जात ॥
भाजन फोरि, ढारि सब गोरस, लै माखन दधि खात ।
जौं बरजौं तौ आंखि दिखावै, रंचहुँ नाहिं सकात ॥
और अटपटी कहँ लौ बरनौं, छुवत पानि सों गात ।
दास चतुर्भुत गिरधर गुन हौं, कहति कहति सकुचात ॥

× × ×

सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावे ।
आपुन नेक निहारिये बलि जाऊँ आज छबि कछु कहत न आवे ॥

छीत स्वामी

भोर भये नव कुंज सदन ते आवत लाल गोर्बधन धारी ।
लट पर पाग अरगजी माला, सिथिल अङ्ग डगमग गति न्यारी ॥
बिनु गुन माल विराजति उर पर नख छत द्वैज चंद अनुहारी ।
छीत स्वामि जब जितये मो तन तब हौं निरखि गयी बलिहारी ॥

× × ×

भई अब गिरधर सों पहिचान ।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहिं जान ॥
छोटो बड़ो कछू नहिं जान्यो छाय रह्यो अज्ञान ।
छीत स्वामी देखत अपनायौ श्री विट्ठल कृपा निधान ॥

× × ×

प्रिय नवनीत पालने झूले श्री विट्ठल नाथ झुलावै हो ।
कबहुँक आप संग मिल झूलै कबहुँक उतरि झुलावै हो ॥

कबहुँक सुरँग खिलौना लै लै नाना भांति खिलावै हो।
चकई फिरकनी ले बिगीटु झुण झुण हात बजावे हो॥
भोजन करत थाल एक झारी दोऊ मिलि खाय खवावे हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावे हो॥
धनि धनि भाग दास निज जिनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्री विट्ठल निगम एक पाए हो॥

गोविन्द स्वामी

प्रात समय उठि जसुमति जननी गिरधर सुत को उबटि न्हवावति।
करि सिंगार बसन भूषन सजि फूलन रचि रचि पाग बनावति॥
छुटे बंद बागे अति सोभित बिच बिच चोव अरगजा लावति।
सूथन लाल फूँदना सोभित, आजु की छबि कछु कहत न आवति॥
विविध कुसुम की माला उर धरि श्री कर मुरली बेंत गहावति।
लै दरपन देखे श्रीमुख को, गोविन्द प्रभु चरनन सिर नावति॥

हितहरिवंश

आजु नीकी बनी राधिका नागरी।
ब्रज जुवति जूथ में रूप अरु चतुराई।
सील, सिंगार-गुन सबनि ते आगरी।
कमल दच्छिन भुजा बाम भुजा अंसु सखि।
गावती सरस मिलि मधुर सुर रागरी।
सकल विद्या विहित रहसि हरिवंसहित।
मिलत नव कुन्ज बर स्याम बड़ भागरी॥

× × ×

मधुरितु बृन्दाबन, आनंद न थोर।
राजति नागरी नव कुसल किसोर॥
जूथिका जुगल रूप मंजरी रसाल।
विथ कित अलि मधु माधवी गुलाल॥
चंपक बकुल कुल बिबिध सरोज।
केतकी मेदिनी मद मुदित मनोज॥
रोचक रुचिर वहै त्रिबिध समीर।
मुकुलित नूत नदित पिक कीर॥

पावन पुलिन घन मंजुल निकुन्ज ।
किसलय सैन रचित सुख पुन्ज ॥
मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग ।
बाजत उपंग बीना बर मुख चंग ॥
मृग-मद मलयज कुंकुम अबीर ।
बदन अगर-सत सुरभित चीर ॥
गावत सुन्दर हरि सरस धमारि ।
पुलकित खग-मृग बहत न बारि ॥
(जयश्री) हितहरिवंश हंस हंसिनी समाज ।
ऐसेई करहु मिलि जुग जुग राज ॥

× × ×

सरद बिमल, नभ चन्द बिराजै ।
मधुर मधुर मुरली कल बाजै ॥
अति राजत घन स्याम-तमाला ।
कंचन बेलि बनी व्रज बाला ॥
भूषन बहत, विविध रंग सारी ।
अंग सुगन्ध दिखावति नारी ॥
बरसत कुसुम मुदित सुर-जोषा ।
सुनियतु दिवि दुन्दुभि कल घोषा ॥
(जयश्री) हितहरिवंश मगन मन स्यामा ।
राधा - रमन सकल सुख धामा ॥

× × ×

प्रीति न काहू कि कानि बिचारै ।
मारग अप बिथकित मन, को अनुसरत निवारै ॥
ज्यौं पावस सरिता जल उमगत, सनमुख सिन्धु सिधारै ।
ज्यौं नादहि मन दिये कुरंगनि, प्रगट पारथी मारै ॥
(जयश्री) हितहरिवंश लग सारँग, ज्यौं सलभ सरीरहिं जारै ।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु, कौन अपनपौ हारै ॥

× × ×

देखौ भाई, सुन्दरता की सीवाँ ।
बृज-नव-तरुनि-कदम्ब नागरी निरखि करति अध ग्रीवाँ ॥
जो कोउ कोटि कलप लगि जीवै रसना कोटिक पावै ।
तऊँ रुचिर बदनारबिन्द की सोभा कहहि न आवै ॥

देव लोक, भूवलोक रसातल सुनि कवि-कुल मन डरियै ।
सहज माधुरी अंग अंग की कहि कासों पटतरियै ॥
(जयश्री) हित हरिवंश प्रताप रूर गुन वय बल स्याम उजागर ।
जाकी भ्रू बिलास बस पसुरिव, दिन बिथकित रस सागर ॥

× × ×

चलति किन मानिनि कुञ्ज कुटीर ।
तो बिन कुँवर कोटि वनिता जुत मथत मदन की पीर ॥
गदगद सुर बिरहाकुल पुलकित श्रवत विलोचन नीर ।
क्वासि क्वासि वृषभान नंदिनी विलपत विपिन अधीर ॥
बंसी बिसिख ब्याल मालावलि पञ्चानन पिक कीर ।
मलयज गरल हुतासन मारुत साखामृग रिपु चीर ॥
हितहरिवंस परम कोमल चित सपदि चली पिय तीर ।
सुनि भय भीत वज्र को पिंजर सुरत सूर रनबीर ॥

× × ×

आजु बन नीको रास बनायो ।
पुलिन पवित्र सुभग यमुनातट मोहन बेनु बजायो ॥
कल कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि खग मृग सचुपायो ।
जुवतिनु मंडल मध्य श्यामघन सारँग राग जमायो ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रस सिंधु बढ़ायो ।
विविध विसद वृषभानु नंदिनी अंग सुढंग दिखायो ॥
अभिनय निपुन लटकि लटि लोचन भृकुटि अनंद नचायो ।
ताथेइ ताथेइ धरति नवलगति पति ब्रजराज रिझायो ॥
सकल उदार नृपति चूड़ामणि सुख बारिद बरसायो ।
परिरंभन चुंबन आलिंगन उचित जुवति जन पायो ॥
बरखत कुसुम मुदित नभ नायक इन्द्र निसान बजायो ।
हितहरिवंस रसिक राधापति जस बितान जग छायो ॥

मीरा बाई

पायो जी, मैंने नाम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु किरपा कर अपनायो ॥
जनम जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो ।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवे दिन दिन बढ़त सवायो ॥

सत की नाव खेवैया सतगुरु भवसागर तर आयो ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरख हरख जस गायो ।।

× × ×

करम गति टारे नाहिं टरे।
सतबादी हरिचँद से राजा नीच घर नीर भरे ।
पाँच पांडु अरु कुंती द्रौपदी हाड़ हिमालय गरे ।।
जज्ञ किया बलि लेण इंद्रासन सो पाताल धरे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर विष से अमृत करे ।।

× × ×

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ।।
भाई छोड्या बंधु छोड्या छोड्या सगा सोई ।
साधु संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ।।
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच विष वेल धोई ।।
दधिमथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ।।
अब तौ बात फैल पड़ी जाणे सब कोई ।
मीरा राम लगण लागी होणी होय सो होई ।।

× × ×

घड़ी एक नहिं आवड़े तुम दरसण बिन मोय ।
तुमहो मेरे प्राण जी कासूँ जीवण होय ।।
धान न भावै नींद न आवै विरह सतावे मोय ।
घायल सी घूमत फिरूँ रे मेरा दरद न जाणे कोय ।।
दिवस तो खाय गमायो रे रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरताँ रे नैण गमाई रोय ।।
जो मैं ऐसा जाणती रे प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढिढोरा फेरती रे प्रीत करो मत कोय ।।
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ ऊबी मारग जोय ।
मीरा के प्रभु कबरे मिलोगे तुम मिलियाँ सुख होय ।।

× × ×

हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी मेरा दरद न जाणे कोय ।।
सूली ऊपर सेज हमारी किस विध सोणा होय ।।

गगन मंडल पै सेज पिया की किस विध मिलणा होय ।।
घायल की गति घायल जानै की जिन लाई होय ।।
जौहरी की गति जौहरी जानै की जिन जौहर होय ।।
दरद की मारी बन बन डोलूँ वैद मिल्या नहिं कोय ।।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी जब वैद सँवलिया होय ।।

× × ×

बंसी वारो आयो म्हारे देस थाँरी साँवरी सुरत वालीबैस ।।
आऊँ आऊँ कर गया साँवरा कर गया कौल अनेक ।।
गिणते गिणते घिस गईं उँगली घिस गई उँगली की रेख ।।
मैं बैरागिणि आदि की थांरे म्हारे कद को सनेस ।।
बिन पाणी बिन साबुन साँवरा हुइ गई धुई सपेद ।।
जोगिण हुई जंगल सब हेरूँ तेरा नाम न पाया भेस ।।
तेरी सुरत के कारणे धर लिया भगवा भेस ।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै घूँघर वाला केस ।।
मीरा को प्रभु गिरिधर मिल गये दूना बढ़ा सनेस ।।

× × ×

राम मिलण रो घणो उमावो नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ ।
दरसण बिन मोहिं पल न सुहावै कल न पड़त हैं आँखड़ियाँ ।।
तलफ तलफ के बहु दिन बीते पड़ी बिरह की फाँसड़ियाँ ।
अब तो वेगि दया करि साहिब मैं हूँ तेरी दासड़ियाँ ।।
नैण दुखी दरसण को तिरसे नाभि न बैठे साँसड़ियाँ ।
रात दिवस यह आरत मेरे कब हरि राखे पासड़ियाँ ।।
लगी लगन छूटण की नाहीं अब क्यों कीजै आटड़ियाँ ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर पूरौ मन की आसड़ियाँ ।।

× × ×

मन रे परसि हरि के चरण ।।
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इंद्र पदवी धरण ।
जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी सरण ।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो, नखसिखाँ सिरी धरण ।
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गौतम घरण ।
जिण चरण कालीनाग नाथ्यो, गोपलीला करण ।

जिण चरण गोबरधन धारयो, इन्द्र को ग्रब हरण।
दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।

× × ×

हमरो प्रणाम बांके बिहारी को ।।
मोर मुकट माथे तिलक विराजै, कुंडल अलकाकारी को।
अधर मधुर पर बंशी बजावैं, रीझ रिझावै राधाप्यारी को।
यह छबि देख मगन भई मीराँ, मोहन गिरवरधारी को ।।

× × ×

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल।
मोहनी मूरति साँवरि सूरति नैना बने बिसाल।
अधर सुधा रस मुरली राजित उर बैजन्ती माल ।।
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित नूपुर सब्द रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भक्त बछल गोपाल ।।

× × ×

हरि मोरे जीवन प्रान अधार ।।
और आसिरो नाहीं तुम विनु, तीनूँ लोक मँझार।
आप बिना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यो सब संसार।
मीराँ कहै मैं दास रावरी, दीज्यौ मती बिसार ।।

× × ×

तनक हरि चितवौ जी मेरी ओर ।।
हम चितवत तुम चितवन नाहीं, दिल के बड़े कठोर।
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर।
तुमसे हमकूँ कबरे मिलोगे, हमसी लाख करोर।
ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूँ, अरज करत भयो भोर।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, देस्यूँ प्राण अकोर ।।

× × ×

मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सों ।।
मोर मुकुट पीताम्बर हो, गल बैजंती माल।
गउवन के सँग डोलत, हो जसुमति को लाल।
कालिंदी के तीर हो, कान्हा गउवाँ चराय।
सीतल कदम की छाहियाँ, हो मुरली बजाय।
जसुमति के दुवरवाँ हो, ग्वालिन सब जाय।
बरजहु आपन दुलरुवा, हमसों अरुझाय।

बृन्दाबन क्रीड़ा करै, गोपिन के साथ।
सुर नर मुनि मोहे हो, ठाकुर जदुनाथ।
इन्द्र कोप घन बरखो, मूसल जलधार।
बूड़त ब्रज को राखेऊ, मोरे प्रान अधार।
मीराँ के प्रभु गिरधर हो, सुनिये चितलाय।
तुम्हरे दरस की भूखी हो, मोहि कछु न सोहाय॥

× × ×

या मोहन के मैं रूप लुभानी॥
सुंदर बदन कमल दल लोचन, बाँकी चितवन मँद मुसकानी।
जमना के नीरे तीरे धेन चरावै, बंशी में गावै मीठी बानी।
तन मन धन गिरधर पर बारूँ, चरण कँवल मीराँ लपटानी॥

× × ×

जब से मोहिं नंदनँदन, दृष्टि पड्यो माई।
तब से परलोक लोक, कछू न सोहाई।
मोर की चंद्रकला, सीस मुकुट सोहै।
केसर को तिलक भाल, तीन लोक मोहै।
कुंडल की अलक झलक, कपोलन पर धाई।
मनो मीन सरबर तजि, मकर मिलन आई।
कुटिल भृकुटि तिलक भाल, चितवन मे टौना।
खंजन अरु मधुप मीन, भूले मृगछौना।
सुंदर अति नासिका, सुग्रीव तीन रेखा।
नटवर प्रभु भेष धरे, रूप अनि विसेषा।
अधर बिंब अरुन नैन, मधुर मंद हाँसी।
दसन दमक दाड़िम दुति, चमके चपलासी।
छुद्र घंट किंकिनी, अनूप धुनि सोहाई।
गिरधर के अंग अंग, मीराँ बलि जाई॥

× × ×

नैणा लोभी रे बहुरि सके नहिं आइ।
रूँम रूँम नखसिख सब निरखत, ललकि रहे ललचाइ।
मैं ठाढ़ी ग्रिह आपणेरी, मोहन निकसे आइ।
बदन चंद परकासत हेली, मंद मंद मुसकाइ।
लोक कुंटबी गरजि बरजहीं, बतियाँ कहत बनाइ।
चंचल निपट अटक नहिं मानत, परहथ गये बिकाइ।

भली कहौ कोइ बुरी कहौ मैं, सब लई सीसि चढ़ाइ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर के बिनि, पल भर रह्यो न जाइ॥

× × ×

आली रे मेरे नैणाँ बाण पड़ी॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी।
कब की ठाढ़ी पंथ निहरूँ, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण पिया बिनि राखूँ, जीवन मूर जड़ी।
मीराँ गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी॥

× × ×

नैनन बनज बसाऊँरी, जो मैं साहिब पाऊँ॥
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरनी पलक न नाऊँ, री।
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ, री।
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ, री।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ, री।

× × ×

असा पिया जाण न दीजै हो॥
तन मन धन करि वारणै, हिरदे धरि लीजै, हो।
आव सखी मिलि देखिये, नैणाँ रस पीजै, हो।
जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै हो।
सुंदर स्याय सुहावणा, मुख देख्याँ जीजै, हो।
मीराँ के प्रभु रामजी, बड़ भागण रीझै, हो॥

× × ×

श्री गिरधर आगे नाचूँगी॥
नाचि नाचि पिव रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन कूँ जाचूँगी।
प्रेमप्रीति की बांधि घूँघरू, सुरत की कछनी काछूँगी।
लोक लाज कुल की मरजादा, यामें एक न राखूँगी।
पिव के पलँगा जा पौढूँगी, मीराँ हरि रँग राचूँगी॥

× × ×

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकट, मेरे पति सोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिक बैठि बैठि, लोक लाज खोई।

असुवन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई, आणँद फल होई।
भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई।
दासी मीराँ लाल गिरधर, तारो अब मोही॥

× × ×

मैं तो साँवरे के रँग राची।
साजि सिगार बांधि पग घुँघरु, लोकलाज तजि नाची।
गई कुमति लई साधु की संगति, भगतरूप भई साँची।
गाय गाय हरि के गुन निसदिन, काल ब्याल सूँ बाँची।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीराँ श्री गिरधरलाल सूँ, भगति रसीली जाँची॥

× × ×

मैं तो गिरधर के घर जाऊँ।
गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ,
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि आऊँ।
रैणदिना बाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि रिझाउँ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिनि पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचै तो बिक जाऊँ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ।

× × ×

माई री मैं तो लीयो गोबिन्दो मोल।
कोई कहै छाने कोई कहै चौड़े, लियोरी बजंता ढोल।
कोई कहै मुँहघो कोई सुँहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियोरी अमोलिक मोल।
याही कूँ सब लोग जाणत है, लियोरी आँखी खोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, पूरब जनम कौ कोल॥

× × ×

मैं गिरधर रँग राती, सैयाँ मैं०।
पचरँग चोला पहर सखी मैं, झिरमिट खेलन जाती।
ओह झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो, खोल मिली तन गाती।
जिनका पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजैं पाती।
मेरा पिया मेरे हीय बसत है, ना कहुँ आती जाती।

चँदा जायगा सूरज जायगा, जायगी धरणि अकासी।
पवन पणी दोनों ही जायँगे, अटल रहै अविनासी।
सुरत निरत का दिवला सँजोले, मनसा की करले बाती।
प्रेम हटी का तेल मँगा ले, जगे रह्या दिन ते राती।
सतगुर मिलिया सांसा भाग्या, सैन बताई साँची।
ना घर तेरा न घर मेरा, गावै मीराँ दासी।

× × ×

मैं अपणे सैया सँग साँची।
अब काहे की लाज सजनी, परगट ह्वै नाची।
दिवस भूख न चैन कबहूँ, नींद निसि नासी।
बेधि वार पार ह्वै गो, ग्यान गुह गाँसी।
कुल कुटंबी आन बैठे, मनहुँ मधुमासी।
दासी मीराँ लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी॥

× × ×

कोई कछू कहे मन लागा।
ऐसी प्रीति लगी मन मोहन, ज्यूँ सोना में सोहागा।
जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुर सब्द सुण जागा।
मात पिता सुत कुटुम कबीला, टूट गयो ज्यूँ तागा।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा॥

× × ×

बरजी मैं काहू की नाहि रहूँ।
सुनौरी सखी तुम चेतन होइके, मन की बात कहूँ।
साध सँगति करि हरि सुख लीजै, जगसूँ दूरि रहूँ।
तन धन मेरे सब ही जावो, भलि मेरो सीस लहूँ।
मन मेरो लागी सुमिरण सेती, सब का मैं बोल सहूँ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, सतगुरु सरण· गहूँ।

× × ×

तेरो कोई नहिं रोकणहार, मगन होइ मीराँ चली।
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर सैं दूरि करी।
मान अपमान दोउ धर पटके, निकसी हूँ ग्यान गली।
ऊँची अटरिया लाज किवड़िया, निरगुन सेज बिछी।
पँचरंगी झालर सुभ सौहै, फूलन फूल कली।

बाजू बन्द कडूला सोहै, सिन्दुर माँग भरी।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधिक खरी।
सेज सुखमणा मीराँ सौहै, सुभ है आज घरी।
तुम जावो राणा घर अपणे, मेरी तेरी नाहिं सरी॥

× × ×

आज म्हाँरो साधु जननो संगरे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ॥
साधु जननो संग जो करिये, चढ़े ते चौगणो रंगरे।
साकट जनन तो संग न करिये, पड़े भजन में भंगरे।
अड़सठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने सोय गंगरे।
निन्दा मरसे नरक कुंड माँ जासे थासे आँधला अपंगरे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, संतों नीरज म्हांरे अंगरे॥

× × ×

राणाजी म्हें तो गोविंद का, गुण गास्याँ।
चरणाम्रित को नेम हमारो, नित उठ दरसण जास्याँ।
हरि मन्दिर में निरत करास्याँ, घुँघरिया घमकास्याँ।
राम नाम का झाझ चलास्याँ, भवसागर तर जास्याँ।
यह संसार बाड़ का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, निरख परख गुण गास्याँ॥

× × ×

नहिं भावै थाँरो देसलड़ो रँगरूड़ो।
थाँरा देसाँ में राणा साध नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ो।
गहणा गाठी राणा हम सब त्यागा, त्याग्यो कररो चूड़ो।
काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बाँधन जूड़ो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बर पायो छै पूरो।

× × ×

राणाजी मुझे यह बदनामी लगे मीठी।
कोई निन्दो कोई बिन्दो, मैं चलूँगी चाल अनूठी।
साँकली गली में सतगुर मिलिया, क्यूँ कर फिरूँ अपूठी।
सतगुर जी सूँ बातज करताँ, दुरजन लोगाँ ने दीठी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अँगीठी।

× × ×

राणा जी थे क्याँने राखो म्हाँसूँ बैर।
थे तो राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो ज्यों ब्रच्छन में कैर।

महल अटारी हम सब त्याग्या, त्याग्यो थाँरो बसनो सहर।
कागज टीको राणा हम सब त्याग्या भगवीं चादर पहर।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, इमरित कर दिय जहर।

× × ×

"सीसोद्यो रुठ्यो तो म्हाँरो कांई करलेसी।
म्हें तो गुण गोबिंद का गास्याँ, हो माई॥
राणो जी रूठ्यो बाँरो देस रखासी।
हरि रूठ्याँ कुम्हलास्याँ, हो माई।
लोक लाज की काण न मानूँ।
निरभै निसाण घुरास्याँ, हो माई।
राम नाम का झाझ चलास्याँ।
भवसागर तर जास्याँ, हो माई।
मीराँ सरण सबल गिरधर की।
चरण कँवल लपटास्याँ, हो माई॥

× × ×

पग घुँगरु बाँध मीराँ नाची, रे।
मैं तो मेरे नारायण की, आपहि होगइ दासी, रे।
लोग कहैं मीराँ भई बावरी, न्यात कहैं कुलनासी, रे।
विष का प्याला राणाजी भेज्या, पीवत मीराँ हाँसी, रे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सहज मिले अबिनासी, रे।

× × ×

राम तने रँगराची, राणा मैं तो साँवलिया रँगराची, रे।
ताल पखावज मिरदंग बाजा, साधाँ आगे नाचीं, रे।
कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे मतमाती, रे।
विष का प्याला राणा भेज्या; अमृत कर आरोगी, रे।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम की दासी, रे॥

× × ×

राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी।
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी।
लोक लाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी।
अपणे घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी।
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो• सनकाणी।

सब संतन पर तन मन वारो, चरण कँवल लपटाणी।
मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी॥

× × ×

राणा जी म्हाँरी प्रीत पुरबली मैं कांई करूँ।
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हाँरा हियरा ठराय।
भोजनियाँ नहिं भावे म्हांने, नींदलड़ी नहिं आय।
विषको प्यालो भेजियोजी, जावो मीरा पास।
कर चरणामृत पी गई, म्हांरे रामजी के विस्वास।
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निश्चय धार।
रामजी काज सँवरिया, म्हांने भावे गरदन मार।
पेट्याँ बासक भेजिया जी, यो छै मोतीडाँरो हार।
नाग गले में पहिरिया, म्हांरे महलाँ भयो उजार!
राठौडाँरी धीयड़ी जी, सीसोद्यांरे साथ।
ले जाती बैकुंठ कूँ म्हाँरी, नेक न मानी बात।
मीराँ दासी राम की जी, राम गरीब निवाज।
जन मीराँ को राखज्यो, कोई बाँह गहे की लाज॥

× × ×

मैं गोविंद गुण गाणा।
राजा रूठै नगरी राखै, हरि रूठ्याँ कहँ जाणा।
राणै भेज्या जहर पियाला, इमिरत करि पी जाणा।
डविया में भेज्या ज भुजंगम, सालिगराम करि जाणा।
मीराँ तो अब प्रेम दिवांणी, साँवलिया वर पाणा॥

× × ×

यो तो रंग धत्ताँ लग्यो ए माय।
पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय।
यो तो अमल म्हाँरो कबहुँ न उतरे, कोट करो न उपाय।
साँप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेडतणी गल डार।
हँस हँस मीरा कँठ लगायो, यो तो म्हांरे नौसर हार।
विष को प्यालो राणा जी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय।
कर चरणामृत पीगई रे, गुण गोविंद रा गाय।
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सोहाय।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रंग उड़ जाय॥

× × ×

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ।।
साँप पिटारा राणा भेज्या मीरा हाथ दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी सालिगराम गई पाय ।।
जहर का प्याला राणा भेज्या अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवण लागी हो अमर अँचाय ।।
सूल सेज राणा ने भेजी दीज्यो मीरा सुलाय ।
साँझ भई मीरा सोवण लागी मानो फूल बिछाय ।।
मीरा के प्रभु सदा सहाई राखे विघन हटाय ।
भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पै बलि जाय ।।

× × ×

हेली म्हाँसूँ हरि बिनि रह्यो न जाय ।
सास लड़ै मेरी नन्द खिजावै, राणा रह्या रिसाय ।
पहरो भी राख्यो चौकी बिठरायो, ताला दियो जड़ाय ।
पूर्व जनम की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोड़ी जाय ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, और न आवे म्हाँरी दाय ।।

× × ×

अब नहिं बिसरूँ, म्हांरे हिरदे लिख्यो हरि नाम ।
म्हांरे सतगुरु दियो बताय, अब नहिं बिसरूँ रे ।।
मीरा बैठी महल में रे, ऊठत बैठत राम ।
सेवा करस्याँ साध की, म्हांरे और न दूजा काम ।।
राणा जी बतलाइया, कह देणो जवाब ।
पण लागों हरिनाम सूँ, म्हाँरो दिन दिन दूनो लाभ ।।
सीप-भरयो पाणी पिवे रे, टाँक भरयौ अन्न खाय ।
बतलायाँ बोली नहीं रे, राणोजी गया रिसाय ।।
बिष रा प्याला राणाजी भेज्या दीजो मेड़तणी के हाथ ।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरा सबल धणी का साथ ।।
विष को प्यालो पी गई, भजन करे उस ठौर ।
थाँरा मारी ना मरूँ म्हाँरों राखणहारो और ।।
राणोजी मोपर कोप्यो रे, मारूँ एक ज सेल ।
मारयां पराछित लागसी, म्हाँ ने दीजो पीहर मेल ।।
राणो मोपर कोप्यो रे, रती न राख्यो मोद ।
ले जाती बैकुंठ में, यो तो समझ्यो नहीं सिंसोद ।।

छापा तिलक बनाइया, तजिया सब सिंगार।
म्हें तो सरणे रामके, भल निन्दो संसार॥

माला म्हारे देवड़ी, सील बरत सिंगार।
अबके किरपा कीजिये, हूँ तो फिर बाँधू तलवार॥

रथाँ बैल जुताय कै, ऊटाँ कसियो मार।
कैसे तोडूँ राम सूँ, म्हाँरो भोभो रो भरतार॥

राणो साँढ्यो मोकल्यो, जाज्यो एके दौड़।
कुल की तारण अस्तरी, या तो मुरड़ चली राठौड़॥

साँढ्यो पाछो फेरयो रे, परत न देस्याँ पाँव।
कर सूरापण नीसरी, म्हारे कुण राणे कुण राव॥

संसारी निन्दा करे, दुखियो सब संसार।
कुल सारो ही लाजसी, मीरा थें जो भया जी ख्वार॥

राती माती प्रेम की, विष भगत को मोड़।
राम अमल माती रहे, धन मीराँ राठौड़॥

× × ×

मैं जाण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होइरी।
आये मेरे सजना फिरि गये अँगना, मैं अभागण रही सोइरी।
फारूँगी चीर करूँ गल कंथा, रहूँगी बैरागण होइरी।
चुरियाँ फोरूँ माँग बखेरूँ, कजरा मैं डारूँ धोइरी।
निसबासर मोहि बिरह सतावै, कल न परत मोइरी।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, मिलि बिछुरो मति कोइरी॥

× × ×

जोगियाजी निसिदिन जोऊँ बाट।
पाँव न चालौ पंथ दुहेलो, आड़ा औघट घाट।
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ।
मैं भोली भोलापन कीन्हौ, राख्यौ नहिं बिलमाइ।
जोगिया कूँ जोवत बोहो दिन बीता, अजहूँ आयो नाहिं।
विरह बुझावण अन्तरि आवो, तपत लगी तन माहि।
कै तो जोगी जग में नहीं, कैर बिसारी मोइ।
काँइ करूँ कित जाऊँरी सजनी, नैण गुमायो रोइ।
आरति तेरी अन्तरि मेरे, आवो अपनी जाणि।
मीराँ व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि॥

× × ×

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं चेरी तेरी हौं।
प्रेम भगति को पैंड़ो ही न्यारा, हमकूँ गैल बता जा।
अगर चँदरा की चिता बणाऊँ, अपणे हाथ जला जा।
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ॥

× × ×

होजो म्हाँराज छोड़ मत जाज्यो।
मैं अबला बल नाहिं गुसाईं, तुमहिं मेरे सिरताज।
मै गुणहीन गुण नाहि गुसाईं, तुम समरथ महराज।
रावली होइ के किणरे जाऊॅ, तुमही हिवड़ा रो साज।
मीराँ के प्रभु और न कोई, राखौ अबके लाज ॥

× × ×

ऐसी लगन लगाइ कहाँ तू जासी।
तुम देखे बिन कलि न परति है, तलफि तलफि जिव जास।
तेरे खातिर जोगण हूँगी, करवत लूँगी कासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल की दासी ॥

× × ×

पियाजी म्हांरे नैणाँ आगे रहज्यो ज।
नैणाँ आगे रहज्यो, म्हांने भूल मत जाज्यो जी।
भौसागर में बही जात हूँ बेग म्हाँरी सुध लीज्यो जी।
राणाजी भेज्या बिख का प्याला, सो इमरित कर दीज्यो जी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुड़न मत कीज्यो जी ॥

× × ×

जागो म्हाँरा जगपति राइक, हंसि बोलो क्यूँ नाहीं।
हरि छोजी हिरदा मांहि, पट खोलो क्यूँ नहीं ॥
तन मन सुरति सँजोइ, सीस चरणाँ धरूँ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम, जहाँ सेवा करूँ ॥
सदकै करूँ जी सरीर जुगै जुग वारणै।
छोड़ी छोड़ी कुल की लाज, साहिब तेरे कारणै ॥
थोड़ी थोड़ी लिखूँ सिलाम, बहोत करि जाणज्यौ।
बन्दी हूँ खानाजाद, महरि करि मानज्यौ ॥
हाँ हो म्हारा नाथ सुनाथ, बिलम नहिं कीजियै।
मीराँ चरणाँ की दास, दरस अब दीजियै ॥

× × ×

जावादे जाबादे जोगी किसका मीत ।
सदा उदासी रहै मोरि सजनी, निपट अटपटी रीत ।
बोलत बचन मधुर से मानूँ, जोरत नाहीं प्रीत ।
मै जाणूँ या पार निभैगी, छांड़ि चले अधबीच ।
मीराँ के प्रभु स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत ।।

× × ×

धूतारा जोगी एकरसूँ हंसि बोल ।
जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।
अंग भभूति गले मृगछाला, तू जन गुढियाँ खोल ।
सदन सरोज बदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ।
सेली नाद वभूत न बटवो, अजूँ मुनी मुख खोल ।
चढ़ती बैस नैण अणियाले, तूँ घरि घरि मत डोल ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, चेरी भई बिन मोल ।।

× × ×

हरि तुम हरो जन की भीर ।
द्रोपदी क लाज राखी, तुरत बाढ्यौ चीर ।
भक्त कारण रूप नरहरि, धरयौ आप सरीर ।
हिरणाकुश मारि लीन्ह, धरयौ नाहिं न धीर ।
बूड़तो गजराज राख्यौ, कियौ बाहर नीर ।
दासी मीराँ लाल गिरधर, चरण कँवल पै सीर ।

× × ×

अबतो निभायाँ सरेगी, बाँह गहे की लाज ।
समरभ सरण तुम्हारी सइयाँ, सरब सुधारण काज ।
भव सागर संसार अपरबल, जामें तुम हो भयाज ।
निरधाराँ आधार जगत गुरु, तुम बिन होय अकाज ।
जुग जुग भीर हरी भगतन की, दीनी मोक्ष समाज ।
मीराँ सरण गही चरणन की, लाज रखो महाराज ।।

× × ×

हरि बिन कूण गती मेरी ।
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये, मैं रावरी चेरी ।
आदि अन्त निज नाँव तेरो, हीया में फेरी ।
बेरि बेरि पुकारि कहूँ, प्रभु आरति है तेरी ।

यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो, बूड़त है बेरी।
विरहणि पियकी बाट जोवै, राखिल्यौ नेरी।
दासि मीराँ राम रटत है, मैं सरण हूँ तेरी॥

× × ×

प्रभु जी थे कहाँ गया नेहड़ी लगाय।
छोड़ गया विस्वास सँगाती, प्रेम की बाती बराय।
बिरह समँद में छोड़ गया छो, नेह की नाव चलाय।
मीराँ के प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिनि रह्योइ न जाय॥

× × ×

डारि गयो मनमोहन पासी।
आँबा की डालि कोइल इक बोलै, मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी।
बिरह की मारी मैं बन बन डोलूँ, प्रान तजूँ करवत ल्यूँ कासी।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, तुम मेरे ठाकुर मैं मेरी दासी॥

× × ×

माई म्हारी हरिह न बूझी बात।
पंड माँसूँ प्राण पाती, निकसि क्यूँ नहीं जात॥
पाट न खोल्या मुखाँ न बोल्याँ, साँझ भई परभात।
अबोलणाँ जुग बीतण लागो, तो काहे की कुसलात॥
सावण आवण कह गया रे, हरि आवण की आस।
रैण अंधेरी बीज बीज चमकै, तारा गिणत निरास॥
लेइ कटारी कंठ सारूँ, मरूँगी बिष खाइ।
मीराँ दासी राम राती, लालच रही ललचाइ॥

× × ×

परम सनेही राम की निति ओलूँरी आवै।
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछू न सुहावै।
आवण कह गये अजहुँ न आये, जिवड़ो अति उकतावै
तुम दरसण की आस रमैया, कब हरि दरस दिखावै॥
चरण कँवल की लगनि लगी नित, बिन दरसन दुख पावै।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, आँणद बरण्यूँ न जावै॥

× × ×

जोगिया जी छाइ रह्या परदेस ।
जब का बिछड़्या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ।
या तन ऊपरि भसम रमाऊँ, खोर करूँ सिर केस ।
भगवाँ भेख धरूँ तुम कारण, ढूँढत च्यारूँ देस ।
मीराँ के प्रभु राम मिलण कूँ, जीवनि जनम अनेस ॥

× × ×

रमइया बिनि रह्योइ न जाय ।
खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणा रहे मुरझाइ ।
बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाय ।
मीराँ कहै हरि तुम मिलियाँ बिनि, तरस तरस तन जाइ ॥

× × ×

हेरी मैं तो दरद दिवाणी होइ, दरद न जाणै मेरो कोइ ।
घायल की गति घाइल जाणैं, की जिण लाई होइ ।
जौहरि की गति जौहरी जाणै, की जिनि जौहर होइ ॥
सूली ऊपरि सेज हमारी, सोवण किस विध होइ ।
गँगन मँडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ ॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोइ ।
मीराँ की प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद साँवलिया होइ ॥

× × ×

पीया बिनि रह्यौइ न जाइ ।
तन मन मेरो पिया पर वारूँ, बार बार बलि जाइ ।
निस दिन जोऊँ बाट पिया की, कबरे मिलोगे आइ !
मीराँ के प्रभु आस तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाइ ॥

× × ×

नातो नाम को मोसूँ तनक न तोड़्यो जाइ ।
पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग ।
छाने लाँघण मैं किया रे, राम मिलण के जोग ॥
बावल बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हाँरी बाँह ।
मूरिख बैद मरम नहिं जाणै, करक कलेजा माँह ॥
जा बैदा घरि आपणे रे, मेरो नाँव न लेइ ।
मैं तो दाधी विरह की रे, तूँ काहे कूँ दारू देइ ॥
माँस गले गल छीजिया रे, करक रह्या गल आहि ।
आँगलियाँ रो मूदड़ो, म्हारे आवण लागी बाँहि ॥

रहो रहो पापी पपीहा रे, पिव को नाम न लेइ।
जे कोइ विरहणि साम्हले, (सजनी) पिव कारण जीव देइ॥
खिण मंदिर खिण आगणै रे, खिण खिण ठाढी होइ।
घायल ज्यूँ घूमूँ सादरी, म्हाँरी बिथा न बूझै कोइ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरूँ रे, कौवा तू ले जाइ।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसै, (सजनी) वे देखै तू खाइ॥
म्हांरे नातो नाव कोरे, और न नातो कोइ।
मीराँ व्याकुल विरहणी रे, पिया दरसण दीजो मोइ॥

× × ×

रमैया विन नींद न आवै।
नींद न आवे विरह सतावे, प्रेम की आँच ढुलावै।
बिन पिया जोत मंदिर अंधियारो, दीपक दाय न आवै।
पिया विन मेरी सेज अलूनी, जागत रैण विहावै।
पिया कब रे घर आवै।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणावै।
घुमँट घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै।
नैन झर लावै।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कूण बुतावै।
बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावै।
जड़ी घस लावै।
कौहै सखी सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावै।
मीराँ कूँ प्रभु कबरे मिलोगे, मन मोहन मोहि भावै।
कबै हँस कर बतलावै॥

× × ×

नींदलड़ी नहिं आवै सारी रात, किस बिधि होइ परभात।
चमक उठी सुपने सुध भूली, चन्द्रकला न सोहात।
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कबरे मिले दीनानाथ।
भइहूँ दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी बात।
मीराँ कहै बीती सोइ जानै, मरण जीवण उन हाथ॥

× × ×

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिखही न जाय।
कलम धरत मेरो कर कंपत, हिरदो रहो घर्राई।
बात कहूँ मोहि बात न आवै, नैन रहै, झर्राई।

किस बिध चरण कमल मैं गहिहौं, सबहि अंग थर्राई।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, सबही दुख बिसराई॥

× × ×

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी मेरी प्यारी।
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी विरहन पिव बिन डोलै, तज दइ पीव पियारी।
भई हूँ या दुख कारी।

देस विदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी।
गिणताँ गिणताँ घस गइँ रेखा, आँगरियाँ की सारी।
अजहूँ नहिं आये मुरारी।

बाजत झाँझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आयो बसंत कंत घर नाहीं, तन में जर भया भारी।
स्याम मन कहा विचारी।

अबतो मेहर करो मुझ ऊपर, चित दे सुणो हमारी।
मीराँ के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कँवारी।
लगी दरसण की तारी॥

× × ×

होली पिया बिन मोहिं न भावै, घर आँगण न सुहावे।
दीपक जोय कहा करूँ हेली, पिय परदेस रहावे।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक सुसक जिय जावे।
नींद नहिं आवे।

कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊँ, निसदिन बिरह सतावे।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे।
पिया कब दरस दिखावे।

ऐसा है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे।
वा बिरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावे।
मीराँ मिल होली गावे॥

× × ×

किण सँग खेलूँ होली, पिया तज गये हैं अकेली।
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली।
भोजन्न भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गेली।
मुझे दूरी क्यूँ म्हेली।

अब तुम प्रीत और सूँ जोड़ी, हमसे करी क्यूँ पहेली।
बहु दिन बीते अजहुँ न आये, लग रही ताला बेली।
किण बिलमाये हेली।
स्याम बिना जियड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन वेली।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली।
दरस बिन खड़ी दुहेली ॥

× × ×

मतवारो बादर आए रे, हरि को सनेसो कबहुँ न लाए रे।
दादर मोर पपइया बोलै, कोयल सबद सुणाए रे।
(इक) कारी अँधियारी बिजरी चमकै, बिरहणि अति डरपाए रे।
(इक) गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लाए रे।
(इक) कारी नाग बिरह अति जारी, मीराँ मन हरि भाए रे ॥

× × ×

बादल देख डरी हो स्याम मैं, बादल देख डरी।
काली पीली घट ऊमटी, बरस्यो एक घरी।
जित जाऊँ तित पाणी पाणी, हुई हुई भोम हरी।
जाका पिया परदेस बसत है, भीजूँ बाहर खरी।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, कीज्यौ प्रीत खरी ॥

× × ×

रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारयौ।
मैं सूती छी अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारयो।
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ो करवत सारयो।
उठि बैठो वा वृच्छ की डाली, बोल बोल कंठ सारयो।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित धारयो ॥

× × ×

पपइया रे पिव की बाणि न बोल।
सुणि पावेली बिरहणी रे, थारो रालैली आँख मरोड़।
चोंच कटाऊँ पपइया रे, ऊपरि कालर लूण।
पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहै स कूण।
थारा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेला आज।
चोंच मढाऊँ थारी सोवनी रे, तू मेरे सिरताज।
प्रीतम कूँ पतियाँ लिखूँ, कउवा तू ले जाइ।
जाइ प्रीतम जी सूँ यूँ कहै रे, थाँरी बिरहणि धान न खाइ।

मीराँ दासी व्याकुली रे, पिव पिव करत बिहाइ।
बेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम बिनि रह्योही न जाइ॥

× × ×

हे मेरो मन मोहना।
आयो नहीं सखीरी, हे मेरो० ॥
कैं कहुँ काज किआ संतन का, कैं कहुँ गैल भुलावना।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सचनी, लाग्यो है बिरह सँतावना।
मीराँ दासी दरसण प्यासी, हरि चरणाँ जित लावणा॥

× × ×

मै विरहणि बैठी जागूँ, जगत सब सोवै री आली।
बिरहणि बैठी रंगमहल में, मोतियन की लड़ पोवै।
इक बिरहणि हम ऐसी देखी, अँसुवन की माला पोवै।
तारा गिण गिण रैण बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल के बिछुड़ न जावै॥

× × ×

सखी मेरी नींद नसानी हो।
पिय को पंथ निहारत, सिगणी रैण बिहानी हो॥
सब सखियन मिली सीख दई, मन एक न मानी हो।
बिनि देख्याँ कल नाहिं पड़त, जिय ऐसी ठानी हो॥
अंगि अंगि व्याकुल भई, मुखि पिय पिय बानी हो।
अन्तर वेदन विरह की, वह पीड़ न जानी हो॥
ज्यूँ चातक घन कूँ रटै, मछरी जिमि पानी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसरानी हो॥

× × ×

जोगियारी सूरत मन में बसी।
नित प्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निस दिन होत कुसी।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, मनो सरप डसी।
मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे, प्रीत रसीली बसी॥

× × ×

प्रभू बिनि ना सरै माई।
मेरा प्राण निकस्या जात, हरी बिन ना सरै माई॥

कमठ दादुर कसत जल में, जल से उपजाई।
मीन जल से बाहर कीना, तुरत मर जाई।
काठ लकरी बन परी, काठ घुन खाई।
ले अगन प्रभु डार आये, भसम हो जाई।
बन बन ढूँढ़त मैं फिरी, आली सुधि नहीं पाई।
एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई।
पात ज्यूँ पीरी परी, अरु बिपत तन छाई।
दास मीराँ लाल गिरधर, मिल्या सुख छाई।

× × ×

मैं हरि बिनि क्यूँ जिवूँरी माइ।
पिय कारण बौरी भई, ज्यूँ काठहिं घुन खाइ।
ओखद मूल न संचरै, मोहि लाग्यो बौराइ।
कमठ दादुर बसत जल में, जलहि तैं उपजाइ।
मीन जल के बिछुरै तन, तलफि करि मरि जाइ।
पिव ढूँढण बन बन गई, कहुँ मुरली धुन पाइ।
मीराँ के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाइ।

× × ×

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर में जागी री।
तलफत तलफत कल न परत है, बिरहबाण उरि लागी री।
निसदिन पंथ निहारूँ पीव को, पलकन पल भरि लागी री।
पीव पीव मैं रटूँ रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री।
बिरह भवँग मेरो डस्यो है कलेजो, लहरि हलाहल जागी री।
मेर आरति मेटि गुसाईं, आइ मिलौ मोहि सागी री।
मीराँ ब्याकुल अति उकलाणी, पिया की उमंग अति लागी री॥

× × ×

रामनाम मेरे मन बसियो, राम रसियो रिझाऊँ, ए माय।
मंद भागिण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ, ए माय।
बिरह पिंजर की बाड़ सखीरी, उठकर जी हुलसाऊँ, ए माय।
मन कूँमार सजूँ सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ, ए माय।
डाको नाम सुरत की डोरी, कड़ियाँ प्रेम चढ़ाऊँ, ए माय।
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ, ए माय।
तन करूँ ताल मन करूँ मोरचँग, सोती सुरत जगाऊँ, ए माय।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तौ अमरापुर पाऊँ, ए माय।

मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोविंद के गाऊँ, ए माय।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रज चरणाँ की पाऊँ, ए माय।

× × ×

स्याम सुंदर पर वार।
जीवड़ा मैं वार डारूँगी, स्याम सुँदर० ॥
तेरे कारण जोग धारणा, लोक लाज कुल डार।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, नैन चलत दोउँ वार।
कहा करूँ कित जाऊँ मेरी सजनी, कठिन बिरह की धार।
मीराँ कहै प्रभु कबरे मिलोगे, तुम चरणाँ आधार ॥

× × ×

करणाँ सुणि स्याम मेरी।
मैं तो होइ रही चेरी तेरी ॥
दरसण कारण भई बावरी, बिरह बिथा तन घेरी।
तेरे कारण जोगण हूँगी, दूँगी नग्र बिच फेरी।
कुंज सब हेरी हेरी।
अंग भभूत गले म्रिग छाला, योतन भसम करूँरी।
अजहुँ न मिल्या राम अबिनासी, बन बन बीच फिरूँरी।
रोऊँ नित टेरी टेरी।
जन मीराँ कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटण सुख भेरी।
रूम रूम साता भइ उर में, मिटि गई फेरा फेरी ॥

× × ×

पिया अब घर आज्यो मेरे, तुम मोरे हूँ तोरे।
मैं जन तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे।
अवध बदीती अजहुँ न आये, दुतियन सूँ नेह जोरे।
मीराँ कहे प्रभु कबरे मिलोगे, दरसन बिन दिन दोरे ॥

× × ×

भवन पति तुम घरि आज्यो हो।
बिथा लगी तन माहिंने (म्हारी), तपत बुझाज्यो हो ॥
रोवत रोवत डोलाँत, सब रैण बिहावै हो।
भूख गई निदरा गई, पापी जीव न जावै हो।
दुखिया कूँ सुखिया करो, मोहि दरसण दीजै हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, अब बिलम न कीजै हो ॥

× × ×

म्हारे घर रमतो ही आई रे तू जोगिया ।
कानाँ विच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे ।
तुम देख्याँ विन कल न पड़त है, ग्रिह अँगणो न सुहाई रे ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यौ मोकूँ आई रे ॥

× × ×

आवो मनमोहना जी मीठा थाँरो बोल ।
बालपनाँ की प्रीत रमइयाजी, कदे नाहिं आयो थाँरो तोल ।
दरसण बिन मोहि कल न परत है, चित मेरो डाँवाडोल ।
मीराँ कहै मैं भई रावरी, कहो तो बजाऊँ ढोल ॥

× × ×

प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय ।
जल बिन कँवल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी ।
व्याकुल व्याकुल फिरूँ रैण दिन, बिरह कलेजो खाय ।
दिवस न भूख नींद नहिं रैणा, मुखसूँ कथत न आवै बैणा ।
कहा कहूँ कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत बुझाय ।
क्यूँ तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी ।
मीराँ दासी जनम जनम की, परी तुम्हारे पाय ॥

× × ×

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूँ जीवण होय ॥
धान न भावै नींद न आवै, बिरह सतावै मोहि ।
घायल सी घूमत फिरूँ रे, मेरो दरद न जाणै कोय ॥
दिवस तो खाय गमाइतो रे, रैण गमाई सोइ ।
प्राण गमायो झूरताँ रे, नैण गमाया रोइ ॥
जो मैं ऐसी जाणती रे, प्रीत कियाँ दुख होइ ।
नगर ढँढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोइ ॥
पंथ निहारो डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोइ ।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलिया सुख होइ ॥

× × ×

दरस बिन दूखण लागै नैण ।
जब के तुम बिछुरे प्रभु मोरे, कबहुँ न पायो चैन ।
सबद सुणत मेरी छतियाँ काँपै, मीठे मीठे बैन ।
बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गई करवत ऐन ।

कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैण ।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटण सुख दैण ।।

× × ×

तुमरे कारण सब सुख छाड्या, अब मोहि क्यूँ तरसावौ हो ।
बिरह बिथा लागी उर अन्तर, सो तुम आप बुझावौ हो ।
अब छोड़त नहिं बणै प्रभूजी, हंसि कर तुरत बुलावौ हो ।
मीराँ दासी जनम जनम की, अंग से अंग लगावौ हो ।।

× × ×

तूँ नागर नंदकुमार, तोसों लाग्यो नेहरा ।
मुरली तेरी मन हर्यो, बिसर्यो ग्रिह ब्योहार ।।
जबतैं स्रवननि धुनि परी, ग्रिह अँगना न सुहाय ।
पारधि ज्यूँ चूकै नहीं, मृगी वेधि दई आय ।।
पानी पीर न जाणई, मीन तलफि मरि जाइ ।
रसिक मधुप के मरम को, नहिं समुझत कँवल सुभाइ ।।
दीपक को जु दया नहीं, उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीराँ प्रभु गिरधर मिले, (जैसे) पाणी मिल गयो रंग ।।

× × ×

म्हाँरो जनम मरन को साथी, थांने नहिं बिसरूँ दिन राती ।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोये अखियाँ राती ।
यो संसार सकल जग झूँठो, झूँठा कुलरा न्याती ।
दोउ कर जोड्यां अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती ।
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यूँ मदमातो हाथी ।
सतगुरु दस्त धरयो सिर ऊपर, आकुंस दे समझाती ।
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुखपाती ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती ।

× × ×

सजन सुध ज्यूँ जाणे त्यूँ लीजै हो ।
तुम बिन मोरे और न कोई, क्रिपा रावरी कीजै हो ।
दिन नहिं भूख रैण नहिं निंदरा, यूँ तन पलपल छीजै हो ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछड़न मत कीजै हो ।।

× × ×

राम मिलण रो घणो उमावो, नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ।
दरस बिना मोहि कछु न सुहावै, जक न पड़त है आँखड़ियाँ।
तलफत तलफत बहु दिन बीता, पड़ी बिरह की पाशड़ियाँ।
अब तो बेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासड़ियाँ।
नैण दुखी दरसण कूँ तरसै, नाभिन बैठे साँसड़ियाँ।
राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ।
लागी लगनि छूटण की नाहीं, अब क्यूँ कीजै आटड़ियाँ।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरौ मन की आसड़ियाँ॥

× × ×

म्हाँरे घर होता जाज्यो राज।
अब के जिन टाला दे जावो, सिर पर राखूँ बिराज।
म्हे तो जनम-जनम की दासी, थे म्हाँका सिरताज।
पावणड़ा म्हांके भलाँ ही पधारो, सब ही सुधारण काज।
म्हे तो बुरी छाँ थांके भली छै घणेरी, तुम हो एक रसराज।
थांमे हम सबहिन की चिंता तुम, सबके हो गरिब निवाज।
सबके मुकट सिरोमनि सिर पर, मानुँ पुण्य की पाज।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बाँह गहे की लाज॥

× × ×

कबहूँ मिलोगो मोहि आई, रे तूँ जोगिया।
तेरे कारण जोग लियो है, घरि घरि अलख जगाई।
दिवस न भूख रैण नहिं निंदरा, तुम बिनु कछू न सुहाई।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, मिलि करि तपति बुझाई॥

× × ×

गोबिंद कबहुँ मिलै पिया मेरा।
चरण कवल कूँ हंसि-हंसि देखूँ राखूँ नैणाँ नेरा।
निरखण कूँ मोहि चाव घणेरो, कब देखूँ मुख तेरा।
व्याकुल प्राण धरति नहिं धीरज, मिलि तूँ मीत सबेरा।
मीराँ के प्रभु हरि गिरधर नागर, ताप तपन बहुतेरा।

× × ×

म्हाँरी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी।
पल-पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हांने दीजो जी।
मैं तो हूँ बहु औगणहारी, औगण चित मैत दीजो जी।

मैं तो दासी थांरे चरण कँवल की, मिल बिछुरन मत कीज जी।
मीराँ तो सतगुर जी सरणे, हरि चरणाँ चित दीजो जी।।

× × ×

म्हारे घर आज्यो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग खारा।
तन मन धन सब भेंट करूँ, ओ भजन करूँ मैं थाँरा।
तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूँ जी औगणहारा।
मैं निगुणीं गुण एको नाहीं, तुझमे जी गुण सारा।
मीराँ कहै प्रभु कबहि मिलौगे, बिन दरसण दुखियारा।।

× × ×

तुम आज्यो जी रामा, आवत आस्याँ सामा।
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरै मनोरथ कामा।
तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा।
मीराँ मन के और न माने, चाहे सुन्दर स्यामा।।

× × ×

पिया मोहिं दरसण दीजै हो।
बेर बेर मैं टेरहूँ, अहे क्रिपा कीजै हो।
जेठ महीने जल बिना, पंछी दुख होई हो।
मोर आसाढ़ाँ कुरलहे, घन चात्रग सोई हो।
सावण मैं झड़ लागियौ, सखि तीजाँ खेलै हो।
भादरवै नदिया बहै, दूरी जिन मेलै हो।
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजाँ सोई हो।
देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई हो।
मगसर ठंड बहोती पड़ै, मोहि वेगि सम्हालो हो।
पोस मही पाला घणा, अबही तुम न्हालो हो।
महा मही बसंत पंचमी, फागाँ सब गावै हो।
फागुण फागा खेलहैं, बणराइ जरावै हो।
चैत चित्त में ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो।
वैसाख बणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो।
काग उड़ावत दिन गया, बूझूँ पिंडत जोसी हो।
मीराँ विरहणि ब्याकुली, दरसण कब होसी हो।।

× × ×

जोगिया जी आवो ने या देस।
नैणर्ज देखूँ नाथ मेरो, ध्याइ करूँ आदेस।

आया सावण कास सजनी, भरे जल थल ताल।
रावल कुण विलमाइ राखो, बिरहनि है बेहाल।
बीछड़ियाँ कोइ भौ भयो (रे जोगी), ऐ दिन अहला जाय।
एक बेरी देह फेरी, नगर हमारे आय।
वा मूरति मेरे मन बसे (रे जोगी), छिन भरि रह्यौइ न जाय।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, दरसण द्यौ हरि आय॥

× × ×

जोगिया ने कहज्यो जी आदेस।
जोगियो चतुर सुजाण सजनी, ध्यावै संकर सेस।
आऊँगी मैं नाह रहूँगी (रे म्हारा), पीव बिना परदेस।
करि किरपा प्रतिपाल मो परि, रखो न आपण देस।
माला मुदरा मेखला रे बाला, खप्पर लूँगी हाथ।
जोगणि होइ जुग ढूँढसूँ रे, म्हाँरा रावलियारी साथ।
सावण आवण कह गया बाला, कर गया कौल अनेक।
गिणता-गिणता घिस गई रे, म्हाँरा आँगलियाँरी रेख।
पीव कारण पीली पड़ी बाला, जोबन बाली बेस।
दास मीराँ राम भजि कै, तन मन कीन्हौं पेस॥

× × ×

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर नाजिर कबकी खड़ी।
साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या, सब ने लगूँ कड़ी।
तुम बिन साजन कोइ नहीं है, डिगी नाव मेरी समँद अड़ी।
दिन नहिं चैन रैण नहि निंदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी।
बाण विरह का लग्या हिये मे, भूलूँ न एक घड़ी।
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बन के बीच पड़ी।
कहा बोझ मीराँ में कहिये, सौ पर एक घड़ी॥

× × ×

इण सरवरियाँ री पाल मीराँबाई साँपड़े।
साँपड़ किया असनान, सूरज सामी जप करे।
होय बिरंगी नार, डगराँ बिच क्यूँ खड़ी।
कांई थारो पीहर दूर, घराँ सासू लड़ी।
चल्यो जारे असल गुँवार, तनै मेरी के पड़ी।

गुरु म्हारा दीन दयाल, हीरॉंरा पाखरी।
दियो म्हाने ग्यान बताय, संगत कर साधरी।
खोई कुल की लाज, मुकुंद थांरे कारणे।
वेगही लीज्यो सँभाल, मीराँ पड़ी वारणे॥

× × ×

पिय बिनि सूनौ छै म्हाँरो देस।
ऐसा है कोई पीवकूँ मिलावै, तन मन करूँ सब पेस।
तेरे कारण बन बन डोलूँ, कर जोगण को भेस।
अवधि वदीती अजूँ न आए, पंडर होइ गया केस।
मीराँ के प्रभु कबरे मिलोगे, तजि दियो नगर नरेस॥

× × ×

कोई कहियौ रे प्रभु आवन की।
आवन की मनभावन की, कोई०॥
आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाँण पड़ी ललचावन की।
ए दोइ नैण कह्यौ नहिं मानै, नदिया बहै जैसे सावन की।
कहा करूँ कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की।
मीराँ कहै प्रभु कबरे मिलोगे, चेरी भइ हूँ तेरे दाँवन की।

× × ×

भीजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावणियो लूम रह्यो रे।
आप तो जाय बिदेसाँ छाये, जिवड़ो धरत न धीर।
लिख लिख पतियाँ संदेसा भेजूँ कब घर आवै म्हाँरो पीव।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो बलवीर॥

× × ×

मेरे प्रियतम प्यारे राम कूँ, लिख भेजूँ रे पाती।
स्याम सनेसो कबहुँ न दीन्हौ, जानि बूझ गुझबाती।
डगर बुहारूँ पंथ निहारूँ, जोइ जोइ अखियाँ राती।
राति दिवस मोहि कल न पड़त है, हीयो फटत मेरी छाती।
मीराँ के प्रभु कबरे मिलोगे, पूरब जनम का साथी॥

× × ×

मोहि लागी लगन गुरु चरनन की।
चरन बिन कछुवै नाहिं भावै, जग माया सब सपनन की।

भवसागर सब सूखि गयो है, फिकर नहीं मोहिं तरनन की।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, आस बसी गुरु सरनन की ।।

× × ×

स्याम तेरी आरति लागी हो।
गुरु परतापे पाइया, तन दुरमति भागी हो।
या तन को दियना करों, मनसा करों बाती हो।
तेल भरावों प्रेम का, बारों, दिन राती हो।
पाटी पारों ज्ञान की, मति माँग सँवारों हो।
तेरे कारन साँवरे, धन जोबन वारों हो।
या सेजिया बहु रंग की, बहु फूल बिछाये हो।
पंथ मैं जो हौं स्याम का, आजहुँ नहिं आये हो।
सावन भादों ऊमड़ो, बरषा रितु आई हो।
भौंह घटा घन घेरि के, नैनन झरि आई हो।
मात पिता तुमको दियो, तुमहीं भल जानों हो।
तुम तजि और भतार को, मन में नहि आनों हो।
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो, पूरन पद दीजै हो।
मीराँ व्याकुल बिरहनी, अपनी करि लीजै हो ।।

× × ×

तुम सुणौ दयाल म्हाँरी अरजी।
भवसागर में बही जात हूँ, काढ़ों तो थाँरी मरजी।
यौ संसार सगो नहिं कोई, साँचा सगा रघुबरजी।
मात पिता औ कुटम कबीलो, सब मतलब के गरजी।
मीराँ की प्रभु अरजी सुण लो, चरण लगावो थाँरी मरजी ।।

× × ×

मैं तो तेरी सरण परी रे रामा, ज्यूँ जाणे त्यूँ तार।
अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मन नाहीं मानी हार।
या जग में कोई नहिं अपणा, सुणियौ श्रवन मुरार।
मीराँ दासी राम भरोसे, जम का फंदा निवार।

× × ×

अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान।
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान।

और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान।
कुबजा नीच भीलणी तारी, जानै सकल जहान।
कहँ लगि कहूँ गिणत नहिं आवै, थकि रहै बेद पुरान।
मीराँ कहै मैं सरण रावलो, सुनियो दोनों कान॥

× × ×

मेरो बेड़ो लगाज्यो पार, प्रभुजी मैं अरज करूँ छूँ।
या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार।
अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख भार।
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी री धार।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, आवागमन निवार॥

× × ×

रावलो बिड़द मोहिं रूढ़ो लागे, पीड़ित पराये प्राण।
सगो सनेही मेरी और न कोई, बैरी सकल जहान।
ग्राह गह्यो गजराज उबारयो, बूड़ न दियो छे जान।
मीराँ दासी अरज करत है, नहिं जो सहारो आन॥

× × ×

राम मोरी बांहड़ली जी गहो।
या भव सागर मँझधार में, थे ही निभावण हो।
म्हाँ में ओगण घणा छै हो प्रभुजी, थेही सहो तो सहो।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, लाज बिरद की बहो।

× × ×

नंन्दन बिलमाई, बदराने घेरी माई।
इत घन गरजे उत घन लरजे, चमकत बिज्जु सवाई।
उमड़ घुमड़ चहूँ दिस से आया, पवन चलै पुरवाई।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल सबद सुणाई।
मीराँ के प्रनु गिरधर नागर, चरण कमल चितलाई॥

× × ×

सुनी हो मैं हरि आवन की आवाज।
म्हैल चढ़े चढ़ि जोऊँ मेरी सजनी, अब आवै महाराज।
दादर मोर पपइया बोलै, कोइल मधुरे साज।
उमंग्यो-इन्द्र चहूँ दिसि बरसै, दामणि छोड़ी लाज।

धरती रूप नवानवा धरिया, इन्द्र मिलण कै काज।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, वेग मिलो महाराज॥

× × ×

रे साँवलिया म्हाँरे आज रंगीली गणगोर, छै जी।
काली पीली बदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छै जी।
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल कर रही सोर छै जी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरणाँ में म्हाँरो जोर छै जी॥

× × ×

झुक आई बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की।
सावन उमँग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़ घुमड़ चहुँ दिसि से आयो, दामण दमक झर लावन की।
नन्ही नन्ही बूँदन मेहा बरसै, सीतल पवन सोहावन की।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, आनँद मंगल गावन की॥

× × ×

रँगभरी रँगभरी रँग सूँ भरी री,
होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, पिचकारिन की लगी झरी री।
चोवा चंदन और अरगजा, केसर गागर भरी धरी री।
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, चेरी होय पायन में परी री॥

× × ×

बदला रे तू जल भरि ले आयो।
छोटी छोटी बूंदन बरसन लागीं, कोयल सबद सुनायो।
गाजै बाजै पवन मधुरिया, अंबर बदरा छायो।
सेज सँवारी पिय घर आये, हिलमिल मंगल गायो।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, भाग भलो जिन पायो॥

× × ×.

सहेलियाँ साजन घरि आया हो।
बहोत दिनाँ की जोवती, विरहणि पिव पाया हो।
रतन करूँ नेवछावरी, ले आरति साजूँ हो।
पिया का दिया सनेसड़ा, ताहि बहोत निवाजूँ हो।
पाँच सखी इकठी भई, मिलि मंगल गावै हो।
पिय का रली बधावणाँ, आँणद अंगि न मावै हो।

हरि सागर सूँ नेहरो, नैणाँ बंध्या सनेह हो।
मीराँ सखी के आँगणै, दूधाँ बूठा मेह हो॥

× × ×

फागुन के दिन चार रे, होरी खेल मना रे।
बिनि करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे।
बिनि सुर राग छतीसूँ गावै, रोम रोम रंग सार रे।
सील संतोख की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरहत रंग अपार रे।
घट के सब पट खोल दिये हैं, लोक लाज सब डार रे।
होरी खेलि पीव घर आये, सोइ प्यारी प्रिय प्यार रे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल बलिहार रे।

× × ×

रमइया बिनि यौं जिवड़ौ दुख पावै।
कहो कुण धीर बँधावै॥

यौ संसार कुबधि को भाँडो, साध सँगति नहिं भावै।
राम नाम की निंद्या ठाणै, करम ही करम कुमावै।
राम नाम बिनि मुकुति न पावै, फिर चौरासी जावै।
साध सँगत में कबहूँ न जावै, मूरखि जनन गुमावै।
जन मीराँ सतगुर के सरणाँ, जीव परमपद पावै॥

× × ×

चलो मन गंगा जमना तीर।
गंगा जमना निर्मल पाणी, सीतल होत सरीर।
बँसी बजावत गावत कान्हो, संग लियाँ बलबीर।
मोर मुगट पीतांबर सोहै, कुंडल झलकत हीर।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पै सीर॥

× × ×

जागो बंसीवारे ललना, जागो मोरे प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है, कँगना के झनकारे।
उठो लाल जी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे।

माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सरण आया कूँ तारे॥

× × ×

आज अनारी ले गयो सारी, बैठी कदम की डारी हे माय।
म्हारे मेल पड्यो गिरधारी, हे माय, आज अनारी।
मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृश्न मुरारी हे माय।
ले गयो सारी अनारी म्हारी, जल में ऊभी उघारी हे माय।
सखी साइनि मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि दे मोहि तारी हे माय।
सास बुरी अर नणद हठीली, लरि लरि दे मोहि गारी हे माय।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल की वारी हे माय॥

× × ×

आवत मोरी गलियन में गिरधारी।
मैं तो छुप गई लाज की मारी॥
कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी।
मुकट ऊपर छत्र बिराजे, कुंडल की छबि न्यारी।
केसरी चीर दरयाई को लेंगो, ऊपर अंगिया भारी।
आवत देखी किसन मुरारी, छिप गई राधा प्यारी।
मोर मुकट मनोहर सोहै, नथनी की छबि न्यारी।
गल मोतिन की माल विराजे, चरण कमल बलिहारी।
ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुण जे किसन मुरारी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी॥

× × ×

छाँडो लँगर मोरी बहियाँ गहोना।
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहोना।
जो तुम मोरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मोरे प्राण हरोना।
वृन्दाबन की कुंज गली में, रीति छोड़ अनरीति करोना।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चितटारे टरोना।

× × ×

होरी खेलत हैं गिरधारी।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवति ब्रजनारी।
चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी।
भरि भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी।

अपणे करम को वो छै दोस, काकूँ दीजै रे ऊधो अपणे० ।
सुणियो मेरी बगण पड़ोसण, गेले चलत लागी चोट ।
पहली ज्ञान मान नहिं कीन्हौ, मैं ममता की बाँधी पोट ।
मै जाण्यूँ हरि नाहि तजेंगे, करम लिख्यौ भलि पोच ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, परो निवारोनी सोच ।।

× × ×

गोहने गुपाल फिरूँ, ऐसी आवत मन में ।
अवलोकत बारिज बदन, बिबस भई तन में ।
मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारूँ ।
काछी गोप भेष मुकट, गोधन सँग चारूँ ।
हम भई गुलफ लता, वृन्दावन रैनाँ ।
पशु पंछी मरकट मुनी, श्रवन सुनत बैनाँ ।
गुरुजन कठिन कानि, कासौं री कहिए ।
मीराँ प्रभु गिरिधर मिलि, ऐसे ही रहिए ।।

× × ×

कुण बांचै पाती, बिना प्रभु कुण बांचै पाती ।
कागद ले ऊधो जी आयो, कहाँ रह्या साथी ।
आवत जावत पाँव घिस्या रे (बाला), अँखियाँ भई रातीं ।
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती ।
नैण नीरज में अंब बहे रे (बाला), गंगा बहि जाती ।
पाना ज्यूँ पीली पड़ी रे (बाला), अन्न नहिं खाती ।
हरि बिन जिवड़ो यूँ जलै रे (बाला), ज्यूँ दीपक सँग बाती ।
म्हने भरोसो राम को रे (बाला), डूबतिरयो हाथी ।
दास मीराँ लाल गिरधर, साँकड़ारो साथी ।।

× × ×

अच्छे मीठे चाख चाख, बेर लई भीलणी ।
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ।
जूठे फल लीन्हें राम, प्रेम की प्रतीत जाण ।
ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी ।
ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमाण चढ़ी।

हरि जी सूँ बाँध्यो हेत, दास मीराँ तरै जोइ ।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ।।

× × ×

देखत राम हँसे सदामाँ कूँ, देखत राम हँसे ।
फाटी तो फूलडियाँ पाँव उभाणे, चलतैं चरण घसे ।
बालपणे का मिंत सुदामाँ, अब क्यूँ दूर बसे ।
कहा भावज ने भेंट पठाई, तांदुल तीन पसे ।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा मोती लाल कसे ।
कित गई प्रभु मोरी गउवन बछिया, द्वारा बिच हसती फँसे ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, सरणे तोरे बसे ।।

× × ×

तेरो मरम नहिं पायौ रे जोगी ।
आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो ।
गल बिच सेली हाथ हाजरियो, अंग भभूति रमायो ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, भाग लिख्यो सो ही पायो ।।

× × ×

लागी सोही जाणै, कठण लगण दी पीर ।
विपति पड्याँ कोइ निकटि न आवै, सुख में, सब को सीर ।
बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर ।
जन मीराँ गिरधर के ऊपर, सदकै करूँ सरीर ।

× × ×

चालो अगम के देस, काल देखत डरै ।
वहाँ भरा प्रेम का होज, हंस केल्याँ करै ।
ओढण लज्जा चीर, धीरज को घाँघरो ।
छिमता काँकण हाथ, सुमति को मून्दरो ।
दिल दुलड़ी दरियाब, साँच को दोवड़ो ।
उबटण गुरुको ज्ञान, ध्यान को धोवणो ।
कान अखोटा ज्ञान, जुगत को भूटणो ।
बेसर हरि को नाम, चूड़ो चित ऊजलो ।
जीहर सील सँतोष, निरत को घूँघरो ।
बिदली गज और हार, तिलक गुरु ज्ञान को ।
सज सोलह सिणगार, पहरि सोने राखड़ी ।
साँवलिया सूँ प्रीति, औराँ सूँ आखड़ी ।।

× × ×

गली तो चारौ बन्द हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाइ।
ऊँची नीची राह लपटीली, पाँव नहीं ठहराइ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाइ।
ऊँचा नीचा महल पिया का, हमसे चढ्या न जाइ।
पिया दूर पंथ म्हाँरो भीणो, सुरत भकोला खाइ।
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड बटमार।
हे बिधना कैसी रच दीन्ही, दूर बस्यो म्हाँरी गाम।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुर दई बताय।
जुगन जुगन की बिछड़ी मीरा, घर में लीन्ही लाय॥

× × ×

भज मन चरण कँमल अबिनासी।
जेताइ दीसे धरण गगन बिच, तेताइ सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी।
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी।
यों संसार चहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी।
कहा भयो है भगवा पहर्याँ, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगति नहिं जाणी, उलटि जनम फिर आसी।
अरज करो अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी॥

× × ×

नहिं ऐसो जनम बार बार।
का जानूँ कछु पुण्य प्रगटे, मानुसा अवतार।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल, जात न लागे बार।
बिरछ के ज्यूँ पात टूटे, बहुरि न लागे डार।
भौसागर अति जोर कहिये, अनँत ऊंडी धार।
राम नाम का बाँध बेड़ा, उतर परले पार।
ज्ञान चौसर मँडी चोहटे, सुरत पासा सार।
या दुनिया में रची बाजी, जीत भावै हार।
साधु संत महंत ज्ञानी, चलत करत पुकार।
दासी मीराँ लाल गिरधर, जीवणा दिन चार॥

× × ×

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार।
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार।

कहरे खाइबो कइरे खरचियो, कहरे कियौ उपकार।
दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरे भव पार॥

× × ×

मनवा जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुर न आती।
अबके मोसर ज्ञान बिचारो, राम नाम मुख गाती।
सतगुरु मिलिया कुंज पिछाड़ी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती।
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोबिंद का गुण गाती।
साहब पाया आदि अनादी, नातर भव में जाती।
मीराँ कहे इक आस आपनी, औराँ सूँ सकुचाती॥

× × ×

बंदे बंदगी मति भूल।
चार दिना की करले खूबी, ज्यूँ दाड़िमदा फूल।
आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, रहना है बे हजूर।

× × ×

राम नाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजै।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित से बहाय दीजै।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै॥

× × ×

मेरो मन रामहिं राम रटै रे।
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खतजु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक कटोरे इम्रत भरियो, पीवत कौन नटै रे।
मीराँ कहै प्रभु हरि अबिनासी, तन मन ताहि पटै रे॥

× × ×

सूरत दीनानाथ सो लगी, तूँ तो समझ सुहागण नार।
लगनी लहँगो पहर सुहागण, बीती जाय बहार।
धन जोबन है पावणारी, मिलै न दूजी बार।
रामनाम को चुड़लो पहिरो, प्रेम को सुरमो सार।
नकबेसर हरिनाम की री, उतरि चलोनी परले पार।

ऐसे बर को क्या बरूँ, जो जनमै और मर जाय।
बर वरिये एक साँवरो री, (मेरो) चुड़लो अमर होय जाय।
मैं जान्यों हरि मैं ठग्यांरी, हरि ठग ले गयो मोय।
लख चौरासी मौरचा री, छिन में गेरया छै बिगोय।
सुरत चली जहाँ मैं चली री, कृष्ण नाम झणकार।
अबिनासी की पोल पर जी, मीरा करै छै पुकार॥

× × ×

मीराँ मन मानी सुरत सैल असयानी।
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी।
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत कसक कसक कसकानी।
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावै अन्न न पानी।
ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी।
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी।
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नहिं भरमों खानी।
खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी।
रैदास संत मिले मोहि सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी।
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी।
मीरा खाक खलक सिरडारी, मैं अपना घर जानी॥

गदाधर भट्ट

सखी हौं स्याम रंग रँगी।
देखि बिकाय गई वह मूरति सूरत माहिं पगी॥
संग हुतो अपनो सपनों सो सोइ रही रस खोई।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि नेकु न न्यारो होई॥
एक जु मेरी अँखियनि में निसि द्यौस रह्यो करि भौन।
गाय चरावन जात सुन्यो, सखि, सो धौं कन्हैया कौन?
कासों कहौ कौन पतियावै, कौन करै बकवाद?
कैसे कै कहि जात गदाधर, गूँगे कौ गुर स्वाद?

× × ×

झूलति नागरि नागर लाल।
मंद मंद सब सखी झुलावति, गावत गीत रसाल॥
फरहरात पट पीत नील के, अंचल चंचल चाल।
मनहुँ परस्पर उमगि ध्यान छबि प्रगट भई तिहिं काल॥

सिल सिलात अति प्रिया सीस ते लटकति बेनी भाल ।
जनु पिय मुकुट बरहि भ्रम बस तहँ ब्याली विकल विहाल ।।
मल्ली माल प्रिया के उर की, पिय तुलसी दल माल ।
जनु सुरसरि रवि - तनया मिलिकै सोभित श्रेनि मराल ।।
स्यामल गौर परस्पर प्रति छवि सोभा बिसद विसाल ।
निरखि गदाधर रसिक कुँवरि मन पर्यो सुरस जंजाल ।।

× × ×

जयति श्री राधिके, सकल सुख साधिके,
तरुनि - मनि नित्य नव तन किसोरी ।
कृष्ण तन लीन मन रूप की चातकी,
कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी ।
कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी,
कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी ।
कृष्ण अनुराग मकरन्द की मधुकरी,
कृष्ण गुन गान रस सिन्धु बोरी ।
विमुख पर चित ते चित्त जाको सदा,
करति निज नाह की चित्त चोरी ।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै,
अमित महिमा, इतै बुद्धि थोरी ।

स्वामी हरिदास

ज्योंही ज्योंही तुम राखत हौं, त्योंही त्योंही रहियत हौं हरि ।
और अपराधे पाय धरौ सुतौ कहौ, कौन के पैंड धरि ।।
जदपि हौं अपनो भायो कियो चाहौ, कैसे करि सकौं जो तुम राखौ पकरि ।
कहैं हरिदास पिंजरा के जनावर लौं, तरफराय रह्यो उडिबेको कितोऊ करि ।।

× × ×

गहो मन सब रस को रस सार ।
लोक बदे कुल करमैं तजिये भजिये नित्य बिहार ।।
गृह कामिनि कंचन धन त्यागौ सुमिरो श्याम उदार ।
गति हरिदास रीति संतन की गादी को अधिकार ।।

× × ×

गायो न गोपाल मन लाइकै निवारि लाज,
पायो न प्रसाद राज मंडली में जाइ के।
धायो न धमक बृँदा विपिन की कुंजन में,
रह्यो न सरन जाय विठलेस राइ के।
नाथ जू न देखि छक्यो छिनहूँ छबीली छाँव,
सिंह पौरि पर्‌यो नाहिं सीसहू नवाइ के।
कहे हरिदास तोहे लाजहू न आवे नेक,
जनम गमायो न कमायो कछु आइ के।

× × ×

हरि के नाम आलस क्यों करत है रे, काल फिरत सर साँधै।
हीरा बहुत जवाहर संचे, कहा भयो हस्ती दर बाँधै॥
बेर कुबेर कछू नहिं जानत, चढ़ो फिरत है काँधे।
कहि हरिदास, कछू न चलत जब आवत अन्त की आँधै॥

× × ×

हरि को ऐसोई सब खेल।
मृग तृस्ना जग व्यापि रही है, कहुँ बिजोरो न बेल॥
धन-मद जोबन-मद औ राज-मद ज्यों पंछिन में डेल।
कह हरिदास यहै जिय जानौ तीरथ को सौं मेल॥

× × ×

आजु तृन टूटत हैरी, ललित त्रिभंगी पर।
चरन चरन पर मुरलि अधर पर॥
चितवन बंक छबीली भुव पर॥
चलहु न बेगि राधिका पिय पै।
जो भई चाहत हौं सर्वोपरि॥
श्री 'हरिदास' समय जब नीकौ।
हिल मिलि केलि अटल रतिध्रुवपर॥

× × ×

झूलत डोल दुलहिनी दूलह।
उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत, खेल परस्पर झूलहु॥
बाजत ताल रवाब और बहु तरनि तनैया कूलहु।
श्री 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंज विहारी को अंतै नहिं फूलहु॥

× × ×

प्यारी तेरो बदन चन्द देखे।
मेरे हृदय सरोवर में कुमोदिनी फूली ॥
मन के मनोरथ तरंग अपार।
सुन्दरता तहँ गति मति भूली ॥
तेरो कोप ग्राह ग्रसै लिये जात।
छुड़ाये न छूटत रह्यो बुधिबल भूली ॥
श्री 'हरिदास' के स्वामी स्यामा चरन बनसी।
गहि काढ़ि रहे लपटाइ गहि भुजबली ॥

रहीम

तैं रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।
निसि बासर लागो रहै, कृष्णचन्द्र की ओर ॥
अच्युत-चरण-तरंगिणी, शिव सिर-मालति-माल।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव-भाल ॥
अधम बचन काको फल्यो, बैठि ताड़ की छाँह।
रहिमन काम न आइहैं, ये नीरस जग माँह ॥
अनकीन्ही बातैं करै, सोवत जागै जोय।
ताहि सिखाय जगायबो, रहिमन उचित न होय ॥
अनुचित उचित रहीम लघु, करहिं बड़ेन के जोर।
ज्यों ससि के संजोग तें, पचवत आगि चकोर ॥
अनुचित बचन न मानिए, जदपि गुराइसु गाढ़ि।
है रहीम रघुनाथ तें, सुजस भरत को बाढ़ि ॥
अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साचे से तो जग नही, झूठे मिलै न राम ॥
रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत मे, जानि परत सब कोय ॥
रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुये, जिन मुख निकसत नाहिं ॥
रहिमन सुधि सबते भली, लगै जो बारंबार।
बिछुरे मानुष फिर मिले, यहै जान अवतार ॥

अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि॥

अरज गरज मानैं नहीं, रहिमन ए जन चारि।
रिनियाँ, राजा, माँगता, काम आतुरी नारि॥

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल।
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल॥

उरग, तुरंग, नारी, नृपति, नीच जाति, हथियार।
रहिमन इन्हें सँभारिए, पलटत लगै न बार॥

एक उदर दो चोंच है, पंछी एक कुरंड।
कहि रहीम कैसे जिये, जुदे जुदे दो पिंड॥

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

ए रहीम दर दर फिरहिं, माँगि मधुकरी खाहिं।
यारो यारी छोड़िये, वे रहीम अब नाहिं॥

ओछो काम बड़े करैं, तौ न बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहै न कोय॥

अंजन दियो तो किरकिरी, सुरमा दियो न जाय।
जिन आँखिन सों हरि लख्यो, रहिमन बलि-बलि जाय॥

अंतर दाव लगी रहै, धुआँ न प्रगटै सोय।
कै जिय जाने आपुनो, कै जा सिर बीती होय॥

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन॥

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चंचला होय॥

कमला थिर न रहीम कहि, लखत अधम जे कोय।
प्रभु की सो अपनी कहै, क्यों न फजीहत होय॥

करम हीन रहिमन लखो, धँसो बड़े घर चोर।
चिंतत ही बड़ लाभ के, जागत ह्वैगो भोर॥

कहि रहीम इक दीप तें, प्रगट सबै दुति होय।
तन सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दोय॥

कहि रहीम या जगत तें, प्रीति गई दै टेर।
रहि रहीम नर नीच में, स्वारथ स्वारथ हेर॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत॥

कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई बिहाय।
माया ममता मोह परि, अन्त चले पछिताय॥

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥

कहु रहीम कैसे बनै, अनहोनी ह्वै जाय।
मिला रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय॥

कागद को सो पूतरा, सहजहि में घुलि जाय।
रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खैंचत बाय॥

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भए, नदी सिरावत मौर॥

काम न काहू आवई, मोल रहीम न लेइ।
बाजू टूटे बाज को, साहब चारा देइ॥

काह करौं बैकुंठ लै, कल्प बृच्छ की छाँह।
रहिमन दाख सुहावनो, जो गल पीतम बाँह॥

काह कामरी पामरी, जाड़ गए से काज।
रहिमन भूख बुताइए, कैस्यो मिलै अनाज॥

कुटिलन संग रहीम कहि, साधू बचते नाहिं।
ज्यों नैना सैना करें, उरज उमेठे जाहिं॥

कैसे निबहैं निबल जन, करि सबलन सों गैर।
रहिमन बसि सागर बिषे, करत मगर सों बैर॥

कोउ रहीम जनि काहु के, द्वार गये पछिताय।
संपति के सब जात हैं, बिपति सबै लै जाय॥

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम॥

खीरा सिर तें काटिए, मलियत नमक बनाय।
रहिमन करुए मुखन को, चहिअत इहै सजाय॥

खैंचि चढ़नि, ढीली ढरनि, कहहु कौन यह प्रीति।
आज काल मोहन गही, बंस दिया की रीति॥

खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान॥

गरज आपनी आपसों, रहिमन कही न जाय।
जैसे कुल की कुलबधू, पर घर जात लजाय ॥

गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव।
रहिमन जगत उधार कर, और न कछू उपाव ॥

गुन तें लेत रहीम जन, सलिल कूप तें काढ़ि।
कूपहु तें कहुँ होत है, मन काहू को बाढ़ि ॥

गुरुता फबै रहीम कहि, फबि आई है जाहि।
उर पर कुच नीके लगैं, अनत बतौरी आहि ॥

चरन छुए मस्तक छुए, तेहु नहिं छाँड़ति पानि।
हियो छुवत प्रभु छोड़ि दै, कहु रहीम का जानि ॥

चारा प्यारा जगत में, छाला हित कर लेत।
ज्यों रहीम आटा लगे, त्यों मृदंग स्वर देय ॥

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए, वे साहन के साह ॥

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।
जापर बिपदा पड़त है, सो आवत यहि देस ॥

चिंता बुद्धि परेखिए, टोटे परख त्रियाहि।
सगे कुबेला परखिए, ठाकुर गुनो कि आहि ॥

छिमा बड़ेन को चाहिए, छोटेन को उतपात।
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात ॥

छोटेन सो सोहैं बड़े, कहि रहीम यह रेख।
सहसन को हय बाँधियत, लै दमरी की मेख ॥

जब लगि बित्त न आपुनो, तब लगि मित्र न कोय।
रहिमन अंबुज अंबु बिनु, रवि नाहिंन हित होय ॥

ज्यों नाचत कठपूतरी, करम नचावत गात।
अपने हाथ रहीम ज्यों, नहीं आपुने हाथ ॥

जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं, यह रहीम जग जोय।
मँड़ए तर की गाँठ में, गाँठ गाँठ रस होय ॥

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह ॥

जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥

जे रहीम बिधि बड़ किए, को कहि दूषन काढ़ि ।
चंद्र दूबरो कूबरो, तऊ नखत तें बाढ़ि ॥

जे सुलगे ते बुझि गए, बुझे ते सुलगे नाहिं ।
रहिमन दाहे प्रेम के, बुझि बुझि कै सुलगाहिं ॥

जेहि अंचल दीपक दुर्‌यो, हन्यो सो ताही गात ।
रहिमन असमय के परे, मित्र शत्रु ह्वै जात ॥

जेहि रहीम तन मन लियो, कियो हिए बिच भौन ।
तासों दुख सुख कहन की, रही बात अब कौन ॥

जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय ।
ताको बुरो न मानिए, लेन कहाँ सो जाय ॥

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह ।
धरती पर ही परत है, शीत घाम औ मेह ॥

जैसी तुम हमसों करी, करी करी जो तीर ।
बाढ़े दिन के मीत हो, गाढ़े दिन रघुबीर ॥

जो अनुचितकारी तिन्हैं, लगै अङ्क परिनाम ।
लखे उरज उर बेधियत, क्यों न होय मुख स्याम ॥

जो पुरुषारथ ते कहूँ, संपति मिलत रहीम ।
पेट लागि बैराट घर, तपत रसोईं भीम ॥

जो बड़ेन को लघु कहे, नहिं रहीम घटि जाहिं ।
गिरधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ॥

जो मरजाद चली सदा, सोई तौ ठहराय ।
जो जल उमगै पार तें, सो रहीम बहि जाय ॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन बिष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥

जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय ।
प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय ॥

जो रहीम करिबो हुतो, ब्रज को इहै हवाल ।
तौ काहे कर पर धर्‌यो, गोबर्धन गोपाल ॥

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।
बारे उजियारो लगे, बढ़े अँधेरो होय ॥

जो रहीम जग मारियो, नैन बान की चोट ।
भगत भगत कोउ बचि गये, चरन कमल की ओट ॥

जो रहीम दीपक दसा, तिय राखत पट ओट।
समय परे तें होत है, वाही पट की चोट॥

जो रहीम तन हाथ है, मनसा कहुँ किन जाहि।
जल में जो छाया परी, काया भीजति नाहिं॥

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥

तन रहीम है कर्म बस, मन राखो ओहि ओर।
जल में उलटी नाव ज्यों, खैंचत गुन के जोर॥

तबही लौं जीबो भलो, दीबो होय न धीम।
जग में रहिबो कुचित गति, उचित न होय रहीम॥

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान॥

तासों ही कछु पाइए, कीजै जाकी आस।
रीते सरवर पर गये, कैसे बुझै पिआस॥

थोथे बादर क्वाँर के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भये, करै पाछिली बात॥

दादुर, मोर, किसान मन, लग्यो रहै घन माँहि।
रहिमन चातक रटनि हू, सरवर को कोउ नाहिं॥

दिव्य दीनता के रसहिं, का जाने जग अन्धु।
भली बिचारी दीनता, दीनबन्धु से बन्धु॥

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखै, दीनबंधु सम होय॥

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहि।
ज्यों रहीम नट कुण्डली, सिमिट कूदि चढ़ि जाहि॥

दुख नर सुनि हाँसी करै, धरत रहीम न धीर।
कही सुनै सुनि सुनि करै, ऐसे वे रघुबीर॥

दुरदिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भागि।
ठाढ़े हूजत घूर पर, जब घर लागत आगि॥

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि।
सोच नहीं वित हानि को, जो न होय हित हानि॥

देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरैं, याते नीचे नैन।।

दोनों रहिमन एक से, जौलौं बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं।।

धन थोरो इज्जत बड़ी, कह रहीम का बात।
जैसे कुल की कुलबधू, चिथड़न माँह समात।।

धन दारा अरु सुतन सों, लगो रहे नित चित्त।
नहि रहीम कोऊ लख्यो, गाढ़े दिन को मित्त।।

धनि रहीम गति मीन की, जल बिछुरत जिय जाय।
जिअत कंज तजि अनत बसि, कहा भौर को भाय।।

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय।।

धूर धरत नित सीस पै, कहु रहीम केहि काज।
जेहि रज मुनिपत्नी तरी, सो ढूँढत गजराज।।

नात नेह दूरी भली, लो रहीम जिय जानि।
निकट निरादर होत है, ज्यों गड़ही को पानि।।

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत।।

नैन सलोने अधर मधु, कहि रहीम घटि कौन।
मीठो भावै लोन पर, अरु मीठे पर लौन।।

परि रहिबो मरिबो भलो, सहिबो कठिन कलेस।
बामन ह्वै बलि को छल्यो, भलो दियो उपदेस।।

पात पात को सींचिबो, बरी बरी को लौन।
रहिमन ऐसी बुद्धि को, कहो बरैगो कौन।।

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।।

प्रीतम छबि नैनन बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिर जाय।।

फरजी साह न ह्वै सकै, गति टेढ़ी तासीर।
रहिमन सीधे चालसों, प्यादो होत वजीर।।

बड़ माया को दोष यह, जो कबहूँ घटि जाय।
तो रहीम मरिबो भलो, दुख सह जिये बलाय॥

बड़े दीन को दुख सुने, लेत दया उर आनि।
हरि हाथी सों कब हुती, कहु रहीम पहिचानि॥

बड़े पेट के भरन को, है रहीम दुख बाढ़ि।
यातें हाथी हहरि कै, दयो दाँत द्वै काढ़ि॥

बड़े बड़ाई नहि तजैं, लघु रहीम इतराइ।
राइ करौंदा होत है, कटहर होत न राइ॥

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़ो न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल॥

बढ़त रहीम धनाढ्य धन, धनौ धनी को जाइ।
घटै बढ़ै वाको कहा, भीख माँगि जो खाय॥

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम जिय सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो परोस॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

बिपति भए धन ना रहे, रहे जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भये भोर॥

भजौं तो काको मैं भजौं, तजौं तो काको आन।
भजन तजन ते बिलग हैं, तेहि रहीम तू जान॥

भलो भयो घर ते छुट्यो, हँस्यो सीस परि खेत।
काके काके नवत हम, अपन पेट के हेत॥

भार झोंकि के भार में, रहिमन उतरे पार।
पै बूड़े मझधार में, जिनके सिर पर भार॥

भीत गिरी पाखान की, अररानी वहि ठाम।
अब रहीम धोखो यहै, को लागै केहि काम॥

भूप गनत लघु गुनिन को, गुनी गनत लघु भूप।
रहिमन गिरि तें भूमि लौं, लखौ तो एकै रूप॥

मथत मथत माखन रहै, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥

मनसजि माली की उपज, कहि रहीम नहिं जाय।
फल श्यामा के उर लगे, फूल श्याम उर आय॥

मन से कहाँ रहीम प्रभु, दृग सो कहाँ दिवान।
देखि दृगन जो आदरैं, मन तेहि हाथ बिकान॥

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैग बसुधा करी, तऊ बावनै नाम॥

माँगे मुकरि न को गयो, केहि न त्यागियो साथ।
माँगत आगे सुख लह्यो, ते रहीम रघुनाथ॥

मान सरोवर ही मिले, हंसनि मुक्ता भोग।
सफरिन भरे रहीम सर, बक बालकनहि जोग॥

मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीस।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस॥

मुकता कर करपूर कर, चातक जीवन जोय।
एतो बड़ो रहीम जल, ब्याल बदन विष होय॥

मुनि नारी पाषान ही, कपि पसु गुह मतंग।
तीनों तारे राम जू, तीनो मेरे अङ्ग॥

यद्यपि अवनि अनेक हैं, कूपवंत सरिताल।
रहिमन मानसरोवरहिं, मनसा करत मराल॥

यह न रहीम सराहिये, देन लेन की प्रीति।
प्रानन बाजी राखिये, हारि होय कै जीति॥

यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, जस, होत होत ही होय॥

यह रहीम मानै नही, दिल से नवा जो होय।
चीता, चोर, कमान के, नये ते अवगुन होय॥

यातें जान्यो मन भयो, जरि बरि भस्म बनाय।
रहिमन जाहि लगाइये, सो रूखो ह्वै जाय॥

ये रहीम फीके दुबो, जानि महा संतापु।
ज्यौं तिय कुच आपुन गहे, आप बड़ाई आपु॥

यों रहीम गति बड़ेन की, ज्यों तुरंग व्यवहार।
दाग दिखावत आपु तन, सही होत असवार॥

रन, बन, ब्याधि, बिपत्ति में, रहिमन मरै न रोय।
जो रच्छक जननी जठर, सो हरि गये कि सोय॥

रहिमन अती न कीजिये, गहि रहिये निज कानि।
सैंजन अति फूले तऊ, डार पात की हानि॥

रहिमन अपने गोत को, सबै चहत उत्साह।
मृग उछरत आकाश को, भूमी खनत बराह ॥
रहिमन अपने पेट सों, बहुत कह्यो समुझाय।
जो तू अन खाये रहे, तो सों को अनखाय ॥
रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय।
बधिक बधै मृग बानसों, रुधिरै देत बताय ॥
रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह तें, कस न भेद कहि देइ ॥
रहिमन आँटा के लगे, बाजत है दिन राति।
घिउ शक्कर जे खात हैं, तिनकी कहा बिसाति ॥
रहिमन उजली प्रकृत को, नहीं नीच को संग।
करिया बासन कर गहे, कालिख लागत अंग ॥
रहिमन ओछे नरन सों, बैर भली ना प्रीति।
काटे चाटै स्वान के, दोऊ भाँति विपरीति ॥
रहिमन कठिन चितान तें, चिंता को चित चेत।
चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव समेत ॥
रहिमन कहत सुपेट सों, क्यों न भयो तू पीठ।
रीते अनरीते करै, भरे बिगारत दीठ ॥
रहिमन को कोउ का करै, ज्वारी, चोर, लबार।
जो पत राखनहार हैं, माखन चाखनहार ॥
रहिमन खोटी आदि की, सो परिनाम लखाय।
जैसे दीपक तम भखै, कज्जल वमन कराय ॥
रहिमन गली है साँकरी, दूजो ना ठहराहिं।
आपु अहै तो हरि नहीं, हरि सो आपुन नाहिं ॥
रहिमन घरिया रहँट की, त्यों ओछे की डीठ।
रीतिहि सनमुख होत है, भरी दिखावै पीठ ॥
रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं देर ॥
रहिमन छोटे नरन सों, होत बड़ो नहीं काम।
मढ़ो दमामो ना बने, सौ चूहे के चाम ॥
रहिमन जगत बड़ाइ की, कूकुर की पहिचानि।
प्रीति करै मुख चाटई, बैर करै तन हानि ॥

रहिमन जाके बाप को, पानी पिअत न कोय।
ताकी गैल अकाश लौं, क्यों न कालिमा होय॥
रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल॥

रहिमन ठठरी धूरि की, रही पवन ते पूरि।
गाँठ युक्ति की खुलि गई, अंत धूरि को धूरि॥

रहिमन तब लगि ठहरिए, दान मान सनमान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान॥

रहिमन तीन प्रकार तें, हित अनहित पहिचानि।
पर बस परे, परोस बस, परे मामिला जानि॥

रहिमन तीर की चोट तें, चोट परे बचि जाय।
नैन बान की चोट तें, चोट परे मरि जाय॥

रहिमन थोरे दिनन को, कौन करे मुँह स्याह।
नहीं छलन को परतिया, नहीं करन को ब्याह॥

रहिमन दानि दरिद्र तर, तऊ जाँचबे योग।
ज्यों सरितन सूखा परे, कुआ खनावत लोग॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥

रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सकै बचाय॥

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारी कर गहे, मद समुझै सब ताहि॥

रहिमन नीच प्रसंग तें, नित प्रति लाभ विकार।
नीर चोरावै संपुटी, मारु सहै घरिआर॥

रहिमन पर उपकार के, करत न यारी बीच।
माँस दियो शिवि भूप ने, दीन्हों हाड़ दधीच॥

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन॥

रहिमन पैंडा प्रेम को, निपट सिलसिली गैल।
बिछलत पाँव पिपीलिका, लोग लदावत बैल॥

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रँग दून।
ज्यों जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून॥

रहिमन ब्याह बिआधि है, सकहु तो जाहु बचाय।
पायन बेड़ी पड़त है, ढोल बजाय बजाय॥

रहिमन बहु भेषज करत, ब्याधि न छाँड़त साथ।
खग मृग बसत अरोग बन, हरि अनाथ के नाथ॥

रहिमन बात अगम्य की, कहन सुनन की नाहिं।
जे जानत ते कहत नहिं, कहत ते जानत नाहिं॥

रहिमन बिगरी आदि की, बनै न खरचे दाम।
हरि बाढ़े आकाश लौं, तऊ बावनै नाम॥

रहिमन भेषज के किए, काल जीति जो जात।
बड़े बड़े समरथ भए, तौ न कोउ मरि जात॥

रहिमन मनहिं लगाइ कै, देखि लेहु किन कोय।
नर को बस करिबो कहा, नारायन बस होय॥

रहिमन मारग प्रेम को, मत मतिहीन मझाव।
जो डिगिहै तो फिर कहूँ, नहिं धरने को पाँव॥

रहिमन माँगत बड़ेन की, लघुता होत अनूप।
बलि मख माँगन को गए, धरि बावन को रूप॥

रहिमन याचकता गहे, बड़ो छोट ह्वै जात।
नारायन हू को भयो, बावन आँगुर गात॥

रहिमन या तन सूप है, लीजै जगत पछोर।
हलुकन को उड़ि जान दै, गरुए राखि बटोर॥

रहिमन यों सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत॥

रहिमन रजनी ही भली, पिय सों होय मिलाप।
खरो दिवस किहि काम को, रहिबो आपुहि आप॥

रहिमन रहिबो वा भलो, जौ लौं सील समूच।
सील ढील जब देखिये, तुरत कीजिए कूच॥

रहिमन रहिला की भली, जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय॥

रहिमन राज सराहिए, ससि सम सुखद जो होय।
कहा बापुरो भानु है, तपै तरैयन खोय॥

रहिमन राम न उर धरै, रहत विषय लपटाय।
पसु खर खात सवाद सों, गुर गुलियाए खाय॥

रहिमन रिस को छाँड़ि कै, करो गरीबी भेस।
मीठी बोलो नै चलो, सबै तुम्हारो देस॥

रहिमन लाख भली करो, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हू, साँप सहजि धर खाय॥

रहिमन वहाँ न जाइये, जहाँ कपट को हेत।
हम तन ढारत ढेकुली, सींचत आपन खेत॥

रहिमन वित्त अधर्म को, जरत न लागै बार।
चोरी करि होरी रची, भई तनिक में छार॥

राम नाम जान्यो नहीं, भइ पूजा में हानि।
कहि रहीम क्यों मानिहै, जम के किंकर कानि॥

राम नाम जान्यो नहीं, जान्यो सदा उपाधि।
कहि रहीम तिहि आपुनो, जनम गँवायो वादि॥

रूप, कथा, पद, चारु, पट, कंचन, दोहा, लाल।
ज्यों ज्यों निरखत सूक्ष्मगति, मोल रहीम बिसाल॥

लालन मैन तुरंग चढ़ि, चलिबो पावक माँहि।
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहि॥

लिखी रहीम लिलार में, भई आन की आन।
पद करि काटि बनारसी, पहुँचे मगरु-स्थान॥

लोहे की न लोहार की, रहिमन करी बिचार।
जो हनि मारे सीस में, ताही की तलवार॥

विरह रूप घन तम भयो, अवधि आस उद्योत।
ज्यों रहीम भादों निसा, चमकि जात खद्योत॥

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग॥

सदा नगारा कूच का, बाजत आठों जाम।
रहिमन या जग आइ कै, को करि रहा मुकाम॥

सब को सब कोऊ करै, कै सलाम कै राम।
हित रहीम तब जानिए, जब कछु अटकै काम ॥

समय दसा कुल देखि कै, सबै करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान ॥

समय परे ओछे बचन, सब के सहै रहीम।
सभा दुसासन पट गहे, गदा लिए रहे भीम ॥

समय लाभ सम लाभ नहि, समय चूक सम चूक।
चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक ॥

सर सूखे पच्छी उड़ैं, और सरन समाहि।
दीन मीन बिन पच्छ के, कहु रहीम कहँ जाहिं ॥

साधु सराहै साधुता, जती जोखिता जान।
रहिमन साँचे सूर को, बैरी करै बखान ॥

सौदा करो सो करि चलौ, रहिमन याही बाट।
फिर सौदा पैहौ नहीं, दूरि जान है बाट ॥

संतत संपति जानि कै, सब को सब कछु देत।
दीनबंधु बिनु दीन की, को रहीम सुधि लेत ॥

ससि, सुकेस, साहस, सलिल, मान, सनेह रहीम।
बढ़त बढ़त बढ़ि जात हैं, घटत घटत घटि सीम ॥

सीत हरत, तम हरत नित, भुवन भरत नहि चूक।
रहिमन तेहि रबि को कहा, जो घटि लखै उलूक ॥

हित रहीम इतऊ करै, जाकी जिती बिसात।
नहिं यह रहै न वह रहै, रहै कहन को बात ॥

होय न जाकी छाँह ढिग, फल रहीम अति दूर।
बढ़िहू सो बिनु काज ही, जैसे तार खजूर ॥

× × ×

ओछे को सतसंग, रहिमन तजहु अँगार ज्यों।
तातो जारै अंग, सीरो पै कारो लगै ॥

रहिमन कीन्हीं प्रीति, साहब को भावै नहीं।
जिनके अगनित मीत, हमैं गरीबन को गनै ॥

रहिमन जग की रीति, मैं देख्यो रस ऊख में।
ताहू में परतीति, जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं ॥

रहिमन नीर पखान, बूड़ै पै सीझै नहीं।
तैसे मूरख ज्ञान, बूझै पै सूझै नहीं॥

रहिमन बहरी बाज, गगन चढ़े फिर क्यों तिरै।
पेट अधम के काज, फेर आय बंधन परै॥

रहिमन मन की भूल, सेवा करत करील की।
इनतें चाहत फूल, जिन डारन पत्ता नहीं॥

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पिआवै मान बिनु।
वरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो॥

बिंदु मो सिंधु समान, को अचरज कासों कहै।
हेरनहार हेरान, रहिमन अपुने आप तें॥

चूल्हा दीन्हो बार, नात रह्यो सो जरि गयो।
रहिमन उतरे पार, भार झोंकि सब भार में॥

× × ×

बंदौं देवि सरदवा, पद कर जोरि।
बरनत काव्य बरैवा, लगै न खोरि॥

लखि अपराध पियरवा, नहिं रिस कीन।
बिहँसत चनन चउकिया, बैठक दीन॥

बिनु गुन पिय-उर हरवा, उपट्यो हेरि।
चुप ह्वै चित्र पुतरिया, रहि मुख फेरि॥

बेरिहि बेर गुमनवा, जनि करु नारि।
मानिक औ गजमुकता, जौ लगि बारि॥

रहत नयन के कोरवा, चितवनि छाय।
चलत न पग-पैजनियाँ, मग अहटाय॥

लहरत लहर लहरिया, लहर बहार।
मोतिन जरी किनरिया, बिथुरे बार॥

लागे आन नबेलियहि, मनसिज बान।
उकसन लाग उरोजवा, दृग तिरछान॥

कवन रोग दुहुँ छतिया, उपजे आय।
दुखि दुखि उठै करेजवा, लगि जनु जाय॥

औचक आइ जोबनवाँ, मोहि दुख दीन।
छुटिगा संग गोइअवाँ, नहि भल कीन॥

पहिरति चूनि चुनरिया, भूषन भाव।
नैननि देत कजरवा, फूलनि चाव ॥

जंवन जोरत गोरिया, करत कठोर।
छुअन न पावै पियवा, कहुँ कुच-कोर ॥

ढीलि आँख जल अँचवत, तरुनि सुभाय।
धरि खसकाइ घइलना, मुरि मुसुकाय ॥

भोरहि बोलि कोइलिया, बढ़वति ताप।
घरी एक घरि अलवा, रह चुपचाप ॥

सुनि-सुनि कान मुरलिया, रागन भेद।
गैल न छाँड़त गोरिया, गनत न खेद ॥

निसु दिन सासु ननदिया, मुहि घर हेर।
सुनन न देत मुरलिया, मधुरी टेर ॥

मोहि बर जोग कन्हैया, लागौं पाय।
तुहु कुल पूज देवतवा, होहु सहाय ॥

चूनत फूल गुलबवा, डार कटील।
टुटिगा बंद अँगियवा, फट पट नील ॥

आयेसि कवनेउ ओरवा, सुगना सार।
परिगा दाग अधरवा, चोंच चोटार ॥

मैं पठयेउँ जिहि कमवाँ, आयेस साध।
छुटिगा सीस को जुरवा, कसि के बाँध ॥

मुहि तुहि हरवर आवत, भा पथ खेद।
रहि रहि लेत उससवा, बहत प्रसेद ॥

होइ कत आइ बदरिया, बरखहि पाथ।
जैहौं घन अमरैया, सुगना साथ ॥

जैहौं चुनन कुसुमियाँ, खेत बड़ि दूर।
नौआ केर छोहरिया, मुहि सँग कूर ॥

बाहिर लै के दियवा, बारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत, देत बुझाय ॥

तनिक सी नाक नथुनिया, मित हित नीक।
कहति नाक पहिरावहु, चित दै सींक ॥

आजु नैन के कजरा, औरै भाँत।
नागर नेह नबेलिया, सुदिने जात ॥

बालम अस मन मिलियउँ, जस पय पानि।
हँसिनि भइल सवतिया, लइ बिलगानि ।।

आपुहि देत जवकवा, गूँधत हार।
चुनि पहिराव चुनरिया, प्रान अधार ।।

अवरन पाय जवकवा, नाइन दीन।
मुहि पग आगर गोरिया, आनन कीन ।।

खीन मलिन बिखभैया, औगुन तीन।
मोहि कहत बिधुबदनी, पिय मतिहीन ।।

दाँतुल भयसि सुगरुवा, निरस पखान।
यह मधु भरल अधरवा, करसि गुमान ।।

मितवा करत बँसुरिया, सुमन सपात।
फिरि फिरि तकत तरुनिया, मन पछतात ।।

मित उत तें फिरि आयेउ, देखु न राम।
मैं न गई अमरैया, लहेउ न काम ।।

लखि लखि धनिक नयकवा, बनवत भेष।
रहि गइ हेरि अरसिया, कजरा रेख ।।

करिकै सोरह सिंगरवा, अतर लगाइ।
मिलेउ न लाल सहेटवा, फिरि पछिताइ ।।

भा जुग जाम जमनिया, पिय नहिं आय।
राखेउ कवन सवतिया, रहि बिलमाय ।।

कठिन नींद भिनुसरवा, आलस पाइ।
धन दै मूरख मितवा, रहल लोभाइ ।।

हँसि हँसि हेरि अरसिया, सहज सिंगार।
उतरत चढ़त नबेलिया, तिय कै बार ।।

सोवत सब गुरु लोगवा, जानेउ बाल।
दीन्हेस खोलि खिरकिया, उठि कै हाल ।।

कीन्हेसि सबै सिंगरवा, चातुर बाल।
ऐहै प्रानपिअरवा, लै मनिमाल ।।

आपुहि देत जवकवा, गहि गहि पाय।
आपु देत मोहि पिअवा, पान खवाय ।।

प्रीतम करत पियरवा, कहल न जात।
रहत गढ़ावत सोनवा, इहै सिरात ।।

मैं अरु मोर पियरवा, जस जल मीन।
बिछुरत तजत परनवा, रहत अधीन॥

भो जुग नैन चकोरवा, पिय मुख चंद।
जानत है तिय अपुनै, मोहि सुखकंद॥

लै हीरन के हरवा, मानिकमाल।
मोहि रहत पहिरावत, बस ह्वै लाल॥

चली लिवाइ नवेलिअहि, सखि सब संग।
जस हुलसत गा गोदवा, मत्त मतंग॥

पहिरे लाल अछुअवा, तिय गज पाय।
चढ़े नेह-हथिअवहा, हुलसत जाय॥

चली रैनि अँधिअरिया, साहस गाढि।
पायन केर कँगनिया, डारेस काढ़ि॥

नील मनिन के हरवा, नील सिगार।
किए रैनि अँधिअरिया, धनि अभिसार॥

सेत कुसुम के हरवा, भूषन सेत।
चली रैनि उँजिअरिया, पिय के हेत॥

पहिरि बसन जरतरिया, पिय के होत।
चली जेठ दुपहरिया, मिलि रबि जोत॥

धन हित कीन सिंगरवा, चातुर बाल।
चली संग लै चेरिया, जहवाँ लाल॥

परिगा कानन सखिया, पिय कै गौन।
बैठी कनक पलँगिया, ह्वै कै मौन॥

सुठि सुकुमार तरुनिया, सुनि पिय-गौन।
लाजनि पौंढ़ि ओबरिया, ह्वै कै मौन॥

पीतम इक सुमिरिनिया, मुहि देइ जाहु।
जेहि जप तोर बिरहवा, करब निबाहु॥

पियवा आय दुअरवा, उठि किन देख।
दुरलभ पाय बिदेसिया, मुद अवरेख॥

आवत सुनत तिरियवा, उठ हरषाइ।
तलफत मनहुँ मछरिया, जनु जल पाइ॥

तौ लगि मिटिहि न मितवा, तन की पीर।
जौ लगि पहिर न हरवा, जटित सुहीर॥

जहवाँ जात रइनियाँ, तहवाँ जाहु।
जोरि नयन निरलजवा, कत मुसुकाहु॥

सघन कुंज अमरैया, सीतल छाँह।
झगरत आय कोइलिया, पुनि उड़ि जाह॥

करबौं ऊँच अटरिया, तिय सँग केलि।
कबधौं पहिरि गजरवा, हार चमेलि॥

अब भरि जनम सहेलिया, तकब न ओहि।
ऐंठलि गइ अभिमनिया, तजि कै मोहि॥

पीतम मिलेउ सपनवाँ, भइ सुख-खानि।
आनि जागएसि चेरिया, भइ दुखदानि॥

पिय मूरति चितसरिया, चितवत बाल।
सुमिरत अवध बसरवा, जपि जपि माल॥

देखन ही को निस दिन, तरफत देह।
यही होत मधुसूदन, पूरन नेह॥

बिरह बिथा तें लखियत, मरिबौ भूरि।
जो नहि मिलिहै मोहन, जीवन मूरि॥

भादों निस अँधिअरिया, घर अँधिआर।
बिसर्‌यौ सुघर बटोही, शिव आगार॥

× × ×

गई आगि उर लाय, आगि लेन आई जो तिय।
लागी नाहिं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै॥

ठुरुक-गुरुक भरिपूर, डूबि डूबि सुरगुर उठै।
चातक जातक दूरि, देह दहे बिन देह को॥

दीपक हिए छिपाय, नवल बधू घर लै चली।
कर बिहीन पछिताय, कुच लखि निज सीसै धुनै॥

पलटि चली मुसुकाय, दुति रहीम उपजाय अति।
बाती सी उसकाय, मानों दीनी दीप की॥

यक नाहीं यक पीर, हिय रहीम होती रहै।
काहु न भई सरीर, रीति न वेदन एक सी॥

रहिमन पुतरी स्याम, मनहुँ जलज मधुकर लसै।
कैधों शालिग्राम, रूपे के अरघा धरे॥

तानसेन

अब मैं राम नाम कह टेरों।
मेरो मन लागो उनहीं सीतापति पद हेरो ।।
चरन सरोज श्रवन मन मेरो धुज अंकुस सुख केरो।
तानसेन प्रभु तुम बहुनायक इन भक्तन पर फेरो ।।

× × ×

प्रथम उठ भोर ही राधे-कृष्ण कहो मन।
जासों हो सब सिद्ध काज।
इह लोक परलोक के स्वामी।
ध्यान धरी ब्रजराज ।।
पतित उधारन जन प्रति पालन।
दीन दयाल नाम लेत जाय दुख भाज।
तानसेन प्रभु को सुमरो प्रातहिं।
जग में रहै तेरो लाज ।।

× × ×

मुरली की धुन सुन चकित भई सब ब्रज की नारी सुध न रही कछु
आपन तन मन घर की।
छक छक रीझ रीझ कर लेत बलाई कान्हर हर की ।।
ऐसे सुर ते बजावत जामें नीके सात सप्तक तान बिरह सुर की।
जिनहूँ सुन्यो तिनहूँ सुख पायो तानसेन प्रभु राधाबर की ।।

× × ×

घर घर ते ब्रज बनिता जो बन निकली।
आज कंचन थार भर भर नग नोछावर करत लाल की।
सप्त सुर ले गावत कंठ कोकला लाजत उपजत
अति रसाल गमक तान ताल की।
मदन महोत्सव साज समाज गोपिन वृन्द
मिल चलत चाल मराल की।
तानसेन प्रभु रस बस कर लीने।
तिरछी चितवन मदन गोपाल की ।।

× × ×

चलो तुमहूँ देखो कैसी मची होरी गावत रंग महल में नारी।
एक गावत एक मृदंग बजावत एक नाचत दै दै करतारी।।
अबीर गुलाल केशर पिचकारी तक तक मारत गावत हैं सब गारी।
तानसेन प्रभु खेल रच्यो है फगुवा लीन्हों है भारी।।

× × ×

आनन्द भयो आज आयो विजय घर-घर मंगलचार।
अनेक गज तुरंग साजे नौबत नगारे बाजे गज तुरंग साजे सवार।।
तत बीतत घन शिखर नाना विधि बाजत सुर पुर के द्वार।
ब्रह्मा वेद पढ़ें नारद मुनि गावें राजा रामचन्द्र जी के द्वार।।
तानसेन कहै सुनो साह अकबर दशहरा सुफल भई तिथि बार।।

× × ×

सुन्दर अति प्रबीन महा चतुर अचल राज करो,
रवि ससि जौलौं भूमि पर।
चिर चिरंजीब रहो जौलौं ध्रुव धरन तरन पवन पानी,
राजन मनि राजा रामचन्द्र रघुबर।।
तो सो तू ही और दूजो नाहीं मेरे जान,
सब जग को बिसंभर।
तानसेन तोरी अस्तुति कहाँ लौं बखानौं,
भक्त-बछल तोहैं ध्यावत सुर नर मुनिवर।।

× × ×

कौन सी रित मानी साँची कहो मन भावन।
निसि के जागे अनुरागे आये हो मोहिं रिझावन।।
बचन बनावत बन नहिं आवत कहै देत नैन बैन
दरसावन।
तानसेन के प्रभु वहीं सिधारो जहाँ सारी रैन रति रंग
जगावन।।

× × ×

इन अँखियन मन में विरह की बेल बई।
सींच सींच जल अंसुवन पानी री दिन-दिन
होत चाह नई।।
उलहन पातन नये से बूँद पताल गई।
तानसेन प्रभु तुमरे दरस बिन सब तन छीन भई।।

× × ×

आज कहाँ तज बैठी है भूषन ऐसे अंग कछु अरसीले।
बोलत बोल रुखाई लिये तुम कहे कुढंग किये अहसीले॥
क्यों न कहो दुख प्राण पिया सो अँसुअन रहे भर भर नै लजीले।
तानसेन सुख होवे जिनके तिनके मन भावन छैल छबीले॥

× × ×

एरी आली आज शुभ दिन गावहु मंगल चार।
चौक पुरावो मृदंग बजाओ रिझावो बँधावो बाँधो बंधनवार॥
गुनी गंधर्व अपसरा किन्नर बीन रबाब बजे करतार।
धन घरी धन पल मुहूरत तानसेन प्रभु पर बलिहार॥

× × ×

एरी गँवार ग्वार तूं कहा जाने रोगी पीन को मरम।
काँध कामरी और हाथ लकुट लिए ताकों जिय कहा होत नरम।
कटि सोहै पीत बसन डारो फिरत याही ते जानि जात तेरो धरम।
तानसेन कहे शबरी को जूठो खायो ताके जिय कहा होत सरम॥

× × ×

एरी तूं अंग अंग रंग राती अतही सयानी रितु पिय मन मानी।
सोलह कला समानी बोलत अमृत बानी तेरो मुख देखे चंद जोतहू लजानी॥
कटि केहर कदली जंघ नारा ता पर कोट वारों श्रीफल उरोजन की छबि आनी।
तानसेन कहे प्रभु दोउ चिरजीवी रहो तेरो नेह रहै जौलौं गंग जमुन पानी॥

× × ×

कहो जी तुम कौन हो कहाँ आये कहाँ कित ह्वै जावगे सबेरे।
हम तुमको पहचानत नाहिंन मेरे घर आवत दरेरे॥
लाल पाग पीतांबर सोहत और बनमाल गरेरे।
तानसेन के प्रभु नेक ज्यों ठाढ़े रहे सब सखियन मिल हेरे॥

× × ×

चंद्रबदनी मृगनयनी ता मध तारका गंग पुतरी कालिंदी इह बिधि
डोरे बनाय कीनी तिरबेनी।
छूटी पोत कंठ दीपक मुख को जोत होत तामें गुप्त प्रकट सरस्वती
मिली एन मेनी॥
सुंदर रूप अनुपम सोभा त्रिभुवन पाप ताप हरनी करत सुख चैनी।
तानसेन को करो निरमल तूं दाता भक्त जनन की बैकुंठ की नसैनी॥

× × ×

चंद्रबदनी मृगनयनी हंसगमनी चली है पूजन महादेव ।
कर लिये अग्र थार पुहपन के गुँथे हार सुख दीयरा जराये देवन में देव महादेव ।।
सोलह सिंगार बतीसों आभरन सज नखसिख सुंदरताई छबि बरनी न जाई है निरमल मंजन कर सेव ।।
तानसेन कहै धूप दीप पुष्प पत्र नैवेद्य ले ध्यान लगाय हर हर हर आदिदेव ।।

× × ×

चलो जाय पूछिये हरि के समाचार जसोदा के आँगन कछु तो लगी है री भीर ।
पियातें पाती आई बाँचीहू न परे उनको कहा हमारी पीर ।।
आवन कह गये अवधहूँ बीती अब कैसे जिय धरिये धीर ।
तानसेन प्रभु मधुबन को बिरम रहे कबधों मिलिहै जे हरे है चीर ।।

× × ×

जनम योहीं गँवायो बावरो अब गहे न हरि के चरनन ।।
हो जानो पीय जोबन थिर रहेगो भूली याही भरमन ।।
लख चौरासी भटकत भटकत सरन सुमेर पायो मनुष्य धरमन ।।
तानसेन के प्रभु सुमरन कर ले सुध चित करमन ।।

× × ×

जै गंगा जग तारनी जग जननी पाप हरनी बेद बरनी बैकुंठ निसानी ।
भागीरथी विष्णुपदा पवित्रा त्रिपथगा जाह्नवी जग जानी ।।
ईस सीस मध बिराजत त्रइलोक पावन किये जीव जंत खग मृग सुर नर मुनि ज्ञानी ।।
तानसेन प्रभु तेरी अस्तुत करे तूं दाता भक्त जनन की मुक्त को बरदानी ।।

× × ×

जै शारदा भवानी भारती विद्यादानी महावाक् बानी तेहि ध्यावै ।।
सुर नर मुनि मनि तोहिं कूं त्रिभुवन जानि जो जाकी मन इंछा सोई सोई पुजावै ।।
मंगला बुध दानी ज्ञान को निधानी वीणा पुस्तक धारनी प्रथम तोहि गावै ।।
तानसेन तेरी अस्तुति कहाँ लों सप्त स्वर तीन ग्राम रँग लय अच्छर आवै ।।

× × ×

ज्ञानपति महेश विद्यापति गणेश पृथ्वीपति नरेश बलपति हनुमान ।
सरितापति सागर गिरवरपति सुमेर राजनपति इंद्र धर्मनपति दान ॥
बाजनपति मृदंग पत्रनपति पान पंछिनपति गरुड़ भक्तनपति कान्ह ।
साहनपति साह दिल्लीपति पातसाह तानसेनपति अकबर अर्जुनपति बान ॥

× × ×

तन की तपन तबही मिटेगी मेरी जब प्यारे कूं दृष्टि भर देखूँगी ॥
जब दरस पाऊँ प्रान पीतम को जनम जीतब सुफल अपनों लेखूँगी ॥
अष्ट जाम मोहिं को ध्यान रहत वाको आली कोली भेटूँगी ॥
तानसेन प्रभु कोउ आन मिलावै ताके पाँयन सीस टेकूँगी ॥

× × ×

तेरे नयन लीने री जिन मोहे स्याम सलोने ।
अति ही दीर्घ बिसाल बिलोले कारे भारे पिय रस रिझाये कोने ॥
बदन जोत चंद्रहूते निर्मल कुच कठोर अति ठोने बोने ।
तानसेन प्रभु सों रतिमानी कंचन कसौटी कसोने ॥

× × ×

धीरे धीरे मन धीरे ही सब कुछ होय ।
धीरे राज धीरे काज धीरे जोग धीरे ध्यान धीरे सुख समाज जोय ॥
धीरे तीरथ धीरे व्रत संजम धीरे ही करे सत्संग सेवा साध के बैठ मन
को धीरे राखोय ।
तानसेन कहें सुनो साह अकबर एतो बड़ो राज एती बड़ी बादसाही
धीरे ही ते पाई सोय ॥

× × ×

नाद अगाध बहुत गये हैं साध सुर नर गुनी गंधर्व रचपच गये सिद्ध
सँवार ।
काहू न पायो पार कर कर थाके विचार कँवल आसन शिवश्रवन धार ॥
अंजनी नंदन कहे उचार सरस्वती तरन लागी हिय में दो तूंबा डार ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना बाइस सुहत उनचास कोट तन
असंन्यास विकृत धार ।
छह राग छतीस रागणी ओडव के भेद सुध मुद्रा सुध बानी तानसेन
करो बिना जाको सूझत न आरपार ॥

× × ×

मनमोहन मनमानी यातें तू प्रबीण सयानी ।
सुंदर बदन चंद्रकला लजानी तोसी तूं ही तिया और नहीं तिहूँ लोक सानी ।।
तानसेन चिर चिरजीवो ऐसी प्रीत रही जौलों जमुन गंग पानी ।।

× × ×

मन ही मन में तू रार रही धर आप अपबस कर के सबन तें दुराय बिराय
कर रही सो अरगट परगट नैन बताय देत ।
प्रानेसुर की प्रीत अति गुपत कियो चाहे अत री तेरे दृगपाल तें अनजान
जान लेत ।।
जौलों मैं न सिखाई तौलो आई नेह नजर जनम जनम हित समेत ।
तानसेन प्रभु के रंग रंगे जे अरन बरन सेत असेत ।।

× × ×

माइ री महा कठिन भयो मिल बिछुरे की पीर ।
घरीं घरीं पल छिन जुग से बीतन लागे नैनन भर भर आवत नीर ।।
जब से प्यारो भयो न्यारो कल ना परत मेरो बीर ।
तानसेन के प्रभु बेग आवन कीनों जियरा धरत नहीं धीर ।।

× × ×

मोसों अवधि बद गये गुंसाई रहे कवन भाँत ।
रैना दिना मग जोवत जात ऐसी कौन तिय जेहि रिझाय कीनो मात ।।
अंजन अधर भाल महावर नवल तिया ललचात ।
तानसेन प्रभु वहीं सिधारो जहाँ जागे सारी रात ।।

× × ×

लंगर बटमार खेले होरी ।
बाट गाट कोउ निकस न पावै पिचकारिन रंग बोरी ।
मैं जू गई जमुना जल भरने गह मुष मींजी रोरी ।
तानसेन प्रभु नंद को ढोटा बरज्यो न मानत गोरी ।।

× × ×

सुर मुनि को परनाम करि, सुगम करौं संगीत ।
तानसेनि वाणी सरस, जान गान की प्रीत ।।
देख्यौ शिवमत भरतमत, हनूमान मत जोइ ।
कहै संगीत बिचारि कै, तानसेनि मत सोइ ।।
गीत वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ नाम संगीत ।
तानसेनि सुमतङ्ग मुनि, भरत मते हो थीत ।।

द्वै प्रकार संगीत है, मारग देसी जानु।
मारग ब्रह्मादिक कह्यौ, देसी देसनि मानु॥
गीत वाद्य अरु नृत्य रस, साधारण गुण जोइ।
तानसेनि उपजै नहीं, सो संगीत न होइ॥
द्वै प्रकार जो नाद है, राख्यौ सुरमुनि जानि।
तानसेनि जु कह्यौ है, बहुबिधि तिनै बखानि॥
नाहत नाद जो मुक्ति दै, आहत रंजक जाबि।
भौ भंजन मीयां प्रगट, नादहिं कह्यो बखानि॥
नाहत बाजत आपुही, आहत दैव बजाइ।
तानसेन संगीत मत, इन्हके कहे सुभाइ॥
नाद अनाहत को सदा, सुरमुनि करैं जु ध्यान।
गुर उपदेसै मुक्ति दै, यह जानौ परिनाम॥

× × ×

वायु अग्नि संजोग ते, उपजत आहत नाद।
तानसेनि संगीत मत, कह्यौ सुरनि ब्रह्माद॥
जी टारत है चित्त को, चित्त टारत है अग्नि।
टारत अग्नि जु वायु को, ब्रह्म ग्रंथि जो मग्नि॥
ततछुन ऊरध को चलै, ब्रह्म ग्रंथि की वायु।
सुच्छम धुनि ह्वै नाभि की, अंग मध्य पुष्टायु॥
होय पुष्ट जो सीस मैं, कृत्यम बहुमुष आइ।
पंच स्थानन फिरत है, तानसेनि मुष भाइ॥
कही जु उतपति नाद की, शास्त्र रीति परमान।
तानसेन संगीत मत, जानौ चतुर सुजान॥
गीत वाद्य अरु नृत्य कौ, कह्यौ आतमा नाद।
तानसेनि संगीत मत, जामै उपजत स्वाद॥
तीनौ मत बस नाद के, कह्यौ सुमुनिन प्रमान।
ताहि हिये मँह जानि निज, मीयाँ सरस सुजान॥
बरन बात ब्यवहार मैं, मिल्यौ रहतु है नाद।
तानसेनि सब जीति भय, और कहै सो बाद॥
नाद ज्ञान बरतत रहै, सारद के परसाद।
केवल पशु जड़ नाग ए, कुण्डल भै सुनि नाद॥

पसु सिसु अहि सन्तुष्ट भौ, सुनौ सब्द जिन नाद।
तानसेनि यह नाद की, कहि न जात मरजाद ॥
नाद उदधि के पार को, केती करी उपाइ।
मज्जन के डर सारदा, तूंबी रही लगाइ ॥

अकबर

जाको जस है जगत मैं, जगत सराहै जाहि।
ताको जीवन सफल है, कहत अकब्बर साहि ॥

साहि अकब्बर एक समैं चले कान्ह विनोद विलोकन बालहि।
आहट ते अबला निरख्यो चकि चौंकि चली करि आतुर चालहि।
त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सु भई छबि यों ललना अरु लालहि।
चम्पक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिये अहि व्यालहि।

× × ×

केलि करैं विपरीत रमैं सुअकब्बर क्यों न इतो सुख पावै।
कामिनि की कटि किंकिन कान किधौं गनि पीतम के गुन गावै।
बिन्दु छुटी मन में सुललाट तें यों लट में लटको लगि आवै।
साहि मनोज मनो चित मैं छबि चन्द लये चकडोर खिलावै ॥

बीरबल

पूत कपूत, कुलच्छनि नारि, लराक परोस, लजाथन सारो।
बन्धु कुबुद्धि, पुरोहित लम्पट, चाकर चोर, अतीथ छुतारो।
साहब सूम, अराक तुरंग, किसान कठोर, दिवान नकारो।
ब्रह्म भनै सुन शाह अकब्बर, बारहो बाँधि समुद्र में डारो।

× × ×

सखि भोर उठी बिन कंचुकी भामिनि कान्हर ते करि केलि घनी।
कवि ब्रह्म भनै छबि देखत ही कहि जात नहीं मुख ते बरनी।
कुच अग्र नखच्छत कंत दयो सिर नाय निहारि लियो सजनी।
ससि सेखर के सिर से सु मनों निहुरे ससि लेत कला अपनी।

× × ×

एक समै हरि धेनु चरावत, वेनु बजावत मंजु रसालहि।
डीठि गई चलि मोहन की वृषभानु सुता उर मोतिन मालहिं।
सो छबि ब्रह्म लपेटि हिए करसों कर लैकर कंज सनालहि।
ईस के सीस कुसुम्भ की माल मनो पहिरावत व्यालिनि व्यालहि।

× × ×

उछरि उछरि भेकी झपटै उरग पर उरग पै केकिन के लपटै लहकि है।
केकिन के सुरति हिए को ना कछू है भये एकी करी केहरिन बोलत बहकि है।
कहै कवि ब्रह्म वारि हेरत हरिन फिरैं बैहर बहत बड़े जोर सों जहकि है।
तरनि के तावन तवा सी भई भूमि रही दसहू दिसान में दवारिसी दहकि है।

टोडरमल

गुन बिन धन जैसे, गुरू बिन ज्ञान जैसे,
मान बिन दान जैसे, जल बिन सर है।
कण्ठ बिन गीत जैसे, हित बिन प्रीत जैसे,
वेश्या रस रीति जैसे, फल बिन तर है।
तार बिन जंत्र जैसे, स्यने बिन मंत्र जैसे,
पुरुष बिन नार जैसे, पुत्र बिन घर है।
टोडर सुकवि तैसे मनमें विचार देखो,
धर्म बिन धन जैसे पच्छी बिन पर है।

× × ×

जार को विचार कहा, गनिका को लाज कहा,
गदहा को पान कहा, आँधरे को आरसी।
निगुनी को गुन कहा, दान कहा दारिदी को,
सेवा कहा सूम को, अरण्डन की डारसी।
मदपी को सुचि कहा, सोंच कहा लम्पट को,
नीच को बचन कहा, स्यार की पुकार सी।
टोडर सुकवि ऐसे हठी ते न टारे टरै,
भावे कहो सूधी बात, भावै कहो फारसी।

× × ×

सोहै जिन सासन में आतमानुसासन सु
जी के दुखहारी सुखकारी साँची सासना।

जाको गुन भद्रकार गुण भद्र जाको जानि,
भद्र गुन धारी भव्य करत उपासना।
ऐसे सार सास्त्र को प्रकास अर्थ जीवन को,
बनै उपकार नासै मिथ्या भ्रम वासना।
ताते देस भाषा अर्थ को प्रकास करु जाते,
मंद बुद्धि हूँ के हिए होवै अर्थ भासना।

अग्रदास

कुन्डल ललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा।
तिनको निरखि प्रकास लजत राकेस दिनेसा।
मेचक कुटिल विसाल सरोरुह नैन सुहाए।
मुख पंकज के निकट मनो अलि छौना छाए।
× × ×
पहरे राम तुम्हारे सोवत, मैं मतिमंद अंध नहिं जोवत।
अपमारग मारग महि जान्यो, इन्द्री पोषि पुरुषारथ मान्यो।
औरनि के बल अनत प्रकार, अगरदास के राम अधार।

नाभादास

त्रेता काव्य निबन्ध करी सत कोटि रसायन।
इक अच्छर उच्चरे ब्रह्म इत्यादि परायन।
अब भक्तन सुख दैन बहुरि लीला विस्तारी।
राम चरच रसमत्त रहत अहनिसि व्रतधारी।
संसार अपार के पार को, सुगम रूप नौका लियो।
कलि कुटिल जीव निस्तारहित बाल्मीक तुलसी भयो।
× × ×
अवधपुरी की सोभा जैसी। कहि नहि सकहि शेष श्रुति तैसी।
रचित कोट कल धौत सुहावन। विवध रंग मति अति मन भावन।
चहुँदिसि विपिन प्रमोद अनूपा। चतुर जोजन रस रूपा।
सुदिसि नगर सरजू सरि पावनि। मनिमय तीरथ परम सुहावनि।
विगसे जलज भृंग रस भूले। गुन्जत जल समूह दोउ कूले।
परिखर प्रति चहुँ दिसि लसति, कंचन कोट प्रकाश।
विविध भाँति नग जगमगत, प्रति गोपुर पुरआस।।

हृदयराम

जानकी को मुख न विलोक्यो ताते कुन्डल।
न जानत हौं, वीर पायँ छुवै रघुराइ के॥
हाथ जो निहारे नैन फूटि है हमारे।
ताते कंकन न देखे, वाले कह्यो सत भाइ के॥
पाँयन के परिवे को जाने दास लछिमन।
याते पहिचानत है भूषन जे पाइ के॥
बिछुआ है एई, अरु झांझ है एई जुग।
नूपुर है तेई राम जानत जराइ के॥

× × ×

एहो हनू! कह्यो श्रीरघुबीर कछू सुधि है सिय की छिति माँही।
हे प्रभु लंक कलंक बिना सुबसै तहँ रावन बागकी छाँही।
जीवित है? कहिबोई को नाथ, क्यों न मरी हमते बिछुराहीं।
प्रान बसै पद पंकज में जम आवत है पर पावत नाहीं।

× × ×

सातो सिन्धु सातों लोक सातों रिषि है ससोक,
सातो रवि थोरे थोरे देखे न डरात मैं।
सातो दीप ईति काँप्योई करत और,
सातो मत रात दिन प्रान है न गात है।
सातो चिर जीव बरराइ उठे बार बार,
सातो सुर हाय हाय होत दिन रात है।
सातहू पताल काल सबद कराल राम।
भेदे सात ताल, चाल परी सात सात में।

प्राणचंद चौहान

कातिक मास पच्छ उजियारा। तीरथ पुन्य सोम कर वारा॥
ता दिन कथा कीन्ह अनुमाना। शाह सलेम दिलीपति थाना॥
संवत सोरह सै सत साठा। पुन्य प्रगास पाय भय नाठा॥
जो सारद माता करु दाया। बरनौं आदि पुरुष की माया॥
जेहि माया कह मुनि जगमूला। ब्रह्मा रहे कमल के फूला॥

सरवर नीर न पीवहीं स्वाति बुंद की आस ।
केहरि कबहुँ न तृन चरै जो व्रत करै पचास ॥
जो व्रत करै पचास बिपुल गज्जूह बिदारै ।
धन ह्वै गर्व न करै निधन नहिं दीन उचारै ॥
नरहरि कुल क सुभाव मिटै नहिं जब लग जीवै ।
बरु चातक मरि जाय नीर सरवर नहिं पीवै ॥

× × ×

भूमि परत अवतरत करत बानक बिनोद रस ।
पुनि जोबन मदमत्त तत्व इन्द्री अनङ्ग बस ॥
विजय हेत जड़ फिरत बहुरि पहुँच्यो बिरधप्पन ।
गयो जन्म गुन गनत अन्त कछु भयो न अप्पन ॥
थिर रहत न कोउ नरपति न बल रहत एक चहुँजुग्ग जस ।
सुइ अजर अमर नरहरि निरखि पिये भक्ति भगवंत रस ॥

× × ×

कबहुँ द्वार प्रतिहार कबहुँ दर दर फिरंत नर ।
कबहुँ देत धन कोटि कबहुँ कर तर करंत कर ॥
कबहुँ नृपति मुख चहत कहत करि रहत वचन बस ।
कबहुँ दास लघु दास करत उपहास जिभ्य रस ॥
कछु जानि न संपति गर्ब्बिये विपति न यह उर आनिये ।
हिय हारि न मानत सत पुरुष नरहरि हरिहिं सँभारिये ॥

× × ×

अरिहुँ दन्त तिन धरै-ताहि नहि मारि सकत कोइ ।
हम संतत तिनु चरहिं, बचन उचारहि दीन होइ ॥
अमृत पय नित स्रवहिं-बच्छ महि थंभन जावहि ।
हिन्दुहिं मधुर न देहिं कटुक तुरकहिं न पियावहि ॥
कह कबि नरहरि अकबर सुनौं विनवत गउ जोरे करन ।
अपराध कौन मोहि मारियत मुएहु चाम सेवहि चरन ॥

कृपा राम

परसि पाइ बोली बिहँसि, वेगि चलो रस दानि ।
तो हित कीन्हों कुन्ज में, रसिक बसेरो आनि ॥
विरह सतावै रैन दिन, तऊ रटै तुष नाम ।
चातिक ज्यों स्वाती चहै, पाती चहै सुबाम ॥

भादौं की अधराति, गरजि गरजि बरषै जलद ।
लिए सुप्यारी जाति, जरति न बन धन कुपथ पथ ।।

लखि यों हुलसति मनहि मन, लखत लखे भजि जाहिं ।
असन बसन भूषन विमल, लहे वधू सरसाहिं ।।

आवत जोबन कछुक तन, होत डहडहे अंग ।
शिशुता की हलचल कही, ललिता ललित सुरंग ।।

खिझवति हँसति लजाति पुनि, चितवत चमकति हाल ।
सिसुता जोवन की झलक, भरे वधू तन ख्याल ।।

नवल बधू तन तरु नई, नई रही है छाइ ।
दे चशमा चख चतुरई, लघु सिसुता लखि जाइ ।।

पति समीप दोउ प्रिया, लखति द्वैज को चंद–
चाँपि चरन सो चरन इक, लालन लग्यो अनंद ।।

मोल तोल छवि एक के, गुहि मोतिन के हार ।
लेहु वधुनि सो हँसि कह्यो, धरि समीप सुकुमार ।।

अति प्रवीन वह सुन्दरी, मोहन को हित आँकि ।
सबकी दीठि बचाइके, गई झरोकनि झाँकि ।।

फीके लागत उर अबै, गुरु गुरुजन के बोल ।
नीके नंद किसोर के, करै सखी चित लोल ।।

प्यारी प्यारे सो प्रथम मिलत परम परवीन ।
मंद मंद बोलै बिहँसि जनु डरपति रस लीन ।।

हित हित को पर सखिन मुख, प्रगटउ सुन्यो सुबाम ।
गही चित्रगति सुन्दरी, रही बैठि निज धाम ।।

कौन सुने कासों कहौं, जब तब रोकत गैल ।
को मोहन सखि नाहि री, मो ननदोई छैल ।।

धुने बाँस की बाँसुरी, डारि चले नँदलाल ।
लेहु कनक की नग जटित, मो घर धरी रसाल ।।

अबै चल्यौ पति गाँव को, नहीं और घर कोइ ।
हितहिं सुनायो हितहिं वर, भरि लोचन में तोइ ।।

पति विदेस सूनो सदन, बिरह सतावै रैन ।
स्याम सुनै यों सखिन सों, कहै सुलोचनि बैन ।।

गयो निकसि मुखतें कहूँ, भोरे परतिय नाम ।
बिघ घूँघट प्यारी वधू, कीन्हे लोचन ताम ।।

आज सवारे हौं गई, नन्दलाल हित ताल ।
कुसुम कुमुदनी के भटू, निरखे औरै हाल ॥
खंजन मीन कुरंग गन, मैं जीवे सुनि बाल ।
मृगलोचनि मोसों कहै, बिन समझे क्यों लाल ॥
भूले पंथ सुकुञ्ज के, धौं अरसाने लाल ।
नूतन और मिली कहूँ, यों सोचै उर बाल ॥
चली स्याम हित राधिका, सरद उजेरी माहिं ।
चंद उजेरी सों मिलत, नेकु न जानी जाहिं ॥
रैन अँधेरी नील पट, मृगमद चर चित अंग ।
सघन घटा सी लखि परै, रँगी स्याम के रंग ॥
तजि गोकुल अकरूर संग, मथुरा चलत गुपाल ।
विरह अनल उपज्यो हिएँ, सुनत राधिके हाल ॥
चहै संग अकरूर के, गौन कियो ब्रजराज ।
सुनि धुनि सूकी सुन्दरी, भूलि गयो गृहकाज ॥
नचत विलोके रास में सगुन सलोने स्याम ।
ऊधो ते क्योहु न लखे, निरगुन निपट निकाम ॥
माल व्याल जाये भई, चंदन भयो दवागि ।
निसदिन भामिनि भौन में, फिरत बिरह तन दागि ॥
सहि न सकति तन दुसह दुख कहि न सकत पिक बैन ।
तरफराति सफरीन लौं, बिन जल हित मृग नैन ॥
जा सुमिरे पातक नसै, लसै सकल शुभ काम ।
सोई प्रभु मो मन बसौ, नन्द नन्द घनस्याम ॥

गंग

चकित भँवर रहि गयौ गमन नहिं करत कमलबन ।
अहि फनि मनि नहिं लेत तेज नहिं बहत पवन घन ॥
हंस मानसर तज्यो चक्क चक्की न मिलै अति ।
बहु सुन्दरि पद्मिनी पुरुष न चहैं न करैं रति ॥
खलभलित सेस कवि गंग भमि अमित तेज रवि रथ खस्यो ।
खानान खान बैरम सुवन जि दिन क्रोध करि तँग कस्यो ॥

× × ×

बैठी थी सखिन संग पिय को गवन सुन्यो,
सुख के समूह में वियोग आग भरकी।
गंग कहै त्रिविध सुगंध लै पवन बह्यो,
लागतही ताके तन भई बिथा जर की।
प्यारी को परसि पौन गयो मानसर पहँ,
लागत ही औरै गति भई मानसर की।
जलचर जरे औ सेवार जरि छार भयो,
जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दरकी॥

× × ×

नवल नवाब खानखाना जू तिहारी त्रास,
भागे देसपती धुनि सुनत निसान की।
गंग कहै तिनहूँ की रानी राजधानी छाँड़ि,
फिरै बिललानी सुधि भूली खान पान की।
तेऊ मिली करिन हरिन मृग बानरन,
तिनहूँ की भली भई रच्छा तहाँ प्रान की।
सची जानी करिन भवानी जानी केहरिन,
मृगन कलानिधि कपिन जानी जानकी॥

× × ×

प्रबल प्रचण्ड बली बैरम के खानखाना,
तेरी धाक दीपन दिसान दह दहकी।
कहै कवि गंग तहाँ भारी सूर वीरन के,
उमड़ि अखंड दल प्रलै पौन लहकी।
मच्यो घमसान तहाँ तोप तीर बान चलै,
मंडि बलवान किरवान कोपि गहकी।
तुंड काटि मुंड काटि जोसन जिरह काटि,
नीमा जामा जीन काटि जिमी आनि ठहकी॥

× × ×

झुकत कृपान मयदान ज्यों उदोत भान,
एकन तें एक मनो सुखमा जरद की।
कहैं कवि गंग तेरे बल की बयारि लगे,
फूटी गज घटा घन घटा ज्यों सरद की।
एते मान सोनित की नदियाँ उमड़ि चलीं,
रही न निसानी कहूँ महि में गरद की।

गौरी गह्यो गिरिपति गनपति गह्यो गौरी,
गौरीपति गह्यो पूँछ लपकि बरद को॥
फूट गये हीरा की बिकानी कनी हाट हाट,
काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोल को लयो।
टूट गई लंका फूट मिल्यो जो विभीषन है,
रावन समेत वंश आसमान को गयो।
कहै कवि गंग दुर्योधन से छत्रधारी,
तनक में फूटें तें गुमान वाको नै गयो।
फूटे तें नरद उठि जात बाजी चौसर की,
आपुस के फूटे कहु कौन को भलो भयो॥

× × ×

आवत हौं चले शिव शैलेतें गिरीश जाँचे,
मिल्यो हुतो मोहि जहाँ सागर सगर को।
कविन की रसना के पालकी पै चढ़ो जात,
संग सोहै रावरो प्रताप तेज वर को।
कवि गंग पूछी तुम को हौ कित जैहो, उन,
कह्यो मोसों हँसिकै सनेसो ऐसो थर को।
जस मेरो नाम मेरो दसो दिसि काम मेरो,
कहियो प्रनाम हौं गुलाम बीरबर को॥

× × ×

देखत के बृच्छन में दीरघ सुभायमान,
कीर चल्यो चाखिबे को प्रेम जिय जग्यो है।
लाल फल देखि कै जटान मड़रान लागे,
देखत बटोही बहुतेरे डगमग्यो है।
गंग कवि फल फूटे भुआ उधिरान लखि,
सबन निरास ह्वै कै निज गृह भग्यो है।
ऐसो फलहीन बृच्छ बसुधा में भयो यारो,
सेमर बिसासी बहुतेरन को ठग्यो है॥

× × ×

मृगहू ते सरस बिराजत बिसाल दृग,
देखिये न अति दुति कौलहू के दल मैं।

'गंग' घन दुज से लसत तन आभूषन,
ठाढ़े द्रुम छाँह देख ह्वै गई बिकल मैं।
चख चित चाय भरे शोभा के समुद्र माँझ,
रही ना सँभार दसा और भई पल मैं।
मन मेरो गरुओ गयोरी बूड़ि मैं न पायो,
नैन मेरे हरुये तिरत रूप जल मैं॥

× × ×

चकई बिछुरि मिली तू न मिली प्रीतम सों,
गंग कवि कहै ये तो कियो मान ठानरी।
अथये नछत्र ससि अथई न तेरी रिस,
तू न परसन परसन भयो भान री।
तू न खोली मुख खोलो कंज औ गुलाब मुख,
चली सीरी वाय तू न चली भो बिहान री।
राति सब घटी नाहीं करनी ना घटी तेरी,
दीपक मलीन ना मलीन तेरो मान री॥

× × ×

अधर मधुप ऐसे वदन अधिकानी छवि,
विधि मानो विधु कीन्हो रूप को उदधि कै।
कान्ह देखि आवत अचानक मुरछि पर्यो,
बदन छपाइ सखियान लीन्हो मधि कै।
मारि गई गंग दग शर वेधि गिरिधर,
आधी चितवनि मैं अधीन कीन्हो अधिकै।
बान बधि बधिक बचे को खोज लेत फेरि,
बधिक बधू ना खोज लीन्ही फेरि बधि कै॥

× × ×

मालती शकुन्तला सी को है कामकंदला सी,
हाजिर हजार चारु नटी नौल नागरै।
ऐल फैल फिरत खवास खास आस पास,
चोवन की चहल गुलाबन की गागरै।
ऐसी मजलिस तेरी देखी बीरबर,
गंग कहै गूँगी ह्वै कै रही है गिरा गरै।

महि रह्यो मागधनि गीत रह्यो ग्वालियर,
गोरा रह्यो गोर ना अगर रह्यो आगरै ॥

× × ×

राजे भाजे राज छोड़ि रन छोड़ि रजपूत,
रौतौ छोड़ि राउर रनाई छोड़ि रानाजू ।
कहै कवि गंग हूल समुद के चहूँ कूल,
कियो न करै कबूल तिय खसमाना जू ।
पश्चिम पुरतगाल कासमीर अबनाल,
खक्खर को देस बाढ़्यो भक्खर भगाना जू ।
रूम साम लोम सोम बलक बदाऊशान,
खैल फैल खुरासान खीझै खानखाना जू ॥

× × ×

कोप काशमीर तें चल्यो है दल साजि बीर,
धीर न धरत गल गाजिबे को भीम है ।
सुन्न होत साझै ते बजत दंत आधीरात,
तीसरे पहर में दहल दै असीम है ।
कहै कवि गंग चौथे पहर सतावै आनि,
निकट निगोरो मोहि जानि कै यतीम है ।
बाढ़ी शीत शंका कांपै कर ह्वै अतङ्का,
लघुशंका के लगे ते होत लंका की मुहीम है ॥

× × ×

दलहि चलत हलहलत भूमि थल थल जिमि चल दल ।
पल पल खल खलभलत बिकल बाला कर कुल कल ॥
जब पटहध्वनि युद्ध धुंधु धुद्धुव धुद्धुव हुव ।
अरर अरर फटि दरकि गिरत घसमसति धुकन ध्रुव ॥
भनि गंग प्रबल महि चलत दल जहँगीर शाह तुव भार तल ।
फुं फुं फनिन्द फन फुंकरत सहस गाल उगिलत गरल ॥

× × ×

मृगनैनी की पीठ पै बेनी लसै सुख साज सनेह समोइ रही ।
सुचि चीकनी चारु चुभी चित मैं भरि भौन भरी खुशबोइ रही ॥
कवि गंग जूया उपमाजो कियो लखि सूरति ता श्रुति गोइ रही ।
मनो कंचनके कदलीदल पै अति साँवरी सांपिन सोइ रही ॥

× × ×

मन घायल पायल मायल ह्वै गढ़ लंकते दूर निसंक गयो ।
तहँ रूप नदी त्रिबली तरि कै करि साहस सागर पार भयो ।।
कवि गंग भनै बटपार मनोज रुमावलि सों ठग संग लयो ।
परि दोऊ सुमेरु के बीच मनोभव मेरो मुसाफिर लूट लयो ।।

नरोत्तम दास

लोचन कमल दुखमोचन तिलक भाल ।
श्रवणन कुंडल मुकुट धरे माथ हैं ।।
ओढ़े पीत बसन गले में बैजयंती माल ।
शंख चक्र गदा और पद्म लिये हाथ हैं ।।
कहत नरोत्तम सँदीपन गुरू के पास ।
तुमही कहत हम पढ़े एक साथ हैं ।।
द्वारका के गये हरि दारिद हरेंगे पिय ।
द्वारका के नाथ वे अनाथन के नाथ हैं ।।

× × ×

शिक्षक हैं सिगरे जगको तिय ताको कहा अब देति है सिच्छा ।
जे तप कै परलोक सिधारत संपति की तिनके नहिं इच्छा ।।
मेरे हिये हरिको पद पंकज बार हजारलौं देख परिच्छा ।
औरन के धन चाहिये बावरी ब्राह्मण के धन केवल भिच्छा ।।

× × ×

दानी बड़े तिहुँ लोकन में जग जीवत नाम सदा जिनको लै ।
दीनन की सुधि लेत भली विधि सिद्ध करो पिय मेरो मतोलै ।।
दीन दयालु के द्वार न जातसो और के द्वार पै दीन ह्वै बोलै ।
श्री यदुनाथ से जाके हितूसो तिहुँ पन क्यों कन माँगत डोलै ।।

× × ×

क्षत्रिन के प्रण युद्ध ज्यों बादल साजि चढ़े गज बाजनहीं ।
वैश्य को बानिज और कृषीपन शूद्र के सेवन नीति यही ।।
विप्रन के प्रण है जु यही सुख संपति सों कुछ काज नहीं ।
कै पढ़िवो कै तपोधन है कन माँगत ब्राह्मणै लाज नहीं ।।

× × ×

कोदों समा जुरतौ भरिपेट न चाहति हौं दधि दूध मिठौती ।
शीत व्यतीत गयो सिसिआतहि हौं हठती पै तुम्हें न हठौती ।।

जो जनती न हितू हरि से तौ मैं काहे को द्वारका ठेल पठौती ।
या घरसे कबहूँ न गयो पिय टूटौ तवा अरु फूटी कठौती ॥

× × ×

छाँड़ि सबै झख तोहि लगी बक आठहुँ याम यही ठक ठानी ।
जातहि दैहैं लदाय लढ़ा भरि लैहों लदाय यही जिय जानी ॥
पैये अटारी अटा कहँ ते जिनको विधि दीनी है टूटी सी छानी ।
जोपै दरिद्र ललाट लिख्यो तोपै काहु के मेटे न जात अजानी ॥

× × ×

फाटे पट टूटी छानि खायो भीख माँगि ।
आनि बिना गये विमुख रहत देव पित्रई ॥
वे हैं दीनबन्धु दुखी देखके दयालु ह्वै हैं ।
दै हैं कछु भलो सो हौं जानत अगतई ॥
द्वारका लौं जात पिय केतौ अलसात ।
तुम काहे को लजात भई कौन सी विचित्रई ॥
जोपै सब जन्म ये दरिद्र ही सतायो ।
तोपै कौन काज आय है कृपानिधि की मित्रई ॥

× × ×

तैं तो कही नीकी सुन बात हित ही की ।
यह रीति मित्रई की नित प्रीति सरसाइये ॥
चित्त के मिलेते वित्त चाहिये परसपर ।
मित्र के जो जेंइये तो आप हू जिमाइये ॥
वे हैं महाराज जोरि बैठत समाज भूप ।
तहाँ यह रूप जाय कहा सकुचाइये ॥
दुख सुख सब दिन काटे ही बनेगो भूल ।
विपति परे पै द्वार मित्र के न जाइये ॥

× × ×

विप्र के भगत हरि जगत विदित वन्धु ।
लेत सब ही की सुधि ऐसे महादानि हैं ॥
पढ़े एक चटसार कही तुम कैयो बार ।
लोचन अपार वे तुम्हें न पहिचानिहैं ॥
एक दीनबन्धु कृपासिंधु फेर गुरुबन्धु ।
तुम सम कौन दीन जाको जिय जानिहैं ॥
नाम लेत चौंगुनी गये ते द्वार सौगुनी ।
बिलोकत सहसगुनी प्रीति प्रभु मानिहैं ॥

× × ×

द्वारका जाहु जू द्वारका जाहु जू आठहु याम यही झक तेरे ।
जौ न कहो करिये तौ बड़ो दुख पैहों कहाँ अपनी गति हेरे ।।
द्वार खड़े प्रभु के छड़िया तहँ भूपति जान न पावत नेरे ।
पाँच सुपारी तौ देखु विचारि के भेट को चारि न चामर मेरे ।।

× × ×

यह सुनि के तब ब्राह्मणी गई परोसिन पास ।
सेर पाव चामर लिये आई सहित हुलास ।।
सिद्धि करौ गणपति सुमिरि बाँधि दुपटिया खूट ।
चले जाहु तेहि मारगहि माँगत बाली बूट ।।

× × ×

मंगल संगीत धाम धाम में पुनीत जहाँ ।
नाचें वारवधू देवनारि अनुहारिका ।।
घंटन के नाद कहूँ बाजन के छाय रहे ।
कहूँ कीर केकी पढ़ें सुक और सारिका ।।
रतनन ठाट हाट बाटन में देखियत घूमें ।
गज अश्व रथ पत्ति नर नारिका ।।
दशो दिशा भीर द्विज धरत न धीर मन ।
उठत है पीर लखि बलवीर द्वारिका ।।

× × ×

दृष्टि चकचोंधि गयी देखत सुवरनमयी ।
एकते सरस एक द्वारका के भौन हैं ।।
पूछे बिन कोऊ काहू से न करै बात जहाँ ।
देवता से बैठे सब साधि साधि मौन हैं ।।
देखत सुदामा धाय पुरजन गहे पाय ।
कृपा करि कहो कहाँ कीने विप्र गौन हैं ।।
धीरज अधीर के हरण परपीर के ।
बताओ बलवीर के महेल यहाँ कौन हैं ।।

द्वारपाल चलि तहँ गयो जहाँ कृष्ण यदुराय ।
हाथ जोरि ठाड़ो भयो बोल्यो शीश नवाय ।।

× × ×

शीश पगा न झँगा तन में प्रभु जानें को आहि बसै किहि ग्रामा ।
धोती फटी सी फटी दुपटी अरु पाँय उपानह की नहिं सामा ।।

द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा ।
दीनदयालु को पूछत धाम बतावत आपनो नाम सुदामा ।।

× × ×

लोचन पूरि रहे जल सों प्रभु दूरते देखतही दुख मेट्यो ।
सोच भयो सुरनायक के कलपद्रुम के हिय माँझ खखेट्यो ।।
काँपि कुबेर हिये सर से पग जात सुमेरहु रंक से सेट्यो ।
राज भयो तबही जबही भरि अंग रमापति सों द्विज भेंट्यो ।।

× × ×

ऐसे बिहाल बिवायन सों भये कंटक जाल लगे पुनि जोये ।
हाय महा दुख पायो सखा तुम आये इतै न कितै दिन खोये ।।
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिके करुणानिधि रोये ।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोये ।।

× × ×

तंदुल त्रिय दीने हुते आगे धरियो जाय ।
देखि राजसंपति विभव दै नहिं सकत लजाय ।।
अंतरयामी आप हरि जानि भक्ति की रीति ।
सुहृद सुदामा विप्रसों प्रकट जनाई प्रीति ।।
कछु भाभी हमको दियो सो तुम काहे न देत ।
चाँपि गाँठरी काँख में रहे कहो किहि हेत ।।

× × ×

आगे चना गुरु मात दिये ते लिये तुम चाबि हमैं नहिं दीने ।
श्याम कही मुसकाय सुदामासों चोरिकी बानि में हौ जु प्रवीने ।।
गाँठरी काँख में चापि रहे तुम खोलत नाहिं सुधारस भीने ।
पाछिली बानि अजौ न तजी तुम वैसे ही भाभी के तंदुल कीने ।।

खोलत सकुचत गाँठरी चितवत हरिकी ओर ।
जीरण पट फट छुटि परे बिखरि गये तेहि ठोर ।।

× × ×

तंदुल माँगत मोहन विप्र सकोच ते देत नहीं अभिलाखे ।
है नहिं पास कछू कहिके तहि गोपि घनी विधि काँख राखे ।।
सो लखि दीनदयालु तहाँ यह चोरी करी तुम यों हँसि भाखे ।
खोलके पोट अछोट मुठी गिरि धारण चामर चावसों चाखे ।।

× × ×

काँपि उठी कमला मन सोचत मों सों कहा हरि को मन ओंको ।
ऋद्धि कँपी नवनिद्ध कँपी सब सिद्धि कँपी ब्रह्मनायक धोंको ।।

शोक भयो सुरनायक के जब दूसरी बार लयो भरि झोंको ।
मेरु डरै बकसै जिन मोहि कुबेर चबावत चामर चोको ।।

× × ×

हूल हियरा में कान कानन परी है टेर ।
भेटत सुदामै श्याम बनै न अघातहीं ।।
कहै नरोत्तम ऋद्धि सिद्धिन में शोर भयो ।
ठाड़ी थरहरे और सोचे कमला तहीं ।।
नाग लोक लोक सब ओक ओक थोक थोक ।
ठाढ़े थरहरैं मुख से कहैं न बातहीं ।।
हाल पर्‍यो लोकन में लालो पर्‍यो ।
चक्रिन में चालो पर्‍यो लोगन में चामर चबातहीं ।।

× × ×

भौन भरे पकवान मिठाइन लोग कहैं निधि हैं सुखमाके ।
साँझ सबेरे पिता अभिलाषत दाखन प्राखत सिंधु रमाके ।।
ब्राह्मण एक कोऊ दुखिया सेर पावक चामर लायो समाके ।
प्रीति की रीति कहा कहिये तिहि बैठे चबावत कंत रमाके ।।

× × ×

मूठी दुसर भरत ही रुक्मिनि पकरी बाँह ।
ऐसी तुम्हें कहा भई संपति की अनचाह ।।
कही रुक्मिनि कान में यह धौ कौन मिलाप ।
करत सुदामहि आपसो होत सुदामा आप ।।

× × ×

हाथ गह्यो प्रभु को कमला कहै नाथ कहा तुमने चित धारी ।
तंदुल खाय मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइ लोक बिहारी ।।
खाय मुठी तिसरी अब नाथ कहा निज बास की आस बिसारी ।
रङ्कहि आप समान कियो तुम चाहत आपहि होन भिखारी ।।

× × ×

रूपे के रुचिर थार पायस सहित शोभा ।
सब जीत लीनी शोभा शरद के चंदकी ।।
दूसरे परोस्यो भात सान्यो है सुरभि घृत ।
फूले फूले फुलके प्रफुल्लिदुति मंदकी ।।
पापर मुँगौरी बरा बेसन अनेक भाँति ।
देवता विलोकि शोभा भोजन अनंदकी ।।

या विधि सुदामा जी को अच्छकै जिमाय ।
फिर पाछेकै पछावरि परोसी आनि कंदकी ॥

× × ×

कह्यो विश्वकर्मा को हरि तुम जाय करि ।
नगर सुदामा जी को रचौ वेग अबही ॥
रतन जटित धाम सुवरणमयी सब ।
कोट औ बजार बाग फूलनके तवही ॥
कल्पवृक्ष द्वार गज रथ असवार प्यादे ।
कीजिये अपार दास दासी देव छबही ॥
इन्द्र औ कुबेर आदि देव बधू अपसरा ।
गंधरब गुणी जहाँ ठाढ़े रहैं सबही ॥

× × ×

नित नित सब द्वारावती दिखलाई प्रभु आप ।
भरे बाग अनुराग सब जहाँ न व्यापहिं ताप ॥
परम कृपा दिन दिन करी कृपानाथ यदुराय ।
मित्र भावना विस्तरी दूनों आदर भाय ॥

× × ×

दाहिने वेद पढ़ैं चतुरानन सामुहे ध्यान महेश धरयो है ।
बायें दोऊ करजोर सुसेवक देवन साथ सुरेश खरयो है ॥
एतन बीच अनेक लिये धन पायन आय कुबेर परयो है ।
देखि विभो अपनो सपनो बपुरो वह ब्राह्मण चौंकि परयो है ॥

× × ×

देनो हुतो सो दे चुके विप्र न जानो गाथ ।
चलती बेर गुपाल जी कछू न दीनो हाथ ॥
गोपुर लों पहुँचाय के फिरे सकल दरबार ।
मित्र वियोगी कृष्ण के नेत्र चली जल धार ॥
हौं आवत नाहीं हुतौ बामहि पठयो ठेल ।
अब कहिहौं समझाय के बहु धन धरौ सकेल ॥
बालापन के मित्र हैं कहा देउँ मैं शाप ।
जैसो हरि हमको दियो तैसो पइयो आप ॥
और कहा कहिये जहाँ कञ्चन ही के धाम ।
निपट कठिन हरि को हियो मोको दियो न दाम ॥

इमि सोचत सोचत भकत आये निज पुर तीर।
दृष्टि परी इक बारहीं हय गयंद की भीर॥

× × ×

वेई सुरतरु प्रफुलित फुलवारिन में।
वेई सुरवर हंस बोलन हिलन को॥
वेई हेम हिरन दिशान दहलीजन में।
वेई गजराज हय गरज गिलन को॥
द्वार द्वार छड़ी लिये द्वार पौरिया जो खड़े।
बोलत मरोर बरजोर ज्यों भिलन को॥
द्वारका ते चल्यो भूलि द्वारका ही आयो नाथ।
माँगिहैं न मोपै चार चामर मिलन को॥

× × ×

जगर मगर ज्योति छाय रही चहुँ दिशि।
अगर बगर हाथी घोड़न को शोर है॥
चौगड़ को बन्यो है बजार पुनि सोनन के।
महल दुकान की कतार चहुँ ओर है॥
भीड़भाड़ धकापेल चहुँ दिशि देखियत।
द्वारकाते दूनों यहाँ प्यादेन को जोर है॥
रहिबो को ठाम है न काहू सों पिछान मेरी।
बिन जाने बसे कोऊ हाड़ मेरे तोर है॥

× × ×

फूटी एक थारी बिन टोंटनीकी भारी हुती।
बाँस की पिटारी औ पथारी हुती ठाटकी॥
बेंटे बिन छुरी औ कमंडलु हौ टोकावो हौ।
टूटो हतो पोपौ पाटी टूटी एक खाटकी॥
पथरौटा काठको कठौता कहूँ दीसै नाहिं।
पीतर को लोटो हो कटोरो है न बाटकी॥
कामरी फटी सी हुती डोड़न की माला नाक।
गोमती की माटी की न सुध कहूँ माटकी॥

मलूक दास

अब तो अजपा जपु मन मेरे।
सुर नर असुर, तहलुआ जाके मुनि ग्रंथन हैं जाके चेरे।

दस औतार देखि मत भूलौ, ऐसे रूप घनेरे।
अलख पुरुष के हाथ बिकाने जब नैननि हेरे।
कह मलूक तू चेत अचेना काल न आवै नेरे।
नाम हमारा खाक है, हम खाकी बंदे।
खाकहि से पैदा किये अति गाफिल गंदे।
कबहूँ न करने बंदग दुनिया मे भूले।
आसमान को ताकते छोड़े चढ़ फूले।

× × ×

सबहिन के हम सबै हमारे। जीव जंतु मोहि लगै पियारे॥
तीनो लोक हमारी माया। अन्त कतहुँ से कोइ नहि पाया॥
छत्तिस पवन हमारी जाति। हमही दिन औ हमही राति॥
हमही तरुवर कीट पतंगा। हमही दुर्गा हमही गंगा॥
हमही तल्ला हमही काजी। तीरथ बरत हमारी बाजी॥
हमही दशरथ हमही राम। हमरै क्रोध औ हमरै काम॥
हमही रावन हमही कंस। हमही मारा अपना बंस॥

× × ×

दीन दयाल सुनी जब से, तब से हिय मे कुछ ऐसी बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ मैं, तेरे हित की पट खैंच कसी है।
तेरोई एक भरोसो मलूक को, तेरे समान न दूजो जसी है।
एहो मुरारि कहौ अब, मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है।

× × ×

भील कब करी थी भलाई जिय आप जान,
फील कब हुआ था मुरीद कहु किसका?
गीध कब ज्ञान की किताब का किनारा छुआ,
ब्याध अरु बधिक निसाफ कहु तिसका?
नाग कब माला लैके बंदगी करी थी बैठ,
मुझको भी लगा था अजामिल का हिसका?
ऐते बदराहो को बदी करी थी माफ जन,
मलूक अजाती पर एती करी रिसका।

× × ×

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय।
कहैं मलूक जहँ संत जन, तहाँ रमैया जाय॥

गर्व भुलाने देह के, रचि रचि बाँधे पाग।
सो देही नित देखि के, चोंच सँवारे काग।।
दर्द दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा।
एक अदीका लै रहे, ऐसे मन धीरा।।
प्रेम पियाला पीवते, बिसरे सब साथी।
आठ पहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी।।
उनकी नजर न आवते, कोई राजा रंका।
बंधन तोड़े मोह के, फिरते निःसंका।।
साहब मिलि साहब भये, कछु न रही तमाई।
कहि मलूक तेहि घर गये, जहाँ पवन न जाई।।

एकनाथ

आदि पुरुष निर्गुण निराधार की याद कर,
मेरे गुरु परवर दिगार की याद कर।
जिने माया अजब बनाइ,
उस वस्ताद की याद कर।
गैबी खजाना जिसने दिया,
उस साहब की याद कर।
सन्त महन्त की याद कर,
गुणी गुणवन्त की याद कर।

× × ×

आ बे हांडी बाग। बाप बड़ा क्या बेटा बड़ा ?
बेटे आगे बाप खड़ा। गुरु बड़ा क्या चेला बड़ा ?
चेले आगे गुरू खड़ा। चेला तो प्रेम महल पर चढ़ा।
धनी बड़ा क्या चाकर बड़ा ? चाकर आगे धनी खड़ा।

तुकाराम

मंत्र तंत्र नहिं मानत साखी। प्रेम भाव नहिं अन्तर राखी।।
राम कहे त्याके पग लागूँ। देखत कपट अभिमान हौं भागूँ।।
अधिक जाति कुछ-हीन नहिं जानूँ। जाने नारायन सो प्रानी मानूँ।।
कहें तुका जीव तन डारू वारी। राम उपसिहूँ बलियारी।। ९

× × ×

तन की करूँ नावरी उतारूँ वैले तीर ।
सन्त जन पन्हिया ले खड़ा राहूँ ठाकुर द्वार ।
चलत पाछे हूँ फिरौं रज उड़त लेउँ सीर ।
राम कहे सो मुख भला रे खाए खीर खांड ।
हरि बिन मुख यों धूल परी रे क्या जानी उस रांड ?
राम कहे सो मुख भला रे बिना राम से बीस ।
अब न जानूँ राम ते जब काल लगावे सीस ।
कहे तुका मैं सौदा लेबे केनन हार । २.

× × ×

मीठ साधु संत जन रे रे मूरख के सिर मार ।
कहे तुका भला भया हम हुआ संत का दास ।
क्या जानूँ केते मरते न मिटती मन की आस ।
तुका और मिठाई क्या करूँ पाले विकार पिंड ।
राम कसावे सो भली सखी माखन चीर खांड । ३.

रसखानि

मानुष हौं तौ वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जौ पसु हौं तौ कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ।
पाहन हौं तौ वही गिरि को जो धर्यौ कर छत्र पुरंदर-धारन ।
जौ खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ।।

× × ×

जो रसना रस ना बिलसै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन ।
मो कर नीकी करैं करनी जु पै कुंज-कुटीरन देहु बुहारन ।
सिद्धि समृद्धि सबै रसखानि लहौं ब्रज-रेनुका-अंक-सँवारन ।
खास निवास मिलै जु पै तौ वही कालिंदी-कूल कदंब की डारन ।।

× × ×

वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं ।
ए रसखानि जबै इन नैनन तें ब्रज के बन-बाग निहारौं ।
कोटिक ये कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं ।।

× × ×

बैन वही उनको गुन गाइ औ कान वही उन बैन सों सानी।
हाथ वही उन गात सरै अरु पाइ वही जु वही अनुजानी।
जान वही उन आन के संग औ मान वही जु करै मनमानी।
त्यौं रसखानि वही रसखानि जु है रसखानि सों है रसखानी।।

× × ×

सेष सुरेस दिनेस गनेस प्रजेस धनेस महेस मनावौ।
कोऊ भवानी भजौ, मन की सब आस सबै बिधि जाइ पुरावौ।
कोऊ रमा भजि लेहु महा धन, कोऊ कहूँ मनवांछित पावौ।
पै रसखानि वही मेरो साधन, और त्रिलोक रहौ कि नसावौ।।

× × ×

कंचन-मंदिर ऊँचे बनाइ कै मानिक लाइ सदा झलकैयत।
प्रात ही तें सगरी नगरी नग मोतिन ही की तुलानि तुलैयत।
जद्यपि दीन प्रजान प्रजापति की प्रभुता मघवा ललचैयत।
ऐसे भए तौ कहा रसखानि जौ साँवरे ग्वार सों नेह न लैयत।।

× × ×

देस बिदेस के देखे नरेसन रीझ की कोऊ न बूझ करैगो।
तातें तिन्हें तजि जानि गिरयो गुन, सौ गुन औगुन गाँठि परैगो।
बाँसुरीवारो बड़ो रिझवार है स्याम जु नैसुक ढार ढरैगो।
लाड़लो छैल वही तौ अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो।।

× × ×

सुनियै सब की कहियै न कछू रहियै इमि या मन बागर मैं।
करियै ब्रत-प्रेम सचाई लियें, जिन तें तरियै मन-सागर मैं।
मिलियै सब सों दुरभाव बिना, रहियै सतसंग उजागर मैं।
रसखानि गुबिंदहिं यौं भजियै जिमि नागरि को चित गागर मैं।।

× × ×

कहा रसखानि सुखसंपति सुमार कहा,
कहा तन जोगी ह्वै लगाए अंग छार को।
कहा साधे पंचानल, कहा सोए बीच नल,
कहा जीति लाए राज सिंधु-आरपार को।
जप बार बार, तप संजम बयार-ब्रत,
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को।

कीन्हौ नहीं पार, नहीं सेयौ दरबार, चित
चाह्यौ न निहारयौ जौ पै नंद के कुमार को ।।

× × ×

वेई ब्रह्म ब्रह्मा जाहि सेवत हैं रैन-दिन,
सदासिव सदा ही धरत ध्यान गाढ़े हैं।
वेई बिष्नु जाके काज मानो मूढ़ राजा रंक,
जोगी जती ह्वै कै सीत सह्यौ अंग डाढ़े हैं।
वेई ब्रजचंद रसखानि प्रान प्रानन के,
जाके अभिलाष लाख लाख भाँति बाढ़े हैं।
जसुधा के आगे बसुधा के मन-मोचन ये,
तामरस-लोचन खरोचन कौं ठाढ़े हैं ।।

× × ×

कंचन के मंदिरनि डीठि ठहराति नाहिं,
सदा दीपमाल लाल-मानिक उजारे सों।
और प्रभुताई अब कहाँ लौं बखानौं,
प्रतिहारन की भीर भूप टरत न द्वारे सों।
गंगाजी मैं न्हाइ मुक्ताहलहू लुटाइ, वेद
बीस बार गाइ, ध्यान कीजत सवारे सों।
ऐसे ही भए तौ नर कहा रसखानि जौ पै,
चित दै न कीनी प्रीति पीतपटवारे सों ।।

× × ×

गावैं गुनी गनिका गँधरब्ब औ सारद सेष सबै गुन गावत।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यौं ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावत।
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध निरंतर जाहि समाधि लगावत।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावत ।।

× × ×

सेष गनेस महेस दिनेस सुरेसहि जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सु बेद बतावैं।
नारद से सुक ब्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ।।

× × ×

संकर से सुर जाहि जपैं चतुरानन ध्यानन धर्म बढ़ावैं।
नेकु हियें जिहि आनत ही जड़ मूढ़ महा रसखानि कहावैं।
जा पर देव अदेव भू-अंगना वारत प्रानन प्रानन पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

× × ×

गुंज गरें सिर मोरपखा अरु चाल गयंद को मो मन भावै।
साँवरो नंदकुमार सबै ब्रजमंडली मैं ब्रजराज कहावै।
साज समाज सबै सिरताज औ छाज की बात नहीं कहि आवै।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै॥

× × ×

संपति सों सकुचाइ कुबेरहि रूप सों दीनी चिनौती अनंगहि।
भोग कै कै ललचाइ पुरंदर, जोग कै गंग लई धरि मंगहि।
ऐसे भए तौ कहा रसखानि रसै रसना जौ जु मुक्ति-तरंगहि।
दै चित ताके न रंग रच्य जु रह्यों रचि राधिका रानी के रंगहि॥

× × ×

ब्रह्म मैं ढूँढ्यौ पुरानन गानन वेद-रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यौ सुन्यौ कबहूँ न कितूँ वह कैसे सरूप औ कैके सुभायन।
टेरत हेरत हारि पर्‌यौ रसखानि बतायौ न लोग लुगायन।
देखौ दुरौ वह कुंज कुटीर मैं बैठो पलोटत राधिका पायन॥

× × ×

द्रौपदी औ गनिका गज गीध अजामिल सों किय सो न निहारो।
गौतम-गेहनी कैसी तरी, प्रहलाद कों कैसें हर्‌यौ दुख भारो।
काहे कों सोच करै रसखानि कहा करिहै रबिनंद बिचारो।
ता खन जा खन राखियै माखन-चाखनहारो सो राखनहारो॥

कहा करै रसखानि को कोऊ चुगुल लबार।
जौ पै राखनहार है माखन-चाखनहार॥

× × ×

आजु गई हुती भोर ही हौं रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाको जियौ जुग लाख करोर जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।
तेल लगाइ लगाइ कै अंजन भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डालि हमेलनि हार निहारत वारत ज्यौ चुचकारत छौनहिं॥

× × ×

धूरिभरे अति सोभित स्यामजू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।
वा छबि कों रसखानि बिलोकत वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।

× × ×

गाइ दुहाई ना या पै कहूँ, न कहूँ यह मेरी गरी निकरयौ है।
धीरसमीर कलिंदी के तीर खरयौ रहै आजु ही डीठि परयौ है।
जा रसखानि बिलोकत ही सहसा ढरि राँग सो आँग ढरयौ है।
गाइन घेरत हेरत सो पट फेरत टेरर आनि अरयौ है।।

× × ×

डोलिबो कुंजनि कुंजनि को अरु बेनु बजाइबो धेनु चरैबो।
मोहिनी ताननि सों रसखानि सखानि के संग को गोधन गैबो।
ये सब डारि दिये मन मारि बिसारि दयौ सिगरो सुख पैबो।
भूलत क्यों करि नेहन ही को 'दही' कहिबो मुसकाइ चितैबो।।

× × ×

आयौ हुतौ नियरें रसखानि कहा कहौं तू न गई वहि ठैया।
या ब्रज मैं सिगरी बनिता सब वारति प्रानंनि होति बलैया।
कोऊ न काहू की कानि करै कछु चेटक सो जु कियौ जदुरैया।
गाइ गौ तान जमाइ गौ नेह रिझाइ गौ प्रान चराइ गौ गैया।।

× × ×

जा दिन तें वह नंद को छोहरा या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहिनी ताननि गोधन गावत बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।
वा दिन सों कछु टोना सो कै रसखानि हिये मैं समाइ गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै सिगरो ब्रज बीर, बिकास गयौ है।।

× × ×

आवत हैं बन तें मनमोहन गाइन संग लसैं ब्रज ग्वाला।
बेनु बजावत गावत गीत, अभीत इतै करि गौ कछु ख्याला।
हेरत टेरि ककै चहुँ ओर तें, झाँकि झरोखन तें ब्रज-बाला।
देखि सु आनन कों रसखानि तज्यौ सब द्योस को ताप-कसाला।।

× × ×

एक समै जमुना-जल मैं सब मज्जन हेत धसीं ब्रज-गोरी।
त्यौं रसखानि गयौ मनमोहन लै कर चीर कदंब की छोरी।

न्हाइ जबै निकसीं बनिता चहुँ ओर चितै चित रोष करो री।
हार हियें भरि भावन सों पट दीने लला बचनांमृत बोरी॥

× × ×

कुंजगली मैं अली निकसी तहाँ साँकरें ढोटा कियौ भटभेरो।
माई री वा मुख की मुसकान गयौ मन बूड़ि फिरै नहिं फेरो।
डोरि लियौ दृग चोरि लियौ चित डार्‌यौ है प्रेम को फंद घनेरो।
कैसी करौं अब क्यौं निकसौं रसखानि पर्‌यौ तन रूप को घेरो॥

× × ×

भौंह भरी सुथरी बरुनी अति ही अधरानि रच्यौ रँग रातो।
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन तें निकस्यौ मुसकातो।
छूटि गयौ रसखानि लखें उर भूलि गई तन की सुधि सातो।
फूटि गयौ सिर तें दधि भाजन टूटि गौ नैननि लाज को नातो॥

× × ×

रंग भर्‌यो मुसकात लला निकस्यौ कल कुंजन तें सुखदाई।
मैं तबहीं निकसी घर तें तकि नैन बिसाल की चोट चलाई।
घूमि गिरी रसखानि तबै हरिनो जिमि बान लगें गिरि जाई।
टूटि गयौ घर को सब बंधन छूटि गी आरज-लाज-बड़ाई॥

× × ×

खंजन मीन सरोजन को मृग को मद गंजन दीरघ नैना।
कुंजन तें निकस्यौ मुसकात सु पान भर्‌यौ मुख अमृत बैना।
जाइ रहै मन प्रान बिलोचन कानन मैं रुचि मानत चैना।
रसखानि कर्‌यौ घर मो हिय मैं निसिबासर एक पलौ निकसै ना॥

× × ×

अधर लगाइ रस प्याइ बाँसुरी बजाइ,
मेरो नाम गाइ हाइ जादू कियौ मन मैं।
नटखट नवल सुघर नँदनंदन ने,
करि कै अचेत चेत हरि कै जतन मैं।
झटपट उलट पुलट पट परिधान,
जान लागीं लालन पै सबै बाम बन मैं।
रस रास सरस रँगीलो रसखानि आनि,
जानि जोर जुगुति बिलास कियौ जन मैं॥

× × ×

देखत सेज बिछी ही अछी सु बिछौ बिष सो भिदि गौ सिगरे तन ।
ऐसी अचेत गिरी नहिं चेत उपाय करे सिगरी सजनी जन।
बोली सयानी सखी रसखानि बचैं यौं सुनाइ कह्यौ जुवतीगन ।
देखन कौ चलियै री चलौ सब, रास रच्यौ मनमोहन जू बन ॥

× × ×

देखि कै रास महाबन को इक गोपबधू कह्यौ एक बधू पर।
देखति हौ सखि मार से गोपकुमार बने जितने ब्रज-भू पर।
तीछें निहारि लखौ रसखानि सिगार करौ किन कोऊ कछू पर।
फेरि फिरैं अँखियाँ ठहराति हैं कारे पितंबरवारे के ऊपर ॥

× × ×

आज भटू मुरली-बट के तट नंद के साँवरे रास रच्यौ री।
नैननि सैननि बैननि सों नहिं कोऊ मनोहर भाव बच्यौ री।
जद्यपि राखन कौं कुल-कानि सबै ब्रजबालन प्रान पच्यौ री।
तद्यपि वा रसखानि के हाथ बिकानि कौं अंत लच्यौ पै लच्यौ री ॥

× × ×

जात हुती जमुना जल कौं मनमोहन घेरि लयौ मग आइ कै।
मोद भरयौ लपटाइ लयौ, पट घूँघट टारि दयौ चित चाइ कै।
और कहा रसखानि कहौं मुख चूमत घातन बात बनाइ कै।
कैसें निभै कुलकानि, रही हियें साँवरी मूरति की छबि छाइ कै ॥

× × ×

आईं सबै ब्रज-गोपाललली ठिठकीं ह्वै गली जमुना-जल न्हाने।
औचक आइ मिले रसखानि बजावत बेनु सुनावत ताने।
हाहा करी सिसकीं सिगरी मति मैन हरी हियरा हुलसाने।
घूमैं दिवानी अमानी चकोर सों ओर सों दोऊ चलैं दृग बाने ॥

× × ×

बात सुनी न कहूँ हरि की, न कहूँ हरि सों मुखबोल हँसी है।
काल्हि ही गोरस बेचन कौ निकसी ब्रजवासिनि बीच लसी है।
आजु ही बारक 'लेहु दही' कहि कै कछु नैनन मैं बिहसी है।
बैरिनि वाहि भई मुसकानि जु वा रसखानि के प्रान बसी है ॥

× × ×

पहलें दधि लै गई गोकुल मैं चख चारि भए नटनागर पै।
रसखानि करी उनि मैनमई कहैं दान दै दान खरे अर पै।

नख तें सिख नील निचोल लपेटे सखी सम भाँति कँपै डरपै।
मनौ दामिनि सावन के घन मैं निकसै नहीं भीतर ही तरपै।।

× × ×

गोरस गाँव ही मैं बिचिबो तचिबो नहीं नंद-मुखानल-झारन।
गैल गहें चलियै रसखानि तौ पाप बिना डरियै किहि कारन।
नाहि री ना भटू, क्यौ करि कै बन पैठत पाइबी लाज सम्हारन।
कुंजनि नंदकुमार बसै तहाँ मार बसै कचनार की डारन।।

× × ×

वार हीं गोरस बेंचि री आजु तूँ माइ कें मूड़ चढ़ै कत मौंडी।
आवत जात हीं होइगी साँझ भटू जमुना भतरौंड लौं औंडी।
पार गएँ रसखानि कहै अँखियाँ कहूँ होहिंगी प्रेम-कनौंडी।
राधे बलाइ ल्यौं जाइगी बाज अबै ब्रजराज-सनेह की डौंडी।।

× × ×

छीर जौ चाहत चीर गहें अजू लेउ न केतिक छीर अचैहौ।
चाखन के मिस माखन माँगत खाउ न माखन केतिक खैहौ।
जानति हौं जिय की रसखानि सु काहे कौ एतिक बात बढ़ैहौ।
गोरस के मिस जो रस चाहत सो रस कान्हजू नेकु न पैहौ।।

× × ×

आज महूँ दहि बेचन जात ही मोहन रोकि लियौ मग आयौ।
माँगत दान मैं आन लियौ सु कियौ निलजी रस-जोबन खायौ।
काह कहूँ सिगरी री बिथा रसखानि लियौ हँसि कै मुसकायौ।
पाले परी मैं अकेली लली, लला लाज लियौ सु कियौ मन भायौ।।

× × ×

दानी नए भए माँगत दान सुनै जुपै कंस तौ बाँधे न जैहौ।
रोकतहीं बन मैं रसखानि पसारत हाथ महा दुख पैहौ।
टूटें छरा बछरादिक गोधन जो धन है सु सबै पुनि दैहौ।
जैहै जौ भूषन काहू तिया को तौ मोल छला के लला न बिकैहौ।।

× × ×

लंगर छैलहि गोकुल मैं मग रोकत संग सखा ढिग तै हैं।
जाहि न ताहि दिखावत आँखि सु कौन गई अब तोसो करै हैं।
हाँसी मै हार हरयौ रसखानि जू जौ कहूँ नेकु तगा टुटि जैहैं।
एकहि मोती के मोल लला सिगरे ब्रज हाटहि हाट बिकैहैं।।

× × ×

अंत तें न आयौ याही गाँवरे को जायौ,
माई बापरे जिवायौ प्याइ दूध बारे बारे को।
सोई रसखानि पहिचानि कानि छाँड़ि चाहै,
लोचन नचावत नचैया द्वारे द्वारे को।
मैया की सौ सोच कछू मटकी उतारे को न,
गोरस के ढारे को न चीर चीरि डारे को।
यहै दुख भारी गहै डगर हमारी माँझ,
नगर हमारे ग्वाल बगर हमारे को ॥

× × ×

तन चंदन खौर कै बैठी भटू रही आजु सुधा को सुता मनसी।
मनौ इंदुबधून लजावन कौ सब ज्ञानिन काढ़ि धरी गन-सी।
रसखानि बिराजति चौकी कुचौ बिच उत्तमताहि जरी तन सी।
दमकै दृगबान के घायन कौ गिरि सेत के संधि के जीवन सी ॥

× × ×

बासर तूँ जु कहूँ निकरै रबि को रथ माँझ अकास अरै री।
रैन यहै गति है रसखानि छपाकर आँगन तें न टरै री।
द्यौस निस्वास चल्यौई करै निसि द्यौस की आसन पाय धरै री।
तेरो न जात कछू दिन राति बिचारे बटोही की बाट परै री ॥

× × ×

अति लाल गुलाल दुकूल ते फूल, अलं, अलि कुंतल राजत है।
मखतूल समान के गुंज छरानि मैं किंसुक की छबि छाजत है।
मुकता के कदंब ते अंब के मौर सुने सुर कोकिल लाजत है।
यह आवन प्यारी जु की रसखानि बसंत-सी आज बिराजत है ॥

× × ×

आजु सँवारति नेकु भटू तन, मंद करी रति की दुति लाजै।
देखत रीझ रहे रसखानि सु और कहा बिधिना उपराजै।
आए हैं न्यौतें तरैयन के मनो संग पतंग पतंग जु राजै।
ऐसें लसै मुकतागन मै तिल तेरे तरौना के तीर बिराजै ॥

× × ×

बाँकी मरोर गही भृकुटीन लगीं अँखियाँ तिरछानि तिया की।
टाँक सी लाँक भई रसखानि सुदामिनि तें दुति दूनी हिया की।
सोहैं तरंग अनंग की अंगनि ओप उरोज उठी छतिया की।
जोबन-जोति सु यौं दमकै उसकाइ दई मनो बाती दिया की ॥

× × ×

कौन की नागरि रूप की आगरि जाति लियें सँग कौन की बेटी।
जाको लसै मुख चंद-समान सु कोमल अंगनि रूप-लपेटी।
लाल रह्यौ चुप लागिहै डीठि सु जाके कहूँ उर बात न भेटी।
टोकत ही टटकार लगी रसखानि भई मनो कारिख-पेटी॥

× × ×

यह जाको लसै मुख चंद-समान कमान-सी भौंह गुमान हरै।
अति दीरघ नैन सरोजहू तें मृग खंजन मीन की पाँति दरै।
रसखानि उरोज निहारत ही मुनि कौन समाधि न जाहि टरै।
कहि नीकें नवै कटि हार के भार सों तासों कहैं सब काम करै॥

× × ×

जल की न घट भरैं मग की न पग धरैं,
घर की न कछु करैं बैठी भरैं साँसु री।
एकैं सुनि लोट गईं एकै लोट-पोट भईं,
एकनि के दृगनि निकसि आए आँसु री।
कहै रसखानि सो सबै ब्रज-बनिता बधि,
बधिक कहाय हाय भई कुलहाँसु री।
करियै उपाय बाँस डारियै कटाय,
नाहि उपजैगौ बाँस नाहि बाजै फेरि बाँसुरी॥

× × ×

कालिह पर्यौ मुरली-धुनि मैं रसखानि जू कानन नाम हमारो।
ता दिन तें नहिं धीर रह्यौ जग जानि लयौ अति कीनौ पँवारो।
गाँवन गाँवन मैं अब तौ बदनाम भई सब सों कै किनारो।
तौ सजनी फिरि फेरि कहौं पिय मेरो वही जग ठोंकि नगारो॥

× × ×

ब्रज की बनिता सब घेरि कहैं तेरो ढारो बिगारो कहा कस री।
अरी तूँ हमकों जमकाल भई नेकु कान्ह रही तौ कहा रस री।
रसखानि भली बिधि आनि बनी, बसिबो नहि देत दिना दस री।
हम तौ ब्रज को बसिबोई तजौ बस री ब्रज बैरिन तूँ बँसरी॥

× × ×

चंद सों आनन मैन-मनोहर बैन मनोहर मोहत हैं मन।
बंक बिलोकनि लोट भई रसखानि हियो हित दाहत है तन।

मैं तब तें कुलकानि की मैंड नखी जु सखी अब डोलत हैं बन।
बेनु बजावत आवत है नित मेरी गली ब्रजराज को मोहन॥

× . × ×

बेनु बजावत गोधन गावत ग्वालन संग गली मधि आयौ।
बाँसुरी मैं उनि मेरोई नावँ सुग्वालिनि के मिस टेरि सुनायौ।
ए सजनी सुनि सास के त्रासनि नंद के पास उसास न मायौ।
कैसी करौं रसखानि नहीं हित, चैननहीं चित चोर चुरायौ॥

× × ×

मोहन की मुरली सुनि कै वह बौरी ह्वै आनि अटा चढ़ि झाँकी।
गोप बड़ेन की डीठि बचाइ कै डीठि सों डीठि मिली दुहुँ धाँ की।
देखत मोल भयौ अँखियान को को करै लाज कुटुंब पिता की।
कैसें छुटाई छुटै अँटकी रसखानि दुहूँ की बिलोकनि बाँकी॥

× × ×

मेरी सुनौ मति आइ अली उहाँ जौनी गली हरि गावत है।
हरि लैहै बिलोकत प्रानन कों पुनि गाढ़ परें घर आवत है।
उन तान की तान तनी ब्रज मैं रसखानि सयान सिखावत है।
तकि पाय धरौ रपटाय नहीं वह चारो सो डारि फँदावत है॥

× × ×

काननि दै अँगुरी रहिवो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।
मोहनी ताननि सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।
टेरि कहौं सिगरे ब्रज लोगनि काल्हि कोऊ सु कितौ समुझैहै।
माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै न जैहै न जैहै॥

× × ×

बजी है बजी रसखानि बकी सुनि कै अब गोपकुमारि न जीहै।
न जीहै कोऊ जो कदाचित कामिनी कान मैं बाकी जु तान कुँ पीहै।
कुपी है बिदेस सँदेस न पावति मेरीऽब देह कों मैन सजी है।
सजी है तौ मेरो कहा है सु तौ बैरिनि बाँसुरी फेरि बजी है॥

× × ×

दूध दुह्यौ सीरो पर्‌यौ तातो, न जमायो कर्‌यौ,
जामन दयौ सो धर्‌यौ धर्‌यौई खटाइ गौ।
आन हाथ आन पाइ सब ही के तब हीं तें,
जब ही तें रसखानि तानन सुनाइ गौ।

ज्यौं ही नर त्यौं ही नारी तैसीयै तरुन बारी,
कहियै कहा री सब ब्रज बिललाइ गौ ।
जानिहै न आली यह छोहरा जसोमति को,
बाँसुरी बजाइ गौ कि बिष बगराइ गौ ॥

× × ×

कान्ह भए बस बाँसुरी के अब कौन सखी, हमकों चहिहै ।
निसद्यौस रहै सँग-साथ लगी यह सौतिन तापन क्यौं सहिहै ।
जिन मोहि लियौ मनमोहन कों रसखानि सदा हमकों दहिहै ।
मिलि आओ सबै सखी, भागि चलैं अब तो ब्रज मैं बँसुरी रहिहै ॥

× × ×

आजु भटू इक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै ।
माइ सु धाइ कै टोना सो ढूँढति, सासु सयानी सयानी पुकारै ।
यौं रसखानि घिरौ सिगरो ब्रज आन को आन उपाय बिचारै ।
कोऊ न कान्हर के कर तें वहि बैरिनि बाँसुरिया गहि जारै ॥

× × ×

बाँकी बिलोकनि रंगभरी रसखानि खरी मुसकानि सुहाई ।
बोलत बोल अमीनिधि चैन महारस ऐन सुने सुखदाई ।
सजनी पुर-बीथिन मै पिय-गोहन लागी फिरैं जित ही तित धाई ।
बाँसुरी टेरि सुनाइ अली अपनाइ लई ब्रजराज कन्हाई ॥

× × ×

कल काननि कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है ।
मुरली कर मै अधरा मुसकानि तरंग महाछबि छाजति है ।
रसखानि लखें तन पीत पटा सत दामिनि की दुति लाजति है ।
वहि बाँसुरी की धुनि कान परें कुलकानि हियो तजि भाजति है ॥

× × ×

बंसी-बजावत आनि कढ़ौ सो गली मैं अली, कछु टोना सो डारै ।
हेरि, चितै, तिरछी करि दृष्टि चलौ गयौ मोहन मूठि सी मारै ।
ताही घरी सों परी धरी सेज पै प्यारी न बोलति प्रानहूँ वारै ।
राधिका जी है तौ जीहैं सबै न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारै ॥

× × ×

कौन ठगौरी भरी हरि आजु बजाई है बाँसुरिया रँग-भीनी ।
तान सुनी जिनहीं तिनहीं तबहीं तित लाज बिदा करि दीनी ।

घूमै घरी घरी नंद के द्वार नवीनी कहा कहूँ बाल प्रबीनी।
या ब्रजमंडल मैं रसखानि सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी ।।

× × ×

मो मन मानिक लै गयौ, चितै चोर नँदनंद ।
अब बे-मन मैं क्या करूँ, परी फेर के फंद ।।

नैन दलालनि चौहटें, मन-मानिक पिय हाथ ।
रसखाँ ढोल बजाइकै, बेच्यौ हिय जिय साथ ।।

× × ×

लोक की लाज तज्यौ तबहीं जब देख्यौ सखी ब्रजचंद सलोनो।
खंजन मीन सरोजन की छबि गंजन नैन लला दिनहोनो।
हेरें सम्हारि सकै रसखानि सो कौन तिया वह रूप सुठोनो।
भौंह कमान सों जोहन को सर वेधत प्रानंनि नंद को छोनो ।।

× × ×

चीर की चटक औ लटक नव कुंडल की,
भौंह की मटक नेह आँखिन दिखाउ रे।
मोहन सुजान गुन-रूप के निधान फेरि,
बाँसुरी बजाइ तनु-तपन सिराउ रे।
एहो बनवारी वलिहारी जाउँ तेरी आजु,
मेरी कुंज आइ नेकु मीठी तान गाउ रे।
नंद के किसोर चितचोर मोरपंखवारे,
बंसीवारे साँवरे पियारे इत आउ रे ।।

× × ×

उनहीं के सनेहन सानी रहैं उनकीं के जु नेह दिवानी रहैं।
उनहीं की सुनैं न औ बैन त्यौं सैन सों चैन अनेकन ठानी रहैं।
उनहीं सँग डोलन मैं रसखानि सबै सुखसिंधु अघानी रहैं।
उनहीं बिन ज्यौं जलहोन ह्वै मीन सी आँखि मेरी अँसुवानी रहैं ।।

× × ×

दूर तें आइ दुरेहीं दिखाइ अटा चढ़ि जाइ गह्यौ तहाँ आरो।
चित्त कहूँ चितवै कितहूँ, चित और सों चाहि करै चखवारौ।
रसखानि कहै यहि बीच अचानक जाइ सिढ़ी चढ़ि सास पुकारौ।
सूखि गई सुकुवार हियो हनि सैन भटू कह्यौ स्याम सिधारौ ।।

× × ×

भई बावरी ढूँढति काहि तिया अरी लाल ही लाल भयौ कहा तेरो।
ग्रीवा तें छूटि गयौ अबहीं रसखानि तक्यौ घर मारग हेरो।
डरियै कहै माइ हमारी बुरी हिय नेकु न सूनो सहै छिन मेरो।
काहे को पाइबो जाइबो है सजनी अनखाइबो सीस सहेरो।।

प्रीतम नंदकिसोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ।
मनभावन चितचोर, पलक ओट नहिं सहि सकौं।।

× × ×

घरहीं घर घैरु घनो घरिही घरिहाइनि आगैं न साँस भरौं।
लखि मेरियै ओर रिसाहिं सबै सतराहिं जौ सौहैं अनेक करौं।
रसखानि तो काज सबै ब्रज तौ मेरो बैरी भयौ कहि कासों लरौं।
बिनु देखे न क्यौं हूँ निमेषैं लगैं तेरे लेखें न हूँ या परेखें मरौं।।

× × ×

सास की सासनहीं चलिबो चलियै निसिद्यौस चलावै जिहीं ढँग।
आली चबाव लुगाइनि के डर जाति नहींन नदी ननदी-सँग।
भावती औ अनभावती भीर मैं छ्वै न गयौ कबहूँ अँग सों अँग।
घैरु करैं घरहाईं सबै रसखानि सों मो सों कहा कै भयौ रँग।।

× × ×

बाल गुलाब के नीर उसीर सों पीर न जाइ हियैं जिन ढारौ।
कंज की माल करौ जु बिछावन होत कहा पुनि चंदन गारौ।
एते इलाज बिकाज करौ रसखानि कों काहे कों जारे पै जारौ।
चाहति हौ जु जिवायौ भटू तौ दिखावौ बड़ी बड़ी आँखिनिवारौ।।

× × ×

खंजन नैन फँदे पिंजरा छबि, नाहिं रहैं थिर कैसें हूँ माई।
छूटि गई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई।
चित्र कढ़े से रहे मेरे नैन न बैन कढ़े मुख दीनी दुहाई।
कैसी करौं जित जाउँ अली सब बोलि उठैं यह बावरी आई।।

× × ×

बैरिनि तूँ बरजी न रहै अबहीं घर बाहिर बैरु बढ़ैगौ।
टोना सु नंद ढुटोन पढ़ै सजनी तुहि देखि बिसेषि पढ़ैगौ।
हँसिहै सखि गोकुल गावँ सबै रसखानि तबै यह लोक रढ़ैगौ।
बैस चढ़ैं घरहीं रहि बैठि अटा न चढ़ै बदनाम चढ़ैगौ।।

× × ×

मोरपखा मुरली बनमाल लखें हिय कौ हियरा उमह्यौ री।
ता दिन तें उन बैरिन को कहि कौन न बोल कुबोल सह्यौ री।
तौ रसखानि सनेह लग्यौ, कोउ एक कह्यौ कोउ लाख कह्यौ री।
और तौ रंग रह्यौ न रह्यौ इक रंग रँगी सोइ रंग रह्यौ री॥

× × ×

तेरी गलीन मैं जा दिन तें निकसे मनमोहन गोधन गावत।
ये ब्रज लोग सो कौन सी बात चलाइ कै जो नहिं नैन चलावत।
वे रसखानि जो रीझिहैं नेकु तौ रीझि कै क्यौं न बनाइ रिझावत।
बावरी जौ पै कलंक लग्यौ तौ निसंक ह्वै क्यौं नहीं अंक लगावत॥

× × ×

देखन कौं सखी नैन भए न सबै तन आवत गाइन पाछैं।
कान भए प्रति रोम नहीं सुनिबे कौं अमीनिधि बोलनि आछैं।
ए सजनी न सम्हारि परै वह बाँकी बिलोकनि कोर कटाछैं।
भूमि भयौ न हियो मेरी आली जहाँ हरि खेलत काछनी काछैं॥

× × ×

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सो तेरे कहें सब स्वाँग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥

× × ×

कुजनि कुजनि गुंज के पुंजनि मंजु लतानि सों माल बनैबो।
मालती मल्लिका कुंद सों गूँदि हरा हरि के हियरा पहिरैबो।
आली कबै इन भावते भाइन आपुन रीझि कै प्यारे रिझैबो।
माइ भकै हरि हाँकरिबो रसखानि तकै फिरि कै मुसकैबो॥

× × ×

बन बाग तड़ागनि कुंजगली अँखियाँ सुख पाइहैं देखि दई।
अब गोकुल माँझ बिलोकियैगी वह गोप सभाग सुभाय रई।
मिलिहै हँसि गाइ कबै रसखानि कबै ब्रजबालनि प्रेममई।
वह नील निचोल के घूँघट की छबि देखबी देखन लाजलई॥

× × ×

कोउ रिझावन कों रसखानि कहै मुकतानि सों माँग भरौंगी।
कोऊ कहै गहनो अँग अंग दुकूल सुगंध-भर्यौ पहिरौंगी।

तू न कहै न कहै तौ कहौं कहूँ न कहौं तेरे पाँय परौंगी।
देखहि तू यह फूल की माल जसोमति-लाल निहाल करौंगी ।।

× × ×

प्रान वही जु रहैं रिझि वा पर रूप वही जिहि वाहि रिझायौ।
सीस वही जिन वे परसे पद अंक वही जिन वा परसायौ।
दूध वही जु दुहायौ री वाही दही सु सही जु वही ढरकायौ।
और कहाँ लौं कहौं रसखानि री भाव वही जु वही मन भायौ ।।

स्याम सघन घन घेरि कै रस बरस्यौ रसखानि ।
भई दिवानी पान करि, प्रेम-मद्य-मन मानि ।।

× × ×

नंद को नंदन है दुखकंदन प्रेम के फंदन बाँध लई हौं।
एक दिना ब्रजराज के मंदिर मेरी अली इक बार गई हौं।
हेर्‌यौ लला लचकाइ कै मो तन जोहन की चकडोर भई हौं।
दौरी फिरौं दृग डोरनि मैं हिय मैं अनुराग की बेलि बई हौं ।।

जोहन नंदकुमार कौं गई नंद के गेह ।
मोहिं देखि मुसकाइ कै बरस्यौ मेह सनेह ।।

× × ×

दमकैं रबि कुंडल दामिनि से धुरवा जिमि गोरज राजत है।
मुकताहल-वारन गोप के सु तौ बूँदन की छबि छाजत है।
ब्रजबाल नदी उमही रसखानि मयंकबधू-दुति लाजत है।
यह आवन श्रीमनभावन की बरषा जिमि आज बिराजत है ।।

× × ×

वह नंद को साँवरो छैल अली अब तौ अति ही इतरान लग्यौ।
नित घाटन बाटन कुंजन मैं मोहिं देखत ही नियरान लग्यौ।
रसखानि बखान कहा करियै तकि सैननि सौं मुसकान लग्यौ।
तिरछी बरछी सम मारत है दृग बान कमान सु कान लग्यौ ।।

× × ×

हेरत कुंज भुजा धरे स्याम सौं नेकु तबै हँसती न लुगाई।
लाज न कानि हुती जिय माँझ सु भेटत जौ मग माँह कन्हाई।
हेरे परैं न गुपाल सखी इन जोबन आनि कु चाल चलाई।
होत कहा अब के पछिताएँ जौ हाथ तें छूटि गई लरिकाई ।।

× × ×

बाँकी धर कँलगी सिर ऊपर बाँसुरी-तान कहै रस बीर के।
कुंडल कान लसैं रसखानि बिलोकन तीर अनंग-तुनीर के।
डारि ठगौरी गयौ चित चोरि, लिये हैं सबै सुख सोखि सरीर के।
जात चलावन मो अबला यह कौन कला है भला बे अहीर के॥

अरी अनोखी बाम, तूँ आई गौने नई।
बाहरि धरसि न पाम, है छलिया तुव ताक मैं॥

× × ×

कालिह भटू मुरली-धुनि मैं रसखानि लियौ कहुँ नाम हमारौ।
ता छिन तें भई बैरिनि सास कितौ कियौ झाँकन देति न द्वारौ।
होत चवाव बलाइ सों आली री जौ भरि आँखिन भेंटियै प्यारौ।
बाट परी अबहीं ठिठक्यौ हियरे अटक्यो पियरे पटवारौ॥

× × ×

एरी आजु कालह सब लोकलाज त्यागि दोऊ,
सीखे हैं सबै बिधि सनेह सरसाइबो।
यह रसखानि दिन द्वै मैं बात फैलि जैहै,
कहाँ लौं सयानी चंदा हाथन छिपाइबो।
आजु हौं निहारयौ बीर निपट कलिंदी-तीर,
दोउन को दोउन सों मुरि मुसकाइबो।
दोऊ परैं पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ उन्हैं,
भूलि गई गैयाँ इन्हैं गागर उचाइबो॥

× × ×

मोहन के मन भाइ गयौ इक भाइ सों ग्वालिनैं गोधन गायौ।
ताकौं लग्यौ चट, चौहट सों दुरि औचक गात सों गात छुवायौ।
रसखानि लही इनि चातुरता चुपचाप रही जब लौं घर आयौ।
नैन नचाइ चितै मुसकाइ सु ओट ह्वै जाइ अँगूठा दिखायौ॥

× × ×

सोई है रास मैं नैसुक नाचि कै नाच नचायौ कितौ सबकों जिन।
सोई है री रसखानि किते मनुहारनि सूधें चितौत न हो छिन।
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव बिलोकि भयौ बस हाहा करी तिन।
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिरि लंगर मौड़ो कनौड़ो करै किन॥

× × ×

एक तें एक लौं कानन मैं रहैं ढीठ सखा सब लीने कन्हाई।
आवत ही हौं कहाँ लौं कहौं कोउ कैसे सहै अति की अधिकाई।
खायौ दही मेरो भाजन फोर्‌यौ न छोड़त चीर दिवाएँ दुहाई।
सौंह जसोमति की रसखानि तें भागें मरू करि छूटन पाई॥

× × ×

काहू को माखन चाखि गयौ अरु काहू को दूध दही ढरकायौ।
काहू को चीर लै रूख चढ़्‌यौ अरु काहू को गुंजछरा छहरायौ।
मानै नहीं बरजें रसखानि सु जानियै राज इन्हैं घर आयौ।
आव री बूझैं जसोमति सो यह छोहरा जायौ कि मेव मँगायौ॥

× × ×

ग्वालिन द्वैक भुजान गहैं रसखानि कों लाई जसोमति पाहैं।
लूटत हैं कहैं ये बन मैं मन मैं कहैं ये सुख-लूट कहाँ हैं।
अंग ही अंग ल्यौं ज्यौ ही लगैं त्यौ त्यौ हीं न अंग ही अंग समाहैं।
वै पछलैं उलटैं पग एक तौ वै (पछलैं उलटैं पग जाहैं)॥

× × ×

काह कहू सजनी सँग की रजनी नित बीतै मुकुंद को हेरी।
आवन रोज कहैं मनभावन आवन की न कबौ करी फेरी।
सौतिन-भाग बढ़्‌यौ ब्रज मैं जिन लूटत हैं निसि रंग घनेरी।
मो रसखानि लिखी बिधना मन मारि कै आपु बनी हौ अहेरी॥

× × ×

तूँ गरबाइ कहा झगरै रसखानि तेरे बस बावरो होसै।
तौ हूँ न छाती सिराइ अरी करि झार इतै उतै बाझिन कोसै।
लालहि लाल किये अँखियाँ गहि लालहि काल सो क्यौं भई रोसै।
ए बिधना तू कहा री पढ़ी बस राख्यौ गुपालहि लाल भरौसै॥

× × ×

प्रेमकथानि की बात चलैं चमकैं चित चंचलता चिनगारी।
लोचन बंक बिलोकनि लोलनि बोलनि मैं बतियाँ रसकारी।
सोहैं तरंग अनंग की अंगनि कोमल यौं झमकै झनकारी।
पूतरी खेलत ही पटकी रसखानि सु चौपर खेलत प्यारी॥

बंक बिलोकनि हँसनि मुरि, मधुर बैन रसखानि।
मिले रसिक रसराज दोउ, हरखि हिये रसखानि॥

× × ×

एक समै इक ग्वालिनि कों ब्रजजीवन खेलत दृष्टि परयौ है।
बाल प्रबीन सकै करि कै सरकाइ कै मौरन चीर धरयौ है।
यौं रस ही रस ही रसखानि सखी अपनो मनभायौ करयौ है।
नंद के लाड़िले ढाँकि दै सीस इहा हमरो बरु हाथ भरयौ है।।

× × ×

काह कहू रतियाँ की कथा बतियाँ कहि आवत है न कछू री।
आइ गोपाल लियौ भरि अंक कियौ मनभायौ पियौ रस कूँ री।
ताही दिना सों गड़ीं अखियाँ रसखानि मेरे अँग अंग मैं पूरी।
पै न दिखाई परै अब बावरी दै कै बियोग बिथा की मजूरी।।

× × ×

देखिहौं आँखिन सों पिय कों अरु कानन सों उन बैन कों प्यारी।
बाँके अनंगनि रंगनि की सुरभीनि सुगंधनि नाक मैं डारी।
त्यौं रसखानि हिये मैं धरौं वहि साँवरी मूरति मैन-उजारी।
गाँव भरौ कोउ नाँव धरौ पुनि साँवरी हौं बनिहौं सुकुमारी।।

× × ×

जो कबहूँ मग पाँव न देत सु तो हित लालन आपुन गौनै।
मेरो कह्यौ करि मौन तजौ कहि मोहन सों बलि बोल सलौनै।
सौंहैं दिवावत हौं रसखानि तूँ सौंहैं करै किन लाखनि लौनै।
नोखी तूँ मानिनि मान कह्यौ किन मान वसंत मैं कीनौ है कौनै।।

× × ×

पिय सों तुम मान करयौ कत नागरि आजु कहा किनहूँ सिख दीनी।
ऐसे मनोहर प्रीतम के तरुनी बरुनी पग पोंछै नवीनी।
सुंदर हास, सुधानिधि सो मुख नैननि चैन महारस भीनी।
रसखानि न लागत तोहि कछू अब तेरी तिया किनहूँ मति छीनी।।

× × ×

मान की औधि है आधी घरी अरी जौ रसखानि डरै हित कें डर।
कै हित छोड़ियै पारियै पाइनि ऐसे कटाछ नहीं हियरा-हर।
मोहनलाल कों हाल बिलोकियै नेकु कछू किनि छ्वै कर सों कर।
नाँ करिबे पर वारे हैं प्रान कहा करिहैं अब हाँ करिबे पर।।

× × ×

खेलै अलीजन के मन मैं उत प्रीतम प्यारे सों नेह नवीनों।
बैननि बोध करै इत कौं, उत सैननि मोहन को मन लीनो।

नैननि की चलिबी कछु जान सखी रसखानि चितैबे कों कीनो।
जा लखि पाइ जँभाइ गई चुटकी चटकाइ बिदा करि दीनो ॥

× × ×

नाह-बियोग बढ़्यौ रसखानि मलीन मता दुति देह तिया की।
पंकज सों मुख गौ मुरझाइ लगीं लपटैं बरि स्वाँस हिया की।
ऐसे मै आवत कान्ह सुने हुलसे तरकीं जु तनी अँगिया की।
यौ जगाजोति उठी अँग की उसकाइ दई मनौ बाती दिया की ॥

× × ×

वह सोई हुती परजंक लली लला लीनो सु आइ भुजा भरि कै।
अकुलाइ कै चौकि उठी सु डरी निकरी चहै अंकनि ते फरि कै।
झटका झटकी मैं फटौ पटुका दरकी अँगिया मुकता झरि कै।
मुख बोल कढ़े रिस से रसखानि हटौ जू लला निबिया धरि कै ॥

× × ×

सोई हुती पिय की छतियाँ लगि बाल प्रबीन महा मुद मानै।
केस खुले छहरैं बहरैं फहरैं, छबि देखत मैन अमानै।
वा रस मैं रसखानि पगी रति रैन जगी अखियाँ अनुमानै।
कंद पै बिंब औ बिब पै कैरव कैरव पै मुकतान प्रमानै ॥

× × ×

अँखियाँ अँखियाँ सौं सकाइ मिलाइ हिलाइ रिझाइ हियो हरिबो।
बतियाँ चित चोरन चेटक सी रस चारु चरित्रन ऊचरिबो।
रसखानि के प्रान सुधा भरिबो अधरान पै त्यौं अधरा धरिबो।
इतने सब मैन के मोहनी जंत्र पै मंत्र बसीकर सी करिबो ॥

× × ×

अंगनि अंग मिलाइ दोऊ रसखानि रहे लिपटे तरु-छाही।
संगनि संग अनंग को रंग सुरंग सनी पिय दै गलबाही।
बैन ज्यौं मैन सु ऐन सनेह को लूटि रहे रति अंतर जाहीं।
नीबी गहै कुच कंचन कुंभ कहै बनिता पिय नाहीं जु नाही ॥

× × ×

बागन काहे को जाओ पिया घर बैठे ही बाग लगाइ दिखाऊँ।
एड़ी अनार सी मौरि रही, बहियाँ दोउ चंपे की डार नवाऊँ।
छातिन मैं रस के निबुवा अरु घूँघट खोलि कै दाख चखाऊँ।
ढाँगन के रस के चसके रति फूलनि की रसखानि लुटाऊँ ॥

× × ×

एरी चतुर सुजान, भयौ अजान हि जान कै ।
तजि दीनी पहिचान, जान आपनी जान कौं ॥

× × ×

वा मुसकान पै प्रान दियौ जिय जान दियौ वहि तान पै प्यारी ।
मान दियौ मन मानिक के सँग वा मुख मंजु पै जोबन वारी ।
वा तन कौं रसखानि पै री तन ताहि दियौ नहिं आन बिचारी ।
सो मुँह मोर करी अब का हहा लाल लै आज समाज मैं ख्वारी ॥

× × ×

बाँके कटाछ चितैबो सिख्यौ बहुधा बरज्यौ हित कै हितकारी ।
तूँ अपने ढँग की रसखानि सिखावनि देति न हौं पचि हारी ।
कौन की सीख सिखी सजनी अजहूँ तजि दै बलि जाउँ तिहारी ।
नंदन नंद के फंद कहूँ परि जैहै अनोखी निहारनिहारी ॥

× × ×

आली पगे रंगे जे रँग साँवरे मो पै न आवत लालची नैना ।
धावत हैं उतहीं जित मोहन रोके रुकैं नहिं घूँघट ऐना ।
काननि कौं कल नाहिं परै सखी प्रेम सों भींजे सुनें बिन बैना ।
रसखानि भई मधु की मखियाँ अब नेह को बंधन क्यों हूँ छुटै ना ॥

× × ×

नवरंग अनंग भरी छवि सौं वह मूरति आँखि गड़ी ही रहै ।
बतिया मन की मन ही मैं रहै, घतिया उर बीच अड़ी ही रहै ।
तबहूँ रसखानि सुजान अली नलिनीदल बूँद पड़ी ही रहै ।
जिय की नहिं जानत हौं सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै ॥

× × ×

साँझ समै जिहि देखति ही तिहि पेखन कौं मन यौं ललकै री ।
ऊँचो अटान चढ़ी व्रजबाम सु लाज सनेह दुरै उझकै री ।
गोधन धूरि की धूँधरि मैं तिनकी छबि यौं रसखानि तकै री ।
पावक के गिरि तें बुझि मानौ धुँवा-लपटी लपटै लपकै री ॥

× × ×

वा मुख की मुसकानि भटू अँखियानि तें नेकु टरै नहिं टारी ।
जौ पलकैं पल लागति हैं पल ही पल माँझ पुकारैं पुकारी ।
दूसरी ओर ते नेकु चितै इन नैनन नेम गह्यौ बजमारी ।
प्रेम की बानि कि जोगकलानि गही रसखानि बिचार बिचारी ॥

× × ×

देखे ते नेकु सम्हार रहै न तबै झुकि कै लखि लोग लजावै।
चैन नहीं रसखानि दुहूँ बिधि भूली सबै न कछू बनि आवै।।

× × ×

लाल लसे पगिया सब के, सब के पट कोटि सुगंधनि भीने।
अंगनि अंग सजे सब ही रसखानि अनेक जराउ नवीने।
मुकता-गलमाल लसै सब के सब ग्वार कुमार सिंगार सो कीने।
पै सिगरे ब्रज के हरि हीं हरि ही कै हरैं हियरा हरि लीने।।

× × ×

औचक दृष्टि परे कहूँ कान्ह जू तासों कहै ननदी अनुरागी।
सो सुनि सास रही मुख मोरि, जिठानी फिरै जिय मैं रिस पागी।
नीके निहारि कै देखे न आँखिन, हौं कबहूँ भरि नैन न जागी।
मो पछितावो यहै जु सखी कि कलंक लग्यो पर अंक न लागी।।

× × ×

मेरो सुभाव चितैबे को माइ री लाल निहारि कै बंसी बजाई।
वा दिन तें मोहि लागी ठगौरी सी लोग कहैं कोई बावरी आई।
यौं रसखानि घिर्‌यौ सिगरो ब्रज जानत वे कि मेरो जियराई।
जौ कोउ चाहै भलौ अपनो तौ सनेह न काहू सों कीजियौ माई।।

× × ×

आजु भटू इक गोपकुमार ने रास रच्यौ इक गोप के द्वारैं।
सुंदर बानिक सों रसखानि बन्यौ वह छोहरा भाग हमारैं।
ए विधना जो हमैं हँसती अब नेकु कहूँ उत को पग धारैं।
ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनहीं तन औ मन जोवन वारैं।।

× × ×

मकराकृत कुंडल गुंज की माल वे लाल लसैं पग पाँवरिया।
बछरानि चरावन के मिस भावतो दै गयौ भावती भाँवरिया।
रसखानि बिलोकत ही सिगरी भई बावरिया ब्रज-डाँवरिया।
सजनी इहिं गोकुल मैं बिष सो बगरायौ है नंद के साँवरिया।।

× × ×

पूरब पुन्यनि तें चितई जिन ये अँखियाँ मुसकानि भरी जू।
कोऊ रहीं पुतरी सी खरी, कोउ घाट डरी, कोउ बाट परी जू।
जे अपने घरहीं रसखानि कहै अरु हौंसनि जाति मरी जू।
लाल जे बाल बिहाल करी ते बिहाल करी न निहाल करी जू।।

× × ×

समुझै न कछू अजहूँ हरि सो ब्रज नैन नचाइ नचाइ हँसै।
नित सास की सीरी उसासनि सों दिन हीं दिन माइ की काँति नसै।
चहुँ ओर बबा की सौं सोर सुने मन मेरेऊ आवति री सकसै।
पै कहा करौं वा रसखानि बिलोकि हियो हुलसै हुलसै हुलसै॥

× × ×

आजु री नंदलला निकस्यौ तुलसीबन तें बनकैं मुसकातो।
देखें बनै न बनै कहतै अब सो सुख जो मुख मैं न समातो।
हौं रसखानि बिलोकिबे कौं कुलकानि के काज कियौ हिय हातो।
आइ गई अलबेली अचानक ए भटू लाज को काज कहा तो॥

× × ×

वह गोधन गावत गोधन मैं जब ते इहिं मारग ह्वै निकस्यौ।
तब ते कुलकानि कितीय करौ यह पापी हियो हुलस्यौ हुलस्यौ।
अब तौ जु भई सु भई नहिं होत है लोग अजान हँस्यौ सु हँस्यौ।
कोउ पीर न जानत जानत सो तिनके हिय मैं रसखानि बस्यौ॥

× × ×

मो मन मोहन कौं मिलि कै सबहीं मुसकानि दिखाइ दई।
वह मोहनी मूरति रूपमई सबहीं चितई तब हौं चितई।
उन तौ अपने अपने घर की रसखानि भली बिधि राह लई।
कछु मोहिं को पाप परयौ पल मैं पग पावत पौरि पहार भई॥

× × ×

ब्याहीं अनब्याहीं ब्रज माहीं सब चाहीं तासों,
दूनी सकुचाहीं, दीठि परै न जुन्हैया की।
नेकु मुसकानि रसखानि की बिलोकत ही,
चेरी होतिं एक बार कुंजनि-दिखैया की।
मेरो कह्यौ मानि अंत मेरो गुन मानिहै री,
प्रात खात जात ना सकात सौंह मैया की।
माइ की अँटक तौ लौं सासु की हटक, जौ लौं,
देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैया की॥

× × ×

अब हीं खरिक गई गाइ के दुहाइबे कौं,
बावरी ह्वै आई डारि दोहनीयौ पानि की।
कोऊ कहै छरी, कोऊ मौन परी, डरी कोऊ,
कोऊ कहै मरी गति हरी अँखियानि की।

सास व्रत ठानै नंद बोलत मयाने धाइ,
दौरि दौरि मानै जानै खोरि देवतानि को।
सखी सब हँसैं मुरझानि पहिचानि, कहूँ
देखी मुसकानि वा अहीर रसखानि की॥

× × ×

या छबि पै रसखानि अब वारौं कोटि मनोज।
जाकी उपमा कबिन नहिं पाई रहे सु खोज॥

मन लीनो प्यारे चितै पै छटाँक नहिं देत।
यहै कहा पाटी पढ़ी दल को पीछो लेत॥

ए सजनी लोनो लला लख्यौ, नंद के गेह।
चितयौ मृदु मुसकाइ कै, हरी सबै सुधि-देह॥

देख्यौ रूप अपार, मोहन सुंदर स्याम को।
वह ब्रजराजकुमार, हिय जिय नैननि मैं बस्यौ॥

मोहन छबि रसखानि लखि, अब दृग अपने नाहिं।
ऐंचे आवत धनुष से, छूटे सर से जाहिं॥

× × ×

दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं लट आनन पै लहराइ रही।
छकि छैल छबीली छटा छहराइ कै कौतुक कोटि दिखाइ रही।
झुकि झूमि झमाकनि चूमि अमी चहि चाँदनी चंद चुराइ रही।
मन भाइ रही रसखानि महा छबि मोहन की तरसाइ रही॥

× × ×

अलबेली बिलोकनि बोलनि औ अलबेलियै लोल निहारन की।
अलबेली सी डोलनि गंडनि पै छबि सों मिलि कुंडल बारन की।
भट्ठ ठाढ़ौ लख्यौ छबि कैंसें कहौं रसखानि गहें द्रुम डारन की।
हिय मैं जिय मैं मुसकानि रसी गति को सिखवै निरवारन की॥

× × ×

आज गई ब्रजराज के मन्दिर सुंदर स्याम बिलोक्यौ री माई।
सोइ उठ्यौ पलिका कल-कंचन बैठ्यौ महा मनहार कन्हाई।
ए सजनी मुसकात लख्यौ रसखानि बिलोकनि बंक सुहाई।
मैं तब तें कुलकानि तजी सु बजी ब्रजमंडल माँह दुहाई॥

× × ×

अति सुंदर री ब्रजराजकुमार महामृदु बोलनि बोलत है।
लखि नैन की कोर कटाछ चलाइ कै लाज की गाँठन खोलत है।
सुनि री सजनी अलबेलो लला वह कुंजनि कुंजनि डोलत है।
रसखानि लखैं मन बूड़ि गयौ मधि रूप के सिंधु कलोलत है।।

× × ×

कैसो मनोहर बानक मोहन सोहन सुंदर काम तें आली।
जाहि बिलोकत लाज तजी कुल छूटौ है नैननि की चल चाली।
अधरा मुसकान तरंग लसै रसखानि सुहाइ महाछबि छाली।
कुंजगली मधि मोहन सोहन देख्यौ सखी वह रूप-रसाली।।

× × ×

आली लला घन सों अति सुंदर तैसो लसै पियरो उपरैना।
गंडनि पै छलकै छबि कुंडल मंडित कुंतल रूप की सैना।
दीरघ बंक बिलोकनि की अवलोकनि चोरति चित्त की चैना।
मो रसखानि हर्यौ चित री मुसकाइ कहे अधरामृत बैना।।

× × ×

डोरि लियौ मन चोरि लियौ चित, जोरि लियौ हित, तोरिकै कानन।
कुंजनि ते निकस्यौ सजनी मुसकाइ कह्यौ वह सुंदर आनन।
हौं रसखानि भई रसमत्त सखी सुनिकै कल बाँसुरी कानन।
मत्त भई बन बीथिन डोलति मानति काहू की नेकु न आनन।।

× × ×

प्रेम-अयनि श्रीराधिका, प्रेम-बरन नँदनंद।
प्रेमबाटिका के दोऊ, माली मालिन द्वंद।।

प्रेम प्रेम सब कोउ कहत, प्रेम न जानत कोइ।
जौ जन जानै प्रेम तौ, मरै जगत क्यौं रोइ।।

प्रेम अगम अनुपम अमित, सागर सरिस बखान।
जो आवत यहि ढिग, बहुरि जात नाहिं रसखान।।

प्रेम-बारुनी छानि कै, बरुन भये जलधीस।
प्रेमहिं तें बिषपान करि, पूजे जात गिरीस।।

प्रेमरूप दर्पन अहो, रचै अजूबो खेल।
या मैं अपनो रूप कछु, लखि परिहै अनमेल।।

कमल तंतु सो हीन अरु, कठिन खड़ग की धार।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेमपंथ अनिवार।।

लोक-बेद-मरजाद सब, लाज काज संदेह ।
देत बहाए प्रेम करि, बिधि-निषेध को नेह ।।
कबहुँ न जा पथ भ्रम-तिमिर रहै सदा सुख-चंद ।
दिन-दिन बाढ़त ही रहत, होत कबहुँ नहि मंद ।।
भले वृथा करि पचि मरौ, ज्ञान-गरूर बढ़ाय ।
बिना प्रेम फीको सबै कोटिन किये उपाय ।।
स्रुति पुरान आगम स्मृतिहि, प्रेम सबहि को सार ।
प्रेम बिना नहिं उपज हिय, प्रेम-बीज-अँकुवार ।।
आनँद-अनुभव होत नहि, बिना प्रेम जग जान ।
कै वह बिषयानंद कै ब्रह्मानंद बखान ।।
ज्ञान कर्मअरु उपासना, सब अहंमिति को मूल ।
दृढ़ निस्चय नहिं होत, बिन किये प्रेम अनुकूल ।।
सास्त्रन पढ़ि पंडित भए, कै मौलवी कुरान ।
जु पै प्रेम जान्यौ नहीं, कहा कियौ रसखान ।।
काम क्रोध मद मोह भय लोभ द्रोह मात्सर्य ।
इन सब ही तें प्रेम है परे, कहत मुनिवर्य ।।
बिन गुन जोबन रूप धन, बिन स्वारथ हित जानि ।
सुद्ध, कामना तें रहित प्रेम सकल रसखानि ।।
अति सूछम कोमल अतिहि, अति पतरो अति दूर ।
प्रेम कठिन सब तें सदा, नित इकरस भरपूर ।।
जग मैं सब जान्यौ परै, अरु सब कहै कहाइ ।
पै जगदीस 'रु प्रेम यह, दोऊ अकथ लखाइ ।।
जेहि बिनु जाने कछुहि नहि, जान्यौ जात बिसेष ।
सोइ प्रेम, जेहि जानि कै, रहि न जात कछु सेष ।।
दंपति-सुख अरु बिषय-रस, पूजा निष्ठा ध्यान ।
इन तें परे बखानियै, सुद्ध प्रेम रसखानि ।।
मित्र कलत्र सुबंधु सुत, इनमैं सहज सनेह ।
सुद्ध प्रेम इनमैं नहीं, अकथ कथा सविसेह ।।
इकअंगी बिनु कारनहि, इकरस सदा समान ।
गनै प्रियहि सर्बस्व जो, सोई प्रेम प्रमान ।।
डरे सदा चाहै न कछु, सहै सबै जो होइ ।
रहै एकरस चाहि कै, प्रेम बखानौ सोइ ।।

प्रेम प्रेम सब कोउ कहै, कठिन प्रेम की फाँस ।
प्रान तरफि निकरै नहीं, केवल चलत उसाँस ।।
प्रेम हरी को रूप है, त्यौं हरि प्रेम-सरूप ।
एक होह द्वै यौं लसैं, ज्यौं सूरज औ' धूप ।।
ज्ञान ध्यान बिद्या मती, मत बिस्वास बिवेक ।
बिना प्रेम सब धूरि हैं, अगजग एक अनेक ।।
प्रेम-फाँस हैं फँसि मरै, सोई जियै सदाहिं ।
प्रेम-मरम जाने बिना, मरि कोउ जीवत नाहिं ।।
जग मैं सब ते अधिक अति, ममता तनहिं लखाइ ।
पै या तनहूँ ते अधिक, प्यारो प्रेम कहाइ ।।
जेहि पाएँ बैकुंठ अरु, हरिहूँ की नहिं चाहि ।
सोइ अलौकिक सुद्ध सुभ, सरस सुप्रेम कहाहि ।।
कोउ याहि फाँसी कहत, कोउ कहत तरवार ।
नेजा, भाला, तीर कोउ, कहत अनोखी ढार ।।
पै मिठास या मार के, रोम रोम भरपूर ।
मरत जियै, झुकतौ थिरै, बनै सु चकनाचूर ।।
पै एतोहूँ हम सुन्यौ, प्रेम अजूबो खेल ।
जाँबाजी बाजी जहाँ, दिल का दिल से मेल ।।
सिर काटौ, छेदौ हियो, टूक टूक करि देहु ।
पै याके बदले बिहँसि, वाह वाह ही लेहु ।।
अकथ कहानी प्रेम की, जानत लैली खूब ।
दो तनहूँ जहँ एक भे, मन मिलाइ महबूब ।।
दो मन इक होते सुन्यौ, पै वह प्रेम न आहि ।
होइ जबै द्वै तनहुँ इक, सोइ प्रेम कहाहि ।।
याही तें सब मुक्ति तें, लही बड़ाई प्रेम ।
प्रेम भए नसि जाहिं सब, बँधे जगत के नेम ।।
हरि के सब आधीन, पै हरी प्रेम अधीन ।
याही तें हरि आपुहीं, याहि बड़प्पन दीन ।।
बेद-मूल सब धर्म, यह कहैं सबै स्रुतिसार ।
परम धर्म है ताहु तें, प्रेम एक अनिवार ।।
जदपि जसोदानंद अरु, ग्वाल बाल सब धन्य ।
पै या जग मैं प्रेम कौं, गोपी भईं अनन्य ।।

वा रस की कछु माधुरी, ऊधो लही सराहि ।
पावै बहुरि मिठास अस, अब दूजो को आहि ॥

स्रवन कीरतन दरसनहि, जो उपजत सोइ प्रेम ।
सुद्धासुद्ध बिभेद तें, द्वैबिध ताके नेम ॥

स्वारथमूल असुद्ध त्यौं, सुद्ध स्वभाव 'नुकूल ।
सारदादि प्रस्तार करि, कियौ जाहि को तूल ॥

रसमय, स्वाभाविक, बिना स्वारथ अचल महान ।
सदा एकरस सुद्ध सोइ, प्रेम अहै रसखान ॥

जातें उपजत प्रेम सोइ, बीज कहावत प्रेम ।
जामैं उपजत प्रेम सोइ, क्षेत्र कहावत प्रेम ॥

जातें पनपत बढ़त अरु, फूलत फलत महान ।
सो सब प्रेमहिं प्रेम यह, कहत रसिक रसखान ॥

वही बीज अंकुर वही, एक वही आधार ।
डाल पात फल फूल सब, वही प्रेम सुखसार ॥

जो जातें जामैं बहुरि, जा हित कहियत बेष ।
सो सब प्रेमहिं प्रेम है, जग रसखानि असेष ॥

कारज-कारन रूप यह, प्रेम अहै रसखान ।
कर्ता कर्म क्रिया करन, आपहि प्रेम बखान ॥

देखि गदर हित-साहबी, दिल्ली नगर मसान ।
छिनहिं बादसा-बंस की, ठसक छोरि रसखान ॥

प्रेम-निकेतन श्रीबनहि, आइ गोबर्धन-धाम ।
लह्यौ सरन चित चाहि कै, जुगल-सरूप ललाम ॥

तोरि मानिनी ते हियो, फोरि मोहनी मान ।
प्रेमदेव की छबिहि लखि, भए मियाँ रसखान ॥

बिधु सागर रस इंदु सुभ बरस सरस रसखानि ।
प्रेमबाटिका रचि रुचिर चिर हिय-हरष बखानि ॥

अरपी श्रीहरि-चरन-जुग-पदुम-पराग निहार ।
बिचरहिं या मैं रसिकबर, मधुकर-निकर अपार ॥

राधा-माधव सखिन सँगु, बिहरत कुंज-कुटीर ।
रसिकराज रसखानि तहँ, कूजत कोइल कीर ॥

सूरदास मदन मोहन

अहो मेरी लाडिली सुकुमारि पालने झूलै।
मृदु मुसकान निरखि नैननि सुख कीरत जू मन ही मन फूलै।
कबहुँ चटकोश चटकावति, झुंजन झुंझुना भूलन भूलै।
कबहुँक लेत उछ्रग अंग भरि अंतरगति ही हरति है सूलै।
श्री वृषभानु गोद लै बैठे, मन क्रम बचन साधना तूलै।
सूरदास मदन मोहन के अन्तर निधि की खानि सों खूलै।

× × ×

प्रीतम प्यारी राजति रंग महल।
गरजि - गरजि - रिमझिम-रिमझिम,
बूँदनि लग्यो बरसनि घन।
बोलत चातक मोर दामिनी दमकि,
आवै झूमि बादर अवनि परखन।
तैसी हरियारी सावन मन भावन,
आनंद मन उपजावत इन्द्र बधू दरसन।
मदन मोहन पिया सँग गावत राग मल्हार,
ललित लता लागी सुनि सुनि दरसन।

× × ×

स्वामि निकट सनमुख ह्वै बैठी स्यामा कंचन मनि आभूषन पहिरै
साँवरे तन में प्रतिबिम्बित हैं मानो स्नान करत बैठी जमुना जल में गहिरै
अंग अंग आभास तरंग गौर स्यामता सुन्दरता सोभा की लहरै
सूरदास मदन मोहन मोपै कहि नहि आवत दृष्टि न ठहरै

× × ×

स्याम लाल प्रात भयो, जागो बलि जाऊँ।
गुटिया सुरझाय बीच सुमन है गुथाऊँ।
उगत सूर्य ज्योति भई कुलहिरी बनाऊँ।
पाँय बाँधि घुँघुरो सो चलिबो सिखाऊँ।
सूरदास मदन मोहन गुन तिहारो गाऊँ।
हरषि निरषि गोबिन्द छवि जीवन फल पाऊँ।

× × ×

खेलिये आँगन छगन मगन कीजिए कलेवा।
छीके ते सौंधी दधि ऊपर तें काढ़ि धरी।

पहिरि लेउ झंगुली फेंटा बाँधि लेहु मेवा।
ग्वालन के सँग खेलन जाहु खेलन के मिस भूषण ल्याहु।
कौन परी प्यारे निसिदिन की टेवा।
सूरदास मदन मोहन घर में ही खेलो प्यारे ललन।
भँवरा चकडोर देहौ हँस चकोर परेवा।

× × ×

मधु के मतवारे स्याम खोलौ प्यारे पलकै।
सीस मुकु लटा छुटी और छुटी अलकै।
सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरस हेतु किलकै।
नासिक के मोती सोहै बीच लाल ललकै।
कटि पीताम्बर मुरली स्रवन कुंडल झलकै।
सूरदास मदन मोहन दरस दैहो भलकै।

× × ×

चली री, मुरली सुनिए, कान्ह बजाई जमुना तीर।
तजि लोक लाज, कुल की कानि गुरु-जन की भीर।
जमुना-जल थकित भयो बछा न पीवै छीर।
सुर-विमान थकित भये, थकित कोकिल कीर।
देह की सुधि बिसरि गई, बिसरो तन कौ चीर।
मात तात बिसरि गये, बिसरे बालक बीर।
मुरली धुनि मधुर बाजै, कैसे कै धरौं धीर।
सूरदास मदन मोहन जानत हौं पर - पीर।

× × ×

माई री, झूलत रंग हिंडौरै।
सोभा तन स्याम-गोरै नील।
पीत पट दामिनी के भोरैं।
सखी जन चहुँ ओर झुलावति।
थोरै थोरै पवन गवन आवै सोध्वै की झंकोर।
सोभा सिन्धु मन बोरै ननिन सों।
नैन जोरै रीझि, प्रान वारति छबि पर तृन तोरै।
सूरदास मदन मोहन चित चोरै।
मुरली की धुनि सुनि सुर वधू सिर ढोरै॥

× × ×

पाछे ललिता आगे स्यामा प्यारी,
ता आगे पिय मारग फूल बिछावत जात।
कठिन कलीं बीन बीन न्यारी करत,
प्यारी के चरण कोमल जानि सकुचन गड़िबेऊ डरात।
दीर्घलता कर सों निवारत पाछे,
गहे डारि सीस नाहि पसरत पल्लव पात।
सूरदास मदन मोहन पिय की अधिनताई,
देखत मेरे री नैन सिरात।

श्री भट्ट

भीजत कब देखौं इन नैना।
स्यामजू की सुरँग चूनरी, मोहन को उपरैना।
स्याम स्यामा कुन्जतर ठाढ़े, जतन कियो कुछ मैना।
श्री भट्ट उमड़ि घटा चहुँ दिसि तें, घिरि आई जल सेना।

× × ×

ब्रजभूमि मोहिनी मैं जानी।
मोहन कुंज, मोहन वृन्दाबन, मोहन जमुना पानी।
मोहन नारि सकल गोकुल की बोलति अमिरत बानी।
श्री भट्ट के प्रभु मोहन नागर, मोहनि राधा रानी।

× × ×

बसौ मेरे नैननि में दोउ चन्द।
गोर बदनि बृषभान नंदिनी स्याम बरन नँदनन्द।
गोलक रहे रूप में निरखत आनन्द कन्द।
जय श्री भट्ट प्रेम रस बन्धन, क्यों छूटे दृढ़ फन्द।

हरीराम व्यास

वृन्दावन के रूख हमारे मात पिता सुत बन्ध।
गुरु गोबिंन्द साधु गति मति सुख, फल फूलन की गन्ध।
रनहि पीठि दै अनत डीठि करै सो अन्धन में अन्ध।
व्यास इनहि छौड़ै और छुड़ावै ताको परियो कन्ध।

× × ×

आजु कछु कुंजन में बरषा सी।
बादल दल में देखि सखी री! चमकत है चपला सी।
नान्ही नान्ही बूँदन कछु धुरना से, पवन बहै सुखरानी।
मन्द मन्द गरजनि सो सुनियतु, नाचति मोर समा सी।
इन्द्र धनुष बग पंगति बोलित बोलति कोक कला सी।
इन्द्र बधू छबि छाइ रही मनु गिरि पर अरुन घटा सी।
उमगि महीरुह स्यो महि फूली भूली मृगमाला सी।
रटति व्यास चातक ज्यों रसना, रस पीवत हू प्यासी।

× × ×

सुघर राधिका प्रवीन बीना, वा रास रच्यो,
स्याम संग वर सुढंग तरनि तनया तीरे।
आनन्द कन्द वृन्दावन सरद मंद मंद पवन,
कुसुम कुन्ज ताप दवन, धुनित कल कुटीरे।
रुनित किंकिनी सुचारु, नूपुर तिमि बलय हार,
अंग बर मृदंग ताल तरल रंग भीरे।
गावत अति रंग रह्यो, मोपै नहिं जात कह्यो,
व्यास रस प्रवाह वह्यो निरखि नैन सीरे॥

× × ×

सती सूरमा संत जन, इन समान नहिं और।
अगम पंथ पै पग धरै, डिगे न पावै ठौर॥
व्यास न कथनी काम की, करनी है इक सार।
भक्ति बिना पंडित वृथा, ज्यों खर चन्दन भार॥

मंझन

हरि हरि कहां गएउँ कह रहेऊँ। का किछु कहै लिए का कहेऊँ।
कुंवर बात कहिबे मैं लई। बीच नींदि मोहिं हरि लै गई।
अब हौं पलटि कहौं सुनु बाता। जस कुमार सुख निंद्रा माता।
बिधि सँजोग भा अछरिन केरा। सोवत कुंवर सेज पर घेरा।
देखा गंध्रप सुरति अमोला। अछरिन केर देखि चित डोला।
कहिनि कि यह मानुस हम अछरीं और न हमरे काज।
पै यह लखिय बरहि बर कामिनि उदै अस्त जेत राज॥

× × ×

उदै अस्त जहँ लगि जग रेखा। कौन सो ठाउँ जो हम नहिं देखा।
हम हहिं सभ सयंसार बिनानी। ढूंढहिं जग एहिं जोग परानी।
कोइ सराह सोरठ गुजराता। कोइ कह सिंघल दीप कै बाता।
त्रिभुवन चित आई दौराई। कुंवर जोग जग नारि न पाई।
पुनि उठि जनी एक अस कहा। एहि रे जोग कन्या एक अहा।

बिक्रम राय सकबंधी नगर महारस थान।
तेहि घर है कन्या मधुमालती रबि ससि रूप छपान॥

× × ×

सुनत बात बहुतहि चित भाई। कोइ कहै कुंवर रूप अधिकाई।
पुनि सभ मिलिकै कहहिं बिचारी। पटतर देखिय कुंवर कुमारी।
कोइ कहै कुंवरहि ओहिं लै जाइय। कोइ कहै कुंवरि इहाँ लै आइय।
जनी एक पुनि कहा बुझाई। जातहिं आवत रैनि सिराई।
पुनि मोहनि निंदरा चखि लाई। लीन्हि कुंवर कै सैन उचाई।

जहँ सोवै सुख सेज सोहागिनि तीनि भुवन उजियारि।
लै पालक तहँ डासी सम कै देखहिं रूप उन्हारि॥

× × ×

देखिनि सो जो न जाइ बखाना। दिन सूरूज निसि चाँद छपाना।
अचकि रहीं किछु कहा न जाई। देखि रूप सभ रहीं लजाई।
एहि देखहिं तौ अधिक लोनाई। ओहि परखहिं तौ रूप सवाई।
अपनी अपनी कला सपूनी। दुइ महँ कोउ न राव बिहूनी।
अपने रूप कुंवर निरमला। बर कामिनि मुहँ सोरह कला।

जेउं जेउं निरखि निहारै तेउं तेउं अधिक सरूप।
तीनि भुवन महं बिधनै एइ दोउ सिरे अनूप॥

× × ×

कहहिं रूप उत्तिम ए दोऊ। एक एक लेखें अधिक न कोऊ।
जौ बिधि इन्ह दोउ देइ मेरावा। बाजै तीनिउं लोक बधावा।
जोगिहिं जोग मिलें सुख होई। औ सुख इन्हहि जौ देखै कोई।
तीनि भुवन जगजीवन साईं। इन्ह दुहुँ प्रीति मिलाव गोसाईं।
त्रिभुवन सिस्टि ढूँढि हम रहीं। इन्ह दुहुँ सम तीसर कोउ नहीं।

यह सूरुज वह ससिहर यह ससिहर वह सूर।
इन्ह दुहुँ पेम प्रीति जौ उपजै त्रिभुवन बाजै तूर॥

× × ×

कहेन्हि कि ए दुइ पेम पियारे। बिधनै जगत सइंहि औतारे।
हम एहि नगर चरन गति आई। चलहि जाहिं कौतुक अंबराई।
जौ लहि एह सोवहिं एहिं ठाऊँ। तौ लहि हम देखहिं लखराऊँ।
कै गवनीं लखराउँ सबाई। जागा राजकुंवर अँगिराई।
देखेसि दोसर सैन सम डासी। राजकुंवरि एक तहाँ नेवासी।

सूर न सरभरि पावै चाँद न खूंदै छाँह।
नौ सत कला सपूनी सोवै जोबन उसीसे बाँह॥

× × ×

चहुँ दिसि मंदिल पटोर मढ़ावा। हेम खंभ सभ नगन जड़ावा।
मंदिल सरग ससि बदन (सो) नारी। तारे रतन धरे जनु तारी।
कचपचियाँ भइ चेरिन्ह टोला। पालक जानु अकास खटोला।
पालक पर जनु लाइ संवारी। सोई सेन सहज बिकरारी।
सेज सौंरि का बरनौं पारी। कहत सुनत जो बात रसारी।

नौ सत साजें बाला निभरम सोव सुख सेज।
चेत परिहरेउ कुंवर चित देखि हरेउ बुधि तेज॥

× × ×

सूती सेज सहज बिकरारा। देखि सजग भा राजकुमारा।
चक्रित चित दहुँ दिसि फिरि हेरा। बिधि यह नगर मंदिल केहि केरा।
औ यह कौन सोव बिकरारी। धनि जेहि लगि बिधनै औतारी।
देखत हिये समानी स्यामां। कुंवर जीउ करि गै परनामा।
सूती सुखी सेज देखि बाला। नख सिख उठी कुंवर के ज्वाला।

कंवल भांति परगासै पुरुख निरखि मुख सूर।
देखत पेम पिरीत पुब्ब कै हिय उर महं अंकूर॥

× × ×

जेउं जेउं देखै रूप सिंगारा। खिन मुरछै खिन चेत सँभारा।
देखि चक्रित चित रहा। बिधि यह कौन कहाँ मैं अहा।
एक रूप औ किएं सिंगारा। मुनिबर परहि देखि मुख बारा।
रूप रेख का कहौं बखानी। सहस भाउ होइ हिये समानी।
देखत रूप जीउ भरमानां। बेकहल पात जिंमि प्रान उड़ाना।

रूप सिंगार सोहागिनि जेउं जेउं देखि अघाइ।
तेउं तेउं नैन न परिहरहि रूप जो रहे लोभाइ॥

× × ×

उतपति सुनहु माँग के भाऊ। सरग पंथ अति बिकट चढाऊ।
देखत मांग चिहुर कर भावा। खिन भुलाइ खिन मारग पावा।
अति सोभित सिर मांग सुहाई। खरग धार जनु रगत बसाई।
मांग के पंथ चलै को पारा। परग परग बैसे फंसिहारा।
जेत गौने तेत मारे झारी। परगट रगत देखु रतनारी।

मांग सरूप सोहागिनि जानु खरग कै धार।
देखि बरनि को पारै फिरतहि होइ दुइ फार ॥

× × ×

सूर किरिन सिर मांग सोहाई। सभ जग जीति गगन पर आई।
मांग न आहि गगन कै हाटा। रबि ससि उदै अस्त कै बाटा।
कै जनु अमिअ नदी बहि आई। बदन चांद नहिं अमिअ सिराई।
मांग सरूप देखि जिउ हरा। दीप पतंग जोति जनु परा।
सिर पर ठाउं दीन्ह बिधि नाही। केहि पटतर लै लावौं ताही।

स्याम रैनि जस दामिनि स्याम जलद महं दीस।
सरग हुते जनु छिटकी आइ परी त्रिय सीस ॥

× × ×

तेहि पर कच बिखधर बिख सारे। लोटहिं सेज सहज लुहकारे।
सगबगाहिं परतिख मनियारे। गरल भरे बिखधर हतियारे।
निसि अजोर जैस बदन दिखाएं। तस अंध्यार दिन कच मोंकराएं।
कच न होहिं बिरही दुख सारा। भएउ जाइ मधु सीस सिंगारा।
भूली दसौ दसा निजु ताही। चिहुर चिन्हारि भई जग जाही।

छिटके चिहुर सोहागिनि जगत भएउ अन्धकाल।
जनु बिरही जन जिय बध कारन मनमथ रोपा जाल ॥

× × ×

जग सुबास पूरित भै जाहीं। किछु जानसि दहुँ कारन काहीं।
कै जनु म्रिग मद नाभि उघारी। कै मधु मालति चिहुर खिंडारी।
यह जो जगतं मलयानिल बाऊ। अति सुबास जानसि केहि भाऊ।
दिन एक कामिनि चिहुर खिंडाए। ठाढ़े मिरितु निकट बहु आए।
तेहि (तेही) दिन हुत बहुत उदासा। पै अजहूँ नहि पूजी आसा।

चिहुर पास मधु मालति जब सों बहेउ बतास।
तेहि दिन सों निसि बासर संतत बहा उदास ॥

× × ×

निह कलंक ससि दुइजि लिलारा। नौ खंड तीनि भुवन उजियारा।
बदन पसेउ बुंद चहुँ पासा। कचपचियैं जनु चांद गरासा।
म्रिगमद तिलक ताहि पर धरा। जानहु चांद राहु बस परा।
गएउ मयंक सरग जेहिं लाजा। सो लिलाट कामिनि पहं छाजा।
सहस कला देखिय उजियारा। जग ऊपर जगमगत लिलारा।

तर मयंक ऊपर तिसु पाटी बनी अहै कसि रीति।
जानहु ससि औ निसि सेउं भई सुरति बिपरीत॥

× × ×

काम कमान रहसि कर लीन्हें। वर सेउं तोरि टूक दुइ कीन्हें।
बिनु रस सेउं धरि मेलि अडारे। सोइ बनाइ मधु भौंह सँवारे।
भौंह नेवासि सोह कस बारी। मदन धनुक जनु धरा उतारी।
जौ चखि चढ़ै भौंह बर नारी। इंद्र धनुक दइ पनच अडारी।
तेहिं धनु मरन तिरभुवन जीता। बहुरि उतारि नारि कहं दीता।

जीति त्रिलोक नेवासि भौ रहा न जगत जुझार।
देखत जाहि हिये सर निकरै तेहि को जीतै पार॥

× × ×

सूते स्याम सेत औ राते। लागत हिएं निफरि ही जाते।
चपल बिसाल तीख अति बांके। खंजन पलक पंख सेउं ढांके।
पारधि जनु अगनित जिउ हरे। पौढ़ें धनुक सीस तर धरें।
सनमुख मीन केलि जनु करहीं। कै जनु दुइ खंजन उड़ि लरहीं।
दुवौ नैन जिय केर बियाधा। देखत उठै मरै कै साधा।

अचिजु एक का बरनौं बरनत बरनि न जाइ।
जनु सारंग सारंग तर निभरम पौढ़े आइ॥

× × ×

बरुनि बनावरि बिहस बुझाई। मटकि परत उर जाहिं समाई।
बरुनि बान सनमुख भे जाही। रोवं रोवं तन झांझर ताही।
दिस्टि साथ गै हियें सयानी। रुहिर करेज कीन्ह धंरि पानी।
जबहीं बरुनि बरुनि सों मेरवै। जानहु छुरी छुरी सों टेवै।
बरुनि बान को जीतै पारा। एक मूठि सौ कांड पबारा।

बरुनि बान के मारत मैं न सकेउं जिउ लेखि।
केहि न मिरितु जिय भावै बरुनि सोहागिनि देखि॥

× × ×

नांक सरूप न बरने पारौं। तीनिउं भुवन हेरि कै हारौं।
कीर टोर औ खरग कै धारा। तिलक फूल मैं बरनि न पारा।
उदयागिरि जौ कहौं तौ नाहीं। ससि सूरुज दुइ बाद कराहीं।
निकट न कोउअ सँचरै पारा। निसि दिन जियै सो बास अधारा।
केहि दै जोर पटतरौं नासा। ससि सूरुज जेरि करहिं बतासा।

नांक सरूप सोहागिनि केहि लै लावौं भाउ।
जा कहं ससि सूरुज निसि बासर ओसरीं सारहिं बाउ।।

× × ×

अति सुरंग रस भरे अमोला। जुग सोभित मुख मद्धि कपोला।
मतिहीनी किछु उकति न आई। मधु कपोल बरनौं केहि लाई।
नहिं जानौं दहुँ केइं तप सारा। जो बेरसिहि यह निधि सयंसारा।
अस कपोल बिधि सिरे सोहाए। जे न जाहिं किछु उपमा लाए।
मानुस दहुँ बपुरा केहि माहीं। देवता देखि कपोल नवाहीं।

सुर नर मुनि गन गंध्रप काहुँ न रहेउ गियान।
देखि कपोल नारि कै निहचै टरै महेस धियान।।

× × ×

अधर अमिअ रस भरे सोहाए। पेम बरें हुत रगत तिसाए।
अति सुरंग कोंवल रस भरे। जानहु बिंब मयंकम धरे।
पटतर लाइ न जाहिं बखाने। जनु ससि अमी गारि बिधि साने।
अधर अमीरस भरे अपीऊ। कुंवर जान मोर डोलहिं जीऊ।
वह सो घरी बिधि कब दरसाइहि। जब यह जिउ मोरे घट आइहि।

अनल बरन दुइ अधर सोहागिनि जगत सुधानिधि जान।
अचिंजु जो अम्रित अगिनि सेउं देखत जरहिं परान।।

× × ×

दसन जोति बरनी नहिं जाई। चौंधै दिस्टि देखि चमकाई।
नेक बिगसाइ नींद महं हँसी। जानहुँ सरग सेउं दामिनि खसी।
बिहरत अधर दसन चनकाने। त्रिभुवन मुनि गन चौंधि भुलाने।
मंगर सूक गुरू सन्हि चारी। चौक दसन भय राजकुमारी।
नहिं जानौं दहुँ कहँ दुरि जाई। रहे जाइ ससि माहिं लुकाई।
जौ कोइ कहै कि बिध्धि पसारा तेहि कर सुनहु सुभाउ।
बिधि गुपुत जग माहीं काहुँ न देखा काउ।।

× × ×

तिल जो परा मुख ऊपर आई। बरनि न गा किछु उपमा लाई।
जाइ कुंवर चखु रूप लोभाने। हिलगे बहुरि न आवहिं आने।
तिल न होइ रे नैन कै छाया। जासेउं सोभ रूप मुख पाया।
अति निरमल मुख मुकुर सरीखा। चखु छाया तामहं तिल दीखा।
स्याम कोंवर लोचन पुत्तरी। मुख निरमल पर तिल होइ परी।

अति सरूप मुख निरमल मुकुर समान प्रवान।
तामहं चखु कै छाया दीसै तिल अनुमान॥

× × ×

सुधा समान जीभ मुख बाला। औ बोलति अति बचन रसाला।
सुनत बचन वहि अम्रित बानी। मितक मुख आवै भरि पानी।
सुने बचन जानु रतन अमोले। ते सभ भए जगत मिंठ बोले।
कौन सो तपा जनमि जग आइहि। जो रसनां पर रसनां लाइहि।
अति रसारि रसनां मुख रसी। दुइ अरि बीच जाइ बसी।

अति रसारि रसनां मुख कामिनि अमी सुरस परवान।
बदन चंद महं रसनां अमी सुरा कै जान॥

× × ×

सुभर सीप दुइ सवन सोहाए। सरग नखत जनु बीरि जराए।
तरिवन हीर रतन नग जरे। अदित सुक्र दुइ खुंटिला धरे।
दुहुँ दिसि दुवौ चक्र अनियारे। ससि संघ जानु उए दुइ तारे।
जग काकरि अति भागि बिधाता। सवन लागि वहि कह जो बाता।
बाता बदन चंद रखवारी। मानुकि राहु कीत दुइ फारी।

कानन्हि चक्र नरायन लहै दुहुँ दिसि जोति।
नातर राहु गरासत जौ न चक्र भौ होत॥

× × ×

गियं उपमां बरनौं केहि लाई। सइं बिसकरमैं चाक फिराई।
करम रेख दहुँ काहि लिलारा। केइं पयाग दहुँ करवत सारा।
केहि लगि बिधि असि गीवं निरमई। धनि सो कंठ ओहि लगि बेरसई।
धनि जग जीवन धनि औतारा। जेहिं लगि बिधि अस गीवं संवारा।
देखत तीनि कंठ कै रेखा। सजग सरीर होइ कस भेखा।

तीनि रेख अति सोभित गीवं सोहागिनि दीस।
कौन सो तपा जाहि लगि निरमी ऐसि गीवं जगदीस॥

× × ×

भुजा सईंहि बिसकरमैं गढ़ी। हारेउं हेरि न पटतर रही।
सबल सरूप अतिहिं बरियारी। देखि बीर अबली बलिहारी।
औ अनूप दुइ बनीं कलाईं। काम कुंदेरैं फेरि बनाईं।
औ तिन्ह पर दुइ सुभ्भर हथोरी। फटिक सिला जनु ईंगुर पूरी।
बिरही जन जहवां लहि मारे। तिन्हके रकत दस नख रतनारे।

सोभित सबल सरूप अति त्रिभुवन जीतन हार।
दहुँ केहि देइ आलिंगन धनि सो जग औतार ॥

× × ×

अति सरूप दुइ सिहुन अमोले। जिन्ह देखत त्रिभुवन मन डोलै।
कठिन हिरदै महं बिधि निरमाए। तातें कठिन सिहुन दुइ भए।
जबहिं हिरदैं हिरदैं संचरे। कुच आदर कहं उठ भै खरे।
दुवौ अनूप सिरीफल नए। भेंट आनि तरुनापैं दए।
जबहिं प्रानपति हियरे छाए। कुच सकोच उठि बाहेर आए।

दुनउं कठोरे कलिसिरे गरब न काहुँ नवाहिं।
दुवो सीवं के संझइत आपुस महिं न मिलाहिं ॥

× × ×

अनियारे तीखे अनियाई। दिस्टि साथ उर जाहिं समाई।
सोभित दिए स्याम सिर बाने। महाबीर त्रिभुवन जग जाने।
दुवौ सींव पर चहहिं लरा। हार आइ तब अन्तरु परा।
दुवौ बीर कुच जूह जुझारा। सोभहिं आनि सुनहिं रन मारा।
ऐने बैने अस तिनक सुभाऊ। संतत सौंह न पाछैं काऊ।

बिपरीत भाउ तिन्हहि कर नहि अचिज्जु कबि पेख।
जिन्ह उपजहिं नहिं सालहिं सालहिं तिन्हहिं जो देख ॥

× × ×

रोमावलि नागिनि बिस भरी। जनु करि हुते बिबर अनुसरी।
नाभी कुंड परी जइ आई। घूमि रही पै निकसि न जाई।
पातर पेट सरूप सुहावा। जनु बिधि बाफु अन्त निरमावा।
लंक झीनि देखि जिउ डरई। भार नितंब टूटि जनि परई।
छुइ न जाति कत हाथ पसारी। मंत छुवतहिं टूटहि हतियारी।

टूटि परति करि कामिनि गरुव नितंब के भार।
जौ न होतदिढ़ बंधन कीन्हे त्रिबली तासु अधार ॥

× × ×

करि माहैं त्रिबली कसि अही। बिधनै गढ़त मूंठि जनु गही।
गुरजन लाज मनहि मन मानेउं। तौ नहिं मदन भंडार बखानेउं।
देखि नितंब चिहुँटि चित लागा। परस दिस्टि मनमथ तन जागा।
जुगुल जंघ देखि मन थहराई। भरमेउ जीउ किछु कहा न जाई।
राते कोंवल सेत सोहाए। तरुवन्ह कंवल पटतर जिमि लाए।

बिपरित कनक केदली औ गज सुंड सुभाउ।
उपमां देत लजानेउं सुनहुँ कहौं सति भाउ॥

× × ×

बिनु कटाछ बिनु भाउ सिंगारा। सूती सेज बरनि को पारा।
जो बिधि सिरजी पुब्ब अनूपीं। सहज ते बाझु सिंगार सरूपीं।
सगरी सिस्टि केर अहिवाता। लज्यावंत मदन सभ गाता।
सोवत देखि सैन बिकरारा। उठेउ कुंवर तन बिरह बिकारा।
सहज चिनहिं उपजेउ बैरागू। बिरह आइ भा जिय कर लागू।

बदन मदन धनु दुति उदित देखि हरे मन चेत।
धनि सो जनम जग ताकर जा सेउं उपजै हेत॥

केशव

केशव एक समै हरि राधिका आसन एक लसे रँग भीने।
आनँद सों तिय आनन की द्युति देखत दर्पण में दृग दीने।
भाल के लाल में बाल विलोकत ही भरि लालन लोचन लीने।
शासन पीय सवासन सीय हुतासन में जनु आसन कीने॥

× × ×

केशव सूधो विलोचन सूधी विलोकनि सों अविलोकै सदाई।
सूधियौ बात सुनै समुझै, कहि आवत सूधियौ बात सदाई।
सूधी सुहाँसी सुधाकरसी मुख शोध कई वसुधा की सुधाई।
सूधे स्वभाव सबै सजनी वश कैसे किये अति टेढ़े कन्हाई॥

× × ×

कौन रंगरंगे नैन तिनही के डोलौ संग,
नासा अंग रसना के रस ही समाने हौ।
और गूढ़ कहा कहौ मूढ हौ जू जानि जाहु,
प्रौढ़ रूढ़ केशोदास नीके करि जाने हौ।

तन आन मन आन कपट-निधान कान्ह,
साँची कहो मेरी आन काहे को डराने हौ।
वे तौ हैं बिकानी हाथ मेरे हौं तिहारे हाथ,
तुम ब्रजनाथ हाथ कौन के बिकाने हौ॥

× × ×

चन्द कैसौ भाग भाल भृकुटी कमान ऐसी,
मैन कैसे पैने शर नैनन विलासु है।
नासिका सरोज गंधवाह से सुगन्धवाह,
दारयौं से दशन कैसो बीजुरी सो हासु है।
भांइ ऐसी ग्रीवा भुज पानसो उदर अरु,
पंकज सों पांइ, गति हंस ऐसी जासु है।
देखी है गुपाल एक गोपिका में देवता सी,
सोनो सो शरीर सब सोंधे कैसो वासु है॥

× × ×

माल गुही गुन लाल लटे लपटी लर मोतिन की सुख दैनी।
ताहि विलोकत आरसी लै कर आरस सो इक सारसनैनी।
केशव कान्ह दुरे दरसी परसी उपमा मति को अति पैनी।
सूरज मंडल में शशि मंडल मध्य धसी जनु ताहि त्रिवैणी॥

× × ×

लोचन ऐंचि लिये इत को मन की गति यद्यपि नेह नही है।
आनन आइ गये श्रम सीकर रोम उठे उर कंप गही है।
तासों कहा कहिये कहि केशव लाज समुद्र में बूड़ि रही है।
चित्रहु में हरि मित्रहिं देखति यों सकुची जनु बाँह गही है॥

× × ×

काल्हि की ग्वारि तौ आजहूँ तौन सम्हारति केशव कै सहुँ देहै।
सीरी ह्वै जात, उठै कबहूँ जरि जीव रहै कै रही रुचि रेहै।
कोरि बिचार बिचारति है उपचारन के बरसै सखि मेहै।
कान्ह बुरो जिन मानौ तिहारी बिलोकन में विष बीस बिसे है॥

× × ×

सखि सोहत गोप सभा महँ गोबिन्द बैठे हुते द्युति को धरि कै।
जनु केशव पूरण चन्द लसै चित चारु चकोरन को हरि कै।

तिन को उलटी करि आन दियो किहुँ नीरज नीर नये भरि कै।
कहि काहे तैं नेकु निहारि मनोहरि फेरि दियो कलिका करि कै॥

× × ×

लाड़िली लीजी कलोरी लुरी कहुँ लाल लुके कहाँ आग लगाइकै।
आजु तौ केशव कैसहुँ लेरुवै लागन देत न कैसेहू आइ कै।
बेगि चलौ चलि आइ बुलावन दौरि अकेलि यों हीं अकुलाइ कै।
भूलेहु गोकुल गाँउ में गोविन्द कीजै गरूर न गाइ चराइकै॥

× × ×

फूल न दिखाउ शूल फूलत है हरि बिन,
दूरि करि माला बाला व्यालसी लगति है।
चँवर चलाउ जिन बीजन हलाउ मति,
केशव सुगन्ध वायु बाइ सी लगति है।
चंदन चढ़ाउ जिन तापसी चढ़ति तन,
कुंकुम न लाउ अंग आग सी लगति है।
बार बार बरजति बावरी है वारौं प्रान,
बीरी ना खवाउ बीर विष सी लगति है॥

× × ×

प्रेम भय भूप रूप सचिव सकोच शोच,
विरह विनोद पील पेलियत पचि कै।
तरल तुरंग अविलोकनि अनन्त गति,
रथ मनोरथ रहे प्यादे गुन गचिकै।
दुहूँ ओर परी जोर घोर घनी केशौदास,
होइ जीत कौन की को हारे जिय लचिकै।
देखत तुम्हैं गुपाल तिहिं काल उहिं बाल,
उर सतरंज कैसी बाजी राखि रचि कै॥

× × ×

केशव चौंकति सी चितवै छिति पाँ धर कै तरकै तकि छाँहीं।
बूझिये और कहे मुख और सु और की और भई छण माहीं।
डीठि लगी किधौं बाइ लगी मन भूलि परयो कै करयौ कछु काहीं।
घूँघट की घट की पट की हरि आजु कछू सुधि राधिकै नाहीं॥

× × ×

बैन तज्यौं उन बीन तैं बौल्यों न बोलि विलोकति बुद्धि भगी है।
बै न सुनै समुझै न तु बातहि प्रेत लग्यौ किधौं प्रीति जगी है।

केशव वे तुहि तोहिं रटैं रट तोहिं इतै उन हीं की लगी है।
वे भषै पान न, पानी न तू, सु तौ कान्ह ठगे कि तू कान्ह ठगी है॥

× × ×

बूझत ही वह गोपी गुपालहि आजु कहू हँसि कै गुण गाथहि।
ऐसे में काहू को नाम सखी कहि केसौ धौं आइ गयो ब्रजनाथहि।
खाति खवावति ही जु बिरी सु रही मुख की मुख हाथ की हाथहि।
आतुर ह्वै उन आँखिन ते अँसुआ निकसे अखरानि के साथहि॥

× × ×

हरित हरित हार हेरत हियो हरत,
हारो हौं हरिननैनी हरि न कहूँ लहौं।
वनमाली व्रज पर बरषत वनमाली,
वनमाली दूर दुख केशव कैसे सहौं।
हृदय कमल नैन देखि के कमल नैन,
होहूँगी कमल नैनि और हौ कहा कहौं।
आप घने घनश्याम घन ही से होत घन—
श्याम के दिवस घनश्याम बिन क्यों रहौं॥

× × ×

आयेते आवैगी आँखिन आगे ही डोलिहै मानहु मोल लई है।
सोवै न सोवन देय न यों तब सो इनमें उन साथ दई है।
मेरिये भूलि कहा कहौं केशव सौति कहूँ ते सहेली भई है।
स्वारथ ही हितु है सब के परदेश गये हरि नींद गई है॥

× × ×

भौरिनि ज्यों भाँवत रहत बन वीथिकान,
हंसिनि ज्यों मृदुल मृणालिका वहति हैं।
पीउ पीउ रटत रहत चित चातकी ज्यों,
चन्द चितैं चकई ज्यों चुप ह्वै रहति हैं।
हिरनी ज्यो हेरति न केशरी के कानन को,
केका सुनि व्याली ज्यौं बिलान हीं कहति हैं।
केशव कुँवर कान्ह विरह तिहारे ऐसी,
सूरतिन राधिका की मूरति गहति हैं॥

× × ×

दीरघ दरीन बसै केशोदास केशरी ज्यों,
केशरी को देखे बन करी ज्यों कँपत है।

वासर की संपदा चकोर ज्यों न चितवत,
चकवा ज्यों चंदही ते चौगुनो चँपत है।
केका सुनि व्याल ज्यों बिलात जात घनश्याम,
घननि की घोरनि जवासे त्यों तपत है।
भौंर ज्यों भँवत वन योगी ज्यों जगत निशि,
चातक ज्यों श्याम नाम तेरोई जपत है।।

× × ×

थोरी सी सुदेश वेत्र दीरघ नयन केश,
गौरी जू सी गोरी भोरी भवजू की सारी सी।
साँचे की सी ढारी अति सूक्षम सुधारि कढ़ी,
केशोदास अंग अंग भाँइके उतारी सी।
सोंधे कैसी सोंधी देह सुधा सों सुधारी,
पाँउ धारी देवलोक तें कि सिन्धु ते उधारी सी।
आजु यासों बोलि चालि हँसि खेलि लेहु लाल,
कालिह ऐसी ग्वारि लाउँ काम की कुमारी सी।।

× × ×

जहीं जहीं दुरे तहीं जौन्ह ऐसी जगमगै,
कैसे हूँ जु केशव दुराइ ल्याउँ रंग की।
पवन को पंथ अलि अलिन के पीछे आली,
अलिनी ज्यों लागी रहें जिन्हें साध संग की।
निपट अमिल तऊ तुम्हें मिलिबे की जक,
कैसे कै मिलाऊँ गति मोपै न विहंग की।
इक तो दुसह दुख देति हुती दुति दूजे,
बीस बिसे बिस बास भई वाके अंग की।।

× × ×

मैन ऐसो मन तन मृदुल मृणालिका के,
सूत ऐसो सुरधुनि मनहि हरति है।
दारों कैसी बीज दंतपाँति के अरुण ओंठ,
केशोदास देखे दृग आनन्द भरति है।
एरी मेरी तेरी मोहि भावत भलाई ताते,
बूझत हौं तोहिं उर बूझत डरति है।
माखन सी जीभ मुख कंज सो कुँवरि कहुँ,
काठ सी कठेठी बात कैसे निकरति है।।

× × ×

आपुन ह्वै दुखी दुख जाके हौ ताहि कहा कबहूँ दुख दीजै।
जा बिन और सुहाइ न केशव ताहि सुहाइ सु तो सब कीजै।
भाग बड़ो जु रची तुमसों वह तो बिझकाइ कहो कहँ लीजै।
जो रिसियाइ तो जैये मनावन तातो है दूध सिराइ न पीजै॥

× × ×

वा मृगनैनी ज्यौं और नहीं जु लगावत हौं मुँह ऐसे न ह्वै जै।
सोने सी जो कहूँ पीतर होहि तो केशव कैसहूँ हाथ न छूजै।
आपु गिरा गुन जौ सिखवै तऊ काकन कोकिल ज्यो कल कूजै।
सुन्दर श्याम विचार करौ कछु आम कि साव न आमिली पूजै॥

× × ×

सिखै हारी सखी डरपाइ हारी कादंबिनी,
दामिनी दिखाई हारी दिशि अधिरात की।
झुकि झुकि हारी रति, मारि मारि हार्‍यो मार,
हारी झकझोरति त्रिविध गति वात की।
दई निरदई दई वाहि ऐसी काहे मति,
जारत जु ऐन रैन दाह ऐसी गात की।
कैसेहूँ न माने हो मनाइ हारी केशोराय,
बोलि हारी कोकिला, बुलाइ हारी चातकी॥

× × ×

केशोदास लाख लाख भाँतिन के अभिलाष,
बारिदै री बावरी न बारि हिये होरी सी।
राधा हरि केरी प्रीति सबते अधिक जानि,
रति रतिनाथ हू में देखी रति थोरी सी।
तिनहूँ में भेद न भावनि हूँ पै पार्‍यो जाइ,
भारति की भारती है कहिबे को भोरी सी।
एकै गति एकै मति एकै प्राण एकै मन,
देखिबे को देह द्वै, है नैनन की जोरी सी॥

× × ×

बानी जगरानी उदारता बखानी जाय,
ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप वृद्ध,
कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।
भावी, भूत, वर्त्तमान जगत बखानत है,
केशोदास क्योंहू न बखानी काहू पै गई।

वर्णै पति चारि मुख, पूत वर्णै पाँचमुख,
नाती वर्णै षट्मुख तदपि नई नई ॥

× × ×

सोभत सुबास हास सुधा सो सुधारयो विधि,
विष को निवास जैसो तैसो मोहकारी है।
केशोदास पावन परम हंस गति तेरी,
पर हीय हरन प्रकृति कौन पारी है।
वारक बिलोकि बलबीर से बलीन कहँ,
करत बरहिं बश, ऐसी बैस वारी है।
एरी मेरी सखी तेरी कैसे कै प्रतीत कीजै,
कृशनानुसारी दृग करणानुसारी है ॥

× × ×

जो हौं कहौं 'रहिये' तो प्रभुता प्रगट होति,
'चलन' कहौं तो हित हानि, नाहिं सहनो।
'भावै सो करहु' तो उदास भाव प्राणनाथ,
'साथ लै चलहु' कैसे लोक लाज बहनो।
केशोराय की सौं तुम सुनहु छबीले लाल,
चलेही बनत जोपै नाहीं राजी रहनो।
तैसिय सिखाओ सीख तुमही सुजान पिय,
तुमहिं चलत मोहि जैसो कछू कहनो ॥

× × ×

एकै कहैं अमल कमल मुख सीता जू को,
एकै कहैं चन्द्र सम आनन्द को कंद री।
होय जो कमल तो रयनि में न सकुचै री,
चंद जो तो बासर न होय दुति मंद री।
बासर ही कमल, रजनि ही में चंद, मुख,
बासरहू रजनि बिराजै जगबंद री।
देखे मुख भावै, अनदेखेई कमल चंद,
ताते मुख मुखै, सखि कमलै न चंद री ॥

× × ×

पाँयन को परिबो अपमान अनेक सों 'केशव' मान मनैबो।
सीठी तमूर खवायबो खैबो विशेष चहूँ दिसि चौंकि चितैबो।

चीर कुचीरन ऊपर पौढ़िबो पात हू के खरके भगि ऐबो।
आँखिन मूँदि के सीखत राधिका कुंजन ते प्रति कुंजन जैबो ।।

× × ×

पूरण कपूर पान खाए कैसी मुख बास,
अधर अरुण रुचि सुधा सों सुधारे हैं।
चित्रित कपोल लोल लोचन मुकुर मैन,
अमर झलक झलकनि मोहि मारे हैं।
भृकुटी कुटिल जैसी तैसी न किए हू होंहि,
आँजी ऐसी आँखें केशोराय हेरि हारे हैं।
काहे को शृंगारि कैं बिगारति है मेरी आली,
तेरे अंग सहज शृंगार ही शृंगारे हैं ।।

× × ×

बैठी सखीन की सोहै सभा सब ही के जु नैनन साँझ बसै।
बूझै ते बात बराइ कहै मन ही मन केशवदास हँसै।
खेलति है इत खेल उतै पिय, चित्त खिलावत यों बिलसै।
कोउ जानै नहीं दृग दौरे कबै, कित ह्वै हरि आनन छ्वै निकसै ।।

× × ×

नाह लगे मुख सौति दहै दुख, नाहीं लगे दुख देह दहैगो।
नाहीं अबै सुख देत है केशव नाह सदा सुख देत रहैगो।
नाहीं ते नाहिं री नाहिं भलाई, भलो सब नाह हितै पै कहैगो।
नाह सों नेह निबाहि बलाइ ल्यौं, नाहीं सो नेह कहा निबहैगो ।।

× × ×

आजु मिले वृषभानुकुमारिहि नन्दकुमार बियोग बितै कै।
रूप की राशि रस्यो रस केशव, हास विलासनि रोस रितै कै।
बागे के भीतर देखि हिये नख, नैन नवाइ रही सु इतै कै।
फूलहिं में भ्रम भूलि मनो सकुचे सरसीरुह चंद चितै कै ।।

× × ×

घेरो जनि मोहिं घर जान देहु घनस्याम,
घरिक में लागी उर देखिबी ज्यों दामिनी।
होइ कोऊ ऐसी वैसी आवै इत उत ह्वै कै,
वे ऊ वृषभानु जू की बेटी गज-गामिनी।
आदित को आयो अंत आवो बनि बलि जाउँ,
आवत है वै ऊ बनि आई अरु यामिनी।
घाम के डरन तुम कुंज गह्यो केशोदास,
भौंरन के डरन भवन गह्यो भामिनी ।।

बिहारी

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँईं परैं, स्यामु हरित-दुति होइ ।।

अपने अँग के जानि कै जोवन-नृपति प्रवीन ।
स्तन, मन, नैन, नितंब कौ बड़ौ इजाफा कीन ।।

अर तैं टरत न बर-परे, दई मरक मनु मैन ।
होड़ाहोड़ी बढ़ि चले चितु, चतुराई, नैन ।।

ओरै-ओप कनीनिकनु गनी धनी-सिरताज ।
मनीं धनी के नेह की बनीं छनीं पट लाज ।।

सनि-कज्जल चख-झख-लगन उपज्यौ सुदिन सनेहु ।
क्यौं न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सब देहु ।।

सालति है नटसाल सी, क्यौं हूँ निकसति नाँहि ।
मनमथ-नेजा-नोक सी खुभी खुभी जिय माँहि ।।

जुवति जोन्ह मैं मिलि गई नैंक न होति लखाइ ।
सौंधे कैं डोरैं लगी अली चली सँग जाइ ।।

हौं रीझी, लखि रीझिहौ छबिहिं छबीले लाल ।
सोनजुही सी होति दुति-मिलत मालती माल ।।

बहके-सब जिय की कहत, ठौरु कुठौरु लखैं न ।
छिन औरै, छिन और से, ए छबि छाके नैन ।।

फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टुटी लाज की लाव ।
अंग-अंग-छबि-झौंर मैं भयौ भौंर की नाव ।।

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि ।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि ।।

चितई ललचौहैं चखनु डटि घूँघट-पट माँह ।
छल सौं चली छुवाइ कै छिनकु छबीली छाँह ।।

जोग-जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन ।
चाहत पिय-अद्वैतता काननु सेवन नैन ।।

खरी पातरी कान की, कौन बहाऊ बानि ।
आक-कली न रली करै अली, अली, जिय जानि ।।

पिय-बिछुरन कौ दुसहु दुखु, हरषु जात प्यौसार ।
दुरजोधन लौं देखियति तजत प्रान इहि बार ।।

झीनैं पट मैं झुलमुली झलकति ओप अपार ।
सुरतरु की मनु सिंधु मैं लसति सपल्लव डार ।।

डारे ठोड़ी - गाड़, गहि नैन - बटोही, मारि ।
चिलक-चौंध मैं रूप-ठग, हाँसी-फाँसी डारि ।।

कीनैं हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु ।
भो मन मोहन रूप मिलि पानी मैं कौ लौनु ।।

लग्यो सुमनु ह्वै है सफलु, आतप-रोसु निवारि ।
बारी, बारी आपनी सींचि सुहृदयता - बारि ।।

अजौं तर्‌यौना हीं रह्यौ श्रुति सेवत इक-रंग ।
नाक-बास बेसरि लह्यौ बसि मुकुतनु कैं संग ।।

जम-करि-मुँह-तरहरि पर्‌यौ, इहिं धरहरि चित लाउ ।
बिषय-तृषा परिहरि अजौं नरहरि के गुन गाउँ ।।

पलनु पीक, अंजनु अधर, धरे महावरु भाल ।
आजु मिले, सु भली करी; भले बने हौ लाल ।।

लाज-गरब-आलस-उमग-भरे नैन मुसकात ।
राति-रमी रति देति करि औरै प्रभा प्रभात ।।

पति रति की बतियाँ कहीं, सखि लखि लखि मुसकाइ ।
कै कै सबै टलाटलीं, अलीं चलीं सुख पाइ ।।

तो पर वारौं उरवसी, सुनि, राधिके सुजान ।
तू मोहन कैं उर बसी ह्वै उरवसी-समान ।।

कुच-गिरि चढ़ि, अति थकित ह्वै, चली डीठि मुँह-चाड़ ।
फिरि न टरी, परियै रही, गिरी चिबुक की गाड़ ।।

बेधक अनियारे नयन, बेधत करि न निषेधु ।
बरबट बेधतु मो हियौ तो नासा कौ बेधु ।।

लौनैं मुहुँ दीठि न लगै, यौं कहि दीनौ ईठि ।
दूनी ह्वै लगान लगी, दियैं दिठौना दीठि ।।

चितवनि रूखे दृगनु की, हाँसी-बिनु मुसकानि ।
मानु जनायौ मानिनी, जानि लियौ पिय, जानि ।।

सब ही त्यौं समुहाति छिनु, चलति सबनु दै पीठि ।
वाही त्यौं ठहराति यह, कबिलनवी लौं, दीठि ।।

कौन भाँति रहिहै बिरदु अब देखिबी मुरारि ।
बीधे मोसौं आइ कै गीधे गीधहिं तारि ।।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात॥

वाही की चित चटपटी, धरत अटपटे पाइ।
लपट बुझावत बिरह की कपट-भरेऊ आइ॥

लखि गुरुजन-बिच कमल सौं सीसु छुवायौ स्याम।
हरि-सनमुख करि आरसी हियैं लगाई बाम॥

पाइ महावरु दैंन कौं नाइनि बैठी आइ।
फिरि फिरि जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ॥

तोहीं, निरमोही, लग्यो मो ही इहैं सुभाउ।
अनआऐं आवै नहीं, आऐं आवतु आउ॥

नेहु न, नैननु, कौं कछू उपजी बड़ी बलाइ।
नीर-भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ॥

नहिं परागु, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बँध्यौ, आगैं कौन हवाल॥

लाल, तुम्हारे विरह की अगनि अनूप, अपार।
सरसै बरसैं नीर हूँ, झर हूँ मिटै न झार॥

देह दुलहिया की बढ़ै ज्यौं ज्यौं जोबन-जोति।
त्यौं त्यौं लखि सौत्यैं सबै बदन मलिन दुति होति॥

जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखिये, आँखि न देखी जाँहि॥

मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि केसरि-आड़ गुरु।
इक नारी लहि संगु, रसमय किय लोचन-जगत॥

पिय तिय सौं हँसि कै कह्यौ, लखैं दिटौना दीन।
चंदमुखी, मुखचंदु तैं भलौ चंद-समु कीन॥

कौं हर सी एड़ीनु की लाली देखि सुभाइ।
पाइ महावरु देइ को आपु भई बे-पाइ॥

खेलन सिखए अलि भलैं चतुर अहेरी मार।
कानन-चारो नैन-मृग नागर नरनु सिकार॥

रस सिंगार-मंजनु किए, कंजनु भंजनु दैन।
अंजनु रंजनु हूँ बिना खंजनु गंजनु नैन॥

साजे मोहन-मोह कौं, मोहीं करत कुचैन।
कहा करौं, उलटे परे टोने लोने नैन॥

याकैं उर औरै कछू लगी बिरह की लाइ ।
पजरै नीर गुलाब कैं, पिय की बात बुझाइ ॥

कहा लेहुगे खेल पैं, तजौ अटपटी बात ।
नैंक हँसौं हीं हैं भई भौंहैं, सौंहैं खात ॥

डारी सारी नील की ओट अचूक चुकै न ।
मो मन - मृगु करबर गहैं अहे ! अहेरी नैन ॥

दीरघ साँस न लेहु दुख, सुख साईंहिं भूलि ।
दई दई क्यौं करतु है, दई दई सु कबूलि ॥

बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन-तन माँह ।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह ॥

हा हा ! बदनु उघारि, दृग सफल करैं सबु कोइ ।
रोज सरोजनु कैं परैं, हँसी ससी की होइ ॥

होमति सुखु करि कामना तुमहिं मिलन की, लाल ।
ज्वालामुखी सी जरति लखि लगनि-अगनि की ज्वाल ॥

सायक-सम मायक नयन, रँगे त्रिबिध रँग गात ।
झखौ बिलखि दुरि जात जल, लखि जलजात लजात ॥

मरी डरी कि टरी बिथा, कहा खरी, चलि चाहि ।
रही कराहि कराहि अति, अब मुँह आहि न आहि ॥

कहा भयौ, जौ बीछुरे, मो मनु तोमन-साथ ।
उड़ी जाउ कित हूँ, गुड़ी तऊ उड़ाइक-हाथ ॥

लखि, लोने लोइननु कैं कोइनु, होइ न आजु ।
कौनु गरीबु निवाजिबौ, कित तूठ्यौ रतिराजु ॥

सीतलताऽरु सुवास कौ, घटै न महिमा मूरु ।
पीनस वारैं जौ तज्यौ सोरा जानि कपूरु ॥

कागद पर न लिखत बनत, कहत सँदेसु लजात ।
कहिहै सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात ॥

बंधु भए का दीन के, को तार्यौ रघुराइ ।
तूठे तूठे फिरत हौ झूठे बिरद कहाइ ॥

जब जब वै सुधि कीजियै, तब तब सब सुधि जाँहि ।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखैं लागति नाँहि ॥

कौन सुनै कासौं कहौं, सुरति बिसारी नाह ।
बदाबदी ज्यौं लेत हैं ए बदरा बदराह ॥

मैं हो जान्यौ, लोइननु जुरत बाढ़िहै जोति ।
को हो जानतु, दीठि कौं दीठि किरकिटी होति ।।

गहकि, गाँसु औरै गहे, रहे अधकहे बैन ।
देखि खिसौं हैं पिय-नयन किए रिसौं हैं नैन ।।

मैं तोसौं कैवा कह्यौ, तू जिन इन्हैं पत्याइ ।
लगालगी करि लोइननु उर मैं लाई लाइ ।।

बर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न ।
हरिनी के नैनानु तैं, हरि, नीके ए नैन ।।

थोरैं ही गुन रीझते, बिसराई वह बानि ।
तुमहूँ, कान्ह, मनौ भए आज काल्हि के दानि ।।

अंग-अंग-नग जगमगत दीपसिखा सी देह ।
दिया बढ़ाऐं हूँ रहै बड़ौ उज्यारौ गेह ।।

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग ।
दीपति देह दुहून मिलि दिपति ताफता-रंग ।।

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जग-नाइक, जगवाइ ।।

सकुचि न रहियै, स्याम सुनि ए सतरौंहैं बैन ।
देत रचैं हौं चित कहे नेह-नचौंहैं नैन ।।

पत्रा हीं तिथि पाइयै वा घर कैं चहुँ पास ।
नितप्रति पून्यौई रहै आनन - ओप - उजास ।।

बसि सकोच-दसबदन-बस, साँचु दिखावति बाल ।
सियलौं सोधति तिय तनहिं लगनि-अगिनि की ज्वाल ।।

जौ न जुगति पिय मिलन की, धूरि मुकति-मुँह दीन ।
जौ लहियै सँग सजन, तौ धरक नरक हूँ की न ।।

चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि ।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति; और मुकति अति हानि ।।

मोहू सौं तजि मोहु, दृग चले लागि उहि गैल ।
छिनकु छाइ छवि-गुर-डरी छले छबीलैं छैल ।।

कंज नयनि मंजनु किए, बैठी ब्यौरति बार ।
कच-अंगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार ।।

पावक सो नयननु लगै जावकु लाग्यौ भाल ।
मुकुरु होहुगे नैंक मैं, मुकुरु बिलोकौ, लाल ।।

रहति न रन, जयसाहि-मुख लखि, लाखनु की फौज ।
जाँचि निराखरऊ चलै लै लाखनु की मौज ॥

दियौ, सु सीस चढ़ाइ लै आछी भाँति अएरि ।
जापैं सुखु चाहतु लियौ, ताके दुखहिं न फेरि ॥

तरिवन-कनकु कपोल-दुति बिच बीच हीं बिकान ।
लाल लाल चमकतिं चुनीं चौका-चीन्ह-समान ॥

मोहि दयौ, मेरौ भयो, रहतु जु मिलि जिय साथ ।
सो मनु बाँधि न सौं पियै, पिय, सौतिहि कैं हाथ ॥

कुंज-भवनु तजि भवन कौं चलिए नंदकिसोर ।
फूलति कली गुलाब की, चटकाहट चहुँ ओर ॥

कहति न देवर की कुबत कुल-तिय कलह डराति ।
पंजर-गत मंजार-ढिग सुक ज्यौं सूकति जाति ॥

औरै भाँति भए ऽब ए चौसरु, चंदनु, चंदु ।
पति-बिनु अति पारतु बिपति मारतु मारुतु मंदु ॥

चलन न पावतु निगम-मगु जगु, उपज्यौ अति त्रासु ।
कुच - उतंगगिरिवर गह्यौ मैना मैनु मवासु ॥

त्रिबली, नाभि दिखाइ, कर सिर ढकि, सकुचि, समाहि ।
गली, अली की ओट कै, चली भली बिधि चाहि ॥

देखत बुरै कपूर ज्यौं उपै जाइ जिन, लाल ।
छिन छिन जाति परी खरी छीन छबीली बाल ॥

हँसि उतारि हिय तैं, दई तुम जु तिहिं दिना, लाल ।
राखत प्रान कपूर ज्यौं, वहै चुहुटिनी-माल ॥

कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार ।
मो संपति जदुपति सदा बिपति-बिदारनहार ॥

द्वैज-सुधादीधिति कला वह लखि, दीठि लगाइ ।
मनौ अकास - अगस्तिया एकै कली लखाइ ॥

गदराने तन गोरटी, ऐपन - आड़ लिलार ।
हूठ्यौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार ॥

तंत्री - नाद कबित्त - रस, सरस राग, रति - रंग ।
अनबूड़े बूड़े, तरे जे बूड़े सब अंग ॥

सहज सचिक्कन, स्याम-रुचि, सुचि, सुगंध, सुकुमार ।
गनतु न मनु पथु अपथु, लखि बिथुरे सुथरे बार ॥

सुदुति दुराई दुरति नहिं प्रगट करति रति-रूप ।
छुटैं पीक, औरै उठी लाली ओठ अनूप ।।

वेई गड़ि गाड़ैं परीं उपट्यौ हारु हियैं न ।
आन्यौ मोरि मतंगु मनु मारि गुरेरनु मैन ।।

नैंकु न झुरसी बिरह-झर नेह-लता कुम्हिलाति ।
नित नित होति हरी हरी, खरी झालरति जाति ।।

हेरि हिंडोरैं गगन तैं परी परी सी टूटि ।
धरी धाइ पिय बीच हीं, करी खरी रस लूटि ।।

नैंक हँसौं ही बानि तजि, लख्यौ परतु मुहुँ नीठि ।
चौका चमकनि-चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि ।।

प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बसे ब्रज आइ ।
मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ ।।

केसरि कै सरि क्यौं सकै, चंपकु कितकु अनूपु ।
गात-रूपु लखि जातु दुरि जातरूप कौ रूपु ।।

मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान ।
धरयो मनौ हिय-धर समरु, ड्यौढ़ी लसत निसान ।।

खौर-पनिच भृकुटी-धनुषु बधिक समरु, तजि कानि ।
हनतु-तरुन-मृग तिलक-सर-सुरक-भाल, भरि तानि ।।

नीकौ लसतु लिलार पर टीकौ जरितु जराइ ।
छबिहिं बढ़ावतु रबि मनौ ससि-मंडल मैं आइ ।।

लसतु सेतसारी - ढप्यौ, तरल तर्यौना कान ।
परयौ मनौ सुरसरि-सलिल रबि-प्रतिबिंबु बिहान ।।

हम हारीं कै कै हहा, पाइनु पारयौ प्यौरु ।
लेहु कहा अजहूँ किए तेह - तरेरयौ त्यौरु ।।

सतर भौंह, रूखे बचन, करति कठिनु मन नीठि ।
कहा करौं, ह्वै जाति हरि हेरि हँसौं ही डीठि ।।

वाहि लखैं लोइनि लगै कौन जुवति की जोति ।
जाकैं तन की छाँह-ढिग जोन्ह छाँह सी होति ।।

कहा कहौं वाकी दसा, हरि प्राननु के ईस ।
बिरह-ज्वाल जरिबो लखैं मरिबो भई असीस ।।

जेती संपति कृपन कैं, तेती सूमति जोर ।
बढ़त जात ज्यौं ज्यौं उरज, त्यौं त्यौं होत कठोर ।।

ज्यौं ज्यौं जोबन-जेठ दिन कुच मिति अति अधिकाति ।
त्यौं त्यौं छिन छिन कटि-छपा छीन परति नित जाति ।।

तेह-तरेरौ त्यौरु करि कत करियत दृग लोल ।
लीक नहीं यह पीक की, श्रुति-मनि-झलक कपोल ।।

नैंक न जानी परति यौं, पर्‌यौ बिरह तनु छामु ।
उठति दियैं लौं नाँदि, हरि, लियैं तिहारौ नामु ।।

नभ-लाली चाली निसा, चटकाली धुनि कीन ।
रति पाली, आली, अनत, आए बनमाली न ।।

सोवत सपनैं स्यामघनु मिलिहिलि हरत बियोगु ।
तब हीं टरि कितहूँ गई, नींदौं नींदनु जोगु ।।

संपति केस, सुदेस नर नवत, दुहुनि इक बानि ।
विभव सतर कुच, नीच नर नरम बिभव की हानि ।।

कहत सबै कबि कमल से, मो मत नैन पखानु ।
नतरुक कत इन विय लगत उपजतु बिरह-कृसानु ।।

हरि हरि! बरि बरि उठति है, करि करि थकी उपाइ ।
वाकौ जुरु, बलि बैद, जौ, तो रस जाइ, तु जाइ ।।

यह बिनसतु नगु राखि कै जगत बड़ौ जसु लेहु ।
जरी विषम जुर जाइयें आइ सुदरसनु देहु ।।

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोइ ।
ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रँग, त्यौं त्यौं उज्जलु होइ ।।

बिय सौतिनु देखत दई अपने हिय तैं, लाल ।
फिरति सबनु मैं डहडही उहैं मरगजी माल ।।

छला छबीले लाल कौ नवल नेह लहि नारि ।
चूँबति, चाहति, लाइ उर पहिरति, धरति उतारि ।।

नित संसौ हंसौ बचतु, मनौ सु इहिं अनुमानु ।
विरह-अगिनि-लपटनु सकतु झपटि न मीचु-सचानु ।।

थाकी जतन अनेक करि, नैंक न छाड़ति गैल ।
करी खरी दुबरी सु लगि तेरी चाह-चुरैल ।।

लाज गहौ, बेकाज कत घेरि रहे, घर जाँहि ।
गोरसु चाहत फिरत हौ, गोरसु चाहत नाँहि ।।

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज ।
जमुना - तीर - तमाल - तरु-मिलित मालती-कुंज ।।

उन हरकी हँसि कै, इतै इन सौंपी मुसकाइ ।
नैन मिलैं मन मिलि गए दोऊ, मिलवत गाइ ॥

पर्‍यौ जोरु, विपरीत रति रुपी सुरत-रन-धीर ।
करति कुलाहलु किंकिनी, गह्यौ मौनु मंजीर ॥

बिनती रति बिपरीत की करी परसि पिय पाइ ।
हँसि, अनबोलैं हीं दियौ ऊतरु, दियौ बताइ ॥

कैसैं छोटे नरनु तैं सरत बड़नु के काम ।
मढ्यौ दमामौ जातु क्यौं, कहि चूहे कैं चाम ॥

सकत न तुव ताते बचन मो रस कौ रसु खोइ ।
खिन खिन औटे खीर लौं खरौ सवादिलु होइ ॥

कहि, लहि कौनु सकै दुरी सौनजाइ मैं जाइ ।
तन की सहज सुबास बन देती जौ न बताइ ॥

चाले की बातैं चलीं, सुनत सखिनु कैं टोल ।
गोएँ हूँ लोइन हँसत, बिहँसत जात कपोल ॥

सनु सूक्यौ, बीत्यौ बनौ, ऊखौ लई उखारि ।
हरी हरी अरहरि अजैं, धरि धरहरि जिय नारि ॥

आए आपु, भली करी, मेटन मान-मरोर ।
दूरि करौ यह, देखिहै छला छिगुनिया-छोर ॥

मेरे बूझत बात तू कत बहरावति, बाल ।
जग जानी बिपरीत रति लखि बिंदुली पिय-भाल ॥

फिरि फिरि बिलखी ह्वै लखति, फिरि फिरि लेति उसासु ।
साइँ ! सिर-कच-सेत लौं बीत्यौ चुनति कपासु ॥

डगकु डगति सी चलि, ठठुकि चितई, चली निहारि ।
लिए जाति चितु चोरटी वहै गोरटी नारि ॥

करी बिरह ऐसी, तऊ गैल न छाड़तु नीचु ।
दीनैं हूँ चसमा चखनु चहै लहै न मीचु ॥

जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु ।
मन - काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु ॥

जौ वाके तन की दसा देख्यौ चाहत आपु ।
तौ बलि नैंक बिलोकियै चलि अचकाँ, चुपचापु ॥

जटित नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक ।
मनौ अली चंपक-कली बसि रसु लेतु निसाँक ॥

तजि तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति करि अनुरागु ।
जिहि ब्रज-केलि-निकुंज-मग पग पग होतु प्रयागु ।।

सीस-मुकुट, कटि-काछनी, कर-मुरली, उर-माल ।
इहिं बानक मो मन सदा बसौ, बिहारी लाल ।।

कहत सबै, बेंदी दियैं आँकु दसगुनी होतु ।
तिय-लिलार बेंदी दियै अगिनितु बढ़तु उदोतु ।।

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति ।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई, नई यह रीति ।।

अधर धरत हरि कैं, परत ओठ-डीठि-पट-जोति ।
हरित बाँस की बाँसुरी इंद्र धनुष रँग होति ।।

कहा, कुसुम, कह कौमुदी, कितक आरसी जोति ।
जाकी उजराई लखैं आँखि ऊजरी होति ।।

लाज-लगाम न मानहीं, नैना मो बस नाहि ।
ए मुँहजोर तुरग ज्यौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं ।।

मिलि, चलि, चलि मिलि, मिलि चलत आँगन अथयौ भानु ।
भयौ मुहूरत भोर कौ पौरिहिं प्रथमु मिलानु ।।

कर लै, चूमि, चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेंटि ।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति, धरत समेटि ।।

पलनु प्रगटि, बरुनीनु बढ़ि नहिं कपोल ठहरात ।
अँसुवा परि छतिया, छिनकु छनछनाइ, छिपि जात ।।

भाल लाल बेंदी, ललन आखत रहे बिराजि ।
इंदुकला कुज मैं बसी मनौ राहु-भय भाजि ।।

चिंतामणि

पेख्यौ चहै पिय को बिन ओट, बनै न कछू बिन घूँघट खोलै ।
भावै न संग छुट्यौ पति कौ, सकुचै, न करै कछु काम कलोलै ।
चाहति बात कह्यौ न कह्यौ, पर जात रह्यौ न रहै अनबोलै ।
झूलत है मन प्रान पियारी कौ, लाज मनोज के बीच हिंडोलै ।।

× × ×

साँझ ते चन्द कलंक ज्यौं, मन मेरौ लै साथ रहे तुम न्यारे ।
बैठि बची मनि-मन्दिर बीच, लगे तब दीप प्रकास अँध्यारे ।

प्रातहि पाइ सुधामय पारनौ, नैक-चकोर छके मे सुखारे।
क्यों अनूप कला प्रगटौ, अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे॥

× × ×

बोलत काहे न बोल सुनैं मधुरी बतियाँ मनमोहन भाखैं।
बोलै कहा, कछु चित्त मैं है दुख, पित्त बढ़ै, कटु लागतीं दाखैं।
ठाढ़े हैं लाल, बिलोकै न बाल क्यों, तेरी बिलोकनि को अभिलाखैं।
लाल भई बिन काजहि आजु ए, देखौं कहा, मेरी दूखती आँखैं॥

× × ×

जाबक रंजित भाल किऐ, मनभावन भामती-गेह सिधारे।
दूरि तें भौंह कमान चढ़ाइ कै, सुन्दरि नैन कटाच्छ तें डारे।
आइकै बालम बाँह गहीं ढिंग, चन्दमुखी झुकिकै झझकारे।
चम्पक-माल सी कोमल बाल, सु लाल चमेली की माल सों मारे॥

× × ×

जामै कछू मन सोच-सँकोच न, आछिये सो तौ कछू लरिकाई।
आवत ही इन नैनन के रस, मोहन के बस को ललचाई।
देखे बिना कल नैंक नहीं, अरु देखै तौ गोकुल गाँम चबाई।
जामैं हँसे हूँ कलंक लगै, यह कौन धौं बैस बिसासिनि आई॥

× × ×

एहो तुम हौ तौ नैक घरै क्यों न रहौ,
देखौ 'चिंतामनि' बागन में कौप लहलही हैं।
तुमको धरम है है देव अरचन काज,
सुन्दरि चमेली की कली कछूक चही हैं।
बाग में अँध्यारौ, डरु लागत हैं जातैं उत,
तातैं हौं कहति इहाँ लोग और नहीं हैं।
कैसैं करि जाँउ फूल लैन हौं अकेली ह्याँ तौ,
आछे-आछे फूलन की बेली फूल रही हैं॥

× × ×

आपु ही पाँइन देत महाबर, बेनी गुहै और बैनी डुलावै।
आपु ही बीरी बनाइ खवावै, अनेक बिलासन रीझि रिझावै।
तेरी सखी अरु आपने मित्र सों, तेरे ही प्रेम की बातैं चलावै।
तो सी त्रिलोक में को बड़भागिनि, जो तिय यों पिय को बस पावै॥

× × ×

चिंतामनि बिहँसि बिलोकि चितचोर की वै,
चलनि चितौनि बिसरत न बिसारी है।
सदाई अनंद अरविन्द नैन इन्दु मुख,
कब ही गोबिन्द सुधि करत हमारी है॥

× × ×

बेसरि बारहिं बार उतारत, केसरि अंग लगावन लागी।
आई हैं नैननि चंचलता, दृग अंचल बाम छिपावन लागी।
दूलह के अवलोकन को, वा अटानि झरोखन आवन लागी।
द्यौस द्वै तीनक ते बतियाँ मन-भावन की मन भावन लागी॥

× × ×

वैस की उठौन ठौन रूप की अनूप, कान्ह,
अंग अंग और कछु और उलहति है।
चिंतामनि चंचला विलास को रसाल नैन,
मदन के मद और आभा उमहति है।
कुंदन की बेली सी नबेली अलबेली बाल,
केतिक गरब की सों गौरता गहति है।
उझकि झरोखे।तुम्हें चाहिबे कौ चंदमुखी,
द्यौसहू में चंद्रिका पसारति रहति है॥

× × ×

अवलोकनि मैं पलकैं न लगैं,
पलकौ अवलोकि बिना ललकै।
पति के परिपूरन प्रेम पगी,
मन और सुभाव लगै न लकै।
तिय की बिहसौं ही विलोकनि में,
मनि आनँद आँखिन यों झलकै।
रसवंत कबित्तन कौ रस ज्यों,
अखरान के ऊपर ह्वै छलकै॥

× × ×

तुही धन तुही प्रान तोही में हरी को मन,
तेरे ही रिझाइबे की रीति में प्रवीन हैं।
चिंतामनि चिंता नित उन्हें लगी तेरी रहै,
तेरे ही बिरह खिन खिन होत खीन हैं।

ठीक जु न कीजै ठकुरायनि इतैक हठ,
छोड़ि दीजै, तेरे बृज ठाकुर अधीन हैं।
तू है पी के नैन अरबिंदन की इंदिरा, औ
पी के नैन तेरे तन पानिप के मीन हैं॥

× × ×

कहाँ जागे रैन आए निपट उनींदे हौ जू,
सोइ रहौ प्यारे बिछ्यौ आछो परजंक है।
खेलत हे चाँदनी में ग्वालन के संग कहूँ,
काहू ग्वाल ही को नाम लीजै कहा संक है।
यों ही भले मानसै लगावती कलंक है, वो
देख्यो कहूँ चिंतामनि रति हू को अंक है।
पीत रंग अम्बर सो भयो नील रंग, लाल,
झूठी हौं गोपाल तुम्हैं काहे को कलंक है॥

× × ×

सरद ससी तैं अधससी ह्वै बची हौं, कवि
चिंतामनि तिमि हिमि सिसिर झमक तैं।
मारत मरूकै बची बधिक बसंत हू तैं,
पावक प्रचार बची, ग्रीषम तमक तैं।
आयो पापी पावस ये प्रात अकुलान लाग्यौ,
भयौ री असान घोर घन के घमक तैं।
ताप तैं तचौंगी, जो पै अमिय अँचौंगी आली!
अब न बचौंगी चपलान की चमक तैं॥

× × ×

चिंतामणि, कच, कुच भार लंक लचकति,
सोहै तन तनक बनक छबि खान की।
चपल बिलास मद आलस बलित नैन,
ललित बिलोकनि लसनि मृदु बान की।
नाक मुकुताहल अधर रंग संग लीन्ही,
रुचि संध्या राग नखतन के प्रभान की।
बदन कमल पर अलि ज्यौं, अलक लोल,
अमल कपोलनि झलक मुसक्यान की॥

× × ×

इक आजु मैं कुंदन बेलि लखी मनि मंदिर की रुचि वृन्द भरै।
कुरबिन्दु को पल्लव इंदु तहाँ अरबिंदन ते मकरंद झरै।
उत बुंदन के मुकुता गन ह्वै फल सुन्दर द्वै पर आनि धरै।
लखि यों दुति कंद अनन्द कला नँदनंद सिला द्रव रूप धरै॥

× × ×

राति रहे 'मनि' लाल कहूँ रमि ह्याँ दुख बाल बियोग लहे हैं।
आये धरै अरुनोदय होत सरोष तिया इमि बैन कहे हैं।
लाल भये दृग कोरन आनि कै यो अँसुवा नव बूँद रहे हैं।
चोंचन चापि मनों सिथिलै बिबि खंजन दाड़िम बीज गहे हैं॥

× × ×

हंसन के छौना स्वच्छ सोहत बिछौना बीच,
होत गति मोतिन की जोति जोन्ह जामिनी।
सत्य कैसी ताग सीता पूरन सुहाग भरी,
चली जयमाल लै मराल मंद गामिनी।
जोई उरबसी सोई मूरति प्रतच्छ लसी,
चिंतामनि देखि हँसी संकर की भामिनी।
मानो सर्द चन्द, चन्द मध्य अरबिन्द,
अरविन्द मध्य विद्रुम विदारि कढ़ी दामिनी॥

मतिराम

कुंदन कौ रंगु फीको लगै, झलकै अति अंगन चारु गुराई।
आँखिन मैं अलसानि चितौन में मंजु बिलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई॥

× × ×

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहो तितही जितही मन भायो।
काहे कौं सौहैं हजार करौ, तुम तौ कबहूँ अपराध न ठायो।
सोवन दीजै, न दीजै हमें दुख, यों ही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रहोई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो मानैं मनायो॥

× × ×

क्यों इन आँखिन सों निरसंक ह्वै मोहन को तन-पानिप पीजै।
नेकु निहारें कलंक लगै इहि गाँव बसे कहौ कैसे के जीजै।

होत रहै मन यों मतिराम, कहूँ बन जाय बड़ो तप कीजै।
ह्वै वनमाल हिए लगिए अरु ह्वै मुरली अधरारस लीजै॥

× × ×

आई है निपट साँझ गैयाँ गई घर-माँझ,
हाँ सो दौरि आई मेरो कह्यौ कान्ह कीजिए।
हौ तो हौ अकेली और दूसरो न देखियत,
बन की अँधेरी मैं अधिक भय भीजिए।
कवि मतिराम मनमोहन सौ पुनि-पुनि,
राधिका कहत बात साँची यै पतीजिए।
कब की हौ हेरति न हेरे हरि पावति हौं,
बछरा हिरानौ सो हिराय नैंक दीजिए॥

× × ×

बैठी तिया गुरु लोगन मैं, रति तैं अति सुन्दर रूप बिसेखी।
आयो तहाँ मतिराम सुजान, मनोभव सौं बढ़ि कांति उरेखी।
लोचन रूप पियो ही चहैं अरु लाजनि जात नहीं छुबि पेखी।
नैन नमाय रही हिय-माल मैं, लाल की मूरति लाल मैं देखी॥

× × ×

आई हौं पायँ दिवाय महावर, कुंजन तैं करिकैं सुख-सैनी।
साँवरे आजु सँवारयो है अंजन, नैनन की लखि लाजति ऐनी।
बात के बूझत ही मतिराम कहा करिए भटू भौह तनैनी।
मूँदी न राखत प्रीति भटू, यह गूँदी गुपाल के हाथ की बैनी॥

× × ×

सकल सिगार साज संग लै सहेलिन कों,
सुन्दरि मिलन चली आनन्द के कंद कों।
कवि मतिराम मग करति मनोरथनि,
पेख्यो परजंक पै न प्यारे नंदनंद कों।
नेह ते लगी है देह दाहन दहत गेह,
बाग को बिलोकि द्रुम बेलिन के बृन्द कों।
चंद को हँसत तब आयो मुखचंद अब,
चंद लाग्यो हँसन तिया के मुखचंद कों॥

× × ×

जमुना के तीर बहै सीतल समीर तहाँ,
मधुकर करत मधुर मंद सोर हैं।

कवि मतिराम तहाँ छबि सौं छबीली बैठी,
अंगन ते फैलत सुगन्ध के झकोर हैं।
पीतम बिहारी की निहारिबे को बाट ऐसी,
चहूँ ओर दीरघ दृगन करी दौर हैं।
एक ओर मीन मनो, एक ओर कंज-पुंज,
एक ओर खंजन, चकोर एक ओर हैं॥

× × ×

प्रानपियारो मिल्यो सपने मैं, परी जब नैंसुक नींद निहोरैं।
कंत को आगम त्यों ही जगाय, कह्यो सखी बोल पियूष निचोरैं।
यौं मतिराम भयो हिय मैं सुख बाल के बालम सौं दृग जोरैं।
जैसे मिहीं पट मैं चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी बार के बोरैं॥

× × ×

नागर बिदेस में बिताय बहु द्यौस आयो,
नागरी के हिय मैं हुलासन की खान की।
कवि 'मतिराम' अंक भरत मयंक-मुखी,
नेह सरसाय मोही मति सुखदान की।
सुबरन बोलि कैं बतावति है सुबरन,
हीरन जतावति है छबि मुसकान की।
आँखिन तैं आनन्द के आँसू उमगाय प्यारी,
प्यारे को दिखावति सुरति मुकतान की॥

× × ×

गुच्छनि के अवतंस लसैं सिर, पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी कर-पल्लव सौं मतिराम सुहायो।
गुंजनि के उर मंजुल हार, सुकुंजनि तैं कढ़ि बाहर आयो।
आज कौ रूप लखैं नंदलाल कौ, आजुहि नैननि को फल पायो॥

× × ×

सुन्दरि सरस सब अंगन सिंगार साजे,
सहज सुभाव निसि नेह कछु कै गई।
कीने 'मतिराम' बिहसौहैं से कपोल गोल,
बोलन अमोल इतनोई दुख दै गई।
मेरे ललचौहैं मुख फेरि के लजौहैं, लल-चौहैं
चारु चखनि चितै कै सो चली गई।

निपट निकट ह्वै कै कपट छुवाय अंग,
लाय की सी लपट लपेटि मनु लै गई ।।

× × ×

दूसरे की बात सुनि परत न ऐसी जहाँ,
कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है।
छाई रहे जहाँ द्रुम बेलिन सौं मिलि,
'मतिराम' अलि-कूलन अँध्यारी अधिकाति है।
नखत से फूलि रहे फूलन के पुंज घन-
कुंजन मैं होति जहाँ दिन ही मैं राति है।
ता बन की बाट कोऊ संग न सहेली साथ,
कैसे तू अकेली दधि बेचन को जाति है ।।

× × ×

गौने के द्यौस सिंगारन को 'मतिराम' सहेलिन को गनु आयौ।
कंचन के बिछुवा पहिरावत प्यारी सखी परिहास बढ़ायौ।
पीतम स्त्रौन समीप सदा बजै यौं कहि कै पहिले पहिरायौ।
कामिनि कौल चलावनि कौं कर ऊँचो कियौ, पै चल्यौ न चलायौ ।।

× × ×

जा दिन तैं देखे 'मतिराम' तुम ता दिन तैं,
बढ़ी रहै मुसकानि वाके जियराई पर।
भावत न भोजन, बनावत न आभरन,
हेतु न करत सुधानिधि सियराई पर।
चलो उठि देखौ बड़े भाग हैं तिहारे अब,
राखो धरि राधिकै कन्हाई हियराई पर।
दूनी दुति छाई देह आई दुबराई पिय,
राई लौनु वारिए तिया की पियराई पर ।।

× × ×

जा दिन तैं छबि सौं मुसक्यात कहूँ निरखे नंदलाल बिलासी।
ता दिन तैं मन ही मन मैं 'मतिराम' पियैं मुसक्यानि सुधा सी।
नेकु निमेष न लागत नैन, चकी चितवै तिय देव-तिया सी।
चंदमुखी न हलै न चलै निरवात निवास मैं दीप सिखा सी ।।

× × ×

मानहु आयो है राज कछू, चढ़ि बैठेहो ऐसै पलास के खोड़े।
गूँज गरे, सिर मोर पखा 'मतिराम' हों गाय चरावत चोढ़े।

मोतिन को मेरो तोरयौ हरा, गहि हाथन सौं रहे चूनरी पोढ़े।
ऐसें ही डोलत छैल भए तुम्हैं लाज न आवत कामरी ओढ़े॥

× × ×

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है,
मंद-मंद गौनु आजु हिय को हरत है।
सनमुख होत, 'मतिराम' सुख होत, जवै
पौन लागै घूँघट को पट उघरत है।
कालिंदी के तट बंसीबट के निकट,
नंदलाल कौ सँकोचन तैं चाह्यो न परत है।
तनु तो तिया को बर भाँवरैं भरत,
मनु, सामरे बदन पर भाँवरैं भरत है॥

× × ×

दोऊ अनन्द सौं आँगन माँझ बिराजैं असाढ़ की साँझ सुहाई।
प्यारी कौं बूझत और तिया को अचानक नांउँ लियो रसिकाई।
आयो उने मुँहु मैं हँसी, कोपि, प्रिया सुर-चाप सी भौंह चढ़ाई।
आँखिन तैं गिरे आँसू के बूँद, सुहाँसु गयो उड़ि हंस की नाँई॥

× × ×

धुरवानि की धावनि मानो अनंग की तुंग धुजा फहरान लगी।
नभमंडल व्है छितिमंडल छवै छनदा की छटा छहरान लगी।
'मतिराम' समीर लगे लतिका, बिरही बनिता थहरान लगी।
परदेस मैं पीव संदेस न पायौ, पयोद-घटा घहरान लगी॥

× × ×

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट, मनोहर मूरति सौं मनु लैगो।
कुंडल डोलनि, गोल कपोलनि, बोल सनेह के बीज-से बैगो।
लाल बिलोचनि-कौलनि सौं मुसकाइ इतैं अरुझाइ चितैगो।
एक घरी घन से तन सौं अँखियान घनो घनसार सो दैगो॥

× × ×

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट मैं कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि मैं छबि छाई।
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि को न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहा कहौं ? मीठी लगै अँखियान लुनाई॥

× × ×

जा छिन तैं 'मतिराम' कहै मुसकात कहूँ निरख्यौ नंदलालहि।
ता छिन तैं छिन-ही-छिन छीन बिथा बहु बाढ़ी वियोग की बालहि।
पोछति है कर सौं किसलै गहि बूझति स्याम सरीर गुपालहि।
भोरी भई है मयंकमुखी, भुज भेटति है भरि अंक तमालहि॥

× × ×

सुन्दरिबदनि राधे सोभा को सदन तेरो,
बदन बनायो चारिबदन बनाय कै।
ताकी रुचि लैन कौं उदित भयो रैनपति,
मूढ़मति राख्यो निज कर बगराय कै।
'मतिराम' कहै निसिचर चोर जानि याहि,
दीनी है सजाइ कमलासन रिसाय कै।
रातौं दिन फेरै अमरालय के आस-पास,
मुख मैं कलंक मिसि कारिख लगाय कै॥

× × ×

सजल जलद जिमि झलकत मदजल,
छिति-तल हलत चलत मंद गति मैं।
कहै 'मतिराम' बल बिक्रम बिहद सुनि,
गरजनि परै दिगवारन बिपति मैं।
सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिए हलकनि,
बरनी ऊँचाई कविराजन की मति मैं।
मधुकरकुल करनीनि के कपोलनि तैं,
उड़ि-उड़ि पियत अमिय उड़पति मैं॥

× × ×

निसि दिन औननि पियूष सों पियत रहैं,
छाय रह्यो नाद बाँसुरी के सुरग्राम को।
तरनि-तनूजा-तीर बन कुंज बीथिन मैं,
जहाँ - तहाँ देखति हैं रूप छबि धाम को।
कवि मतिराम होत हाँतो न हिए ते नैक,
सुख प्रेम गात को परस अभिराम को।
ऊधो तुम कहत वियोग तजि जोग करौ,
जोग तब करैं, जो वियोग होय स्याम को॥

× × ×

ग्रीष्म हूँ रितु मैं भरी दुहूँ कूल पैराउ ।
खारे जल की बहति है नदी तिहारे गाँउ ॥

पानिप पूर पयोधि में रूप जाल बगराइ ।
नैन मीन ए नागरनि बरबट बाँधत आइ ॥

दिपै देह दीपति, गयौ दीप बयारि बुझाइ ।
अंचल ओट किए तऊ चली नवेली जाइ ॥

होत दसगुनो अंकु है दिएँ एक ज्यों बिंदु ।
दिएँ दिठौना यों बढ़ी आनन आभा इंदु ॥

सुधा मधुर तेरो अधर, सुन्दर सुमन सुगंध ।
पीव जीव कौ बंध यह बंधजीव को बंध ॥

बार बार वा गेह सों बारि बारि लै जाति ।
काहे तें बिन बात ही बाती आजु बुझाति ॥

नैन जोरि मुख मोरि हँसि नैंसुक नेह जनाइ ।
आगि लैन आई, हिये मेरे गई लगाइ ॥

पिय-आगम सुनि बाल तन बाढ़े हरख बिलास ।
प्रथम बूँद बारिद उठैं ज्यौं बसुमती सुबास ॥

नर नारी सब जपत हैं घर-घर हरि को नाउँ ।
मेरे मुख धोखें कढ़त, परत गाज ब्रज गाउँ ॥

भौंह बीच तिल तनक से सोहत सुखमा संचि ।
दियौ डिठौना रीझि सों, मानहुँ बिरचि बिरंचि ॥

बासन को पानिप घट्यो तन पानिप की आस ।
मिटी पथिक की वदन तें, लगी दृगनि मैं प्यास ॥

नंदलाल के रूप पर रीझि परी एक बारि ।
अधमूँदी अँखियनि दई मूँदी प्रीति उघारि ॥

बिन देखे दुख के चलें, देखें सुख के जाहि ।
कहो लाल उन दृगनि के अँसुवा क्यों ठहराहि ॥

राधिक के दृग खेल में मूँदे नंदकुमार ।
करनि लगी दृग-कोर सो भई छेदि उर पार ॥

सेत बसन में यों लगै उघरत गोरे गात ।
उड़ै आगि ऊपर लगी ज्यों विभूति अवदात ॥

पिय मिलाप के हेत तिय सजे उछाह सिंगार ।
दृग कमलनि के द्वार में बाँधे वंदनवार ॥

बरनत साँच असंग कै, तुमक बेद गुपाल ।
हिए हमारे बसत हो, पीर न पावत लाल ॥

हँसत बाल के बदन में यों छबि कछू अतूल ।
फूली चंपक बेलि तें झरत चमेली फूल ॥

भयो सिंधु ते बिधु सुकवि बरनत सुमति बिचार ।
उपज्यौ तो मुख इंदु तें प्रेम पयोधि अपार ॥

मन यद्यपि अनुरूप है, तऊ न छूटति संक ।
टूटि परै जिन भार ते निपट पातरी लंक ॥

सरद चंद की चाँदिनी को कहिए प्रतिकूल ।
सरद चंद की चाँदिनी कोक हिए प्रतिकूल ॥

तरुनि अरुनि एड़ीनि के किरन समूह उदोति ।
बेनी मंडन मुकत के पुंज गुंज दुति होति ॥

अँसुवनि के परवाह मैं अति बूड़िबे डराति ।
कहा करै नैनानि कों, नींद नहीं नियराति ॥

भूषण

पावक तुल्य अमीतन को भयो, मीतन को भयो धाम सुधा को।
आनँद भो गहिरो समुदै कुमुदावलि तारन को बहुधा को।
भूतल माहिं बली सिवराज भो भूषन भाखत शत्रु मुधा को।
बंदन तेज त्यों चंदन कीरति सोंधे सिंगार बधू बसुधा को॥

× × ×

इंद्र जिम जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यों सहसबाह पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम दंड पर चीता मृगझुंड पर,
भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है॥

× × ×

बासव से बिसरत बिक्रम की कहा चली,
बिक्रम लखत बीर बखत बुलंद के।
जागे तेज बृंद सिवा जी नरिंद मसनंद,
माल मकरंद कुलचंद साहिनंद के।
भूषन भनत देस देस बैरि नारिन में,
होत अचरज घर घर दुख दंद के।
कनकलतानि इंदु, इंदु माहिं अरविंद,
झरैं अरबिंदन तैं बुंद मकरंद के॥

× × ×

सीता संग सोभित सुलच्छन सहाय जाके,
भू पर भरत नाम भाई नीति चारु है।
भूषन भनत कुल सूर कुल भूषन हैं,
दासरथी सब जाके भुज भुव भारु है।
अरि लंक तोर जोर जाके संग बान रहें,
सिंधुर हैं बाँधे जाके दल को न पारु है।
ते गहि कै भेंटे जौन राकस मरद जाने,
सरजा सिवाजी रामही को अवतारु है॥

× × ×

पीरी पीरी हुन्न तुम देत हौ मँगाय हमैं,
सुवरन हम सों परखि करि लेत हौ।
एक पलही मैं लाख रूखन सों लेत लोग,
तुम राजा ह्वै कै लाख दीबे को सचेत हौ।
भूषन भनत महराज सिवराज बड़े,
दानी दुनी ऊपर कहाए केहि हेत हौ?
रीझि हँसि हाथी हमैं सब कोऊ देत कहा,
रीझि हँसि हाथी एक तुम हिये देत हौ॥

× × ×

श्री सरजा सिव तो जस सेत सों होत हैं बैरिन के मुँह कारे।
भूषन तेरे अरुन्न प्रताप सफेद लखे कुनबा नृप सारे।
साहि तनै तब कोप कृसानु तें बैरि गरे सब पानिप वारे।
एक अचंभव होत वड़ो तिन ओंठ गहे अति जात न जारे॥

× × ×

ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यंत पुनीत तिहूँ पुर मानी।
राम युधिष्ठिर के बरने बलमीकिहु व्यास के संग सोहानी।
भूषन यों कलि के कबिराजन राजन के गुन गाय नसानी।
पुन्य चरित्र सिवा सरजा सर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी।।

× × ×

साहि तनै सिवराज ऐसे देत गजराज,
जिन्हैं पाय होत कबिराज बे फिकिर हैं।
झूलत झलमलात झूलै जरबाफन की,
जकरे जंजीर जोर करत किरिरि हैं।
भूषन भँवर भननात घननात घंट,
पग झननात मनो घन रहे घिरि हैं।
जिनकी गरज सुने दिग्गज बे आब होत,
मद ही के आब गड़काब होत गिरि हैं।।

× × ×

बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
नाहीं ठहराने राव राने देस देस के।
नग भहराने ग्राह नगर पराने सुनि,
बाजत निसाने सिवराज जू नरेस के।
हाथिन के हौदा उकसाने कुंभ कुंजर के,
भौन को भजाने अलि छूटे लट केश के।
दल के दरारे हुते कमठ करारे फूटे,
केरा कैसे पात बिहराने फन सेस के।।

× × ×

ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहन वारी,
ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहाती हैं।
कंद मूल भोग करें कंद मूल भोग करें,
तीन बेर खाती सो तो तीनि बेर खाती हैं।
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलातीं तेऽब बिजन डुलाती हैं।
भूनत भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।।

× × ×

यों सिर पै छहरावत छार हैं जाते उठैं असमान बगूरे।
भूषन भूधरऊ धरकैं जिनके धुनि धक्कन यों बल रूरे।
ते सरजा सिवराज दिये कविराजन को गजराज गरूरे।
सुंडन सों पहिले जिन सोखि कै फेरि महामद सो नद पूरे॥

× × ×

इंद्र निज हेरत फिरत गजइंद्र अरु,
इंद्र को अनुज हेरै दुगधनदीस को।
भूषन भनत सुरसरिता को हंस हेरै,
बिधि हेरै हंस को चकोर रजनीस को।
साहि तनै सिवराज करनी करी है तैं,
जु होत है अचंभो देव कोटियौ तैंतीस को।
पावत न हेरे तेरे जस मैं हिराने निज,
गिरि को गिरीस हेरैं गिरिजा गिरीस को॥

× × ×

सजि चतुरंग बीर रंग मैं तुरंग चढ़ि,
सरजना सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गब्बरन के रलत है।
ऐल फैल खैल भैल खलक मैं गैलगैल,
गजन की ठेल पेल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत, जिमि
थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

× × ×

बाजि गजराज सिवराज सैन साजतहि,
दिली दिलगीर दसा दीरघ दुखन की।
तनिआँ न तिलक सुथनियाँ पगनियाँ न,
घामै घुमराती छाँड़ि सेजियाँ सुखन की।
भूषन भनत पतिबाँह बँहियाँ न तेऊ,
छँहियाँ छबीली ताकि रहियाँ रुखन की।
बालियाँ बिथुर जिमि आलियाँ नलिन पर,
लालियाँ मलिन मुगलानियाँ मुखन की॥

× × ×

भुज भुजगेस की ह्वै संगिनी भुजंगिनी सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरिन बीच धंसि जाति मीन,
पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैया राव चंपति को छत्रसाल महाराज,
भूषन सकत को बखानियों बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने बीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के॥

× × ×

सुनै हूजै बेसुख, सुने बिन रह्यो न जाय,
याही ते बिकल सी बिताती दिनराती हैं।
भूषन सुकवि देखि बावरी विचार काज,
भूलिबे के मिस सास नंद अनखाती हैं।
सोई गति जानै जाके भिदी होय कानै स,
जेती कढ़ै तानै तेती छेदि छेदि जाती है।
हूक पाँसुरी मैं, क्यों भरौ न आँसु री मैं, थोरे छेद
बासुरी मैं, घने छेद किये छाती हैं॥

× × ×

कारो जल जमुना को काल सो लगत आली,
छाइ रह्यो मानों यह विष काली नाग को।
बैरिन भई है कारी कोयल निगोड़ी यह,
तैसो ही भँवर कारो बासी बन बाग को।
भूषन भनत कारे कान्ह को वियोग हिये,
सबै दुखदायी जो करैया अनुराग को।
कारो घन घेरि घेरि मारयो अब चाहत है,
एते पर करति भरोसो कारे काग को॥

अशरफ़

नामा कत्या बोल सँबार। जानो मोतिया केरा हार।
सोने की ज्यों घुंटी धड़। मानिक मोती हीरे जड़।
यक यक बोल यह मानिक मोल। सीन तराजू संती तोल।
बंदऽ पिरोये सोने तार। सच्चा हुआ नौ सिरहार।

× × ×

बाचा कीन्हा हिन्दवी में। किस्सा मक़तल शाह हुसेन।
नज़म लिखी सब मौजूं आन। यों मैं हिन्दवी कर आसान।
यक यक बोल यह मौजूं आन। तकरीर हिन्दवी सब बयान।

फ़ीरोज़

बराहीम मखदूम जी जीवना। कि मैं सिर्फ़ वहदत सदा पीवना।
मेरा पीर मखदूम जी जगमने। मँगुँ न्यामतां मैं सदा उमकने।
करें मुझ पर प्यार ये पीव जग। कि तुझ प्यार से होय मंधीर जग।
पिया जीव ते तो हमन वास है। तु हम जीव के फूल का बास है।
वही फूल जिस फूल की वास तू। वही जीव जिस जीव की आस तू।

बुरहानुद्दीन जानम्

अल्ला सिमरूँ पहले आज। कीना जिन यह धौं जग काज।
जगतर को तूँ करतार। समूं केरा सिरजन हार।
अस्तुत ओरुँ करने चख। फ़ुर्सत पाऊँ बोलने मुख।
कुदरत तू तुज अंत न पार। अगनित कीना हो परकार।

× × ×

तूं ने देखया आपस आप। जे घड़्या यह तुज काज।
आरे तूं इस सफा में नूर। कि जैसा आकाश में सूर।
अरे तू अपसे आपस देख। जहूर कूं करता लेखा लेख।
व खाली दिसता ठाँव। वह कइया अपना नाँव।
यो गफ़लत मेरी टूटी। जे नजर ऐसी फूटी।
यह सदक़े मुर्शिद छूटा। यह घोर अंधारा फूटा।
जैसा खाली फूल। या देखे जैसा डोल।

शाह-अली

आज प्रेम तो तुझ सूँ खेलूँ। जो ये वाचा देवे।
जे तूं जीते मुँज कूं लीजे। होर धन जीते तूं लेवे।
एक सो बात प्रेम की भारी। दूजा तुज सूँ खेल चढ़ाई।
तिस पर तैं मतवाजी केती। भर भर प्याली प्रेम पिलाई।

× × ×

जिसें तिरे दो, नयन आते. . .सो तो नहीं साथी।
तुझ बिन कुछ भी ना जोऊँ, क्या करूँ संघाती।
ये यारी होर दोस्ती मेरी।
ये सब यारी दोस्ती तेरी।
हब्र क्या कीजै बात घनेरी।

× × ×

अभरन मेरा सही सो पिव हैं। पिव का जिव सो मेरा जिव है।
हार हमेलाँ मुँज शहबाहां। मोती हार सो तुम गल माँहा।
मुझ शह अन्तर कछू न भावै। प्यारो चोला चीर उतरावे।
एक मेक जो राख्या लौ दै। सो बुज अभरन क्यों कुछ छोड़े।

वजही

अपे फूल अपे फल वन अहै। अपे चाँद अपे सूर अपे घन अहै।
गरज एक आप च सबे ठार है। उसी नूर का सब में झलकार है।
ख़ुदाया बड़ा तूँ बड़ाई है तुज। हमन सब वंदे है खुदाई है तुज।
जो जग में सदा काल जीता अछूँ। मुहब्बत केरी मैं कूँ पीता अहूँ।

× × ×

मुहम्मद नवी नाँव तेरा अहै। अरश के उपर छाँव तेरा अहै।
कि चौदह मुलक का तू सुल्तान है। अली सा तेरे घर में परधान है।
असी होर एक लाख पैगम्बर आय। वले मर्तबा कोई तेरा न पाय।
शफ़ाअत करनहार सबका तुही। अपे लाडला एक रबका तुही।
मुहम्मद कूँ जिस रात मेराज होइ। न था दूसरा वाँ अलीबाज कोइ।
इनो तीनों कूँ बात या क़ाम है। समजता वो चौथे का नै काम है।

× × ×

दखिन सा नही ठार संसार में। निपज फ़ाज़िलाँ का है इस ठार में।
दखिन है नगीना अँगूठी है जग। अँगूठी कूँ हुर्मत नगीना ही लग।
दखिन मुल्क कूँ धन अजब साज़ है। कि सब मुल्क सिर होर दखिन ताज है।
दखिन मुल्क मौते च खासा अहै। तिलंगाना उसका खुलासा अहै।

मुहम्मद कुल्लो

चंद सूर तेरे नूर ते निसदिन कूँ नूरानी किया।
तेरी सिफ़त किन कर सके तू आपि मेरा है जिया।

तुँज नाम मुँज आराम है मुँज जीव सो तुज नाम है।
सब जग कूँ तुझसाँ काम है, तुज नाम जप माला हुआ।
तुज याद में जग मोहिया, है जग उपर तेरा मया।
जो जग मँगे सो तूँ दिया, तू ही जगत का है दिया।
जीता हूँ तेरे आस ते, आया है रहम अकास ते।
जे कुच मँगूँ तुज पास ते, सो है सो मुज कूँ तूँ दिया।
मौतिक मया सेती अपन, दीता कुतुब कूँ सब दखिन।
सेऊँ नबी का नित चरन जब लग है तन म्याने जिया।

× × ×

वसंत आया सकी, जो लाल गाला। कुसुम चोला.....!
पपीहा गावता है मीठे बैना, मधुर रस दे अधर रसका पियाला।
पियारी होर पिया हत में सो हतले, सरोवन में न्हिजी गल फूलमाला।
कँठी कोयल सरस नाँदा सुनावै, तनन तन तन तनन तनतन तला ला।
गरज बादल तें दादुर गीत गावै, कोयल कूके सो फुलवन के खियाला।
सदा सेवा करै ऐसी गुसाईं, दलिद्दर दूर कर करता निहाला।
नबी सदके हुआ कुतबा तेरा जीत, दुँधाँ सीने में सलता दुःख भाला।

× × ×

सकी आज प्याला अनंद का पिला मुँज।
व याकूत अधराँ की मस्ती दिला मुँज।
महल दिसते हैं नूर के अति सफ़ा सों।
सकील्या सजन कूँ मना कर बुला मुँज।
गगन से तबक मोतियों सो भरे हों।
पिया आरती ताईं पिउकूँ हिला मुँज।
तेरे नेह बिन जीवना मुँज न भावै।
मसीहा नमन आप - दम सों जिला मुँज।
अधर बिन तेरे मुँज न भावे अर्क़ाकाँ।
बदन तेरे बिन नै हैं नीका तिला मुँज।
तेरे हुस्न बिन होर मुँज नैन में कद्द।
न आवे किहै इस सेतीं इत्तिला मुँज।
नबी सदके कुत्बा अलीमेह सेतो।
बँधा दिल कही नै उनन बिन बलाँ मुँज।

× × ×

सकीं तुज अधर ते पिला मुँज नवेज़।
चुमन के नकल सो पिला मुज नवेज़।

जिया कूँ दिया है सफा नेह - शराब।
दिया दिल कूँ कौउर जला मुँज नवेज़।
मेरे नैन जौं सूर पुर नूर कर।
दिला कूँ दिला कर खिला नवेज़।
तेरे नैन ते मुँज चढ्या है असर।
दिया तुज तिला की कला मुज नवेज़।
जो वन की सुराही कुतुब हत में दे।
बशारत दिया कुत्कुला मुँज नवेज़।

अब्दुल

करूँ इबतेदा शह वरा हीन नाम। कि जिस सिफ़्त आल्या फिर्‌या है तमाम।
सुरग मिर्त पाताल हर एक धरा। रखा रूप सरवर हो आलम भरा।
इलाही ज़वाँ गंज तूँ बोल मुझ। अमोलक वहाँ कर जे बोल मुझ।
कहूँ बिस्म अव्वल तो अल्लाह लाय। गले मुख खुले जीव पकड़े सो लाय।

अमीन

सहेल्याँ जो थ्याँ तीन उनके सँगात। उनोने निकाले यह उस वक्त बात।
सुना शहर फ़ारस का है बादशाह। है खूबी मने खूब ज्यों मेहो माह।
कते है बहुत खूबसूरत है वो। फिरंग चीन की खबमूरत है ओ।
अगर्चे वही आदमी जाद है। चँदा उसके आगे सो बी मात है।
ले आया उसे देव आशिक होर। रखा है लिया कर अपस ठार पर।

ग़ौवासी

गवासीं अगर तू है सचला ग़वास। लगा इश्क अपने खुदा साथ खास।
चलेगा केता नफ़स के कय मने। केता होयगा नाव के पय मने।
जे कुच ख्वास्त तेरा है सब उसपे छोड़। दुन्या के इलाके ते तूँ दिल कूँ तोड़।

× × ×

इलाही जगत का इलाही सो तूँ। करनहार जम बादशाही सो तूँ।
तेरे हुक्म तल नौगढ़ असमान के। रईयत मलिक तेरे फरमान के।

भरया जिस गड़ाँ बीच तारे हशम। करे नौबताँ सों उलँग दमबदम।
जहाँ लग जो बादल के हैं गडगडाट। तेरी फ़तेह दौलत दमामे के टाट।
इतो तेरे दरबार के पहाड़ सब। छड़ीदार तुझ दार के झाड़ सब।
तेरी बादशाहत कूँ कुछ अन्त नै। तेरे मुल्क में गैरकूँ निस नै।
गवासी जो तुझ दार का खाक है। तेरी बाट का महज़ स्वाशाक है।
दिखा की मया कर तुँ मुझ खाक कूँ। दे रंगवास मुझ दिल फलफ़ाक कूँ।

× × ×

इलाही जो साहेब है संसार का। जो देता है मंग्या मँगनहार का।
जो बेटा दिया शाह कूँ वदेदल। चँद्र-सूर ते खूब निर्मल-निछ्ल।
खुश्याँ साथ अमृत घड़ी फ़ाल देक। सो सैफुल्मलूक कर रख्या नाँव नेक।
जो था सालेह उस शाह केरा वज़ीर। खुदा उसके हक़ पर हुआ दस्तगीर।
उसी रात उसे एक बेटा दिया। दिवा उसके घर का सो रोशन किया।

मीराँ हुसैनो

जिव का बी ओ जिवाला, रूपों में रूप आला।
सब के ऊपर है बाला, नित हँसत रह तुँ मीराँ।
अकुलाय रूप सब सूँ, ओ रूप देक जब तूँ।
वे रूप के तूँ तब सूँ, नित हँसत रह तुँ मीराँ।
बच्चा बगल में होकर, ढुँढते नगर में रोकर।
सारी उमर यों खोकर, नित हँसत रह तुँ मीराँ।
कोई नाक के ऊपर ज्यों, नित बांदते नजर क्यों।
दिसते ही जोन कर यों, नित हँस रह तुँ मीराँ।
उस नूर कूँ फना है, सूरत जिसमें बना है।
नूर ऐन कूँ मना है, नित हंसत रह तुँ मीराँ।
सो नूर खास होर, रंग रूप कुछ न आया।
सूरत - सकल न माया, नित हंसत रह तुँ मीराँ।
ओ नूर खास आला, सब सूँ ऊपर है बाला।
काला न लाल-पीला, नित हँसत रह तुँ मीराँ।।

अफ़ज़ल

सखी री चैत रुत आई सोहाई। अजहुँ उमेद मेरी बर न आई।
बआलम फूल्या फुवारियाँ सब। करे सैरां पिया संग नारियाँ सब।

रहे है भँवर फूलों के गले लाग। मेरे सीना जुदाई की लगी आग।
निहायत दर्द दुख हमने सहे री। ग़मे हिजराँ मुझे हरदम रहे री।
सखी दिन-रैन मुज नागन डसत है। फिरूँ दूरी तमामी जग हँसत है।
मेरे गलमों पड़ो है प्रेम फाँसी। भया मरना मुझे और लोग हाँसी।
अरे यह इश्क सों डरती फिरूँ री। नसीहत अपने से आपे करूँ री।
कि पंजी सों लगन हर्गिज न कीजे। अरी दिल दे हज़ाराँ ग़म न लीजे।

मुक़ीमी

दुन्या तो फ़ना है मुक़ीमी सभी। रहेगी बचन की निशानी यही।
मुक़ीमी पिरित बीच अंपड्या हूँ मैं। पिरिति के कमँद बीच सँपड्या मैं।
मुक़ीमी बचन का तरंग साज तूँ। हविस का चल्या है तुँ महियार कूँ।

× × ×

कया जा उसे "ए दिवाने बशर। कहाँ सूँ तु आया चल्या है किधर।"
उने जाब फिरकर दिया शाह कूँ। "तूँ चेत चल पकड़ आपनी बात कूँ।
तुँ आशिक हुआ है सो किस हूर का। हुआ मुब्तला कह तूँ किस नूर का।
तेरा मन लग्गा है सो कह तू मुझे। जो माशूक तेरा मिलाऊ तुजे।"

क़ुतुबी

साथी हो तुझ भाई चले खिदमत करे शामो-सेहर।
ना ल्याय दुख का आज, उनके गम दुख में ले जाय सब।
ऐसे न होसे ना रचे देना तिलाक उस जूद तर।
जो तू नारी करे ढूँढ चार चीज अपने से कम।
सिन जात कद तुजते तले चौथा सो क्या धन-मालोज़र।
करता च नारी तू अगर हर्गिज न ऐसे बग़ैर।
कर ख़ौफ़ हँस मत बोल रे दीदार ऐसे जो खर।।

अबदुल्ला क़ुतुब

बोल दिलकुशा इश्रत-महल मत्बूअ औ तारा हुआ।
जाती ज़मीं की पीठसों ज्यों मुश्तरी भारा हुआ।

हर ताक याँ खुश तरह का दिसता दरीया फर्द का।
आजिज़ हो इसकी शरह का है बान से न्यारा हुआ।
अँखियाँ सों चन्दन सूर के देख अस्माना दूर के।
आशिक है इसके नूर के क्या खूब दो टारा हुआ।
देवे सफ़ा दीदार सों लख नक्श ठारे ठार सो।
खुश मान याँ अत्तार सों फ़िरदौस का हारा हुआ।
नाज़ुक अचम्भा बेबदल लिक्खे भरया ऐसा महल।
बाँध्या न कोई आखिर अवल जमशीद या दारा हुआ।
ज्यों फूल ताज़ा बनमने ज्यों पूतली पूजन मने।
त्यों आज इस दखिन मने यो महल उतम सारा हुआ।
सदक़े नबी के पा अमाँ इस महल म्याने हर ज़माँ।
जम अब्दुला शाह तुर्कमाँ भोगी गमनहारा हुआ।

सनअती

हरयक नूर में हूर पर तानाज़न। हर एक चाँद से साफ़ निर्मल वदन।
दिसे शोले में नूरस्यां ओ परयाँ.........
ओ नारयाँ अगर नूर में नार थ्याँ। वलेकिन वराहिम का गुल्जार थ्याँ।
अधर पौ दौर हरेक बरग गुल धरे। वले काँ है गुलवर्ग शक्कर भरे।
दसन मस्त उनके हरे जाये पात। बले का है हरयाँ में यों आबताब।
दिसे ज़ुल्फ़ उनकी हरेक गाल पर। तूँ बोले कि संबूल है गुललाल पर॥

× × ×

अथाँ वाँ अजब सब्ज़ यक मुर्गजार। दरख्ताँ थे कै भाँत के बारदार।
दिसे सब्ज़ रंग आसमासा ज़मीन। सितारयाँ से उसमें गुले यास्मीन।
हर एक कालबाँ जो कि जल सीम का.......
दिसे जलयाँ बारेत इस धात मौज। कि चंचल की जो चखमे ग़मज्या की फ़ौज।
दिसे पेच सँबुल के लाले में यों। अरूसां के रुखसार पर ज़ुल्फ जो।
हरेक पात पर बूँद बरसात के। हरेक शाख पर मुर्ग कै भाँत के।
वचन आये हर मुर्ग के सीनेत साफ़। सफ़ाई में फकनूस पर उनके लाफ़॥

खुशनूद

अजब बेमेह्र दुनिया बेवफ़ा है। मोहब्बत ऐन इसका सब जफ़ा है।
जेते हैं दोस्तां फ़र्ज़ंद साती। सकल है गोर लग ओ सब संगाती।

निछल नेकी के घर का डाल बुनियाद। तेरे बाद अज़ करे सब खल्क तुज याद।
न कर ऐसा बदी जो सिर धुनाए। मुए पीछे तेरा कोइ गम न खाए।
मिले हैं बाप भाई सब मिरासी। बले कोई गोर में हर्गिज न आसी।
कहाँ दारा सिकन्दर शाह ग्यानी। कहाँ जमशीद जम हातिम दुरानी।
कहाँ खुसरो कहाँ ओ रूस्तमे ज़ाल। सुन्या नौशेरवाँ का क्या हुआ हाल।
जदा लग है सकत हातामने ज़ोर। तदां लग उचाते सब दोस्ताँ शोर।
चले जो नेक मरदां चल तु खुशनूद। खुदा हासिल करेगा दिलका मकसूद।

× × ×

कह्या शह तीन गौहर है शरफनाक......
हुआ खुशहाल अपने बख्त परसों। किया सिज्दा खुदा के तख्त परसों।
बले फरमाँ दिया तीनो रतनकूँ। निकर जाओ तुमें हर एक पटनकूँ।
जहा लग है मेरा सब मुर्गो माही। जहाँ फिरता है मुँज शहकी दोहाई।
रहेगे वां तो मारूँ ख्वार कर में। सयासत कर धरूँगा दार पर में।

रुस्तमी

किया तर्जुमा दखिनी दिल पज़ीर। बोल्या मोजज़ा यों कमाल खां दबीर।
खलक कहती है मुँज कमाल खाँदबीर। तखल्लुस सोहै रुस्तमी बेनज़ीर।
नबी की जो हिजरत थी किता खयाल। हजार पर पचास और नौ की थी साल।
कहा रुस्तमी उस वक्त यों किताब। बन्ध्या बानकी गौहराँ बे हिसाब।

× × ×

आया था ज़मी पर बी जो शाह जंग। ज़मी होर ज़मा कूँ लिया था...।
सफ़ेदी की खिच्ची थी मुखपर नक़ाब। परिन्दा सफ़ेद फँस्या था आफ़ताब।
ज़मी पर अम्बर का मंडप तमाम।......................।
ज़मी पर तो सुम्बुल था नै था सुमन।......................।
गया था महल के भितर शाह चीन। सबाही का था मुर्ग भी ख्वाब में...।
ज़मी होर ज़मा में भी काजल भर्या। अंगार जाकें जग में धुआँ भर रह्या।
जेते मुर्ग माही कुँ था मौत ख्वाब। जमी कूँ दरंग आसमाँ बाशिताब।
फलक नौ तबक गोहरा हसों सवार।.......... ....।

निशाती

करूँ तारीफ में उस ताजवर का।
समझता है जिने क़ीमत गुहर का।

शहों का शाह अबदुल्लाह ग़ाज़ी।
अछो जम हक्सों उसके पेशवाज़ी।
सआदत के नयन का नूर है तूँ।
शुजाअत के गगन का सूर है तू।
अजब नै देख तेरी नौशेरवानी।
करैं बकरयाँ की गुरगाँ पासबानी।
अगर देगा जो तेरे अदुल हद बाँव।
रखेगा कर जतन केतन कुं (तू) चाँद।
जहाँ लग मेहर चरखे अख्तरी है।
जहाँ लग घन पे ज़ोहरा-मुश्तरी है है।

नुसरती

न कह सूर बल आग-बादल अथा। न वो धूप यक आतशी जल अथा।
मगर खीच दोज़ख के दरियाते वीर। बरसता अछै जग में जलता च नीर।
किरन है सो सब जल की धारा दिसै। हरेक जरी क़तराते बदराँ दिसै।
ज़मीं ते फ़लक लग सब यक धात सों। भरी सर्द आतिश की बरसात सों।
लगे मारने जब सुराबाँ के मौज। चले चौकधन तब हरारत की फ़ौज।
वले इस अबर में है यक तर्फ़ा घात। लजाता है फिर नीज खींच अपने साथ।

× × ×

दी है जमिस्ताँ नो गज़ी दूँगा उचा धुँधकार आज।
सर्दार हो बादेखजाँ थँड का रच्या है भार आज।
उरस्या हवा का फ़ौज यों शबनम के गोल्याँ छाँटता।
डरसूँ अगिन सों झांपले डर राही है ठारे ठार आज।
ओ आग कोइ मारे तो दम उठती थी हो सब तन ज़बाँ।
वैसी भी सरकश सर नवा पीली दिसे सदहार आज।
बेशक वतन इस जगते मिट जातीं अगिन हो बे निशाँ।
गर दिल में अपने आशिक़ाँ देते न सबकूँ ठार आज॥

× × ×

सफ़पर गुनहगाराँ की तब क़ायम क़यामत हो रही।
बिसरे यकस यकको मदद पेशा सबब दुश्वार का॥
जो जाँ अथे सो त्यों च वाँ हैरत सों सारे दँग रहे।
सूरत में हर तन यों दिस्या जों नक्श है दीवार का॥

शहके ग़ज़ब की त अगिन नहिं सरकशी पर आप लगा।
शह शोर में दिल जा पड्या हर मायमे-अशरार का॥
तहकीक़ सब जाने कि अब आख़िर तुटे पर आसमाँ।
हरगिज़ थमा सकसे न कोइ बल हथके दे आधार का॥
यों अल-अमाँ की हाँक सब चौंधेर ते गढ़ परते उटी।
आजिज़ हो काडे मुख पकड़ सुट धंदा हथियार का॥
जब शह चढ़े घोड़े उपर यों फ़तह गढ़ ऐसा किये।
तब मुखमें शायाँ के हुआ नित दर्द इस गुफ़्तार का॥
कहना है धन उस माहकूँ है जिसकूँ ऐसा शह ख़लफ़।
सो ओ बड़े-साहेब हैं जम पाकर करम करतार का॥
जिस घरकी न्यामत ते जमन पाली गई है सब ज़मीं।
ते आवे दरिया में असर है तिसकी......खारका॥
जिस दिलकूँ कर हुब्बुल-वतन गमती है निस-दिन रास्ते।
होर घर करामत सों ज़ख़म है तिस-ज़बाँ में प्यारका॥

तबई

इलाही यो तबई तेरा दास है। दे ईमान इसको तेरी आस है॥
इलाही वचन का मुँजे ताब दे। मेरी जीभकी तेगकूँ आब दे॥

अजब सीस पर उस लम्बे बाल थे। भुजंग शाख संदल पर रखवाल थे।
जबीं देख उसकी छुपे आफ़ताब। ले मुख पर अपसके रयन का नकाब।
भवाँ पर उसी के नज़र कर हलाल। किया तनकुं लागिर रयन का नक़ाब।
नयन देख आहू परेशान हो। चमन बीच नर्गिस हो हैरान हो।
अजब उसकी आँखों में डोरे थे लाल। कि जिन नयन कारन बनाई जो चाल।
दो गालाँ सफा की सना की न जाय। देखत आशना उसके रशकत लियाय।
सिपह खाल नादिर था उस गाल पर। भँवर होके बैठा है गुल लाल पर।
दो लब आबे हैवाँ से लब्रेज थे। किया शहद शक्कर सो आमेज़ थे।
अथे दांत मुख बीच हीरे जड़े। दहन के सदफ़ बीच मोती जड़े।
जहाँ वो खुशी साथ हँस बोलती। गुलाँ और मोतियाँ कई रोलती।
सीना पर दो पिस्तान अन्नार थे। यो दो बुर्ज मुश्कीन तातार थे।
शिकन मौज दरियाय सीमाब है। अगे नाफ़ तिस बीच गर्दाब है।
चरन देख चम्पा खिला बाग बाग। वह रुख देख लाला हुआ दाग दाग।

× × ×

जे कोई याद करता न अपना वतन। ओ मर्द है पेरन असल का कफ़न।
अगर कोई गुर्बत में शाही करे। अगर माल होर मिलक लाखाँ धरे।
अपस कूँ देखे खोल कर जो अँखियाँ। देवे खाक तन का वतन का निशान।
वतन सबकूँ दुनिया में प्यारा अहै। सफ़र है सो जो वादेबाराँ अहै।

× × ×

लग्या मैं जो यो मस्नवी बोलने। यो मोतिया निछल थाल यो रोलने॥
यां वजही मेरे ख्वाव में आयकर। कुछ अपना सुरजनार दिखलायकर॥
सरासर सुन्या जो मेरी मस्नवी। कया "बात तबई तेरी है नवी॥"
हो खुशहाल सुनकर यो बाताँ मेरी। अपसके ले हाथोंमें हाथाँ मेरी॥
बड़े प्यारसों अपना यो दे मिसल। सुन्या सो पड्या ख्वाब से मैं उछल॥

× × ×

कता हूँ सुनो कान धर लोग हो। कहावत मने' बात हो आप यो॥
अगर शेर कोइ खूब कहकर जो लाय। तो खूबाँकू सुन रश्क अल्बत्ता आय॥
यक सकूँ सो यक देख सकते नहीं। यकसकूँ यो यक मान रखते नहीं॥
अगर खूब जो बोले जो तो वो अहै। अगर जो बुरा बोले तो यों अहै॥
तबई तुँ जो काम कर अख्तियार। कि रहे ता क़यामत तेरी यादगार॥

× × ×

रवायत किया राविये नेकनाम। बहुत फ़िक्र सों यो हिकायत तमाम॥
अथा रूम के शह में बादशाह। ....॥
ओ शाह भौत मक़बूल आक़िल अथा। सखी होर फ़ाजिल ओ कामिल अथा॥
सवा लाखथे उसकुँ तुर्की गुलाम। जो अल्मास था रंग उनका तमाम॥
जो हब्शी गुलामाँ सवा लाख थे। ओ नीलम की त्यों हुस्न में पाक थे॥
अगर्चे ओ शाहे-जहाँगीर था। नहीं है कि फ़र्ज़न्द दिलगीर था॥
इसी ग़मसों दिनरात रोता अछै। ....॥

× × ×

ओ जुल्फाँ दिलोंके हिंडोले आहै। गलत मैं कया दो सँपौले अहै॥
भँवा बागनख होर अखियाँ हरिन। कि ओ मोहनी है अजब मनहरन॥
ओ गालाँ की सुर्खी सो लालेमें नै। ओ बालाँ की खुश्बोइ बालेमें नै॥
दिसे फूल दो सेवतीके दो कान। चँपेकी कली नाक है दर्मियान॥
अजायब यो चाहे-ज़नख्दान है। कि ग़र्क उसमने दीन-ईमान है॥
दो जोबन सो चोलीके दो हाथ में। जो अम्रीतफल छुप रहे पात में॥
अथा पेट जों आरसीनाद साफ़। कहूँ क्या झमकता अथा ज्यों शफ़ाफ़॥

गुलाम अली

गुलाम अली नयी दुनिया में वफा। कधीं है खुशी होर कधीं है जफ़ा।
कि जो काँद का है चुना ज़िन्दगी। तो हर्गिज नहीं किसकुँ पायंदगी।
दुन्या का लेवे काम होइ सिर उपर। फिरे ओ कुते के नमन दरबदर।
दो दिनका सो जीना न कर पायमाल। तु सुट हिर्स कूँ जो रहे खुशहाल।
गुलाम अली कह भला हर किसे। बुरा कहने सों जग में दुश्मन दिसे।
भलाई सेती तूँ भला पायेगा। बुराई सों सिर पर बला ल्यायगा।
होवे कोई बुरा भलाई न छोड़। बुरा बोल किसकूँ अपस-मूँ न तोड़।

× × ×

गुलामली जिससों दिल लाइये। बिछुड़ने सों वेहतर जो जिउ जाइये।
कते खून-दिल सों सो दिल लावना। तो एक तिलमने तोड़कर जावना।
जनावर के जाने से दुख पाइया। तो इन्सान खातिर न ग़म खाइया।

× × ×

कि है सब जगत्तर मने सात दीप। सिंगलदीप उसमें का है एक दीप॥
कि ओ दीपमें है सकल पद्मनी। न चित्रिन न हस्तिन नहीं शंखनी॥
सकल दीपके नारकी बात है। सुनों मैं कहूँगा ओ किस धात है॥
अथा एक राजा सो भूखन कनीर। सिंगलदीप के मुल्कमें बेनज़ीर॥
निका नाँव कंदर्प सेन (उस) अथा। जगतमें बड़ा राजा उस बिन न था॥
न था कुच्छ लश्करकुँ उसकी हिसाब। कि जो धनमें तारयाँमने माहताब॥
खज़ाना भरी कोठरयाँ कै हज़ार। जवाहिर की संदूक थी सौ हज़ार॥

× × ×

चल्या और कह सात दरिया गुज़र। तमाशे जो देखता हरेक ठार पर॥
बंगालेमें (वाँ) एक खुश बाग था। जो जन्नत की दिल-रश्क सों दाग था॥
उतर वाँ लग्या सैर करने के तैं। जो मेवेके झाड़ाँपे फिरने के तैं॥
वहाँ के क़दीमी जो राँवी अथे। हिरामनकुँ देख आये मिलने वते॥
देखे जों यो है भौत शीरीं-कलाम। हुयै भौत खुशहाल राँवी तमाम॥

× × ×

चल्या उड़कर शाहका ले पयाम। किया शाहज़ादी कुँ जाके सलाम।
देखी उसकुँ अरराके रोने लगी। चँदरमुख आँजू साथ धोने लगी॥
कही "क्यों मेरे सीने-दिल तोड़कर। गया था कहाँ तूँ मुजे छोड़कर॥
कई दिल कया कहुँ यकायक निपट। किया अक़ाबरा मुज सेती दिलकूँ हट॥

केते प्यारसों तुजकुँ पाली हुँ मैं। केता तुज-दुखों आपसों जाली हुँ मैं।।"
हिरामन दिलासा देकर भौत धात। रतनसेनका सब कह्या खोल बात।।

× × ×

गुलामली जिसके तैं है हया। जिये हक की तौफीक सों कोइ धात।।
अगर जावेगा बाधकन धीट कर। खड़ा मूँ फिरा उस तरफ पेट कर।।
पड़े जा अगर आगमें नागहाँ। होवे ओ अगिन उस उपर गुल्सताँ।।

इशरती

बेचारी हो रही तब बेचारी वो माई।
बेचारयाँ नमन वो कसूँ रो हाय हाय।।
लहू घूट ले भरके सीनेमें खार।
कलीके नमन दिल रखी नहुँ तलार।।
चँदरधरके घनकी हटीली वो नार।
निकल राजके गमसों आई बहार।।
सुना मार सिर पीट के हाय-वाय।
चँदर में पिरो हर अँजू जल-हवाय।।
कि "ऐ गुल मुजे आग तुज बिन है वन।
कि घर तुज सजन बिन दिसे ज्यों सजन।।
जगत्तर में तुजसों मेरा नाम है।
कि तुज सूर बिन दिन मेरा शाम है।।
तुसों खाय हस्रत मेरे लालाज़ार।
वगर तुज है मुँज सेज में फूल ख़ार।।
ए तुजसों मेरे हौज़ में नीर है।
तेरे बाज नित ख़ाक मुँज सीर है।।
ए तुजसो मेरा हासिल हर मुद्दआ।
अगिन तुज बिना मुझको बादे सबा।।
तुसों बख्त है ज़ेर मुज ज़ोर में।
है तुज बाज आराम मुज गोर में।।
ए तुज-शमाते बज़्म अनवार है।
बग़ैर तुज मेरे दिलमने नार है।।
ए तुजसो है मुँजकूँ राज़ होर नियाज़।
न तुज बिन बग़ैर सोज़ दिसताई है साज़।।"

× × ×

लिख्या दिल के लहू से यो नामा तुजे ।
जो तुज बिन दिस्या दिन क़यामत मुजे ।।
तेरी जुल्फे मुश्की की सौगन्ध है ।
खबेखब मे जिस जिवका एक बंद है ।।
कि जबते अँख्या लहू भर्यॉ न सबूर ।
रह्या है तेरे मुख के फुलवन सो दूर ।।
तधाते डुब्या लहु मे लाले नमन ।
जो अज़बस सुटी लहु की अँजुआ नमन ।।
लग्या इस रविश वहने लहुका नई ।
कि ग़ैरत ले जाता है इस पर कही ।।
पवन शाहिद है होर सितारे गवाह ।
कि मुँज दिल की तंगी पे कर यह निगाह ।।

× × ×

अवल सब जल्यॉ जा के पद्मिनके थिर ।
अदब सो रख्या उसके पावॉ पो सिर ।।
जोबनके मेहर सो थी मनमे उमंग ।
दर्या जोशदिल का जवानी तरंग ।।
क्यो तुजते ऐ शहपरी नेकनाम ।
सिक्या हँस चलन होर सनोबर क़याम ।।
यो दो दिनकी दुनिया मे दुख सब बिसार ।
अनँद करले सुट फिक्र ग़मते बहार ।।
कि कल परसो की आस चुप हवस ।
खुशी जग मे हमना यही दम है बस ।।
किसे क्या खबर है कि यों आसमॉ ।
रच्या क्या है पर्दे मे बाजी निहॉ ।।
हो गमते मुकत कर लेवे कुछ आज ।
सुबाकिन देख्या हैं घरे रुच आज ।।
सुबा सासुरे जायगी नेह जोड़ ।
चले सब सगे होर मॉ-बाप छोड़ ।।
हमे तो पिछे गममे रहन च है ।
बदल गुलके सो खार खाना च है ।।
वह अछु वल चंचल नार सुध ग्रान धर ।
सहेलियो की सुन वो वचन कान धर ।।
नज़ाम्त सो दिल नैनका नीर कर ।
क़दम सर्व का चखपो पानी के वर ।।

सुरजके नमन जलमें डूब शहपरी ।
सदफ त्यों च जल्द मोतियाँ सो भरी ॥

डुब्याँ जलमें कमके सकल हूरज़ाद ।
हुयाँ शाद पायाँ जो अपनी मुराद ॥

डुब उस हौजमें शौक़ सो खेलतियाँ ।
अगिन तनपो पानी टंडा मेलतियाँ ॥

कल्लूलाँ उचा जल यकस यक हो मेल ।
अपस-दिलकी आतिश पो सुट्या थ्याँ तेल ॥

× × ×

तवल बजते थे होर नरसिंग पुरगम ।
दमामे हर कथन बजते थे धम-धम ॥
धतर होवे तलक दोवेर के रनसूर ।
उबलते थे ग़ज़ब सो ज्यों कि समदूर ॥
अथे यो मुन्तज़िर जो होन घत्तर ।
निकाले म्यान सो कीने का खंजर ॥
खड़ग ले हाथ म्याने एक बारा ।
करें जौहर अपसका आशिकारा ॥
बड़े हर हाल वो आख़िर हुई रैन ।
छिप्या कोने में जा आराम होर चैन ॥
दिखाया सूर अपस खंजर का झलकाट ।
सितारयों का सकल लश्कर गया न्हाट ॥
हुये दोवेर सेती मुस्तैद दो दल ।
दिसे ज्यों भुई पोपहाड़ होर धन पो बादल ॥
दिलेराँ ने सफ़ाँ आरास्ता कर ।
दिये थे मरदुमी की दाद यकसर ॥
पड़े हरतन उपर वाराँ सेती गार ।
बदल पानीके निकल्या ल्यौका अंगार ॥
लगा छातीसो छाती होके गल जोड़ ।
सुटे सिर होर सीना हाथ पग तोड़ ॥
करे गुरज़ाँ के ऐसे धात सो मार ।
पड़े थे धरति कूँ पाताल लगगार ॥
ज़िरहपोशाँ पड़े हो रनमें पामाल ।
पड़े ज्यों मीन भुईं उपराल बेहाल ॥

करया यों फोड़ हरयक हाथ का तीर ।
कि चूम्या हात हर एकस का रहगीर ॥
धनुख जब खींचता हर यक कमाँदार ।
चला कहता ज़ेहा-ज़ेह उसकुँ सौ बार ॥
दिसे यों पाखराँ सों हस्तिका दल ।
कि जैसा नीर भर बादल दिया चल ॥
दिसे ज़खम्याँ का अकस उसमें रकतसों ।
दिखाया ज्यों शफक बादलमने मूँ ॥
लड़े दिलसोज़ गिर-पड़ होके इस धात ।
दिवान्याँ कूँ हुआ जैसा कि सनपात ॥

ज़ईफ़ी

गरज़ उस ज़माने मने शाह के ।
मसायल किया दीन के राह के ॥
जो तारीख हिज्रत हजार एक सौ (११००) ।
हिदायत हिन्दी हुआ यों तो बीच ॥
इग्यारा सो उसमें भरे थे तमाम ।
इसी बीच तम्मत का देख्या मुक़ाम ॥
सदी बारवीं का लग्या था बरस ।
इसी बीच बाजा यो दखिनी जरस ॥
बलेकिन शाहंशाह दह्र में ।
मुबारक ओ जुल्हज्जके शह्र में ॥
अथी सात तारीख दिन मुश्तरी ।
यों नुस्ख़ा मुरत्तब हुआ खुश्तरी ॥

× × ×

मसायल यो फ़िक़हाँ के असनाद सों ।
निकाले किया किया पढ़के उस्ताद सों ॥
कि अकसर ज़बाँ हिन्द की इस तरफ़ ।
लगे खुश जो पढ़ते हैं दखिनी हरफ़ ॥
इसी वास्ते हदिया यो हिंद कूँ ।
जो ल्याया दखिन साज़के सन्द सों ॥
हिदायत-हिन्दी फिकर इसका नाँव ।
रख्या होर ल्याया हुँ हिंदियाँ के ठाँव ॥

कि हिन्दी केरे है हिदायत में पो ।
... ... ॥
शिफाआत रवैयत का जो काज है ।
ज़ईफ़ी इसीका च मुहताज है ॥
यही इहतियाज अपने दिलमें पकड़ ।
पिरोया हुँ मैं इस रिसाले की लड़ ॥
लकब उस हुआ शेख दाऊद नाँव ।
ज़ईफ़ी है उसके तखल्लुस का ठाँव ॥
अरबी में होर फ़ारसी मे ।
केतेका मसायल ज़रूर लिख्या देख-देख ॥
अरब होर अज़म का सखुन पाइया ।
सो दखिन्या कुँ दखिनी सो समझाइया ॥

× × ×

हिदायते-हिन्दी का यो सब कलाम ।
बयाँवार बोलूँ अँगे भी तमाम ॥
हजार तीन पर ही जदह (३०१८) हिदी बैत ।
कि इल्मे-सलूक होर शरीअत-समेत ॥
मुरत्तब करे जब यो नुस्खा तमाम ।
दुआ मंथिये शेख दाउद नाम ॥
छसो के ऊपर बीस बतियाँ नवी ।
जो मकसूद कै कैं न था सो हुई ॥

× × ×

अथा सुन कहूँ नकल उस नारका ।
जो साबेत-कदम नार अवतार का ॥
सुन्या हूँ नबी (के) ज़मानेमें एक ।
अथा जो मुसल्माँ कोई मर्द नेक ॥
नबा आ नबीके सो इस्लाम में ।
अथा नेक नेकी केरे काम में ॥
सो बस्ताँ सों होय देख यारी उसे ।
मिली एक अजब नेक नारी उसे ॥
निछल पाक-पैकर परी-सारखी ।
परी बल्कि अच्छी न उस सारखी ॥

मुहम्मद अमीन

देखी सूरत अज़ीजे-मिस्र की जब ।
पड़ी धरती उपर पिछड़ाय कर तब ।।
कि वावेला कि वावेला कर दाई ।
बखत रबने मेरे औंधे लिखाई ।।
वे तो कुछ और था एतो है कुछ और ।
एतो दुश्मन रहे उस दोस्तके ठोर ।।
हमें वे कब मिले गम मुझ नयन दरस ।
अरे है-हात और अफसोस अफसोस ।।
हमें क्योकर मिलेगा मुजमो बे शाह ।
हज़ार अफसोस और सद आह सद आह ।।
गया वह गज और यह रह गया सॉप ।
(कि) सूरत देख चढ़ी मुँज धोज और कॉप ।।
ज़ुलेखा की हक़ीक़त अब सुनावे ।
ज़ुलेखा फिरके युसुफ कौन पावे ।।
ज़ुलेखा बेखबर फिरती रती थी ।
इशक का घाव वो ऊपर सती थी ।।
कधूँ घरमे कधूँ जंगलमे जाती ।
वे मेहनत के दिनों को यो गॅवाती ।।
गई थी एक दिन जंगल के भीतर ।
चली थी उस जगे सो आपने घर ।।
अया जब राह युसुफ का बाज़ार ।
ज़ुलेखा ने सुन्या तब शोर बसियार ।।
लगी पूछन कि "ए क्या शोर है रे ।
कहाँ मुझ क्या ऐ दौरा दौर है रे" ।।
ज़ुलेखा ने सो तब पर्दा उठाकर ।
सूरत युसुफ की नज़रो बीच ल्याकर ।।
पिछाना है वही दिलयार जानी ।
कि जिस कारन हुँ फिरती थी दिवानी ।।
युसुफ (को) देखकर रोई पुकारी ।
पड़ी हो बेखबर कर करके ज़ारी ।।
सवारीकूँ शताबी लेके भागे ।
ज़ुलेखाकूँ ले आये घरके आगे ।।

उतारे घरमने जब हुइ ख़बरदार ।
पूछी तब दाईने उसको गुफ़्तार ।।
"तेरी फिर अक्ल और सुध काँ गई थी ।
ऐसी तूँ बेख़बर क्युँ हो रही थी" ।।
कहा तब "वो गुलाम है यार मेरा ।
उसी ऊपर है दिलका प्यार मेरा" ।।

वज्दी

एक आशिक़ था दिवाना बेख़बर ।
सो रह्या था नींद में यम गौर पर ।।
अज़ क़ज़ा मालूक निकल्या एक वहाँ ।
नींद में आशिक़ कुँ देख्या नागहाँ ।।
पस (वह खत) यक लिखको उसके बंद सो ।
बाँधकर जाता रह्या आनंद सो ।।
आशिक़ उठकर ओ चिठी देख्या जो खोल ।
यार के खत सों दिसे उसमें यो बोल ।।
"ए दिवाने इस वज़ा सोता है क्या ।
उठ जो सौदागर है तुर्दूगाँ पै जो ।।
होर अगर ज़ाहिद है तो वेदार रह ।
बंदगी में सब अपस हुशियार रह ।।
भी जो आशिक है तो सोता है गज़ब ।
नींद चख में आशिकां के आये कब ।।
मर्द आशिक तो सदा बेदार अछै ।
दिनकुँ हैराँ रातकूँ हुशियार अछै ।।
इश्क़ में सोना तुजे सर सहल है ।
आशिक़ी के कस्ब में ना अहल है" ।।

× × ×

चंचलका आज बिछुड़ा मुज उपर भारी हुआ याराँ ।
तो मैं इस दो जगतसेती निराधारी हुआ याराँ ।।
हमारी बुत-परस्ती कूँ नहीं समझे अभूँ ज़ाहिद ।
बराये-कुफ्र सत दीं कू तू पुजारी हुआ याराँ ।।

नको कह वज्दिया अपन्याँ निपट शब-वस्ल-क्याँ वाताँ।
कते हैं लोग सब तुजकूँ कि जुन्नारी हुआ याराँ ॥

× × ×

गई है उम्र सब मेरी सदा सूरत-परस्ती में।
सुट्या है हुस्न का मद मुज सो हुशियारी ते मस्ती में।
निकल जा वज्दिया शेखीके शेख्याँ के फंज सेती।
अगर मक़सूद-खुद हासिल किया है बुत-परस्ती में ॥

× × ×

एक दिन सब जगके पंछी जानपर।
मिलके भइ जमा हो यक ठार पर ॥
शौक सों दिलको लगे मुर्गोलने।
यक-यकसते राज दिलका खोलने ॥
नागहाँ बाताँ में निकली बात यो।
जे पँख्याँ में बादशा कोई न क्यों ॥
है हरेक फिर्के में हर यक बादशाह।
नहिं हमनकूँ बादशाह सो क्या गुनाह ॥
इस वज़ा पंछी लगे करने विचार।
बोल उट्ठा उसमें हुदहुद नामदार ॥
"ऐ अज़ीजाँ बात यो करते थे क्या।
दिलमें चुप विसवास यो धरते थे क्या ॥
के पड़े हैं इस वज़ा ग़फ़लत मने।
कुफ्र है यो मुल्क होर मिल्लत मने ॥
कुफ्र सों तोबा करो तोबा करो।
बादशा की ज़ातमें शक ना धरो" ॥

× × ×

हिन्दुओं में कोइ राजा था गंभीर।
के हुआ महमूद सुल्ताँका असीर ॥
लेके आये ज्यो उसे महमूद-पास।
दीनसों कीते नबीं के रू-शिनास ॥
जब हुआ इस्लाम सो ओ आशना।
दिल दो आलम सों किया अपने जुदा ॥
एकला जा वैस गोशब के मझार।
रात दिन रोने लग्या जब ज़ार-ज़ार ॥

कुछ न था काम उसकुँ र-अज़ सोज़ो-आह ।
रोज़ उसका रातसो बदतर सियाह ॥
सोज़ो-ज़ारी जब गये हदसों गुज़र ।
हुइ बज़ा महमूद सुल्ताँ कूँ ख़बर ॥
बस बुला राजाकुँ शाहे-नामदार ।
मेह्रबानीसों कया तूँ क्यो है ज़ार ॥
मैं तुजे देऊँगा एता कुछ मुल्को-माल ।
जे तुँ यक सायत में हो जाये निहाल ॥
ऊन को इस धात ऐ राजा गँभीर ।
दुखमने अपना नको गालो सरीर" ॥
बस लग्या कहने कुँ राजा शाह सों ।
"मैं रोता नै जो मुल्को-माल सों ॥
सोज़ो-ज़ारी है मुजे इसके सबब ।
जे क़यामत मैं करेगा यों च रब ॥
ऐ मेरे बदअहद बंदे बे-बफ़ा ।
किस बजा कीता है तूँ ऐसा जफ़ा ॥
नैं किया तूँ याद मेरा तो' लगूँ ।
तुझमने सुल्तान आया जो लगूँ ॥
जब किया लश्करकशी तेरे पे ओ ।
आसरा मेरा लिया ऐ ज़िश्त-खूँ ॥
नैं किया तूँ याद लश्कर में मुँजे ।
दोस्त समझूँ या कि दुश्मन कर तुझे ॥
गर लगूँ तुजसो जफ़ा मुजसों वफ़ा ।
यों वफ़ादारीमने है क्यों रवा ॥
शर्मसारी है मुजे इस बातकी ।
सोज़ दिनका होर ज़ारी रातकी" ॥

वली दकनी

यह विरह की तार क्यों के जावे । चलने की पुकार क्यों के जावे ।
जाँदार की पार क्यों के जावे । दिले यार को छौ क्यों के जावे ।
ज़ख़्मी है शिकार क्यों के जावे ।
भरता हुँ जहाँ वो जग सों हज़ार । इस बंद में आ हुआ हुँ लाचार ।
क्योंकर हो विरह में मस्त हुशियार । जब लग न मिले शराबे दीदार ।
अँखियाँ का खुमार क्यों के जावे ।

जब इश्क़ फ़ौज ने आइ घेरा। हैराँ हुआ हवास मेरा।
उस दिन सों हुआ हुँ तेरा चेरा। यक साँ है हमेशा हुस्न तेरा।
जन्नत सों बहार क्यों के जावे।

यह दिल ते देखने को रोवै। हर शामो-सुबह में तिल न सोवै।
यह उम्र अज़ीज ग़म में खोवै। आँखों की अगर मदद न होवै।
मुझ दिल का गुबार क्यों के जावे।

आशिक़ की यही है जग में बाना। माशूक़ के नाँव पर बिकाना।
नै काम हरेक का इसमें आना। मुमकिन नहीं अब वली का आना।
है आशिक़े ज़ार क्यों के जावे।

× × ×

लागी है लगन तुमसों छुड़ा कौन सकेगा। है किसमें यह कुदरत ॥
अजब मुजकुं वतन अपने ले जा कौन सकेगा। कर दिलसों रफ़ाक़त ॥
है नक़श किनारी का तेरे जामेके ऊपर। ऐ हिन्द के बाँके ॥
दामन कुँ तेरे हाथ लगा कौन सकेगा। नै ज़ोर नै ताक़त ॥
हूँ ख़ाक तुम्हारी ही गली का ऐ सिरीजन। नै काम क़फ़न सो ॥
अब मुझकूँ जनाज़े में उठा कौन सकेगा। यों गर है हक़ीक़त ॥
मत मारो वली कूँ मैं यह कहता हूँ कहाकर। सुन बात हमारी ॥
इस हिज्र के तूमार कूँ पा कौन सकेगा। बिन ग़म्ज़ा-ज़राफत ॥

× × ×

मत गुस्सेके शोले सों जलतेकुँ जलाती जा।
टुक मेह के पानी सों यह आग बुझाती जा ॥
तुज चाल की कीमतसों नैं दिल है मेरा वाक़िफ़।
ऐ नाज़-भरी चंचल टुक भाव बताती जा ॥
इस रैन अँधेरी में मत भूल परो निस सों।
टुक पाँवके बिछुओंकी आवाज़ सुनाती जा ॥
मुज दिलके कबूतर कुं फकड़ा है तेरी लट ने।
यह काम धरम का है टुक इसकूँ छुड़ाती जा ॥
तुज मुखकी परस्तिश में गइ उम्र मेरी सारी।
ऐ बुतकी वचन हारी इस बुतकुँ बचाती जा ॥
तुज इश्क़में दिल चलकर जोगी की लिया सूरत।
यकबार अरे मोहन छाती सों लगाती जा ॥
तुज घरकी तरफ़ सुंदर आता है वली दायम्।
मुश्ताक़ है दर्शन का टुक दरस दिखाती जा ॥

वली वेल्लोरी

वलेकिन शाहका वो दबदबा देख ।
सलाबत होर आली मर्तबा देख ।।
क़दम शोख़ी सों आगे ना रखे कोई ।
न अँखियाँ खोलकर मुखपर देखे कोई ।।
सो हो नाचार तब सब नाबकाराँ ।
लगे करने कुँ शहपर तीरबाराँ ।।
तुरंग उपर सों उतरे शाह शब्बीर ।
कि ना तेजी कुँ नाहक ना लगे तीर ।।
ओ था जद्दो-पिद्दर की यादगारी ।
कलर के कै करूँ चुप उसकी ख़्वारी ।।
देखे जब काफिराँ ने शाहज़ादा ।
तुरँगकुँ सुट हुआ है यक पियादा ।।
दिलावर हो लगे भाने कुँ तीराँ ।
लगे शह चुप खड़े खानेकुँ तीराँ ।।
पेशानी पर लग्या यक तीर कारी ।
उखाड़े सो हुआ लहु वाँसे जारी ।।
भरा वैं लहूकने उस हात सर्वर ।
मलैं उस लहुकुँ ले मुख सात सर्वर ।।
रकतमें चेहरेये - पुरनूर पेशानी ।
हुआ था ज्यों शफ़क़ में सूरपानी ।।
कहते थे यों च में उस लाल मुख सात ।
करूँगा ज़द सों अपने जा मुलाक़ात ।।

× × ×

चरिंदे सब जँगल के हो दुखारे ।
खड़े रोते थे चरना छोड़ सारे ।।
पहाड़ाँ शोरसों फोड़े थे सीना ।
खड़े थे सिरसों कर पग-लग पसीना ।।
दर्याँ में के घराँ सब छोड़ अपने ।
लगे खुश्की पो आ मछल्याँ (सो) तपने ।।
किसी पर शाह की था प्यास का ग़म ।
किसी पर शहके था मरने का मातम ।।

शोला लगा है दिलमने इस ग़मका क्या करूँ ।
मुजकूँ रवा हुआ है अगर ज़हर खा मरूँ ॥
दूरी में हाय तेरी मैं दिन रैन क्यों भरूँ ।
फ़ुर्कत की आगसेती जलेगा बदन मेरा" ॥
क़ासिम खड़ा था रोते नैन सों दुल्हन के सात ।
ग़मनाक अपना देखके दामन दुल्हनके हात ॥
तब आहे-दर्दनाक सों बोला दुल्हनके सात ।
"हूँ बोस्ताने - राहत वो सर्वे - चमन मेरा ॥
मुजकूँ नहीं है तेरी जुदाई का इख्तियार ।
तेरे फ़िराक़ सात में जाता हुँ अश्कबार ॥
मैं क्या करूँ सलाह नहीं हुक्म - कर्दगार ।
हक़ने किया है रनमें मुक़र्रर रहन मेरा ॥
है दाग़ दिलमें तेरी जुदाई का क्या करूँ ।
नै है उमेद रनसे फिर आकर तुझे मिलूँ ॥
जो कुछ हुआ है मुकद्रों मैं रास्ती कहूँ ।
वादा हुआ है हश्र में तुमसे मिलन मेरा" ॥

× × ×

बाले असगर केतैं बुलाती रही । सुना यह पालना झुलाती रही ॥
झूला तेरा पड़ा रहा ख़ाली । डोरी मूज हाथमें हिलाती रही ॥
हाय क्यों रूठकर गया मुजसो । मेरे प्यारे के तैं मनाती रही ॥
भूल क्यों तूँ चला मया मेरी । 'आ रे असग़र' तुजे बुलाती रही ॥
मैं सुलाती थी जब लगा छाती । आँचल अपना तुजे उढ़ाती रही ॥
रात-दिन मैं कभूँ न दी रोने । करके बातों तुजे हँसाती रही ॥
था बरसगाँठ का तुजे अरमान । लाल जामाँ तेरा सिलाती रही ॥
क़ासिम आया है जब मियाने कूँ । मैं तमाशा तुझे दिखाती रही ॥
ल्हो मरा क्यों तेरा चँदरमुख है । जिसकूँ हाथों से मैं बुलाती रही ॥
दूध पीता मेरा गया बाले । ग़मसों छाती मेरी भर आती रही ॥
तुजकूँ भाती न थी अँधारी रात । तेरी ख़ातिर दिवा जलाती रही ॥
करके तावीज़ दिल ऊपर रखती । बदनज़र से तुजे छिपाती रही ॥
क्यों न आख़िर हुई उमर मेरी । तुज बिना हैफ़ मुज हयाती रही ॥
आज पुरखूँ क़फ़न तेरा असग़र । आज सूखा दहन तेरा असग़र ॥
लाल है गुलबदन तेरा असग़र । हैफ़ यों बालापन तेरा असग़र ॥
क्यों है जुल्फ़ा के बाल तारों-तार । क्यों गले से लोहू के जारी धार ॥

× × ×

बानू पे कर्बलामें कैसा यह दुख पड़ा है ।
गोदों मैं प्यारा असग़र बिन दूद मर चला है ॥
होर राँड़ बैठी बेटी दामाद मर चुका है ।
सिरका चतर भी ढलना कोइ दमको आ रहा है ॥
समझाना उस बच्ची का इस वक्त क्या मुसीबत ।
बाबा बिना तड़पता और तश्नगी की शद्दत ॥
"ऐ बेटी तेरे बाबा खाने गये जियाफ़त" ।
मासूम का यह सुनकर दहचंद जी जला है ॥
कहने लगी कि "अम्मा, है-है यह क्या ग़ज़ब है ।
मरती हुँ भूख सेती प्यासोंसे जाँबलब है ॥
ज्याफ़त में गये बाबा मुज बिन सो क्या सबब है ।
बाबा ने मुज पे शायद शफ़क़त कुँ कम किये है ॥
मुजसे कभू न करते बाबा मेरी जुदाई ।
असग़र कुँ ले गये हैं मुझसे मया उठाई ॥
बावर न हाइ जो तुमकूँ बतलाउँ काँ है भाई ।
असग़र का पालना भी ख़ाली देखा पड़ा है" ॥
रो-रो हरम मियाँ से उस तिफ़्ल कूँ मनाते ।
हर यकले भरके उसकूँ छाती सेनीं लगाते ॥
कहते थे "तेरे बाबा अब कोइ घड़ी में आते ।
वल्लाह साथ शहके असग़र नहीं गया है ॥
समजा कते है हारे पन करते नैं वह बावर ।
कहते "जो ले गये नैं दिस्ता नहीं क्यों असग़र ॥
लाचार हो कहे तब अहले-हरम नें यकरार ।
असग़र की लाश लाकर उसको दिखा दिया है ॥
माई को देख रोते दौड़े हैं भरमें लेने ।
हर रोज़ की तरह से लागे हैं बोसा देने ॥
कहते "क्यों आज भाई, नैं उठता दूद पीने ।
क्यों उसके पैरहन कूँ ताजा लहु लगा है" ॥
यह मर्सिया लिखा जब ऐ दो जहाँ के मौला ।
सीने सेती धड़ककर ग़मका उठा है शोला ॥
सब जाकिराँ में कमतर है क़स्तादिल ग़ुलामी ।
दो दाद जल्द हरचंद है आशियाँ में नामी ॥

× × ×

फिर घटा हुइ ग़मके बादल की गगन पर आशकार ।
कर्बला में मेघ बरसे लोहु के धारा बेशुमार ।।
तेग़ चमके सिर उपर विजली के मानिन बारबार ।
क्या समाँ है-हपड़ा सारा जहाँ म्याने अधार ।।
नाराहा कड़के गरजकर आज नगमे-सूर है ।
चौतरफ़ घनघोर है लहुकी बरसती है फुहार ।।
नैं निकलता है सुरज सोये नहीं सुखके भवन ।
खून दिलसों जहाँ तलक देखे टपकते है नयन ।।
तर हुये हैं अश्कबारी सो लर्जते है बदन ।
आह का हर दम हुआ हैगा दिलो सेती पुकार ।।

× × ×

ले गये, आज किधर ताजे-शहीदाँ कहाँ ।
रनमें तन सो जुदा कर सरे सुल्ताँ कहाँ ।।
काँ किये जुल्फे-मुअंबर कुँ परेशान कहाँ ।
नेजा-ऊपर किवा ज़ालिमने नुमायाँ कहाँ ।।
जों शफ़क़ बीच हवेदा देखो खुर्शीद मुदाम् ।
लहूभरा नेजा-उपर था सरेपुरनूरे-इमाम् ।।

उसमान

सरवर ढूँढि सबै पचि रहीं । चित्रित खोज न पावा कहीं ।।
निकसीं तीर भईं बैरागी । धरे ध्यान मुख विनवै लागीं ।।
गुपुत तोहि पावहि का जानी । परगट महँ जो रहै छपानी ।।
चतुरानन पढ़ि चारौ बेदू । रहा खोजि पै पाव न भेदू ।।
हम अधा जेहि आप न सूझा । भेद तुम्हार कहाँ लौ बूझा ।।
कौन सो ठाउँ जहाँ तुम नाहीं । हम चख जोति न, देखहिं कहीं ।।
पावै खोज तुम्हार सो, जेहि दिखरावहु पंथ ।
कहा होइ जोगी भए, और बहु पढ़े ग्रंथ ।।

× × ×

रितु बसंत नौतन बन फूला । जहँ तहँ भौर कुसुम-रंग भूला ।।
आहि कहाँ सो भवर हमारा । जेहि विनु बसत बसंत उजारा ।।
रात बरन पुनि देखि न आई । मानहुँ दवा दहुँ दिसि लाई ।।
रतिपति-तुरद रितुपती बली । कानन-देह आइ दलमली ।।

× × ×

मान करहु जो करि सकहु, कथनी अकथ अपार।
कथै न करि कछु आवई, करनी करतब सार।।

कौन भरोसा देह का, छाड़हु जतन उपाइ।
कागज की जस पूतरी, पानि परे घुल जाइ।।

तब लहु सहिए बिरह दुख, जब लगि आव सो वार।
दुःख गये तब सुक्ख है, जानै सब संसार।।

सब कहँ अमिरित पाँच है, बंगाली कहँ सात।
केला, काजी, पान, रस, साग, माछरी, भात।।

कहाँ सो विक्रम एक बँधी, कहाँ सो राजा भोज।
हम हम करत हे राइगे, मिला न खोजे खोज।।

× × ×

जिन पच्छूँ दिस कीन्ह पयाना, पहिलहि गा सो देस मुलताना।
देखिसि सिंधि लोग सबाई, अहिरावन सब सेवहि साई।
हेरेसि ठट्ठा नगर सोहावा, विहँगा हरिन सेवै गंजावा।
काबुल हेरि मोगल करि देसा, जहाँ पुहुमि पति होइ नरेसा।
देखेसि रूम सिकन्दर केरा, स्याम रहा होइ सकल अंधेरा।
देखेसि मक्का विधि अस्थाना, होय अंध ते पाहन जाना।
हाजी सँग मिलि गयेउ मदीना, का भा गये जो साफ न सीना।
गा बगदाग पीर के तोरा, जेहि निहचै तेहि सँग हमीरा।
इस्ताम्बोल मिसर पुनि हेरा, गा लद्दाख लहु कीन्हेसि फेरा।
दखिन देस को जे पगु धारा, चला ताकि सो लंक पहारा।
पहिलेहि गै हेरेसि गुजराता, सुन्दर धनी लोग सुखराता।
गयो जाम जहँ कच्छी होई, लागे सुरूप सखी सब कोई।
बलंदीप देखा अंगरेजा, जहाँ जाइ नहि कठिन करेजा।
ऊँच नीच धन संपति हेरा, मद बराह भोजन जिन केरा।
जहाँ जाइ उहँ बन्दर साजा, लगा संग चढ़ि गयो जहाजा।

× × ×

गाजीपुर उत्तम अस्थाना, देवस्थान आदि जग जाना।
गंगा मिलि जमुना तहँ, बीच मिली गोमती सुसाई।
तिरधारा उत्तमतट चीन्हा, द्वापर तहँ देवतन तप कीन्हा।

बलभद्र मिश्र

पाटल नयन कोकनद के से दल दोऊ,
बलभद्र बासर उनीदी लखी बाल मैं।
शोभा के सरोवर में बाड़व की आभा कैधौं,
देव धुनि भारती मिली है पुन्य काल मैं।
काम के बरत कैधो नासिका उडुप बैठ्यो,
खेलत सिकार तरुनी के मुख ताल मैं।
लोचन सितासित मै लोहित लकीर मानो,
बाँधे जुग मीन लाल रेसम के जाल मै॥

× × ×

मरकत सूत कैधो पन्नग के पूत अति,
राज अभूत तमराज कैसे तार हैं।
मखतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम,
काम मृग कानन कै कोहू के कुमार हैं।
कोप की भीरनि कै जलज नल नील तंत,
उपमा अनंत चारु चँवर शृंगार हैं।
कारे सटकारे भीजे सोधे सो सुगन्ध बास,
ऐसे बलभद्र नवबाला मेरे बार हैं॥

ध्रुवदास

हँसनि में फूलनि की, चाहनि में अमृत की,
नखसिख रूप ही की बरषा-सी होति है।
केसनि की चंद्रिका, सुहाग-अनुराग-घटा,
दामिनी की लसनि, दसन ही की द्योति है।
'हित ध्रुव' पानिप तरंग रस छलकत,
ताकौ मनो सहज सिंगार-सींव तोति है।
अति अलबेली प्रिया भूषिता भारन बिन,
छिन-छिन औरै-और बदन की जोति है॥

× × ×

छवि ठाढ़ी कर जोरै, गुन-कला चौरै ढोरै,
दुति सेवै तन गोरे, रति बलि जाति है।

उजराई कुञ्ज ऐन, सुथराई रची मैन,
चतुराई चितै नैन अति ही लजाति है।
राग सुनि रागिनी हूँ, होति अनुराग-बस,
मृदुताई अंगनि छुवति सकुचाति है।
'हितध्रुव' सुकुमारी, पुरीनन हूँ तें प्यारी,
जीवति देखे बिहारी सुख सरसाति है॥

× × ×

आजु की छबीली छबि-छटा चित बेधि रही,
कही नहिं जाति कछू कौन गति भई है।
नवल जुगुल हँसि चितवति ठाढ़ी पासि,
मानो तिहि उर नई नेह-बेलि बई है।
'हित ध्रुव' नीरज-से नीर-भरे ढरे नैन,
बोलति न कछु बैन चित्र-सी ह्वै गई है।
नैन छाइ लीने रूप परी तब प्रेम कूप,
वाकी गत जानै सोई जिहि अनभई है॥

× × ×

रूपजल उठत तरंग है कटाछन के,
अंग अंग भौरन की अति गहराई है।
नैनन को प्रतिबिंब पर्यो है कपोलनि में,
तेई भए मीन तहाँ, ऐसी उर आई है।
अरुन कमल मुसुकान मानो फबि रही,
थिरकनि बेसरि के मोती की सुहाई है।
भयो है मुदित सखी लाल को मराल मन,
जीवन जुगल ध्रुव एक ठाँव पाई है॥

× × ×

बहु बीती थोरी रही, सोऊ बीती जाय।
हित ध्रुव बेगि विचारि कै, बसि वृन्दावन आय॥
बसि वृन्दावन आय त्यागि, लाजहि अभिमानहि।
प्रेमलीन ह्वै दीन आपको तृन सम जानहि॥
सकल सार कौ सार, भजन तू करि रसि रीती।
रे मन सोज विचार, रही थोरी, बहु बीती॥

× × ×

ऐसी करी नवलाल रँगीले जू चित्त न और कहूँ ललचाई।
जे सुख-दुख रहै लगि सों ते मिटि जाहिंऽरु लोग बड़ाई।
संगति साधु, वृन्दावन कानन तो गुन गाननि माँझ बिहाई।
कुंज-पगो में तिहारे बसौं बस देहु यहे 'ध्रुव' को ध्रुवताई॥

× × ×

महाप्रेम गति सब तै न्यारी। पिय जानै, कै प्रान-पियारी॥
उरझे मन उरझत नहिं केहू। जिहि अंग ढरत होत सुख तेहू॥
एकै रुचि दुहुँ में सखि बाढ़ी। परि गई प्रेम-ग्रंथि अति गाढ़ी॥
देखत-देखत कल नहिं माई। तिनकौ प्रेम कह्यौ नहि जाई॥
सहस सुभाइ अनमनी देखैं। निमिषनि कोटि कलप सम लेखैं॥
हँसि चितवति जब प्रीतम माहीं। सोई कलप निमिष ह्वै जाहीं॥
खेलनि-हँसनि लाल कौं भावै। नेह की देवी नितहिं मनावै॥
कौतुक प्रेम छिनहि-छिनि होई। यह रस विरलो समुझै कोई॥
ज्यों-ज्यों रूपहिं देखत माई। प्रेम-तृषा की ताप न जाई॥

× × ×

खान प.न सुख चाहत अपने। तिनकों प्रेम छुवत नहिं सपने॥
जो या प्रेम-हिंडोरै भूलै। तिनकों और सबै सुख भूलै॥
प्रेम-रसासव चाख्यौ जबहीं। औरै रंग चढ़ै 'ध्रुव' तबहीं॥
या रस में जब मन परै आई। मीन नीर की गति ह्वै जाई॥
निसि दिन ताहि न कछू सुहाई। प्रीतम के रस रहै समाई॥
जाकी जासों है मन मान्यौ। सो है ताके हाथ बिकान्यौ॥
अरू ताके अंग-सँग की बातें। प्यारी सब लागति तिहि नातें॥
रुचै सोइ जो ताकीं भावै। ऐसी नेह की रीति कहावै॥

× × ×

रकल ब.यस सतकर्म में, जो पै बितई होइ।
भक्तन के अपराध इन, डारत सब को खोइ॥
अ्रोर सकल अघ-मुचन को, नाम उपायहि नीक।
भक्त-द्रोह कों जतन नहिं, होत बज्र की लीक॥
निंदा भक्तिन की करै, सुनत जौन अघरासि।
वे तो एकै संग दोउ, बँधत भानु सुत पासि॥
भूलिहुँ मन दीजै नहीं, भक्तन निंदा ओर।
होत अधिक अपराध तिहिं, मति जानहु उर थोर॥

सेवा करतहिं भक्तजन, होइ प्राप्त जो आइ ।
सो सेवा तजि बेगिही, अरजहु तिनको जाइ ॥
भक्तन देखे अधिक ह्वै, आदर कीजै प्रीति ।
यह गति जो मन की करै, जाइ सकल जग प्रीति ॥
मन अभिमान न कीजिए, भक्तन सो होइ भूलि ।
स्वपच आदि हू होई जो, मिलिए तिनसो फूलि ॥

× × ×

जीव दसा कछु इक सुनु भाई । हर-जस अमरत तजि, विष खाई ।
छिनभंगुर यह देह व जानी । उलटी समुझि अमर ही मानी ।
घर-घरनी के रंग यों राच्यौ । छिन-छिन में नट कपि ज्यों नाच्यौ ।
वय गई बीति, जाति नहिं जानी । निमि सावन-सरिता के पानी ।
माया सुख में यों लपटान्यौ । विषय-स्वादु ही सरबसु जान्यौ ।
आलस मय जब आनि तुलानो । तन मन की सुधि तबै भुलानो ।

× × ×

बर किसोर दोउ लाडिले, नवल प्रिया नव पीय ।
प्रगट देखियत जगत में, रसिक व्यास के हीय ॥
कहनी करनी करि गयो, एक व्यास इहि काल ।
लोक-बेद तजिकै भजे, राधा बल्लभलाल ॥
प्रेम-मगन नहिं गन्यौ कछु, बरना बरन बिचार ।
सबनि मध्य पायौ प्रगट, लै प्रसाद रस-सार ॥

सुन्दरदास

सुनत नगारे चोट बिगसै कमल मुख,
अधिक उछाह फूल्यो मात है न तन मे ।
फेरै जब साँग तब कोऊ नही धीर धरै,
कायर कम्पाय मान होत देखि मन में ।
कूदि कै पतंग जैसे परत पावक माँहि,
ऐसे टूट परै बहु सावन के गन में ।
मारि घमसान करि सुन्दर जुहारै श्याम,
सोई सूर वीर रूपि रहै जाय रन में ॥

× × ×

ब्रह्म ते पुरुष अरु प्रकृति प्रगट भई,
प्रकृति ते महतत्व, पुनि अहंकार है।
अहंकार हू ते तीन गुण सत रज तम,
तम हू ते महाभूत . विषय प्रसार है।
रज हू ते इन्द्री रस प्रथक प्रथक भई,
सत्त हू ते मन आदि देवता विचार है।
ऐसे अनुक्रम करि शिष्य सूँ कहत गुरु,
सुन्दर सकल यह मिथ्या भ्रमजार है॥

× × ×

गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि सेह लगाइ कै देह संवारी।
मेह सहे सिर, सीत सहे तन, धूप समै जो पँचागिन बारी।
भूख सही रहि रूख तरे, पर सुन्दर दास सबै दुख भारी।
डासन छाँड़िकै कासन ऊपर, आसन मार्यो, पै आसन मारी॥

× × ×

बोलिये तौ तब जब बोलिबे की बुद्धि होय,
ना तौ मुख मौन गहि चुप्प होय रहिए।
जोरिए तौ तब जब जोरिबे की रीत जानै,
तुक छन्द अरथ अनूप जामे लहिए।
गाइए तब जब गाइबे को कण्ठ होय,
श्रवण के सुनत ही मनै जाइ गहिए।
तुक भंग छन्द भंग अरथ मिलै न कछू,
सुन्दर कहत ऐसी बानी नहीं कहिए॥

× × ×

पति ही सूँ प्रेम होय, पति ही सूँ नेम होय,
पति ही सूँ छेम होय, पति ही सूँ रत है।
पति ही है यज्ञ जोग पति ही है रस भोग,
पति हीं सूँ मिटै सोग पति ही को जत है।
पति ही है ज्ञान ध्यान पति ही है पुन्य दान,
पति ही है तीर्थ न्हान पति ही को मत है।
पति बिन पति नाहीं पति बिन गत नाहीं,
सुन्दर सकल विधि एक पतिव्रत है॥

सेनापति

नाहीं नाहीं करैं थोरी माँगे सब देत कहैं,
मंगन कौं देखि पट देत बार बार हैं।
जिनकौ मिलत भली प्रापति की घरी होति,
सदा सब जन मनभाए निराधार हैं।
भोगी ह्वै रहत बिलसत अवनी के मध्य,
कन कन जोरैं दान पाठ परिवार हैं।
सेनापति बचन की रचना बिचारौ जामैं,
दाता अरु सूम दोऊ कीने इकसार हैं॥

× × ×

तीर तैं अधिक वारिधार निराधार महा,
दारुन मकर चैन होत है नदीन कौं।
होति है करक अति बड़ी न सिराति राति,
तिल तिल बाढ़ै पीर पूरी बिरहीन कौं।
सीरक अधिक चारि ओर अवनी रहै न,
पांउरीन बिना क्यों हूँ बनत धनीन कौं।
सेनापति बरनी है बरषा सिसिर रितु,
मूढ़न कौं अगम सुगम परबीन कौं॥

× × ×

देखैं छिति अम्बर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरवर सब ही कौं रूप हर्‌यौ है।
महा झर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सानौं पर्‌यौ है।
दारुन तरनि तरैं नदी सुख पावै सब,
सीरी घन छाँह चारिबोई चित धार्‌यौ है।
देखौ चतुराई सेनापति कबिताई की जु,
ग्रीषम विषम बरषा की सम कर्‌यौ है॥

× × ×

बीरैं खाइ रही तातैं सोहति रकतमुखी,
नाँगी ह्वै नची है संक तजि अरि भीर की।
निरवारै वारन बिसारै पुनि हार हू कौं,
आड़ हू भुलावै नखसिख भरी नीर की।

सेनापति पियन कौ राखै सावधान धार,
आगे ही चलावै घात जानि जो सरीर की।
जापर परति ताहि लाल करि डारै मारि,
खेलत समर फाग तेग रघुबीर की॥

× × ×

तेरे जीकी वसुधा है वाके तौ नव सुधा है,
तू तौ छत्रपति सो नछत्र पति मानिये।
सूर सभा तेरी जोति होति है सहसगुनी,
एक सूर आगे चंद जोति पै न मानिये।
सेनापति सदा बड़ी साहिबी अचल तेरी,
निसि दिन चंद चल जगत बखानिये।
महाराज रामचंद चंद ते सरस तू है,
तेरी समता को चंद कैसे मन आनिये॥

× × ×

तारन की जोति जाहि मिले पै बिमल होति,
जाके पाइ संग मै न दीप सरसत है।
भुवन प्रकास उर जानिये उरध अध,
सोउ तही मध्य जाके जगतै रहत है।
कामना लहत द्विज कौसिक सरब बिधि,
सज्जन भजत महातम हित रत है।
सेनापति बैन मरजाद कबिताई की जू,
हरि रबि अरुन तमी कौ बरनत है॥

× × ×

अँखिया सिराती ताप छाती की बुझाती रोम,
रोम सरसाती तन परस सरस ते।
रावरे अधीन तुम बिन अति दीन हम,
नीर हीन मीन जिमि काहे कौ तरसते।
सेनापति जीवन अधार निराधार तुम,
जहाँ कौ ढरत तहाँ टूटत अरस ते।
उनै उनै गरजि गरजि आए घनस्याम,
है कै बरसाऊ एक बार तौ बरसते॥

× × ×

कालिन्दी की धार निरधार है अधर, गन
अलि के धरत जानिकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खंडि डारे हैं सिखंडि, घन,
इंद्रनील कीरति कराई नाहिं एस है।
एड़िन लगत सेना हिय के हरष कर,
देखत हरत रति कंत के कलेस हैं।
चीकने सघन अँधियारे तैं अधिक कारे,
लसत लछारे, सटकारे तेरे केस है॥

× × ×

आए परभात सकुचात, अलसात गात,
जाउक तिलक लाल भाल पर लेखियै।
सेनापति मानिनी के रहे रति मानि नीके,
ताही ते अधर रेख अंजन की रेखियै।
सुख रस भीने प्रानप्यारी बस कीने पिय,
चिन्ह ये नवीने परतच्छ अच्छ पेखियै।
होत कहा नीदे, एतो रैन के उनीदे अति,
आरसीलै नैना आरसी लै क्यों न देखियै॥

× × ×

बिन ही जिगर हथियार बिन ताके अब,
भूलि मति जाहु सेनापति समझाए हौ।
करि डारी छाती घोर-घाइन सो राती-राती,
मोहि धौ बतावौ कौन भाँति छूटि आए हौ।
पौढ़ो बलि सेज, करौ औषद की रेज बेगि,
मै तुम जियत पुरबीले पुन्य पाये हौ।
कीने कौन हाल ! वह बाघिन है बाल ! ताहि,
कोसति हौ लाल, जिन फारि फारि खाए हौं॥

× × ×

फूलन सौं बाल की बनाइ गुही बेनी लाल,
भाल दीनी बेंदी मृगमद की असित है।
अंग अंग भूषन बनाइ ब्रज-भूषन जू,
बीरी निज कर कै खवाई अति हित है।
ह्वै कै रस बस जब दीबैं कौ महाउर के,
सेनापति स्याम गह्यौ चरन ललित है।

चूमि हाथ नाथ के लगाइ रही आँखिन सौं,
कही प्रानपति यह अति अनुचित है ॥

× × ×

सहज बिलास हास हिय के हुलास तजि,
दुख के निवास प्रेमपास परियत है।
भूलि जात धाम सोच बाढ़त है आठौ जाम,
बिना काम तरसि तरसि मरियत है।
मिलन न पैयै बिन मिले अकुलैयै अति,
सेनापति ऐसे कैसे दिन भरियत है।
कहा कहौं तोसौं मन, बात सुनि मो सौं,
जाकौं देखिबो कठिन तासो नेह करियत है ॥

× × ×

लाल लाल टेसू फूलि रहे हैं बिसाल संग,
स्याम रंग भेंटि मानौं मसि मैं मिलाए हैं।
तहाँ मधु काज आइ बैठे मधुकर-पुंज,
मलय पवन उपबन-वन धाए हैं।
सेनापति माधव महीना मैं पलास तरु,
देखि देखि भाउ कबिता के मन आए हैं।
आधे अनसुलगि, सुलगि रहे आधे, मानौ,
बिरही दहन काम क्वैला परचाए हैं ॥

× × ×

वृष कौ तरनि तेज सहसौं किरन करि,
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि जगजरत झरनि, सीरी,
छाँह कौ पकरि पंथी-पंछी बिरमत है।
सेनापति नैंक दुपहरी के ढरत, होत
धमका विषम, ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनौं सीरी ठौर कौ पकरि कौनौं,
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है ॥

× × ×

दुरि जदुराई सेनापति सुखदाई देखौ,
आई रितु पावस, न पाई प्रेम-पतियाँ।

धीर जलधर की, सुनत धुनि धरकी, है
दरकी सुहागिन की छोह भरी छतियाँ।
आई सुधि बर की, हिए मैं आनि खरकी, तू
मेरी प्रान प्यारी यह पीतम की बतियाँ।
बीती औधि आवन की, लाल मनभावन की,
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ॥

× × ×

गगन अँगन घनाघन तैं सघन तम,
सेनापति नैंक हू न नैन मटकत हैं।
दीप की दमक, जीगनान झमक, छाँड़ि
चपला चमक और सौं न अटकत हैं।
रबि गयौ दबि मानौं ससि सोऊ धसि गयौ,
तोरि तोरि डारे से न कहूँ फटकत हैं।
मानौं महा तिमिर तैं, भूलि परी बात तातै,
रबि ससि तारे कहूँ भूले भटकत हैं॥

× × ×

नीके हौ निठुर कंत मन लै पधारे अंत,
मैन मयमंत, कैसे बासर बराइहौं।
आसरौ अवधि कौं, सो अवध्यौ बितीत भई,
दिन दिन पीत भई रही मुरझाइ हौं।
सेनापति प्रानपति साँची हौं कहति, एक
पाइ कै तिहारे पाइ प्रानन कौ पाइ हौं।
इकली डरी हौं, धनु देखि कै डरी हौं, खाइ,
बिस की डरी हौं, घनस्याम मरि जाइहौं॥

× × ×

सेनापति उनए नए जलद सावन के,
चारि हू दिसान घुमरत भरे तोइ कै।
सोभा सरसाने, न बखाने जात काहू भाँति,
आने हैं पहार मानौं काजर के ढोइ कै।
घन सौं गगन छयौ, तिमिर सघन भयौ,
देखि न परत मानौं रबि गयौ खोइ कै।
चारि मास भरि स्याम निसा के भरम करि,
मेरे जान याही तैं रहत हरि सोइ कै॥

× × ×

पावस निकास तातैं पायौ अवकास, भयौ,
जोन्ह कौ प्रकास, सोभा ससि रमनीय कौं।
बिमल अकास होत बारिज बिकास, सेना-
पति फूले कास हित हंसन के हीय कौं।
छिति न गरद, मानौं रँगे हैं हरद सालि,
सोहत जरद, को मिलावै हरि पीय कौं।
मत्त हैं दुरद, मिट्यौ खंजन दरद, रितु,
आई है सरद सुखदाई सब जीय कौं॥

× × ×

खंड खंड सब दिग-मंडल जलद सेत,
सेनापति मानौं सृंग फटकि पहार के।
अंबर अडंबर सौं उमड़ि घुमड़ि, छिन
छिछकैं छछारे छिति अधिक उछार के।
सलिल सहल मानौं सुधा के महल नभ,
तूल के पहल किधौं पवन अधार के।
पूरब कौं भाजत हैं, रजत से राजत हैं,
गग गग गाजत गगन घन क्वार के॥

× × ×

कातिक की राति थोरी थोरी सियरात सेना-
पति है सुहाति सुखी जीवन के गन हैं।
फूले हैं कुमुद; फूली मालती सघन बन,
फूलि रहे तारे मानौं मोती अनगन हैं।
उदित बिमल चंद चाँदनी छिटक रही,
राम कैसो जस अध ऊरध गगन हैं।
तिमिर हरन भयौ, सेत है बरन सब,
मानहु जगत छीर सागर मगन हैं॥

× × ×

बरन्यौ कबिन कलाधर कौं कलंक, तैसौ
को सकै बरनि कबि हू की मति छीनी है।
सेनापति बरनी अपूरब जुगति ताहि,
कोबिद बिचारौ कौन भाँति बुद्धि दीनी है।
मेरे जान जेतिक सौं सोभा होत जानी राखि,
तेतिकै कलान रजनी की छबि कीनी है।

बढ़ती के राखे, रैनि हू तै दिन ह्वै है, यातै,
आगरी मयंक तै कला निकासि लीनी है ॥

× × ×

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़यौ दल,
निबल अनल गयौ सूर सियराइ कै।
हिम के समीर तेई बरसै विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मै जाइ कै।
धूम नैन बहैं लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिये सो लगाए रहैं नैकु सुलगाइ कै।
मानौ भीत, जानि महासीत तै पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै ॥

× × ×

सिसिर मै ससि कौ सरूप पावै सबिताऊ,
घामहूँ मै चाँदनी की दुति दमकति है।
सेनापति होत सीतलता है सहसगुनी,
रजनी की झाईं बासर मै झमकति है।
चाहत चकोर सूर ओर दृग-छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
कंद के भरम होत मोद है कमोदनी कौ,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है ॥

× × ×

सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है,
पूस बीते होत सून हाथ पाइ ठिरि कै।
द्यौस की छुटाई की बड़ाई बरनी न जाय,
सेनापति पाई कछू सोचि कै सुमिरि कै।
सीत हैं सहस-कर सहस-चरन ह्वै कै,
ऐसे जात भाजि तम आवत है घिरि कै।
जौलौ कोक कोकी कौ मिलत तौलौ होति राति,
कोक अधबीच ही ते आवत है फिरि कै ॥

× × ×

अब आयो माह प्यारे लागत हैं नाह, रबि
करत है दाह जैसो अवरेखियत है।

जानियै न जात बात कहत बिलात दिन,
छिन सौं न तातैं तनकौं बिसेखियत है।
कलप सी राति, सो तौ सोए न सिराति क्यौं हू,
सोइ सोइ जागे पै न प्रात पेखियत है।
सेनापति मेरे जान दिन हूँ तैं राति भई,
दिन मेरे जान सपने मैं देखियत है॥

× × ×

तोर्‌यो है पिनाक, नाकपाल बरसत फूल,
सेनापति कीरति बखानै रामचंद की।
लै कै जयमाल, सिय बाल है बिलोकी छबि,
दसरथ लाल के बदन अरबिन्द की।
परी पेम-फंद, उर बाढ़्यौ है अनंद अति,
आछी मंद मंद चाल चलत गयंद की।
बरन कनक बनी, बानक बनक आई,
झनक मनक बेटी जनक नरिंद की॥

× × ×

सीता अरु राम, जुवा खेलत जनक धाम,
सेनापति देखि नैन नैंकहू न मटके।
रूप देखि देखि रानी, वारि फेरि पियैं पानी,
प्रीति सों बलाइ लेत कैयौ कर चटके।
पहुँची के हीरन में दंपति की झाँई परी,
चंद बिंबि मानौ मध्य मुकुर निकट के।
भूलि गयो खेल दोऊ देखत परसपर,
दुहुँन के दृग प्रतिबिंबन सौं अटके॥

× × ×

जनक नरिंद नंदिनी कौं बदनारविंद,
सुन्दर बखान्यौ सेनापति बेद चारि कै।
बरनी न जाई जाकी नैकहू निकाई, लौन,
राई करि पंकज निसंक डारे वारि कै।
बार बार जाकी बराबरि कौं बिधाता अब,
रचि पचि बिधु कौं बनावत सुधारि कै।
पून्यौ कौं बनाइ जब जानत न वैसौ भयौ,
कुहू के कपट तब डारत बिगारि कै॥

× × ×

पान चरनामृत कौ, गान गुन गनन कौं,
हरि कथा सुनि सदा हिय लौं हुलसिबौ।
प्रभु के उतीरन की, गूदरीयौ चीरन की,
भाल, भुज, कंठ, उर, छापन कौं लसिबौ।
सेनापति चाहत है सकल जनम भरि,
बृन्दाबन सीमा तैं न बाहरि निकसिबौ।
राधा-मन-रंजन की, सोभा नैन-कंजन की,
माल गरे गुंजन की, कुंजन कौं बसिबौ॥

× × ×

तुम करतार जन रच्छा के करनहार,
पुजवनहार मनोरथ चित चाहे के।
यहि जिय जानि सेनापति है सरन आयौ,
हूजियै सरन महा पाप-ताप दाहे के।
जौ कौहू कहौ कि तेरे करम न तैसे, हम
गाहक हैं सुकृति भगति रस लाहे के।
आपने करम करि हौं ही निबहौंगौं, तौब,
हौं ही करतार, करतार तुम काहे के॥

× × ×

ग्राह के गहे ते अति व्याकुल बिहाल भयौ,
प्रान पत ताने रह्यौ एक ही उसास कौं।
तहाँ सेनापति, महाराज बिना और कौन,
धाइ आइ साँकरे सँघाती होइ दास कौं।
गाढ़ मैं गयंद गरुड़ध्वज के पूजिबो कौं,
जो लौं कोई कमल लपकि लेई पास कौं।
तौं लौं, ताही बार, ताही बारन के हाथ पर्‌यौ,
कमल के लेत हाथ कमलानिवास कौं॥

× × ×

चीर के हरत बलबीर जू बढ़ाये चीर,
दौरि मारि डार्‌यौ न दुसासन प्रगटि कै।
सेनापति जानि याकौं जान्यौ है निदान, सुनि,
जुगति बिचारी जौब रावरे मन टिकै।
जोई मुख माँग्यौ, सोई दीन्यौ बरदान, आप
दीनी द्रोपदी कौं, रही पट सों लपटि कै।

रोवत मैं श्रीबर, कहत कही छीबर, सु
मेरे जान यातैं चले छीबर उर्पाट कैं ।।

देव

हेरे हंस सारस सरोजन सरोवर मैं,
कोकन के ओकन ससोक सुख दैनी के।
सार्‌यो सुक मोरन चितै पिक चकोरन,
बुलावै ब्याल बालन उन्हारि बर बैनी के।
ब्याकुल भये री वलबीर कुलकानि तजि,
हानि न गिनत अनहोनी किधौं होनी के।
रोके मृग मारग बिलोकै मृगराज मृग,
मेद-मृग खोजत है भेद मृगनैनी के।।

× × ×

आई हुती अन्हवावन नाइनि सौंधे लिये कर सूधे सुभाइनि।
कंचुकी छोरि उतै उबटैबे को ईंगुर से अंग की सुख दाइनि।
देव स्वरूप की रासि निहारति पाँय ते सीस लौं सीस ते पाँइनि।
ह्वै रही ठौरही ठाढ़ी ठगी सी हंसै कर ठोढ़ी धरै ठकुराइनि।।

× × ×

पीछे परबीनै बीने संग की सहेली, आगे--
भार डार भूषन डगर डारै छोरि-छोरि।
मोरै मुख मोरनि त्यों चौंकति चकोरनि, त्यों--
भौरनि की भीर भीरु देखै मुख मोरि-मोरि।
एक कर आली कर ऊपर ही धरे, हरे--
हरे पग धरे देव चलै चित चोरि-चोरि।
दूजे हाथ साथ लै सुनावति बचन, राज--
हंसनि चुनावति मुकुत माल तोरि-तोरि।।

× × ×

कुल की सी करनी कुलीन की सी कोमलता,
सील की सी सम्पति सुशील की सी कामिनी।
दान को सो आदरु उदारताई सूर की सीं,
गुनी की लुनाई गुनमंती गजगामिनी।

ग्रीषम को सलिल सिसिर को सों घाम देव,
हेउत हसंती जलदागम की दामिनी।
पून्यो को सो चाँद, परभात को सो सूरज,
सरद को सो बासरु बसन्त की सी जामिनी॥

× × ×

देव नभ मन्दिर मै बैठार्‌यो पुहुम पीठ,
सिगरे सलिल अन्हवाय उमहत हौं।
सकल महीतल के मूल फल फूल दल,
सहित सुगन्धन चढ़ावन चहत हौं।
अमित अनन्त धूप दीपक-अखंड जोति,
जल-थल अन्न दै प्रसन्नता लहत हौ।
ढारत समीर चौंर कामना न मेरे और,
आठौ जाम राम तुम्हे पूजत रहत हौ॥

× × ×

फटिक सिलानि सों सुधारयो सुधा-मन्दिर,
उदधि दधि कौ-सो अधिकाई उमगै अमंद।
बाहेर ते भीतर लौं भीति न देखैए 'देव',
दूध को सो फेनु फैलो आँगन फरसबंद।
तारा सी तरुनि तामै ठाढ़ी झिलमिल होति,
मोतिन की जोति मिली मल्लिका को मकरंद।
आरसी-से अंबर मै आभा सी उज्यारी लगै,
प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चंद॥

× × ×

बँसुरी सुनि देखन दौरि चली, जमुना जल के मिस बेगि तवै।
'कवि देव' सखी के सकोचन सौं करि ऊठ सु औसर को बितवै।
वृषभान कुमारि मुरारि की ओर, बिलोचन कोरनि सो चितवै।
चलिबे को घरै न करै मन नैक, घरै फिर फेरि भरै रितवै॥

× × ×

लखि सासहि हास छिपाइ रहै ननदी लखि जी उपजावति भीतिहि।
सौतिन त्यौ सतराइ चितौति जिठानिन ज्यौ जिय ठानति प्रीतिहि।
दासिन हू सों उदास न देव बढ़ावति प्यारे सों प्रेम प्रतीतिहि।
धाय सो पूछति बातै बिनै की सखीन सो सीखै सुहाग की रीतिहि॥

× × ×

कुंजन के कोरे मन केलि रस बोरे लाल,
तालन के खोरे बाल आवति है नित को।
अमिय निचोरे कल बोलनि निहोरे नेक,
सखिन के डोरे देव डोले जित तित को।
थोरे थोरे जोबन विथोरे देत रूप रासि,
गोरे मुख भोरे हँसि जोरे लेति हित को।
तोरे लेति रति दुति मोरे लेति मति गति,
जोरे लेति लोक लाज चोरे लेति चित को॥

× × ×

सुघर सुनार रूप सुबरण चोर दृग,
कोर हरि लेत रव राखत न राई सी।
ये हो बलबीर कीसो बलबीर कैसो काम,
आखिर अहीर पीर जानौ न पराई सी।
घर घरिया मै घुरी जारी मै उघारि आई,
फैली जाति फूलन ही फिरति गुराई सी।
देव जू सुहाग रंगि आँचन तचाई,
सोऽव रंग न सिराति तची कंचन-सराई सी॥

× × ×

मंजुल मंजरी पंजरी सी ह्वै मनोज के ओज सम्हारति चीर न।
भूख न प्यास न नींद परै परी प्रेम-अजीरन के जुर जीरन।
'देव' घरी-पल जात घुरी अँसुवान के नीर उसास समीरन।
आहन जाति, अहीर अहे तुम्हैं कान्ह कहा कहौ काहू की पीर न॥

× × ×

आई बरसाने ते बोलाई वृषभानु सुता,
निरखि प्रभानि प्रभा भानु की अथै गई।
चक चकवानि के चुकाये चक चोटनि सों,
चौंकत चकोर चकचौंधी सी चकै गई।
नन्दजू के नन्दन के नैननि अनन्दमयी,
नन्दजू के मन्दिरनि चन्दमयी छै गई।
कंजनि कलिनमयी गुंजनि अलिनमयी,
गोकुल की गलिन नलिनमयी कै गई॥

× × ×

'देव' मै सीस बसायो सनेह सों भाल मृगम्मद बिंदु कै भाख्यौ।
कंचुकी मैं चुपर्‌यो करि चोवा लगाय लियो उर सों अभिलाख्यौ।

लै मखतूल गुहे गहने, रस मूरतिवंत सिंगार कै चाख्यौ।
साँवरे लाल को साँवरो रूप मैं नैननि को कजरा करि राख्यौ ॥

× × ×

सूझत न गात बीत आई अधरात अरु,
सोये सब गुरुजन जानि कै बगर के।
छिपि कै छबीली अभिसार को किंवार खोले,
खुलिगे खजाने चारु चन्दन अगर के।
'देव' कहै भौंर गुंज आये कुंज कुंजन ते,
पूछि पूछि पीछे परे पहरू डगर के।
देवता कि दामिनी मसाल किधौं जोति-जाल,
झगरे मचत जागे सगरे नगर के ॥

× × ×

औचक अगाध सिंधु स्याही को उमड़ि आयो,
तामैं तीनों लोक बूड़ि गये एक संग मैं।
कारे कारे आखर लिखे जु कारे कागर,
सुन्यारे करि बाँचै कौन जाँचै चित भंग मैं।
आँखिन में तिमिर अमावस की रैनि जिमि,
जम्बु रस बुंद जमुना जल तरंग मैं।
यों ही मन मेरो मेरे काम को न रह्यो माई,
स्याम रंग ह्वै करि समान्यो स्याम रंग मैं ॥

× × ×

वारैं कोटि इंदु अरबिन्द रसबिन्द पर,
मानै न मलिन्द बिन्दु सम कै सुधासरो।
मलै मल्ली मालती कदम्ब कचनार चम्पा,
चंपेहू न चाहै चित चरन टिकासरो।
पदुमिनि तू ही षटपदु को परम पदु,
'देव' अनुकूल्यो और फूल्यो तौ कहा सरो।
रंग; रिस, रास, रोस आसरो सरन बिसे—
बीसो बिसबास रोकि राख्यो निसि बासरो ॥

× × ×

देखे अनदेखे दुखदानि भये सुखदानि,
सूखत न आँसू सुख सोइबो हरे परो।
पानी, पान, भोजन, सुजन गुरजन भूले,
'देव' दुरजन लोग लरत खरे परो।

लागो कौन पाप, पल एकौ न परति कल,
दूर गयो गेह नयो नेह नियरे परो।
होतो जो अजान, तौ न जानतो इतीक विथा,
मेरे जिय जान तेरो जानिबो गरे परो॥

× × ×

कोमल कोमलता दल दाम कि, कामिनि काम कमान गनाई।
सो दुख दूखि परो तन सूखि मरैं कि जियै सु परै न जनाई।
मोहन मित्र चितेरे विचित्र कि चित्रिन देव चरित्र तनाई।
सेज पै ज्यों रँगरेग मनोज सलोनी सी सोने की बेलि बनाई॥

× × ×

नंद घरै वृषभान के भौन ते जान कह्यो हरि देव सुहाँसुनि।
ताही घरी ते छरी पल लाज धरी के घरी उघरी बतियाँ सुनि।
प्रात अरंभ की खंभ लगी निरदंभ निरंभ सम्हारै न साँसुनि।
ठाढ़ी बड़े खन की बरसैं बड़री अँखियान बड़े बड़े आँसुनि॥

× × ×

सूनौ कै परम पदु, ऊनौ कै अनंत मदु,
दूनौ कै नदीस-नदु इंदिरा फुरै परी।
महिमा मुनीसन की, सम्पत्ति दिगीसन की,
ईसन की सिद्धि, ब्रज-बीथी बिथुरै परी।
भादौं की अँधेरी अधराति, मथुरा के पथ,
आई मनोरथ, 'देव' देवकी दुरै परी।
पारावार पूरन, अपार, परब्रह्म रासि,
जसुदा के कोरे एक बारक कुरै परी॥

× × ×

बरुनी बघम्बर में, गूदरी पलक दोऊ,
कोये राते बसन भगौहैं बेष रखियाँ।
बूड़ी जल ही में, दिन जामिनि हूँ जागैं भौंहैं,
धूम सिर छायौ बिरहानल बिलखियाँ।
अँसुवा फटिक-माल, लाल डोरे सेली पैन्हि,
भई हैं अकेली तजि चेली संग सखियाँ।
दीजिये दरस 'देव' कीजिये सँयोगिनी ये,
जोगिनी ह्वै बैठी हैं बियोगिनी की अँखियाँ॥

× × ×

जब तैं कुंवर-कान्ह रावरी कला-निधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानी सी।
तब ही तैं 'देव' देवता सी हँसति सी,
खीझति सी, रीझति सी, रूसति रिसानी सी।
छोही सी, छली सी, छीनि लीन्ही सी, छकी सी छीन,
जकी सी, टकी सी, लागि थकी थहरानी सी।
बाँधी सी, बँधी सी, विष बूड़ी सी, विमोहित सी,
बैठी वह बकत, बिलोकत बिकानी सी॥

× × ×

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिन के धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।
माथे किरीट बड़े दृग चंचल मन्द हँसी मुखचंद जुन्हाई।
जै जग - मन्दिर - दीपक सुन्दर श्री ब्रजदूलह देव सहाई॥

× × ×

मूरति जो मन मोहन की मन-मोहनी के थिरु ह्वै थिरकी सी।
'देव' गुपाल के बोल सुने छतियाँ सियराति सुधा छिरकी सी।
नीके झरोखनि झाँकि सकै नहिं, नैनन लाज-घटा घिरकी सी।
पूरन प्रीति हिये हिरकी, खिरकी-खिरकीन फिरै फिरकी सी॥

× × ×

धार मैं धाय धँसी निरधार ह्वै, जाय फँसी उकसी न अँधेरी।
री अँगराय गिरी गहिरी, गहि फेरे फिरी न घिरी नहिं घेरी।
'देव' कछू अपनो बसु ना, रस-लालच लाल चितै भई चेरी।
बेगि ही बूड़ि गई पँखियाँ, अँखियाँ मधु की मखियाँ भई मेरी॥

× × ×

अभिल ह्वै आई, झुकि उझकी झरोखा, रूप
झरसी झलकि गई, झलकनि झाँई की।
पैने, अनियारे पै सहज कजरारे चख,
चोट सी लगाई चितवनि चंचलाई की।
कौन जाने को हो उड़ि लागी दीठि मोही उर,
रहै अवरोही 'देव' निधि ही निकाई की।
अब लगि आँखिनि की पूतरी-कसौटिन मैं,
लागी रहै लीक वाकी सोने सी गुराई की॥

× × ×

माखन सों मन दूध सों जोबन, है दधि सों अधिकौ उर ईठी।
जा छबि आगे छपाकर छाँछि, समेत सुधा, बसुधा सब सीठी।
नैनन नेह चुवै, कवि 'देव', बुझावत बैन बियोग अँगीठी।
ऐसी रसीली अहीरी अहै, कहौ क्यों न लगै मनमोहनै मीठी।।

× × ×

डार द्रुम-पालन, बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झुलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिन हलावैं-हुलसावै कर तारी दै।
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

× × ×

ऐसो जो हौं जानतो कि जैहै तू विषै के संग,
एरे मन मेरे, हाथ-पाँव तेरे तोरतो।
आजु लौं हौं कत नर-नाहन की नाहीं सुनि,
नेह सों निहारि हारि बदन निहोरतो।
चलन न देतों 'देव' चंचल अचल करि,
चाबुक चितावनीन मारि मुँह मोरतो।
भारो प्रेम-पाथर नगारो दै गरे सों बाँधि,
राधावर - बिरद के बारिध मैं बोरतो।।

× × ×

कोऊ कहौ कुलटा, कुलीन-अकुलीन कहौ,
कोऊ कहौ रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं।
कैसो परलोक, नरलोक, बर लोकन मैं,
लीन्हीं मैं अलीक लोक-लीकन तें न्यारी हौं।
तन जाहि, मन जाहि, देव गुरुजन जाहि,
जीव किन जाहि, टेक टरति न टारी हौं।
बृन्दावन वारी बनवारी की मुकुट वारी,
पीतपटवारी वाहि मूरति पै वारी हौं।।

× × ×

सुनि कै धुनि चातक मोरनि की चहुँ ओरन कोकिल कूकनि सों।
अनुराग भरे हरि बागन में सखि रागत राग अचूकनि सों।

कवि 'देव' घटा उनई जु नई बन भूमि भई दल दूकनि सों।
रंगराती हरी हहराती लता झुकि जाती समीर की झूकनि सों ॥

× × ×

झहरि झहरि झीनी बूँदनि परति मानो,
घहरि घहरि घटा घेरी है गगन मैं।
आनि कह्यो स्याम मोसौं 'चलो झूलिबे कौं आजु',
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोय गये भाग मेरे जागि वा जगन मैं।
आँखि खोल देखौं तो न घन है, न घनस्याम,
छाई बेई बूँदें मेरे आँसू ह्वै दृगन मैं ॥

× × ×

कान्हमई वृषभान सुता भई प्रीति नई उनई जिय जैसी।
जानै को देव बिकानी सी डोलै लगै गुरु लोगनि देखे अनैसी।
ज्यों-ज्यों सखी बहरावति बातन त्यों-त्यों बकै वह बावरी ऐसी।
राधिका प्यारी हमारी सौं तू कहि कालिह की बेनु बजाई मैं कैसी ॥

× × ×

राधिका कान्ह को ध्यान करै तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावै।
त्यौं अँसुवा बरसै बरसाने को पाती लिखै लिखि राधे को ध्यावै।
'राधे' ह्वै जाय घरीक मैं 'देव' सु प्रेम की पाती लै छाती लगावै।
आँपुने आपुही मैं उरझै सुरझै बिरुझै समुझै समुझावै ॥

× × ×

लाल बिना बिरहाकुल बाल बियोग की ज्वाल भई झुरि झूरी।
पानी सों पौन सों, प्रेम कहानी सों, पान ज्यों प्रानन पोषत हूरी।
'देव' जू आजु मिलाप की औधि सुवीतत देखि बिसेखि बिसूरी।
हाथ उठायो उड़ाइबे को उड़ि काग करे परीं चारिक चूरी ॥

× × ×

फूल से फैलि परे सब अंग दूकूलन मैं दुति दौरि दुरी है।
आँसुन से जल-पूर मैं पैरति साँसन सों सनि लाज लुरी है।
'देव' जू देखिये दौरि दसा ब्रज पौरि बिथा की कथा बिथुरी है।
हेम की बेलि भयी हिम-रासि घरीक में घाम सों जाति घुरी है ॥

× × ×

आओ ओट रावटी झरोखे झाँकि देखौ 'देव',
देखिबे को दाउँ फेरि दूजे द्यौस नाहिने।
लहलहे अङ्ग रंगमहल के संगन में,
ठाढ़ी वह बाल लाल पगन उपाहिने।
लोने मुख लचनि, नचनि नैन-कोरनि की,
उरति न और ठौर सुरति सराहिने।
बाम कर बार हार अञ्चल सम्हारो करै,
कैयो छन्द कंदुक उछारै कर दाहिने॥

× × ×

एकै अभिलाख लाख-लाख भाँति लेखियत,
देखियत दूसरों न 'देव' चराचर मैं।
जासों मन राँचै तासों तनु मनु राँचै,
रुचि भरि कै उघारि जाँचै साँचै करि कर मैं।
पाँचन के आगे आँच लागे ते न लौटि जाय,
साँच देइ प्यारे की सती लौं बैठि सर मैं।
प्रेम सो कहत कोऊ ठाकुर न ऐंठौ सुनि,
बैठो गड़ि गहिरे तौ पैठो प्रेम घर मैं॥

× × ×

'देव' सबै सुखदायक संपति, संपति कौ सुख दंपति जोरी।
दंपति दीपति, प्रेम-प्रतीति, प्रतीति की रीति सनेह-निचोरी।
प्रीति तहाँ गुन-रीति-विचार, बिचार की बानी सुधा रस बोरी।
बानी को सार बखान्यौ सिंगार, सिंगार को सार किसोर-किसोरी॥

× × ×

धाये फिरौ ब्रज में, बधाये नित नंद जू के,
गोपिन सधाये नचौ गोपन की भीर में।
देव मति मूढ़ै तुम्हैं ढूँढ़ै, कहाँ पावै, चढ़े
पारथ के रथ, पैठे जमुना के नीर में।
आँकुस ह्वै दौरि हरनाकुस को फार्‌यौ उर,
साथी न पुकार्‌यौ, हते हाथी तिय तीर में।
बिदुर की भाजी, बेर भीलनी के खाय,
बिप्र चाउर चबाय, दुरे द्रोपदी के चीर में॥

× × ×

लागत समीर लंक लहकै समूल अंग,
फूल से दुकूलन सुगन्ध बिथुरो परै।
इन्दु सो बिदन मंद हाँसी सुधा-बिन्दु,
अरबिन्दु ज्यौं मुदित मकरन्दन मुरो परै।
लज्जित लिलार श्रम झलक अलक भार,
मग में धरत पग जावक धुरो परै।
देव मनि नूपुर, पदुम पद दू पर ह्वै,
भू पर अनूप रूप रंग निचुरो परै॥

× × ×

कोयन ज्योति चहैं चपला सुर-चाप सुभू रुचि कज्जल काँदो।
बुंद बड़े बरसै असुवाँ हिरदै न बसै निरदै पति जादो।
देव समीर नहीं दुनिये धुनिये सुनिये कलकंठ निनादो।
तारे खुले न घिरी बरुनी घन नैन भए दोउ सावन भादो॥

× × ×

आँसुन के सलिल सिरावती न छाती जो,
उसास लागि कामागि भसम ही तो ततो।
केसरि कुसुम हू ते कोंरी जो न होत, तौ
किसोरी सों कुसुमसर कौनी भाँति जीततो।
'देव' जू सराहिये हमारो न्याउ ह्याँऊ करि,
नाहित अहित चेत करतो जो चीततो।
कोकिला के टेरत निकरि जातो जीव,
जो तिहारे गुन गनत उधेरत न बीततो॥

× × ×

पीछे तिरोछे कटाछन सों इतवै चितवै री लला ललचौहैं।
चौगुनो रंग चवायनि के चित, चाह चढ़े हैं चबाउ मचौहैं।
ओबन आयो न पाप लग्यो कवि देव रहैं गुरु लोग रिसौहैं।
जी मैं लजैये जु जैये कहूँ, तित पैये कलंक चितैये जु सौहैं॥

× × ×

'देव' जुपै चित चाहिये नाह तौ नेह निबाहिये देह मर्‌यो परै।
त्यों समुझाइ सुझाइये राह अमारग जो पग धोखे धर्‌यो परै।
नीके में फीके ह्वै आँसू भरौ कत ऊँची उसास गरे क्यों भर्‌यो परै।
रावरो रूप पियो अँखियान भर्‌यो सु भर्‌यो उबर्‌यो सु ढर्‌यो परै॥

× × ×

अनुराग के रंगनि रूप तरंगनि अङ्गनि ओप मनो उफनी।
कवि देव हिये सियरानी सबै सियरानी को देखि सुहाग सनी।
बर धामन बाम चढ़ी, बरसैं मुसुकानि सुधा घनसार घनी।
सखियान के आनन इंदुन तें अँखियान की बन्दनवार तनी॥

× × ×

विद्रुम और बँधूक जपा गुललाला गुलाब की आभा लजावति।
देव जू कंज खिले टटके हटके भटके खटके गिरा गावति।
पाँव धरै अलि ठौर जहाँ तेहि ओर ते रंग की धार सी धावति।
मानो मजीठ की माठ ढुरी एक ओर ते चाँदनी बोरति आवति॥

× × ×

खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे बड़ भाग कन्हाई।
एक ही भौन में दोहुन देखि के 'देव' करी इक चातुरताई।
लाल गुलाल सों लीन्ही मुठी भरि बाल की भाल की ओर चलाई।
वा द्रिग मूँदि उतै चितई इन भेंटी इतै बृषभान की जाई॥

× × ×

देव न देखति हौं दुति दूसरी देखे हैं जा दिन तें ब्रजभूप मैं।
पूरि रही री वहै पुर कानन आनन ध्यानन ओप अनूप मैं।
ये अखियाँ सखियाँ हैं हमारी सो जाइ मिली जलबूँद ज्यों कूप मैं।
कोर करो नहिं पाइयै केहूँ समाइ गयीं ब्रजराज के रूप मैं॥

× × ×

को बचिहै यह वैरी बसंत पै आवत जो बन आगि लगावत।
बौरत ही करि डारत बौरी, भरे विष बैरी रसाल कहावत।
होत करेजन की किरचैं कवि देव जू कोकिल बैन सुनावत।
बीर की सौं बलवीर बिना उड़ि जायँगे प्रान अबीर उड़ावत॥

× × ×

बड़ोई प्रताप, बड़ोई सुहाग, बड़ोई प्रभाव सुभाविक राखैं।
बड़ी गुनमान बड़ीयै सुजान सरूप निधान पुरानन भाखैं।
बड़े बड़े देव अदेवन की घरनी मुख देखन को अभिलाखैं।
बड़ो दिलदार, बड़े बड़े हार, बड़े बड़े बार, बड़ी बड़ी आँखैं॥

आलम

जा थल कीन्हें बिहार अनेकन ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना सों करी बहु बातन ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं।

आलम जौन से कुंजन में करी केलि तहाँ अब सीस धुन्यो करैं।
नैनन में जो सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं ॥

× × ×

कैधौं मोर सोर तजि गये री अनत भाजि,
कैधौं उत दादुर न बोलत हैं ए दई।
कैधौं पिक चातक महीप काहू मारि डारे,
कैधौं बकपाँति उत अन्तगति ह्वै गई।
'आलम' कहै, हो आली! अजहूँ न आये प्यारे,
कैधौं उत रीति बिपरीत बिधि ने ठई।
मदन महीप की दोहाई फिरिबे तें रही,
जूझि गये मेघ कैधौं दामिनी सती भई ॥

× × ×

सौरभ सकेलि मेलि केलि ही की बेलि कीन्हीं,
सोभा की सहेली सु अकेली करतार की।
जित ढरकैं हो कान्ह तितही ढरकि जाय,
साँचे ही सुढारी सब अंगनि सुढार की।
तपनि हरति कवि आलम परस सीरो,
अति ही रसिक रीति जानैं रस-चार की।
ससि हूँ को रसु सानि सोने को सरूप लै के,
अति ही सरस सौं सँवारी घनसार की ॥

× × ×

अंग नई जोति लै बरंगना बिचित्र एक,
आंगन मैं अंगना अनंग की सी ठाढ़ी है।
उजरई की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
मोतिन की जोति सौं जुन्हैया मानो बाढ़ी है।
'आलम' सुआली बनमाली देखि चलि दुति,
सुगढ़ कनक की सी रूप गुन गाढ़ी है।
देह की बनक वाके चीर में चमक छाई,
छीरनिधि मथि किधौं चाँद चीरि काढ़ी है ॥

× × ×

ससि तें सरस मुख सारस से राजैं नैन,
जोन्ह तें उजारो रूप रवनि रसाल सी।
रति हू तें नीकी प्यारी प्यारे कान्ह जाके पाछे,
बेनी की बनक जेलैं मानो अलि आलसी।

सारी सेत सोहे कवि 'आलम' बिहारी संग,
चलति बिसद गति आतुर उताल सी।
फूल ही के भार भरि सीसफूल फूलि रहे,
फूली सांझ, फूली आवै फूलन की माल सी ॥

× × ×

ताती होति छाती छिनु जूड़ियौ ह्वै जाति कछू,
ताती सीरी राती पीरी बूझि न परति है।
'आलम' कहै हो कान्ह कौन बिथा जानों वाकी,
मौन भई काहू की न कानि हू करति है।
आगि सी झँवाति है जू ओरे सी बिलाति है जू,
छिन हू न देखे सुधि बुधि बिसरति है।
अँसुवनि भीजै औ पसीजै त्यौ त्यौं छीजै बाल,
सोने ऐसी लोनी देह लोन ज्यों गरति है ॥

× × ×

चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै,
चंद बिन दिन छबि लागति अँध्यारी है।
'आलम' कहै हो आली अलि फूल हेत चले,
काँटे सी कँटीली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है।
कारो कान्ह कहत गँवारी ऐसी लागति है,
मोहि वाकी स्यामताई लागति उज्यारी है।
मन की अटक तहाँ रूप को बिचारु कहाँ,
रीझिबे को पैंड़ो तहाँ बूझि कछू न्यारी है ॥

× × ×

कंचन में आँच गई चूनो चिनगारी भई,
भूषन भये हैं सब दूषन उतारि लै।
बालम बिदेस ऐसी बैस मैन आगि लागै,
जागि जागि उठै हियो बिरह बयारि लै।
अब कत पर घर माँगन है जाति आगि,
आँगन में चाँदु चिनगारी चारि झारि लै।
साँझ भई मौन सँझबाती क्यों न देति है री,
छाती सों छुवाय दियाबाती आनि बारि लै ॥

× × ×

प्रेम रंग पगे जगमगे जगे जामिनि के,
जोवन की जोति जागि जोर उमगत हैं।

मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं,
भूमत हैं झुकि झुकि झँपि उघरत हैं।
'आलम' सो नवल निकाई इन नैनन की,
पाँखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं।
चाहत हैं उड़िबे को देखत मयंक मुख,
जानत हैं रैनि ताते ताहि में रहत है॥

× × ×

गोरे आँक थोरे लाँक थोरी बैस भोरी मति,
घरी घरी और छबि अंग अंग मैं जगै।
कहि कवि 'आलम' छलक नैन मैन मई,
मोहनी सुनत बैन मन मोहनै ठगै।
तेरोई मुखारबिंद निंदै अरबिन्दै प्यारी,
उपमा को कहै ऐसी कौन जिय मैं खगै।
चपि गई चन्द्रिकाऊ छपि गई छबि देखि,
भोर को सो चाँद भयो फीकी चाँदनी लगै॥

× × ×

तुम बिनु कान्ह ब्रजनारि मार मारी सुतौ,
बिरह बिथा अपार छाती क्यों सिराती है।
तरनि सो तमीपति ताही सो तलप तवै,
हेरति ज्यों निसा परी दसौ दिसा ताती है।
कानन में जाय नेकु आनन उघारि देत,
ताकी झार फूली डार दूरि ते सुखाती हैं।
बारि में जो बोर्‌यो तनु लागति ज्यौं चुरै मीन,
बारिज की बेलैं ते बिलोके बरी जाती है॥

शेख

रात के उनींदे अलसाते मदमाते राते,
अति कजरारे दृग तेरे यो सुहात हैं।
तीखी तीखी कोरनि करोरि लेत काढ़े जीउ,
केते भये घायल औ केते तलफात हैं।
ज्यो ज्यों लै सलिल चख 'सेख' धोवै बार बार,
त्यों त्यो बल बुंदन के बार झुकि जात हैं।

कैबर के भाले कैधौं नाहर नहनवाले,
लोहू के पियासे कहूँ पानी तें अघात हैं ।।

× × ×

रति रन विषे जे रहे हैं पति सनमुख,
तिन्है बकसीस बकसी है बिहँसि कै ।
करन कों कंकन उरोजन को चन्द्रहार,
कटि माहि किंकिनी रही है अति लसि कै ।
सेख कहैं आदर सो आनन को दीन्हों पान,
नैनन में काजर बिराजै मन बसि कै ।
एरे बैरी वार ये रहे हैं पीठ पाछे,
ताते बार बार बाँधति हौं बार बार कसि कै ।।

× × ×

पैड़ों सम सूधौ बैड़ों कठिन किंवार द्वार,
द्वारपाल नहीं तहाँ सबल भगति है ।
'सेख' भनि तहाँ मेरे त्रिभुवन राय हैं जु,
दीनबन्धु स्वामी सुरपतिन को पति है ।
बैरी को न बैरु, बरियाई को न परवेस,
हीने को हटक नाहीं छीने को सकति है ।
हाथी की हँकार पल पाछे पहुँच न पावै,
चींटी की चिंघार पहिले ही पहुँचति है ।।

× × ×

सघन अखंड पूरि पंकज पराग पत्र,
अच्छर मधुप, शब्द घण्टा झहनातु है ।
विरमि चलत, फूली बेलनि की बासि रस,
मुख के सँदेसे लेत सबनि सुहातु है ।
'सेख' कहि सीर सरवरनि के तीर तीर,
पीवत न नीर परसे ते सियरातु है ।
आवत बसन्त मन भावन घने जतन,
पावन परेवा मानो पाती लीने जातु है ।।

× × ×

जब सुधि आवै तब तन बिनु सुधि हो,
बन सुधि आए मन होत पात-पात है ।
'सेख' कहै सरत सहेठ के वे गीत सुनि,
बाँसुरी भी धुनि नटसाल गात-गात है ।

तुम कह्यो मानौ, उपदेश हम नाहीं कह्यो,
जैसी एक नाही तैसी नाही सौक सात।
प्रेम से विरूधौ जनि, हाहा हियौ रूँधौ जनि,
ऊधौ लाख बातनि की सूधि एक बात है॥

× × ×

पसुन में बैठनु, परोसी भये पच्छिनि के,
भारन के डार घर बार करि रहि हैं।
सेख भूमि ग्रसिहैं कि बिस-बेलि बसिहै कि,
कुस हैं कि काँसि हैं कौसल्या काहि कहि हैं।
वन, गिरि, बेरनि करेरे दुख कैसे करि,
काँवरे कुमार सुकुमार मेरे सहि हैं।
मैले तन का ए कसैले छाल रूखन के,
बन फल फोर छोलि छाल खाइ रहि हैं॥

घनानन्द

रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज समाज बिसारे।
एक अचंभो भयौ घनआनंद हैं नित ही पल पाट उघारे।
टारैं टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन मोह के तारे॥

× × ×

मीत सुजान अनीति करौ जिन हाहा न हूजिये मोहि अलोही।
दीठि कौ और कहूँ नहिं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही।
एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान बटोही।
हौ घनआनंद जीवनमूल दई कत प्यासनि मारत मोही॥

× × ×

प्रेम को महोदधि अपार हेरि कै बिचारि,
बापुरो हहरि वार ही तें फिरि आयो है।
ताही एकरस ह्वै बिबस अवगाहें दोऊ,
नेही हेरि राधा जिन्हे देखें सरसायौ है।
ताकी कोऊ तरल तरंग संग छूट्यो कन,
पूरि लोकलोकनि उमगि उफनायौ है।

सोई घनआनंद सुजान लागि हेत होत,
ऐसे मथि मन पै सरूप ठहरायौ है ।।

× × ×

जे दृग सिराये घनआनंद दरस रस,
ते अब अमोही दुख ज्वाल जारियत है।
नोखे हित-पोखे नित जेई प्रान राखि साथ,
तेई कै अनाथ यों अकेले मारियत है।
कौन कौन बात को परेखो उर आनियै हो,
जान प्यारे कैसें बिधि अंक टारियत है।
थाती लौं तिहारी प्रीति छाती पै बिराजि रही,
हेरि हेरि आँसुन समूह ढारियत है ।।

× × ×

गोकुल नरेस नंद बंस को प्रसंस बंदि,
सोभा सुखकंद प्रेम अमिय निवास है।
जो नित चकोर चोप तो हित भरयौ ही रहे,
सुनियै सुजान कौन माधुरी बिलास है।
उदित जुन्हाई ऐसे मेरे मन आई,
जैसे बाढ्यौ घनआनंद सुदृष्टि झर आस है।
जगत में जोति एक कीरति की होति है पै,
राधिका तौ कीरति के कुल को प्रकास है ।।

× × ×

पीरी पीरी देह छीनी राजत सनेह भीनी,
कीनी है अनंग अंग अंग रंग बोरी सी।
नैन पिचकारी ज्यौं चल्यौई करैं दिनरैन,
बगराये बारनि फिरति झकझोरी सी।
कहाँ लौं बखानौं घनआनंद दुहेली दसा,
फागमई भई जान प्यारे वह भोरी सी।
तिहारे निहारे बिन प्राननि करत हीरा,
बिरह अंगार निमगारि हिय होरी सी ।।

× × ×

चातिक चुहल चहुँ ओर चाहै स्वाति ही कौं,
सूरे पन पूरे जिन्हें विष सम अमी है।

प्रफुलित होत भान के उदौत कंज पुंज,
ता बिन बिचारनि ही ज्योति जाल तमी है।
चाहौ अनचाहौ जान प्यारे पै आनंदघन,
प्रीति रीति विषम सु रोम रोम रमी है।
मोहिं तुम एक, तुम्हैं सो सम अनेक आहिं,
कहा कछू चंदहिं चकोरन की कमी है॥

× × ×

डगमगी डगनि धरनि छबि ही के भार,
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुंदर बदन पर कोरिक मदन वारों,
चित चुभी चितवनि लोचन बिसाल की।
कालिह इहि गली अली निकस्यौ अचानक ह्वै,
कहा कहौं अटक भटक तिहि काल की।
भिजई हौं रोम रोम आनंद के घन छाय,
बसी मेरी आँखिन में आवनि गुपाल की॥

× × ×

स्याम की घटा लपटी थिर बीज कि सोहै अमावस अंक उज्यारी।
धूम के पुँज मैं ज्वाल की माल सी पै दृग सीतलता सुख कारी।
कै छबि छायौ सिंगार निहारि सुजान तिया तन दीपति प्यारी।
कैसी फबी घनआनंद चोपनि सों पहिरी चुनि साँवरी सारी॥

× × ×

एरे बीर पौन! तेरो सबै ओर गौन बीरी,
तो सो और कौन, मनै ढरकोहीं बानि दै।
जगत के प्रान, ओछे बड़े सों समान घन,
आनन्द निधान, सुखदान दुखियानि दै।
जान उजियारे गुन भारे अन्त मोही प्यारे,
अब ह्वै अमोही बैठे, पीठि पहचानि दै।
बिरहा बिथा की मूरि, आँखिन में राखौं पूरि,
धूरि तिनि पायनि की हहा नैकु आनि दै।

× × ×

कारी कूर कोकिला! कहाँ क बैर काढ़ति री,
कूकि कूकि अब ही करेजो किन कोरि लै।

पैंड़े परे पापी ये कलापी निसद्यौस ज्यौं ही,
चातक ! घातक त्यौं ही तु हू कान फोरि लै।
आनंद के घन प्रानजीवन सुजान बिना,
जानि कै अकेली सब घेरौ दल जोरि लै।
जो लौं करैं आवन बिनोद बरसावन वे,
तौ लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै॥

× × ×

परकाजहिं देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ सब ही बिधि सज्जनता सरसौ।
घनआनंद जीवन दायक हौ कछू मेरियौ पीर हियें परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानहिं लै बरसौ॥

× × ×

अंतर ही किधौं अन्त रहौ, दृग फारि फिरौं कि अभागिन भीरौं।
आगि जरौं अकि पानि परौं अब कैसी करौं हिय का बिधि धीरौं।
जी घनआनंद ऐसी रुचि, तौ कहा बस है अहो प्राननि पीरौं।
पाऊँ कहाँ हरि हाय तुम्हें, धरनी मैं धँसौं कि अकासहिं चीरौं॥

× × ×

संग लगे फिरौं, हौं अलगे रहौं माहुवै गैल लगावत क्यौं नहीं।
नीरस राचनि ही सरसौ रस मूरति प्रीति पगावत क्यौं नहीं।
ढीलो पर्‍यौ तुमतें घनआनंद हौ गुनरासि खगावत क्यौं नहीं।
जागत सोवत से हौ कहा कहौं सोवत मोहिं जगावत क्यौं नहीं॥

× × ×

कान्ह परे बहुतायत में, इकलैन की वेदन जानौ कहा तुम।
हौ मन-मोहन, मोहे कहूँ न, बिथा बिमनैन की मानौ कहा तुम।
बौरे वियोगिन्ह आप सुजान ह्वै, हाय कछू उर आनौ कहा तुम।
आरतिवंत पपीहन कौ घनआनंद जू पहिचानौ कहा तुम॥

× × ×

पूरन प्रेम को मन्त्र महा पन जा मधि सोधि सुधारि है लेख्यो।
ताही के चारु चरित्र विचित्रनि यों पचि कै रचि राखि विसेख्यो।
ऐसो हियो हित-पत्र पवित्र जो आन कथा न कहूँ अवरेख्यो।
सो घनआनंद जान अजान लौं टूक कियो, पर बाँचि न देख्यो॥

× × ×

घनआनंद अपने चातिक को गुन बाँधि लै मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यों विष घोरियै जू॥

× × ×

जोरि कै कोरिक प्राननि भावते संग लिए अँखियान मैं आवत।
भीजे कटाछन सों घनआनंद छाय महारस को बरसावत।
ओट-भएँ फिरि या जिय की गति जानत जीवनि ह्वै जु जनावत।
मीत सुजान अनूठियै रीति जिवाय कै मारत मारि जियावत॥

× × ×

साँच के सान-धरे सुर-बान पै छूटैं बिना ही कमान सी जोटैं।
दीसैं जहीं के तहीं सु चलैं अति घूमति है मति या चख चोटैं।
घाव को चाव बढ़ैं घनआनँद चौड़नि लै उर आड़नि ओटैं।
प्रान सुजान के गान बिंधे घट लोटैं परे लगि तान कचोटैं॥

× × ×

जान सजीवन प्रान लखें बिन आतुर आँखिन आवत आधे।
लोग चबाई सबै निदरै अति बान से बैन अयान सौं साधे।
को समुझे मन की घनआनंद बौरई बेदन बौरई नाधे।
नीर भर्यौ जिय धीर धरै नहिं कैसे रहै जल जाल सो बाँधे॥

× × ×

सावन आवन हेरि सखी! मन भावन आवन चोप बिसेखी।
छाए कहूँ घनआनंद जान सम्हारि की ठौर लै भूलनि लेखी।
बूँदैं लगैं सब अंग दगैं उलटी गति आपने पापिनी पेखी।
पौन सौं जागति आनि सुनी ही पै पानी तें लागति आँखिन देखी॥

× × ×

नेह सों भोय सँजोय धरी हिय दीप दसा जु भरी अति आरति।
रूप उज्यारे अजू ब्रजमोहन सौंहनि आवनि ओर निहारति।
रावरी आरति बावरी लौं घनआँनद भूलि वियोग निवारति।
भावना थार हुलास के हाथनि यो हित मूरति हेरि उतारति॥

× × ×

रूप निकाई अनूप कहा कहौं अँगनि जोति सुरंगनि जागति।
है घन आँनद जीवनमूल पपीहा किये पिय लोचनि पागति।
और सिंगारनि की सब ही रह्यौ याहि विचारति ही मति रागति।
पायन तेरे रची मिंहदी लखि सौतिन के तरवानि तैं लागति॥

× × ×

क्यों हरि हेरि हर्यो हियरा--अरु क्यो चितचोर कै चाह बढ़ाई।
काहे को बोलि सुधासने बैननि चैननि मैन निसैन चढ़ाई।
सो सुधि मो हिय ते घन आँनद सालति क्यों हूँ कढ़ै न कढ़ाई।
मीत सुजान अनीति की पाटी इतै पै न जानिए कौने पढ़ाई।।

रसलीन

चन्द्रमुखी जूरो चितै चित लीन्हो पहचानि।
सीस उठायो है तिमिर ससि को पीछे जानि।।
ऐंठे ही उतरत धनुष यह अचरज की बान।
ज्यो ज्यो ऐंठति भौ-धनुष त्यो त्यो चढ़त निदान।।
सब जग पेरत तिलन को, को न थके इहि हेरि।
तुव कपोल के एक तिल डार्यो सब जग पेरि।।

जो भा अधरन तरुनि के, सो भा धरत न कोय।
याही बिधि इनके पर्यो नाम अधर बिधि जोय।।

दसन झलक मे अरुनता लखि आवत मन माँह।
परी रदन पर आय के अधर रंग की छाँह।।

दरपन से वा कण्ठ सम कंचन दुति किमि होत।
दुलरी जाके लगत ही जोति चौलरी होत।।
कित दिखाइ कामिनि दई दामिनि को यह बाँह।
तरफरात सी तन फिरै फरफरात घन माँह।।
ब्रज बानो सीखन रची यह रस लीन रसाल।
गुन सुबरन नग अरथ लहि हिय धरियो ज्यों माल।।
अंग अंग को रूप सब यामें परत लखाय।
नाम अंग-दर्पन धर्यो याही गुन तें ल्याय।।
तन सुबरन के कसन को, लसत पूतरी स्याम।
मनो नगीना फटिक मे, जरी कसौटी काम।।
को है माली चतुर जो, सरस सींचि रस-जाल।
या कंचन की बेल में, मुक्ति लगाये लाल।।
पिय कुंडल को चिन्ह जो, पर्यो बाल की बाँह।
खिन चूमत खिन लखि रहत, खिन लावत उर माँह।।
प्यि मूरति मेरी- सदा राखत दृगन बसाइ।
डरियत गोरी देह यह, मति कारी ह्वै जाइ।।

सखिन संग नवला गई, पिय को मिलन निकेत ।
अरुन कमल सो मुख भयो, दिन हिम संक समेत ।।
अली मान-अहि के डसे, झार्‍यो हरि करि नेह ।
तऊ क्रोध-विष ना छुट्यो, अब छूटत है देह ।।
रक्त बूँद काजर भरे, यों रोवति दुरि बाल ।
मनो निसानी वा दृगन, दई गुंज की माल ।।
पिय बिछुरन खिन यों तिया, चख अँसुवा गर आइ ।
मनु मधुकर मकरन्द को, उगलि गयो फिरि खाइ ।।
गवन समैं पिय के कहति, यौं नैनन सों तीय ।
रोवन के दिन बहुत हैं, निरखि लेहु खिन पीय ।।
करी देह जो चीकनी, हरि नित लाइ सनेह ।
बिरह अग्नि जरि खिनक मैं, होंनि चहत अब खेह ।।
पिय आये आनंद जो भयो तिया उर आइ ।
घट मधि दीपक जोति लौं, कछु मुख तें दरसाइ ।।
आई वह पानिप भरी, रमनी आजु अन्हान ।
जिहि बूड़ति निकसति लखै, निकसत बूड़ै प्रान ।।
पिय चितवत तिय मुरि गई, कुल हित पट मुख लाइ ।
अमी चकोरन के पियत, धन लीनी ससि छाइ ।।
पिय लखि यौं तिय, दृगन दै अंजन आँसू डारि ।
ज्यौं ससि निरखि चकोर वै बुझी चिनगिनी डारि ।।
सखी री बिछुरन सिसिर की, ह्वै लहलही तुरन्त ।
बेलि रूप प्रफुलित भई, लहि बसन्त को कन्त ।।
पिय बिनु तिय दृग जल निकसि, यों पुतरीन बिलात ।
ज्यौं कमलन ते रस झरत, मपुकर पीवत जात ।।
पिय छीटत यौं तियन कर लहि जल केलि अनंद ।
मनो कमल चहुँ ओर ते मुकतनि छोरत छंद ।।

मान

सम्वत प्रसिद्ध दस सत्तमास । बत्सर सु पंच दस जिट्ठ मास ।।
सजि सेक राण श्री राज सीह । असुरेश धरा सज्जन अबीह ।।
निर्घोष घुरिय नीसान नद्द । सहनोई भेरि जंगी सु सद्द ।।
अति बदन बदन बट्टी अवाज । सब मिले भूपि सजि अप्प साज ।।

क्रिय सेन अग्ग करि सेल काय । पिखन्त रूप पर दल पुलाय ॥
गुंजंत मधुप मद झरत गच्छ । चरषी चलन्त तिन अग्ग पच्छ ॥
सोभन्त चौर सिन्दूर शीश । रस रंग चंग अति भरिय रीस ॥
सो झाल घटा मनु मेघ श्याम । ठनकन्त घंट तिन कंठ ठाम ॥
उनमत्त करत अगगग् अग्राज । बहु वेग जान पावै न बाज ॥
उलकन्त पुट्ठि उज्जल सढाल । बर बिबिध वर्ण नेजा बिसाल ॥
बोलन्त चलत बन्दी बिरुद्द । दीपन्त धवल रुचि शुचि विरद्द ॥
गुरु गाढ गेंद गिरिवर गुमान । पढ़ि घत्त घत्त मुख पीलवान ॥
एराक आरबी अश्व ऐन । सोभन्त श्रवन सुन्दर सुनैन ॥
काश्मीर देश कांबोज कच्छि । पय पन्थ पौन पथ रूप लच्छि ॥
बंगाल जात से बाजिराज । काबिल सु केक हय भूप काज ॥
खंधार उतन केहि खुरासान । वपु ऊँच तेज बर बिबिध बान ॥
हय हीस करत के जाति हंस । कविले सुकि हाड़े भोर बंस ॥
किरडीए खुरहडे केमु रत्त । पीलडे केकली लेप वित्त ॥
चंञ्चल सुवेग रहबाल चाल । थेइ थेइ तान नञ्चन्त थाल ॥
गुन्थिय सुजान कर केस बाल । बनि कंध वक्र सोभा विसाल ॥
साकति सुबर्ण साजे समुख । लीने सु सत्थ हय एक लख ॥
रवि रथ तुरंग सम ते सरूप । भनि विपुल पुठि तिन चढ़े भूप ॥
पयदल सु सज्जि पोरष प्रधान । जंवालु जग जीतन जवान ॥
भट विकट भीम भारत भुजाल । साधर्म्मि सूर निज शत्रु साल ॥
निलवट सनूर रत्ते सु नैन । गय थाट घाट अप घट गिनैन ॥
धमकंमि धरनि चल्लत धमक्क । धर हरत कोट निज सबर धक्क ॥
बंकी सु पाघ बर भृकुटि बंक । निर्भय निरोध नाहर निसंक ॥
शिर टोप सजि तनु त्रान संच । प्रगटे सु बंधि हथियार पंच ॥
कमनीय कुंत कर तौन पुनि । मारंत शद्द सुनि सबल मुट्ठि ॥
गल्हर करत गुज्जत गैन । बोलंत बंदि बहु विरुद बैन ॥
मुररंत मुंछ गुरु भरिय मान । गिनि कोन कहै पायक सु गान ॥
बहु भूप थट्ट दल मध्य बीर । सुरपति समान शोभा सरीर ॥
श्री राजसिंह राणा सरूप । गजराज ढाल आसन अनूप ॥
शीशे सु छत्र बाजंत सार । चामर ढलंत उजल स चारु ॥
घन सजल सरिस दल घाघरट्ट । भाषंत विरुद बर बन्दि भट्ट ॥
कालंकि राय केदार कत्थ । अस कत्ति राय थप्पत समच्छ ॥
हिन्दू सु राय राखन सुहद्द । मुगलाँन राय मोरन मरद्द ॥
कविलान राय कट्टन सुकन्द । द्युतिबंत राय हिन्दू दिनेद ॥
अरि बिकट राय जाड़ा उपाड । बलवन्त रास वैरी विभाड ॥

अन पुट्ठि राय पुट्ठिय पलान । भल हलत रूप मध्यान भान ।।
रायाधिराय राजेस रान । जगतेश नन्द जय जय सुजान ।।
बाजीनि चरन खुरतार बग्ग । मह अनड कट्टि कीजंत मग्ग ।।
झलझलिय उदधि सलसलिय सेस । कलकलिय पिट्ठिकच्छप असेस ।।
रजथान सजल जलथान रेनु । धुन्धरिग भान रज चढ़ि गगेनु ।।
अति देश देश सु बढ़ी अवाज । नट्टे सु यवन करते निवाज ।।
हलहलिय असुर धर परि हलक्क । षलभलिय नैर पर पुर षलक्क ।।
थरहरें दुर्ग मेवास थान । रचि सेन सबल राजेश रान ।।
सुलतान मान मन्नो ससंक । बलवंत हिन्दुपति बीर बंक ।।
आयौ सुलेन अवनी अभंग । आलम सु भयौ मुनि गात भंग ।।

× × ×

ऊचलि गयो अग्गरो दंद मच्यौ अति दिल्लिय ।
हाजीपुर परि हक्क डहकि लाहौर सु डुलिय ।
थरस लयौ रिनथम्भ धसकि अजमेंर सु धुज्जिय ।
सूनौ भयौ सिरोज भगग मै लसा सु भज्जिय ।
अहमदाबाद उज्जैनि जन थाल मूंग ज्यों थरहरिय ।
राजेस राण सु पयान सुनि पिशुन नगर खरभर परिय ।

× × ×

चतुरंग चमूं सिंधुर चंचल बंक बिरुद्दरु दान बहैं ।
अवधूत अजेज तुरंग उतंगह रंगहि जे रिपु कट्टि रहैं ।।
अवगाढ़ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्थ लिए प्रचुरं ।
चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ।।
अति बट्टि अवाज भगी दिसि उत्तर पंथ पुरंपुर रौरि परी ।
त्रह कंत सु त्रंबक नूर त्रहं त्रह षंग महा षिति बज्जि पुरी ।।
उडि अम्बर रेनु बहूदल उम्मडि सोषि नदी दह मग्ग सरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ।।
दल बिंटिव माल पुरा सु चहौं दिसि उपम चंदन जान अही ।
तहँ कीन मुकाम धुरंत सु त्रंबक सोच परयो सुलतान सही ।।
नर नाथ रहे तह सत्त अहा निसि सोवन मारस धीर धरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ।।
धक धूनिय धास सु कोट धकाइय गौषरु पौरि गिराइ दिए ।
ढ़म ढेर करी हट श्रेणि ढुढारिय कंकर कंकर दूर किए ।।

पतिसाह सु दज्झन नैर प्रजारिय अंबर पावक झार अरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥
तहाँ श्रीफरु पुंगिय लौंग तमारह हिंगुल केसरि जायफलं ।
घन सार मृगंमद लीलि अफीमि अँवार जरन्त सु झारझलं ॥
उडि अग्गि दमग्ग सु दिल्लिय उप्पर जाय परैं सु डरे असुरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
धर पूरिय धोम धराधर धुंधरि धाम भरे धन धाम धषैं ।
रबि बिम्बति हौं दिन गोप रह्यो लुटि लच्छि अनन्त सु कोन लषैं ॥
सिकलात पटम्बर सूफ सु अम्बर इंधन ज्यों प्रजरैं अगरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
अति रोसहिं कीन इलातर उप्पर कञ्चन रूप निधान कढ़े ।
भरि ईभष जान सुखच्चर सूभर वित्तहिं मूल्य अनेक बढ़े ॥
जस वाद भयौ गिरि मेरु जितौ हरषे सुर आसुर नूर हरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥
निज जीति करी रिपु गाढ़ नसाइय आए देत निसान खरे ।
पयसार सु कीन सिंगार उदयपुर आइ अनेक उछाह करे ॥
कबि मान दिए हय हत्थिय कंचन बुट्ठिय जान कि बार धरं ।
चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राणा यु मारि उजारिय मालपुरं ॥

गोरेलाल

साबर तैं आई लगन, मिले बोल बंधान ।
दवादबे बीरा दियो, अब हितु भयो निदान ॥

जब निकट ब्याह के आये । मंगल गीत दुहूँ दिस गाये ॥
तब दल बलदाऊ संग राखे । लागे करन काज अभिलाषे ॥
छुरी बरात ब्याह कौ साजी । तीस सवार बंब अरु बाजी ॥
दूलह छत्रसाल छबि छाये । करन ब्याह साबरहि सिधाये ॥
तहँ बिधि सौ आगौनो कीनी । बाँध्यौ मौर इन्द्रछबि लीनी ॥
लागी परन भाँउरैं ज्यौंही । परी फौज तहवर की त्यौंही ॥
अनी बनी दोई बनि आई । दोऊ बरी करी मन भाई ॥
इतहिं भाँउरैं सजी सुहाई । उत तुरकनि सौं मची लराई ॥

रन रुपि तहवर खान कौ, मुह मुरकायौ मारि ।
पूरन वेद विधान सौ, लइ भाँउरै पारि ॥

× × ×

मारी फौज तुरक मुरकाये । तहँ सब धाये बजे बधाये ॥
ब्याही बरी जीति अरि लीनौ । कंकन छोड़ि तुरंगम दीनौ ॥
धामौनी दौरन झकझोरी । फिरि पछौरि सब खरी पिछौरी ॥
बारी बार मबासी कूटें । गाँउ कलींजर के सब लूटें ॥
रामनगर मारयौ करि डेरा । कालिंजर कौ पारयौ घेरा ॥
रोज अठारह गढ़ सौं लागे । चौकनि तहाँ द्यौस निसि जागे ॥
बाहिर कढ़न न पावै कोई । रहे संक सकराइ गढ़ोई ॥
लई रोकि चारिउ दिस गैलैं । गढ़ पर परै रैन दिन ऐलै ॥

चिंतामनि सुर की तहाँ, कीनौ आइ सुदेस ।
अति आदर सौ लैं चले, न्योतौ करि निज देस ॥

× × ×

न्यौतौ करि कीनी महिमानी । धन्य घरी सबही वह मानी ॥
तातैं तुरी तिलक में दीनौ । उर आनन्द परस्पर लीनौ ॥
ह्वाँ तै कूच बिदा ह्वै कीनौ । कालिंजरहिं दाहिनौ दीनौ ॥
लरैं उमड़ि तहँ सुभट अन्यारे । घाटी रोकि बीर गढवारे ॥
छत्रसाल त्यौं हल्ला बोल्यो । खग्गन खेल बुंदेलन खोल्यो ॥
समर भूमि अरि-लोथिन पाटी । रोकी रुकै कौन की घाटी ॥
बारि बनहरी लूट मचाई । धामौनी सौं लई लराई ॥
पटना अरु पारौलि उजारै । तहवरखाँ पै परी पकारै ॥

फौज जोर तहवर तहाँ, ठने जूझ के ठान ।
गौने में छत्रसाल के, दल कौ पर्यौ मिलान ॥

× × ×

पर्यौ मिलान जाइ जब गौने । करकैं तंबू तनै सलौनै ॥
दहिनी दिसि उतरे बलदाऊ । जहँ गोली पहुँचे पहुँचाऊ ॥
थम्हे अपनी अपनी पाली । परयौ पहार पीठ तन खाली ॥
ऊपर सिखर चौपरा जान्यौ । सौ देखन छत्ता उर आन्यौ ॥
छरी भीर कौतुक मन बाढ़े । चढ़ि करि भये शिखर पर ठाढ़े ॥
ज्यौं यह खबर जसूसन दीनी । त्यौं तहबरखाँ बागै लीनी ॥
बखतरपोस सहस दस धाये । प्रलै मेघ से उमड़त आये ॥
निकट आइ धौंसा घहरानै । हयखुरथार छटा छहरानै ॥

बड़ी फौज उमड़ी निरखि, रच्यौ छता घमसान ।
चढ़ि सनमुख रनमुख तहाँ, बरषन लाग्यौ बान ॥

× × ×

बरषन लाग्यौ बान बुंदेला । कियौ तुरक दै ढाल ढकेला ॥
बखतर पोस बान सों फूटै । नल से छतज छांछ के छूटै ॥
कौतुक देखि जोगिनी गाई । खप्पर जटनि माजती धाई ॥
बिसुनदास तहँ मार मचाई । ओप कटेरहि भली चढ़ाई ॥
गह्यो पहार बुंदेला गाढ़े । त्यौं पठान पैठे मन बाढ़े ॥
चंड लेहु दुहूँ दिसि ठहरानै । सूरज गगन मध्य ठहिरानै ॥
सोर सिंहनादन के माचै । भूत बिताल ताल दै नाचै ॥
डेरन खबर जूझ की पाई । सुभट भीर त्यौं उमड़त आई ॥

चड़े रंग सफजंग के, हिन्दू तुरक अमान ।
उमड़ि उमड़ि दुहुँ दिसि लगे, कौरन लोहौ खान ॥

× × ×

कौरन लोह खान भट लागे । दुहूँ ओर रन में रस पागे ॥
सुरतनाल हथनालै छूटी । गरजि गरजि गाजै सी टूटी ॥
गोलिन तोरन की झर लाई । माची सेल्ह समसेरन धाई ॥
त्यौं लच्छे रावत प्रभु आगै । सेल्हन मार करी रिस पागै ॥
प्रबल पठान मारि कै साऊ । कढ्यो मिश्र हरिकृष्ण अगाऊ ॥
उमड़ि लोह लपटन मन दीनौ । तनके होम स्वामि हितु कीनौ ॥
बावराज परिहार पचारयौ । सार पैर रबि-मंडल फारयौ ॥
जूझयौ नन्दन छिपी सभागौ । ब्योतन लग्यो इन्द्र कौ बागौ ॥

कृपा राम सिरदार त्यौं, कढ्यौ धँधेरौ धीर ।
बैठ्यो जाइ बिमान चढ़ि, भानु भेदि वह बीर ॥

× × ×

उतहि पठान चढ़त गिरि आवैं । इत छत्रसाल बाल बरसावै ॥
इक इक बान दुद्वै भट फूटै । झुक झुक तऊ झपट रन जूटै ॥
बान बेग जगतेस हंकारयौ । त्यौं करवान झरप झुक झारयौ ॥
घाउ ओड़ि भुज ऊपर लीनै । उमड़ि पाँउ रन सनमुख दीनै ॥
गिरे पठान डील त्यौं भारे । गोंलनि सेल्ह सरनि के मारे ॥
जंघा घाउ छतारे ओढ्यौ । भुजडंडन रन सिन्धु बिलोड्यौ ॥
पिले तुरक जे बखतरवारे । ते रन गिरे छता के मारे ॥
बढ़े गिरिन स्रोनित के नाले । धर धमकन धरतीतल हाले ॥

कहर जूझ द्वै पहर भौ, झर्यौ सार सो सारु ।
तेज अरिन कौ त्यौं घट्यौ, लोथन पट्यौ पहारु ।।

× × ×

बारह बीर खेत इत आये । सत्ताइस घाइल छवि छाये ।।
तुरक तीन से खेत खपाये । घाइल द्वै से बीस गनाये ।।
मारि तुरक कौ मुंह मुरकायौ । रन में बिजै बुंदेला पायौ ।।
मुरके तुरक खग्ग फिरि खोल्यो । बल दिवान पर हल्ला बोल्यो ।।
बजे नगारे फेर जुझाऊ । रन में रूप्पौ उमड़ि बलदाऊ ।।
पहर राति भर मार मचाई । मुरक्यो तुरक उहाँ खम खाई ।।
ओड़ि अरिन के ढाल ढकेला । भलौ लर्यौ बलकरन बुंदेला ।।
खभरि खेत तहवर बिचलायौ । सूबन के उर साल सलायौ ।।

सले सात सूबानि के, धक्कनि हले पठान ।
दियो भाल छत्रसाल कैं, राजतिलक भगवान ।।

श्रीधर (मुरलीधर)

दुहूँ ओर साजे महा मत्त दन्ती ।
सजे पक्खरों लक्खकी पूर पन्ती ।।
गड़ादार घेरे सिरी कट्ट बन्टा ।
गजें मेघ मानो बजे घोर घन्टा ।।
घटा श्याम सी दीह तो बिंधिमा पै ।
परी पक्खरें झालरा झूल झांपै ।।
सजे पक्खरो भक्खरों लक्ख घोरे ।
मनो भानुजू के रथी जोर जोरे ।।
चले चाइ सों चंचले चाल बाँकी ।
दर्योइ तुरुक्की तजीले इराँकी ।।
करैं पौन सी पौन की पायदारी ।
अरब्बी गरव्वी खुरीले खंभारी ।।
नचै नाटकों से पटी के चन्हावी ।
कछी पीठ पूठौ पले नीर रावी ।।
सजे संदलो और समुंदे सुरंगे ।
कबूतो बने फूलवारी सुअंगे ।।

सजे ओज संजाफ नीले हरीले ।
मुसुक्की सजे पञ्च कल्यान पीले ॥
बड़े ढील के कान छोटे नवीने ।
मुचौरी खुरी चाकरी जासु सीने ॥
बड़े चंचलें नैन के, सुक्ख साँचे ।
खुरी पाल भूमै घनी दोष वाँचे ॥
सजे साजियों चारिहूँ ओर योधा ।
सजे साज लोहा बँटो क्रुत्त क्रोधा ॥
पिले चारिहूँ ओर सूबे गरूरी ।
जिन्हो बार के शत्रु की फौज चूरी ।
कहाँ लौं कहौं फौज में सूर राजे ।
कितेको बली लै बन्दूखैं गराजे ॥
सबै सूरवां बीर बाँके बनैतै ।
सजे साज बाजी चढ़े हाँक दै ते ॥
कढ़े फौज सों डाँकि घोरें धपावै ।
कितै कूह कै कै सु भाले फिरावै ॥
लख्यो दूसरी ओर गाढ़ो अनी को ।
चढ़ो कोपि के पूत दिल्ली धनी को ॥
दुहूँ ओर ठाढ़ी चमू वाहि रोकै ।
दुहूँ ओर की फौज ठाढ़ी बिलोके ॥
मुफरु कसियर शाहि के जोर सूबे ।
पिले चारिहूँ ओर साजे अजूबे ॥
बजी दीह धौंसनि आवाज अच्छी ।
चहूँधा लखीजै बरच्छी बरच्छी ॥
छुटै त्यों अरावे उठी धूरि भारी ।
धुवाँ की उठी धुंधुरारी अँध्यारी ॥
बढ़े रोशनी ऊपरी बान छूटै ।
मनो आसमानी महा लूक टूटै ॥
पिले चांटि को खेट के चारि फेरे ।
मिले ओपची तोपची यों घनेरे ॥
अहूँ फौज की वीरता को लड़ाई ।
चमूँ शत्रु की चूर कै कै हटाई ॥

बली उत्तरी फौज के गर्व ऐंठे।
महा मोरचा भीड़ि के पेलि पैठे॥
लख्यो एजुदीं बार छूटो दुवारो।
परी भाग भाग्यो तकै कोह नारो॥
सँभारे न घोरे रथी हेम हाथी।
सँभारे न कोऊ कछू संग साथी॥
किहूँ छाँड़ि घोरैनि डार्यो हथ्यारो।
किहूँ भाग सों आगेही पत्थ धारो॥
करै कोऊ हाहा परै कोऊ पैयाँ।
चले रामरे गाँव झैझा बकैयाँ॥
घुसे बीहरो भाग केते निकामी।
किते को करे बन्दि नामी निनामी॥
किते को गुमानी गरूरे निछाए।
बड़े हौंसिला कै तिया संग लाए॥
तिन्हें छोड़ि भागे छुटी चाल बाँकी।
गये फूटि तामे फटी हौंस नाकी॥
सु रोवै असीले फसीले सहेली।
पुकारे खुदा आय दै कौन मेली॥
गरोढ़ा बरो झांकि झींके सुरोसैं।
सबै मौजदी कों भरे नैन कोसैं॥
कहूँ बैदरा को बड़ी धूम धाई।
चहूँ बुन्च लुच्चानि ले आग लाई॥
बरैं छावनी छाँह डेरा सुभारी।
महाभीम फैली धुवाँ की अँध्यारी॥
कहूँ आँच के तेज सो लाल फूटैं।
कहूँ बैदरा बीर बाजार लूटैं॥
कहूँ बाँस की गाँठ फूटैं पटक्कैं।
चटापट्ट पाषान भारी पटक्कैं॥
लुटै केसरौ दाख दारयो छुहारो।
लुटे चारु कस्तूरिका घन्न सारो॥
कहूँ होत मोती बरैं चूर चूना।
कहूँ लै लुटेरे करं मोट दूना॥

जरैं चार आचर जूरी चिरौंजी ।
कहूँ कौलगट्टे कसेरू करोंजी ।।
जरैं औ लुटैं चीर चीरा जरी के ।
परे भोट के मोट लूटैं परी के ।।
भये बेदरां जौहरी लूटि लूटैं ।
छिटे ज्वारि लौं मोट मुक्तानि छूटैं ।।
किती तो जरैं हाय हा रट्ट लागी ।
किती कामिनी दामिनी रूप भागी ।।

× × ×

आयो मौजदीन इततें फरुकसाहि,
दुहूँ ओर सोर ललकारें बीर बीर की ।
भरा भरी गोलनि की झरा झरी तेग की,
कटारिन की कराकरी तरातरी तीर की ।
श्रीधर बिलायो दौरि बीरन की भीर रुंड,
मंडन को मेरु श्रोन सलिता गँभीर की ।
बाह बाह करै पातसाह रु सिपाह सब,
देखो रे दिलेरी यारो मुशरफ मीर की ।।

× × ×

कोऊ ढूंढ़ौ कोऊ बारो काहू मैं न गुन भारो,
कोऊ वारनारी बस मन में न आयो है ।
सुन्दर सुजान सुजा सीलवंतु ओजवान,
दान पूरो एकै तोहि विधि ने बनायो है ।
श्रीधर भनत सानी जलालदीं अकबर,
फरुकसियर पातसाह वर पायो है ।
बाल पातसाहति सोयंवर कर करति,
तोहि देखि रीझि जयमाल पहिरायो है ।।

× × ×

गेड़ी सो अरावो टारि भेड़ी सो बिदारि दल,
खलदल खूंदि कीनो छीन एजदीन को ।
धावा करि पूरब मे डावा डारि फौजनि को,
मीन सो पकरि लीनो शाहि मौजदीन को ।
श्रीधर भनत, पातसाहिन को पातसाह,
फरुकसियर भो पनाह दुहूँ दीन को ।

मुलुक मुलुक दौरि फरदै फतूहनि को,
काँप्यो डरि गबर हरख बाढ्यो दीन को ॥

× × ×

साजि दल फरुकसियर पातसाह-पति,
श्रीधर बढ़त जब सहज सिकार है।
धूमरु सुभासा में अराम इसफां कित,
सुनि जलधर धुनि धौंसा की धुकार है।
हबसाने हहल खँधारिन के खलभल,
बलक बदक सान जान न रुका रहे।
तारा दे केवारा दे केवारा देके वारा देहि,
पौरि पौरि लंकपुर परत पुकार है॥

× × ×

दक्खिन दहेलि पेलि पच्छिम उदीची जीति,
पूरब अपूरब हठीलो हाथु लायो है।
श्रीधर शहनशाहि फरुकसियर नर,
सातो दीप सरहद्द हिन्द की मिलायो है।
दिन दिन बाढ़ति है बाढ़िहइ दिन दिन,
दिन दिन दूनी पातशाहति बढ़ायो है।
और पातशाह पातशाही पायो जब पाए,
तोसों पातशाह पातशाही जेब पायो है॥

× × ×

शादी शादियाने के उछाह आतपत्रनि के,
अङ्ग अङ्ग बाढ़े रङ्ग बाढ़े हैं रखत के।
तेरी पातशाही, पातशाही पायी जेब फल,
ठाढ़े नभ सुमन प्रसून बरखत के।
श्रीधर भनत पातशाहन को पातशाह,
फरुकसियर नर जबर नखत के।
तिनके बखत जे वै लखत तखत तोहिं,
बैठत तखत बढे बखत तखत के॥

भिखारीदास

अँखियाँ हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी,
मोहू तें जु न्यारी दास रहैं सब काल में।

कौन गहे ज्ञानैं, काहि सौंपत सयाने, कौन
लोक ओक जानैं, ये नहीं हैं निज हाल में।
प्रेम पगि रही, महा मोह में उमगि रही,
ठीक ठगि रही, लगि रही बनमाल में।
लाज को अँचै कै, कुल धरम पचै कै बृथा,
बँधन सँचै कै भई मगन गोपाल में॥

× × ×

नैनन को तरसै ए कहा लौं, कहाँ लौं हियो विरहागि मैं तैए।
एक घरी न कहूँ कल पैए, कहाँ लगि प्रानन को कलपैए।
आवै यही अब जी में बिचारि सखी चलि सौतिहुँ के घर जैए।
मान घटे ते कहा घटिहै जु पै प्रान पियारे को देख न पैए॥

× × ×

वाही घरी ते न सान रहै, न गुमान रहै, न रहै सुघराई।
दास न लाज को साज रहै न रहै तनकौ घर काज की घाई।
ह्याँ दिख साध निवारे रहौ तब ही लौ भटू सब भाँति भलाई।
देखत कान्हैं न चेत रहै, नहिं चित्त रहै, न रहै चतुराई॥

× × ×

ऊधौ! तहाँ ई चलौ लै हमें जहँ कूबरि कान्ह बसै एक ठौरी।
देखिए दास अघाय अघाय तिहारे प्रसाद मनोहर जौरी।
कूबरी सों कछु पाइए मंत्र लगाइए कान्ह सों प्रीति की डौरी।
कूबरि भक्ति बढ़ाइए बंदि, चढ़ाइए चन्दन बन्दन रौरी॥

× × ×

जाति में होति सुजाति कुजाति न काननि फोरि करी अघ साँसी।
केवल कान्ह की आस जियों जग दास करो किन कोटिन हाँसी।
नारि कुलीन कुलीननि सें रमै मैं उनमें चह्यो एकन आँसी।
गोकुल नाथ के हाथ बिकानी वे हैं कुलहीन तौ हौं कुल नासी॥

× × ×

दीपक जोति मलीनी भई मनि भूषन जोति की आतुरियाँ है।
दास न कौल कल विकसी निज, मेरी गई मिलि आँगुरियाँ है।
सीरी लगै मुकतावलि तेऊ कपूर की धूरिन सो पुरियाँ है।
पौढ़े रहौ पट ओढ़े इतौ निसि बोलै नहीं चिरियाँ, चुरियाँ है॥

× × ×

सोभा सुकेसी की केसन में है तिलोत्तमा की तिल बीच निसानी।
उर्बसी ही में बसी मुख की अनुहारि सो इन्दिरा में पहिचानी।
जानु को रंभा सुजान सुजान है दास जू बानी में बानी समानी।
एती छबीलिन सों छबि छीनि कै एक रची विधि राधिका रानी ॥

× × ×

कौन सिंगार है मोरपखा यह लाल छुटे कच कांति की जोटी।
गुंज के माल कहा यह तो अनुराग गरे परयो लै निज खोटी।
दास बड़ी बड़ी बातें कहा करौ आपने अंग की देखो करोटी।
जानों नहीं यह कंचन से तिय के तन के कसिबे की कसोटी ॥

× × ×

आनन हैं अरबिन्द न फूले अलीगन भूले कहा मड़रात हौ।
कीर तुम्हें कहा बाय लगी भ्रम बिम्ब के ओठन को ललचात हौ।
दास जू व्याली न बेनी बनाव है पापी कलापी कहा इतरात हौ।
बोलती बाल न बाजती बीन कहा सिगरे मृग घेरत जात हौ ॥

× × ×

अरबिन्द प्रफुल्लित देखि कै भौंर अचानक जाइ अरैं पै अरैं।
बनमाल थली लखि के मृग सावक दौरि विहार करैं पै करैं।
सरसी ढिग पाइ कै ब्याकुल मीन हुलास सों कूदि परैं पै परैं।
अवलोकि गुपाल को दास जू ये अँखिआँ तजि लाज ढरैं पै ढरैं ॥

× × ×

आली दौरि दरस दरस लेहि लेरी री इन्दु-
बदनी अटर में नँद नन्द भूमि थल मैं।
देखा देखी होत ही सकुच छूटी दुहुन की,
दोऊ दुहू हाथनि बिकाने एक पल मैं।
दुहूँ हिय दास खरी अरी मैन सर गाँसी,
परी दिढ़ प्रेम फाँसी दुहुन के गल मैं।
राधे नैन तैरत गोबिन्द तन पानिप मैं,
पैरत गोबिन्द नैन राधे रूप जल मैं ॥

× × ×

प्रेम तिहारे तें प्रानपिया सब चेत की बात अचेत ह्वै मेटति।
पायो तिहारो लिख्यो कछु सो छिनही छिन बाँचत खोलि लपेटति।
छैल जू सैल तिहारी सुने तेहि गैल की धूरि लै नैन धुरेटति।
रावरे अंग कौ रंग बिचारि तमाल की डार भुजा भरि भेंटति ॥

× × ×

न्यारो न होत बफारो ज्यों धूम में धूम ज्यों जात घनै घन में हिलि।
दास उसास रलै जिमि पौन में पौन ज्यों पैठत आँधिन में पिलि।
कौन जुदो करै लौन ज्यों नीर में नीर ज्यों छीर में जात खरो खिलि।
त्यो मति मेरी मिली मन मेरे में मो मन गो मनमोहन सों मिलि॥

× × ×

कंज संकोचि गड़े रहैं कीच में, मीनन बोरि दियो दह नीरनि।
दास कहै मृग हू को उदास कै, बास दियो है अरण्य गँभीरनि।
आपुस में उपमा उपमेय ह्वै, नैन ए निन्दत हैं कवि धीरनि।
खंजन हूँ को उड़ाइ दियो हलुके करि डारे अनंग के तीरनि॥

× × ×

चैत की चाँदनी छीरनि सों दिगमंडल मानों पखारन लागी।
तापर सीरी बयारी कपूर की धूरि सी लैलै बगारन लागी।
भौंरन की अवली करि गान पियूष सी कान में डारन लागी।
भावती भावते ओर चितै सहजै ही में भूमि निहारन लागी॥

× × ×

आहट पाय गोपाल को बाल सनेह के गाँसनि सो गँसि जाती।
दौरि दरीची के सामुहे ह्वै दृग जोरि सो भौंहन में हँसि जाती।
दास जू जानत कोऊ कहूँ तन में मन में छबि में बसि जाती।
प्यारे की तारे कसौटिन में अपनी छबि कंचन सी कसि जाती॥

× × ×

बाग के बगर अनुराग रली देखति ही,
सुखमा सलोनी सुमनावलि अछेह की।
द्वार लगि जाती फेरि ईठि ठहराती बोलै,
औरनि रिसाती माती आसव अदेह की।
दास अब नीके ऊभि भरति उसाँसु री सु,
बाँसुरी की धुनि प्रति पाँसुरी में बेह की।
आँसी गाँसी नेह की बिसानी झर मेह की,
रही न सुधि तेह की न देह की न गेह की॥

× × ×

कहि कहि प्यारी अबै चढ़ती अटारिन पै,
काहि अवलोक्यो यह कैसो भयो ढंग है।

औरै ओर तकति चकति उचकति दास,
खरी सखि पास पै न जाने कोउ संग है।
थकि रही दीठि पग परत धरनि नीठि,
रोमनि उमग भो बदलि गयो रंग है।
नैन छलकोहैं बर बैन बलकोहैं औ,
कपोल फलकोहैं झलकोहैं भये अंग हैं॥

× × ×

क्यों चलि फेरि बचायो न क्योंहूँ कहा बलि बैठे बिचारो बिचारनि।
धीर न कोऊ धरै बलबीर चल्यो बृजनीर पहार पगारनि।
दास जू राख्यो बड़े बरखा जिहि छाँह में गोकुल गाइ गुआरनि।
छैल जू सैल सो बूड़यो चहै अब भावती के अँसुआन के धारनि॥

× × ×

आरसी को आँगन सुहायो मन भायो,
नहरन में भरायो जल उज्ज्वल सुमन माल।
चाँदनी विचित्र लखि चाँदनी बिछौने पर,
दूरि कै सहेलिन को विलसै अकेली बाल।
दास आसपास बहु भाँमिन बिराजैं धरे,
पन्ना पुखराज मोती मानिक पदिक लाल।
चन्द्र प्रतिबिम्ब तें न न्यारो होत मुख, औ
न तारे प्रतिबिम्बन तें न्यारो होत नगजाल॥

× × ×

बातैं स्यामा स्याम की न कैसी अब आली,
स्यामस्यामा तकि भाजैं स्यामा स्याम सों जकी रहै।
अब तो लखोई करैं स्यामा को बदन स्याम,
स्याम के बदन लागी स्यामा की टकी रहै।
दास अब स्यामा के सुभाय मद छकै स्याम,
स्यामा स्याम सोभन के आसव छकी रहै।
स्यामा के बिलोचन के हैं री स्याम तारे अरु,
स्यामा स्याम लोचन की लोहित लकी रहै॥

× × ×

काहू कह्यो आइ कंसराय के मिलाइबे को,
लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलंग तैं।

त्यों ही कह्यो आली सो तो गयो वह अब,
　　दैव मिलै हम कहाँ ऐसो मूढ़ बिन ढंग तैं।
दास कहै ता समै सोहागिन को कर भयो,
　　बलयावलित दुहूँ बातन प्रसंग तैं।
अधिक दरकि गई बिरह की छामता तैं,
　　अधिक तरकि गई आनन्द उमंग तैं॥

× × ×

आजु वहि गोपी की न गोपी रही हाल कछु,
　　हाल वनमाल के हिंडोरे मन झूलिगो।
अँखियाँ मुखाम्बुज मे भौंर ह्वै समानी भई,
　　बानी गद्गद कंठ कदम सो फूलिगो।
जा मग सिधारे नंदनंद ब्रज स्वामी दास,
　　जिनकी गुलामी मकरध्वज कबूलि गो।
वाही मग लागो नेह घट मे गँभीर भारी,
　　नीर भरिबे को घट घाटहि मे भूलिगो॥

× × ×

दास के ईस जबै जस रावरो गावती देववधू मृदु तानन।
जातो कलंक मयंक को मूँदि औ घाम ते काहू सतावतो भानन।
सीरो लगै सुनि चौंकि चितै दिगदन्ति तकै तिरछो दृग आनन।
सेत सरोज लगै कै सुभाय घुमाय कै सूँड़ मलै दुहुँ कानन॥

× × ×

जूगनू भानु के आगे भली बिधि आपनी जोतिन्ह को गुन गैहै।
माखियो जाइ खगाधिप सो उड़िबे की बड़ी बड़ी बात चलैहै।
दास जबै तुक जोरनहार कबिन्द उदारन की सरि पैहै।
तौ करतारहु सो औ कुम्हार सो एक दिना झगरो बनि ऐहै॥

× × ×

कल कंचन सो वह अंग कहाँ औ कहाँ यह मेघन सो तनु कारो।
कहाँ कौल कली बिकसी वह होइ कहाँ तुम सोइ रहो गहि डारो।
नित दास जू ल्यावहि ल्याउ कहौ कछु आपनो वाको न बीच बिचारो।
वह कोमल गोरी किसोरी कहाँ औ कहाँ गिरिधारन पानि तिहारो॥

× × ×

जेहि मोहिबे काज सिंगार सज्यो तेहि तेखत मोह में आय गई।
न चितौनि चलाय सकी, उनहीं की चितौनि के घाय अघाय गई।
वृषभानलली की दसा यह दास जू देत ठगौरी ठगाय गई।
बरसाने गई दधि बेचन को तहँ आपुही आपु बिकाय गई॥

पदमाकर

आई खेलि होरी घरै नवलकिसोरी कहूँ,
बोरी गई रंग में सुगंधिनि झकोरै है।
कहै पदमाकर इकंत चलि चौकी चढ़ि,
हारन के बारन तैं फंद बंद छोरै है।
घाँघरे की घूमनि सु ऊरुन दुबीचे दाबि,
आँगी हू उतारि सुकुमारि मुख मोरै है।
दंतनि अधर दाबि दूनरि भई सी चापि,
चौवर पचौवर के चूनरि निचोरै है॥

× × ×

सोभित स्वकीया गन गुन गनती में तहाँ,
तेरे नाम ही की एक रेखा रेखियतु है।
कहै पदमाकर पगी यों पति प्रेम ही में,
पदुमिनि तो सी तिया तू ही पेखियतु है।
सुबरन रूप जैसो तैसो सील सौरभ है,
याही तैं तिहारो तन धन्य लेखियतु है।
सोने में सुगंध न सुगंध में सुन्यो री सोनो,
सोनो औ सुगंध तो मैं दोनों देखियतु है॥

× × ×

खेद को भेद न कोऊ कहै ब्रत आँखिन हूँ अँसुवान को धारो।
त्यों पदमाकर देखती हौ तनकौ तन कंप न जात सँभारो।
ह्वै धौं कहा को कहा गयो यों दिन द्वैक ही तें कछु ख्याल हमारो।
कानन में बसी बाँसुरी की धुनि प्रानन में बस्यो बाँसुरीवारो॥

× × ×

पीतम के संग ही उमगि उड़ि जैबे कों,
न एती अंग-अंगनि परंद पखियाँ दई।
कहै पद्माकर जे आरती उतारैं चौंर ढ़ारैं,
श्रम हारै पै न ऐसी सखियाँ दई।
देखि दृग द्वै ही सों न नेक हू अघेये,
इन ऐसे भुकाभुक में झपाक झखियाँ दई।
कीजै कहा राम स्याम-आनन बिलोकिबे कों,
बिरचि बिरंचि न अनंत अँखियाँ दई॥

× × ×

भाल पै लाल गुलाल गुलाल सों गेरि गरे गजरा अलबेलो।
यों बनि बानिक सों पदमाकर आये जु खेलन फाग तौ खेलौ।
पै इक या छबि देखिबे के लिये मो बिनती कै न झोरिन झेलौ।
रावरे रंग-रँगी अँखियान में ए बलबीर अबीर न मेलौ॥

× × ×

गोकुल के कुल के, गली के गोप गाँवन के,
जौ लगि कछू को कछू भारत भनैं नहीं।
कहै पद्माकर परोस पिछवारन तैं,
द्वारन तैं दौरि गुन-औगुन गनैं नहीं।
तौ लौं चलि चातुर सहेली आइ कोऊ कहूँ,
नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नहीं।
हौं तौ स्याम-रंग में चुराइ चित चोराचोरी,
बोरत तौ बोर्यो पै निचोरत बनै नहीं॥

× × ×

जब लौं घर को धनी आवै घरै तब लौं तौ कहूँ चित देबौ करौ।
पदमाकर ये बछरा अपने बछरान के संग चरैबौ करौ।
अरु औरन के घर तें हम सों तुम दूनी दुहावनी लेबौ करौ।
नित साँझ-सबेरे हमारी हहा हरि! गैया भला दुहि जैबौ करौ॥

× × ×

आरस सों आरत सँभारत न सीस-पट,
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहै पद्माकर सुगन्ध सरसावै सुचि,
बिथुर बिराजैं बार हीरन के हार पर।

छाजति छबीली छिति छहरि छरा को छोर,
भोर उठि आई केलि मन्दिर के द्वार पर।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरै,
एक कर कंज एक कर है किवार पर॥

× × ×

हौं अलि आज बड़े तरके भरि कै घट गोरस कौं पग धारी।
त्यों कब को धौं खर्‌यो री हुती पदमाकर मो हित मोहनिवारी।
साँकरी खोरि मैं काँकरी की करि चोट चलो फिर लौटि निहारी।
ता खिन तें इन आँखिन तें न कढ़्यो वह माखन चाखनहारी॥

× × ×

है नहिं माइको मेरी भटू यह सासुरो है सब की सहिबो करौ।
त्यों पदमाकर पाइ सोहाग सदा सखियान हु कों चहिबो करौ।
नेह-भरी बतियाँ कहि कै नित सौतिन की छतियाँ दहिबो करौ।
चंदमुखी कहें होती दुखी तौ न कोऊ कहैगो सुखी रहिबो करौ॥

× × ×

राधिका सों कहि आई जु तू सखि साँवरे की मृदु मूरति जैसी।
ता छिन ते पदमाकर ताहि सुहात कछू न बिसूरति वैसी।
मानहु नीर-भरी घन की घटा आँखिन में रही आनि उनै-सी।
ऐसी भई सुनि कान्ह-कथा जु बिलोकहिगी तब होइगी कैसी॥

× × ×

ऐहै न फेरि गई जो निसा तनु यौवन है धन की परछाहीं।
त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदा हीं।
कौन सयान जो कान्ह सुजान सों ठानि गुमान रही मन माहीं।
एक जु कंज-कली न खिली तौ कहा कहूँ भौंर कों ठौर है नाहीं॥

× × ×

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलिन-कलीन किलकंत है।
कहै पदमाकर परागन में पौन हूँ में,
पानन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन में,
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है।

बीथिन में ब्रज में नबेलिन मे बेलिन मे,
बनन में बागन मे बगरो बसंत है ॥

× × ×

और भाँति कुंजन में गुंजरत भौर भीर,
और डौर झौरन मे बौरन के ह्वै गये।
कहै पदमाकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरे छबि छ्वै गये।
औरे भाँति बिहंग समाज मे आवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आन दिन द्वै गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये ॥

× × ×

पात बिन कीन्हे ऐसी भाँति गन बेलिन के,
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंज हैं।
कहै पदमाकर बिसासी या बसंत के,
सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं।
ऊधो यह सूधो सो संदेसो कहि दीजो भले,
हरि सो, हमारे ह्याँ न फूले बन कुंज हैं।
किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन की,
डारन पै डोलत अंगारन के पुंज हैं ॥

× × ×

मल्लिकन मंजुल मलिंद मतवारे मिले,
मंद-मंद मारुत मुहीम मनसा की है।
कहै पदमाकर त्यो नदन नदीन नित,
नागर नवेलिन की नजर नसा की है।
दौरत दरेरौ देत दादुर सु दुंदे दीह,
दामिनी दमकत दिसान में दसा की है।
बहलनि बुंदनि बिलोकौ बगुलान बाग,
बंगलान बेलिन बहार बरसा की है ॥

× × ×

चंचला चमाकैं चहूँ ओरन ते चाह भरी,
चरजि गई तो फेरि चरजन लागी री।

कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता,
लरजि गई तो फेरि लरजन लागी री।
कैसे धरौं धीर बीर त्रिविध समीर तन,
तरजि गई तो फेरि तरजन लागी री।
घुमड़ि घमंड घटा घन की घनेरी अवै,
गरजि गई तो फेरि गरजन लागी री।।

× × ×

या अनुराग की फाग लखौ जहँ राँगती राग किसोर किसोरी।
त्यों पदमाकर घाली घली फिरि लाल ही लाल गुलाल की झोरी।
जैसी किं तैसी रही पिचकी कर काहू न केसरि रंग में बोरी।
गोरिन के रँग भीजिगो साँवरो साँवरे के रंग भीजिगै गोरी।।

× × ×

प्रानन के प्यारे तन-ताप के हरनहारे,
नंद के दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं।
कहै पदमाकर उरूजे उर अन्तर यों,
अन्तर चहें हूँ जे न अन्तर चहत हैं।
नैननि बसे हैं अंग-अंग हुलसे हैं रोम—
रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं।
ऊधो वै गोविन्द कोऊ और मथुरा में यहाँ,
मेरे तो गोविन्द मोहि-मोहि मैं रहत हैं।।

× × ×

ए हो नन्दलाल ऐसी व्याकुल परी है बाल,
हाल ही चलौ तो चलौ जोरी जुरि जायगी।
कहै पदमाकर नहीं तौ ये झकोरे लगैं,
ओरे लौं अचाक बिन घोरे घुरि जायगी।
सीरे उपचारन घनेरे घनसारन को,
देखत ही देखौ दामिनी लौं दुरि जायगी।
तौ ही लग चैन जौ लौं चेती है न चंदमुखी,
चेतैगी कहूँ तौ चाँदनी में चुरि जायगी।।

× × ×

बकसि बितुंड दये झुंडन के झुंड रिपु—
मुंडन की मालिका दई ज्यों त्रिपुरारी को।

कहै पद्माकर करोरन को कोष दये,
षोड़स हू दीन्हे महादान अधिकारी को।
ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये,
अन्न-जल दीन्हे जगती के जीवधारी को।
दाता जयसिंह दोय बात तौ न दीनी कहूँ,
बैरिन को पीठि और डीठि परनारी को॥

× × ×

संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै, ताहि
तुरत लुटावत बिलंब उर धारै ना।
कहै पद्माकर सुहेममय हाथिन के,
हलके हजारन के बितरि बिचारै ना।
गंज-गज - बकस महीप रघुनाथराव,
याहि गज धोखे कहूँ काहू देइ डारै ना।
याही डर गिरिजा गजानन को गोइ रही,
गिरि ते गरे ते निज गोद ते उतारै ना॥

× × ×

बछरै खरी प्यावै गऊ तिहि को पद्माकर को मन लावत है।
तिय जानि गिरैयाँ गही बनमाल सु ऐंचे लला इँच्यो आवत है।
उलटी करि दोहनी मोहनी की अँगुरी थन जानि के दावत है।
दुहिबो औ दुहाइबो दोउन की सखि देखत ही बनि आवत है॥

× × ×

फाग के भीर अभीरन मे गहि गोबिन्द लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाइ अबीर की झोरी।
छीन पितंमर कंमर ते सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाइ कही मुसकाइ लला फिरि आइयौ खेलन होरी॥

× × ×

मोहि लखि सोवत बिथोरि गो सुबेनी बनी,
तोरि गो हिये को हरा छोरि गो सुगैया को।
कहै पद्माकर त्यों घोरि गो घनेरो दुख,
बोरि गो बिसासी आज लाज ही की नैया को।
अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास यहै,
सोचत खरी मै परी जोवत जुन्हैया को।

बूझैंगी चवैया तब केहौं कहा दैया, इत
पारि गो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को ।।

× × ×

दूर ही ते देखत बिथा मैं वा बियोगिनि की,
आई भले भाजि ह्याँ इलाज मढ़ि आवैगी ।
कहै पदमाकर सुनो हो घनस्याम, जाहि
चेतत कहूँ जो एक आहि कढ़ि आवैगी ।
सर सरितान कों न सूखत लगैगी देर,
एती कछू जुलमिनि ज्वाला बढ़ि आवैगी ।
ता के तन-ताप की कहौं मैं कहा बात, मेरे
गातहि छुवौ तौ तुम्हें ताप चढ़ि आवैगी ।।

× × ×

चितै-चितै चारों ओर चौंकि-चौंकि परै, त्यों ही
जहाँ-तहाँ जब-तब खटकत पात हैं ।
भाजन-लो चाहत, गँवार ग्वालिनी के कछू,
डारनि डराने से उठाने रोम गात हैं ।
कहै पदमाकर सु देखि दसा मोहन की,
सेष हु महेस हु सुरेस हु सिहात हैं ।
एक पाय भीत एक पाय मीत-काँधे धरे,
एक हाथ छीको एक हाथ दधि खात हैं ।।

× × ×

कूरम पै कोल कोल हू पै सेष-कुंडली है,
कुंडली पै फबी फैल सुफन हजार की ।
कहै पदमाकर त्यों फन पै फबी है भूमि,
भूमि पै फबो है छिति रजत-पहार की ।
रजत-पहार पर संभु सुरनायक हैं,
संभु पर ज्योति जटाजूट है अपार की ।
संभु जटाजूटन पै चंद की छुटी है छटा,
चंद की छटान पै छटा है गंग धार की ।।

× × ×

करम को मूल तन तन मूल जीव जग,
जीवन को मूल अति आनन्द को धरिबो ।

कहै पद्माकर त्यों आनन्द को मूल राज,
राज मूल केवल प्रजा को भौन भरिबो।
प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिबो।
जज्ञन को मूल धन, धन-मूल धर्म, अरु
धर्म-मूल गंगाजल बिन्दु पान करिबो ॥

× × ×

हौं तो पंचभूत तजिबे को तक्यौ तोहि पर,
तैं तो कर्‌यो मोहिं भलो भूतन को पति है।
कहै पद्माकर सु एक तन तारिबे में,
कीन्हें तन ग्यारह कहौ सो कौनि गति है।
मेरे भाग गंग बहै लिखी भागीरथी तुम्हें,
कहिए कछुक तौ कितेक मेरी मति है।
एक भवसूल आयौं मेटिबे को तेरे कूल,
तोहि तौ त्रिसूल देत बार न लगति है ॥

× × ×

लोचन असम अंग भसम चिता को लाइ,
तीनों लोक नायक सो कैसे कै ठहरतो।
कहै पदमाकर बिलोकि इमि ढंग जाकै,
बेद हूँ पुरान गान कैसे अनुसरतो।
बाँधे जटाजूट बैठि परबत कूट माहिं,
महाकालकूट कहौ कैसे कै ठहरतो।
पीवै नित भंगै रहै प्रेतन के संगै, ऐसे,
पूछतो को नंगै जो न गंगै सीस धरतो ॥

× × ×

लाइ भूमिलोक तें जसूस जबरई जाई,
जाहिर खबर करी पापिन के मित्र की।
कहै पदमाकर बिलोकि जम कहि के,
बिचारौ तौ करम गति ऐसे अपवित्र की।
जौं लौं लगे कागद बिचारन कछुक तौ लौं,
ता के कान परी धुनि गंगा के चरित्र की।
वा के सीस ही तैं ऐसी गंगाधार बही जामें,
बही-बही फिरी बही चित्र औ गुपित्र की ॥

× × ×

धारत ही बन्यो ये ही मतो गुरु-लोगन को डर डारत ही बन्यो।
हारत ही बन्यो हेरि हियो, पदमाकर प्रेम पसारत ही बन्यो।
वारत ही बन्यो काज सबै अब यों मुखचंद उघारत ही बन्यो।
टारत ही बन्यो घूँघट को पट नंदकुमार निहारत ही बन्यो।।

× × ×

देखु पदमाकर गोबिन्द की अमित छवि,
संकर समेत बिधि आनंद सों बाढ़ो है।
झिझकत झूमत मुदित मुसुकात, गहि
अंचल को छोर दोऊ हाथन सों आढ़ो है।
पटकत पाँव होत पैंजनी झुनुक रंच,
नेक नेक नैनन ते नीर कन काढ़ो है।
आगे नंदरानी के तनिक पय पीये काज,
तीनि लोक ठाकुर सो ठुनुकत ठाढ़ो है।।

× × ×

कैधौं रूप रासि में सिंगार रस अंकुरित,
कंकुरित कैधौं तम जड़ित जुन्हाई में।
कहै पदमाकर किधौं यों काम कारीगर,
नुकता दियो है हेम फरद सुहाई में।
कैधों अरविन्द में मलिंदसुत सोयो आनि,
कैधों तिल सोहत कपोल की लुनाई में।
कैधौं पर्यो इंदु में कलिंदी जल बिंदु कैधौं,
गरक गुविंद भयो गोरी की गुराई में।।

× × ×

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी बाढ़ति है जो वियोग की बाधा।
त्यों पदमाकर मोहन को तबते कल है न कहूँ पल आधा।
लाल गुलाल घलाघल मैं दृग ठोकर दै गई रूप अगाधा।
कै गई कैगई चेटक सो मन लैगई लैगई लैगई राधा।।

× × ×

आवत उसासो, दुख लगै और हाँसी सुनि,
दासी उर लाय कहौ को नहि दहा कियो।
कहै पदमाकर हमारे जान ऊधौ उन,
तात को न मात को न भ्रात को कहा कियो।

कंकालिनि कूबरी कलंकिनि कुरूप तैसी,
चेटकन चेरी ताके चित्त को चहा कियो।
राधे की कहनि कहि दीजो तुम मोहन सों,
रसिक सिरोमणि कहाय ये कहा कियो॥

× × ×

ये इत घूँघट घालि चलैं उत वे जब बाँसुरी की धुनि खोलैं।
त्यों पदमाकर ये इतै गोरस लै निकसैं व चुकावत मोलैं।
प्रेम के फंदे सु प्रीति की पैठ में पैठत ही है दसा यह जो लैं।
राधामई भई श्याम की सूरत श्याममई भई राधिका डोलैं॥

× × ×

वाही के रँगी है रँग वाही के पगी है मग,
वाही के लगी है सँग आनँद अगाधा को।
कहै पदमाकर न चाह तजि नेकु दृग,
तारन ते न्यारो कियो एक पल आधा को।
ताहू पै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलत हैं,
मान मोरिबो की देखिबे की करि साधा को।
काहू पै चलाय चख प्रथम खिझावै,
फेरि बाँसुरी बजाय के रिझाय लेत राधा को॥

× × ×

साहस हुँ न कहूँ दुख आपनो भाखे बनै न बनै बिनु भाखैं।
त्यों पदमाकर यों मग मैं रँग देखति हौं कब की रुख राखैं।
वा विधि साँवरे रावरे की न मिलै मरजी न मजा न मजाखैं।
बोलनि बानि बिलोकनि प्रीति की वे मन वे न रही अब आँखैं॥

× × ×

गोकुल के कुल को तजि के भजि के बन वीथिन में बढ़ि जैये।
त्यों पदमाकर कुंज कछार विहार पहारन में चढ़ि जैये।
हैं नँदनंद गोविंद जहाँ तहाँ नंद के मंदिर में मढ़ि जैये।
यों चित चाहत एरी भटू मन मोहनै लैके कहूँ कढ़ि जैये॥

× × ×

ब्रजमंडली देखि सबै पदमाकर ह्वै रहो यो चुपचाप री है।
मनमोहन की बहियाँ मैं छुटी उलटी यह बेनी दिखा परी है।

मकराकृत कुंडल की झलकैं इतहूँ भुजमूल मैं छाप री है।
इनकी उनतें जो लगीं अखियाँ कहिये कछू तौं हमैं का परी है॥

× × ×

मो बिन माई न खाय कछू पदमाकर त्यों भई भाभी अचेत है।
बीरन आये लिवाइबे कों तिनकी मृदु बानिहू मानि न लेत है।
पीतम कों समुझावती क्यों नही ये सखो तू जु पै राखत हेत है।
और तो मोहि सबै सुख री दुख री यह मायके जान न देत है॥

× × ×

हौं अलि आजु बड़े तरके भरिके घट गोरस को पग धारो।
त्यों कबको धौं खरोइ हुतो पदमाकर मोहत मोहनी वारो।
साँकरी खोरि में काँकरि की करि चोट चल्यो फिरि लौटि निहारो।
ता खन ते इन आँखन ते न टर्यो वह माखन चाखन हारो।'

× × ×

खेलिये फाग निसंक ह्वै आज मयंकमुखी कहैं भाग हमारो।
लेहु गुलाल दुहूँ कर मैं पिचकारिन रंग हिये मँह मारो।
भावै तुमै सो करो मोहिं लाल पै पाँय परौं जिन घूँघट टारो।
बीर की सौं हम देखिहैं कैसे अबीर तौ आँखैं बचाय के डारो॥

× × ×

चंदकला चुनि चूनरी चारु, दई पहिराइ लगाइ सु रोरी।
बेंदी बिसाखा रची पदमाकर, अञ्जन आँजि समाज करोरी।
लागी जबै ललिता पैहराँमन, स्याम कौं कंचुकी केसरि-बोरी।
हेरि हरे मुसिकाइ रही, अँचरा मुख दै वृषभान किसोरी॥

× × ×

घर ना सुहात ना सुहात बन बाहर हूँ,
बाग ना सुहात जे खुशाल खुशबोही सों।
कहै पदमाकर घनेरे धन धाम त्यों ही,
चंद न सुहात चाँदनी हूँ जोग जोही सों।
साँझ ना सुहात ना सुहात दिन माँझ कछू,
व्यापी यह बात सो बखानत हौं तो ही सों।
राति ना सुहात ना सुहात परभात आली,
जब मन लागि जात काहू निरमोही सों॥

× × ×

मोहि तजि मोहनै मिल्यौ है मन मेरो दौरि,
नैन हूँ मिलै हैं देखि देखि साँवरो शरीर।
कहै पदमाकर त्यो कानमय कान भये,
हौं तौ रही जकि थकि भूली सी भ्रमी सी बीर।
ये तौ निरदई दई इनको दया न दई,
ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौ तन धीर।
हो तो मन हूँ के मन नैनन के नैन जो पै,
प्रानन के प्रान तो पै जानते पराई पीर॥

× × ×

ईश की दुहाई शीशफूल तें लटकि लट,
लट तैं लटकि लट कंध पै ठहरिगो।
कहै पदमाकर सुमंद चलि कंध हूँ तैं,
भूमि भ्रमि भाँई-सी भुजा में त्यो भभरिगो।
भाँई सी भुजा तैं भ्रमि आयो गोरी गोरी बाँह,
गोरी बाँह हूँ तै चापि चूरिन में अरिगो।
हेरे हरैं हरैं हरी चूरिन तैं चाहौ जौ लौं,
तौ लौं मन मेरो दौहि तेरे हाथ परिगो॥

× × ×

'बोलति न काहे' एरी, 'पूछे बिन बोलौ कहा',
पूछति हौं 'कहा भई भेद अधिकाई है'।
कहै पदमाकर 'सुमारग के गये आये',
'साँची कहू मो सो कहाँ आजु गई-आई है'।
'गई-आई हौ तो साँवरे के पास' 'कौन काज',
'तेरे काज ल्यावन सु तेरी ही दुहाई है'।
'काहे ते न ल्याई फिरि मोहन बिहारी जू कौं',
'कैसे वाको ल्याऊँ' 'जैसे वाको मन ल्याई है'॥

× × ×

लागत बसंत के सु पाती लिखी प्रीतम कौं,
प्यारी परबीन है हमारी सुधि आनबी।
कहै पदमाकर इहाँ को यो हवाल,
बिरहानल को ज्वाल सो दवानल ते मानबी।

अब को उसासन को पूरो परगास सो तौ,
निपट उसास पौन हू ते पहिचानबी।
नैनन को ढंग सो अनंग पिचकारिन तैं,
गातन को रंग पीरे पातन तें जानबी॥

ग्वाल

आए पास कौन के हो, भूले कौन भौन के हौ,
डगमग गौन के हौ, देह मौज-माँची है।
पाग-पेच ढीले भये, दृग उनमीले भये,
तऊ न लजीले भये, पाठी भली बाँची है।
'ग्वाल कवि' और न उपाय ब्रजराज अब,
जाउ-जाउ जहाँ चाउ, मैं तो यह जाँची है।
घर की जो मिसरी सो फीकी सी लगन लागै,
मीठी गुड़ चोरी कौ, कहन यह साँची है॥

× × ×

मेरे मन-भावन न आये सखि! सावन में,
तावन लगी है लता लरजि लरजि कै।
बूँदैं कबौं रूँदैं, कबौ धारैं हिय फारैं दैया!
बीजरी हू बारैं, हारी बरजि बरजि कै।
'ग्वाल कवि' चातकी परम पातकी सों मिलि,
मोर हू करत सोर तरजि तरजि कै।
गरजि गये जे घन, गरजि गये हैं भला,
फेर ए कसाई आये गरजि गरजि कै॥

× × ×

गावैं गुन नारद, न पावैं पार सनकादि,
वंदीजन हारे, हरी मेधा मंजु सेस की।
दरस किये ते अति हरस सरस होत,
परमपुनीत होत पदवी सुरेस की।
'ग्वाल कवि' महिमा कही न परै काहू विधि,
बैठे रहि महिमा दसा है यों गनेस की।
जारक जमेस की, विदारक कलेस की है,
तारक हमेस की है तनया दिनेस की॥

× × ×

अविधि सुरापी घोर तापी नीच पापी-मुख,
रविजा तिहारी बूंद लघु अति ह्वै गई।
ताही छिन पल में अमल भल रूप भयो,
कुटिल कुढंग ताकी रेख-लेख ध्वै गई।
'ग्वाल कवि' कीरति सुचीरति दिसान जाति,
दूतन की चित्र की चलाँकी-चित ख्वै गई।
चार मुख चन्द्रधर चाहत चितौत ताहि,
चारन के देखत ही चार भुज ह्वै गई॥

× × ×

ख्याल जमुना के लखि नाके भये चित्रगुप्त,
बैन करुना के बोलि मेरी मति ख्वै गई।
कौन गहै कर मैं कलम कौन काम करै,
रोस की दवाइति सों रोसनाई ध्वै गई।
'ग्वाल कवि' काहे ते न कान दै जमेस सुनौ,
नौकरी चुकाय कहाँ तेरी आँख स्वै गई।
लेखो भयो ड्योढ़ो रोजनामा को सरेखो भयो,
खाता भयो खतम फरद रद ह्वै गई॥

× × ×

आन भरी अधिक कृसान भरी पापिन को,
दान भरी दीरघ प्रमान मान कमुना।
तेज भरी मंजुल मजेज भरी रीझभरी,
खीझ भरी दूतन को दाहै दौरि समुना।
'ग्वाल कवि' सुखद प्रतीति भरी रीति भरी,
परम पुनीत भरी मीत भरी भ्रमुना।
जंग भरी जमते, उमंग भरी तारिबे को,
रंग भरी तरल तरंग तेरी जमुना॥

× × ×

ग्रीषम की गजब धुकी है धूप धाम धाम,
गरमी झुकी है जाम जाम अति तापिनी।
भीजे खस बीजन झलेहू ना सुखात स्वेद,
गात न सुहात, बात दावा सी डरापिनी।
'ग्वाल कवि' कहै कोरे कुम्भन तें कूपन तें,
लै लै जलधार बार बार मुख थापिनी।

जब पियो तब पियो, अब पियो फेरि अब,
पीवत हूँ पीवत बुझै न प्यास पापिनी ॥

× × ×

मोरन के सोरन की नेकौ न मरोर रही,
घोरहूँ रही न घन घने या फरद की।
अम्बर अमल, सर सरिता बिमल भल,
पंक को न अंक और न उड़नि गरद की।
'ग्वाल कवि' चित मैं चकोरन के चैन भये,
पंथिन की दूर भई दूखन दरद की।
जल पर थल पर महल अचल पर,
चाँदी सी चमक रही चाँदनी सरद की ॥

× × ×

जेठ को न त्रास जाके पास ये बिलास होंय,
खस के मवास पै गुलाब उछरयो करै।
बिही के मुरब्बे डब्बे चाँदी के वरक भरे,
पेठे पाग केवरे में बरफ परयो करै।
'ग्वाल कवि' चन्दन चहल मैं कपूर चूर,
चंदन अतर तर बसन खरयो करै।
कंजमुखी कंजनैनी कंज के बिछौनन पै,
कंजन की पंखी करकंज तें करयो करै ॥

× × ×

तुम कैसी आई, मैं तौ दधि वेचि आवति ही,
नाहर निकसि आयौ बन बजमारे तें।
वा ने मैं न देखी, मैं अचक भजी चपकी सी,
धँसी मैं करीर की कुटी में डर भारे तें।
'ग्वाल कवि' बेंदी गई छरा फँस्यौ, आँगी चली,
छिदे ये कपोल, देखो अति उरझारे तें।
आस ही न जीवन की, राम ने बचाय राखी,
मरु कै बची हों सास! धरम तिहारे तें।

× × ×

राति है अंधेरी, फेरि द्वारन किंवार दैया,
हेरी बहुतेरी, वह राह अति बंक री।

सास ! तू पठावै लैन जामन सितावै अब,
जाऐ बनि आवै, पर कांपत है अंक री ।
'ग्वाल कवि' गैयन की भीर माँहि जैबो-ऐबो,
दौरिकै उठैबो पग, लागत है संकरी ।
अँगियाँ मसकि जैहै, बिंदुली खसकि जैहै,
तब तू दुखैहै पैहै नाहक कलंक री ।।

× × ×

बारिधि तात, बड़े विधि ते सुत, सोम से बंधु सहोदर ओई ।
रंभा रमा जिनकी भगिनी, मघवा मधुसूदन से बहनोई ।
तुच्छ तुसार, इतौ परिवार, भयो न सहाय कृपानिधि कोई ।
सूखि सरोज गयो जल मे, सुख सम्पति मे सब को बस कोई ।।

× × ×

प्रीति कुलीनन सौ निबहै अकुलीन की प्रीति मै अन्त उदासी ।
खेलत खेल गयो अबही हमै योग पठाय बन्यो अविनासी ।
त्यो 'कवि ग्वाल' बिरंचि विचारि कै जोड़ी जुड़ाइ दई अति खासी ।
जैसोई नंद को पालक कान्ह सो तैसियै कूबरी कंस की दासी ।।

× × ×

लै गयो है जब ते अकरूर अरी तब ते बहुरंगी भयो ।
प्रीति तजी सब गोपिन ते इकलो कुबिजा को इकंगी भयो ।
यों कवि ग्वाल ही भाल लिखी, हुतो मीत सही पै कुढंगी भयो ।
माय न बाप को अंगी भयो सो हमारो कहौ कब संगी भयो ।।

× × ×

रास कियो औ विलास कियो रहे पास हुलास की रास लै लूटी ।
जा दिन ते अकरूर लेवायेगो ता दिन ते गति और ही जूटी ।
त्यों कवि ग्वाल कलंकिनी कूबरी कान लगे ते सबै मति फूटी ।
वाह रे वाह ! गोविन्द छली ! भली योग की भेजि दई विष-बूटी ।।

× × ×

आई एक ओर ते अलीन लै किशोरी गोरी,
आयो एक ओर ते किशोर वाम हाल पै ।
भाजि चल्यौ छैल छरी छोड़ पै, छबीलन ने,
छरी को उठाय, धाय मारी उर माल पै ।

'ग्वाल कवि' हो हो कहि, चोरि कहि चेरो कहि,
बीच मैं नचायौ थेई तत् थेई ताल पै।
ताल पै तमाल पै गुलाल उड़ि छायो ऐसो,
भयो एक और नंदलाल नंदलाल पै॥

ठाकुर

बैर प्रीति करिबे की मन में न राखै संक,
राजा राव देखि कै न छाती धकधाकरी।
अपनी उमंग की निबाहिबे की चाह जिन्हैं,
एक सो दिखात तिन्हैं बाघ और बाकरी।
ठाकुर कहत मैं विचार कै विचार देखो,
यहै मरदानन की टेक बात आकरी।
गही जौन गही जौन छोड़ी तौन छोड़ दई,
करी तौन करी बात ना करी सो ना करी॥

× × ×

सामिल में पीर में शरीर में न भेद राखै,
हिम्मत कपाट को उघारै तौ उघरि जाय।
ऐसो ठान ठानै तौ बिनाहू जन्त्र मन्त्र किये,
साँप के जहर को उतारै तौ उतरि जाय।
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानौ अब,
हिम्मत किये तें कहो कहा न सुधरि जाय।
चारि जने चारिहू दिसा तें चारो कोन गहि,
मेरु को हिलाय कै उखारैं तौ उखरि जाय॥

× × ×

अन्तर निरन्तर के कपट कपाट खोलि,
प्रेम को झलाझल हिये में छाइयतु हैं।
लटी भई आप सो भई है करतूत जौन,
विरह विथा की कथा को सुनाइयतु हैं।
ठाकुर कहत वाहि परम सनेही जान,
दुख सुख आपने विधि सों गाइयतु हैं।
कैसो उतसाह होत कहत मते की बात,
जब कोऊ सुघर सुनैया पाइयतु हैं॥

× × ×

जौलों कोऊ पारखीसों होन नहिं पाई भेंट,
तब ही लों तनक गरीब लों सरीरा हैं।
पारखीसों भेंट होत मोल बढ़े लाखन को,
गुनन के आगर सुबुद्धि के गँभीरा हैं।
ठाकुर कहत नहिं निन्दो गुनवारन को,
देखिबे को दीन ये सपूत सूर बीरा हैं।
ईश्वर के आनस तें होत ऐसे मानस जे,
मानस सहूर वारे धूर भरे हीरा हैं॥

× × ×

सुकवि सिपाही हम उन रजपूतन के,
दान युद्ध बीरता में नेकहू न सुरके।
जस के करैया हैं मही के महिपालन के,
हिये के बिशुद्ध हैं सनेही साँचे उरके।
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के,
जालिम दमाद हैं अदेनियाँ ससुर के।
चोजन के चोजी महा मौजिन के महाराज,
हम कविराज हैं पै चाकर चतुर के॥

× × ×

हिलमिलि लीजिये प्रवीनन तें आठो जाम,
कीजिये आराम जासों जिय को आराम है।
दीजिये दरस जाको देखिबे को हौस होय,
कीजिये न काम जासों नाम बदनाम है।
ठाकुर कहत यह मन में विचारि देखो,
जस अपजस को करैया सब राम है।
रूप से रतन पाय चातुरी से धन पाय,
नाहक गँवाइबो गँवारन को काम है॥

× × ×

कोमलता कंज तें गुलाब तें सुगन्ध लैकै,
चन्द तें प्रकाश कियो उदित उजेरो है।
रूप रति आनन ते चातुरी सुजानन ते,
नीर लै निवानन तें कौतुक निबेरो है।
ठाकुर कहत यों मसालौ विधि कारीगर,
रचना निहारि जन होत चित चेरो है।

कंचन को रंग लै सवाद लै सुधा को,
बसुधा को सुख लूटि कै बनायौ मुख तेरो है ॥

× × ×

ग्वारन को यार है सिंगार सुख सोभन को,
साँचो सरदार तीन लोक रजधानी को।
गाइन के संग देख आपनो बखत लेख,
आनँद विशेष रूप अकह कहानी को।
ठाकुर कहत साँचो प्रेम को प्रसंगवारो,
जा लख अनंग रंग दंग दधिदानी को।
पुण्य नंद जू को अनुराग ब्रजबासिन को,
भाग यसुमति को सुहाग राधारानी को॥

× × ×

आपने बनाइबे को और को बिगारिबे को,
सावधान ह्वै के सीखे द्रोह से हुनर है।
भूल गये करुनानिधान स्याम मेरे जान,
जिनको बनायो यह विश्व को वितर है।
ठाकुर कहत पगे सबै मोह माया मध्य,
जानत या जीवन को अजय अमर है।
हाय ! इन लोगन को कौन सो उपाय जिन्हैं,
लोक को न डर परलोक को न डर है॥

× × ×

लगी अंतर में करै बाहिर को बिन जाहिर कोऊ न मानतु है।
दुख औ सुख हानि औ लाभ सबै घर की कोउ बाहर भानतु है।
कवि ठाकुर आपनी चातुरी सों सबही सब भाँति बखानतु है।
पर बीर मिलै बिछुरैकी विथा मिलिकै बिछुरै सोई जानतु है॥

× × ×

वा निरमोहिनी रूप की रासि जौ ऊपर के उर आनत ह्वै है।
बार हू बार बिलोकि घरी घरी सूरति तौ पहचानति ह्वै है।
ठाकुर या मन को परतीति है जो पै सनेह न मानति ह्वै है।
आवत हैं नित मेरे लिये इतनों तो बिसेसहू जानति ह्वै है॥

× × ×

यह प्रेम कथा कहिये किहिसों सौ कहेसों कहा कोऊ मानत हैं।
पर ऊपरी धीर बँधायो चहैं तन रोग न वा पहिचानत हैं।

अलीकुलीं, रुस्तमखाँ संगहि । हकीमखाँ कुबरा हित जंगहि ।
फतेअली औरो बहु मीरन । राजा राउ लयैं संग धीरन ।
इन्द्रनगर दच्छिन दिस कढ़िढय । निपट गरूर पूर हिय चढ़िढय ।
कछू दिननु आवै मेवातहिं । करिहैं तहाँ अधिक उतपातहिं ।
यातें बेगि करौ कछु घातहिं । जातें वाकौ होइ निपातहिं ।
अब जो नीक होइ सो कीजहि । याहि मारि जग में जस लीजहि ।
यौं कहि दूत नाइ निज सीसहिं । सूरज आइ कह्यो ब्रज-ईसहिं ।
तुरक सहस जोरे दस बीसहिं । दिल्ली ते निकस्यौ धरि रीसहिं ।
हम सौं जुद्ध करन मन राखतु । महाराज मैं हूँ अभिलाषतु ।
आइस ईस तुम्हारौ पाइय । तौ याकौं कछु हाथ लगाइय ।
तब ब्रजेश सुनि कै यह भाषिय । तात मतौ मो मन यह राखिय ।

× × ×

दिल्ली ते कढ़ि दूरि, जब आवै मैदान भुव ।
एक झपट करि सूर, याकौ दूरि गरूर करि ॥

मतौ मानि वदनेस कौ, सूरज उदित प्रतापु ।
आइसु लै असवार ह्वै, करि हरदेव सुजापु ॥

× × ×

जब चढ़्यो सिंह सूरज अमान । बज्जे निसान घन के समान ।
पीरे निसान सोभित दिसान । अरि गहत दहन मानहुँ कुसान ।
सुंडाल चलत सुंडनि उठाइ । जिनकैं जँजीर झनझनत पाइ ।
घनघनत घंट अरु घुघुर-माल । भनभनत भवर मद पर रसाल ।
छनछनत तुरगंम तरह दार । फनफनत बदन उच्छलत बार ।
सनसनत सिमिट जब करत दौर । गुनगिनत सु तिनके कविनु-मौर ।
सोहैं अनेक गजगाह वंत । चमकंत चारु कलगी अनंत ।
झलकंत जिरह बखतर नवीन । तमकंत बीररस भट प्रवीन ।
टमकंत तबल टामक बिहद्द । ठमकंत टाप बिनु भुव गरद्द ।
ढमकंत ढोल ढफला अगार । धमंकंत धरनि धौंसा धुँकार ।
खमकंत वीर करि करि सुघोष । लमकंत तुरंगम पाइ पोष ।
हमकंत चले पाइक अनेक । इक जंग रंग जानत बिबेक ।
कोदंड चंड कर कटि निषंग । इक चंड भुसंडी लै तुफंग ।
इक सेल साँग समसेर चर्म । रनभूमि भेद जानत सुपर्म ।
सब चढ़े बड़े उच्छाह पूरि । छपि गयो गगन रवि उड़िय धूरि ।
चतुरंग चमू सत रंग रूप । सजि चढ्यौ सूर सूरज अनूप ।

कूँच कियौ डेरा दियौ, नौगाएँ मेवात ।
तरन तनेने तेह सौं, जुद्ध हेत ललचात ॥

× × ×

सूरज चारि उपाय प्रवीन सुचित्तई ।
साम दाम अरु भेद दंड धरि नित्तई ॥
खल के मन की लैन बात करि सीन की ।
बिदा कर समुझाइ प्रवीन वकील की ॥
देस-काल बाल-ग्यान लोभ करि हीन है ।
स्वामि-काम मैं लीन सुसील कुलीन है ॥
बहु विधि बरनै बानि हिये नहि भय रहै ।
पर-उर करै उदेग दूत तासौं लहै ॥
खान सलाबत पास वकील सुजाइ के ।
करी सलाम कवाद अदाब बजाइ के ॥
नैननु लई सलाम सलाबतुखान ने ।
कह्यौ कहा कहि वेग सुतोहि सुजान ने ॥

× × ×

कुँवर बहादुर ने प्रथम, तुमको कह्यौ सलाम ।
फेरि कही कि नवाब इत, आये हैं किहि काम ॥
करत चाकरी साह की, हम पाया यह देस ।
ताहि उजारत आप क्यौं, तुमकौं कह्यौ सँदेस ॥
जो कछु तुम्हैं दिलीस नै, कह्यौ ताहि कहि देउ ।
ता माफिक हम सौं अबै, आप चाकरी लेउ ॥

× × ×

दुहूँ गयंदन पै चढ़ैं, धनुष बान गहि हत्थ ।
जम-किंकर जिमि कोह कै, नरनु करत लथ पथ्थ ॥

तिनके जुद्धहिं देखि बहुत चरबीचर आइय ।
जुगिगनि जोरि जमाति जहाँ जाहर जमुहाइय ॥

काली करत कलोल खलखलैं तहँ खबीस गन ।
भैरव भभरयौ फिरत पिता के हार हेत रन ॥

जहँ ईस दूत जगदीस के, गीरवान गनिका उमगि ।
जहँ रुस्तमखाँ मुहकीमखाँ, स्वामिकाम हित रहिये पगि ॥

× × ×

रन तैं न पाइ चलाइयै। धनुवान लै समुहाइयै।
वलु आपनौ सब संग लै। विफरे सुग्री उमंग लै।
तिहिं देखि जट्ट झपट्टिए। पल ए कमाहिं दपट्टिए।
तहँ गौर गोकुलराम ने। वहु रंग जंग मचावने।
करि क्रुद्ध जुद्धहिं पिल्लियौ। गहि सेल साँगनु भिल्लियौ।
तिहिं भ्रात सूरतिराम हैं। बहु सूरता कौ धाम हैं।
बलिराम विक्रम आगरौ। गहि तेग जुट्टि उजागरौ।
हरताप कूरम केहरी। वरमाइ वाननु की झरी।
सिवसिंह सार सम्हारिकै। मिलि गयौ फौजहि फारिकै।
अरु मीर बीर विहंडनौ। वहु रीति जुद्धहिं मंडनौ।
लगि तेग तीरन जुट्टियौ। पर भूमि तैं नहिं छुट्टियौ।
सर स्यामसिंह सम्हारि कै। अरि मारियै ललकारि कै।
ब्रजसिंह बीर महावली। जिनि लै अनी अरि की दली।
पखरैत पाखरमल्ल हैं। करि धयो पारतु हल्ल हैं।
अरु किसनसिंह दरेर दै। गहि दई साँग करेर दै।
बलवंड सिंभू को तनै। जिहिं नाम हरि नाराइनै।
अरु औरहूँ बहु सूर हैं। पर प्रान पौवन पूर हैं।
इतमें इते बलवान हैं। उत सेख मुगल पठान हैं।
तिन में मच्यो घमसान है। सर सेल साँग कृपान हैं।
दुहुँ दट्टि दट्टि दवट्टहीं। अरि नाम लै लै रट्टहीं।
इक देत धाइ झटक्किकै। इक एक परत लटक्किकै।
मुहकीमखाँ भुजदण्ड तैं। अरु रुस्तमाँ, वलवण्ड तैं।
ज्यौं कुपित सेही अंग तैं। त्यौं छुटत वान निषंग तैं।
तिहि देखि सिंभू को बली। रिस ज्वाल अन्तर उच्छली।
फटकार सेलहिं हत्थ मैं। हय हंकियौ अरि गत्थ मैं।
मुहकीमखाँ लखि आवतौ। जो हुतो चाप नचावतो।
तिहिं कान लौं कसि वान कौं। तकि दियौ ताकि भुजान कौं।
सर सो लग्यो उर आइ कै। छत कर्‌यौ श्रोन वहाइ कै।
वह बीर तीरहिं कढि्ढ कै। रस रुद्र रंगहिं बढ्ढि कै।
हय हंकियौ गजदन्त पै। मनु राखि कै अरि अन्त पै।
ज्यौं सिंह गज मदमन्त पै। हय लस्यौं यौं करि-दन्त पै।
फटकारि सेलहिं उद्ध कौं। तकि आपुनी अरि सुद्धि कौं।
वह सेल गजग्रह भेद कै। मुहकीम खाँ तनु छेद कै।
तबही सुतीरन बुट्टियौ। मुहकीमखाँ रन रुट्टियौ।
इक दयौ सरकटि तक्कि कै। वह लग्यो हिरनहिं धक्कि कै।

तब ही सुसिंभू पूत ने। गहि तेग बल मजबूत ने।
गज कुम्भ दइय करक्कि कै। मनु परिय विज्जु तरक्कि कै।
फिरि धाइ गज गद्दी दली। कसना बिदारिय भुजबली।
सुहकीमखाँ भुव पारियौ। गज पट्ठि तें गहि डारियौ।
इमि गिरत लोग निहारियौ। मनु कान्ह कंस पछारियौ।
तबही सु सेल अरु साँग की। बरषा भई चहुँ आँग की।
तबही सु औरन दौरि कै। लिए रुस्तमाँ झकझोरि कै।
करि एक एकहिं चोट सौं। राख्यौ हकीमहि जोट सौं।
तबही सु तिनके साथ के। करि एक एकहिं हाथ के।
सरदार जूझत खेत मैं। भजि गए बहुत अचेत मैं।
तजि कै हथ्यारनु पिट्ठि दै। धस गए लसकर निट्ठि दै।
ब्रज बीरहू तिन संगही। चलि गए कटक उमंगही।

× × ×

तब ही बकसी के कटक, खल भल परी अपार।
आए आए सब कहै, सूरज सुभट उदार॥

घरी चारि डेरा लुटे, बुटे तुरक बेहाल।
जट्ट जट्ट कहते फिरैं, सब ने जान्यो काल॥

फेरि बगद ब्रज-बीर सौं, आए ताही खेत।
जहाँ परे रुस्तम बली, अरु हकीमखाँ रेत॥

जोधराज

मै पहलै पतिसाह सो, करी बात अब टेक।
सो अब चौरै साहि सो, करो जंग अब एक॥

चढ़िए करि कोप हमीर मनं।
करि दिढढ सगढ्ढ सम्हारि पनं।
बहु तोप सुसिद्ध संवारि धरी।
बुरजैं बुरजैं धर धूम परी।
बहु कंगुर कंगुर बीर अरे।
सब द्वारन द्वारन धीर धरे।
सब ठौरन ठौरन राखि भरं।
चढ़िए गजिपै चहुवान नरं।

बहु बीर हमीर सु संग चढ़े।
गजराजन उप्पर द्वन्द बढ़े।
करि डंबर अंबर सीस लगे।
मनु सोवत धीर सबीर जगे।
बहु चंचल बाजि करत्त खुरी।
तिन उप्पर पष्षर सोंज परी।
जर जान जवान लसैं दल मैं।
रन मैं उनमत्त लसैं बल मैं।
बहु दुंदुभि बज्जत घोर घनं।
निकसे तब राव करन्न रनं।
बहु बारन बारन बीर कढ़े।
गज बाजि सु सिंदन जान चढ़े।
लखि साह सनम्मुख कोप कियं।
रणथम्भ चहूँ दिसि घेरि लियं।
मिलि राव हमीर सु साहि दलं।
बिफरे बर बीर करंत हलं।
सर छुट्टत फुट्टत पार गजं।
सु मनो अहि पच्छय मध्य रजं।
तरवार बहैं कर पानि बलं।
धर मध्य धरैं धर हक्क खलं।
मुख अग्ग बढ़ै रणधीर लरैं।
तिनसों पतिसाह के बीर अरैं।
अजमंत मुहम्मद इक्क अली।
तिन संग असीसु सहस्स चली।
तिहि द्वन्द अमंद बिलंद कियो।
रणधीर महा रण झेलि लियो।
करि कोप तबे रणधीर मनं
बर बैन कहे पन धारि घनं।
महिमंद अली मुख आय जुर्यौ।
दुहुँ बीर तहाँ तब जुद्ध कर्यौ।
अजमंत कमान लई कर मैं।
रणधीर के तीर कढ्यौं उर मैं।
रणधीर तुकोपि कै सांगि लई।
अजमंत के फूटि के पार गई।

परियो अजमंत सु खेत जबै।
महमंद अली फिरि आय तबै।
रणधीर सु कोपि के नैन कहै।
कर देखि अबै मति भुल्लि रहै।
किरवान सु धीर के अंग दई।
कटि टोप कछू सिर माँझ भई।
तब कोप कियो रणधीर मनं।
किरवान दई महमंद तनं।
परियो महमंद अमंद बली।
तब साहि कि सैन सबै जु हली।
लुथि लुथ्थि परै बहु बीर अरै।
बहु खंजर पंजर पार करै।
धर सीस परै करि रीस मनं।
कर पाँव कटे बहु कान पनं।
यहि भाँति भिरे चहुवान बली।
मुरि साह की सेनि सु भग्गि चली।
बलखी जु परे जू हजार असी।
लखि कालिय अट्ट सु हास हँसी।
चहुवान परे इक जो सहसं।
सुरलोक सबै बर वीर बसं।

× × ×

असी सहस बलखी परे, महमद अजमत खान।
तहाँ राव रणधीर के, परे सहस इक ज्वान॥
भजी फौज सब साह की, परे मीर दोइ बीर।
करे याद पतिसाह तब, गज्जनि गढ़ के पीर॥

× × ×

भज्जिय फौज साह की जबहीं,
फिरो फिरो बानी कह सबहीं।
तहाँ साह करि कोप सु बुल्लिव,
समर भुम्मि अब छंडि सुचल्लिव।
सरवसु खाय भोग करि नाना,
अबै परम प्रिय लागत प्राना।
समर विमुख तें आनब जोई,
हनूं आप कर तजों न सोई।

सुने साह के कोपि सु बैनं,
फिरी सैन इम मंत्र सु एनं।
बखतर पक्खर टोप सु सज्जिय,
जुरे जंग बहु मीर सु गज्जिय।

× × ×

करि कोप बादितखाँ जुरे जंग,
मनो प्रलै पावक उठे अंग।
गुंजत निसान फहरात धुज्ज,
जुटि जिरह टोप तन नैन सज्ज।
किए हुक्म साह तन मैं रिसाइ,
किन्हों सु जंग फिर बीर आइ।
छूटत तोप मनु बज्रगात,
जल सुक्कि धरा छुटि गर्भजात।
बहु बान चलत दोउ ओर घोर,
अररात अमित मच्यो सु सोर।
भए अंध धुंधसु सुज्झै न हत्थ,
बीर चहुवान तहं करि अकत्थ।
रणधीर उतै बाधत्ति खान,
बजराग अंग जुट्ट सु पान।
हजार बीस बादित्य साथ,
सब जुरे आय रणधीर हाथ।
बज्जंत सार गज्जंत अब्भ,
रणधीर सथ्थ आए स सब्भ।
करि क्रोध जोध बाहंत सार,
टूटंत अंग फूटंत पार।
करि खेल सेल दोउ ओर बीर,
बाहंत बीर किरवान धीर।
हजार बीस बद्धत्त साह,
धर परे बीर करि अकथ साह।
रणधीर मीर दोउ भिरे आइ,
बाधत्त गाहि तब रोस बाइ।
लग्गी सुढाल भू छूटि ताम,
सिर दई सीस किरवान जाम।

लग्गी सु सीस धर पर्‍यौ जाय,
दुई टुक्क होय भुमि अद्ध काय ।

× × ×

भयो सोच जिय साह कै, जीतिय जंग हमीर ।
बादित खाँ से रन परे, बीस हजार सुबीर ।।

महरम खाँ करि जोरि कै, करै अर्ज तिहि बार ।
लै कर शेख हमीर अब, किमि मिल्यो यहि बार ।।

गही तेग तुम सो अबै, हठ नहि तजै हमीर ।
सेख देय मिल्लै नही, पन सच्ची बर बीर ।।

चन्द्रशेखर

हाथ जोरि हम्मीर कहँ, महिमा गही कमान ।
अर्धचन्द सर साधि कैं, तानी कान प्रमान ।।
बज्र सरिस छोर्‍यो विषम, मीर तीर परचंड ।
पातसाह सिरछत्र को, दंड कियो द्वै खंड ।।
एक तीर सो काटि कै, छत्र दियो महि डारि ।
तब हमीर हरहुर हँसे, सनमुख मीर निहारि ।।

× × ×

खंड ह्वै टुट्टक पर्‍यो लूक सो लपकि छत्र,
हूकसी समानी हियै साह सोक सों भरे ।
जोहत जके से चौंकि चलत थके से सबै,
सुकुर मनावत अमीर अतिहीं डरे ।
आनि धर्‍यो आगें बान सहित उठाइ हेम,
हीरन रचित गजमुकता लसै जरे ।
मानो आसमान ते नछत्रन समेत पर्‍यो,
भूमि मैं कलाधर सपूरन कला धरे ।।

× × ×

छत्र के परत सबही की छबि छीन भई,
दीन भयो बदन अलाउदीन साह को ।
पीर उठी उर मै अचानक अमीरन के,
धीरज धरै को धार धूजत सिपाह को ।

सहमि गये से सबै सोचत ससंक कहैं,
खैर करी खालिक खुदाय सदराह को।
भयो थ्यो दिल्ली को पति देखत पनाह आज,
दाह मिटि गयो थ्यो हमीर नरनाह को॥

× × ×

पीर अमीरन के उठी, धीर तज्यो सुलतान।
तुरत मंगायो आप ढिग, छत्र सहित रिपुवान॥
सर में बांच्यो साह तब, गहो बली कर अत्र।
तिय बदले तेरो कियो, मीर भंग सिर छत्र॥
महिमाँ मीर मंगोल मैं, कर वर गही कमान।
है दुरलभ अब आप को, जियत राखिबो प्रान॥

× × ×

मौन भये मन ही मन मैं, सुलतान बिचारत बात अनेकौ।
जो लरिये मरिये इत तौ, गढ़ की चढ़ि पैयत घात न एकौ।
नाहक जात मरे सिगरे भट, आवत हाथ लखात न एकौ।
लौटि चलो अपने घर कों, जो भई सो भई कहि जात न एकौ।

× × ×

दीरघ सोच दिलीपति के दल, छीन भयो बलहीन मलीनो।
सान दई अपमान अंगै निज, प्रान बचे सोइ उद्यम कीनो।
हार लई अपने सिर मान, निदान यहै करि आयस दीनो।
लै अपनो दल संग सबै उठि, भाजि चल्यो सहसा भय भीनो।

× × ×

मारे गढ़ चक्कवै हमीर चहुआन चक्र,
डारे गोल गरद मिलाइ मद मानी के।
लोटैं रेत खेत एकै पोटैं लेत देत एकै,
चोटनि समेत लड़े लाड़िले पठानी के।
हारे डरमारे राह बासन हथ्यार डारे,
बाहन सँभारै कौन भरे परेसानी के।
भाजे जात दिल्ली के अलाउदीन वारे दल,
जैसे मीन जाल तें परत दिसि पानी के॥

× × ×

भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे,
भागे खानजादे प्रान मरत बचाइ कै।

भाजि गजबाजी रथ पथ न संभरैं परैं,
गोलन पै गोल सूर सहमि सकाइ कै ।
भाग्यो सुलतान जान बचत न जान बेगि,
बलित बितुंड पैं बिराज बिलखाइ कै ।
जैसे लगें जंगल मैं ग्रीषम की आगि चलै,
भागि मृग महिप बराह बिललाइ कै ।।

× × ×

भाजे जात रंक से ससंकित अमीर परे,
भीरन पै भीर धरैं धीर न रहैं थिरे ।
जंगल की जार मै पहार मैं पराइ परे,
एकै बारि धार में उछार मारि कै परे ।
कंपित करी पैं साह साहब अलाउदीन,
दीन दिल बदन मलीन मन मैं खिरे ।
प्रबल प्रचंड पौन पच्छिमी हमीर मारे,
बादल समान मुगल-दल उड़े फिरे ।।

× × ×

भग्यो प्रबल दल संग लै, दिल्ली को सुलतान ।
हरष्यो राय हमीर उर, गढ़ पर बजे निसान ।।
आइ अरज मंत्रिन करी, सुनिए राय हमीर ।
हिन्दु धनी हद आपकी, पत राखी रघुबीर ।।
गयो साह दिसि आपनी, रह्यो हमारो खेत ।
ऐसे सुजस सुपंथ मैं, ईश्वर सब को देत ।।

अर्जुनदेव

आपे पेडु विसथारी साष । अपनी षेती आपे राष ।।
जत कत पेषउ एकै ओही । घट घट अंतरि आपे सोइ ।।
आपे सूरु किरणि विसथारु । सोई गुपतु सोई आकारु ।।
सरगुण निरगुण थापै नाउ । दुह मिलि एक कीनो ठाउ ।।
कहु नानक गुरि भ्रमु भउ षोइआ । अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ।।

× × ×

सगल बनसपति महि बैसंतरु, सगल दूधु महि घीआ ।
ऊँच नीच महि जोति समाणी, घटि घटि माधउ जीआ ।।

संतहु घटि घटि रहिया समाहिउ ।
पूरन पूरि रहिउ सरब महि, जलथल रमईआ आहिउ ॥
गुणनिधान नानकु जसु गावै, सतिगुरि भरमु चुकाइउ ।
सरब निवासी सदा अलेपा, सभि महि रहिआ समाइउ ॥

× × ×

एक रूप सगलो पासारा । आपे बनजु आपि बिउहारा ॥
ऐसो गिआनु विरलोई पाए । जत जत जाईए, तत तत द्रिसटाए ॥
अनिक रंग निरगुन इकरंगा । आपे जलु आपही तरंगा ॥
आपही मंदरु आपही सेवा । आपही पूजारी आपही देवा ॥
आपही जोग आपही जुगता । नानक के प्रभु सदही मुकता ॥

× × ×

तू जलनिधि हम मीन तुमारे । तेरा नामु बूँद हम चात्रिक तिषहारे ।
तुमरी आस पिआसा तुमरी, तुमही संगि मनु लीना जीउ ॥
जिउ बारिकु पी षीरु अघावै । जिउ निधनु धनु देषि सुषु पावै ।
त्रिपावंत जलु पीवत ठंडा, तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥
जिउ अंधिआरै दीपक परगासा । भरता चित्रतत पूरन आसा ।
मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा, तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥
संतन मोकउ हरि मारगि पाइआ । साध क्रिपालि हरि संसि गिझाइआ ।
हरि हमारा हम हरि के दासे, नानक सबदु गुरु सचु दीना जीउ ॥

× × ×

तूं पेडु साष तेरी फूली । तू सूषमु हो असथूली ।
तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा, तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ।
तूं सूत मणीए भी तूं है । तूं गंठी मेरु सिरि तूं है ।
आदि मधि अंति प्रभु सोई, अवरु न कोइ दिषलीऐ जीउ ॥
तूं निरगुण सरगुण सुषदाता । तूं निरवाणु रसीआ रंगिराता ।
अपणे करतब आपे जाणहि, आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥
तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे । तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ।
नानक दासु सदा गुण गावै, इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥

× × ×

प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ।
नमसकार डंडउति बंदना, अनिक बार जाउ वारै ॥
उठत बैठत सोवत जागत, इहु मनु तुझहि चितारै ।
सूष दूष इसु मन की बिरथा, तुझही आगे सारै ॥

तू मेरी ओट बल बुधि धन तुमही तुमहि मेरै परवारै ।
जो तुम करहु सोई भल हमरै, पेषि नानक सुष चरनावै ॥

× × ×

मै नाही प्रभ सभ किछु तेरा ।
ईघै निरगुन ऊघै सरगुन, केल करत विचि सुआमी मेरा ।
नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन, प्रभ मेरे को सगल बसेरा ।
आपे ही राजन आपे ही राइआ, कह कह टाकुरु कह कह चेरा ॥
काकउ दुराइ कासिउ बल बंका, जह जह पेषउ तह तह नेरा ।
साध मूरति गुरु भेटिउ नानक, मिलि सागर बूंद नही अनहेरा ॥

× × ×

तेरी कुदरत तूहै जाणहि, अवरु न दूजा जाणै ।
जिसनो क्रिपा करहि मेरे पिआरे, सोई तुझै पछाणै ॥
तेरिआ भगता कउ बलिहारा ।
थान सुहावा सदा प्रभ तेरा, रंग तेरे आपारा ॥
तेरी सेवा तुझते होवै, अवरु नही दूजा करता ।
भगतु तेरा सोई तुधु भावै, जिसनो तू रंगु धरता ॥
तूं बड़ दाता तू बड़ दाना, अउरु नहीं को दूजा ।
तू समरथु सुआमी मेरा, हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥
तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे, विषमु तेरा है भाणा ।
कहु नानक ढहि पइआ दुआरे, रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥

× × ×

प्रभु मेरो इत-उत सदा सहाई ।
मन मोहनु मेरे जीअ को पिआरो, कवनु कहा गुन गाई ॥
षेलि षिलाइ लाड़ लाड़ावै, सदा सदा अनदाई ।
प्रतिपालै बारिक की निआई, जैसे मात पिताई ॥
तिसु बिनु निमष नही रहि सकीऐ, बिसरि न कबहू जाई ।
कहु नानक मिलि संत संगति ते, मगन भए जिव लाई ॥

× × ×

कवन रूपु तेरा आराधउ । कवन जोगु काइआ ले साधउ ॥
कवन गुनु जो तुझलै गावउ । कवन षेल पारब्रह्म रिझावउ ॥
कवन सु पूजा तेरी करउ । कवन सु विधि जितु भवजल तरउ ॥
कवन तप जितु तपीआ होइ । कवनु सुनामु हउमै मलु पोइ ॥

गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल थाल ।
जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥
तिसही गुनु तिनही प्रभु जाता । जिसकी मानि लेइ सुपदाता ॥

× × ×

भुज बल बीर ब्रह्म सुष सागर । गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥
स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही । आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥
दीनानाथ अनाथ करुणामै, साजन मीत पिता महतरीआ ।
चरन कवल हिरदै गहि नानक, भौसागर संत पारि उतरीआ ॥

× × ×

अैसी प्रीति गोबिंद सिउ लागी । मोलि लए पूरन वड़ भागी ॥
भरता पेषि विगसै जिउ नारी । तिउ हरिजनु जीवै नामु चितारी ॥
पूत पेषि जिउ जीवत माता । ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥
लोभी अनदु करै पेषि धना । जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥
विसरु नही इकु तिलु दातार । नानक के प्रभ प्रान अधार ॥

× × ×

बिसरत नाहि मन ते हरी ।
अब इह प्रीति महा प्रबल भई, आन बिपै जरी ॥
बूंद कहा तिआगि चात्रिक, मीन रहत न घरी ।
गुन गोपाल उचरु रसना, टेव एही परी ॥
महानाद कुरंक मोहिउ, बेधि तीपन सरी ।
प्रभ चरन कमल रसाल नानक, गाँठि बाँधि धरी ॥

× × ×

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई । विलप करे चात्रिक की निआई ॥
त्रिषा न उतरै सांति न आवै, बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई, गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥
तेरा मुषु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी । चिरु होआ देषे सारिंगपाणी ॥
धनु सुदेसु जहाँ बसिया, मेरा सजण मीत मुरारे जीउ ॥
हउ घोली हउ घोलि घुमाई, गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥
इक घड़ी न मिलते ता कलि जुगु होता । हुणि कदि मिलीअै प्रिअतुधु भगवंता ।
मोहि रैणि न बिहारै नींद न आवै, बिन देषै गुर दरबारे जीउ ॥
हउ घोली जिउ घोलि घुमाई, तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥
भागु होआ गुरि संत मिलाइआ । प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ।

सेव करी पलु चसा न बिछुड़ा, जन नानक दास तुमारे जीउ ॥
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई, जन नानक दास तुम्हारे जीउ ॥

× × ×

सतगुर मूरति कउ बलि जाउ ।
अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की, सफल दरसनु कदि पाउ ॥
अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु, भगति बछलु हरि नांउ ।
जाकउ कोइ न राखै प्राणी, तिसु तू देहि असराउ ॥
निधरिआ धरनि गति आगति, निथाविआ तू थाउ ।
दहदिसि जांउ तहाँ तू संगे, तेरी कीरति करम कमाउ ॥
एकसु ते लाख लाख ते एका, तेरी गति मिति कहि न सकाउ ।
तू बेअंतु तेरी मिति नहीं पाईऐ, सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥
साधन का संगु साध सिउ गोसटि, हरि साधन सिउ लिव लाउ ।
जन नानक पाइआ है गुर मति, हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥

× × ×

सभ किछु घर महि बाहरि नाही । बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ।
गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ, सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥
झिमि झिमि बरसै अंम्रित धारा । मनु पीवै सुनि सबदु वीचारा ।
अनद विनोद करै दिन राती, सदा सदा हरि केला जीउ ॥
जनम जनम का बिछुड़िआ मिलिआ, साध क्रिपाते सूका हरिआ ।
सुमति पाए नाम धिआए, गुरमुखि होए मेला जीउ ॥
जल तरंग जिउ जलहि समाइआ । तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ।
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा, बहुड़ि न होइऐ जउला जीउ ॥

× × ×

अब मोरो नाचनो रहो ।
लाल रंगीला सहजे पाइउ, सतगुर बचनि लहो ॥
कुंआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी, प्रिआ वचन उपहास कहो ।
जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइउ, तब मुखु काजि लजो ॥
जिउ कनिको कोठरी चड़िउ, कबरो होत फिरो ।
जबते सुध भए है बारहिं, तबते थान थिरो ॥
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिउ, मूरत घरी पलो ।
बजावनहारो उठि सिधारिउ, तब फिरि बाजु न भइउ ॥
जैसे कुंभ उदक पूरिआनिउ, तब तुहु भिंन द्रिसटो ।
कहु नानक कुंभु जलै महि डारिउ, अंभै अंभ मिलो ॥

× × ×

गुरु गुरु करत सदा सुषु पाइआ ।
दीन दइआल भए किरपाला, अपणा नामु आपि जपाइआ ॥
संत संगति मिलि भइआ प्रगास । हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥
सरब कलिआण सूष मनि बूठे । हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥

× × ×

उदमु करत होवै मनु निरमलु, नाचै आपु निवारे ।
पंच जना ले वसगति राषै, मन महि एकंकारे ॥
तेरा जनु निरति करे गुन आवै ।
रबाबु पषावज ताल घुँघरू, अनहद सबद वजावै ॥
प्रथमे मनु परबोधै अपना, पाछै अवर गझावै ।
राम नाम जपु हिरदै जापै, मुष ते सगल सुनावै ॥
कर संगि साधू चरन पषारै, संत धूरि तनि लावै ।
मनु तनु अरपि धरे गुर आगै, सति पदारथु पावै ॥
जो जो सुनै पेषै लाइ सरधा, ताका जनम मरण दुषु भागै ।
ऐसी निरति नरक निवारै, नानक गुरमुषि जागै ॥

× × ×

बिसरि गई सभ ताति पराई । जबते साध संगति मोहि पाई ॥
ना को बैरी नहीं बिगाना, सगल संगि हम कउ बनिआई ॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिउ, एह सुमति साधू ते पाई ॥
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै, पेषि पेषि नानक विगसाई ॥

× × ×

अनदो अनदु घणामै सो प्रभु डीठा राम ।
चाषिअड़ा चाषिअड़ा मै हरिरसु मीठा राम ॥
हरि रस मीठा मन महि बूठा सतिगुरु तूठ सहजु भइआ ।
ग्रिहु वसि आइआ मंगलु गाइआ, पंच दुसह उइ भागि गइआ ॥
सीतल आघाणे अंम्रित वाणे साजन संत बसीठा ।
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ, सो प्रभु नैणी डीठा ॥
सो हियड़े सो हियड़े मेरे बंक दुआरै राम ।
पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥
संत पिआरे कारज सारे नमसकार करि लगे सेवा ।
आपे जांई आपे मांई आपि सुआमी आपि देवा ॥
अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ।
कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥

नवनिधेन उनिधे मेरे घर आई राम ।
सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ।
नामु धिआई सदा सषाई सहज सुभाई गोविंदा ।
गणत मिटाई चूकी पाई कदे न बिआपे मन चिंदा ।
गोविंद गाजे अनहद बाजे, अचरज सोभ बणाई ।
कहु नानक पिवु मेरे संगे, तामे नवनिधि पाई ।।
सर सिअड़े सर सिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ।
विषमो विषमु अषाड़ा मै, गुर मिलि जीता राम ।
गुर मिलि जीता हरि हरि कीता, तूटी भीता भरमगड़ा ।
पाइआ षजाना बहुतु निधाना, साणथ मेरी आपि षड़ा ।
सोई सुगिआना सो परधाना, जो प्रभि अपना कीता ।
कहु नानक जाबलि सुआमी, ता सरसे भाई मीता ।।

संत बषनाजी

हिरदो बडो रे कठोर कोटि कियां भीजै नहीं, ऐसो पाहण नांही और ।।
गंगा न गोदावरी न्हायो, कासी पुहकर मांहि रे ।।
कर्म कापडै मैण को, ताथैं रोम भीगो नांहि रे ।।
वेद न भागोत सुनिया, कथा सुणी अनेक रे ।।
कर्म पाघर सारिषा, ताथैं वाण न लागे एक रे ।।
औंधा कलसा ऊपरै, जल बूठो अषंडधार ।।
तत वेला निहालियो, तो पाणी नहीं लगार ।।
ब्रह्म अगनि पाषाण जाल्या, चूना कीया सलेस रे ।।
बषना भिजोया रामरस, म्हारा सतगुर ने आदेस रे ।।

× × ×

बिचालै अंतरो रे, हरि हम भागो नांहि ।।
को जाणै कद भाजसी, म्हारे पछतावो मन मांहि ।।
आडा डूंगर बन घणो, नदियां बहै अनंत ।।
सो पर्षडियां पंजर नहीं, हौं मिल मिल आंऊ नित ।।
चरणा पाषैं चालिवोरे, धरती पाषैं बाट ।।
परबत पाषैं लंघणा, विषमी औघट घाट ।।
जातां जातां छोहड़ा, म्हारे मन पछितावो होइ ।।
जीवत मेलो है सषी, मूंवा न मिलिसी कोइ ।।
हरि दरसन कारणि हे सषी, म्हारा नैन रह्या जल पूरि ।।

सो साजन अलगा हुवा, भ्वै भारी घर दूरि ॥
पाती प्यारा पीव की, हूँ क्यों बाचो का लेइ ॥
बिरह महाघन ऊनड्यो, म्हारो नैन वाचण देइ ॥
बटाऊ उहि बाट का, म्हारो संदेसो तिहि हाथि ॥
आली नाहीं रहूँ, काहू साधू जनके साथि ॥
ज्यूं बनकै कारणि हस्ती झुरै, चकवी पैलै पारि ॥
यों बषना झूरै रामकूँ, ज्यूँ उलगाँणा की नारि ॥

× × ×

बीछड्या राम सनेही रे, म्हारै मन पछतावो येही रे ॥
बीछड़िया बन दहिया रे, म्हारै हिवडै करवत बहिया रे ॥
बिलषी सषी सहेली रे, ज्यूं जल बिन नागरवेली रे ॥
वा मुलकनि की छिवि छांही रे, म्हारे रहि गई हिरदै माहीं रे ॥
को उणिहारे नांहीं रे, हो ढूंढ रही जगमाहीं रे ॥
सब फीको म्हारै भाई रे, मंडली को मंडल नाही रे ॥
कोंण सभा में सोहे रे, जाकी निर्मल बांणी मोहे रे ॥
भरि भरि प्रेम पिलावे रे, कोई दादू आण मिलावे रे ॥
बषना बहुत बिसूरे रे, दरसण कै कारण झूरे रे ॥

× × ×

थारो रे गुण गोव्यंदा, म्हारो ओगुणियो कान कीजै ॥
हों तो थाहरो थांई रह्यो रे, मोंने रामभगति दिढ़ दीजे रे ॥
तुम्ह बिना डहकायोथो रे, थारै संग्य न जागी रे ॥
आगै ही चोरासी भरम्यो, लषी न लागी रे ॥
भूल्यो रे मै भेद न जाण्यो, ताहरी भगति न साधी रे ॥
तूँ मिलिवानैं रूड़ो थो, म्हारो मन न मिल्यो अपराधी रे ॥
तूँ समरथ में सरणै आयो, तूं म्हारी पति राषी रे ॥
बषना सो नीकै निरबहिये, मैं तुझ ऊपर नाषी रे ॥

× × ×

ढूंढै दीप पतंग नै, तौ बषना ब्रिरद लजाइ ॥
दीपक मांहैं जोति है, तौ घणां मिलैगा आइ ॥
भरया न फूटै चिराग न छूटै, जरणां कहिये ताहि ॥
बषना कहै समाई तिहि मै, सो बोलि विगूचै नाहि ॥
अठसठि पांणी धोइये, अठसठि तीरथ न्हाइ ।
कहु बषनां मन मच्छ की, अजों कौलाधि न जाइ ॥

जिहि बरियां यहु सब हुवा, सो हम किया विचार ।।
बषनां बरियां खुशी की, करता सिरजन हार ।।
अणदीठे ओलूँ करै रे, मो मन बारंबार ।।
ऊझल फूटा क्यार ज्यूं, म्हारै नैण न षंडै धार ।।

बावरी साहिबा

बावरी रावरी का कहिये, मन ह्वै के पतंग भरे नित भाँवरी ।
भाँवरी जानहि संत सुजान, जिन्हें हरिरूप हिये दरसावरी ।।
साँवरी सूरत मोहनी मूरत, देकरि ज्ञान अनन्त लखावरी ।
खाँवरी सौह तेहारी प्रभू, गति रावरी देखि भई मति बावरी ।।

× × ×

अजपा जाप सकल घट बरतै, जो जानै सोइ पेखा ।
गुरुगम जोति अगम घर बासा, जो पाया सोइ देखा ।।
मैं बन्दी हौं परम तत्व की, जग जानत कि भोरी ।
कहत बावरी सुनो हो बीरू, सुरति कमल पर डोरी ।।

बीरू साहब

हंसा रे वाझन मोर याहि घरा, करबो मैं कवनि उपाय ।
मोतिया चुगन हंसा आयल हो, सो तो रहल भुलाय ।।
झीलर को बकुला भयो है, कर्म कीट धरि खाय ।
सतगुरु सत्य दया कियो, भव बन्धन ते लियो छोड़ाय ।।
यह संसार सकल है अंधा, मोह मया लपटाय ।
बीरू भक्ति भयो हंसा सुख, सागर चल्यो है नहाय ।।

× × ×

त्रिकुटी के नीर तीर बाँसुरी बजावै लाल,
माल लाल से सबै सुरंग रूप चातुरी ।
यमुना ते और गंग अनहद सुर तान संग,
फेरि देखु जगमग को छोड़ देवै कादरी ।
वायू प्रचंड चंड बंकनाल मेरुदंड,
अनहद को छोड़ि दे आगे चलु बावरी ।

ऊँकार धार बास इनहूँ का है विनास,
खसम को साथ करु चीन्ह ले तू नाहरो।
जन विरू सतगुरु शब्द रकाब धरु,
चल शूर जीत मैदान घर आवरी॥

गरीबदास जी (दादूपंथी)

प्रीति न तूटै जीव की, जो अंतर होइ।
तन मन हरिके रंग रंग्यो, जानैं जन कोइ॥
लष जोजन देही रहै, चित सनमुख राषै।
ताको काज न ऊजरै, जौ हरिगुन भाषै॥
कंवल रहै जल अंतरै, रवि बसै आकास।
संपट तबहो विगसि है, जब जोति प्रकास॥
यह संसार असार है, मन मानै नाहिं।
'गरीबदास' नहि बीसरै, चित तुमही मांहि॥

× × ×

तन खोजैं तब पावैं रे।
उलटी चाल चले जे प्राणी, सो सहजै घर आवे रे॥
बारह मारग बहता रोकै, तेरह ताली लावे रे॥
चन्द सूर सहजै सत राखै, अणहद वेण बजावे रे॥
तीन्यू गुण चौथे घर राखै, पाँच पचीस समावे रे॥
नऊ निरत सूं और बहत्तर, रोम रोम धुनि धावे रे॥
मैल निर्मल करे ग्यान सौं, सतगुरु कहि समझावे रे॥
'गरीबदास' अनभै घर उपजै, तब जाइ जोति लखावे रे॥

× × ×

जब मन निरभै घर को पावे।
तजै आस अनियास जगत की, आदि पुरुष की गहि गावे॥
नाना रूप भाँति बहु माया, गुरु मुष द्रष्टि पिछाणै॥
देषत जाइ नहीं सो अस्थिर, नाहिन हिरदे आणै॥
जे पहुँचे ते कहैं साषि सब, उपजै बिनसै माया॥
केवल ब्रह्म आदि द्रढ अस्थिर, जोनी कष्ट न आया॥
सोच बिचार पुरुष करि टावा, तासों निज अँग परसै॥
'गरीबदास' बर सोई बरिये जु, दोइ गुण भाव न दरसै॥

× × ×

भाई रे ! विरष अनूपम पाया ।
ताकी सरण आय हम सीतल, तीन्यू ताप भुलाया ।।
धर आधार नहीं सो तरवर, साषा पत्र न होई ।।
कूंपल फली पहुप पर नाही, फल रूपी सब सोई ।।
ताकी छाया सब जग बरते, बिन जाणै सुष दूरी ।।
सरवर दादर कँवल बसेरा, क्यूं पावै गति ऊरी ।।
पूरै भाग भँवर अनभै घरि, आक पलास न भूलै ।।
'गरीबदास' स्वाति तनि हूई, अषै सरोवर झूलै ।।

× × ×

पार पाऊँ कैसे ।
माया सरिता तरुन तरंगनि, जल जोबन को वैसे ।।
नैननि रूप नासिका परिमल, जिभ्या स्वाद श्रवण सुनिबे को ।।
मन मारे मोहे ऐसे ।।
पंचो इन्द्री चंचल चहुँ दिसि, अस्थिर होहि करहु तुम तैसे ।।
'गरीबदास' कहै नाँव नाव दो, खेइ उतारो जैसे ।।

× × ×

सुकृत मारग चालता, विघन बचै संसार ।
दुप कलेश छूटै सबै, जे कोइ चलै विचार ।।
जानि चलै तो अधिक सुख, अणजाणै जे जाइ ।
लोहा पारस पर सिलै, सो सब कनक कहाइ ।।
भंजन भाव समान जल, भरि दै सागर पीव ।
जैसी उपजै तन त्रिषा, तेतो पावै पीव ।।
सब अपने उनमान की, साषि कहै पद कावि ।
जिहिं लागै पर अरलौ, सो अपने कर ढावि ।।
वे साधू करि जानिये, दरसन सब सुष होइ ।
जिहिं परसै लोहा कनक, पारस कहिये सोइ ।।
दोइ हूँणी सब देषिया, तीन त्रिगुण सब सोधि ।
नौ हूँणा तजि एक भजि, आतम को परमोधि ।।

हरिदास निरंजनी

अवधू आसण बैसण झूठा,
जब लग मन विसराम न पावे । पख तजि फिरै न पूठा ।।

ज्ञान गुफा जाणैं नहिं जोगी, अगम अरथ कहा बूझै।
पांच अगनि में पडि पडि दाझै, वा सीतल ठौर न सूझै॥
बिबिध बिकार बालि अरि इंधण, धूंई ध्यान न धारे।
ब्रह्म अगनि आकास न भेदै, तौ पारा क्यूं मारे॥
निगम अगम तहाँ लगे आसन, गरव नाद नित बाजै।
नगरी मांहिं मुगति बसि भूखा, जहाँ तहाँ उठि भाजै॥
मन गहि पवन अटकि ले उलटा, परम जोग उर धारे।
जन हरिदास निरवास भरम तजि, निरगुण जस निसतारे॥

× × ×

बाबा एह गरीबी झूटी,
मन अरु पवन दोऊए फूटा। मनसा फिरै न पूटी॥
त्रिविध ताप की कन्था पहरी, मनी टोप सिर जाके।
रागद्वेष की कानों मुद्रा, कहा गरीबी जाके॥
परया भेख रेख ज्यूं की त्यूं, मोह मढी बसि जीवै।
तन के भेख राम नहीं रीझै, बिष अमृत करि पीवै॥
पाँच चोर परदेश पहूँता, मिलि खेलै ता मांही।
मनां जोर मुखि कहै गरीबी, असलि गरीबी नाही॥
जन हरिदास आन तजि अनरथ, राम नाम व्रत धारे।
राग द्वेष काहू सूं नाही, असलि गरीबी तारे॥

× × ×

अब मैं हरि बिन और न जाचूँ, भजि भगवंत मगन ह्वै नांचू॥
हरि मेरा करता हूँ हरिकीया, मैं मेरा मन हरि कूं दीया॥
ज्ञान ध्यान प्रेम हम पाया, जब पाया तब आप गमाया॥
राम नाम व्रत हिरदै धारूँ, परम उदार निमख न बिसारूँ॥
गाय गाय गावेथा गाया, मन भया मगन गगन मठ छाया॥
जन हरिदास आस तजि पासा, हरि निरगुण निज पुरी निवासा॥

× × ×

रूप न रेख घणूं नहिं थोड़ो, धरणी गगन फुनि नांही रें।
अकल सकल संगि रहै निरंतरि, ज्यूं चन्दा जल मांही रे॥
अगम अथाह थाह नहि कोई, थाह न कोई पावे रे।
जैसा भजन तिसा सब कोई, मन उनमनां बतावे रे॥
सागर में कुंभ कुंभ में जल है, निराकार निज ऐसा रे।
सकल लोक ऐसे हरि मांहीं, रूप कहो धूं कैसा रे॥

अचल अघट सब सुख को सागर, घट घट सबरा मांही रे।
जन हरिदास अविनाशी ऐसा, कहे तिसा हरि नांही रे॥

× × ×

सखी हो मास बसन्त विराजै,
गोपी ग्वाल घेरि गोकुल में, वेरा मधुर धुनि बाजै॥
धागे सुरति पांच नग गूथ्या, मन मोती मधि आया।
बिगसत कमल परमनिधि परगट, हरि कूं हार चढ़ाया॥
गरब गुलाव चरण तलि चूरया, अगर अबीर खिड़ाया।
परमल प्रीति परसी पर पूरण, पिव में प्राण समाया॥
बंक नालि निहचल नौ निरभै, ऐ कौतूहल भारी।
जन हरिदास आनन्द निज नगरी, खेलै फाग मुरारी॥

× × ×

जाति को भेद पणि सकल ऊपरि भयो,
राम रंगि रंग्यो रंग भले रात्यो।
दास कब्बीर जमलोक जावै नहीं,
अलख रस पिवै मस्तानि मातो॥
चोट सूं चोट खिसि खेत चाल्यो नहीं,
पाँच परवल पिसुन मारि लीया।
अकल की चोट जम चोट लागे नहीं,
उलट का पुलट रस भला पीया॥
साध की चाल सुणि सकल संशय मिट्यो,
कह्यो त्यूं रह्यो कछु संक नाहीं।
आन की आस विसवास बांधो नहीं,
रह्यो पणि रह्यो रमि राम मांहीं॥
जल में कँवल पणि नीर भेदे नहीं,
जगत में भक्त यूं रहे जूवा।
जन हरिदास हरि समद में बूंद कबीर,
समद में बूंद मिलि एक हूवा॥

× × ×

आठ पहर की उनमनी, आठ पहर की प्रीति।
आठ पहर सनमुख सदा, यह साधू की रीति॥
यह साधू की रीति, एक रस लागा जीवै।
अगम पियाला हाथि राम रस पावै पीवै॥

जन हरिदास गोविंद भजि आन असुर अरि जीति।
आठ पहर की उनमनी आठ पहर की प्रीति॥

कहा दिखावै और कूं उलटि आप कूं देख।
लेखणि मसि कागद कहा लिखिए तहाँ अलेख॥
लिखिए तहाँ अलेख सुतौ निर्मल करि लीजै।
दिल कागद करि पाक सुतौ लिखि लिखि ठीक दीजै॥
हरीदास हरि सुमरतां संचर रहे न सेख।
कहा दिखावै और कूं उलटि आप कूं देख॥

जागौ रे सोवो कहा अवधि घटै घटि वीर।
कहो कहाँ लो राखिये फूटे भाडे नीर॥
फूटे भांड़े नीर गरकि गाफिल नर सोवै।
भजै नहीं भगवंत, वहोड़ि मलसू मल धोवै॥
हरीदास सुर नर असुर सब मछली जम कीर।
जागौ रे सोवो कहा, अवधि घटै घटि बीर॥

सब को सरबस देत है, अपणी अपणी प्रीति।
साहिब कूं सरबस दिया, या कछु उलटी रीति॥
या कछु उलटी रीति जीति गुण गोबिंद गावै।
सुन मंडल में बैसि साँच सूं सुरति लगावै॥
हरीदास आनंद भया, छूटी सबै अनीति।
सबको सरबस देत है अपणी अपणी प्रीति॥

× × ×

अविनाशी आठों पहर, अपणें हिरदै धारि।
हरीदास निरभै मतै, निरभै बस्त विचारि॥

नाँव निरंजन निर्मला, भजतां होय सो होय।
हरीदास जन यूं कहै, भूलि पड़ै मति कोय॥

हरीदास कासूं कहूँ, अपणां घर की लाय।
ज्यूं जाल्या त्यूंहीं जल्या, जलि बलि रह्या समाय॥

हरीदास अंतरि अगह दीपक एक अनूप।
जोति उजालै खेलिये, जहँ छांहडी न धूप॥

काया माया झूठ है, साँच न जाणो वीर।
कहि काकी भागी तृषा, मृगतृष्णा को नीर॥

जंह आपा तंह आंतरो, करुणा सागर दूरि।
हरीदास आपा मिट्या, है हरि सदा हजूरि।।
नहि देवल सूं बैरतर, नहिं देवलसूं प्रीति।
कृतम तजि गोबिन्द भजै, या साधो की रीति।।
लोक दिखावो मति करै, हरि देखे त्यूं देख।।
हरीदास हरि अगम है, पूरण ब्रह्म अलेख।।
जहं ज्वाला तहं जल नहीं, हरि तहं मैं तैं नाहिं।
हरीदास केहरि कुरंग, एकै बनि न बसाहिं।।
शीतल दृष्टि चकोर की, चन्द बसे ता माहिं।
हरीदास ज्वाला चुगै, देखो दाजै नाहिं।।

आनंदघन

आतम-अनुभव फूल की नवली कोऊ रीत।
नाक न पकरै वासना, कान गहै परतीत।।
अनुभव नाथ कुँ क्यो न जगावै।
ममता-संग सो पाय अजागल-थन तें दूध दुहावै।।
मेरे कहे ते खीज न कीजे, तूँ ऐसिही सिखावै।
बहोत कहे ते लागत ऐसी, अँगुली सरप दिखावै।।
औरन के सँग राते चेतन, चेतन आप बतावै।
आनंदघन की सुमति अनंदा, सिद्ध सरूप कहावै।।

× × ×

आतम-अनुभव रीति वही री।
मौर बनाय निज रूप अनूपम, तिच्छन रुचि कर तेग धरी री।
टोप सनाह सूर को बानो, एकतारी चोरी पहिरी री।
सत्ता थल में मोह बिदारत, ए ए सुरजन मुह निसरी री।
केवल कवला अपछर सुन्दर, गान करे रसरंग-भरी री।
जीत-निसान बजाइ बिराजै, आनंदघन सर्बंग धरी री।।

× × ×

साधु भाइ अपना रूप जब देखा।
करता कौन कौन फुनि करनी, कौन माँगेगी लेखा।
साधु संगति अरु गुरु की कृपा तें, मिट गइ कुल की रेखा।
आनंदघन प्रभु परचो पायो, उतर गयो दिल भेखा।।

× × ×

मेरे घट ज्ञान-भानु भयो भोर ।
चेतन चकवा चेतना चकवी, भागो विरह को सोर ।
फैली चहुँ दिस चतुर-भाव-रुचि, मिट्यो भरम तम जोर ।
आपकी चोरी आपही जानत, और कहत ना चोर ।
अमल कमल विकच भये भूतल, मंद विषय-ससि-कोर ।
आनंदघन एक वल्लभ लागत, और न लाख किरोर ।।

× × ×

रिसानी आप मनावो रे प्यारे, विच्च वसीठ न फेर ।
सौदा अगम है प्रेम का रे, परखत बूझै कोय ।
ले दे वाही गम पड़ै प्यारे, और दलाल न होय ।।
दो बातां जियकी करो रे, मेटो मन की आँट ।
तन की तपत बुझाइये, प्यारे, वचन सुधा रस छाँट ।।
नेक नजर निहारिये रे, उजर न कीजे नाथ ।
तनक नजर मुजरे मिलै प्यारे, अजर अमर सुख साथ ।।
निसि अँधियारी घन घटा रे, पाऊँ न वाट को फंद ।
करुणा करो तो निरबहुँ प्यारे, देखूं तुम मुख चंद ।।
प्रेम जहाँ दुविधा नहीं रे, नहि ठकुराइत रेज ।
आनंदघन प्रभु आइ विराजे, आपहि ममता सेज ।।

× × ×

देखो एक अपूरब खेला ।
आपही बाजी आपही बाजीगर, आप गुरू आप चेला ।
लोक अलोक बिच आप विराजित, ज्ञान प्रकाश अकेला ।
बाजी छाँड। तहाँ चढ़ बैठे, जहाँ सिंधु का मेला ।
वागवाद खट नाद सहू में, किसके किसके बोला ।
पाहाण को भार काँही उठावत, एक तारे का चोला ।
षटपद पद के जोग सिरीखस, क्यों कर गज पद तोला ।
आनंदघन प्रभु आय मिलो तुम, मिट जाय मनका झोला ।।

× × ×

निसानी कहा बताऊँ रे, तेरो वचन अगोचर रूप ।
रूपी कहूँ तो कछू नाहीं रे, कैसे बंधै अरूप ।
रूपा रूपी जो कहूँ प्यारे, ऐसे न सिद्ध अनूप ।।
सिद्ध सरूपी को कहूँ रे, बंधन मोक्ष बिचार ।
न घटे संसारी दसा प्यारे, पुन्य पाप अवतार ।।

सिद्ध सनातन जो कहूँ रे, उपजै विणसै कौण।
उपजै विणसै जो कहूँ रे, नित्य अबाधित गौन॥
सर्वांगी सवनय धणी रे, माने सब परवान।
नयवादी पल्लोग्रही प्यारे, करै लराई ठान॥
अनुभव-गोचर वस्तु कोरे, जाणवो यह ईलाज।
कहन सुनन को कछू नहि प्यारे, आनँदघन महाराज॥

× × ×

अवधू नाम हमारा राखै, सोई परम महारस चाखै।
ना पुरुष नही हम नारी, बरन न भाँति हमारी।
जाति न पाँति न साधन साधक, ना हम लघु नहिं भारी॥
ना हम ताते ना हम सीरे, ना हम दीर्घ न छोटा।
ना हम भाई ना हम भगिनी, ना हम बाप न धोटा॥
ना हम मनसा ना हम सबदा, ना हम तन की धरणी।
ना हम भेख भेखधर नाहीं, ना हम करता करणी॥
ना हम दरसन ना हम परसन, रसन गंध कछु नाही।
आनंदघन चेतनमय मूरति, सेवक जन बलि जाही॥

× × ×

अब मेरे पति गति देव निरंजन।
भटकूँ कहा कहा सिर पटकूँ, कहा करूँ जन रंजन।
खंजन-दृगन दृग न लगाऊँ, चाहूँ न चितवन अंजन।
संजन घट अंतर परमातम, सकल दुरित भय-भंजन।
एह काम-गवि एह काम घट, एही सुधारस-मंजन।
आनँदघन प्रभु घट बन-केहरि, काम-मतंग-गज-गंजन॥

भीषनजी (दादूपंथी)

वह अविगति गति अमित अगम अनभेव अषंडित।
अविहर अमर अनूप अरुचि आरूप अमंडित॥
निर्मल निगह निरंग निगम निहसंग निरनन।
निज निरबन्ध निरसंध निधर निरमोह निचिन्तन॥
जगजीवन जगदीश जपि नारायन रंजन सकल।
भुव-धारन भव दुख-हरन भजु जन भीष अनंतबल॥

× × ×

आहि पुहुप जिमि बास प्रगट तिमि बसै निरंतर।
ज्यों तिलयिन में तेल मेल यों नाहिन अंतर॥
ज्यूं पय घृत संजोग सकल यौं है सम्पूरन।
काष्ठ अगनि प्रसंग प्रगट कीये कहुँ दूरन॥
ज्यूं दर्पण प्रतिबिम्ब मैं होत जाहि विश्राम है।
सकल वियापी भीषजन असे घटि घटि राम है॥

× × ×

इक सरवर तजि मीन कैसे सुष पावत।
बायस बोहिथ छाड़ि फिरत फिर तासुहि आवत॥
सबै भीति की दौर ठौर बिन कहाँ समावत।
उडै पंष बिन आहि सु तौ धरती फिर आवत॥
पात सींचियत पड़े बिन पोय नहिं द्रुम ताहि कौ।
असे हरि बिन भीषजन भजै सु दूजा काहि कौ॥

× × ×

दग्ध वृक्ष नहिं नवै नवै सु आहि सु फलतर।
नाहि कसौटी काच साच कै सहै हेमवर॥
विद्रुम षात न चोट षात सो हीर चोट अति।
पाहन भिदै न नीर भिदै सैंधव कोमल मति॥
अल्प कुम्भ बोलै अधिक संपूरन बोलै नहीं।
त्यूं सठसंग सु भीषजन साध सिद्ध मति है वही॥

× × ×

रबि आकरषै नीर बिमल मल देत न जानत।
हंस क्षीर निज पान सूप तजि तुस कन आनत॥
मधु माषी संग्रहै ताहि नहिं कूकस काजै।
बाजीगर मणि लेत नाहि विष देत विराजै॥
ज्यूं अहीरी काढि घृत तक्र हेत है डारि कै।
यूं गुन ग्रहै सु भीषजन औगुन तजै विचारि कै॥

मुबारक

परी मुबारक तिय बदन अलक ओप अति होय।
मनो चन्द की गोद में रही निसा सी सोय॥
चिबुक कूप में मन परयो छबि जल तृषा विचारि।
कढ़ति मुबारक ताहि तिय अलक डोरि सी डारि॥

चिबुक कूप रसरी अलक तिल सु चरस दृग बैल ।
बारी बैस सिंगार की सींचत मनमथ छैल ॥

× × ×

सब जग पेरत तिलन को, थक्यो चित्त यह हेरि ।
तव अपोल को एक तिल, सब जग डारयो पेरि ॥
मन जोगी आसन कियो, चिबुक गुफा में जाय ।
रह्यो समाधि लगाय कै, तिल सिल द्वारे लाय ॥
चिबुक सरूप समुद्र में, मन जान्यो तिल नाव ।
तरन गयो बूड्यो तहाँ, रूप कहर दरियाव ॥
गोरी के मुख एक तिल, सो मोहि खरो सुहाय ।
मानहु पंकज की कली, भँवर विलम्ब्यो आय ॥

× × ×

अलक मुबारक तिय बदन, लटकि परी यों साफ़ ।
खुस नवीस मुनसी मदन, लिख्यो काँच पर क़ाफ़ ॥
अलक डोर मुख छवि नदी, बेसरि बंसी लाइ ।
दै चारा मुकतानि को, मो चित चली फँदाइ ॥
लगि दृग अंजन ढिग अलक, देत मुबारक मोद ।
जनु साँपिन सुत आपनो, मेटति भरि भरि गोद ॥

× × ×

पानिप के पुंज सुघराई के सदन सुख,
सोभा के समूह और सावधान मौज के ।
लाजन के बोहित प्रमोहित प्रमोदन के,
नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोज के ।
दया के दिवान पतिव्रता के प्रधान,
पूरे नैन ये मुबारक विधान नवरोज के ।
सफर के सिरताज मृगन के महाराज,
साहब सरोज के मुसाहब मनोज के ॥

× × ×

कनक बरन बाल नगन लसत माल,
मोतिन के माल उर सोहैं भली भाँति है ।
चन्दन चढ़ाइ चारु चन्द्रमुखी मोहिनी सी,
प्रात ही नहाइ पगु धारे मुसकाति है ।

चूनरी विचित्र स्याम सजि कै मुबारक जू,
ढाँकि नख सिख ते निपटि सकुचाति है।
चन्द्रमै लपेटि के समेटि के नखत मानो,
दिन को प्रणाम किये राति चली जाति है॥

× × ×

कान्ह की बाँकी चितौनि चुभी झुकि,
काल्हि ही झाँकी है ग्वाल गवाछनि।
देखी है नोखी सी चोखी सी कोरनि,
ओछे फिरै उभरै चित जा छिन।
मार्यो सँभारि हिये में मुबारक,
यै सहजै कजरारे मृगाछनि।
सींक लै काजर देरी गँवारिनि,
आँगुरी तेरी कटैगी कटाछनि॥

जसवंत सिंह

मुख शशि वा शशि सों अधिक, उदित ज्योति दिन राति।
सागर ते उपजी न यह, कमला अपर सोहाति।
नैन कमल ये ऐन हैं, और कमल केहि काम।
गमन गरत नीकी लगै, कनक लता यह बाम।
परजस्ता गुन और को, और विषे आरोप।
होय सुधाधर नाहिं यह, बदन सुधाधर ओप।

× × ×

अलंकार अत्युक्ति यह बरनत अतिसय रूप।
जाचक तेरे दान ते भये कल्पतरु भूप॥
पर्यस्त जु गुन एक को और विषय आरोप।
होइ सुधाधर नाहि यह बदन सुधाधर ओप॥

कुलपति मिश्र

डर बेधत पानिप हरत, मुक्ता जनि बिलखाय।
नाक वास लहि है गुनी, दे अधरन सिर पाय॥

× × ×

दान बिन धनी सनमान बिन गुनी,
ऐसे विष बिन फनी अनी सूर न सहत हैं।
मंत्र बिन भूप ऐसे जल बिन कूप जैसे,
लाज बिन कामिनि के गुननि कहत हैं।
वेद बिन यज्ञ जप जोग मन बस बिन,
ज्ञान बिन योगी मन ऐसे निबहत हैं।
चंद बिन निशा प्राणप्यारी अनुराग बिन,
सील बिन लोचन ज्यों सोभा को लहत हैं।

× × ×

दिसि पूरि प्रभा करिकै दसहू गुन कोकन के अति मोद लहै।
रँगि राखी रसा रँग कुंकुम के अलि गुंजत ते जस पुंज कहै।
निसि एक ह्वै पंकज की पतनीन के वाके हिये अनुराग रहै।
मनो याही ते सूरज प्रात समै नित आवत है अरुनाई लहै।

× × ×

नीति बिना न विराजत राज न राजत नीति जु धर्म बिना है।
फीको लगै बिन साहस रूपक लाज बिना कुल की अबला है।
सूर के हाथ बिना हथियार गयंद बिना दरबार न भा है।
मान बिना कविता की न ओप है दान बिना जस पावै कहा है।

बेनी

छहरै सिर पै छबि मोरपखा उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
फहरै पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झबा झहरैं।
रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहै लहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिए में सदा बिहरैं॥

× × ×

कारीगर कोऊ करामत कै बनाय लायो,
लीनी दाम थोरो जान नई सुघरई है।
रायजू को रायजू रजाई दीनी राजी ह्वै के,
सहर में ठौर ठौर सोहरत भई है।
बेनी कवि पाय के अघाय रहे घरी द्वैक,
कहत न बने कछु ऐसी मति ठई है।

साँस ले उड़िगो उपल्ला और भितल्ला सबै,
दिन द्वै के बाती हेत रुई रह गई है ॥

× × ×

कबि बेनी नई उनई है घटा, मोरवा बन बोलत कूकन री।
लहरै बिजुरी छिति मंडल छ्वै, लहरै मन मैन - भभूकन री।
पहिरौ चुनरी चुनिकै दुलही, सँग लाल के झूलहु झूकन री।
ऋतु पावस योंही ही बितावति हौ, मरिहौ फिर बावरि ! हूकन री ॥

× × ×

हाव भाव विविध दिखावे भाँति भाँतिन सों,
मिलत न रति दान जागे संग जामिनी।
सुबरन भूषन सँवारे ते बिफल होत,
जाहिर किये ते हँसे नर गज गामिनी।
रहे मन मारे लाज लागत उघारे बात,
मन पछतात न कहत कहूँ भामिनी।
बेनी कवि कहै बड़े पापन ते होत दोऊ,
सूम को सुकवि औ नपुंसक को कामिनी ॥

× × ×

करि की चुराई चाल सिंह को चुरायो लंक,
शशि को चुरायो मुख नासा चोरी कीर की।
पिक को चुरायो बैन मृग को चुरायो नैन,
दसन अनार हाँसी बीजरी गम्भीर की।
कहै कवि बेनी बेनी व्याल की चुराइ लीनी,
रती रती शोभा सब रति के शरीर की।
अब तो कन्हैया जू को चितहू चुराइ लीन्ही,
छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की ॥

× × ×

पृथु नल जनक जजाति मानधाता ऐसे,
केते भये भूप यश छिति पर छाइगे।
काल चक्र परे सक्र सैकरन होत जात,
कहाँ लौ गनावो विधि बासर बिताइगे।
बेनी साज सम्मत समाज साज सेना कहाँ,
पायन पसारि हाथ खोले मुख बाइगे।

छुद्र छितिपालन की गिनती गनावै कौन,
रावन से बली तेऊ बुल्ला से बिलाइगे ।।

× × ×

वेद मत सोधि सोधि देखि कै पुरान सबै,
सन्तन असन्तन को भेद को बतावतो।
कपटी कपूत कूर कलि के कुचाली लोग,
कौन राम नाम हू की चरचा चलावतो।
बेनी कवि कहै मानो मानो रे प्रमान यही,
पाहन से हिए में कौन प्रेम उमगावतो।
भारी भवसागर में कैसे जीव होते पार,
जौ पै रामायण ना तुलसी बनावतो ।।

× × ×

मानव बनाये देव दानव बनाये यत्त,
किन्नर बनाये पशु पत्ती नाग कारे हैं।
दुरद बनाये लघु दीरघ बनाये केते,
सागर उजागर बनाये नदी नारे हैं।
रचना सकल लोक लोकन बनाये ऐसी,
जुगति में बेनी परबीनन के प्यारे है।
राधे को बनाये विधि धोयो हाथ जाम्यो रंग,
ताको भये चन्द कर झारे भये तारे हैं ।।

सुखदेव मिश्र

ननद निनारी सासु माइके सिधारी,
अहै रैन अँधियारी भरी सूझत न करु है।
पीतम को गौन कविराज न सुहात भौन,
दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झरु है।
संग॰ना सहेली वैस नवल अकेली,
तन परी तल बेली महा लायो मैन सरु है।
भईं अधरात मेरो जियरा डेरात,
जागु जागु रे बटोही यहाँ चोरन को डरु है ।।

× × ×

यो कछु कीन्हीं अचानक चोट जु ओट सखीन सकी कै दुकूल है।
देह कँपै मुँह पीरी परी सो कह्यो नहीं जो ह्वै गयो हित सूल है।

माँझ उरोज में आनि लग्यो अँगिरात जही उचक्यो भुजमूल है।
कौन है ख्याल ? खेलार अनोखे ! निसंक ह्वै ऐसे चलैयत फूल है ।।

× × ×

जोहैं जहाँ मगु नंदकुमार तहाँ चली चन्दमुखी सुकुमार है।
मोतिन ही को कियो गहनो सब फूलि रही जनु कुन्द की डार है।
भीतर ही जौ लखी सु लखी अब बाहिर जाहिर होति न दार है।
जोन्ह सी जोन्है गई मिलि यों मिलि जाति ज्यो दूध मे दूध की धार है ।।

कालिदास त्रिवेदी

चूमों कर कंज मंजु अमल अनूप तेरो,
रूप के निधान कान्ह मो तन निहारि दे।
कालिदास कहैं मेरे पास हरि हेरि हेरि,
माथे धरि मुकुट लकुट कर डारि दे।
कुँवर कन्हैया मुख चंद की जुन्हैया,
चारु लोचन चकोरन की प्यासन निवारि दे।
मेरे कर मेहँदी लगी है नंदलाल,
प्यारे लट उरझी है नकबेसर सम्भारि दे ।।

× × ×

प्रथम समागम के औसर नवेली बाल,
सकल कलानि पिय प्यारे को रिझायो है।
देखि चतुराई मन सोच भयो प्रीतम के,
लखि परनारि मन संभ्रम भुलायो है।
कालिदास ताही समै निपट प्रवीन तिया,
काजर लै भीतिहूँ मैं चित्रक बनायो है।
व्यात लिखी सिंहिनी निकट गजराज लिख्यो,
योनि ते निकसि छौना मस्तक पै आयो है ।।

× × ×

गढ़न गढ़ी से गढ़ी महल मढ़ी से मढ़ि,
बीजापुर ओप्यो दलमलि सुघराई में।
कालिदास कोप्यो बीर औलिया अलमगीर,
तीर तरवारि गही पुहमी पराई में।
बूँद तें निकसि महिमंडल घमंड मची,
लोहू की लहरि हिमगिरि की तराई मे।

गाड़ि के सुभंडा आड़ कीनी बादसाही तातें,
डकरी चमुंडा गोलकुंडा की लराई में ॥

× × ×

हाथ हँसि दीन्हों भीति अन्तर परसि प्यारी,
देखत ही छकी मति कान्हर प्रवीन की।
निकस्यो झरोखे माँझ बिगस्यौ कमल सम,
ललित अँगूठी तामें चमक चुनीन की।
कालिदास तैसी लाल मेहँदी के बुंदन की,
चारु नख-चंदन की लाल-अँगुरीन की।
कैसी छबि छाजति है छाप और छलान की सु,
कंकन चुरीन की जड़ाऊ पहुँचीन की ॥

नेवाज

देखि हमैं सब आपुस में जो कछू मन भावै सोई कहती हैं।
ये घरहाई लुगाई सबै निसि द्यौस नेवाज हमैं दहती मैं।
बातैं चबाव भरी सुनि कै रिस आवति पै चुप ह्वै रहती हैं।
कान्ह पियारे तिहारे लिए सिगरे ब्रज को हँसिबो सहती हैं ॥

× × ×

आगे तौ कीन्ही लगालगी लोयन, कैसे छिपे अजहूँ जौ छिपावति।
तू अनुराग को सोध कियो, बृज की बनिता सब यों ठहरावति।
कौन संकोच रह्यो है नेवाज, जो तू तरसै उनहू तरसावति।
बावरी! जो पै कलंक लग्यो तौ निसंक है क्यों नहिं अंक लगावति ॥

× × ×

पीठि दै पौढ़ि दुराय कपोल को मानै न कोटि पिया उत पोढ़त।
बाँहन बीच हिए कुच दोऊ गहे रसना मन ही मन सोचत।
सोवत जानि निवाज पिया करसों कर दै निज ओर करोटत।
नीबी बिमोचत चौंकि परी मृगछौना सी बाल बिछौना पै लोटत ॥

वृन्द

नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में रस सिंगार न सुहात ॥

फीकी पै नीकी लगै, कहिए समै विचारि ।
सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गारि ।।

गुनहो तऊ मँगाइये, जो जीवन सुख मौन ।
आग जरावत नगर तऊ, आग न आनत कौन ।।

कैसे निबहैं निबल जन, कर सबलन सो गैर ।
जैसे बस सागर विषे, करत मगर सों वैर ।।

अपनी पहुँच विचारि कै, करतब करिए दौर ।
तेते पाँव पसारिए, जेती लामी सौर ।।

विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावै कौन ।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखा से पौन ।।

रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल ।
सबही जानत बढ़त है, वृच्छ बराबर बेल ।।

होय बड़ेर न हूजिए, कठिन मलिन मुख रंग ।
मर्दन बंधन छत सहत, कुच इन गुनन प्रसंग ।।

नयना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत ।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत ।।

अति परिचय ते होत है, अरुचि अनादर भाय ।
मलयागिर की भीलनी, चंदन देत जराय ।।

निष्फल श्रोता मूढ़ पै, कविता बचन बिलास ।
हाव भाव ज्यों तीय के, पति अंधे के पास ।।

दुष्ट न छाँड़े दुष्टता, कैसे हू सुख देत ।
धोये हूँ सौ वेर के, काजर होत न सेत ।।

जाको जैसो उचित तिहि, करिए सोइ विचारि ।
गीदर कैसे ल्याइ है, गज मुक्ता गज मारि ।।

जैसे बंधन प्रेम को, तैसे बंध न और ।
काठहि भेदे कमल को, छेद न निकरै भौर ।।

मूरख गुन समझै नहीं, तौ न गुनी में चूक ।
कहा घट्यो दिन को विभौ, देखे जो न उलूक ।।

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचो नीर ।।

कुल सपूत जान्यो परै, लखि शुभ लच्छण गात ।
होन हार विरवान के, होत चीकने पात ।।

कछु कहि नीच न छेड़िए, भलो न वाको संग ।
पाथर डारै कीच में, उछरि बिगारै अंग ।।

जूवा खेले होत है, सुख संपति को नास ।
राज काज नल ते छुट्यो, पाँडव किय बनवास ।।

सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खरचै त्यों त्यों बढ़ै, बिन खरचे घटि जात ।।

जो जाको गुन जानही, सो तिहिं आदर देत ।
कोकिल अंबहि लेत है, काग निबौरी हेत ।।

जाही ते कछु पाइये, करिये ताकी आस ।
रीते सरवर पै गये, कैसे बुझत पियास ।।

रस अनरस समझै न कछु, पढ़ै प्रेम की गाथ ।
बीछू मन्त्र न जानहीं, साँप पिटारे हाथ ।।

दीबो अवसर को भलो, जासों सुधरै काम ।
खेती सूखे बरसिबो, घन को कौने काम ।।

पिसुन छल्यो नर सुजन सो, करत बिसास न चूकि ।
जैसे दाध्यो दूध को, पीवत छाँछहि फूँकि ।।

ओछे नर की प्रीति की, दीनी रीति बताय ।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय ।।

बुरे लगत सिख के वचन, हिये विचारो आप ।
करुई भेषज बिन पिये, मिटै न तन की की ताप ।।

गुरुता लघुता पुरुष की, आश्रय वशतें होय ।
करी वृन्द में विंध्य सों, दर्पन में लघु सोय ।।

कहूँ जाहु नाहिंन मिटत, जो विधि लिख्यो लिलार ।
अंकुश भय करि कुंभ कुच, भये तहाँ नख मार ।।

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजे व्यौपार ।
जैसे हाँडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ।।

करिये सुख को होत दुख, यह कहो कौन सयान ।
वा सोने को जारिये, जासों टूटे कान ।।

भले बुरे सब एक सों, जौं लौं बोलत नाहि ।
जानि परतु हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माहि ।।

हितहू की कहियै न तिहिं, जो नर होय अबोध ।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध ।।

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय॥

कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल पर जोर।
चले त अचल उखार तरु, डारत पवन झकोर॥

रोष मिटे कैसे कहत, रिस उपजावन बात।
ईंधन डारे आगमों, कैसे आग बुझात॥

जो जेहि भावे सो भलौ, गुन को कछु न विचार।
तज गज मुकता भीलनी, पहिरति गुंजा हार॥

कहुँ अवगुण सोइ होत गुण, कहुँ गुण अवगुण होत।
कुच कठोर त्यों हैं भले, कोमल बुरे उदोत॥

जे चेतन ते क्यों तजैं, जाको जासों मोह।
चुंबक के पीछे लग्यो, फिरत अचेतन लोह॥

जिहि प्रसंग दूषन लगे, तजिये ताको साथ।
मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ॥

जाके सँग दूषण दुरै, करिये तिहि पहिचानि।
जैसे समझै दूध सब, सुरा अहीरी पानि॥

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोइ।
रोपै बिरवा आक को, आम कहाँ ते होइ॥

बहुत निबल मिल बल करैं, करैं जु चाहैं सोय।
तिनकन की रसरी करी, करी निबन्धन होय॥

साँच झूँठ निर्णय करै, नीति निपुण जो होय।
राजहंस बिन को करै, छीर नीर को दोय॥

दोषहिं को उमहै गहै, गुण न गहै खललोक।
पियै रुधिर पय ना पियै, लागि पयोधर जोंक॥

क्यों कीजै ऐसो जतन, जाते काज न होय।
परबत पर खोदै कुँआ, कैसे निकसै तोय॥

वीर पराक्रम ना करे, तासों डरत न कोइ।
बालकहू को चित्र को, बाघ खिलौना होइ॥

उत्तम जन सों मिलत ही, अवगुण सो गुण होय।
घनसँग खारो उदधि मिलि, बरसै मीठो तोय॥

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान॥

गिरिधर कविराय

शुकने कह्यो सँदेह, सेमर के पग लागिहौ ।
पग न परै वहि देस, जब सुधि आवै फलन की ॥

× × ×

साईं बेटा बाप के, बिगरे भयो अकाज ।
हरनाकस्यप कंस को, गयउ दुहुन को राज ॥
गयउ दुहुन को राज, बाप बेटा में बिगरी ।
दुस्मन दावागीर, हँसै महि मण्डल नगरी ॥
कह गिरिधर कविराय, युगन याही चलि आई ।
पिता पुत्र के बैर, नफ़ा कहु कौने पाई ॥

× × ×

बेटा बिगरे बाप सों, करि तिरियन को नेहु ।
लटापटी होने लगी, मोहिं जुदा करि देहु ॥
मोहिं जुदा करि देहु, घरीमा माया मेरी ।
लेहौं घर अरु द्वार, करौं मैं फजिहत तेरी ॥
कह गिरिधर कविराय, सुनों गदहा के लेटा ।
समय पर्यो है आय, बाप से झगरत बेटा ॥

× × ×

साईं ऐसे पुत्र से, बाँझ रहे बरु नारि ।
बिगरी बेटे बाप से, जाय रहे ससुरारि ॥
जाय रहे ससुरारि, नारि के नाम बिकाने ।
कुल के धर्म नसाँय, और परिवार नसाने ॥
कह गिरिधर कविराय, मातु झंखै वहि ठाईं ।
असि पुत्रनि नहिं होय, बाँझ रहतिउँ बरु साईं ॥

× × ×

काची रोटी कुचकुची, परती माछी बार ।
फूहर वही सराहिये, परसत टपकै लार ॥
परसत टपकै लार, झपटि लरिका सोंचावै ।
चूतर पोंछै हाथ, दोउ कर सिर खजुवावै ॥
कह गिरिधर कविराय, फुहर के याही धैना ।
कजरौटा बरु होइ, लुकाठन आँजै नैना ॥

× × ×

साँई बैर न कीजिये, गुरु पंडित कवि यार ।
बेटा बनिता पँवरिया, यज्ञ करावन हार ॥
यज्ञ करावनहार, राज मन्त्री जो होई ।
विप्र परोसी वैद्य, आप को तपै रसोई ॥
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यहि चलि आई ।
इन तेरह सो तरह, दिये बनि आवै साईं ॥

× × ×

सोना लादन पिय गये, सूना करि गये देश ।
सोना मिले न पिय मिले, रूपा ह्वै गये केश ॥
रूपा ह्वै गये केश, रोय रँग रूप गँवावा ।
सेजन को बिसराम, पिया बिन कबहुँ न पावा ॥
कह गिरिधर कविराय, लोन बिन सबै अलोना ।
बहुरि पिया घर आव, कहा करिहौ लै सोना ॥

× × ×

जाकी धन धरती हरी, ताहि न कीजै संग ।
जो चाहै लेतो बनै, तो करि डारु निपंग ॥
तो करि डारु निपंग, भूलि परतीत न कीजै ।
सौ सौगन्दैं खाय, चित्त मे एक न दीजै ॥
कह गिरिधर कविराय, खटक जैहै नहि ताकी ।
अरि समान परिहरिय, हरी धन धरती जाकी ॥

× × ×

दौलत पाय न कीजिये, सपने में अभिमान ।
चंचल जल दिन चारिको, ठाँउ न रहत निदान ॥
ठाँउ न रहत निदान, जियत जगमें यश लीजै ।
मीठे बचन सुनाय, बिनय सबही की कीजै ॥
कह गिरिधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत ।
पाहुन निशिदिन चारि, रहत सबही के दौलत ॥

× × ×

गुन के गाहक सहसनर, बिनु गुन लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ॥
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊ को एक रंग, काग सब भये अपावन ॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मनके ।
बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुनके ॥

× × ×

साँई सब संसार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार ।।
तब लग ताको यार, यार सँगही सँग डोलैं ।
पैसा रहा न पास, यार मुखसे नहिं बोलैं ।।
कह गिरिधर कविराय, जगत यहि लेखा भाई ।
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई ।।

× × ×

रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामे माँ सोय ।
छाँह न वाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय ।।
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दैहै ।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जरसे जैहै ।।
कह गिरिधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये ।
पाता सब झरिजाय, तऊ छाया में रहिये ।।

× × ×

साँई घोड़े आछतहि, गदहन पायो राज ।
कौआ लीजै हाथ में, दूरि कीजिये बाज ।।
दूरि कीजिये बाज, राज पुनि ऐसो आयो ।
सिंह कीजिये कैद, स्यार गजराज चढ़ायो ।।
कह गिरिधर कविराय, जहाँ यह बूझि बधाई ।
तहाँ न कीजै भोर, साँझ उठि चलिये साँई ।।

× × ×

साईं अवसर के पड़े, को न सहै दुख द्वन्द ।
जाय बिकाने डोम घर, वै राजा हरिचन्द्र ।।
वै राजा हरिचन्द, करैं मरघट रखवारी ।
धरे तपस्वी वेष, फिरे अर्जुन बलधारी ।।
कह गिरिधर कविराय, तपै वह भीम रसोई ।
को न करै घटि काम, परे अवसर के साईं ।।

× × ×

साईं ये न विरोधिये, छोट बड़े सब भाय ।
ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय ।।
कुल्हरी देत गिराय, मारके जमीं गिराई ।
टूक टूक कै काटि, समुद में देत बहाई ।।

कह गिरिधर कविराय, फूट जेहि के घर आई ।
हिरणाकश्यप कंस, गये बलि रावण भाई ।।

× × ×

लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग ।
गहिर नदी नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग ।।
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता कहँ मारै ।
दुश्मन दावागीर, होयँ तिनहूँ को झारै ।।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो धूर के बाठी ।
सब हथियारन छाँड़ि, हाथ महँ लीजै लाठी ।।

× × ×

कमरी थोरे दाम की, आवै बहुतै काम ।
खासा मलमल बाफता, उनकर राखै मान ।।
उनकर राखै मान, बुन्द जहँ आड़े आवै ।
बकुचा बाँधै मोट, रात को झारि बिछावै ।।
कह गिरिधर कविराय, मिलत है थोरे दमरी ।
सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी ।।

× × ×

बिना बिचारे जो करै, सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान, राग रँग मनहि न भावै ।।
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना बिचारे ।।

× × ×

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ ।।
ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसै न कोइ, चित्त में खता न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती ।
आगे को सुख समुझि, होइ बीती सो बीती ।।

× × ×

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिये कोइ ।
तबलग मनमें राखिये, जब लग कारज होइ ।।

जबलग कारज होइ, भूलि कबहूँ नहि कहिये ।
दुरजन हँसै न कोय, आप सियरे ह्वै रहिये ।।
कह गिरिधर कविराय, बात चतुरन के ताईं ।
करतूती कहि देत, आप कहिये नहिं साँईं ।।

× × ×

साँईं अपने भ्रात को, कबहुँ न दीजै त्रास ।
पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास ।।
सदा राखिये पास, त्रास कबहूँ नहिं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश, ताहि की गति सुनि लीजै ।।
कह गिरिधर कविराय, रामसों मिलियो जाईं ।
पाय विभीषण राज, लंकपति बाज्यो साँईं ।।

× × ×

साँईं समय न चूकिये, यथाशक्ति सन्मान ।
को जाने को आइ है, तेरी पौरि प्रमान ।।
तेरो पौरि प्रमान, समय असमय तकि आवै ।
ताको तू मन खोलि, अंक भरि हृदय लगावै ।।
कह गिरिधर कविराय, सबै यामैं सधि आई ।
शीतल जल फल फूल, समय जनि चूको साँईं ।।

× × ×

पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम ।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम ।।
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै ।
परस्वारथ के काज, शीश आगे धरि दीजै ।।
कह गिरिधर कविराय, बड़ेन की याही बानी ।
चलिये चाल सुचाल, राखिये अपनो पानी ।।

× × ×

राजा के दरबार में, जैये समया पाय ।
साँईं तहाँ न बैठिये, जहँ कोउ देय उठाय ।।
जहँ कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिये ।
हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिये ।।
कह गिरिधर कविराय, समय सों कीजै काजा ।
अति चतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहैं राजा ।।

× × ×

कृतघन कबहुँ न मानहीं, कोटि करै जो कोय ।
सर्बस आगे राखिये, तऊ न अपनो होय ।।
तऊ न अपनो होय, भले की भली न मानै ।
काम काढ़ि चुप रहै, फेरि तिहि नहिं पहिचानै ।।
कह गिरिधर कविराय, रहत नितही निर्भय मन ।
मित्र शत्रु सब एक, दाम के लालच कृतघन ।।

संत वाजिदजी

गाफिल रहिबा वीर कहो क्यूं बनत है ।
रे मानस का श्वास जुरा नित गनत है ।
जाग लागि हरिनाम कहाँ लगि सोइ है ।
हरि हाँ, चाके के मुखधरे सु मैदा होइ है ।।
टेढ़ी पगड़ी बाँध झरोखां झाँकते ।
ताता तुरग पिलाण चहूँटे डाकते ।
लारे चढ़ती फौज नगारा बाजते ।
वाजिन्द वे नर गये बिलाय सिंह ज्यूँ गाजते ।।
शिर पर लम्बा केश चले गज चालसी ।
हाथ गह्या शमसेर ढलकती ढालसी ।।
एता यह अभिमान कहाँ ठहरायेंगे ।
हरि हाँ, वाजिन्द ज्यूँ तीतर कूँ बाज झपट ले जायेंगे ।।
काल फिरत है हाल रैण दिन लोइ रे ।
हनै राव अरु रंक गिणे नहिं कोइ रे ।।
यह दुनिया वाजिन्द वाट की दूब है ।
हरि हाँ, पाणी पहिले पाल बँधे तू खूब है ।।
आवेंगे किहि काम पराई पौर के ।
मोती जर वरजाहु न लीजे और के ।।
परिहरि ये वाजिन्द न छूवे माथ को ।
हरि हाँ, पाहन नीको बीर ! नाथ के हाथ को ।।
दरगह बड़ो दिवान न आवे छेह जी ।
जे शिर करवत बहे तो कीजे नेह जी ।।
हरितें दूर न होय दुःख कूँ हेरि के ।
हरि हाँ, वाजिन्द जानराय जगदीश निवाजै फेरि के ।।

भगत जगत में वीर जानिये ऐन रे।
श्वास सरद मुख जरद निर्मले नैन रे॥
दुरमति गइ सब दूर निकट नहिं आवहीं।
हरि हाँ, साध रहे मुख मौन कि गोविन्द गावहीं॥
बड़ा भया तो कहा बरस सो साठ का।
घणा पढ्या तो कहा चतुर्विध पाठ का॥
छापा तिलक बनाय कमंडल काठ का।
हरि हाँ, वाजिन्द एक न आया हाथ पंसेरी आठ का॥
कहे वाजिन्द पुकार सीष एक सुंन रे।
आडो बांकी बार आदहै पुंन रे॥
अपनो पेट पसार बड़ो क्यूँ कीजिये।
हरि हाँ, सारी मैं तै कौर और क्यूँ दीजिये॥
भूखो दुर्बल देख मुंह नहिं मोड़िये।
जो हरि सारी देय तो आधी तोड़िये॥
भी आधी की आध आध की कोर रे।
हरि हाँ, अन्न सरीखा पुण्य नहीं कोइ और रे॥
खैर सरीखी और न दूजी बसत रे।
मेल्हे बासण मांहि कहा मुंह कसत है॥
तूं जन जाने जाप रहेगो ठाम रे।
हरि हाँ, माया दे वाजिन्द धणी के काम रे॥

तेग़ बहादुर

प्रानीकउ हरिजसु मनि नहीं आवै।
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मैं, कहु कैसे गुन गावै।
पूत मीत माइआ ममता सिउ, इहबिधि आपु बंधावै।
म्रिगत्रिसना जिउ भूठो इह जग, देषि तासि उठि धावै।
भुगति मुकति का कारनु सुआमी, मूढ ताहि बिसरावै।
जन नानक कोटन मैं कोऊ, भजनु राम को पावै॥

× × ×

साधो इहु जगु भरमु भुलाना।
राम नाम का सिमरनु छोड़िआ, माइआ हाथि बिकाना।

मात पिता भाई सुत बनिता, ताकै रस लपटाना।
जोबनु धनु बनिता प्रभुता कै मदमै, अहिनिसि रहै दिवाना।
दीन दइआल सदा दुष भंजन, तासिउ मन न लगाना।
जन नानक कोटन मैं किनहू, गुरमुषि होइ पछाना।।

× × ×

बिरथा कहउ कउन सिउ मनकी।
लोभि ग्रसिउ दसहू दिस धावत, आसा लागिउ धनकी।
सुषकै हेत बहुत दुषु पावत, सेव करत जन जनकी।
दुआरहि दुआर सुआन जिउ डोलत, नहिं सुध राम भजन की।
मानस जनमु अकारथ षोवत, लाजन लोक हसन की।
नानक हरि जसु किउ नहिं गावत, कुमति बिनासै तनकी।।

× × ×

यह मनु नैकु न कहिउ करै।
सीष सिषाइ रहिउ अपनी सी, दुरमति ते न टरै।
मदि माइआकै भइउ बाबरो, हरि जसु नहिं उचरै।
करि परपंचु जगत कउ डहकै, अपनो उदरु भरै।
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो, कहिउ न कान धरै।
कहु नानक भजु राम नाम नित, जाते काजु सरै।।

× × ×

भूलिउ मनु माइआ उरझाइउ।
जो जो करम कीउ लालच लगि, तिह तिह आपु बँधाइउ।
समझ न परी विषै रस रचिउ, जसु हरि को बिसराइउ।
संगि सुआमी सो जानिउ नाहिन, बनु षोजन को धाइउ।
रतनु रामु घटही के भीतरि, ताको गिआनु न पाइउ।
जन नानक भगवंत भजन बिन, बिरथा जनमु गँवाइउ।।

× × ×

साधो रचना राम बनाई।
इकि बिनसै इक असथिरु मानै, अचरजु लषिउ न जाई।
कामु क्रोधु मोह बसि प्रानी, हरि मूरति बिसराई।
झूठा तनु साचा करि मानिउ, जिउ सुपनारै नाई।
जो दीसै सो सगल बिनासै, जिउ बादर की छाई।
जन नानक जग जानिउ मिथिआ, रहिउ राम सरनाई।।

× × ×

सभ किछु जीवत को विवहार ।
मात पिता भाई सुत बंधव, अरु फुनि ग्रिह की नारि ।
तन ते प्रान होत जब निआरे, टेरत प्रेति पुकारि ।
आध घरी कोऊ नहिं राषै, घरि ते देत निकारि ।
म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह, देषहु रिदै विचारि ।
कहु नानक भजु राम नाम नित, जाते होत उधार ।।

× × ×

जगत मैं झूठी देषी प्रीति ।
अपने ही सुष सिउ सभ लागे, किआ दारा किआ मीत ।
मेरउ मेरउ सभै कहत है, हित सिउ बाँधिउ चीत ।
अंति कालि संगी नह कोऊ, इह अचरज है रीत ।
मन मूरष अजहूँ नह समझत, सिषदै हारिउ नीत ।
नानक भउ जल पारि परै जउ, गावै प्रभु के गीत ।।

× × ×

मनकी मनही माहि रही ।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे, चोटी काल गही ।
दारा मीत पूत रथ सम्पति, धन पूरन सभ मही ।
अवर सगल मिथिआ ए जानहु, भजनु राम को सही ।
फिरत फिरत बहुते जुग हारिउ, मानस देह लही ।
नानक कहत मिलन की बरीआ, सिमरत कहा नही ।।

× × ×

माई मनु मेरो बस नाहि ।
निस बासुर बिषिअन कउ धावत, किहि विधि रोकउ ताहि ।
वेद पुरान सिम्रित के मति सुनि, निमष नहीं ए बसावै ।
परधन परदारा सिउ रचिउ, बिरथा जनमु सिरावै ।
मदि माइआ कै भइउ बावरो, सूझत नह कछु गिआना ।
घटहीं भीतरि बसत निरंजन, ताको मरमु न जाना ।
जबही सरन साध की आइउ, दुरमति सगल विनासी ।
तब नानक चेतिउ चिंतामनि, काटी जम की फाँसी ।।

× × ×

साधो मन का मानु तिआगउ ।
कामु क्रोधु संगति दुरजन की, ताते अहिनिसि भागउ ।
सुषु दुषु दोनो सम करि जानै, अउरु मान अपमाना ।
हरष सोगते रहै अतीता, तिनि जगि तत्तु पछाना ।

उसतति निन्दा दोऊ तिआगै, षोजै पदु निरवाना।
जन नानक इहु षेलु कठिनु है, किनहू गुरमुषि जाना॥

× × ×

साधो राम सरनि बिसरामा।
बेद पुरान पढ़े को इह गुन, सिमरे हरि को नामा।
लोभ मोह माइआ ममता फुनि, अउ विषअन की सेवा।
हरष सोग परसै जिन नाहिन, सो मूरति है देवा।
सुरग नरक अम्रित विषु ए सभ, तिउ कंचन अरु पैसा।
उसतति निन्दा ए सभ जाकै, लोभु मोहु फुनि तैसा।
दुषु सुषु ए बाधे जिह नाहनि, तिह तुम जानहु गिआनी।
नानक मुकति ताहि तुम मानहु, इह विधि को जो प्रानी॥

× × ×

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ।
लोभ मोह माइया ममता फुनि, जिह घटि माहि पछानउ।
पर निन्दा उसतित नह जाकै, कंचन लोह समानो।
हरष सोग ते रहे अतीता, जोगी ताहि बषानो।
चंचल मन दहदिसि कउ धावत, अचल जाहि ठहरानौ।
कहु नानक इह बिधि को जो नरु, मुकति ताहि तुम मानौ॥

× × ×

जोर नर दुषु मैं दुषु नही मानै।
सुष सनेहु अरु भै नहि जाकै, कंचन माटी मानै।
नह निंदिआ नह उसतति जाकै, लोभु मोहु अभिमाना।
हरष सोग ते रहे निआरउ, नाहि मान अपमाना।
आसा मनसा सगल तिआगै, जगते रहै निरासा।
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि, तिह घट ब्रह्म निवासा।
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी, तिह इह जुगति पछानी।
नानक लीन भइउ गोविंद सिउ, जिउ पानी सिउ पानी॥

× × ×

रे नर इह साची जीआ धारि।
सगल जगतु है जैसे सुपना, बिनसत लगत न बार।
बारू भीति बनाई रचि रचि, रहत नहीं दिन चारि।
तैसे ही इह सुष माइआ के, उरझिओ कहा गँवार।

अजहु समझि कछु बिगरिउ नाहिनि, भजि ले नाम मुरारि।
कहु नानक निज मतु साधन कउ, भाषिउ तोहि पुकारि ॥

× × ×

काहे रे बन षोजन जाई।
सरब निवासी सदा अलेपा, तोही संगि समाई।
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है, मुकर माहि जैसे छाई।
तैसे ही हरि बसै निरंतरि, घट ही षोजहु भाई।
बाहरि भीतरि एको जानहु, इहु गुर गिआनु बताई।
जन नानक बिनु आपा चीन्है, मिटै न भ्रम की काई ॥

× × ×

प्रानी नाराइनि सुधि लेह।
छिनु छिनु अउध घटै निस बासुर, बृथा जातु है देह।
तरनापो बिषिअन सिउ षोइउ, बालापनु अगिआना।
बिरध भइउ अजहू नहिं समझै, कउनु कुमति उरझाना।
मानस जनम दीउ जिह ठाकुर, सो तै किउ बिसराइउ।
मुकति होत नर जाकै सिमरै, निमष न ताको गाइउ।
माइआ को मदु कहा करतु है, संगि न काहू जाई।
नानक कहत चेति चिंतामनि, होइहै अंति सहाई ॥

× × ×

जामै भजनु राम को नाही।
तिह नर जनमु अकारथ षोइआ, यह राषहु मन माही।
तीरथ करै बरत फुनि राषै, नह मनुआ बस जाको।
निहफल धरम ताहि तुम मानो, साचु कहत मैं याकउ।
जैसे पाहनि जल महि राषिउ, भेदै नाहि तिहि पानी।
तैसे ही तुम ताहि पछानो, भगति हीन जो प्रानी।
कलमै मुकति नाम ते पावत, गुरु यह भेदु बतावै।
कहु नानक सोई नरु गरुआ, जो प्रभ के गुन गावै ॥

× × ×

हरि को नामु सदा सुषदाई।
जाकउ सिमिर अजामिलु उधरिउ, गनकाहू गति पाई।
पंचाली कउ राज सभा मैं, राम नाम सुधि आई।
ताको दुषु हरिउ करुणामै, अपनी पैज बढ़ाई।

जिह नर जसु किरपा निधि गाइउ, ताकउ भइउ सहाई ।
कहु नानक मैं इहीं भरोसै, गही आन सरनाई ।।

× × ×

माई मै धनु पाइउ हरि नामु ।
मनु मेरो धावन ते छूटिउ, करि बैठो बिसरामु ।
माइआ ममता तनते भागी, उपजिउ निरमल गिआनु ।
लोभ मोह एह परसि न साकै, गही भगति भगवान ।
जनम जनम का संसा चूका, रतनु नामु जब पाइआ ।
त्रिसना सकल बिनासी मनते, निज सुष माहि समाइआ ।
जाकउ होत दइआलु किरपानिधि, सो गोविंद गुन गावै ।
कहु नानक इह विधि की सम्पै, कोऊ गुरमुषि पावै ।।

× × ×

गुन गोविंद गाइउ नही, जनमु अकारथ कीन ।
कहु नानक हरि भजु मना, जिहि विधि जलकै मीन ।।

सुषु दुषु जिहि परसै नहीं, लोभ मोह अभिमानु ।
कहु नानक सुन रे मना, सो मूरत भगवान ।।

भै काहू कउ देत नहि, नहि भै मानत आनि ।
कहु नानक सुनि रे मना, गिआनी ताहि बषानि ।।

जिहि माइआ ममता तजी, सभते भइउ उदास ।
कहु नानक सुन रे मना, तिह घटि ब्रह्म निवासु ।।

जो प्रानी निसि दिनि भजे, रूप राम तिह जानु ।
हरि जन हरि अंतरु नहीं, नानक साची जानु ।।

नर चाहत कछु अउर, अउरै की अउरै भई ।
चितवत रहिउ ठगउर, नानक फाँसी गलि परी ।।

सुआमी को ग्रिह जिउ सदा, सुआन तजत नही नित ।
नानक इह विधि हरि भजउ, इक मन हुइ इक चिति ।।

तरंनापो इउही गइउ, लीउ जरा तनु जीति ।
कहु नानक भज हरि मना, अउध जातु है बीति ।।

पतित उधारन भै हरन, हरि अनाथ के नाथ ।
कहु नानक तिह जानिऔ, सदा बसतु तुम साथ ।।

जिहि बिषिआ सगली तजी, लीउ भेष बैराग ।
कहु नानक सुन रे मना, तिह नर माथै भाग ।।

जो प्रानी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार।
कहु नानक आपन तरै, अउरन लेत उधार ॥
जतुनु मै करि रहिउ, मिटिउ न मन को मानु।
दुरमति सिउ नानक फधिउ, राखि लेहु भगवानि ॥
एक भगति भगवान, जिह प्रानी के नाहि मन।
जैसे सूकर सुआन, नानक मानो ताहि तन ॥
तीरथ बरत अरु दान करि, मनमै धरै गुमानु।
नानक निरफल जात तिह, जिउ कुंचर असनानु ॥
सिरु कंपिउ पग डगमगै, नैन जोति ते हीन।
कहु नानक इह विधि भई, तऊ न हरिरस लीन ॥
संग सखा सभ तजि गए, कोउ न निबहिउ साथ।
कहु नानक इह विपत मै, टेक एक रघुनाथ ॥

सीतल

कारन कारज ले न्याय कहै जोतिस मत रवि गुरु ससी कहा।
ज़ाहिद ने हक़्क हसन यूसुफ़ अरहंत जैन छबि बसी कहा।
रतराज रूप रस प्रेम इश्क जानी छबि शोभा लसी कहा।
लाला हम तुमको वह जाना जो ब्रह्म तत्त्व त्वम असी कहा ॥

× × ×

मुख सरद बदन पर ठहर गया जानी के बुन्द पसीने का।
या कुन्दन कमल कली ऊपर झमकाहट रक्खा मीने का।
देखे से होश कहाँ रहवै जो पिदर बू अली सीने का।
या लाल बदख़्शा पर खीचा चौथा इल्मास नगीने का ॥

× × ×

हम खूब तरह से जान गए जैसा आनँद का कन्द किया।
सब रूप सील गुन तेज पुन्ज तेरे ही तन मे बन्द किया।
तुझ हुस्न प्रभा की बाकी ले फिर विधि ने यह फरफन्द किया।
चम्पक दल सोनजुही नरगिस चामीकर चपला चन्द किया ॥

× × ×

मुख सरद चन्द्र पर श्रम-सीकर जगमगै नखत गन जोती से।
कै दल गुलाब पर शबनम के हैं उनके रूप उदोती से।
हीरे की कनियाँ मन्द लगै है सुधा किरन की गोती से।
आया है मदन आरती को धर कनक थार मे मोती से ॥

श्रीपति

घूँघट उदय गिरिवर ते निकसि रूप,
सुधा सों कलित छबि कीरति बगारो है।
हरिन डिठौना स्याम सुख सील बरषत,
करषत सोक, अति तिमिर बदारो है।
श्रीपति बिलोकि सौति बारिज मलिन होत,
हरषि कुमुद फूलै नंद को दुलारो है।
रंजन मदन, तन गंजन विरह, बिबि,
खंजन सहित चन्द बदन तिहारो है॥

× × ×

सारस के नादन को वाद ना सुनात कहूँ,
नाहक ही बकवाद दादुर महा करै।
श्रीपति सुकवि जहाँ ओज ना सरोजन की,
फूल ना फुलत जाहि चित दै चहा करै।
बकन की बानी की विराजति है राजधानी,
काई सो कलित पानी फेरत हहा करै।
घोघन के जाल जामे, नरई सेवाल ब्याल,
ऐसे पापी ताल को मराल लै कहा करै॥

× × ×

जल भरे भूमैं मानौ भूमैं परसत आय,
दसहु दिसान घूमैं दामिनि लए लए।
धूरि धार धूमरे से धूम धुधारे कारे,
धुरवान धारे धावै छबि सों छुए छुए।
श्रीपति सुकवि कहै घेरि घहराय,
तकत अनत तन नाव में तए तए।
लाल बिन कैसे लाल चादर रहैगी आज,
कादर करत मोहि बादर नए नए॥

× × ×

उर्द के पचाइबे को हींग अरु सोंठ,
जैसे केरा के पचाइबे को घिव निराधार है।
गोरस पचाइबे को सरसो प्रबल दण्ड,
आम के पचाइबे को नीबू को अचार है।

श्रीपति कहत पर धन के पचाइबे को,
कानन छुआय हाथ कहिबो न कार है।
आज के जमाने बीच राजा राव जानै सबै,
रीझि के पचाइबे को वाहवा डकार है॥

तोषनिधि

श्रीहरि की छबि देखिबे को अँखियाँ प्रति रोमहि में करि देतो।
बैनन के सुनिबे हित स्रौन जितै तित सो करतै करि हेतो।
मो ढिग छोड़ि न काम कहूँ रहे तोष कहै लिखितो विधि एतो।
तौ करतार इती करनी करिकै कलि में कल कीरति लेतो॥

× × ×

तौ तन में रबि को प्रतिबिम्ब परे किरनै सोधनी सरसाती।
भीतर हू रहि जात नहीं अँखियाँ चकि चौंध ह्वै जाति हैं राती।
बैठि रहौ, बलि कोठरी में कह तोष करौ विनती बहु भाँती।
सारसी नैनि लै आरसी सो अँग काम कला कढ़ि घाम में जाती॥

× × ×

भूषन भूषित दूषन हीन प्रबीन महा रस में छबि छाई।
पूरी अनेक पदारथ ते जेहि ते परमारथ स्वारथ पाई।
औ उकतैं मुकतैं उलही कवि तोष अनोष धरी चतुराई।
होत सबै सुख की जनिता बनि आवत जौ बनिता कविताई॥

× × ×

एक कहैं हँसि ऊधव जू! बृज की जुवती तजि चन्द्र प्रभासी।
जाय कियो कहँ तोष प्रभू! एक प्रान प्रिया लहि कंस की दासी।
जो हुते कान्ह प्रवीन महा सो हहा! मथुरा में कहा मति नासी।
जीव नहीं उबियात जबै ढिग पौढ़ति है कुबजा कछु हासी॥

रघुनाथ

फूलि उठे कमल से अमल हितू के नैन,
कहैं रघुनाथ भरे चैन रस सियरे।
दौरि आये भौंर से करत गुनी गुन गान,
सिद्ध से सुजान सुख सागर सो नियरे।

सुरभी सी खुलन सुकवि की सुमति लागी,
चिरिया सी जागी चिन्ता जनक के जियरे।
धनुष पै ठाढ़े राम रवि से लसत आज,
भोर कैसे नखत नरिन्द भए पियरे॥

× × ×

आप दरियाव, पास नदियों के जाना नहीं,
दरियाव पास नदी होयगी सो धावैगी।
दरखत बेलि आसरे को कभी राखता न,
दरखत ही के आसरे को बेल पावैगी।
मेरे लायक जो था कहना सो कहा मैंने,
रघुनाथ मेरी मति न्याय ही को गावैगी।
वह मुहताज आपकी है, आप उसके न,
आप क्यों चलोगे? वह आप पास आवैगी॥

× × ×

सुधरे सिलाह राखै वायु वेग वाह राखै,
रसद की राह राखै राखे रहे बैन को।
चोर को समाज राखै बजा औ नजर राखै,
खबरि के काज बहु रूपी हरफन को।
आगम भखैया राखै सगुन लवैया राखै,
कहै रघुनाथ औ विचारि बीच मन को।
बाजी हारै कबहूँ न औसर के परे जौन,
ताजी राखै प्रजन को राजी सुभटन को॥

× × ×

कैधो सेस देस ते निकसि पुहुमी पै आय,
बदन उचाय बानी जस अपसंद की।
कैधों छिति चँवरी उसीर की दिखावति है,
ऐसी सोहै उज्ज्वल किरन जैसे चंद की।
जानि दिन पाल श्री नृपाल नंदलाल जू को,
कहै रघुनाथ पाय सुघरी अनंद की।
छूटत फुहारे कैधों फूल्यो है कमल तासो,
अमल अमंद कढ़े धार मकरंद की॥

× × ×

ग्वाल संग जैबो व्रज गायन चरैबो ऐबो,
अब कहा ये दाहिने नैन फरकत हैं।
मोतिन की माल वारि डारौं गुन्ज माल,
पर कुन्जन की सुधि आए हिए धरकत हैं।
गोबर को गारो रघुनाथ कछू याते भारो,
कहा भयो पहलन मनि मरकत हैं।
मंदिर है मंदर ते ऊँचे मेरे द्वारका के,
बृज के खरिक तऊ हिए खरकत हैं॥

× × ×

देखिबे को दुति पूनो के चन्द की हे रघुनाथ श्री राधिका रानी।
आइ बुलाइ के चौतरा ऊपर ठाढ़ी भई सुख सौरभ सानी।
ऐसी गयी मिलि जोन्ह की जोत में रूप की रासि न जात बखानी।
बारन ते कुछ भौंहन ते कुछ नैनन की छबि से पहिचानी॥

× × ×

सूखति जाति सूनी जब सों कछु खात न पीवति कैसे धौंरैहै।
जाकी है ऐसी दसा अबही रघुनाथ सौ औधि अधार क्यों पैहै।
ताते न कीजिए गौन बलाइ ल्यों गौन करै यह सीस बिसेहै।
जानति हौं दृग ओट भये तिय प्रान उसासहि के संग जैहै॥

सोमनाथ

प्रीति नई नित कीजति है सब सो छल की बतरानि परी है।
सीखी ढिठाई कहाँ ससि नाथ, हमैं दिन द्वैक ते जानि परी है।
और कहा लहिए सजनी! कठिनाई जरै अति आनि परी है।
मानत हैं बरज्यो न कछू अब ऐसी सुजानहिं बान परी है॥

× × ×

झमकतु बदन मतंग कुम्भ उत्तंग अंग बर।
बंदन बलित भुसुंड कुंडलित सुंड सिद्धिधर।
कंचन मनिमय मुकुट जगमगै सुवर सीस पर।
लोचन तीनि विसाल चार भुज ध्यावत सुर नर।
ससि नाथ नंद स्वच्छन्द निति कोटि विघन छरछंद हर।
जय बुद्धि विलन्द अमंह दुति इंदु भाल आनंद कर॥

नागरीदास

नागर वेद पुरान पढ़्यो सब नादि कै कीन्ही कई मति पाँगुरी।
गंग और गोमती न्हात फिरयो अति सीत में प्रीत सों हाथ लै काँगुरी।
गल्यका न्हाय गोदावरी न्हायो सु त्यागि दो अन्न 'रुखावत सागुरी।
और हूँ न्हायो सु मैं न वदी जुपै नेह नदी में न दी पग आँगुरी॥

× × ×

सुत - पित - पति तिय मोह महादुख मूल है।
जग - मृग तृस्ना देखि रह्यो क्यों भूल है॥
स्वप्न - राज - सुख पाय न मन ललचाइए।
ब्रज नागर नँदलाल सु निसि दिन गाइए॥

× × ×

कलह कल्पना काम कलेस निबारनौ।
परनिन्दा परद्रोह न कबहुँ बिचारनौ॥
जाग प्रपंच चटसार न चित्त पढ़ाइए।
ब्रज-नागर नँदलाल सु निसि दिन गाइए॥

× × ×

अन्तर कुटिल कठोर भरे अभिमान सो।
तिनके गृह नहि रहैं संत सनमान सो॥
उनकी संगति भूलि न कबहूँ जाइए।
ब्रज - नागर नन्दलाल सु निस दिन गाइए॥

× × ×

चरचा करी कैसे जाय।
बात जानत कछुक हमसों, कहत जिय थहराय॥
कथा अकथ सनेह की, उर नाहि आवत और।
वेद सुंमृति-उपनिषद को, रही नाहिन ठौर॥
मनहिं में है कहनि ताकी, सुनत स्रोता नैन।
सोऽब नागर लोग बूझत, कहि न आवत बैन॥

× × ×

कहाँ वे सुत नाती हय हाथी।
चले निसान बजाय अकेले, तहँ कोउ सँग न साथी॥
रहे दास दासी मुख जोवत, कर मीड़ै सब लोग।
काल रह्यो तब सबही छाड़यो, धरे रहे सब भोग॥

जहाँ तहाँ निसि दिन बिक्रम को भट्ट कहत विरदत्त ।
सो सब बिसरि गये एकै रत, 'राम नाम कहैं सत्त' ।।
बैठन देत हुते नहिं माखी, चहुँ दिसि चँवर सचाल ।
लिए हाथ में लट्ठा ताकौ, कूटत मित्र कपाल ।।
सौंधे भीगो गात जारिकै, करि आये बन ढेरी ।
घर आये ते भूलि गये सब, धनि माया हरि तेरी ।।
नागरिदास बिसारिए नाहीं, यह गति अति असुहाती ।
काल-ब्याल कौ कष्ट-निवारन, भजि हरि जनम सँगाती ।।

× × ×

जमुना तट निसि चाँदनी, सुभग पुलिन में जाय ।
कब एकाकी होयहौं, मौन बदन उर चाय ।।
जुगुल रूप - आसव छक्यो, परे रीझ के पान ।
ऐसे संतन की कृपा, मोपै दंपति जान ।।
कुंडल झलक कपोल पर, राजति नाना भांति ।
कब इन नैननि देखिहौं, बदन चंद की कांति ।।

× × ×

मति मारै सर तानिकै, नाती इतो विचारि ।
तीन लोक सँग गाइये, बंसी अरु ब्रजनारि ।।
सब को मन ले हाथ में, पकरि नचाई हाथ ।
एक हाथ की मुरलिया, लगि पिय अधरनि साथ ।।
तो कारन गृह-सुख तजे, सह्यो जगत को थैर ।
हमसों तोसों मुरलिया, कौन जनम को बैर ।।
ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन स्याम ।
अरी चलाये सबनि पै, भले चाम के दाम ।।
कियौ न करिहै कौन नहिं, पिय सुहाग कौ राज ।
अरी बावरी बाँसुरी, मुख लागी मति गाज ।।

× × ×

इश्क उसी की झलक है, ज्यों सूरज की धूप ।
जहाँ इश्क तहँ आप है, कादिर नादिर रूप ।।
सीस काटि कै भू धरै, ऊपर राखै पाँव ।
इश्क चमन के बीच में, ऐसा हो तो आव ।।
अरे पियारे क्या करौं, जाहि रहौ है लाग ।
क्यों करि दिल बारूद में, छिपै इश्क की आग ।।

कोई पहुँचा वहाँ तक, आशिक नाम अनेक ।
इश्क - चमन के बीच में, आया मजनू एक ॥

× × ×

वृन्दावन-कानन में भीर है बिमानन की,
देव वधू देखि देखि भई है मनचला ।
बंसी कल गान कै बितान धुनि वायु बँध्यो,
रमा लोक लोभित ह्वै भूली उर अंचला ।
द्वै द्वै बिच गोपिन के ललित त्रिभंग लाल,
नागरिया पदन्यास बजै छन छंछला ।
रास-रंग-मंडल अखंड रस भेद हाय,
संग ह्यो भमत मानों मेघ चक्र चंचला ॥

संत बाबालाल

जाके अन्तर ब्रह्म प्रतीत । धरे मौन भावे गावे गीत ॥
निसदिन उन्मन रहित खुमार । शब्द सुरत जुड़ एको तार ॥
ना गृह गहे न बनको जाय । लाल दयालु सुख आतम पाय ॥

× × ×

आशा विषय विकार की, बांध्या जग संसार ।
लख चौरासी फेर में, भरमत बारंबार ॥
जिह की आशा कछु नहीं, आतम राखै शून्य ।
तिहकी नहिं कछु भर्मणा, लागै पाप न पुण्य ॥
देहा भीतर श्वास है, श्वासा भीतर जीव ।
जीवे भीतर बासना, किस विध पाइये पीव ॥
जाके अन्तर बासना, बाहर धारे ध्यान ।
तिंह को गोविन्द ना मिलै, अंत होत है हान ॥

तुरसीदास निरंजनी

सार सार मत स्रवण सुनि, सुनि राषै रिद माहिं ।
ताहीको सुतिबौ सुफल, तुरसी तपति सिराहि ॥
तुरसी ब्रह्म भावना यहै, नांव कहावै सोय ।
यह सुमिरन संतन कह्या, सार भूत संजोय ॥

तुरसी तेज पुंज के चरन वे, हाड़ चाम के नाहिं।
वेद पुराननि वरनिए, रिदा कंवल के माहिं॥
तुरसिदास तिहुँ लोक मैं, प्रित्मा (प्रतिमा) ॐकार।
वाचक निर्गुन ब्रह्म कौ, बेदनि वरन्यो सार॥
गुरु गोविंद संतनि विषै, अभिन भाव उपजाय।
मंगलसूं बंदन करै, तौ पायन रहई काम॥
तुरसी बनै न दासकूँ, आलस एक खगार।
हरिगुरु साधू सेव मैं, लगा रहै यकतार॥
बराबरी को भाव न जानै, गुन औगुन ताको कछू न आनै।
अपनो मिंत जानिबो राम, ताहि समरपै अपना धाम॥
तुरसी तन मन आतमा, करहु समरपन राम।
जाकी ताहि दे उरन होहु, छाड़िहु सकल सकाम॥
तुरसी यस साधन भगति, तरलौं सींची सोय।
तिन प्रेमा फल पाइआ, प्रेम मुक्ति फल जोय॥
बहरा गुभि बानी सुनै, सुरता सुनै न कोय।
तुरसी सो बानी अघट, मुख बिन उपजै सोय॥
बिन पग उठि तरवर चढ़ै, सपगे चढ्या न जाय।
तुरसी जोती जगमगै, अंधे कूं दरसाय॥
मूरति में अमूरति बसै, अमल आतमा राम।
तुरसी भ्रम बिसरायकै, ताही कौ लै नाम॥
जनम नीच कहिये नहीं, जौ करनी उत्तम होय।
तुरसी नीच करम करै, नीच कहावै सोय॥
तुरसी त्रिभुवन नाथ कौ, सुहृत सुभाव जु एह।
जेनि केनि ज्यूं भज्यौ जिनि, तैसेहि उधरे तेह॥

रज्जबजी

औधू अकल अनूप अकेला।
महापुरुष मांहैं अरु बाहर, माया मधि न मेला॥
सब गुन रहित रमे घट भीतरि, नादविंद में न्यारा।
परम पवित्र परमगति खेलै, पूरण ब्रह्म पियारा॥
अंजन मांहि निरंजन निर्मल, गुण अतीत गुण मांहीं।
सदा समीप सकल बिधि समरथ, मिले सुमिलि नहिं जाहीं॥

सरबंगी समसरि सब ठाहर, काहू लिपित न होई।
जन रज्जन जगपति की लीला, बूझै विरला कोई !।

× × ×

सतगुरु सो जो चाहि बिन, चेला बिन कीया।
यूं परि दोष न दीजिये, मिलि अमृतरस पीया।।
ज्यूं ससिकै सरधा नहीं, कोइ कमल विगासै।
मुदित कुमोदिनी आपसों, बांधी उसपासै।।
ज्यूं दीपक कै दिल नहीं, को पड़ै पतंगा।
तन मन होमै आपसों, मोड़ै नहिं अंगा।।
कमल कोष आपै खुलै, मन मधुकर नाहीं।
भँवर भुलाना आपसों, बोंधा यूं माहीं।।
ज्यूं चंदन चाहै नहीं, कोइ विषधर आवै।
जन रज्जब अहि आवसों, सो सोधिर पावै।।

× × ×

मन की प्यास प्रचंड न जाई।
माया बहुत बहुत विधि बिलसै, तृप्ति नहीं निरताई।।
ज्यूँ जलधार असंख्य अवनि थल, परत न सो ठहराई।
तैसैं यहु मन भरया भूख सों, देखि परखि सुधि पाई।।
असन वसन बहु होमि अगनि सुख, नहिं संतोष मिलाई।
ऐसी विधि या मन की छुधा है, बुझती नाहिं बुझाई।।
भूख पियास संग ले सूता, सो सपने न अघाई।
इहै सुभाव रहै मन माहैं, तृष्णा तरुन बधाई।।
मन माया सों कदे न धापै, सतगुरु साखि बताई।
जन रज्जब याकी यहु औषधि, राम भजन करि भाई।।

× × ×

गुरु प्रसाद अगम गति पावै, पलटै जीव ब्रह्म ह्वै जावै।
हरि भृंगी गुरु डंक समान, मारत तन में भयेजु प्राण।
चंदन राम गुरू गति वास, भेदै भेद नहिं बना दास।
ब्रह्म सूर गुरु किरण प्रकाश, रजब जीव जल परसि अकास।

× × ×

संतो मन मोहन मिलि नावै।
ज्यूँ बलै बघूला आंधी मांहीं, निकसि न भरण पावै।।

ज्यूं वृक्ष बीज परसि वपु छहनी, वसुधा मांहिं समावै।
उदै अंकूर कौन बिधि ताको, कैसे अंग दिखावै।
स्वाति बूंद जो सीप समानी, सो फिरि गगन न आवै।
अलि चलि कमल केतकी, वीधै, अन्य पहुप नहिं धावै।
अम्मलवेत सुई जो पैठी, सो वागि न सिवावै।
रज्जब रहै रामसौं मन यूं, समरथ ठौर सुभावै॥

× × ×

संतो मगन भया मन मेरा।
अहनिशि सदा एकरस लागा, दिया दरीबै डेरा।
कुल मर्याद मेड सब भारी, बैठा भाठी नेरा।
जाति पांति कछु समझौं नाहीं, किसकूँ करैं परेरा।
रसकी प्यास आस नहिं औरा, इहि मन किया बसेरा।
ल्याव ल्याव याही लय लागी, पीवैं फूल घनेरा।
सो रस मांग्या मिलै न काहू, सिरसाटै बहुतेरा।
जन रज्जब तन मन दै लीया, होय धणी का चेरा॥

× × ×

ऐसो गुरु संसार यह, सुण समझि बिचारा।
जे चाहै उपदेश को, तो पूछ पसारा॥
चौरासी लख जीव का, लछिन लै मांही।
माया मिली मरदिं गये, पर मेले नांही॥
अबल मता उर लीजिये, गिरि तरवर ताकीं।
जहँ रोपे तहँ रहि गये, सुन सतगुर साखी॥
चंद सूर पाणी पवन, धरणी आकसा।
रज्जब समिता पूछले, षट् दर्शन पासा॥

× × ×

जन रज्जब गुरु की दया, दृष्टि परापति होय।
परगट गुपत पिछानिये, जिसहि न दीखै कोय॥
माया पानी दूध मन, मिलै सु मुहकम बंधि।
जन रज्जब वलि हंस गुरु, सोधि लही सो संधि॥
घटा गुरू आशोज की, स्वाति बूंद सत बेन।
सीप सुरति सरधा सहित, तहँ मुकता मन ऐन॥
जन रज्जब गुरु ज्ञान जल, सींचे सिख बनराय।
लघु दीरघ अरु स्वादबिध, ह्वै अंकूर स्वभाव॥

सेवक कुंभ कुँभार गुरु, घड़ि घड़ि काढ़ै खोट।
रज्जब मांहि सहाय करि, तब बाहिर दे चोट॥
चंद सूर पाणी पवन, धरती अरु आकास।
ये सांई के कहे में, त्यूं रज्जब गुरुदास॥

× × ×

तनमन ओले ज्यूं गलहिं, बिरह सूर की ताप।
रज्जब निपजै देखतूं, यों आपा गलि आप॥
घट दीपक बाती पवन, ज्ञान जोति सु उजास।
रज्जब सीचे तेल लै, प्रभुता पुष्टि प्रकास॥

× × ×

दरपन सब देखिये, गहिबेकूँ कछु नाहिं।
त्यूं रज्जब साधू जुदे, माया काया मांहिं॥
साधू सदनि पधारतै, सकल होहिं कल्यान।
रज्जब अघ उडुगन दुरहि, पुनि प्रगटै ज्यों भान॥
सृष्टि सहित सांई लिया, साधू ने उर माहिं।
उभै सामने दास दिलि, तौ सेवक सम कोउ नाहिं॥

× × ×

नान्हौ सौ नान्हें हुए, बारिकहूँ बारीक।
सो रज्जब रामहिं मिले, जो चाले लघु लीक॥

× × ×

रज्जब अजब राम है, कहे सुने में नाहिं।
यहु अशुद्ध अंतःकरण, वह देखै दिल माहिं॥

× × ×

रज्जब आया चूकता, सदा चूकही जाहिं।
पै प्रभु तुम चूकहु सु क्यों, मुझहि उधारो नाहिं॥
नदिया नर मैले बहैं, भरि जोबन मैमंत।
रज्जब रज देखै नहीं, ईषो उदधि अनंत॥

× × ×

पल पल अंतर होत है, पगि पगि पडिये दूरि।
बचन बचन बीचै पड़ै, रज्जब कहाँ हजूरि॥
रज्जब की अरदास यह, और कहैं कछु नाहि।
मो मन लीजै हेरि हरि, मिलै न माया माहिं॥

× × ×

अमिल मिल्या सब ठौर है, अकल सकल सब मांहिं।
रज्जब अजब अगह गति, काहू न्यारा नाहिं॥
प्यंड प्राण दोन्यूं तपहिं, जथा कड़ाही तेल।
रज्जब हरि शशि ज्यूं रहै, अगनि मध्य नहि गेल॥
सब घट घटा समानि है, ब्रह्म बिज्जुली माहिं।
रज्जब चिमकै कौन में, सो समुझै कोइ नाहिं॥

× × ×

अंतरि लांवै लोक सब, अंतरि औघट घाट।
अंतरजामी कूं मिलै, जन रज्जब उर बाट॥
रज्जब बूंद समंद की, कित सरकै कहँ जाय।
साझा सकल समंद सो, त्यूं आतम राम समाय॥

× × ×

जब लग जीव जाण्या कहै, तब लग कछू न जाण।
जब रज्जब जाण्या तबै, जाणिर भये अजाण॥
आतम जे कछु उच्चरै, सब अपणां उनमान।
रज्जब अजब अकल गति, सो किनहूँ नहिं जान॥
माया माहैं ब्रह्म पाइये, ब्रह्म मध्यतैं माया।
फलै सु मनकी कामना, रज्जब भेद सु पाया॥

× × ×

पतिब्रता कै पीव बिनु, पुरुष न जनम्यां कोइ।
त्यूं रज्जब रामहिं रचै, तिनके दिल नहिं दोइ॥
बैकुन्ठहिं बींदै नहीं, सो बिषिया क्यूं लेहि।
रज्जब राते राम सों, औरहि उर क्यूं देहि॥
सूरज देखे सकल दिशि, चलिवेकूँ दिशि येक।
त्यूं रज्जब ही राम सों, यहु गति वरत बमेक॥
हरि दरिया में मीन मन, पीवै प्रेम अगाध।
महा मगन रस में रहै, जन रज्जब सो साध॥
प्रेम प्रीति हित नेह कूँ, रज्जब दुविधा नाहिं।
सेवक स्वामी एक ह्वै, आये इस घर मांहिं॥
जेहि रचना में शीश दे, सोई काम अडोल।
जन रज्जब जुगि जुगि रहै, सूरसती सत बोल॥

× × ×

एक शब्द माया मई, एक ब्रह्म उनहार।
रज्जब उभै पिछाणि उर, करहु बैन ब्यौहार ॥
मुख फानूस रसन है बाती, बह्नी बैन जोति तहँ राती।
काजर कपट उजास विचार, चतुर भाँति दीपक ब्यौहार।
साच माहिं सतयुग बसै, कलियुग कपट मंझार।
मनसा बाचा कर्मना, रज्जब कही बिचार ॥

× × ×

जलचर जाणैं जलचरा, शशि देख्या जलमाहिं।
तैसे रज्जब साधु गति, मूरख समझै नांहि ॥

× × ×

मिनखा देही दिन उदै, जन रज्जब भजि तात।
चौरासी लखि जीव की, देही दीरघ रात ॥
जैसे मन माया मिलैं, जीव ब्रह्म यूं मेलि।
रज्जब बहुरि न पाइये, यहु औसर यूं खेलि ॥
दशों दिशा मन फेरि करि, जहाँ उठै तहाँ राखि।
जन रज्जब जगपति मिलै, सतगुरु साधू साखि ॥
जैसे छाया कूप की, फिरि घिरि निकसै नाहिं।
जन रज्जन यूं राखिये, मन मनसा हरि माहिं ॥
साध सबूरी स्वान की, लीजै करि सु बिबेक।
वे घर बैठा एक कै, तू घर घर फिरहि अनेक ॥
साबुण सुमिरण जल सतसंग, सुकल कृत करि निर्मल अंग ॥
रज्जब रज उतरै इहि रूप, आतम अंबर होइ अनूप ॥

× × ×

शून्य सजीवनि उरि अमर, रसना रहते माहिं।
जन रज्जब आंख्यूँ अखिल, प्राणी मरै सु नाहिं ॥
अडग सुरति आठों पहर, अस्थिर संगि अडोल।
सो रज्जब रहसी सदा, साखी साधू बोल ॥
नर निर्भय हरि नाम में, यहु गढ़ अगम अगाध।
रज्जब रिपु लागै नहीं, सदा सुखी तहाँ साध ॥
पातशाह पहरैं भया, तब देशहु डर नाहिं।
रज्जब चोर कहा करै, जै राजा चेतनि माहि ॥

× × ×

रज्जब जीव ब्रह्म अंतर इता, जिता जिता अज्ञान।
है नाहीं निर्णय भया, परदे का परवान॥

× × ×

कीडी कण अवनी अहि मांथै, बल उनमान उठावहि बोझ।
त्योंही भाव भगति भगता जन, जन रज्जब पाया निज सोझ॥
काष्ठ लोह पाखान की, अगनि उजागर एक।
त्यूं रज्जब रामहिं भजै, सो नहिं भिन्न बिबेक॥
नारायण अरु नगर कूँ, रज्जब पंथ अनेक।
कोई आओ कहीं दिशि, आगै अस्थल एक॥

× × ×

नर निरबैरी होत ही, सब जग वाका दास।
रज्जब दुबिधा दूर गई, उर आये इकलास॥
औगुण ढाकै और के, अपने औगुण नाहिं।
रज्जब अजब आतमा, निरबैरी जगमाहिं॥

× × ×

साईं सेवै सबनि कूँ, साईं को कोइ नाहिं।
मनसा बाचा कर्मना, मैं देख्या मनमाहिं॥

× × ×

जन रज्जब गढ़ ज्ञान कै, दीसै द्वै दरबार।
एकै सुमिरत संचरै, एक पुण्य व्यवहार॥
औषध बिन पथ्य का करे, पथ्य बिन औपधि बादि।
यूँ सुमिरण सुकृत अमिल, उफै न पावहिं दादि॥
शील रहै सुमिरण गहै, सत्य संतोषण नेह।
रज्जब प्रत्यक्ष रामजी, प्रकट भये तेहि देह॥

× × ×

स्वामी सेवक होरह्या, यहि सारे संसार।
रे रज्जब विश्वास गहि, मूरख हिया न हार॥
जै हिरदै विश्वास है, तौ हरि हिरदा माहि।
जन रज्जब विश्वास बिन, बाहरि भीतरि नाहिं॥

× × ×

पसरथूं पगपग मार है, सिमट्यूं सो नहिं कोय।
जन रज्जब दृष्टांत कूँ, मन कच्छप दिशि जोय॥

संकट मधि संतोष ह्वै, विपति बीच विश्वास।
दुख बिन सुख लहिये नहीं, समझि सनेही दास॥

× × ×

मैं आये माया भई, मैं नाहीं तब नाहिं।
रज्जब मुकता मैं बिन, बंधन मैं ही माहिं॥
अपना पड़दा आपही, मूरख समझै नाहिं।
रज्जब रामहि क्यूं मिलै, यहु अंतर इस मांहि॥

× × ×

कहे सुणे कछु ह्वै नहीं, जै कछु किया न जाय।
रज्जब करणी सत्य है, नर देखो निरताय॥
करणी कठिन सु बंदगी, कहणी सब आसान।
जन रज्जब रहणी बिना, कहाँ मिलै रहिमान॥
तन मन आतम रामसूं, ये जोड़े नहिं जाहिं।
तौ रज्जब क्या पाइये, शब्दों जोड़े माहिं॥

× × ×

ज्यूं सुन्दरि सर न्हावतां, अभरण धरैं उतारि।
त्यूं रज्जब रमि राम जल, स्वांग शरीरहि डारि॥
शृंगार सहित अथवा रहित, पति परसे सुत होय।
रज्जब भामिनि भेषबल, फल पावै नहिं कोय॥

× × ×

साधू सीप सरोसगति, सकति सलिल में बास।
प्यंड पुष्ट ह्वै और दिशि, प्राण और दिशि आस॥

× × ×

सकल पसारा शब्द का, शब्द सकल घट माहिं।
रज्जब रचना राम की, शब्द सुन्यारी नाहिं॥
षट दर्शन खालिक खलक, सत्य शब्द के माहिं।
जन रज्जब श्रीपति सहित, बाहरि दीसै नाहिं॥
साधु शब्द डूंगर भये, भाव गुपत बिच धात।
रज्जब टांकी ज्ञान बिन, कोई तहाँ न जात॥

× × ×

बीज रूप कछु और था, वृक्ष रूप भया और।
त्यों प्राकृतें संस्कृत, रज्जब समझा व्यौर॥

वेद सुबाणीं कूप जल, दुखसूं प्रापति होय।
शब्द साखी सरवर सलिल, सुख पीवै सब कोय॥

× × ×

मन हस्ती मैला भया, आप बाहि सिर धूरि।
रज्जब रज क्यूँ ऊतरै, हरि सागर जल दूरि॥
जब मनकूँ माया मिली, तन मन अन्धा होय।
रज्जब माया चलि गई, सब कछु देखै सोय॥
यहु मन मृतक देखि करि, धीजि न कीजै नेह।
रज्जब जीवै पलक में, ज्यूं मींडक जल मेह॥
तन में मन चंचल सदा, ज्यूं मोती मधि थाल।
जन रज्जब क्यूं राखिये, यहु अन्तर गति साल॥
यहु मन भांड भंडार में, राखै रंग अनेक।
रज्जब काढै समै सिरि, जुदी जुदी रंग रेख॥
थकित होत पाका सुमन, ज्यूं कण हांडी माहिं।
काचा कूदै ऊछलै, निहचल बैठे नाहिं॥

× × ×

रज्जब मन में मोज उठि, मन की काया होय।
यूं शरीर पल पल धरै, बूझै बिरला कोय॥
काया में काया धरै, मन सूक्ष्म अस्थूल।
रज्जब यहु जामण मरण, चौरासी का मूल॥
चौरासी जामण मरण, मनसु मनोरथ होय।
बीज बिना ऊगै नहीं, जानत है सब कोय॥

× × ×

ब्रह्मंड पिंड गति एक है, काम लहरि तप होय।
रज्जब नख सख बलि उठै, बरसण लागै सोय॥
रज्जब जगि जोड़े जड़े, चौरासी लख जंत।
एकाएकी एकसूं, सो कोइ बिरला संत॥
मदन महावत देह द्विपि, ग्रह सागर ले जाय।
तहाँ ग्राह ग्रहिणी ग्रहै, कौण छुड़ावै आय॥
पीसण कोई पेट सम, अरि न उदर सों और।
चौरासी चेरे भये, चाहि चून की ठौर॥
पाँचू इन्द्री पाँडु हैं, देह द्रौपदी जान।
ये रज्जब तोऊं धरैं, जे गलैं हिमालय ज्ञान॥

× × ×

निहकामी सेवा करै, ज्यूं धरती आकास।
चंद सूर पाणी पवन, त्यूं रज्जब निजदास॥

× × ×

पाप पुण्य का मूल है, तामे फेर न सार।
धर्म कर्म करि ऊपजै, रज्जब समझि बिचार॥
जे जड़ बैठे जिमी मे, अंकुर जाय अकास।
त्यूं पाप पुण्य का मूल है, सुनहु बिबेकी दास॥

× × ×

रामनाव निज नाव गति, खेवट ज्ञान विचार।
जन रज्जब दोन्यू मिलै, तबै पहुँचै पार॥

× × ×

रज्जब देखो मीन सुत, तिरन सिखावै कौन।
ऐसे उपजण आपसो, गहै ज्ञान मग गौन॥

× × ×

बेहद भजि बेहद मतै, हदका हेत उठाय।
रज्जब रमिये रामसो, अतिगति लाबै भाय॥
मन माया धापै नही, छुधा जो बँधती जाय।
यूंही रज्जब रामकूं, भजिये लाबै भाय॥

× × ×

धीरै धर्मसु ऊपजै, धीरै ज्ञान विचार।
धीरै बंधन सब खुलै, धीरै हरि दीदार॥

सुंदरदास (छोटे)

ज्ञान. तहाँ जहाँ द्वंद्व न कोई।
वाद विवाद नही काहू सौ, गरक ज्ञान मै ज्ञानी सोई।
भेदाभेद दृष्टि नहि जाकै, हर्ष शोक उपजै नहिं दोई।
समता भाव भयौ उर अंतर, सार लियौ सब ग्रंथ बिलोई।
स्वर्ग नरक संशय कछु नाही, मन की सकल वासना धोई।
वाही कै तुम अनुभव जानौ, सुन्दर उहै ब्रह्ममय होई॥

× × ×

मुक्ति तौ धोषै की नीसानी ।
सो कहहूँ नहिं ठौर ठिकाना, जहाँ मुक्ति ठहरानी ।।
को कहै मुक्ति व्योम कै ऊपर, को पाताल के मांही ।
को कहै मुक्ति रहै पृथवी पर, ढूंढ़ै तौ कहुँ नाहीं ।।
बचन विचार न कीया किनहूँ, सुनि सुनि कै उठि धाये ।
गोदंडा ज्यों मारग चाले, आगे षोज बिलाये ।।
जीवत कष्ट करै बहुतेरे, मुये मुक्ति कहैं जाई ।
धोषैही धोषै सब भूले, आगे ऊवा बाई ।।
निज स्वरूप कौं जानि अखंडित, ज्यौं का त्यौंही रहिये ।
सुन्दर कछू ग्रहै नहिं त्यागै, वहै मुक्ति पद कहिये ।।

× × ×

देषौ भाई ब्रह्माकाश समान ।
परब्रह्म चैतन्य व्योम जड़, यह विशेषता जान ।।
दोऊ व्यापक अकल अपरिमिति, दोऊ सदा अखंड ।
दोऊ लिपैं छिपैं कहुँ नाहीं, पूरन सब ब्रह्मण्ड ।।
ब्रह्म माहिं यह जगत देषियत, व्यौम माहिं घन यौंही ।
जगत अभ्र उपजैं अरु विनसैं, वै हैं ज्यौं के त्यौंही ।।
दोऊ अक्षय अरु अविनाशी, दृष्टि मुष्टि नहिं आवैं ।
दोऊ नित्य निरंतर कहिये, यह उपमान बतावैं ।।
यह तौ येक दिषाई है रुष, भ्रम मति भूलहु कोई ।
सुन्दर कंचन तुलै लोह संग, तौ कहा सरभरि होई ।।

× × ×

प्रीति सहित जे हरि भजैं, तब हरि होहि प्रसन्न ।
सुन्दर स्वाद न प्रीति बिन, भूष बिना ज्यौं अन्न ।।
जौ यह उसक ह्वै रहै, तौ वह इसका होय ।
सुन्दर बातौं ना मिलै, जब लग आप न षोय ।।
अपणा सारा कछु नहीं, डोरी हरिकैं हाथ ।
सुन्दर डोलै बांदरा, बाजीगर कै साथ ।।
सुन्दर बंधै देह सौं, तौ यह देह निषिद्धि ।
जौ याकी ममता तजै, तौ याही मैं सिद्धि ।।
पाप पुण्य यह मैं कियौ, स्वर्ग नरक हूँ जाउँ ।
सुन्दर सब कछु मानिले, ताही तें मन नाउँ ।।
जब मन देषै जगत कौं, जगत रूप ह्वै जाइ ।
सुन्दर देषै ब्रह्म कौं, तब मन ब्रह्म अबाइ ।।

उहै ब्रह्म गुरु संत उह, बस्तु विराजत येक।
बचन बिलास विभाग श्रम, बन्दन भाव विवेक॥

तमगुण रजगुण सत्वगुण, तिनकौ उचित शरीर।
नित्य मुक्त यह आतमा, भ्रमते मानत सीर॥

तीन गुननि की वृत्ति मंहि, है थिर चंचल अंग।
ज्यौं प्रतिबिंबहि देषिये, हालत जल के संग॥

शुद्ध हृदय जाकौ भयौ, उहै कृतारथ जान।
सोई जीवन मुक्त है, सुन्दर कहत वषान॥

× × ×

ज्यौं कपरा दरजी गहि ब्यौंतत, काष्ठहिकौं बढ़ई कसि आनैं।
कंचनकौं जु सुनार कसै पुनि, लोहकौ घाट लुहारहि जानैं।
पाहन कौं कसिलेत सिलावट, पात्र कुम्हार कै हाथ निपानैं।
तैसैहिं शिष्य कसै गुरुदेव जु, सुन्दरदास तबै मन मानैं॥

× × ×

तूं ठगिकै धन और कौ ल्यावत, तेरेउ तौ घर औरइ फोरै।
आगि लगै सबहीं जरि जाइ सु, तूं दमरी दमरी करि जोरै।
हाकिम कौ डर नाहिंन सूझत, सुन्दर एकहि बार निचोरै।
तूं षरचै नहिं आपु न षाइ सु, तेरीहि चातुरी तोहि लै बोरै॥

× × ×

जौ मन नारिकी वोर निहारत, तौ मन होत है ताहिकै रूपा।
जौ मन काहूसौ क्रोध करै जब, क्रोधमई होइ जात तद्रूपा।
जौ मन मायाहि माया रटै नित, तौ मन बूड़त माया के कूपा।
सुन्दर जौ मन ब्रह्म विचारत, तौ मन होत है ब्रह्म स्वरूपा॥

× × ×

जो उपजै बिनसै गुन धारत, सो यह जानहु अंजन माया।
आवै न जाइ मरै नहिं जीवत, अच्युत एक निरंजन राया।
ज्यौं तरु तत्व रहै रस एकहि, आवत जात फिरै यह छाया।
सो परब्रह्म सदा सिर ऊपर, सुन्दर ता प्रभुसौं मन लाया॥

× × ×

जा घट की उनहार है जैसीहि, ता घट चेतनि तैसोहि दीसै।
हाथी की देह मैं हाथी सौ मानत, चीटी की देह मैं चीटी की रीसै।

सिंघ की देह मैं सिंघ सौ मानत, कीस की देह मैं मानत कीसै।
जैसी उपाधि भई जहाँ सुन्दर, तैसोहि होइ रह्यो नखसीसै॥

× × ×

एकहि कूप कै नीर तैं सींचत, ईख्र अफीमहि अंब अनारा।
होत उहै जल स्वाद अनेकनि, मिष्ट कटूक षटा अरु षारा।
त्यौंहि उपाधि संयोग तें आतम, दीसत आहि मिल्यौ सौ बिकारा।
काढ़ि लिये जु विचार विवस्वत, सुन्दर शुद्ध स्वरूप है न्यारा॥

× × ×

ज्यौं कोउ कूपमैं झांकि अलापत, वैसीहि भाँति सुकूप अलापै।
ज्यौ जल हालत है लगि पौंन, कहै भ्रमतैं प्रतिविंबहि कांपै।
देहके प्रानके जे मनके कृत, मानत है सब मोहि कौं व्यापै।
सुन्दर पेच पर्यौ अतिसै करि, भूलि गयौ भ्रमतैं भ्रमि आपै॥

× × ×

ज्यौं नर पावक लोह तपावत, पावक लोह मिले सु दिषांही।
चोट अनेक परै घनकी सिर, लोह बधै कछु पावक नांही।
पावक लीन भयौ अपनै घर, शीतल लोह भयौ तब तांही।
त्यौं यह आतम देह निरंतर, सुन्दर भिन्न रहै मिलि मांही॥

× × ×

जासौं कहूँ सबमैं वह एक तौ, सो कहै कैसौ है आंषि दिषइये।
जौ कहूँ रूप न देष तिसै कछु, तौ सब झूठ कै माने कहइये।
जौ कहूँ सुन्दर नैननि मांझि तौ, नैनहूँ बैन गये पुनि हइये।
क्या कहिये, कहते न बनै कछु, जो कहिये, कहतें ही लजइये॥

× × ×

होत बिनोद जु तौ अभिअंतर, सो सुख आपु मैं आपुही पइये।
बाहिर कौं उपायो पुनि आवत, कंठते सुन्दर फेरि पठइये।
स्वाद निवेरैं निवेर्यो न जात, मनौं गुर गूंगेहि ज्यौं नित षइये।
क्या कहिये कहते न बनैं कछु, जो कहिये कहतेहिं लजइये॥

× × ×

एक कहूँ तौ अनेक सौ दीसत, एक अनेक नहीं कछु ऐसो।
आदि कहूँ तिहि अंतहू आवत, आदि न अंत न मध्य सु कैसो।
गोपि कहूँ तौ अगोपि कहा यह, गोपि अगोपि न, ऊभौ न बैसो।
जोइ कहूँ सोइ है नहिं सुन्दर, है तौ सही परि जैसे कौ तैसो॥

× × ×

बैठै तौ बैठै चलै तौ चलै पुनि, पीछै तौ पीछैहि आगै तौ आगै।
बौलै तो बोलै न बोलै तौ मौनहि, सोवै तौ सोवै अरु जागै तौ जागै।
षाइ तौ षाइ नहीं तौ नहीं जु, ग्रहै तो ग्रहै अरु त्यागै तौ त्यागै।
सुन्दर ज्ञानी की ऐसी दसा यह, जानै नहीं कछु राग विरागै॥

× × ×

द्वंद्व बिना विचरै वसुधा परि, जा घट आतम ज्ञान अपारौ।
काम न क्रोध न लोभ न मोह, न राग न द्वेष न म्हारौ न थारौ।
योग न भोग न त्याग न संग्रह, देह दशा न ढक्यौ न उघारौ।
सुन्दर कोउ न जानि सकै यह, गोकुल गाँव कौ पैडौ हि न्यारौ॥

× × ×

एकहि ब्रह्म रह्यौ भरिपूरि तौ, दूसर कौन बतावनि हारौ।
जो कोउ जीव करै जु प्रमांन तौ, जीव कहा कछु ब्रह्म तैं न्यारौ।
जो कहै जीव भयौ जगदीसतै, तो रवि मांहि कहाँ कौ अंधारौ।
सुन्दर मौन गही यह जानिकै, कौनहूँ भाँति न होत निधारौ॥

× × ×

मेरौ देह मेरौ गेह मेरौ परिवार सब,
मेरौ धन माल मैं तौं बहुबिधि भारौ हौं।
मेरौ सब सेवक हुकम कोउ मेटे नाहिं,
मेरी जुवतीकौ मैं तौ अधिक पयारौ हौं।
मेरौ वंश ऊंचौ मेरे बाप दादा ऐसै भये,
करत बड़ाई मैं तौ जगत उज्यारौ हौं।
सुन्दर कहत मेरौ मेरौ करि जानै सठ,
ऐसी नहीं जानै मैं तौ काल ही कौ चेरौ हौं॥

× × ×

जा शरीर मांहि तू अनेक सुख मानि रह्यो,
ताही तू विचारे यामैं कौन बात भली है।
मेद् मज्जा मांस रग रगनि मांहि रकत,
पेट हू पिटारी सी मैं ठौर ठौर मली है।
हाड़निसौं सुख भरयौ हाड़ ही के नैन नांक,
हाथ पाँव सोऊ सब हाड़ ही की नली है।
सुन्दर कहत याहि देषि जिनि भूलै कोइ,
भीतरि भंगार भरि ऊपर तैं कली है॥

× × ×

जैसें आरसी कौ मैल काटत सिकल करि,
मुख मैं न फेर कोउ वहै वाकौ पोत है।
जैसें वैद नैन मैं सलाका मेलि शुद्ध करै,
तटल गये ते तहाँ ज्यौं की त्यौंही जोत है।
जैसें वायु बादर बषेरि कैं उड़ाइ देत,
रवि तौ अकाश मांहि सदाई उदोत है।
सुन्दर कहत भ्रम छिन मैं विलाइ जात,
'साधु ही कै संगतें स्वरूप ज्ञान होत है'॥

× × ×

जीवत ही देवलोक जीवत ही इन्द्रलोक,
जीवत ही जन तप सत्यलोक आयौ है।
जीवत ही निधि लोक जीवत ही शिवलोक,
जीवत बैकुण्ठ लोक जो अकुंड गायौ है।
जीवत ही मोक्ष शिला जीवत ही भिस्ति मांहि,
जीवत ही निकट परमपद पायौ है।
आतम कौ अनुभव जिनि कौं जीवत भयौ,
सुन्दर कहत तिनि संसय मिटायौ है॥

× × ×

कामी है न जती है न सूम है न सती है न,
राजा है न रंक है न तन है न मन है।
सोवै है न जागै है न पीछै है न आगै है न,
ग्रहै है न त्यागै है न घर है न बन है।
थिर है न डोलै है न मौन है न बोलै है न,
बंधै है न बोलै है न स्वामी है न जन है।
वैसौ कोऊ होइ जब बाकी गति जानै तब,
सुन्दर कहत ज्ञानी शुद्ध ज्ञानघन है॥

संत यारी साहब

विरहिनी मंदिर दियना बार।
बिन बाती बिन तेल जुगति सों, बिन दीपक उजियार।
प्रान पिया मेरे गृह आयो, रचि पचि सेज सँवार।

सुखमन सेज परमतत रहिया, पिय निर्गुन निरकार।
गावहु री मिलि आनंद मंगल, यारी मिलि के यार।।

× × ×

हमारे एक अलह पिय प्यारा है।
घट घट नूर मुहम्मद साहब, जाका सकल पसारा है।
चौदह तबक जाकी रुसनाई, झिलमिलि जोति सितारा है।
बे नमून बेचून अकेला, हिन्दु तुरुक से न्यारा है।
सोइ दरवेस दरस निज पायो, सोइ मुसलम सारा है।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, यारी यार हमारा है।।

× × ×

झिलमिल झिलमिल बरसै नूरा, नूर जहूर सदा भरपूरा।।
रुनझुन रुनझुन अनहद बाजै, भँवर गुंजार गगन चढ़ि गाजै।।
रिमझिम रिमझिम बरसै मोती, भयो प्रकाश निरंतर जोती।।
निरमल निरमंल निरमल नामा, कह यारी तहँ लियो बिस्रामा।।

× × ×

जोगी जुगति जोग कमाव।
सुखमना पर बैठि आसन, सहज ध्यान लगाव।
दृष्टि समकरि सुन्न सोओ, आपा मेटि उड़ाव।
प्रगट जोति अकार अनुभव, सब्द सोहं गाव।
छोड़ि मठ को चलहु जोगी, बिना पर उड़ि जाव।
यारी कहै यह मत विहंगम, अगम चढ़ि फल खाव।।

× × ×

उडु उडु रे विहंगम चढ़ु अकास।
जहं नहिं चंद सूर निस बासर, सदा अगमपुर अगम वास।
देखै उरध अगाध निरंतर, हरष सोक नहिं जम कै त्रास।
कह यारी उँह बधिक फाँस नहिं, फल पायो जगमग प्रकास।।

× × ×

देखु बिचारि हिंये अपने नर, देह धरो तौ कहा बिगरो है।
मिट्टी को खेल खिलौना बनो, एक भाजन नाम अनंत धरो है।
नेक प्रतीत हिये नहिं आवत, मर्म भुलो नर अवर करो है।
भूषन ताहिं गँवाइ के देखु, यारी कंचक अैनको अैन खरो है।।

बाबा धरनीदास

प्रभुजी अब जनि मोहि बिसारो।
असरन-सरन अधम-जन-तारन, जुग जुग बिरद तिहारो।
जहँ जहँ जनम करम बसि पायो, तहँ अरुझे रस खारो।
पाँचहु के परपंच भुलानो, धरेउ न ध्यान अधारो।
अंधगर्भ दस मास निरंतर, नखसिख सुरति सँभारो।
मंजा मुत्र अग्नि मल कृम जहँ, सहजै तहँ प्रतिपारो।
दीजै दरस दयाल दया करि, ऐगुन गुन न बिचारो।
धरनी भजि आयो सरनागति, तजि लज्जा कुल गारो॥

× × ×

भइ कंत दरस बिनु बावरी।
मो तन व्यापे पीर प्रीतम की, मूरख जानै आवरी।
पसरि गयो तरु प्रेम साखा सखि, बिसरि गयो चित चावरी।
भोजन भवन सिंगार न भावै, कुल करतूति अभावरी।
खिन खिन उठि उठि पंथ निहारौं, बार बार पछितांवरी।
नैनन अंजन नींद न लागै, लागै दिवस बिभावरी।
देह दसा कछु कहत न आवै, जस जल ओछे नावरी।
धरनी धनी अजहुँ पिय पाओं, तो सहजै अनंद बधावरी॥

× × ×

अजहुँ मिलो मेरे प्रान पियारे।
दीन दयाल कृपाल कृपानिधि, करहु छिमा अपराध हमारे।
कल न परत अति बिकल सकल तन, नैन सकल जनु बहत पनारे।
माँस पचो अरु रक्त रहित भे, हाड़ दिनहुँ दिन होत उघारे।
नासा नैन स्रवन रसना रस, इंद्री स्वाद जुआ जनु हारे।
दिवस दसों दिसि पंथ निहारति, राति बिहात गनत जस तारे।
जो दुख सहत कहत न बनत मुख, अंतरगत के हौ जाननहारे।
धरनी जिन झलमलित दीप ज्यों, होत अंधार करो उजियारे॥

× × ×

मन तुम कसन करहु रजपूती।
गगन नगारा बाजु गहागहि, काहे रहो तुम सूती।
पाँच पचीस तीन दल ठाढो, इन सँग सैन बहूती।
अब तोहि घेरी मारन चाहत, जस पिंजरा महँ तूती।

सुमिरो हरि नामहि बौरे।
चकहूँ चाहि चलै चित चंचल, मूलमता गहि निस्चल कौरे।
पांचहु ते परिचै करु प्रानी, काहे के परत पचीस के झौरे।
जौं लगि निरगुन पंथ न सूझै, काज कहा महि मंडल बौरे।
सब्द अनाहद लखि नहिं आवै, चारो पन चलि ऐसहि गौरे।
ज्यों तेली को बैल बेचारा, घरहिं में कोस पचासक भौरे।
दया धरम नहिं साधु की सेवा, काहे के सो जनमे घर चौरे।
धरनीदास तासु बलिहारी, झूठ तज्यो जिन सांचहि धौरे॥

संत बूला साहब

या विधि करहु आपुहिं पार।
मीन जल की प्रीति जानै, देखु आपु बिचार।
सीप रहत समुद्र मांही, गहत नांहिन बार।
वाकी सुरत आकास लागी, स्वाती बुंद अधार॥
चकोर चाँद सों दृष्टि लावै, अहार करत अँगार।
दहत नाहिंन पान कीन्हें, अधिक होत उजार॥
कीट भृंग की रहनि जानो, जाति पांति गंवाय।
बरन अबरन एक मिलि भे, निरंकार समाय॥
दास बुल्ला आस निरखहिं, राम चरन अपार।
देहु दरसन मुक्ति परसन, आवागवन निवार॥

× × ×

भाई इक सांई जग न्यारा है।
सो मुझमें मैं वाही मांही, ज्यों जल मध्ये तारा है।
वाके रूप-रेख काया नहिं, नहिं माया निस्तारा है।
अगम अपार अमर अविनासी, सो संतन का प्यारा है।
अनंत कला जाके लहरि उठतु है, परम तत्त निरकारा है।
जन बुल्ला ब्रह्म ज्ञान बोलतु है, सतगुरु शब्द अधारा है॥

× × ×

ओढ़ो चूनरी ततसार।
अचल अमर अपार अँगिया, खांडे की ज्यों धार।
नाहिं मारै मरै विनसै, ऐसो है ब्रह्मसार।
उमगि सोहं अधर चढ़िया, बहुरि नहिं औतार।

एका येकी होत अविगति, साधु यह व्योहार।
दास बूला मांडो बाजी, जानै क्या संसार॥

× × ×

प्रीति की रीति सों जीति मैदां लिया,
पवन के घोरा सों जोरा जाय किया है।
पाँच अरु तीन पच्चीस को बसि किया,
साहब को ध्यान धरि ज्ञान रस पिया है।
भूख औ प्यास नहिं आस औ बास नहि,
एक साहब सों ब्रह्म जा थिया है।
दास बूला कहै अगम गति तौ लहै,
तोरि कै कुफुर तब गगन गढ़ लिया है॥

× × ×

आंधरे ने देखो हाथी साथी सब भूलि गयो,
फूलो ब्रह्म जैसे रबि ससि सोहाई है।
सोई मूल सोई थूल सोई फूल फूलि रह्यो,
सोई जुगजुग देखो आपु रूप बोई है।
आदि मध्य अंत बोई नीके करि देखो जोई,
सोई त्रिभुवन नाथ बूझै गति कोई है।
गुरु गम होय बोलै नेकु नाहीं चित डोलै,
जन बूला निज घर सहज समोई है॥

गुरु गोविन्दसिंह

प्रभुजी तोकह लाज हमारी।
नीलकंठ नरहरि नाराइण, नील बसन बनवारी।
परम पुरख परमेस्वर स्वामी, पावन पउन अहारी।
माधव महाजोति मध-मरदन, मान मुकंद मुरारी।
निर्विकार निरजुर निंद्राविन, निर्बिख नरक निवारी।
कृपा सिंधु कालत्रैदरसी, कुकृत - प्रसासन-कारी।
धनुर वान-धृत मान धराधर, अनिविकार असिधारी।
हौं मतिमंद चरन सरनागत, करन गहि लेहु उबारी॥

× × ×

कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी, कोऊ जोगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानबो।

हिन्दू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।
एक ही की सेव सबही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो ॥

× × ×

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठें,
न्यारे न्यारे ह्वै कै फेरि आगमै मिलाहिंगे।
जैसे एक धूरते अनेक धूर धूरत हैं,
धूरके कनूका फेर धूरही समाहिंगे।
जैसे एक नदते तरंग कोट उपजत हैं,
पानके तरंग सब पानही कहाहिंगे।
तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे ॥

× × ×

दीनन की प्रतिपाल करै नित, संत उबार गनीमन गारै।
पच्छी पसू, नगनाग, नराधिप, सर्व समै सबको प्रतिपारै।
पोषत है जलमें थलमें, पलमें, कलके नहिं कर्म बिचारै।
दीन दयाल दयानिधि दोषन देखत है पर देत न हारै ॥

× × ×

काह भयो दोउ लोचन मूंदकै, बैठि रह्यो बकध्यान लगायो।
न्हात फिर्‍यो लिच सात समुंद्रन, लोक गयो परलोक गँवयो।
बासु कियो विखिआन सों बैठकै, ऐसे ही ऐस सुबैस बितायो।
साचु कहौं सुनि लेहु सबै, जिन प्रेम कियो तिनही प्रभु पायो ॥

× × ×

धन्य जीओ तिह को जगमै, मुखते हरि चित्त में जुद्ध बिचारै।
देह अनित्य न नित्य रहै जस नाव चढ़ै भवसागर तारै।
धीरज धाम बनाइ इहै तन, बुद्धि सुदीपक जिउँ उजियारै।
ज्ञानहि की बढ़ती मनु हाथ लै, कातरता कुतवार बुहारै ॥

× × ×

आज्ञा भई अकाल की, तभी चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है, गुरू मानियहु ग्रंथ ॥
गुरू ग्रंथ जी मानियहु, प्रगट गुरों की देह।
जाका हिरदा शुद्ध है, खोज शब्द में लेह ॥

संत बुल्लेशाह

टुक बूझ कौन छप आया है ।
कइ नुकते में जो फेर पड़ा, तब ऐन गैन का नाम धरा ।
जब मुरसिद नुकता दूर कियो, बत ऐनो ऐन कहाया है ।
तुसीं इल्म किताबां पढ़देहो, केहे उलटे माने करदे हो ।
वे मूजब ऐबें लड़दे हो, केहा उलटा वेद पढ़ाया है ।
दुइ दूर करो कोइ सोर नहीं, हिन्दु तुरक कोइ होर नहीं ।
सब साधु लखो कोइ चोर नहीं, घट घट में आप समाया है ।
ना मैं मुल्ला ना मै काजी, ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी ।
बुल्लेशाह नाल जाई बाली, अनहद सबद न जाया है ।।

× × ×

अब तूं जाग मुसाफिर प्यारे ।
रैन घटी लटके सब तारे ।
आवागमन सराई डेरे ।
साथ तयार मुसाफिर तेरे ।
अजे न सुनदा कूच नकारे ।
करले आज करन दी बेला ।
बहुरि न होसी आवन तेरा ।
साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ।
आपो अपने लाहे दौड़ी ।
क्या सरधन क्या निरधन बौरी ।
लाहा नाम तू लेहु संभारे ।
बुल्ले सहुदी पैरी परिये ।
गफलत छोड़ हीला कुछ करिये ।
मिरग जतन बिन खेत उजारे ।।

संत गुलाल साहब

राम मोर पुंजिया राम मोर धना,
निस बासर लागल रहु मना ।
आठ पहर तहँ सुरति निहारी,
जस बालक पालै महतारी ।

धन सुत लछमी रह्यो लोभाय,
गर्व मूल सब चल्यो गँवाय।
बहुत जतन भेष रचो बनाय,
बिन हरि भजन इँदोरन पाय।
हिन्दू तुरुक सब गयल बहाय,
चौरासी में रहि लिपटाय।
कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी,
जाति पाँति अब छुटल हमारी॥

× × ×

मन तुम कपट दूर अड़ाव।
भटक को तुम पंथ छोड़ो, सुरत सब्द समाव।
करत चाल कचाल चाल, मकर मेल सुभाव।
तीन तिरगुन तपत दिनकर, कैसहू बुझलाव।
अति अधीन मलीन माया, मोह में चितलाव।
अगम घर की खबरि नाहीं, मूढ़ तासच पाव।
सुन्न सिखर सरोज फूलो, वंक नालहि जाव।
कह गुलाल अतीत पूरन, आपु में घर पाव॥

× × ×

रसना राम नाम लव लाई।
अंतरगते प्रेम जो उपजै, सहज परमपद पाई।
सतगुरु बचन समीर थीर धरि, भावसो बंद लगाई।
ऊड़ै हंस गगन चढ़ि धावै, फाटि जाय भ्रम काई।
जोग यज्ञ तप दान नेम व्रत, यह मोही नहीं आई।
संतन को चरनोदक लै लै, गिरा जूठ मैं पाई।
कहा कहौं कछु कहल न लागै, नाहक जग बौराई।
कहै गुलाल नाम नहिं जानत, खुझि है हमरी बलाई॥

× × ×

जो पै कोइ प्रेम गाहक होई।
त्याग करै जो मन कि कामना, सीस दान दै सोई।
और अमल की दर जो छोड़ै, आपु अपन गति जोई।
हरदम हाजिर प्रेम पियाला, पुलिक पुलिक रस लेई।
जीव पीव महँ पीव जीव महँ, बानी बोलत सोई।
सोई सभन महँ हम सबहन महँ, बूझत बिरला कोई।

बाकी गती कहा कोइ जानै, जो जिय साँचा होई।
कह गुलाल वे राम सामने, मत भूले नर लोई॥

× × ×

प्रभुजी बरषा प्रेम निहारो।
ऊठत बैठत छिन नहिं बीतत, याही रीत तुम्हारो।
समय होय भा असमय होवै, भरत न लागत वारो।
जैसे प्रीत किसान खेत सों, तैसो है जन प्यारो।
भक्त बछल है बान तिहारो, गुन औगुन न निहारो।
जहँ जहँ जांव नाम गुन गावत, जम को सोच निवारो।
सोवत जागत सरन धरम यह, पुलकित मनहिं बिचारो।
कह गुलाल तुम ऐसो साहब, देखत नेरे न्यारो॥

× × ×

हे मन धोवहु तनकी मैली।
यह संसार नाहिं सूझत घट, खोजत निसु दिन गैली।
नहीं नाव नहिं केवट बेड़ा, फिरत फिरत दिन ऐली।
पाँच पचीस तीन घट भीतर, कठिन कलुख जिम भैली।
गुरु परताप साध की संगति, ग्रान गगन चढि गैली।
कहैं गुलाल राम भयो मेला, जन्म सुफल तब कैली॥

× × ×

अवधू निर्मल ज्ञान विचारो।
ब्रह्म स्वरूप अखंडित पूरन, चौथे पद सों न्यारो॥
ना वह उपजै ना वह बिनसै; ना भरमै चौरासी।
है सतगुरु सत पुरुष अकेला, अजर अमर अविनासी॥
ना वाके बाप नहीं वाके माता, वाके मोह माया।
ना वाके भोग जोग वाके नांही, ना कहीं जाय न आया॥
अद्भुत रूप अपार बिराजै, सदा रहै भर पूरा।
कहैं गुलाल सोई जन जानै, जाहि मिलै गुरु पूरा॥

× × ×

संतो कठिन अपरबल नारी।
सब ही बरलहि भोग कियो है, अजहूँ कन्या क्वारी॥
जननी ह्वै के सब जग पाला, बहु विधि दूध पियाई।
सुन्दर रूप सरूप सलोना, जोय होइ जग खाई॥

मोह जाल सों सबहि, बझायो, जहँ तक हैं तनधारी ।
काल सरूप प्रगट है नारी, इन कहँ चलहु बिचारी ।।
ज्ञान ध्यान सब ही हरि लीन्हो, काहु न आपु सँभारी ।
कहैं गुलाल कोऊ कोउ उबरै, सतगुरु की बलिहारी ।।

× × ×

आजु झरि बरखत बूंद सोहावन ।
पिय कै रीति प्रीति छबि निरखत, पुलकि पुलकि मन भावन ।
सुखमन सेज जे सुरति सँवारहि, झिलमिल झलक देखावन ।
गरजत गगन अनंत सब्द धुनि, पिया पपीहा गावन ।
उमग्यो सागर सलिल नीर भरो, चहुँदिसि लगत सोहावन ।
उपज्यो सुख सनमुख तिरपित भयो, सुधिबुधि सब विसरावन ।
काम क्रोध मद लोभ छुट्यो सब, अपने साहब भावन ।
कहै गुलाल जंजाल गयो तब, हरदम भादो सावन ।।

संत जगजीवन दास (सत्तनामी)

प्रभुजी का बसि अहै हमारी ।
जब चाहत तब भजन करावत, चाहत देत बिसारी ।
चाहत पल छिन छूटत नाहीं, बहुत होत हितकारी ।
चाहत डोरि सूखि पल डारत, डारि देत संसारी ।
कहँ लगि विनय सुनावौं तुमते, मैं तो अहौं अनारी ।
जगजीवन दास पास रहै चरनन, कबहूँ करहु न न्यारी ।।

× × ×

प्रभुजी तुम जानत गति मेरी ।
तुमते छिपा नहीं आहै कछु, कहा कहौं मैं टेरी ।
जहँ जहँ गाढ़ पर्‌यो संतन कां, तहँ तहँ कीन्हो फेरी ।
गाढ़ मिटाय तुरंतहि डारयो, दीन्हो सुक्ख घनेरी ।
जुग जुग होत ऐस चलि आवा, सो अब सांझ सबेरी ।
दियो जनाय सोई तस जानै, वास मनहिं तेहि केरी ।
कर औ सीस दियो चरनन महै, नहिं अब पाछे हेरी ।
जगजीवन के सतगुर साहब, आदि अंत तेहि केही ।।

× × ×

तेरा नाम सुमिरि ना जाय।
नहीं बस कछु मोर आहै, करहुँ कौन उपाय।
जबहिं चाहत हितू करिकै, लेत चरनन लाय।
बिसरि जब मन जात आहै, देत सब बिसराय।
अजब ख्याल अपार लीला, अंत काहु न पाय।
जीव जंत पतंग जगमहँ, काहु ना बिलगाय।
करौं विनती जोरि दुहूँ कर, कहत अहौं सुनाय॥
जगजीवन गुरु चरन सरन, ह्वै तुम्हार कहाय॥

× × ×

सांई मैं नहिं आपुक जाना।
को मैं आहुँ कहाँ ते आयों, फिरत हौं कहाँ भुलाना।
काया कंचन लोक बनायो, तेहि का अंत न जाना।
बूझौं कहँ अस्थान कौन है, सर्व अंग ठहराना।
देखत हौं काहू नहिं न्यारा, समुझत आहौं शाना।
कौन जुक्ति जग बंध निकरिये, कैसे ह्वै मस्ताना।
मैं जानौं मन तुमहीं साहब, ताते मन बिलगाना।
तेहिका रूप अनूप अमूरति, गगन मंडल अस्थाना।
तेहिते सूरति फूटी तेहिमाँ, गुरू अलख करि माना।
चेला ह्वै कै करूँ बंदगी, सीस करहुँ कुरबाना।
तुमते मैं संतुष्टा ह्वै हौं, अहहु मूर्ति निर्बाना।
जगजीवन पर दया कीन्हों, तबते अब पहिचाना॥

× × ×

भाई रे कहा न मानै कोई।
जिहि समुझायकै राह बतावौं, मन परतीत न होई।
कपट रीति कै करहिं बंदगी, सुमति न व्यापै सोई।
भये नर हीन कुमारग परिकै, डारिन सर्वस खोई।
गे भरुहाय तनिक सुख पाये, मैं तैं रहे समोई।
फिर पछिताने कष्ट भये पर, रहे मनहिं मन रोई।
देखि परत नैनन से वैसे, कठिन जीव है वोई।
जगजीवन अंतर महँ सुमिरै, जस होई तस होई॥

× × ×

तुम्हरी गति कछु जानि न पायो।
जेइ जस बूझा तेइ तस सूझा, ते तैसइ गुन गायो।

करौं ढिठाई कहौं बिनय करि, मोहि जस राम बतायो।
जस मैं गहा लहा लै लागी, चरन सरन तब पायो।
भटकत रहेंउ अनेक जनम लहि, वह सुधि सो विसरायो।
दाया कीन्ह दास करि जानेहु, बड़े भाग तें आयो।
दियो बताइ दिखाइ आपुकहँ, चरनन सीस नवायो।
जगजीवन कहँ आपन जानेहु, अघ कर्म भर्म मिटायो।।

× × ×

साधो रसनि रटनि मन सोई।
लागत लागत लागि गई जब, अन्त न पावै कोई।
कहत रकार मकारहि माते, मिलि रहे ताहि समोई।
मधुर मधुर ऊँचे को धायो, तहाँ अवर रस होई।
दुइ कै एक रूप करि बैठे, जोति झलमली होई।
तेहिकाँ नाम भयो सतगुरु का, लीह्यो नीर निकोई।
पाइ मंत्र गुरु सुखी भये तब, अमर भये हहिं वोई।
जगजीवन दुइ करतें चरन गहि, सीस नाइ रहे सोई।।

× × ×

ए सखि अब मैं काह करौं।
भूलि परिउँ मैं आइके नगरी, केहि बिधि धीर धरौं।
अंत नहीं यहि नगरक पावौं, केतो बिचार करौं।
चहत जो अहौं मिलौं मैं पिय कहँ, भ्रम की गैल परौं।
हित मोर पाँच होत अनहितई, बहुतक खैंच करौं।
केतो प्रबोधि के बोध करौं मैं, ई कहै धरौं धरौं।
तीस पचीस सहेली मिलि संग, ई गहै कैसे बरौं।
पाँय पकरि कै बिनती करौ मैं, लै चलु गगन परौं।
निरत निरखि छवि मोहि कहो अब, गहि रहुँ नाहिं टरौं।
जगजीवन सत दरस करौं सखि, काहेक भटक फिरौं।।

× × ×

यहि नगरी महँ परिउँ भुलाई।
का तकसीर भई धौं मोहिते, डारे मोर पिय सुधि बिसराई।
अब तो चेत भयो मोहि सजनी, ढुंढत फिरहुँ मैं गइउँ हिराई।
भसम लाय मैं भइउँ जोगनियाँ, अब उन बिनु मोहि कछु न सुहाई।
पाँच पचीस की कानि मोहि है, तातें रहौं मैं लाज लजाई।
सुरति सयानप अहै इहै मत, सब इक बसिकरि मिलि रहु जाई।

निरति रूप निरखि कै आवहु, हम तुम तहाँ रहहि ठहराई।
जगजीवन राखि गगन मंदिर महँ, सतकी सेज सूति सुख पाई॥

× × ×

गगरिया मोरी चितसों उतरि न जाय।
इक कर करवा एक कर उबहनि, बतिया कहौं अरथाय।
सास ननद घर दारुन आहैं, तासों जियरा डेराय।
जो चित छूटै गागरि फूटै, घर मोरि सास रिसाय।
जगजीवन अस भक्ती मारग, कहत अहौं गोहराय॥

× × ×

सांई मोहि सब कहत अनारी।
हम कहँ कहत अजान अहैं येइ, चतुर सबै संसारी।
अहै अभेद भेद नहिं जानत, सिखि पढ़ि कहत पुकारी।
देखि करत सो आवत नाही, डारिन भजन बिगारी।
कहा कहौं मन समुझि रहत हौं, देख्यौ दृष्टि पसारी।
समुझाये कोउ मानत नाहीं, कपट बहुत अधिकारी।
बिरले कोइ जन करत बंदगी, मै तै डारत मारी।
जगजीवन गुरु चरन सीस दै, निरखत रूप निहारी॥

बाबा किनाराम

प्रेमदा पैड़ो सबदा न्यारो।
मगन मस्त खुश होले प्यारे, नाम धनीदा प्यारो।
जीवन मरन काम कामादिक, मनतें सबै बिसारो।
बेद किवेद करनि लज्जा को, चिन्ता चपल नेवारो।
नेम अचार येकई राखै, संगत रखै सचारो।
अभै असोच सोच ना आनै, कोउ जन जानि निहारो।
रहत अजानि जानि के बूड़त, सूझत नहिं उजियारो।
उतरत चढ़त रहत निसिवासर, अनुभव याहि बिचारो।
राम किना यह गैल अटपटी, गुरु गम को पतियारो॥

× × ×

संतो भाई भूल्यो कि जग बौरानो, यह कैसे करि कहिये।
याही बड़ो अचंभो लागत, समुझि समुझि उर रहिये॥

कथै ज्ञान असनान जग्य व्रत, उरमें कपट समानी।
प्रगट छांड़ि करि दूरि बतावत, सो कैसे पहचानी।
हाड़ चाम अरु मास रक्त मल, मज्जा को अभिमानी।
ताहिं खाय पंडित कहलावत, वह कैसे हम मानी।
पढ़े पुराण कोरान वेद मत, जीव दया नहिं जानी।
जीवनि भिन्न भाव करि मारत, पूजत भूत भवानी।
वह अदृष्ट सूझै नहिं तिनकौ, मनमें रहै रिसानी।
अंधहिं अंधा डगर बतावहै, बहिरहि बहिरा बानी।
राम किना सतगुरु सेवा बिनु, भूलि मर्‍यो अज्ञानी॥

× × ×

शब्द का रूप साँचो जगत पुरुष है, शब्द का भेद कोइ संत जानै।
शब्द अज अमर अद्वितीय व्यापक पुरुष, सतगुरु शब्द सुविचार आनै।
चंद में जोति है जोति में चंद है, अरथ अनुभौ करै एक मानै।
राम किना अगम यह राह बाकी निपट, निकट को छाड़ि कै प्रीति टानै॥

× × ×

अनुभव सोई जानिये, जो नित रहै बिचार।
राम किना सत शब्द गहि, उतर जाय भौपार॥
चाह चामरी चूहड़ी, सब नीचन ते नीच।
तूं तो पूरन ब्रह्म था, चाहन होती बीच॥

रसनिधि

पसु पच्छी हू जानहीं, अपनी अपनी पीर।
तब सुजान जानौ तुम्हें, जब जानौ पर पीर॥
सुन्दर जोबन रूप जो, बसुधा में न समाइ।
दृग तारन तिल बिच तिन्हें, नेही धरत लुकाइ॥
मन गयंद छबि मद छके, तोर जँजीरनि जात।
हित के झीने तार सों, सहजै ही बँधि जात॥
सरस रूप कौ भार पल, सहि न सकै सुकुमार।
याहीं तैं ये पलक जनु, झुक आवै हर बार॥
अद्भुत गति यह प्रेम की, बैनन कहीं न जाय।
दरस भूख लागे दृगन, भूखहि देत भगाय॥

प्रेम नगर में द्दग बया, नोखे प्रकटे आय ।
दो मन को करि एक मन, भाव देत ठहराय ।।

न्यारो पैंड़ो प्रेम कौ, सहसा धरौं न पाव ।
सिर के पैंड़े भावते, चलौ जाय तौ जाव ।।

अद्भुत गति यह प्रेम की, लखौ सनेही आइ ।
जुरे कहूँ टूटे कहूँ, कहूँ गाँठ परि जाइ ।।

अद्भुत बात सनेह की, सुनौ सनेही आइ ।
जाकी सुध आवै हिए, सबही सुध बुध जाइ ।।

कहनावत मैं यह सुनी, पोषत तनु को नेह ।
नेह लगाये अब लगी, सूखत सिगरी देह ।।

यह बूझन को नैन ये, लग लग कानन जात ।
काहू के मुख तुम सुनी, पिय आवन की बात ।।

लेहु न मजनू गोर ढिग, कोऊ लैला नाम ।
दरदवंत को नेकु तौ, लेन देहु बिसराम ।।

चतुर चितेरे तुव सबी, लिखत न हिय ठहराय ।
कलम छुवत कर आँगुरी, कटी कटाछन जाय ।।

अलबेली अलि

लाल तेरे लोभी लोलुप नैन ।
केहि रस छकनि छके हौ छबीले मानत नाहिन चैन ।
नींद नैन घुरि घुरि आवत अति छोरि रही कछु नैन ।
अलबेली अलि रस के रसिया कत बिसरत ये बैन ।।

× × ×

बने नवल प्रिय प्यारी ।
सरद नैन उँजियारी ।।
सरद रैन सुख देन मैनमय जमुना तीर सुहायो ।
सकल कला पूरन ससि सीतल महि मंडल पर आयो ।
अतिसय सरस सुगन्ध मंद गति बहत पवन रुचिकारी ।
नव नव रूप नवल तन जोबन बने नवल पिय प्यारी ।।

× × ×

लीनो वृन्दाबन बसि लाह्यो ।
सेवा टहल महल की निसि दिन यह जिय नेक निबाह्यो ।

अद्‌भुत प्रेम विहार चारु रस रसिकनि बिनु किनु चाह्यो।
अलबेली अलि सफल कियो सब जिन यह रस अवगाह्यो॥

× × ×

देखु सखी इनको नव नेह।
उमड़ि ढेर घन रूप के मानो, बरसत रस कौ मेह।
खान-पान बसनन कल भूषन, भूले सब सुधि देह।
अलबेली नहिं जानति निसि दिन परे प्रेम के गेह॥

× × ×

गुंजन मधुपन सुनन अली री।
उमगी मनो प्रेम की सरिता, रूप के सिन्धु चली री।
बिहँसत बदन हँसत बिगसत सी, जनु अनुराग कली री।
रूप अनूप लखै अलबेली, आई बारि भली री॥

× × ×

लता तू अनोखे ख्याल पर्‌यो है।
अति हीं नीदर नैन उनीदे, आरस रंग भर्‌यो है।
अति आसक्ति भर्‌यो नहिं जानत, पुहुम प्रभाव कर्‌यो है।
अलबेली अलि तृपित न मानत, किहि रस रंग ढर्‌यो है॥

× × ×

श्री बंसी अलि की बलि जाऊँ।
जाकी चरन सरन किरपा तैं, बृन्दावन धन पाऊँ।
नव नागरि अलि कुल चूड़ामणि, रहसि रहसि दुलराऊँ।
अलबेली अलि हिय कौ गहिनौ, प्रेम जराइ जराउँ॥

× × ×

श्री बंसी अलि प्रान हमारे।
हृदय कमल संपुट करि राखूँ, अँखियन के बर तारे।
चरन सरोज सुगति मति मोरी, निरधन धन अनुसारे।
अलबेली अलि, अलिगन मधुकर ह्वै, पीवत रस सुखसारे॥

× × ×

कुमुद बिगसत मोद दिन-दिन किरिन कृपा पसारहीं।
द्वन्द कलिमल मिटत तम सब जोन्ह हम संचारहीं।
झलकै सुबैनन माधुरी बिबि रसिक मनि बर राजहीं।
जाके सुहृदय प्रकास है यह कलप तरु बड़ साजहीं॥

× × ×

बृन्दाबन बसि यह सुख लीजै।
सात समय की टहल महल बिनु, इक छन जान न दीजै।
परम प्रेम रस रास रसिक जे, तिनही को सँग कीजै।
निविड़ निकुंज बिहार चारु अति, सुरस सुधा-दिन पीजै।
और भजन साधन में मिथ्या, कबहूँ काल न छीजै।
दिन दुलराइ लड़ाइ दुहुन को, अलबेली अलि जीजै ।।

बख्शी हंसराज

दमकति दीपति देह दामिनि सी चमकत चंचल नैना।
घूँघट विच खेलत खंजन से उड़ि उड़ि दीठि लगै ना।
लटकटि ललित पीठ पर चोटी बिच बिच सुमन सँवारी।
देखे ताहि मैर सो आवत मानहु भुजंगिनि कारी ।।

× × ×

इत से चली राधिका गोरी सौंपन अपनी गैया।
उत ते अति आतुर आनँद सो आए कुँअर कन्हैया ।।
कसि भौहे हँसि कुँअरि राधिका कान्ह कुँअर सो बोली।
अँग अँग उमगि भरे आनँद दरकति छिन छिन चोली ।।

× × ×

कोऊ कहूँ आय बन बीथिन या लीला लखि जैहै।
कहि कहि कुटिल कठिन कुटिलन सो सिगरे बृज बगरैहै ।।
जो तुम्हरी इनकी ये बातें सुनिहै कीरति रानी।
तौ कैसे पटिहै पाटे ते घटिहै कुल को पानी ।।

× × ×

ऐरे मुकुट वार चरवाहे! गाय हमारी लीजौ।
जाय न कहूँ तुरत की ब्यानी सौंपि खरक के दीजौ ।।
होहु चरावन हार गाय के बाँधन हार छुरैया।
करि दीजौ तुम आय दोहनी पावै दूध लुरैया ।।

दूलह

धारो जब बाही तब करो तुम 'नाहीं',
पायँ दियौ पलकाही 'नाहीं नाहीं' कै सुहाई हौ।

बोलत में नाहीं, पट खोलत में नाहीं,
कवि दूलह उछाही लाख भाँतिन लहाई हौ।
चुम्बन में नाहीं, परिरम्भन में नाहीं,
सब आसन विलासन में नाहीं ठीक ठाई हौ।
मेलि गलबाही, केलि कीन्हीं चितवाही यह,
हाँ से भली 'नाहीं' सो कहाँ से सीख आई हौ॥

× × ×

सारी की सरोंट सब सारी में मिलाय दीनी,
भूषन की जेब जैसे जेब जहियतु है।
कहै कवि दूलह छिपाये रद छद मुख,
नेह देखे सौतिन की देह दहियतु है।
बाला चित्र साला ते निकसि गुरुजन आगे,
कीन्हीं चतुराई सो लखाई लहियतु है।
सारिका पुकारै हम नाहीं, हम नाहीं,
ए जू! राम-राम कहौ नाहीं-नाहीं कहियतु है॥

× × ×

उरज उरज धँसै, बसे उर आड़े लसे,
बिन गुन माल गरे धरे छवि छाये हौ।
नैन कवि दूलह के राते, तुतराते बैन,
देखे सुने सुख के समूह सरसाये हौ।
जावक सों लाल भाल पलकन पीक लीकी,
प्यारे बृज चन्द सुचि सूरज सुहाये हौ।
होत अरुनोद यदि कोद मति वसी आज,
कौन घर बसी घर बसी करि आये हौ॥

× × ×

माने सनमाने तेइ माने सनमाने सन,
माने सनमाने सनमान पाइयतु है।
कहै कवि दूलह अजाने अपमाने,
अपमान सो सदन तिनही को छाइयतु है।
जानत है जेऊ तेऊ जात हैं विराने द्वार,
जान बूझ भूले तिनको सुनाइतु है।
काम बस परे कोऊ गहत गरूर तौ वा,
अपनी जरूर जाजरूर जाइतु है॥

बृजबासी दास

ठाढ़ी अजिर जसोदा रानी, गोदी लिए श्याम सुखदानी।
उदै भयौ ससि सरद सुहावन, लागी सुत को मात दिखावत।
देखहु श्याम चन्द यह आवत, अति सीतल दृग ताप नसावत।
चितै रहे हरि इक टक ताही, कर ते निकट बुलावत ताही।
मैया यह मीठो है खारो, देखत लगत मोहि यह प्यारो।
देहि मँगाय निकट मैं लैहों, लागी भूख चन्द मैं खैहों।
देहि बेगि मैं बहुत भुखानो, माँगत ही माँगत विरुझानो।
जसुमति हँसत करत पछतायो, काहे को मैं चन्द दिखायो।
रोवत हैं हरि बिनही जाने, अब धौं कैसे करिके माने।
विविध भाँति करि हरिहि भुलावै, आन बतावै आन दिखावै।

× × ×

यही देत नित माखन मोको, छिन छिन देत तात मैं तोको।
जो तुम श्याम चन्द को खैहो, बहुरो फिर माखन कहँ पैहो।
देखत रहौ खिलौना चन्दा, हठ नहिं कीजै बाल गोविन्दा।
मधु मेवा पकवान मिठाई, जो भावै सो लेहु कन्हाई।
पालागो हठ अधिक न कीजै, मैं बलि रिसही रिसतन छीजै।
खस खस कान्ह परत कनिया ते, दै ससि कहत नन्द रनिया ते।
जसुमत कहत कहा धौ कीजै, माँगत चन्द कहाँ ते दीजै।
तब जसुमत एक जल पुट लीनो, कर में लेइ तेहि ऊँचा कीनो।
ऐसे करि स्यामहि बँहकावै, आव चन्द तोहि लाल बुलावै।
याही ते तू तन धरि आवै, तोहि देखि लालन सुख पावै।
हाथ लिए तोहि खेलत रहिए, नेक नहीं धरनी पर धरिए।
जल पुट आनि धरन पर राख्यो, गहि आनहु सखि जननी भाख्यो।

× × ×

ताहि देखि मुसकाय मनोहर, बार बार डारत दोऊ कर।
चन्दा पकरत जल के माँही, आवत कछू हाथ में नाही।
तब जल पुट के नीचे देखे, तहँ चन्दा प्रतिबिम्बन पेखे।
देखत हँसी सकल बृज नारी, मगन बाल छवि लखि महतारी।

बोधा (बुद्धिसेन)

अति छीन मृनाल के तारहु ते तेहि ऊपर पाँव दै आवनो है।
सुई बेह ते द्वार सकीन तहाँ परतीति को ताड़ो लगावनो है।

कवि बोधा अनी घनी नेजहुँ ते चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है।
यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवार की धार पै धावनो है।।

× × ×

यह प्रेम को पंथ हलाहल है सु तौ वेद पुरानऊँ गावत है।
पुनि आँखिन देखो सरोजन लै नर संभु के सीस चढ़ावत है।
बरही पर माथे चढ़ै हरि के फल जोग ने एते न पावत है।
तुम्हें नीकी लगै ना लगै तौ भले हम जान अजान जनावत है।।

× × ×

रितु पावस स्याम घटा उनई लखि कै मन धीर धिरातो नहीं।
पुनि दादुर मोर पपीहन की सुनि कै धुनि चित्त थिरातो नहीं।
जब ते बिछुरे कवि बोधा हितू तब ते उर दाह सिरातो नहीं।
हम कौन सों पीर कहैं अपनी दिलदार तो कोऊ दिखातो नहीं।।

× × ×

निसि बासर नींद औ भूख नहीं जब ते हिय में यह आनि बसी।
मिलतै न बनै जग की भय ते बरजी न रहै हिय की हुलसी।
कवि बोधा सुनै हे सुभान हितू उर अन्तर प्रेम की गाँस गसी।
तिन को कल कैसे परै निरदै जिनकी है कुसाँगरे आँख कसी।।

× × ×

देव दुआरे निहारि अड़ी मृगनैनी करै रवि की छबि छोटी।
हाथ में मालती माल लिए चली भीतरै ताहि गोसाईं अँगोटी।
पाइन ते सिख लो लखि कै कवि बोधा मजा बरनी यक छोटी।
भाल में रोरी की बेंदी लसी है ससी में लसी मनो बीरबहूटी।।

× × ×

जब ते ब्रजराज को रूप लख्यो तबते उर और न आनतु है।
निसि बासर संग रहै उनके हमको धौ कबै पहिचानतु है।
कवि बोधा भयो अलमस्त महा कहूँ काहू की सीख न मानतु है।
तुम ऐसहीं मोहि लटी करती मन मेरी कही नहीं मानतु है।।

× × ×

मुख चारि भुजा पुनि चारि सुने हद बाँधन वेद पुरानन की।
तिनकी कछु रीति कही न परै यह रूप औ कोकिल तानन की।
कवि बोधा सुजान वियोग कियो छबि सोइ कलानिधि आनन की।
हम तौ तबही पहिचान गई चतुराई सबै चतुरानन की।।

× × ×

पच्छिन को बिरछो है घने बिरछान को पच्छियो हैं बड़े चाहक।
मोरन को है पहार घने औ पहारन मोर रहैं मिलि नाहक।
बोधा महीपन को मुकुता औ घने मुकतानि के होहि बेसाहक।
जौ धन है तो गुनी बहुतै अरु जो गुन है तो अनेक हैं गाहक॥

× × ×

सेवती जासों जुही कचनार अनार करील कनैर निहारी।
पाँड़र मौलसिरी मचकुन्द कदम्ब लौ बोधा लखी फुलवारी।
केतकी केवरो कुन्द नेवारि सो देखि लता यह चाड़ निवारी।
मालती एक बिना भ्रमरी इतै कोऊ न जानत पीर हमारी॥

× × ×

बोधा बिसू सो कहा कहिए सो बिथा सुनि पूरि रहै अरगाइके।
याते भले मुख मौन धरैं उपचार करैं कहूँ औसर पाइके।
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहूँ जो कहै कछु रंच दया उर लाइके।
आवत है मुख लौं बढ़ि कै फिर पीर रहै या सरीर समाइके॥

गुमान मिश्र

दिग्गज दबत दबकत दिगपाल भूरि,
धूरि की धुँधेरी सो अँधेरी आभा भान की।
धाम औ धरा को माल बाल अबला को अरि,
तजत परान राह चाहत परान की।
सैयद समर्थ भूप अली अकबर-दल,
चलत बजाय मारू दुंदुभी धुकान की।
फिरि फिरि फननि फनीस उलटतु ऐसे,
चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पान की॥

× × ×

न्हाती वहाँ सुनयना नित बावली में,
छूटे उरोजतल कुंकुम नीर ही में।
श्रीखंड चित्र दृग-अंजन संग साजै,
मानौ त्रिबेनि नित ही घर ही विराजै॥

× × ×

हाटक हंस चल्यो उड़िकै नभ में, दुगनी तन ज्योति भई।
लीक सी खैंच गयो छन में, छहराय रही छबि सोनमई।

नैनन सों निरख्यो न बनायकै, कै उपमा मन माहिं लई।
स्यामल चीर मनौ पसर्‌यो, तेहि पै कल कंचन बेलि नई।

× × ×

नल के यश तेज विराजत हैं।
शशि भानु बृथा छवि छाजत हैं॥
जबहीं जब यों विधि चित्त धरै।
तब छेकन को परिवेश करै॥
विधि भाल दरिद्र लिख्यो जेहि के।
नहिं कीजत अंक बृथा तेहि के।
नल येतिकु ताहि तुरन्त दियो।
जिमि टारि दरिद्र को दूर कियो॥

कवीन्द्र (उदयनाथ)

कुन्जन ते मग आवत गावत राग बनावत देव गिरी को।
सो सुनि कै बृषभानु सुता तलफै जिमि पंजर जीव चिरी को।
तार थकै नहिं नैनन तें सजनी अँसुआन की छार झिरी को।
मार मनोहर नन्द कुमार के हार हिए लखि मौलसिरी को॥

× × ×

कैसी ही लगन जामे लगन लगाई तुम,
प्रेम की पगनि के परेखे हिए कसके।
केतिको छपाय उपाय उपजाय प्यारे,
तुमते मिलाप के बढ़ाए चोप चस के।
भनत कविन्द हमें कुन्ज में बुलाय कर,
बसे कित जाय दुख देकर आवस के।
पगनि में छाले परे नाँघिबे को नाले परे,
तऊ लाल लाले परे रावरे दरस के॥

× × ×.

शहर मँझार हो परत एक लागि जैहैं,
छोरे पै नगर के सराय है उतारे की।
कहत कविन्द मग माँझ ही परैगी साँझ,
खबर उड़ानी है बटोही द्वैक मारे की।
घर के हमारे परदेस को सिधारे,
या तें दया कै बिचारी हम रीति राहबारे की।

उतरौ नदी के तीर बर के तरे ही तुम,
चौको जनि चौकी तहाँ पाहरु हमारे की ॥

× × ×

राजै रस मैं री तैसी वरषा समै री चढ़ी,
चंचला नचै री चकचौधा कौंधा बारैं री।
ब्रती ब्रत हारै हिये परत फुहारैं,
कछू छोरैं कछू धारै जलधर जल धारैं री।
भनत कविन्द्र कुन्ज भौन पौन सौरभ सो,
काके न कँपाय प्रान परहथ पारैं री।
काम कंदुका से फूल डोलि डोलि डारैं मन,
औरै किए डारै ये कदंबन की डारैं री॥

हरिनाथ

बलि बोई कीरति लता, कर्ण करी द्वै पात।
सींची मान महीपते, जब देखी कुम्हिलात॥
जाति जाति ते गुन अधिक, सुन्यो न कबहूँ कान।
सेतु बाँधि रघुबर तरे, हेला दे नृप मान॥

× × ×

आज लौं तोसों औ मोसों बिपत्ति,
बढ़ी रही प्रीति की रीति सहेली।
तो हित भार पहार मझाय कै,
आय के देखो है भूमि बघेली।
श्री हरिनाथ सो मान करै मति मेरी,
कही यह मानिलै हेली।
भेंटत हौं राजा राम नरेसहिं,
भेंटि लै री फिर भेंट दुहेली॥

× × ×

बाजपेयी बाज सम पाँडे पच्छिराज सम,
हंस से त्रिवेदी और सोहै बड़े गाथ के।
कुही सम सुकुल मयूर से तिवारी भारी,
जुर्रा सम मिसिर नवैया नहीं माथ के।

नीलकंठ दीक्षित अवस्थी हैं चकोर चारु,
चक्रवाक दुबे गुरु सुख शुभ साथ के।
एते द्विज जाने रंग रंग के मैं आने,
देस देस में बखाने चिरी खाने हरिनाथ के ॥

संत दूलनदास

कोइ बिरला यहि बिधि नाम कहै।
मंत्र अमोल नाम दुइ अच्छर, बिनु रसना रट लागि रहै।
होंठ न डोलै जीभ न बोलै, सूरत धरति दिढाइ गहै।
दिन औ राति रहै सुधि लागी, यह माला यह सुमिरन है।
जन दूलन सत गुरुन बतायो, ताकी नाव पार निबहै ॥

× × ×

मन वहि नाम की धुनि लाउ।
रटु निरंतर नाम केवल, अवर सब बिसराउ।
साधि सूरत आपनी, करि सुवा सिखर चढ़ाउ।
पोषि प्रेम प्रतीत तें, कहि राम नाम पढ़ाउ।
नाम ही अनुरागु निसु दिन, नाम के गुन गाउ।
बनी तौ का अबहिं आगे, और बनी बनाउ।
जगजीवन सत गुरु बचन साचे, साच मन में लाउ।
करु वास दूलनदास सतमां, फिरि न यहि जग आउ ॥

× × ×

देख आयों मैं तो सांई की सेजरिया।
सांई की सेजरिया सतगुरु की डगरिया ॥
सबदहि ताला सबदहिं कुंजी, सबद की लगी है जँजिरिया।
सबद ओढ़ना सबद बिछौना, सबद की चटक चुनरिया।
सबद सरूपी स्वामी आप विराजें, सीस चरन में धरिया।
दूलनदास भजु सांई जगजीवन, अगिन से अहँग उजरिया ॥

× × ×

जो कोइ भक्ति किया चहे भाई।
करि बैराग भसम करि गोला, सो तन मनहिं चढ़ाई।
ओढ़ के बैठ अधिनता चादर, तज अभिमान बड़ाई।
प्रेम प्रतीत धरै इक तागा, सो रहै सुरत लगाई।

गगन मंडल बिच अभरन झलकत, क्यों न सुरत मनलाई ।
सेस सहस मुख निसु दिन बरनत, बेद कोटि गुन गाई ।
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ढूंढ़त थाह न पाई ।
नानक नाम कबीर मता है, सो मोहि प्रगट जनाई ।
ध्रुव प्रहलाद यही रस मातें, सिव रहै ताड़ी लाई ।
गुरु की सेवा साध की संगत, निसुदिन बढ़त सवाई ।
दूलनदास नाम भज बंदे, ठाढ़ काल पछिताई ।।

× × ×

सांई तेरे कारन नैना भये बैरागी ।
तेरा सत दरसन चहौं, कछु और न मांगी ।
निसु बासर तेरे नामकी, अंतर धुनि जागी ।
फेरत हौं माला मनौं, अँसुवनि झरि लागी ।
पलक तजी इत उक्तितें, मन माया त्यागी ।
दृष्टि सदा सत सनमुखी, दरसन अनुरागी ।
मतमाते राते मनौं, दाधे विरहागी ।
मिलु प्रभु दूलनदास के, करु परम सुभागी ।।

× × ×

सांई भजन ना करि जाइ ।
पाँच तसकर संग लागे, मोहि हटकत धाइ ।
चहत मन सतसंग करनो, अधर बैठि न पाइ ।
चढ़त उतरत रहत छिन छिन, नाहिं तहँ ठहराइ ।
कठिन फाँसी अहै जग की, लियो सबहिं बझाइ ।
पास मन मनि नैन निकटहिं, सत्य गयो भुलाइ ।
जगजीवन सतगुरु करहु दाया, चरन मन लपटाइ ।
दास दूलन वास सतमां, सुरत नहिं अलगाइ ।।

× × ×

राम तोरी माया नाचु नचावै ।
निसु बासर मेरो मनुवां व्याकुल, सुमिरन सुधि नहिं आवै ।
जोरत तूरै नेह सूत मेरो, निरवारत अरुझावै ।
केहि बिधि भजन करौं मोरे साहिब, बरबस मोहि सतावै ।
सत सनमुख थिर रहे न पावै, इत-उत चितहि डुलावै ।
आरत पंवरि पुकारौं साहिब, जन फिरि यादहि पावै ।
थाकेउ जन्म जन्म के नाचत, अब मोहि नाच न भावै ।
दूलनदास के गुरु दयाल तुम, किरपहिं ते बनि आवै ।।

संत दरिया साहब

आदि अनादि मेरा सांई।
इष्ट न गुष्ट है अगम अगोचर।
यह सब उनकी माई॥
जो बनमाली सींचे मूल, सहजै पिवै डाल फल फूल॥
जो नरपति को गिरह बुलावै, सेना सकल सहज ही पावै॥
जो कोई कर भान प्रकासै, तौ निसतारा सहजहि नासै॥
गरुड़ पंख जो घर में लावै, सर्प जाति रहने नहिं पावै॥
दरिया सुमिरै एकहि राम, एक राम सारै सब काम॥

× × ×

आदि अंत मेरा है राम, उन बिन और सकल बेकाम॥
कहा करूँ तेरा बेद पुराना, जिन हैं सकल जगत भरमाना॥
कहा करूँ तेरी अनुभै बानी, जिनमें तेरी सुद्धि भुलानी॥
कहा करूँ ये मान बड़ाई, राम बिना सबही दुखदाई॥
कहा करूँ तेरा सांख व जोग, राम बिना सब बंधन रोग॥
कहा करूँ इंद्रिन का सुक्ख, राम बिना देवा सब दुक्ख॥
दरिया कहै राम गुरु मुखिया, हरि बिनु दुखी राम सँग सुखिया॥

× × ×

राम बिन भाव करम नहिं छूटै।
साध संग औ राम भजन बिन, काल निरंतर लूटै।
मल सेती जो मल को धोवै, सो मल कैसे छूटै।
प्रेम का साबुन नाम का पानी, दोय मिल ताँता टूटै।
भेद अभेद भरम का भांडा, चौड़े पड़ पड़ फूटै।
गुरु मुख सब्द गहै उर अंतर, सकल भरम से छूटै।
राम का ध्यान तू धर रे प्रानी, अमृत का मेंह बूटै।
जन दरियाव अरप दे आपा, जरामरन तब टूटै॥

× × ×

संतो कहा गृहस्त कहा त्यागी।
जहि देखूं तेहि बाहर भीतर, घट घट माया लागी॥
माटी की भीत पवन का थंबा, गुन औगुन में छाया।
पाँच तत्त आकार मिलाकर, सहजां गिरह बनाया॥

मन भयो पिता मनसा भई माई, दुख सुख दोनों भाई ।
आसा तृस्ना बहिनें मिल कर, गृह की सौंज बनाई ।।
मोह भयो पुरुष कुबुधि भइ घरनी, पाँचो लड़का जाया ।
प्रकृति अनंत कुटुम्बी मिलकर, कलहल बहुत उपाया ।।
लड़कों के संग लड़की जाई, ताका नाम अधीरी ।
बनमें बैठी घर घर डोलै, स्वारथ संग खपीरी ।।
पाप पुन्न दोउ पाड़ पड़ोसी, अनंत बासना नाती ।
राग द्वेष का बंधन लागा, गिरह बना उतपाती ।।
कोइ गृह माड गिरह मे बैठा, बैरागी बन वासा ।
जन दरिया इक राम भजन बिन, घट घट में घर नासा ।।

× × ×

दरिया दरबारा खुल गया अजर किनारा ।
चमकी बीज चली ज्यों धारा, ज्यो बिजली बिच तारा ।
खुल गया चन्द बन्द बदरी का, घोर मिटा अँधियारा ।
लौ लगी जाय लगन के लारा, चाँदनी चौक निहारा ।
सूरत सैल करै नभ ऊपर, बंक नाल पट फारा ।
चढ़ गई चाँप चली ज्यों धारा, ज्यों मकड़ी मकतारा ।
मै मिली जाय पाय पिउ प्यारा, ज्यों सरिता जल धारा ।
देखा रूप अरूप अलेखा, ताका वार न पारा ।
दरिया दिल दरवेस भये सब, उतरे भौजल पारा ।।

× × ×

सकल ग्रंथ का अर्थ है, सकल बात की बात ।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन रात ।।
दरिया हरि किरपा करी, बिरहा दिया पठाय ।
यह विरहा मेरे साथ को, सोता लिया जगाय ।।
दरिया बान गुरुदेव का, वेधै भरम विकार ।
बाहर घाव दिखै नहीं, भीतर भया सिमार ।।
दरिया सतगुरु सब्दसौं, मिट गइ खैंचा तान ।
भरम अँधेरा मिट गया, परसा पद निरवान ।।
पान बेल से बीछुड़ै, परदेसां रस देत ।
जन दरिया हरिया रहै, (उस) हरी वेल के हेत ।।
अलल बसै आकास में, नीची सुरत निवास ।
ऐसे साधू जगत में, सुरत सिखर पिउ पास ।।

दरिया नाम है निरमला, पूरन ब्रह्म अगाध।
कहे सुने सुख ना लहै, सुमिरे पावै स्वाद॥
दरिया सूरज ऊगिया, चहुँ दिसि भया उजास।
नाम प्रकासै देह में, तौ सकल भरम का नास॥

संत गरीबदास

सेस सहस मुख गावै साधो, सेस सहस मुख गावै।
ब्रह्मा बिस्नु महेसर थाके, नारद नाद बजावै।
सनक सनंदन ध्यान धरत हैं, दृष्ट मुष्ट नहिं आवै।
लघु दीरघ कछु कहा न जाई, जो पावै सो पावै।
जी जूनी कूं कैसे दरसै, गौरज सीस चढ़ावै।
ब्रह्म रंध्र का घाट जहाँ है, उलट खेचरी लावै।
सहस कमल दल झिलमिल रंगा, चोखा फूल चुवावै।
गंगा जमन मद्ध सरसुती, चरन कमल से आवै।
परबी कोटि परम पद माहीं, सुख के सागर न्हावै।
सुरत निरत मन पौन पदारथ, चारो तत्त मिलावै।
आकासै उड़ चलै बिहंगम, गगन मँडल कूं धावै।
मोर मुकुट पीतांबर राजै, कोटि कला छबि छावै।
अबरन बरन तासु के नांही, विचरत है निरदावै।
बिनही चरनौं चलै चिदानंद, बिन मुख बैन सुनावै।
गरीबदास यह अकथ कहानी, ज्यूँ गूँगा गुड़ खावै॥

× × ×

सोई साध अगाध है, आपा न सरावै।
पर निन्दा नहिं संचरै, चुगली नहिं खावै॥
काल क्रोध त्रिस्ना नहीं, आसा नहि राखै।
सांचे सूं परचा भया, जब कूड़ न भाखै॥
एकै नजर निरंजना, सब ही घट देखै।
नीच ऊँच अन्तर नहीं, सब एकै पेखै॥
सोई साध सिरोमनी, जप तप उपकारी।
भूले कूं उपदेस दे, दुर्लभ संसारी॥
अकल यकीन पढ़ाय दै, भूले कूं चेतै।
सो साधू संसार में, हम बिरले भैंटै॥

सूरत खोवै सत कहै, साचे सूं लावै ।
सो साधू संसार में, हम बिरले पावै ॥
निरख निरख पद धरत हैं, जिव हिंसा नाहीं ।
चौरासी तारन तरन, आये जग माहीं ॥
इस सौदे कूं ऊतरे, सौदागर सोई ।
भरे जहाज उतार दे, भौ सागर लोई ॥
भेष धरे भागे फिरैं, बहु साखी सीखैं ।
जानैं नहीं विवेक कूं, खर के ज्यूं रीकैं ॥
उनमुन में तारी लगी, जहँ अजप जयंता ।
सुन्न महल अस्थान है, जहँ इस्थिर डेरा ।
दास गरीब सुभान है, सत साहब मेरा ॥

× × ×

दमदा नहीं भरोसा साधो, अब तूं कर चलने का सोच ॥
मुए पुरुष संग सती जरत है, परी भरम की भूल ॥
पीठ मनूका दाख लदी है, करहा खात बबूल ॥
मेंड़ी मंदिर बाग बगीची, रहसी डाल न मूल ॥
जिंदा पुरुष अचल अविनासी, बिना पिंड अस्थूल ॥
नैनों आगे झुकझुक आवै, रतन अमोली फूल ॥
गरीबदास यह अलल ध्यान है, सुरत हिंडोले झूल ॥

× × ×

आध घड़ी की अध घड़ी, आध घड़ी की आध ।
साधू सेती गोसटी, जो कीजै सो लाभ ॥
आदि समय चेता नहीं, अन्त समय अँधियार ।
मद्ध समय माया रते, पाकर लिये गँवार ॥
ऐसा अंजन आँजिये, सूझै त्रिभुवन राय ।
कामधेनु अरु कलप बृछ, घटही मांहि लखाय ॥
पंछी उड़े अकास कूं, कितकूं कीन्हा गौन ।
यह मन ऐसा जात है, जैसे बुदबुद पौन ॥
ऐसे लाहा लीजिए, संत समागम सेव ।
सतगुरु साहब एक है, तीनो अलख अभेव ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला, सुरत सिन्धु के माँह ।
सब्द सरूपी अंग है, पिंड मिला नहिं छाँह ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, सुरत सिन्धु के नाल।
गमन किया परलोक से, अलल पच्छ की चाल ।।

ऐसा सतगुरु हम मिला, तेज पुंज के अंग।
झिलमिल नूर जहूर है, रूप रेख नहिं रंग ।।

साहब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध।
ये तीनों अंग एक हैं, गति कछु अगम अगाध ।।

सतगुरु पूरन ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है, यामें मीन न मेख ।।

अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रह थीर।
दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर ।।

अल्लह अविगत राम है, बेचगून चित माहि।
सब्द अतीत अगाध है, निरगुन सरगुन नाहिं ।।

साहब साहब क्या करै, साहब है परतीत।
भैंस सींग साहब भया, पाडे गावैं गीत ।।

फूल सही सरगुन कहा, निरगुन गंध सुगंध।
मन माली के बाग में, भँवर रहा कहँ बंध ।।

नाम जपा तो क्या भया, उरमें नहीं यकीन।
चोर मुसै घर लूटहीं, पाँच पचीसो तीन ।।

सुमिरन तबही जानिये, जब रोम रोम धुनि होय।
कुंज कमल में बैठ कर, माला फेरै सोय ।।

सुरत निरत मन पवन कूं, करो एकत्तर चार।
द्वादस उलट समोय ले, दिल अन्दर दीदार ।।

चार पदारथ महल में, सुरत निरत मन पौन।
सिव द्वारा खुलिहै जबै, दरसै चौदह भौन ।।

जित सेतीं दम ऊचरै, सुरत तहाई लाय।
नाभी कुंडल नाद है, त्रिकुटी कमल समाय ।।

सनकादिक सेवन करै, सुकदे बोले साख।
कोटि ग्रंथ का अरथ है, सुरत ठिकाने राख ।।

जल का महल बनाइया, धन समरथ सांई।
कारीगर कुरबान जां, कुछ क़ीमत नांई ।।

बैराग नाम है त्याग का, पाँच पचीसौ संग।
ऊपर से कैंचल तजी, अन्तर बिषय भुअंग ।।

नित ही जामै नित मरै, संसय माहि सरीर।
जिनका संसा मिट गया, सो पीरन सिर पीर॥

लै लागी तब जानिये, हरदम नाम उचार।
एकै मन एकै दिसा, सांई के दरबार॥

ज्ञान विचार विवेक बिन, क्यों दम तोरै स्वांस।
कहा होत हरि नाम सू, जो दिल ना बिस्वास॥

ऐसी जरना चाहिए, ज्यों अगिन तत्त मे होय।
जो कछु परै सो सब जरै, बुरा न बांचे कोय॥

ऐसी जरना चाहिए, ज्यों चंदन के अंग।
मुख से कछु न कहत है, तनकूं खात भुअंग॥

सांई सरीखे संत हैं, यामें मीन न मेख।
परदा अंग अनादि है, बाहर भीतर एक॥

साई सरीखे साध है, इन सम तुल नहिं और।
संत करै सोइ होत हैं, साहब अपनी ठौर॥

साध समुंदर कमल गति, माहें सांई गंध।
जिसमे दूजी भिन्न क्या, सो साधू निरबंध॥

संत दरियादास

अबधू कहे सुने का होई।
जो कोइ सब्द अनाहद बूझै, गुरु ज्ञानी है सोई॥
थाके बाट, चलत ना थाके, थाके मुनिवर लोई।
प्यास वाला के मिले न पानी, अन प्यासे जल बोही॥
पहले बीज फूल फल लागा, फूल देखि बीज नसाई।
जहाँ बास तहाँ भौरा नाहीं, अनबासे लपटाई॥
जहाँ गगन तहँ तारा नाहीं, चन्द सूरका मेला।
जहाँ सुरत तहाँ पवन न पानी, येहि बिधि अविगति खेला॥
जब सरूप तब रूप न देखे, जहाँ छाँह तहाँ धूपा।
बिनु जल नदिया माँछ बियानी, इक बकता इक चूपा॥
वृच्छ एक तैंतिस तन लागा, अमृत फल बिनु पीया।
कहैं दरिया कोइ संत बिबेकी, मूवत उठिके जीया॥

× × ×

साधो ऐसा ज्ञान प्रकासी।
आतम राम जहाँ लगि कहिये, सबै पुरुप की दासी।
यह सब जोति पुरुष है निर्मल, नहिं तह काल निवासी।
हंस बंस जो है निरदागा, जाम मिले अबिनासी।
सदा अमर है मरै न कबहीं, नहिं वह सक्ति उपासी।
आवै जाय खपै सो दूजा, सो तन कालै नासी।
तेजे स्वर्ग नर्क कै आसा, या तन वे विस्वासी।
है छुपलोक सभनिते न्यारा, नाहिं तहँ भूख पियासी।
केता कहै कवि कहे न जानै, वाके रूप न रासी।
वह गुन-रहित तो यह गुन कैसे, ढूंढत फिरै उदासी।
सांचै कहा झूठ जिनि जानहु, सांच कहै दुरि जासी।
कहै दरिया दिल दगा दूरि करु, काटि दिहैं जम फाँसी॥

× × ×

हरिजन प्रेम जुगुति ललचाना।
सतगुरु सब्द हिये जब दीसै, सेत धुजा फहराना।
हृदे कँवल अनुराग उठे जब, गरजि घुमरि घहराना।
अमृत बुन्द बिमल तहँ झलकै, रिमझिम सघन सोहाना।
बिगसित कँवल सहसदल तहँवाँ, मन मधुकर लपटाना।
बिलगि बिहरि फिर रहत एकरस, गगन मधे ठहराना।
उछरत सिन्धु असंख तरंग लहि, लहरि अनेक समाना।
लाल जवाहिर मोती तामें, किमि करि करत बखाना।
बिबरन बिलगि हंस गुन राजित, मानसरोवर जाना।
मंजन मैलि भई तन निर्मल, बहुरि न मैल समाना।
एक से अनँत अनँत से एक है, एक में अनँत समाना।
कहैं दरिया दिल चसमाँ करिलै, रतन झरोखे जाना॥

× × ×

जाके हिये गगन झरि लागी।
बिना घटा घन बरिसन लागी, सुरति सुखमना जागी।
अजपा जाप जपै निस बासर, रहै जगत से बागी।
मूल अकह में गम्मि बिचारै, सोइ सदा जन भागी।
अठदल कँवल झरोखा तहवाँ, नाम विमल रस पागी।
तिल भरि चौकी दना दरवाजा, ताहि खोजु बैरागी।
जोरे जारे सब्द बनावै, राग गावै सो रागी।

अलख लखै कोइ पलक विचारै, सोइ संत अनुरागी।
थकित भये मन गीत कवित्तन, भौ विषया के त्यागी।
सब्द सजीवन पारस परसेउ, सीतल भो मन आगी।
इत उत कहे काम नहिं आवै, सारहिं लेवै माँगी।
कहै दरिया सतगुरु की महिमा, मेटे करम के दागी॥

× × ×

है मगु साफ़ बरावरे, मंदा लोचन माहिं।
कवन दोष मगु भान कहँ, आपे सूझत नाहिं॥
पहिले गुड़ सक्कर हुआ, चीनी मिसरी कीन्हि।
मिसरी से कन्दा भयो, यही सोहागिनि चीन्हि॥
दरिया तन से नहिं जुदा, सब किछु तन के माहिं।
जोग जुगत सों पाइये, बिना जुगत किछु नाहिं॥
तीनि लोक के ऊपरे, अभय लोक विस्तार।
सत्त सुकृत परबाना पावै, पहुँचे जाय करार॥
एकै सो अनंत भौ, फूटि डारि बिस्तार।
अंतेहू फिरि एक है, ताहि खोजु निज सार॥
माला टोपी भेष नहिं, नहिं सोना सिंगार।
सदा भाव सतसंग है, जो कोइ गहै करार॥

संत चरणदास

राखो जी लाज गरीब निवाज।
तुम बिन हमरे कौन सँवारे, सबहीं बिगरैं काज॥
भक्त बछल हरि नाम कहावो, पतित उधारन हार।
करो मनोरथ पूरन जनको, सीतल दृष्टि निहार॥
तुम जहाज मैं काग तिहारो, तुम तजि अंत न जाउँ।
जो तुम हरिजू मारि निकासो, और ठौर नहिं पाउँ॥
चरनदास प्रभु सरन तिहारी, जानत सब संसार।
मेरी हँसी सो हँसी तिहारी, तुमहूँ देखि बिचार॥

× × ×

हरिको सकल निरंतर पाया।
माटी भाँडे खाँड खिलौने, ज्यों तरवर में छाया॥

ज्यों कंचन में भूषण राजै, सूरत दर्पण मांहीं।
पुतली खंभ खंभ में पुतली, दुतिया तौ कछु नाहीं॥
ज्यों लोहे में जौहर परगट, सूतहिं तानै बानै।
ऐसे राम सकल घट माहीं, विन सतगुरु नहिं जानै॥
मेहँदी में रंग गंध फूलन में, ऐसे ब्रह्मरु माया।
जल में पाला पाले में जल, चरनदास दरसाया॥

× × ×

जबते एक एक करि माना।
कौन कथे को सुनने हारा, कोहै किन पहिचाना।
तब को ज्ञानी ज्ञान कहाँ है, ज्ञेय कहाँ ठहराना।
ध्यानी ध्येय जहाँ लगि पइये, तहाँ न पइये ध्याना।
जब कहाँ बंध मुक्त भुगतइया, काको आवन जाना।
को सेवक अरु कौन सहायक, कहाँ लाभ कित हाना।
जबको उपजै कौन मरत है, कौन करै पछिताना।
को है जगत जगत को कर्त्ता, त्रैगुण को अस्थाना।
तू तू तू अरु मैं मैं नाहीं, सब ही दे बिसराना।
चरनदास शुकदेव कहा है, जो है सो भगवाना॥

× × ×

जग में दो तारण को नीका।
एक तौ ध्यान गुरू का कीजै, दूजै मान धनीका॥
कोटि भाँति करि निश्चय कीयो, संशय रहा न कोई।
शास्त्र वेद औ पुराण टटोले, जिनमें निकसा सोई॥
इनहीं के पीछे सब जानौं, योग यज्ञ तप दाना।
नौविधि नौधा नेम प्रेम सब, भक्ति भाव अरु ज्ञाना॥
और सबै मत ऐसे मानो, अन्न बिना भुस जैसे।
कूटत कूटत बहुतै कूटा, भूख गई नहिं तैसे॥
थोथा धर्म वही पहिचानौ, तामे ये दो नाहीं।
चरनदास शुकदेव कहत हैं, समझि देखि मन माहीं॥.

× × ×

भाई रे अवधि बीती जात।
अंजुली जल घटत जैसे, तारे ज्यों परभात॥
स्वाँस पूंजी गाँठि तेरे, सो घटत दिन रात।
साधु संगति पैंठ लागी, ले लगै सोइ हाथ॥

बड़ो सौदा हरि सँभारो, सुमिरि लीजै प्रात।
काम क्रोध दलाल ठगिया, मत बनिज इन हाथ॥
लोभ मोह बजाज छलिया, लगे हैं तेरि घात।
शब्द गुरु को राखि हिरदय, तौ दगा नहिं खात॥
अपनी चतुराइ बुधि पर, मति फिरै इतरात।
चरनदास शुकदेव चरनन, परस तजि कुल जात॥

× × ×

साधौ जो पकरी सो पकरी।
अबती टेक गही सुमिरन की, ज्यों हारिल की लकरी।
ज्यों सूरा ने सस्तर लीन्हो, ज्यों बनिये ने तखरी।
ज्यों सतवंती लियो सिंधौरा, तार गह्यो ज्यों मकरी।
ज्यों कामी को तिरिया प्यारी, ज्यूँ किरपिन कूँ दमरी।
ऐसे हमकूँ राम पियारे, ज्यों बालक कूँ ममरी।
ज्यों दीपक कूँ तेल पियारो, ज्यों पावक कूँ समरी।
ज्यूँ मछली कूँ नीर पियारो, बिछुरे देखै जमरी।
साधो के संग हरिगुण गाऊँ, ताते जीवन हमरी।
चरनदास शुकदेव दृढ़ायो, और छुटी सब गमरी॥

× × ×

सो गुरुगम मगन भया मन मेरा।
गगन मँडल में निज घर कीन्हो, पंच विषय नहिं घेरा॥
प्यास क्षुधा निद्रा नहिं व्यापी, अमृत अंचवन कीन्हा।
छूटी आस बास नहिं कोई, जग में चित नहिं दीन्हा॥
दरसी जोति परम सुख पायो, सबही कर्म जलावै।
पाप पुण्य दोऊ भय नाहीं, जन्म मरन बिसरावै॥
अनहद आनंद अति उपजावै, कहि न सकूँ गति सारी।
अति ललचावै फिरि नहिं आवै, लगी अलख सूँ यारी॥
हंस कमल दल सतगुरु राजैं, रुचि-रुचि दरसन पाऊँ।
कहि शुकदेव चरनही दासा, सब विधि तोहि बताऊँ॥

× × ×

जो नर इतके भये न उतके।
उतको प्रेम भक्ति नहिं उपजी, इत नहिं नारी सुतके॥
घर सूँ निकसि कहा उन कीन्हा, घर घर भिक्षा माँगी।
बाना सिंह चाल भेड़न की, साध भये अकि स्वाँगी॥

तन मूँडा पै मन नहिं मूँडा, अनहद चित्त न दीन्हा।
इन्द्री स्वाद मिले विषयन सों, बकबक बकबक कीन्हा॥
माला कर में सुरति न हरिमें, यह सुमिरन कहु कैसा।
बाहर भेख धारिके बैठा, अन्तर पैसा पैसा॥
हिंसा अकस कुबुधि नहिं छोड़ी, हिरदय साँच न आया।
चरनदास शुकदेव कहत हैं, बाना पहिरि लजाया॥

× × ×

आदिहुँ आनँद, अंतहुँ आनँद, मध्यहुँ आनँद ऐसेहिं जानो।
बंधहु आनँद, मुक्तहुँ आनँद, आनँद ज्ञान अज्ञान पिछानो।
लेटेहु आनँद बैठेहुँ आनँद, डोलत आनँद, आनँद आनो।
चरनदास बिचारि सबै कछु, आनँद छाड़िकै दुक्ख न ठानो॥

× × ×

आदिहु चेतन अंतहु चेतन, मध्यहुँ चेतन माया न देखी।
ब्रह्म अद्वैत अखंड निरालभ, और न दूसरो आनँद ऐसी।
सिन्धु अथाह अपार बिराजत, रूप न रंग नहीं कछु देखी।
चरनदास नहीं, शुकदेव नहीं, तहँना कोइ मारग ना कोइ भेखी॥

× × ×

श्वास उसास चलै जब आपहि, है जु अखंड टरै नहिं टारो।
भीतर बाहर है भरपूर सो ढूंढौं कहाँ नहिं नाहिन न्यारो।
चरनदास कहैं गुरु भेद दियो, भ्रम दूरि भयो जु हुतो अतिभारो।
दृष्टि अदृष्टि जु रामको, देखत, राम भयो पुनि देखन हारो॥

× × ×

सतगुरु सब्दी लागिया, नावक का सा तीर।
कसकत है निकसत नहीं, होत प्रेम की पीर॥

ऐसा सतगुरु कीजिए, जीवत डारै मारि।
जन्म जन्म की बासना, ताकूँ देवै जारि॥

प्रेम छुटावै जक्त सूं, प्रेम मिलावै राम।
प्रेम करै गति औरही, लै पहुँचै हरि धाम॥

पीव चहौ कै मत चहौ, वह तौ पी की दास।
पिय के रंग राती रहै, जग सूं होय उदास॥

रंग होय तौ पीव को, आन पुरुष विष रूप।
छाँह बुरी पर घरन की, अपनी भली जु धूप॥

हद्द कहूँ तौ है नहीं, बेहद कहूँ तौ नाहि।
ध्यान स्वरूपी कहत हौं, बैन सैन के माहिं॥
मम हिरदय में आय के, तुमही कियो प्रकास।
जो कछु कहौ सो तुम कहौ, मेरे मुख सों भास॥
तप के बरस हजारहू, सत संगत घड़ि एक।
तौहू सरवरि ना करै, सुकदेव किया विवेक॥
अपने घर का दुख भला, परघर का सुख छार।
ऐसे जानै कुलबधू, सो सतवंती नार॥
जग माहैं ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज सर माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं॥
शील न उपजै खेत में, शील न हाट बिकाय।
जो हो पूरा टेक का, लेवै अंग उपजाय॥
शील कसैला आँवला, और बड़ों का बोल।
पाछे देवै स्वाद वै, चरनदास कहि खोल॥
लाख यही उपदेस है, एक शील कूं राख।
जन्म सुधारौ, हरि मिलौ, चरनदास की साख॥
खावै बस्तु बिचारि कै, बैठे ठौर बिचार।
जो कछु करै बिचारि करि, किरिया यही अचार॥
जैसे सुपना रैन का, मुख दर्पण के माहिं।
भासै है पर है नहीं, ज्यों बरवर की छाहिं॥
इन्द्रिन कूं मन बस करै, मनकूं बस करै पौन।
अनहद बस कर वायु कूं, अनहद कूं ले तौन॥
इन्द्री पलटै मन विषै, मन पलटै बुधि माहिं।
बुधि पलटै हरि ध्यान में, फेरि होय लै जाहिं॥
द्रव्य माहिं दुख तीन हैं, यह तूं निश्चय जान।
आवत दुख राखत दुखी, जात प्राण की हान॥
मूरख त्याग न करि सकै, ज्ञानवन्त तजि देह।
चौंकायल मृग ज्यों रहै, कहीं न साजै गेह॥
लाज तौंक गल में पड़ा, ममता बेरी पाँय।
रसरी मूरख नेह की, लीन्हे हाथ बँधाय॥
ज्यों तिरिया पीहर बसै, सुरति पिया के माहिं।
ऐसे जन जग में रहै, हरिकूं भूलै नाहिं॥

निराकार निर्लिप्त तूं, देही जान अकार।
आपन देही मान मत, यही ज्ञान ततसार॥
काहू ते उपजौ नहीं, बातें भयो न कोय।
वह न मरै मारै नहीं, राम कहावै सोय॥
जैसे कछुआ सिमिटि कै, आपुहि माहिं समाय।
तैसे ज्ञानी श्वास में, रहै सुरति लौ लाय॥
आप ब्रह्म मूरति भयो, ज्यों बुदबुद जल माहिं।
सूरति विनसै नाम संग, जल बिनसत है नाहिं॥
जल थल पावक राम है, राम रमो सब माहिं।
हरि सब में सब राम में, और दूसरो नाहिं॥

सहजोबाई

जग में कहा कियो तुम आय।
स्वान जैसे पेट भरि कै, सोयो जन्म गँवाय॥
पहर पहिले नाहि जाग्यो, कियो न सुभ कर्म।
आन मारग जाय लाग्यो, कियो ना गुरु धर्म॥
जप न कियो तप न साध्यौ, दियौ ना तैं दान।
बहुक उरझे मोह मद में, आपु काया मान॥
बहुक उरझे मोह कारे, आन काढ़ै तोहि।
एक दिन नहि रहन पावै, कहा कैसो होय॥
रैन दिन आराम ना, काटै जो तेरी आव।
चरनदास कहे सुन सहजिया, करो भजन उपाव॥

× × ×

बाबा काया-नगर बसावौ।
ज्ञान दृष्टि सूँ घट में देखौं, सुरति निरति लौ लावौ॥
पाँच मारि मन बस कर अपने, तीनो आप नसावौ।
सत सन्तोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भगावौ॥
सील छिमा धीरज कूँ धारौ, अनहद बम्ब बजावै।
पाप बानिया रहन न दीजै, धरम बजार लगावै॥
सुबह बास होवै जब नगरी, वैरी रहै न कोई।
चरनदास गुरु अमल बतायौ, सहजो सँभलो सोई॥

× × ×

प्रेम दिवाने जो भये, पलट गयो सब रूप ।
सहजो दृष्टि न आवई, कहाँ रंक कहाँ भूप ।।
नया पुराना होय ना, घुन नहिं लागै जासु ।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिं व्यापै तासु ।।

× × ×

नाम नहीं अरु नाम सब, रूप नहीं सब रूप ।
सहजो सब कुछ ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ।।
है अखंड व्यापक सकल, सहज रहा भरपूर ।
ज्ञानी पावैं निकट ही, मूरख जानै दूर ।।

× × ×

सहजो जा घट नाम है, सो घट मंगल रूप ।
राम बिना धिक्कार है, सुन्दर धनवंत भूप ।।
मन मैला तन छीन ह्वै, हरि सो लगै न नेह ।
दुखी रहै सहजो कहै, मोह बसै जा देह ।।

× × ×

सहजो गुरु दीपक दियो, नैना भये अनंत ।
आदि, अन्त, मधि एक ही, सूझि परै भगवन्त ।।
चिउँटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसों न ठहराय ।
सहजो कूवाँ देश में, सतगुरु दई बसाय ।।

× × ×

सेत रोम सब ह्वै गये, सूख गई सब देह ।
सहजो वह मुख ना रहा, उड़ने लागी खेह ।।
सहजो लोक परलोक की, नहीं वासना ताहि ।
सो वह ब्रह्म स्वरूप हैं, सागर लहर समाहि ।।

× × ×

सहजो जीवत सब सगे, मुए निकट नहिं जायँ ।
रोवै स्वारथ आपने, सपने देख डरायँ ।।
जैसे सँड़सी लोह की, छिन पानी छिन आग ।
ऐसे दुख सुख जगत के, सहजो तू मत पाग ।।

× × ×

निसचै यह मन डूबता, लोभ मोह की धार ।
चरनदास सतगुरु मिले, सहजो दियो उबार ।।

जब चेतै तबही भला, मोह नींद सूँ जाग।
साधू की संगत मिलै, सहजो ऊँचे भाग॥

× × ×

साधु वृच्छ बानी कली, चर्चा फूले फूल।
सहजो संगत बाग में, नाना फल रहे भूल॥
सीस, कान, मुख, नासिका, ऊँचे ऊँचे नाँव।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजै पाँव॥

दयाबाई

ताप हरन दुख हरन, दया करत परनाम।
चरनदास गुरुदेव जू, ब्रह्म देव सुख धाम॥
तीन लोक नव खंड के लिए जीव सब हेर।
दया काल पर चन्ड है मारे सब को घेर॥

× × ×

वही एक व्यापत सकल, ज्यों मनिका में डोर।
थिर चर कीट पतंग में, दया न दूजो ओर॥
काम क्रोध मद लोभ नहिं, षट विकार करिहीन।
पंथ कुपंथ न जानही, ब्रह्म भाव रसलीन॥

× × ×

रे मन तू निकसत नहीं, है तू बड़ा कठोर।
सुन्दर स्याम सरूप बिन, क्यों जीवत निस भोर॥
छिन उट्ठू छिन गिर परूँ, राम दुखी मन मोर।
बौरी ह्वै चितवत फिरूँ, हरि आवत केहि ओर॥

× × ×

दया दान अरु दीनता, दीना नाथ दयाल।
हिरदै सीतल दृष्टि सम, निरखत करै निहाल॥
दया दया करिके कह्यो, सतगुरु मो सो माख।
नासा आगे दृष्टि करि, स्वांसा में मन लाग॥

× × ×

प्रेम पंथ है अटपटो, कोई न जानत वीर।
कै मन जानत आपनो, कै लागी जेहि पीर॥

बैद सोइ जो पीर मिटावे, बहुरि पीर न होइ।
धेनु सोइ जो आपु स्रवै, दूहिए बिनु नोइ।
अम्बु सोइ जो प्यास मेटे, बहुरि प्यास न होइ।
सरस साबुन सुरति धोबिन, मैलि डारे धोइ।
गुरू सोइ जो भ्रम टारै, द्वैत डारै धोइ।
आवागमन के सोच मेटै, सब्द सरूपी होइ।
शिव नारायण एक दरसे, एक तार जो होइ॥

× × ×

तनि एक मनुआँ धरा तूं धीर।
पाँच सखी आइल मेरो अँगना, पाँचों का हथवा में पाँच-पाँच तीर।
खइँचब गुन तब छाड़ब तीर, मुदाये मरन कर करो तदबीर।
शिव नारायन चीन्हल वीर, जनम जनम कर मेटल पीर॥

× × ×

सिपाही मन दूर खेलन मत जैये।
घट ही में गंगा घट ही में जमुना, तेहि विच पैठि नहैये।
अछेहो विरिछ की शीतल जुड़छहिया, तेहि तरे बैठि नहैये।
मात पिता तेरे घट ही में, निति उठि दरसन पैये।
शिव नारायन कहि समुझावे, गुरु के सबद हिये कैये॥

× × ×

गुनवा एको नहीं, कैसे मनबो सैया।
गहरी नदिया नाव पुरानी, भइ गइले साँझ समइया।
संग की सखी सब पार उतरि गईं, मैं बपुरिन एहि ठइंया।
शिव नारायन बिनती करत है, पार लगा दो मेरी नइया॥

× × ×

प्रेम मंगल आलि सब मिलि गाई।
घर घर कोहबर रुचिर बनाई, जहाँ बैठे दुलहिन दुलहा सोहाई।
सब सखिया मिलि मन मत लाई, दुलहा के रूप देखि कछु न सोहाई।
दुख हरन गुरु सब सुधि पाई, देस चंद्रबार में सुरति लगाई॥

× × ×

वृन्दाबन कान्हा मुरली बजाई।
जो जैसहि तैसहि उठि धाई, कुल की लाज गँवाई।
जो न गई सोतो भई है बावरी, समुझि समुझि पछिताई।
गौवन के मुख त्रेन बसत है, बछवा पियत न गाई।
शिव नारायन श्रवण सबद सुनि, पवन रहत अलसाई॥

क़ासिम शाह

मुहमदसाह दिल्ली सुलतानू। का मन गुन ओहि केर बखानू॥
छाजै पाट छत्र सिर ताजू। नावहिं सीस जगत के राजू॥
रूपवंत दरसन मुँह राता। भागवंत ओहि कीन्ह बिधाता॥
दरबवंत धरम महँ पूरा। ज्ञानवंत खड़ग महँ सूरा॥

× × ×

दरियाबाद माँझ मम ठाउँ। अमानुल्ला पिता कर नाउँ॥
तहवाँ मोहिं जनम बिधि दीन्हा। कासिम नाँव जाति कर हीना॥
तेहूँ बीच बिधि कीन्ह कमीना। ऊँच सभा बैठे चित दीना॥
ऊँच संग ऊँच मन भावा। तब भा ऊँच ज्ञान-बुधि पावा॥
ऊँचा पंथ प्रेम का होई। तेहि महँ ऊँच भए सब कोई।

× × ×

कथा जो एक गुपुत महँ रहा। सो परगट उघारि मैं कहा॥
हंस जवाहिर बिधि औतारा। निरमल रूप सो दई सँवारा॥
बलख नगर बुरहान सुलतानू। तेहि घर हंस भए जस भानू॥
आलमशाह चीनपति भारी। तेहि घर जनमी जवाहिर बारी॥
तेहि कारन वह भएउ बियोगी। गएउ सो छांड़ि देस होइ जोगी॥
अंत जवाहिर हंस घर आनी। सो जग महं यह गयउ बखानी॥
सो सुनि ज्ञान-कथा मैं कीन्हा। लिखेउँ सो प्रेम, रहै जग चीन्हा॥

नूरमुहम्मद

नगर एक मूरतिपुर नाऊँ। राजा जीव रहै तेहि ठाऊँ॥
का बरनौं वह नगर सुहावन। नगर सुहावन सब मन भावन॥

इहै सरीर सुहावन मूरतिपूर।
इहै जीव राजा, जिव जाहु न दूर॥

तनुज एक राजा के रहा। अंतःकरन नाम सब कहा॥
सौम्यसील सुकुमार सयाना। सो सावित्री स्वांत समाना॥
सरल सरनि जौ सो पग धरै। नगर लोग सूधै पग परै॥
वक्र पंथ जो राखै पाऊँ। वहै अध्व सब होइ बटाऊ॥

रहे संघाती ताके पत्तन ठावँ ।
एक संकल्प, बिकल्प सो दूसर नावँ ॥

बुद्धि चित्त दुइ सखा सरेखै । जगत बीच गुन अवगुन देखै ।
अंतःकरन पास नित आवैं । दरसन देखि महासुख पावैं ॥

अहंकार तेहि तीसर सखा निरत्र ।
रहेउ चारि के अंतर नैसुक अंत्र ॥

× × ×

अंतःकरन सदन एक रानी । महामोहनी नाम सयानी ॥
बरनि न पारौं सुन्दरताई । सकल सुन्दरी देखि लजाई ॥
सर्वमंगला देखि असीसै । चाहै लोचन मध्य बईसै ॥
कुंतल झारत फाँदा डारै । चख चितवन सो चपला मारै ॥
अपने मंजु रूप वह दारा । रूप गर्विता जगत मँझारा ॥
प्रीतम-प्रेम पाइ वह नारी । प्रेम-गर्विता भई पियारी ॥

सदा न रूप रहत है अंत नसाइ ।
प्रेम, रूप के नासहि तें घटि जाइ ॥

× × ×

यह बाँसुरी सुनै सो कोई । हिरदय-स्रोत खुला जेहि होई ॥
निसरत नाद बारुनी साथा । सुनि सुधि-चेत रहै केहि हाथा ॥
सुनतै जौ यह सबद मनोहर । होत अचेत कृष्ण मुरलीधर ॥
यह मुहम्मदी जन की बोली । जामैं कंद नबातैं घोली ॥
बहुत देवता को चित हरै । बहु मूरति औंधी होइ परै ॥
बहुत देवहरा ढाहि गिरावै । संखनाद की रीति मिटावै ॥

जहँ इसलामी मुख सों निसरी बात ।
तहाँ सकल सुख मंगल, कष्ट नसात ॥

चाचा हित वृन्दावनदास

प्रीतम तुम मो दृगनि बसत हौ ।
कहा भरोसो ह्वै पूछत हौ, कै चतुराई करि जु हँसत हौ ॥
लीजै परखि स्वरूप आपनो, पुतरिन में तुमहीं तौ लसत हौ ।
वृन्दावन हित रूप-रसिक तुम, कुन्ज लड़ावत हिय हुलसत हौ ॥

× × ×

सोभा केहि विधि बरनि सुनाऊँ।
इक रसना सोऊ लोचन हानी, कहो पार क्यों पाऊँ।
अंग अंग लावन्य माधुरी, बुधि बल किती बताऊँ।
अतुलित सुनत कहि गये क्यों दृग पल रजि धरि जो उचाऊँ।
नव वय संधि दुहुनि नित उलहत जब देखी तब औरे।
यह कौतुक सुन मेरी सजनी चित न रहत इक ठौरे।
लोक न सुनी दृगन नहिं देखी ऐसी रूप निकाई।
मेरी तेरी कहा चली, खग-मृग मति प्रेम बिकाई।
कबहूँ गौर स्याम तन, कबहूँ लोचन प्यासे धावै।
कह घटि जात सिंह कौ पंछी जो चोंचन भरि लावै।
सुन्दरता की हद मुरलीधर, बेहद छबि श्रीराधा।
गावै बपु अनंत धरि सारद, तऊ न पूजै साधा।
न्याइ काम करवट ह्वै निकसत, पिय अरु रूप गुमानी।
बृन्दाबन हितरूप कियो बस, सो कानन की रानी।

× × ×

भजन भावना होय न परसी, प्रेम नहीं उर कपटी।
कुआँ पर्‌यो आकाश उड़त खग, ताको करत जु झपटी।
रसिक कहावै कोई जिनके जुगल मिलन की चटपटी।
बृन्दाबन हित रूप कहाँ लगि, बरनौं सृष्टि अटपटी।

× × ×

मिठन बोलनी नवल मनिहारी।
भौंहे गोल गरूर है, याके नयन चुटीले भारी।
चूरी लखि मुख ते कहैं, घूँघट में मुसकाति।
ससि मनु बदरी ओट तें, दुरि दरसत यहि भाँति।
चूरो बड़ो है मोल को, नगर न गाहक कोय।
मो फेरी खाली परी, आई सब घर टोय।

श्रीहठी जी

कलपलता के किधौं पल्लव नवीन दोऊ,
हरन मंजुता के कंजताके बनता के हैं।
पावन पतित गुन गावै मुनि ताके छबि,
छलै सविता के जनता के गुरुता के हैं।

नवौ निधिताके सिद्धता के आदि आलै हठी,
तीनौं लोक ताके प्रभुता के प्रभु ताके हैं।
कहै पाप ताकै बढ़ै पुन्य के पताके जिन,
ऐसे पद ताके बृषभानु की सुता के हैं।।

× × ×

कोमल बिमल मंजु कंज से अरुन सोहै,
लच्छन समेत सुभ सुद्ध कंदनी के हैं।
हरी के मनालय निरालय निकारन के,
भक्ति बरदायक बखानै छन्द दीके हैं।
ध्यावत सुरेस संभु सेस औ गनेस, खुले,
भाग अवनी के जहाँ मंद परै नीके हैं।
कटै जन फंद नीय द्वन्दनीय हरि-हर,
वंदनीय चरन बृषभानु नन्दनी के हैं।।

× × ×

कोऊ उमाराज, रमाराज, जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचन्द सुख कंद नाम नाधे मैं।
कोऊ ध्यावै गनपति, फनपति, सुरपति कोऊ,
देव ध्याय फल लेत पल आधे मैं।
हठी की अधार निराधार की अधार तू ही,
जप तप जोग जग्य कछुवै न साधे मैं।
कटै कोटि बाधे मुनि धरत समाधे, ऐसे
राधे पद रावरे सदा ही अवराधे मैं।।

× × ×

मोरपखा गर गूँज की माल, किये नव भेष बड़ी छबि छाई।
पीतपटी दुपटी कटि में, लपटी लकुटी 'हठी' मो मन भाई।
छूटी लटैं, डुलैं कुण्डल कान, बजै मुरली-धुनि मंद सुहाई।
कोटिन काम गुलाम भये, जब कान्ह ह्वै भानु-लली बनि आई।।

× × ×

चन्द सो आनन, कंचन सों तन, हौं लखिकैं बिन मोल बिकानी।
औ अरबिन्द सी आँखिन को हठी देखत मेरियै आँखि सिरानी।
राजति है मनमोहन के सँग बारौं मैं कोटि रमा रति बानी।
जोवनमूरि सबै ब्रज की ठकुरानी हमारी है राधिका रानी।।

× × ×

नवनीत गुलाब ते कोमल हैं 'हठी' कंज की मंजुलता इनमें।
गुल लाला गुलाब प्रबाल जपा छबि ऐसी न देखि ललाइनमें।
मुनि - मानस - मंदिर मध्य बसैं, बस होत हैं सूधे सुभाइनमें।
रहु रे मन, तू चित-चाइन सों, बृषमानु - कुमार के पाइनमें ।।

× × ×

जाकी कृपा सुक ग्यानी भये, अति दानी औ ध्यानी भये त्रिपुरारी।
जाकी कृपा विधि वेद रचे, भये व्यास पुरानन के अधिकारी।
जाकी कृपा ते त्रिलोकी धनी, सु कहावत श्री व्रज चंद बिहारी।
लोक घटा ते हठी को बचाउ, कृपा करि श्री बृषभानु दुलारी ।।

× × ×

चन्दन लिपायो चौक, चाँदनी चंदोवे तामें,
चाँदनी बिछौना फैली लहर सुगन्ध की।
चाँदनी की साज नीकी चन्द-सम चमकन,
चारयो ओर चन्दमुखी चन्द जोति मंद की।
चाँदनी सों चार चारु चाँदनी सी फैली हठी,
चाँदनी सी हाँसी, कै मिठाई सुधा कंद की।
चन्दन की चौबी बैठी चंदन लगाय भाल,
चन्द से बदन राधे रानी ब्रज चन्द की ।।

× × ×

हीन हौं अधीन हौं, तिहारो ब्रज साहिबिनी,
हिय में मलीन करुना की कोर ढरिए।
भारी भवसागर ते बोरत बचायो मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरिए।
बुरो भलो जैसो तेरे द्वार परयो हौ तौं,
मेरे गुन अवगुन तू मन में न धरिए।
कीरति किसोरी, बृषभानु की दुहाई तोहिं,
लच्छ-लच्छ-लच्छ-भाँति सों हठी को पच्छ करिए ।।

× × ×

गिरि कीजै गोधन मयूर कुंजन कौ मोहि,
पसु कीजै महाराज नंद के बगर को।
नर कौन ! तौन, जौन राधे राधे नाम रटै,
तट कीजै बर कूल कालिन्दी कगर को।

इतने पै जोई कुछ कीजिए कुँवर कान्ह,
राखिए न आन फेर हठी के झगर को।
गोपी - पद-पंकज - राग कीजै महाराज,
तृन कीजै रावरेई गोकुल नगर को॥

संत भीखा साहब

मन तोहि कहत कहत सठ हारे।
ऊपर और अंतर कछु औरै, नहिं बिस्वास तिहारे।
आदिहि एक अन्त पुनि एकै, मद्धबहु एक बिचारे।
लबज लबज एहवर ओहवर करि, करम दुइत करि डारे।
विषयारत परपंच अपरबल, पाप पुन्न परचारे।
काम क्रोध मद लोभ मोह कब, चोर चहत उजियारे।
कपटी कुटिल कुमति बिभिचारी, हो वाको अधिकारे।
महा निलज कछु लाज न तोको, दिन दिन प्रति मोहि जारे।
पाँच पचीस तीन मिलि चाह्यो, बनलिउ बात बिगारे।
सदा करेहु बैपार कपट को, भरम बजार पसारे।
हम मन ब्रह्म जीव तुम आतम, चेतन मिलि तन धारे।
सकल दोस हमको काहे दइ, होन चहत हौ न्यारे।
खोलि कहौं तौरंग नहिं फेरयो, यह आपुहि महिमारे।
बिन फेरे कछु भयो न ह्वै है, हम का करहि बिचारे।
हमरी रुचि जग खेल खेलौना, बालक साझ सबारे।
पिता अनादि अरख नहि मानहि, राखत रहहि दुलारे।
जप तप भजन सकल है बिरथा, व्यापक जबहि बिसारे।
भीखा लखहु आपु आतम कहँ, गुनना तजहु खमारे॥

× × ×

मन तू राम सों लौ लाव।
त्यागि के परपंच माया, सकल जग को चाव।
साँच की तू चाल गहिले, झूठ कपट बहाव।
रहनिसों लवलीन ह्वै, गुरु ज्ञान ध्यान जगाव।
जोग की यह सहज जुक्ति, विचारि कै ठहराव।
प्रेम प्रीति सों लागि के, घट सहज ही सुख पाव।
दृष्टितें आदृष्टि देखो, सुरति निरति बसाव।
आतमा निर्धार निर्भौ बानि, अनुभव गाव।

अचल अस्थिर ब्रह्म सेवो, भाव चित अरुझाव।
भीखा फेरि न कबहुँ पैहौ, बहुरि ऐसो दाव॥

× × ×

मोहि डाहतु है मन माया।
एकै सब्द ब्रह्म फिरि एकै, फिरि एकै जग छाया।
आतम जीव करम अरुझाना, जड़ चेतन बिलमाया।
परमारथ को पीठ दियो है, स्वारथ सनमुख धाया।
नाम नित्य तजि अनितै भावै, तजि अमृत बिष खाया।
सतगुरु कृपा कोऊ कोउ बाँचै, जो सोधै निज काया।
भीखा यह जग रतो कनक पर, कामिनि हाथ बिकाया॥

× × ×

मनुवा नाम भजत सुख लीया।
जनम जनम कै उरझनि पुरझनि, समुझत करकत हीया।
यह तौ माया फाँस कठिन है, का धन सुत वित तीया।
सत्त सब्द तन सागर माही, रतन अमोलक पीया।
आपा तेजि धँसै सो पावै, लै निकसै मरजीया।
सुरति निरति लौलीन भयो जब, दृष्टि रूप मिलि थीया।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु, जुक्ति जमावो बीया।
सतगुरु भये दयाल ततच्छिन, करना था सो कीया।
कहै भीखा परकासी कहिये, घर अरु बाहर दीया॥

× × ×

प्रीति की यह रीति बखानौ।
कितनौ दुख सुख परै देह पर, चरन कमल कर ध्यानौ।
हो चैतन्य विचारि तजो भ्रम, खांड धूरि जनि सानौ।
जैसे चात्रिक स्वाति बूंद बिनु, प्रान समर्पन ठानौ।
भीखा जेहि तन राम भजन नहिं, काल रूप तेहि जानौ॥

× × ×

कहा कोउ प्रेम बिसाहन जाय।
महँग बड़ा गथ काम न आवै, सिरके मोल बिकाय।
तन मन धन पहिले अरपन करि, जग के सुख न सोहाय।
तजि आपा आपुहिं ह्वै जावै, निज अनन्य सुखदाय।
यह केवल साधन को मत है, ज्यों गूंगे गुड़ खाय।
जानहि भले कहै सो कासौं, दिल की दिलहिं रहाय।

बिनु पग नाच नैन बिनु देखै, बिनु करताल बजाय।
बिनु सरवन धुनि सुनै विविध विधि, बिन रसना गुन गाय।
निरगुन में गुन क्योंकर कहियत, व्यापकता समुदाय।
जहाँ नाहिं तहँ सब कछु दिखियत, अँधरन की कठिनाय।
अजपा जाप अकथ को कथनों, अलख लखन किन पाय।
भीखा अविगति की गति न्यारी, मन बुधि चित न समाय॥

संत रामचरन

रमइया मोरि पलक न लागै हो।
दरस तुम्हारे कारणै, निसिबासर जागै हो।
दसूं दिशा जातर करूँ, तेरो पंथ निहारूँ हो।
राम राम की टेर दे, दिन रैण पुकारूँ हो।
नैन दुखी दीदार बिन, रसना रस आशै हो।
हिरदो हुलसै हेतकूं, हरि कब परकाशै हो।
स्वाति बूंद चातक रटै, जल और न पीवै हो।
घन आशा पूरै नहीं, तो कैसे जीवै हो।
दास की या अरदास सुण, पिया दरसन दीजै हो।
राम चरण विरहिन कहै, अब विलम न कीजै हो॥

× × ×

निस्प्रेही, निरवैरता, निराकार, निरधार।
सकल सृष्टि में रमि रह्यो, ताको सुमिरन सार॥
ताको सुमिरन सार, राम सो ताहि भणीजै।
दृष्टि मुष्टि आकार रूप माया ज गिणीजै॥
रामचरण व्यापक व्योम ज्यों, ताको सुमिरन सार।
निस्प्रेही, निरवैरता, निराकार, निरधार॥

× × ×

जिज्ञासू जरणाँ लिया, संजम राखै मन्न।
धर्म माँहि धारा सदा, तन को नाहिं जतन्न॥
तन को नाहिं जतन्न, अन्न जल संजम लेवै।
राम भजन में निरत, नित्य निर्मल जल सेवै॥
राम चरण में धारणा, कहा ग्रेही कहा वन्न।
जिज्ञासू जरणाँ लिया, संजम राखै मन्न॥

× × ×

इतना चाहिये साधु कों, छाजन भोजन नीर।
राम चरण एता अधिक, ले सो नहीं फकीर ॥
ले सो नहीं फकीर, भार काहे सिर धरिये।
आतम भाड़ा देय, राम का सुमिरण करिये ॥
जगत छाँड़ि ऐसी करी, ज्यां परस्या पूरा पीर।
इतना चाहिये साधु कों, छाजन भोजन नीर ॥

× × ×

साधू सुमिरे राम, काम माया से नांही।
छाजन भोजन हेतु बसै, नहिं दुनिया मांही।
पर इच्छा की भीख, पाय बरते निज देहा।
अपणा निज घर छाँड़ि, करै नहिं पर घर नेहा ॥
आशा बांध्या ना फिरै, बिचरै सहज सुभाय।
राम चरण ऐसा जती, राम कृपा से पाय ॥

× × ×

आनँदघन सुखराशि, चिदानंद कहिये स्वामी।
निरालंब निरलेप, अकल हरि अन्तरयामी ॥
वार पार मधि नाहिं, कूंन बिधि करिये सेवा।
नहिं निराकार आकार, अजन्मा अवगत देवा ॥
राम चरण वन्दन करै, अलह अखंडित नूर।
सूक्ष्म स्थूल खाली नहीं, रह्यो सकल भरपूर ॥

× × ×

राम राम मुख गाय, ब्रह्म का पद कूं पायो।
जैसे सरिता नीर धाय, धुरि समंत समायो ॥
जल की उत्पति लोण, उलटि अपणो पद पायो।
पालो पाणीं महिं गल्या, नाहिं दूजा दरसायो ॥
ज्यों जलकेरा बुदबुदा, जल से न्यारा नाहिं।
राम चरण दरियाव की, लहरयां दरियां माहिं ॥

× × ×

बिरह घटा घररात नैंण नीझर झरै।
चित्त चमंकै बीज कि हिरदो ओल्हरै ॥
बिरहिन ह्वै बेहाल दया कर न्हालियो।
परिहां, राम चरण कूँ राम वेग सम्हालियो ॥

बिरहा कर ले करद कलेजा काटिहै।
पीव न सुणै पुकार कि हिवरा फाटिहै ॥
सबै बटाऊ लोग न पूछै पीडरे।
परिहां, राम चरण बिन राम करै कुण भीडरे ॥
बिरह सपीड़ा सास वहै उर करद रे।
घाव गयो है फाटि बध्यो अति दरद रे ॥
निस दिन करे पुकार वैद्य हरि आवही।
परिहां, राम चरण बिन राम भरै नहिं पावही ॥
सूई कर निज सार सूर हित कीजिये।
अपना हाथां आप घाव सी लीजिये ॥
अब नहिं कीजै ढील घाव अति बिस्तरे।
परिहां, राम चरण बेहाल बिरहनी दुखभरे ॥
गुरां बताया निकट दूर कैसे भया।
मोहा माया की बाड आसरे होय रह्या ॥
मै निर्बल निरधार न टूटे वाड़ जी।
परिहां, तुम समर्थ बल जोर की पड़दा फाड़ जी ॥

संत रामरहस दास

प्रभुजी तुम बिन कौन छुड़ावै।
महा कठिन यम जाल फाँस है, तासों कौन बचावै।
नाना फाँस फँसाय जीव को, अपनो रूप छिपावै।
पंच कोश ह्वै परगट ग्रासे, तेहि को कौन लखावै।
आपुहि एक अनेक कहावै, त्रिविध सरूप बनावै।
सन्निपात होय दुष्ट सो, परलय अन्त दिखावै।
विषय विकार जगत अरुझावै, जहाँ तहाँ भटकावै।
योग ध्यान विगुर्चन भारी, ताहि सुरति अटकावै।
आस नाम नौका बैठावै, भव की धार बहावै।
तत्वमसी कहि ताहि डुबावै, अन्त कोइ नहिं पावै।
चारि मुक्ति जोइनि चौरासी, तेहि मिलि हेत बढ़ावै।
नेम धर्म पूजा औ संजम, बहुबिधि लागि लगावै।
भेष अलेख करे को पावै, जीवहि चैन न आवै।
चार वेद षट अष्ट दसों लौं, शून्यहि शून्य समावै।

काल चक्र बसि उत्पति परलय, जीव दुसह दुख पावै।
साहेब दया कीन्ह परखाये, राम रहस गुण गावै ॥

× × ×

द्वन्द्वज सत्य असत्य को, जहाँ नहीं कुछ लेश।
सो प्रकाश के गुरु परख है, मेटत सकल कलेश ॥
प्रथमहि शब्द सुधारिके, टारे त्रयविध जाल।
झाँई मेटत संधिको, ऐसो शरण दयाल ॥
राम रहस साहब शरण, अभय अशंक उदोत।
आवागमन की गम नहीं, भोर साँझ नहिं होत ॥

संत पलटू साहब

गगन कि धुनि जो आनई, सोई गुरु मेरा।
वह मेरा सिरताज है, मैं वाका चेरा ॥
सुन में नगर बसावई, सूतत में जागै।
जल में अगिन छुपावई, संग्रह में त्यागै ॥
जंत्र बिना जंत्री बजै, रसना बिनु गावै।
सोहे सब्द अलापि कै, मन को समुझावै ॥
सुरति डोर अमृत भरै, जहँ, कूप अरध-मुख।
उलटै कमलहिं गगन में, तब मिलै परम सुख ॥
भजन अखंडित लागई, जस तेल कि धारा।
पलटू दास दंडौत करि, तेहि बारम्बारा ॥

× × ×

ऐसी कुदरति तेरी साहिब, ऐसी कुदरति तेरी है।
धरती नभ दुइ भीत उठाया, तिसमें घर इक छाया है।
तिस घर भीतर हाट लगाया, लोग तमासे आया है।
तीन लोक फुलवारी तेरी, फूलि रही बिनु माली है।
घट घट बैठा आपै सींचै, तिल भर कहीं न खाली है।
चारि खान औ भुवन चतुरदस, लख चौरासी बासा है।
आलम तोहि तोहि में आलम, ऐसा अजब तमासा है।
नटवा होइ कै बाजी लाया, आपुइ देखन हारा है।
पलटू दास कहौं मैं कासे, ऐसा यार हमारा है ॥

× × ×

प्रेम बान जोगी मारल हो, कसकै हिया मोर।
जोगिया कै लालि लालि अँखिया हो, जस कमल के फूल।
हमारी सुरुख चुनरिया हों, दूनो भये समतूल ॥
जोगिया के लेउ मिर्गछलवा हो, आपन पट चीर।
दूनों के सियब गुदरिया हो, होइ जाब फकीर॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो, ताकिन्हि मोरी ओर।
चितवनि में मन हरि लियो हो, जोगिया बड़ चोर॥
गंग जमुन के बिचवां हो, बहै झिरहिर नीर।
तेहि ठैयाँ जोंरल सनेहिया हो, हरि लै गयो पीर॥
जोगिया अमर मरै नहिं हो, पुजवल मोरी आस।
करम लिखा बर पावल हो, गावै पलटू दास॥

× × ×

हम भजनीक में नाहीं अवधू, आँखि मूँदि नहिं जाहीं।
इक भजनीक भजन है इकठो, तब वह भजन में जावै।
भजनी भजन एक भा दूनो, वाके भजन न आवै॥
खसम की मजा परी है जिनको, सो क्या नैहर आवै।
हुमा पच्छी रहै गगन में, वाके जगत न भावै॥
बुंद परा सागर के माँही, वह ना बुंद कहावै।
लोन की डेरी पानी में, कहवाँ से फिर पावै॥
तेल की धार लगी निसि बासर, जोति में जोति समानी।
पलटू दास जो आवै जावै, सो चौथाई ज्ञानी॥

× × ×

कौन करै बनियाई मेरी, कौन करै बनियाई।
त्रिकुटी में न भरती मेरी, सुखमन में है गादी।
दसयें द्वारे कोठी मेरी, बैठा पुरुष अनादी॥
इँगला पिंगला पलरा दूनौं, लागि सुरति की जोती।
सत्त सब्द की डांडी पकरौं, तौलौं भरि भरि मोती॥
चाँद सुरुज दोउ करैं रखवारी, लागी तत्त की ढेरी।
तुरिया चढ़ि के बेचन लागे, ऐसी साहिबी मेरी॥
सतगुरु साहब किहा सिपारस, मिली राम मोदियाई।
पलटू के घर नौबत बाजै, निति उठि होत सवाई॥

× × ×

साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास।
साहिब तेरे पास याद करु होवै हाजिर।
अन्दर धँसिकै देखु मिलेगा साहिब नादिर॥
मान मनी हो फना नूर तब नजर में आवै।
बुरका डारै टारि खुदा बाखुद दिखरावै॥
रूह करे मेराज कुफर का खोलि कुलावा।
तीसौ रोजा रहै अन्दर में सात रिकावा॥
लामकान में रब्ब को पावै पलटू दास।
साहिब साहिब क्या करै साहिब तेरे पास॥

× × ×

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय।
जो चाहै सो लेय जायगी छूट ओराई।
तुमका लुटिहौ यार गाँव जब दहिहैं लाई॥
ताकै कहा गँवार मोट भर बाँध सिताबी।
लूट में देरी करै ताहिं की होथ खराबी॥
बहुरि न ऐसा दाव नहीं फिर मानुष होना।
क्या ताकै तू ठाढ़ हाथ से जाता सोना॥
पलटू मैं उतृन भया मोर दोस जिन देय।
लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय॥

× × ×

रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना योग।
मुसकिल करना योग चित्त को उलटि लगावै।
विषय वासना तजै प्रान ब्रह्मांड चढ़ावै॥
साधै वायू प्रान कुण्डली करै उथपना।
अष्ट कँवल दल उलटि कँवल दल द्वादस लखना॥
इँगला पिंगला सोधि बंक के नाल चढ़ावै।
चार कला को तोड़ि चक्र षट जाय बिंधावै॥
पलटू जो संजम करै करै रूप से भोग।
रन का चढ़ना सहज है मुसकिल करना योग॥

× × ×

आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर।
जैसे चन्द चकोर पलक से टारत नाहीं।
चुगै विरह से आग रहै मन चन्दै माहीं॥

फिरै जेही दिसि चन्द तेही दिसि को मुख फेरै।
चन्दा जाय छिपाय आग के भीतर हेरै॥
मधुकर तजै न पदम जान से जाइ बँधावै।
दीपक में ज्यों पतँग प्रेम से प्रान गँवावै॥
पलटू ऐसी प्रीति कर परधन चाहै चोर।
आठ पहर निरखत रहै जैसे चन्द चकोर॥

× × ×

आसिक का घर दूर है पहुँचै बिरला कोय।
पहुँचै बिरला कोय होय जो पूरा जोगी।
बिंद करै जो छार नाद के घर में भोगी॥
जीते जी मरि जाय मुए पर फिरि उठि जागै।
ऐसा जो कोइ होय सोइ इन बातन लागै॥
पुरजै पुरजै उड़ै अन्न बिनु बस्तर पानी।
ऐसे पै ठहराय सोई महबूब बखानी॥
पलटू आपु लुटावही काला मुँह जब होय।
आसिक का घर दूर है पहुँचै बिरला कोय॥

× × ×

धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय।
चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी।
चल सतगुर के घाट भरा जहँ निर्मल पानी॥
चादर भई पुरानि दिनो दिन बार न कीजै।
सत संगत में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै॥
छूटै कलमल दाग नाम का कलप लगावै।
चलिये चादर ओढ़ि बहुरि नहिं भौजल आवै॥
पलटू ऐसा कीजिए मन नहिं मैला होय।
धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय॥

× × ×

साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय।
जो कोइ पहुँचा होय नूर का छत्र विराजै।
सबर तख्त पर बैठि तूर अठपहरा बाजै॥
तम्बू है असमान जमी का फर्श बिछाया।
छिमा किया छिड़काव खुशी का मुस्क लगाया॥
नाम खजाना भरा जिकिर का नेजा चलता।
साहिब चौकीदार देखि इबलीसहु डरता॥

पलटू दुनिया दीन में उनसे बड़ा न कोय।
साहिब वही फकीर है जो कोइ पहुँचा होय॥

× × ×

फाका जिकिर किनात ये तीनो बात जगीर।
तीनो बात जगीर खुशी की कफनी डारै।
दिल को करै कुसाद आई भी रोजी टारै॥
इबादत दिन रात याद में अपनी रहना।
खुदी खूब की खोय जनाजा जियतै करना॥
सीकन्दर औ गदा दोऊ को एकै जानै।
तब पावै टुक नसा फना का प्याला छानै॥
पलटू मस्त जो हाल में तिसका नाम फकीर।
फाका जिकिर किनान ये तीनो बात जगीर॥

× × ×

उलटा कूवा गगन में तिसमें जरै चिराग।
तिसमें जरै चिराग बिना रोगन बिन बाती।
छः रितु बारह मास रहत जरतै दिन राती॥
सतगुरु मिला जो होय ताहि की नजरि में आवै।
बिन सतगुरु कोउ होय नहीं वाको दरसावै॥
निकसै एक अवाज चिराग की जोतिहि माहीं।
ज्ञान समाधी और कोउ सुनता नाहीं॥
पलटू जो कोऊ सुनै ताके पूरे भाग।
उलटा कूवा गगन में तिसमें जरै चिराग॥

× × ×

बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर।
मगन भया मन मोर महल अठवें पर बैठा।
जहँ उठै सोहंगम सब्द सब्द के भीतर पैठा॥
नाना उठै तरंग रंग कछु कहा न जाई।
चाँद सुरज छिपि गये सुषमना सेज बिछाई॥
छूटि गया तन येह नेह उनहीं से लागी।
दसवाँ द्वारा फोड़ि जोति बाहर ह्वै जागी॥
पलटू धारा तेल की मेलत ह्वै गया भोर।
बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर॥

× × ×

खसम मुवा तौ भल भया सिर की गई बलाय।
सिर की गई बलाय बहुत सुख हमने माना।
लागे मंगल होन बजन लागे सदियाना॥
दीपक बरे अकास महल पर सेज बिछाया।
सूतों महीं अकेल खबर जब मुए की पाया।
सूतौं पाँय पसारि भरम की डोरी टूटी।
मने कौन अब्र करै खसम बिनु दुबिधा छूटी॥
पलटू सोइ सुहागिनी जियतै पिय को खाय।
खसम मुवा तौ भल भया सिर की गई बलाय॥

× × ×

पिय को खोजन मैं चली आपुइ गई हिराय।
आपुइ गई हिराय कवन अब कहे सँदेसा।
जेकर पिय में ध्यान भई वह पिया के भेसा॥
आगि माँहि जो परै सोऊ अग्नी ह्वै जावै।
भृङ्गी कीट को भेंटि आपु सम लेइ बनावै॥
सरिता बहि के गई सिन्धु में रही समाई।
सिव सक्ती के मिले नहीं फिर सक्ती आई॥
पलटू दीवाल कहकहा मत कोउ झाँकन जाय।
पिय को खोजन मैं चली आपुहि गई हिराय॥

× × ×

अपनी ओर निभाइये हारि परै की जीति।
हारि परै की जीति ताहि की लाज न कीजै।
कोटिन बहै बयारि कदम आगे को दीजै॥
तिल तिल लागै घाव खेत से टरना नाहीं।
गिरि गिरि उठै सम्हारि सोई है मरद सिपाही॥
लरि लीजै भरि पेट कानि कुल अपनी न लावै।
उनकी उनके हाथ बड़न से सब बनि आवै॥
पलटू सतगुरु नाम से साँची कीजै प्रीति।
अपनी ओर निभाइये हारि परै की जीति॥

× × ×

पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग॥
लगा जिकिर का बान है, फिकिर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार॥

बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरु ज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चलै मैदान॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार।
पलटू ऐसे दास को, कोउ न पावै पार॥
जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास।
हरिजन में हरि रहत है, ऐसे पलटू दास॥
साध परखिये रहनि में, चोर परखिये रात।
पलटू सोना कसे में, झूठ परखिये बात॥
पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलिगे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनंत॥
पलटू गुनना छोड़िदे, लहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख॥
मरने वाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय।
समझावै सोभी मरै, पलटू को पछिताय॥
चारि बरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल।
गुरु गोबिन्द के बाग में, पलटू फूला फूल॥

संत तुलसी साहब

बरसे रस धारा गगन घटा॥
उमँड़ि घुमँड़ि बदरी घन गरजै, बीज कडक मानो अगिनि अटा॥
मैं तो खड़ी पिय पौर किवारी, महल लखन मन मगन नटा॥
गिरत परत गइ अधर अटारी, चढ़ि विष नागिनि लगन लटा॥
झँझरी परखि हरखि पिउ प्यारी, निरखि परखि पद पग न हटा॥
सुख मनि सुन्न जोति त्रिकुटी में, तुलसि दरद दिल दगन मिटा॥

× × ×

सुरति मतवाली करत कलोल।
पलँगा साजि सजी पिउ प्यारी, पिय रस गाँठ दई सब खोल॥
गहिगहि बाँह गले बिच डाली, धार धरनि कोर कीन्हि अडोल॥
झमक चढ़ी हिये हेर अटारी, न्यारी निरखि सुना इक बोल॥
पछिम दिसा दिस खोलि किवारी, पिय पद परसत भई री अमोल॥
तुलसी जगत जाल सब जारी, डारी डगर बेदन की पोल॥

× × ×

एरी सिखर पर सुरत समानी, संत लखन पद पार री ॥
जोगी जोति होत लखि जानै, पाँचोइ तत्त पसार री ॥
पासे सार संत गति न्यारी, पारे परखि निहार री ॥
तुलसी तोल बोल जब पावे, करैं कृपा निरधार री ॥

× × ×

बिन डगर मियाँ कहँ जाते हो ।
खलक खुदी संग भूलि परे, परदेसी देस न पाते हो ॥
धक धक होता अन्दर में दिल, सुभा भरम भय खाते हो ॥
कुछ खोज खबर नहिं रखते हो, नित नई नियामत चखते हो ॥
मियाँ ज़ेर ज़बर तक धीर धरो, दिल पाक बदन होय होस करो ॥
भव भटकि भटकि दुख पाते हो ॥
कुछ इलम इबादत कूँ जानो, ये सरा समझ को पहिचानो ।
मियाँ आप खुदी खुद खूब नहीं, यह मुरसिद फिर नाचीज़ कहाँ ।
बद बेवफ़ा चित चहाते हो ॥
हर वख्त तबाही सहते हो, हुरमत लज्जा सब खोते होते ।
कर होस अदल बिच जागोगे, जब कुफर कूर से भागोगे ।
इक इसम बिना लौ लाते हो ॥
तुलसी तवक्को करलेरे, यह जुलमी काफिर कर जेरे ।
पिउ अदल मुरीदी लाओगे, बे मझब हकीकत गाते हो ॥

× × ×

अरे किताब कुरान को खोजले ।
अलह अल्लाह खुद खुदा भाई ॥
कौन मक्कान महजीत मस्सीत में ।
जिमी असमान बिच कौन ठाँई ॥
हर वख्त रोजा निमाज और बाँग दे ।
खुदा दीदार नहिं खोज पाई ॥
खोजते खोजते खलक सब खप गया ।
टेक ही टेक खुद खुदी खाई ॥
दास तुलसी कहै खुदा खुद आप है ।
रूह से निरख दिल देख जाई ॥

× × ×

अगम इक चौज में मौज न्यारी लखो ।
अंड बिच निरख ब्रह्माण्ड सारा ॥

सुरति की सैल नित महल में बस रही।
निकरि पट खोल गई गगन पारा ॥
अकल औ सकल लख लोक न्यारी भई।
गई घर अधर पर सुरति लारा ॥
आद औ अंत घर संत पहिचानिया।
दास तुलसी अज अमर न्यारा ॥

× × ×

सब्द सब्द सब कहत हैं, सब्द सुन्न के पार।
सब्द सुन्न के पार, सार सोइ सब्द कहावै।
पच्छिम द्वार के पार, पार के पार समावै ॥
दो दल कँवल मँझार, मद्ध के मधि में आवै।
संतन दिया लखाय, सार सोइ सब्द कहावै ॥
तुलसी सत सत लोक से, कहुँ कुछ भेद निनार।
सब्द सब्द सब कहत हैं, सब्द सुन्न के पार ॥

× × ×

यह जग बिरले बूझियाँ, चौथे पद मतसार।
चौथे पद मतसार, लार संतन के पावै।
कोटिन करे उपाव, लखन में कबहुँ न आवै ॥
लख अलक्ख औ खलक, खोज कोइ चिन्ह न आवै।
सतगुरु मिलैं दयाल, भेद छिन में दरसावैं ॥
तुलसी अगम अपार जो, को लखि पावै पार।
यह गत बिरले बूझियाँ, चौथे पद मत सार ॥

× × ×

अन्दर की आँखी नहीं, बाहर की गइ फूटि।
बिन सत गुरु औघट बहै, कभी न बंधन छूटि ॥
उत्तम औ चांडाल घर, जहँ दीपक उजियार।
तुलसी मते पतंग के, सभी जोत इक सार ॥
मकरी उतरै तार से, पुनि गहि चढ़त जो तार।
जाका जांसो मन रम्यो, पहुँचत लगै न बार ॥
सूरज बसै आकास में, किरन भूमि पर बास।
जो अकास उलटे चढ़ै, सो सत गुरु का दास ॥
जल मिसरी कोइ ना कहै, सर्बत नाम कहाय।
यों घुल के सत संग करै, काहे भर्म समाय ॥
सुरत सिखर अन्दर खड़ी, चढ़ी जो दीपक बार।
आतम रूप अकास का, देखै बिमल बहार ॥

तुलसी मैं तू जो तजै, भजै दीन गति होय।
गुरु नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोय॥
मन तरंग तन में चलै, आठो पहर उपाव।
थाह कधी पावै नहीं, छिन छिन छल परभाव॥
जल ओला गोला भयो, फिर घुलि पानी होय।
संत चरन गुरु ध्यान से, मन घुलि जावै सोय॥
सूप ज्ञान सज्जन गहै, फूकर देत निकार।
सार हिये अन्दर धरै, पल पल करत बिचार॥

बेनी प्रवीन

काल्हि ही गूँधी बबा की सौ मैं गजमोतिन की पहिरी अति आला।
आई कहाँ ते यहाँ पुखराज की, संग एई जमुना तट बाला।
न्हात उतारी हौ बेनी प्रबीन, हँसै सुनि बैनन नैन रसाला।
जानति ना अँग की बदली सब सों बदली बदली कहै माला॥

× × ×

जान्यो न मैं ललिता अलि ताहि जो सोवत माहि गई करि हाँसी।
लाए हिए नख केहरि के सम, मेरी तऊ नहिं नींद बिनासी।
लै गई अम्बर बेनी प्रवीन ओढ़ाय लटी दुपटी दुखरासी।
तोरि तनी तन छोरि अभूषन भूलि गयी गर देन को फाँसी॥

× × ×

भोरि ही न्योत गई थी तुम्हैं वह गोकुल गाँव की ग्वालिन गोरी।
आधिक राति लौं बेनी प्रवीन कहा ढिग राखि करी बरजोरी।
आवै हँसी मोहि देखत लालन, भाल में दीन्हीं महावर घोरी।
एते बड़े ब्रजमंडल में न मिली कहुँ माँगेहु रंचक रोरी॥

× × ×

घनसार पटीर मिलै मिलै नीर चहै तन लावै न लावै चहै।
न बुझै बिरहागिन झार झरी हू चहै घन लावै न लावै चहै।
दम टेरि सुनावतीं बेनी प्रवोन चहै मन लावै न लावै चहै।
अब आव विदेस से प्रीतम गेह, चहै धन लावै न लावै चहै॥

रसिक गोविन्द

चकित भूप बानी सुनत गुरु वशिष्ठ समुझाय।
दिए पुत्र तब, ताड़का मग में मारी जाय॥

छाँड़त सर मारिच उड़्यो पुनि प्रभु हत्यो सुबाहु ।
मुनि मख पूरन सुमन सुर बरसत अधिक उछाह ॥

× × ×

मुकलित पल्लव फूल सुगन्ध परागहि झारत ।
जुग मुख निरख विपिन जनु राई लोन उतारत ॥
फूल फलन के भार डार झुकि यों छबि छाजै ।
मनु पसारि दइ भुजा देन फल पथिकन काजै ॥
मधु मकरन्द पराग लुब्ध अलि मुदित मत्त मन ।
विरद पढ़त ऋतुराज नृपति के गुन बन्दीजन ॥

प्रतापसाहि

सीख सिखाई न मानति है, बर ही बस संग सखीन के आवै ।
खेलत खेल नए जल में, बिना काम वृथा कत जाम बितावै ।
छोड़ि कै साथ सहेलिन को, रहि कै कहि कौन सवादहि पावै ।
कौन परी यह बानि, अरी ! नित नीर भरी गगरी ढरकावै ॥

× × ×

चंचलता अपनी तजि कै रस ही रस सों रस सुन्दर पीजियो ।
कोऊ कितेक कहै तुमसो तिनकी कही बातन को न पतीजियो ।
चोज चबाइन के सुनियो न, यही इक मेरी कही नित कीजियो ।
मंजुल मंजरी पैहौ मलिन्द ! विचारि कै भार सम्भारि कै दीजियो ॥

× × ×

कानि करै गुरु लोगिन की, न सखीन की सीखन ही मन लावति ।
ऐंड़ भरी अँगराति खरी, कत घूँघट में नए नैन नचावति ।
मंजन कै दृग अंजन आँजति, अंग अनंग उमंग बढ़ावति ।
कौन सुभाव री तेरो परयो, खिन आँगन में, खिन पौरि में आवति ॥

× × ×

तड़पै तड़िता चहुँ ओरन तें, छिति छाई समीरन की लहरैं ।
मदमाते महागिरि शृंगन पै, गन मंजु मयूरन को कहरैं ।
इनकी करनी बरनी न परै, मगरूर गुमानन सों गहरैं ।
घन ये नभ मंडल में छहरैं, घहरैं कहुँ जाय कहूँ ठहरैं ॥

बैताल

मरै बैल गरियार, मरै वह अड़ियल टट्टू।
मरै करकसा नारि, मरै वह खसम निखट्टू॥
बाँभन सो मरि जाय, हांथ लै मदिरा प्यावै।
पूत वही मरि जाय, जो कुल में दाग लगावै॥
अरु बेनियाव राज मरै, तबै नींद भर सोइए।
बैताल कहै विक्रम सुनौ, एतं मरे न रोइए॥

× × ×

टका करै कुल हूल, टका मिरदंग बजावै।
टका चढ़े सुखपाल, टका सिर छत्र धरावै॥
टका माय अरु बाप, टका भैयन को भैया।
टका सास अरु ससुर, टका सिर लाड़ लड़ैया॥
अब एक टके बिनु टकटका, रहत लगाये रात दिन।
बैताल कहै विक्रम सुनो, धिक जीवन एक टके बिन॥

× × ×

चोर चुप्प ह्वै रहै, रैन अँधिकारी पाये।
संत चुप्प ह्वै रहै, मढ़ी में ध्यान लगाये॥
बधिक चुप्प ह्वै रहै, फाँस पंछी लै आवै।
छैल चुप्प ह्वै रहै, सेज पर तिरिया पावै॥
बर पिपर पात हस्ती श्रवन, कोइ कोइ कवि कुछ कुछ कहैं।
बैताल कहै विक्रम सुनो, चतुर चुप्प कैसे रहैं॥

× × ×

ससि बिन सूनी रैन ज्ञान बिन हिरदै सूनो।
कुल सूनो बिनु पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनो॥
गज सूनो इक दन्त ललित बिन सायर सूनो।
विप्र सून बिन वेद और बिन पुहुप बिहूनो॥
हरिनाम भजन बिन संत अरु घटा सून बिन दामिनी।
बैताल कहै विक्रम सुनो पति बिन सूनी कामिनी॥

× × ×

जीभि जोग अरु भोग, जीभि बहु रोग बढ़ावै।
जीभि करै उद्योग, जीभि लै कैद करावै॥

जीभि स्वर्ग लै जाय, जीभि सब नरक दिखावै।
जीभि मिलावै राम, जीभि सब देह धरावै॥
निज जीभि ओठ एकग्र करि बाँट सहारे तोलिये।
बैताल कहै विक्रम सुनो जीभि सँभारे बोलिये॥

× × ×

राजा चंचल होय मुलुक को सर करि लावै।
पंडित चंचल होय सभा उत्तर दै आवै॥
हाथी चंचल होय समर में सूँड़ि उठावै।
घोड़ा चंचल होय झपटि मैदान देखावै॥
हैं ये चारों चंचल भले राजा पंडित गज तुरी।
बैताल कहै बिक्रम सुनो तिरिया चंचल अति बुरी॥

× × ×

दया चट्ट ह्वै गई धरम धँसि गयो धरन में।
पुन्य गयो पाताल पाप भो बरन बरन में॥
राजा करै न न्याय प्रजा की होत खुवारी।
घर घर में पेपीर दुखित भे सब नर नारी॥
अब उलटि दान गजपति मँगै सील सँतोष किते गयो।
बैताल कहै बिक्रम सुनो यह कलजुग परगट भयो॥

× × ×

मर्द सीस पर नवै मर्द बोली पहिचानै।
मर्द खिलावै खाय मर्द चिन्ता नहिं मानै॥
मर्द देय औ लेय मर्द को मर्द बचावै।
गाढ़े सँकरे काम मर्द के मर्दै आवै॥
पुनि मर्द उनहिं को जानिये दुख सुख साथी दर्द के।
बैताल कहै विक्रम सुनो लच्छन हैं ये मर्द के॥

गुणमंजरीदास

हमारे धन स्यामा जू को नाम।
जाकौ रटत निरंतर मोहन, नंद नँदन घन स्याम॥
प्रति दिन नव-नव महामाधुरी; बरसति आठौ जाम।
गुनमंजरी नवकुन्ज मिलावै, श्री वृन्दावन धाम॥

× × ×

पिय प्यारी खेलत होरी।
श्री वृन्दावन कुन्ज भजव में श्री जमुना जी ओरी।
नँद - नंदन रसिकेस रसीले श्री बृषभान किसोरी।
भरे हिय भाव कमोरी।
तरल कटाच्छ मंजु पिचकारी छूटत तन मन बोरी।
लगत है नयो नयो री।
हसन अबीर हीर दुति सुन्दर उजलत परम उजेरी।
गौर स्याम छबि मिलि कै चोवा अंग अंग चरचो री।
सुगन्धन चित्तनि चोरी।
गोल कपोल कुमकुमा दोऊ धारत है मुख सों री।
कंकन ताल किंकिनी ढप रव बाजत है सुर सों री।
मधुर बंसी धुनि थोरी।
श्री ललितादिक सखी सहेली, यह आनंद लहोरी।
गुणमंजरि राधा माधव पर वारत है तृन तोरी।
सिरावति नैन हियो री।।

× × ×

प्यारी चरनन में नव वसंत। दस नख ससि किरननि नित लसंत।
अरुनित अँगुरी है नव प्रवाल। बिछुवा घुँघुरु मुकलित रसाल।
मेंहदी दुति केसू कौ प्रकास। जावक नव बेली कर बिलास।
छिप बोलत स्यामल गुन सुरूप। कोकिल कुहुकत है अति अनूप।
दामन लालन मलया समीर। सुरभित चहुँ दिसि मिलि हरत धीर।
केसर उर की प्रिय सगी आय। गुनगुन गुनमंजरी मधुप धाय।

नारायणस्वामी

देखु सखी नव छैल छबीलौ, प्रात समय इततें को आवै।
कमल समान बड़े दृग जाके, स्याम सलोनो मृदु मुसकावै।
जाकी सुन्दरता जग बरनत, मुख सोभा लखि चंद लजावै।
नारायण यह किधौं वही है, जो जसुमति कौ कुँवर कहावै।।

× × ×

आजु सखी प्रात काल दृग मींड़त जगे लाल,
रूप के बिसाल सिन्धु गुनन के जहाज।

कुन्डल सो उरझि माल मुख पै अलकन कौ जाल,
भई मैं निहाल निरखि सोभा की समाज।
आलस-बस झुकत ग्रीव कबहूँ अँगड़ाइ लेत,
उपमा सम देत मोहिं आवत है लाज।
नारायण जसुमति ढिग हौं तौ गई बात कहन,
यामे भये री एक पंथ दोउ काज॥

× × ×

बे दरदी तोहि दरद न आवै।
चितवन में चित बस करि मेरो।
अब काहे को आँखि चुरावै।
कब सों परी द्वार पै तेरे।
बिन देखे जियरा घबरावै।
नारायण महबूब साँवरे।
घायल करि फिर गैल बतावै।

× × ×

या साँवरे सों मैं प्रीत लगाई।
कुल कलंक से नाहिं डरौंगी, अब तौ करौं अपनी मन भाई।
बीच बजार पुकार कहौं, मैं चाहै करौ तुम कोटि बुराई।
लाज अजाद मिली औरन को, मृदु मुस्कान मेरे बँट आई।
बिन देखे मनमोहन कौ मुख, मोहि लगत त्रिभुवन दुखदाई।
नारायण तिनकों सब फीकौ, जिन चाही यह रूप-मिठाई॥

× × ×

रूप - रसिक मनोज - मन - हरन सकल गुन - गरबीले।
छैल छबीले चपल लोचन - चकोर चित चटकीले॥
रतन-जटित सिर मुकुट लटक रहि, सिमट स्याम लट घुँघरवारी।
बाल विहारी कन्हैया लाल, चतुर तेरी बलिहारी॥
लोलक मोती काम कपोलनि, झलक बनी निर्मल प्यारी।
ज्योति उज्यारी हमैं हरबार दरस दै गिरिधारी॥
छंगुली छीन जरी पट कछनी, स्याम गात सुहात भले।
चाल निराली चरन कोमल पंकज के पात भले॥
हाथ जोर कर करै बीनती नारायण दिल दरदीले।
छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले॥

× × ×

मन मोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होत है और और।
न सुहात भवन तन असन बसन वनही को धावत दौर दौर।
नहिं धरत धीर, हिय विरह पीर, व्याकुल ह्वै भटकत ठौर ठौर।
कब अँसुवन भरि नारायण मन, झाँकत डोलत है पौर पौर॥

× × ×

जाहि लगन लगी घनस्याम की।
धरत कहूँ पग परत है कितहूँ, भूलि जाय सुधि धाम की।
छवि निहार नहि रहत सार कछु धरि पल निसि दिन जाम की।
जित मुँह तितैहीं धावै सुरति न छाया धाम की।
अस्तुति निन्दा करौ भलै ही मेड़ तजी कुल ग्राम की।
नारायण बौरी भई डौलै रही न कोई काम की॥

× × ×

नंद नँदन के ऐसे नैन।
अति छबि भरे नाग के छौना, डरत डसै करि सैन।
इन सम साबर मंत्र न होई, जादू जंत्र तंत्र नहिं कोई।
एक दृष्टि में मन हरि लेवैं, करि देवैं बेचैन।
चितवन में घायल करि डारैं, इनमें कोटि बान लै वारै।
अति पैने तिरछे हिय कसकै, स्वाँस न देवै लैन।
चंचल चपल मनोहर कारे, खंजन मीन लजावनि हारे।
नारायण सुन्दर मतवारे, अनियारे दुख दैन॥

× × ×

आजु सखी, प्रीतम जो पाऊँ, तौ अपने बड़ भाग मनाऊँ।
साँवरि मूरति नैन विसाला, चंद बदन गर मोतियन माला।
रूप मनोहर चाल मराला, सुन्दरता पर बलि बलि जाऊँ।
जो प्यारे इन गलियन आवै, मो बिरहिन को दरस दिखावै।
बैठि निकट मृदु बचन सुनावै, मैं उनको हँसि कंठ लगाऊँ।
नारायण जीवन गिरधारी, कब लेंगे सुधि आय हमारी।
जब मोसों कहैंगे प्यारी, तब मैं फूली अँग न समाऊँ॥

सहचरिशरण

गज मोतिन की मंजुल माला, सीस जरकसी चीरा।
चन्द्रचारु बारौं पुनि तापर, कलित कलंगी हीरा।

नगवर जड़े कड़े कर सुन्दर, खड़े फेंट पट पीरा।
सहचरि सरन लियो बिन मोलन, मृदु बोलन मुख बीरा ॥

× × ×

कट किंकिनि सिर मोर मुकुट वर उर बनमाल परी है।
करि मुसिक्यान चकाचौंधी चित चितवनि रंग भरी है।
सहचरि सरन सुविस्व - बिमोहनी मुरली अधर धरी है।
ललित त्रिभंगी सहज मेघतनु मूरति मंजु खरी है ॥

× × ×

मलयज तिलक ललाट पटल, पट अटल सनेह सटक सो।
मदन बिजय जनु करत पुरट मय, तट किंकिनी कटक सो।
सहचरि सरन तरनि-तनया-तट, नटवर मुकुट लटक सो।
चित चुरली मुरली धुनि गावत, आवत चटक मटक सो ॥

× × ×

मय अमलादि पिया न पिया, सुख प्रेम पियूष पियारे।
नाम अनेक लिया न लिया, रति स्यामा स्याम लियारे।
आन सुदान दिया न दिया, वर आनँद हुलसि दियारे।
जप जग्यादि किया न किया, हिय पर उपकार किया रे ॥

दीनदयाल गिरि

भौंरा अंत बसंत के, है गुलाब इहि रागि।
फिर मिलाप अति कठिन है, या बन लगे दवागि ॥
या बन लगे दवागि नहीं, यह फूल लहैगो।
ठौरहि ठौर अमात बड़ो, दुख तात सहैगो ॥
बरनै दीनदयाल किते, दिन फिरिहै दौरा।
पछतैहै कर दये गये, ऋतु पीछे भौंरा ॥

× × ×

नाहीं भूलि गुलाब तू गुन मधुकर गुंजार।
यह बहार दिन चारि की बहुरि कटीली डार ॥
बहुरि कटीली डार होहिगी ग्रीषम आये।
लुवै चलेंगी संग अंग सब जैहैं ताये ॥
बरनै दीनदयाल फूल जौलों तो पाहीं।
रहे घेरि चहुँ फेरि फेरि अलि ऐहैं नाहीं ॥

× × ×

भारी भार भर्‌यो बनिक तरिबो सिंधु अपार।
तरी जरजरी फँसि परी खेवनहार गँवार॥
खेवन हार गँवार ताहि पर पवन झकोरै।
रुकी भँवर में आय उपाय चलै न करोरै॥
बरनै दीनदयाल सुमिर तू अब गिरधारी।
आरत जन के काज कला जिन निज संभारी॥

× × ×

सोई देस बिचारि कै चलिये पथी सुचेत।
जाके जस आनन्द की कविवर उपमा देत॥
कविवर उपमा देत रंक भूपति सम जाये।
आवागवन न होय रहै मुद मंगल तायें॥
बरनै दीनदयाल जहाँ दुख सोक न होई।
ए हो पथी प्रवीन देस को जैयो सोई॥

× × ×

हारे भूली गैल में गे अति पाय पिराय।
सुनो पथी अब तो रह्यो थोरो सो दिन आय॥
थोरो सो दिन आय रहे हैं संग न साथी।
या वन है चहुँ ओर घोर मतवारे हाथी॥
बरनै दीनदयाल ग्राम सामीप तिहारे।
सूधे पथ को जाहु भूलि भरमो कित हारे॥

× × ×

चारो दिसि सूझै नहीं यह नद धार अपार।
नाव जर्जरी भार बहु खेवनहार गँवार॥
खेवनहार गँवार ताहि पर है मतवारो।
लिये भौंर में जाय जहाँ जल जंतु अखारो॥
बरनै दीनदयाल पथी बहु पौन प्रचारो।
पाहि पाहि रघुबीर नाम धरि धीर उचारो॥

× × ×

चल चकई तेहि सर विषै जहँ नहिं रैन विछोह।
रहत एक रस दिवस ही सुहृद हंस संदोह॥
सुहृद हंस संदोह कोह अरु द्रोह न जाको।
भोगत सुख अंबोह मोह दुख होय न ताको॥

बरनै दीनदयाल भाग बिन जाय न सकई।
पिय-मिलाप नित रहै ताहि सर चल तू चकई ।।

× × ×

कोमल मनोहर मधुर सुरताल सने,
नूपुर निनादनि सों कौन दिन बोलिहैं।
नीके मन ही के बुंद वृन्दन सुमोतिन को,
जेहि के कृपा की अब चोंचन सों तोलिहैं।
नेम धरि छेम सों प्रमुद होय दीनदयाल,
प्रेम को नद बीच कब धौ कलोलिहैं।
चरन तिहारे जदुबंस राज हंस! कब,
मेरे मन मानस मे मंद मंद डोलिहैं ।।

× × ×

चरन कमल राजै, मंजु मंजीर बाजैं।
गमन लखि लजावै, हँसऊ नाहिं पावैं ।।
सुखद कमल छाहीं, कीड़ते कुँज माहीं।
लखि लखि हरि सोभा, चित्त काको न लोभा ।।

पजनेस

नवला सरूप रूप रावरे रुचिर रूप,
रचना विरंचि कीनी सकुच न लागी है।
भन पजनेस लोलि लोयन को लौकौ गोल,
गुलफ गोराई लाज सकुचन लागी है।
सुन्दर सुजान सुखजान प्रति प्रीतम की,
एकौ ना परेख अब सकुचन लागी है।
औचक उचन लागी कंचुकी रुचन लागी,
सकुचन लागी आली सकुचन लागी है ।।

× × ×

कवि पजनेस केलि मधुप निकेत नव,
दर मुख दिव्य· घरी घटिका लटीकी है।
विधु पर बेष चक्र चक्र रविरथ चक्र,
गोमती के चक्र चक्राकृत घटीकी है।

नीवी तट त्रिबली बली पै दुति कोसतुण्ड,
कुण्डली कलित लोमलतिका बुटीकी है।
उपटी की टीकी प्रभाटी की बधूटी की,
नामिटी की धुर्जटी की औकुटी की संपुटी की है ॥

ललितकिशोरी

कमल मुख खोलौ आज पियारे।
विकसित कमल कुमोदिनि मुकलित, अलिगन मत्त गुँजारे।
प्राची दिसि रबिथार आरती, लिये ठनी निवछारे।
ललितकिसोरी सुनि यह बानी, कुरकुट बिसद पुकारे।
रजनी राज बिदा माँगै बलि, निरखौ पलक उघारे॥

× × ×

केको कीर कोकिला कोयल सामुहिं करै जुहार।
परसन दृगन कंज हित बोलैं भृँगी जै-जैकार॥
मूंदौ रंध्र बेगि प्राची दिसि इत अब कहत पुकार।
ललितकिसोरी निरख्यौ चाहत रबि नव कुंज-बिहार॥

× × ×

हम मौजी हैं अपने मन के, मनचाहै तहँ जावैं हैं।
बैठि इकंत ध्यान धरि दिलवर कंद-मूल फल खावैं हैं।
बसैं कंदरा बन में डोलैं, मानुष पास न आवैं हैं।
ललितकिसोरी भजन - अहारी, भीर-भार घबरावैं हैं॥

× × ×

अब बिलंब जिनि करौ लाड़िले, कृपा दृष्टि टुक हेरो।
जमुना-पुलिन, गलिन गहबर की बिचरूँ साँझ सबेरो।
निसि दिन निरखौं जगुल-माधुरी, रसिकन तें भटभेरो।
ललितकिसोरी तन-मन आकुल, श्रीवन चहत बसेरो॥

× × ×

राधारमन मनोहर सुन्दर तिनकै सँग नित रहते हैं।
थके रहत छबि ललित माधुरी और नहीं कुछ चहते हैं।
चितवन हँसन चोट मोहन की निस दिन हिय पर सहते हैं।
ललितकिसोरी करै न ओटै, फरी नहीं कर सकते हैं॥

× × ×

मन पछितैहो भजन बिन कीने ।
धन दौलत कछु काम न आवै, कमल नयन गुन चित बिन दीने ।
देखत कौं यह जगत सँगाती, तात मात अपने सुख भीने ।
ललितकिसोरी द्वन्द मिटै ना, आनँद कंद बिना हरि चीने ।।

× × ×

लाभ कहा कंचन तन पाये ।
भजे न मृदुल कमल दल लोचन, दुख मोचन हरि हरखि न ध्याये ।
तन मन धन अरपन ना कीन्हें, प्रान प्रानपति गुनन न गाये ।
जोबन धन कल धौत धाम सब, मिथ्या आयु गँवाय गँवाये ।
गुरुजन गर्व, विमुख रँग राते, डोलत सुख सम्पति बिसराये ।
ललितकिसोरी मिटै ताप ना, बिन दृढ़ चिन्तामनि उर लाये ।।

× × ×

सुमन बाटिका बिपिन में ह्वै हौं कब मैं फूल ।
कोमल कर दोउ भावते धरिहैं बीन दुकूल ।।
मिलिहै कब अँग छार ह्वै, श्री बन बीथिन धूरि ।
परिहै पद में पंकज जुगुल, मेरी जीवन मूरि ।।
स्यामा पद दृढ़ सखी, मिलिहै निहचै स्याम ।
ना मानै दृग देखि लै, स्यामा पद बिच स्याम ।।
ललित हरित अवनी सुखद, ललित लता नव कुंज ।
ललित बिहंगम बोलही, ललित मधुर अलि गुंज ।।
ललित मृदुल बहु पुलिन रज, ललित निकुंज कुटीर ।
ललित हिलौरनि रवि सुता, ललित सुत्रिविध समीर ।।

× × ×

मैं तेरे सँग मुरली स्याम बजाऊँ ।
ऐसेई पिय सब छेदनि पै, अँगुरी चपल चलाऊँ ।
पंचम रिषभ निषाद सुरनि लौं, सँग सँग टीप लगाऊँ ।
ललितकिसोरी ईमन काफी, सोरठ गाय सुनाऊँ ।।

× × ×

लटकि लटकि मनमोहन आवनि ।
भूमि-भूमि पग धरत भूमि पर, गति मातंग लजावनि ।
गोखुर रेनु अंग-अँग मंडित, उपमा दृग सकुचावनि ।
नव घन पै मनु-मनु झीन बदरिया, सोभा रस बरसावनि ।
बिगसनि मुख लौं कांति दामिनी, दसनावलि दमकावनि ।
बीच बीच घनघोर माधुरी, मधुरी बेनु बजावनि ।

मुक्त माल उर लसी छबीली, मनु बग पाँति सुहावनि।
बिन्दु गुलाल गुपाल कपोलनि, इन्द्र वधू छबि छावनि।
रुनन झनन किंकिन धुनि मानों, हंसनि की चुहचावनि।
बिलुलित अलक धूरि धूसर तन, गमन लोट बिभु आवनि।
जँघिया लसनि कनक कछनी पै, पटुका ऐंचि बँधावनि।
पीताम्बर फहरानि मुकुट छबि, नटवर बसे बनावनि।
हलनि बुलाक अधर तिरछौही, बोरी सुरंग रचावनि।
ललितकिसोरी फूल झरनि या मधुर-मधुर बतरावनि॥

ललितमाधुरी

हाय कहा विपरीत भई।
जुगलचन्द मुखचन्द बिलोकन, डसीं भुजंगिनि बिन रदई।
ललितमाधुरी विरह बिथित अति, कढ़त न प्रानहु कठिन दई।
मो अभाग के उदै भये कोउ, दंपति प्रीति की रीति नई॥

× × ×

मोहन चोर पकरि कैसे पाऊँ।
देखत हौं दृग भरि भरि सजनी परसन को रहि रहि ललचाऊँ।
दस्यौ निकुंज-लता बन बीथिन निपट निकट मैं तोहिं बताऊँ।
ललितमाधुरी ही में जी रँग चित्त चोरैं हौ आनि मिलाऊँ॥

× × ×

बाँकी अदा पै मैं बलिहारी।
बाँकी पाग केस लट बाँकी बाँकि मुकुट छबि प्यारी।
बाँकी चाल बाँकि ही चितवनि बाँकी मुरलिया धारी।
कहँ लौं ललितमाधुरी बरनौं आपुहि बाँके बिहारी॥

द्विजदेव

सोधे समीरन को सरदार मलिन्दन को मनसा फल दायक।
किंशुक जालन को कलपद्रुम मानिनी बालनहूँ को मनायक।
कन्त अनन्त अनन्त कलीन को दीनन के मन को सुख दायक।
साँचे मनोभव राज को साज सु आवत आज इतै ऋतुनायक॥

× × ×

मिलि माधवी आदिक फूल के ब्याज बिनोद लवा बरसायो करैं।
रचि नाच लतागन तान बितान सबै बिधि चित्त चुरायो करैं।
द्विजदेव जू देखि अनोखी प्रभा अलि-चारन कीरति गायो करैं।
चिरजीवो, बसंत! सदा द्विजदेव प्रसूनन की झरि लायो करैं॥

× × ×

कारो नभ कारी निसि कारियै डरारी घटा,
झूकन बहत पौन आनँद को कंद री।
द्विजदेव साँवरी सलोनी सजी स्याम जू पै,
कीन्हे अभिसार लखि पावस अनंद री।
नागरी गुनागरी सु कैसे डरै रैन डर,
जाके संग सोहत सहायक अमंद री।
बाहन मनोरथ उमाहैं संगवारी सखी,
मैन मद सुभट, मसाल मुखचंद री॥

× × ×

डारै कहूँ मथनि बिसारै कहूँ घी को भाँड़ो,
विकल बिगारै कहूँ माखन मठा मही।
भ्रमि भ्रमि आवत चहूँधा ते जू याही ओर,
प्रेम पयपूर के प्रवाहन मनौ बही।
झुरसि गई धौ कहूँ काहू की वियोग झार,
बार बार बिकल बिसूरति जही तही।
एहो ब्रजराज एक ग्वालिनी कहूँ की आज,
भोर ही ते द्वार पै पुकारत दही दही॥

× × ×

वृन्दावन कुंजन मे बंसीवट छाँह असि,
कौतुक अनोखो एक आज लखि आई मै।
लागो हुतो हाट एक मदन धनी को तहाँ,
गोपिन को वृन्द रहो घूमि चहुँ घाई मै।
द्विजदेव सौदा की न रीति कछु भाखी जाय,
ह्वै रही जु नैन उनमद की देखाई मै।
लै लै कछु रूप मनमोहन सों बीर वै,
अहीरनै गँवारी देहि हीरन बटाई मै॥

× × ×

उमड़ि घुमड़ि घन छाँड़त अखंड धार,
अति ही प्रचंड पौन झूकन बहतु है।
द्विजदेव संध्या को कोलाहल चहुँधा नभ,
शैल ते जलाहल को जोग उमहतु है।
बुद्धि बल थाको सोई प्रबल निशा को मेघ,
देखि ब्रज सूनो वैर आपनो गहतु है।
एहो गिरिधारी राखो सरन तिहारी,
अब फेरि यहि बारी ब्रज बूड़न चहतु है॥

× × ×

अब मति दैरी कान कान्ह की बसीठिन पै,
झूठे झूठे प्रेम के पतौवन को फेरि दे।
उरझि रही री जो अनेक पुरबातैं सोऊ,
नाते की गिरह मूँदि नैनन निबेरि दे।
मरन चहत काहू छैल पै छबीली कोऊ,
हाथन उठाय ब्रज बीथिन बरजि दे।
नेह री कहाँ को, जरि खेहरी भई तो अब,
देह री उठाय वाकी देहरी पै गेरि दे॥

× × ×

घहरि घहरि घन सघन चहूँधा घेरि,
छहरि छहरि बिष बूँद बरसावै ना।
द्विजदेव की सौं अब चूक मत दाँव, एरे,
पातकी पपीहा! तू पिया की धुनि गावै ना।
फेरि ऐसो औसर न ऐहै तेरे हाथ, एरे,
मटकि मटकि मोर सोर तू मचावै ना।
हौं तौ बिन प्रान, प्रान चहत तजोई अब,
कत नभ चंद तू अकास चढ़ि धावै ना॥

× × ×

आजु सुभायन ही गई बाग, बिलोकि प्रसून की पाँति रही पगि।
ताहि समै तहँ आए गोपाल, तिन्हैं लखि औरौ गयो हियरो ठगि।
ये द्विजदेव न जानि पर्‌यो धौं कहा तेहिकाल, परे अँसुवा जगि।
तू जो कही, सखि! लोनो सरूप सो मो अँखियान कौं लोनी गई लगि॥

× × ×

लखि ठोढी रसाल रसालन को फर पीरो परो लरको तो कहा ।
द्विजदेव जू आछे कटाछ चितै छन जोन्ह हियो थरको तो कहा ।
द्युति दंतन की यक बार लखे उर दाड़िम को दरको तो कहा ।
अंग अंग की ऐसी प्रभा अवलोकि अनंग फिरै फरको तो कहा ।

गिरिधरदास

जाहि विवाहि दियो पितु-मातु नै पावक साखि सबै जग जानी ।
साहब से गिरधारन जू भगवान समान कहै मुनि ज्ञानी ।
तू जो कहै वह दच्छिन है तौ हमै कहा बाम हैं, बाम अजानी ।
भागन सो पति ऐसो मिलै सबहीन को दच्छिन जो सुखदानी ।।

× × ×

जगह जड़ाऊ जामे जड़े हैं जवाहिरात,
जगमग जोति जाकी जग मे जमति है ।
जामे जदुजानि जान प्यारी जात रूप ऐसी,
जगमुख ज्वाल ऐसो जोन्ह सी जगति है ।
'गिरिधरदास' जोर जबर जवानी को है,
जोहि जोहि जलजा हू जीव मे जकति है ।
जगत के जीवन के जिय को चुराये जोय,
जोए जोषिता जो जेठ जरनि जरति है ।।

× × ×

बातनि क्यो समुझावति हौ मोहि मै तुमरो गुन जानति राधे ।
प्रीति नई गिरिधारन सों भई कुज मे रीति के कारन साधे ।
घूँघट नैन दुरावन चाहति दौरति सो दुरि ओट ह्वै आधे ।
नेह न गोयो रहै सखि लाज सों कैसे रहै जल जाल के बाँधे ।।

× × ×

धिक नरेस बिनु देस देस धिक जहँ न धरम रुचि ।
रुचि धिक सत्य विहीन सत्य धिक बिनु बिचार सुचि ।।
धिक विचार बिनु समय समय धिक बिना भजन के ।
भजनहु धिक बिनु लगन लगन धिक लालच मन के ।।
मन धिक सुन्दर बुद्धि बिनु बुद्धि सुधिक बिनु ज्ञान गति ।
धिक ज्ञान भगति बिनु भगति धिक नहिं गिरिधर पर प्रेम अति ।।

× × ×

सब के सब केसव के सब के हित के गज सोहते शोभा अपार हैं।
जब सैलन सैलन सैलन ही फिरैं सैलन सैलहिं सीस प्रहार हैं।
गिरिधारन सों पद कंज लै धारन लै बसुधारन धारन फार हैं।
अरि गारन बारन बारन पै सुर बारन बारन बारन बार हैं॥

× × ×

गुरुन को शिष्यन सुपात्र भूमिदेवन को,
मान देहु ज्ञान देहु दान देहु धन सों।
सुत को सन्यासिन को वर जिजमानन को,
सिच्छा देहु भिच्छा देहु दिच्छा देहु मन सों।
सत्रुन को मित्रन को पित्रन को जग बीच,
तीर देहु छीर देहु नीर देहु पन सों।
गिरिधरदास दासै स्वामी को अघी को, आसु
रुख देहु सुख देहु दुख देहु तन सों॥

× × ×

जाग गया तब सोना क्या रे।
जो नर तन देवन को दुर्लभ सो पाया अब रोना क्या रे।
ठाकुर से कर नेह आपना इंद्रिन के सुख होना क्या रे।
जब वैराग्य ज्ञान उर आया तब चाँदी औ सोना क्या रे।
दारा सुवन सदन में पड़ के भार सबों का ढोना क्या रे।
हीरा हाथ अमोलक पाया काँच भाव में खोना क्या रे।
दाता जो मुख माँगा देवे तब कौड़ी भर दोना क्या रे।
गिरिधरदास उदर पूरे पर मीठा और सलोना क्या रे॥

× × ×

लोभ न कबहूँ कीजिए, यामैं विपति अपार।
लोभी को विस्वास नहिं, करे कोऊ संसार॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहिं मन शुद्धि सम, विद्या सम धन आन॥

× × ×

सकल वस्तु संग्रह करै, आवै कोउ दिन काम।
बखत परे पर ना मिलै, माटी खरचै दाम॥
पुन्य करिय सो नहि कहिय, पाप करिय परकास।
कहिबे से दोऊ घटत है, बरनत गिरिधरदास॥

× × ×